

[राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट उपाधि के लिए स्वोक्त शोध-प्रवच]

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य [जम्भवाणी के पाठ-सम्पादन सहित]

(दो भागों में)
पहला भाग

लेखक

डॉ० हीरालाल माहेश्वरी

एम ए एल् एल बी, डी फिल (कलकत्ता), डी लिट (राजस्थान)
प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी



बी० आर० पब्लिकेशन्स,
६, प्रिटोरिया स्ट्रीट, कलकत्ता-१६

[सर्वाधिकार लेखक के स्याधीन हैं]

मुद्रक
महेन्द्र प्रिन्टर्स,
मनिहारों का रास्ता,
जयपुर-३

जाम्मोजी, चिष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य



श्री जाम्मोजी महाराज (विक्रम संवत् १५०८—१५९३)

समर्पण

राजस्थानी साहित्य की सिद्ध काव्यधारा के आदि स्रोत
जाम्मोजी
तथा
विष्णोई साहित्यकारों
को

सादर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी

१

जाम्भोजी का जन्म सन् १५०८ की भादो वदि ८ को सोमवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र में जोधपुर राज्य के अतगत नागौर नामक परगने के पीपासर गाव में हुआ था और इनकी जाति पवार (परमार) वशी राजपूतो की थी। इनके पिता एक सम्पन्न व्यक्ति थे और उनका नाम लोहटजी रहा तथा इनकी माता हासा देवी भाटी कुल की थी। प्रसिद्ध है कि ये अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थे और सम्भवतः उनकी अघेड़ी अवस्था में उत्पन्न भी हुए थे। इस कारण इनके प्रति उनकी और अन्य आत्मियों की भी और न यथेष्ट स्नेह भाव प्रदर्शित किया जाना स्वाभाविक रहा। अपनी बाल्यावस्था के समय इनकी एक विशेषता यह रही कि ये, कदाचित् कम बोलते थे, और हमनिष्ठ लोग उन्हें 'गू गू' अथवा कम से कम 'गूला' तक भी कहने लगे थे। परन्तु उन दिना कभी कभी ये कुछ ऐसे भी वाक्य बर देते देख पड़ते थे जिनसे सभी कोई चकित हो जाते थे और इसके आधार पर कुछ लोगो ने अनुमान किया है कि इसी कारण ये 'जाम्भा' (अचम्भा) भी कहे जाने लगे थे। जो हो, जब ये ७ वर्ष में अधिक अवस्था के हुए, इन्हें पशुचारण के काम में लगा दिया गया जिसके लिए ये आसपास के जंगलो में भी जाने लगे।

कहत हैं कि ऐसी ही दशा में जब ये लगभग १६ वर्ष के थे इनकी भेंट वन गुरु गोरखनाथ से हो गई जिस बात की विगुह ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार कर लेना सब किसी के लिए संभव नहीं कहला सकता। इस सम्बन्ध में इतना और कहा जा सकता है कि ऐसी किसी न किसी घटना की चर्चा इनके समसामयिक हरिदास निरजनी (सन् १५१२-१५) एवं जसनाथजी (सन् १५३९-६३) के विषय में भी की जाती है, जो सम्भवतः इन सभी के ऊपर पड़ने वाले गुरु गोरखनाथ अथवा उनके नाथ पथ के अनुनाधिक प्रभाव मात्र को ही सूचित करती है। जाम्भोजी का "गोरख गुरु अपारा" ^१ कह वना, हरिदास निरजनी द्वारा "गोरख हमारा गुरु बोलिये" ^२ वा "सिरी गोरख का हाथ" ^३ तक भी कह दिया जाना कुछ अधिक महत्त्व नहीं रखता और न जसनाथजी की ओर से "सिल सेज में ईसर गोरख भेटया, भलकत दीदास" जैसे किये गए किसी कथन का कोई बँसा ऐतिहासिक मूल्य ही ठहराया जा सकता है। वास्तव में इस प्रकार की बातें हमें सत विनाराम भत चरणदान एवं सत गरीबदास जैसे लोगो की उपलब्ध रचनाओं के भी अतगत देखने में मिलती हैं जो सभी विन्म की अठारहवीं शताब्दी में उत्पन्न हुये थे, किन्तु जिनमें से

१ मवदवाणी, संवद ६३, पक्ति १०।

२ श्री महाराज हरिदासजी की वारी, साली ४, पृष्ठ ३५६।

३ वही, साली ५, पृष्ठ ३५७।

प्रथम और द्वितीय द्वारा प्रमत्त गुरु दत्तात्रेय एवं शुकदेव मुनि जैसे पौराणिक महापुरुषों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आना तथा इसी प्रकार तृतीय का उन सत् कबीर का शिष्य होना सूचित करता है । जिनका भाविर्भाव पन्द्रहवीं शताब्दी में ही हो चुका था । 'जम्भदेव चरित भावु' के रचयिता स्वामी ब्रह्मानन्द ने अनुमार तो जाम्भोजी से उपयुक्त प्रकार मिलने वाले महात्मा कोई वाला गोरख यतीन्द्र नामक महापुरुष रहे, किन्तु उनका ऐसा भी कथन कदाचित् प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ की ही धार संकेत करता जान पड़ता है और इसका निष्पत्ति तब तक नहीं किया जा सकता जब तक इस विषय में किसी ऐतिहासिक प्रमाण द्वारा पुष्टि न हो जाय ।

जाम्भोजी ने कोई विवाह नहीं किया, प्रत्युत कहा जाता है कि इन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी बने रहने का संकल्प कर लिया था जिसके सामने इनके माता पिता को भी झुकना पड़ गया । इनके पिता लोहटजी का देहात सवत १५४० में हुआ तथा इनकी माता हांसा-देवी भी उनके कुछ ही दिनों पीछे चल बसी । तत्पश्चात् वैसी दशा में इन्होंने अपने गृह तथा अपनी सारी सम्पत्ति का परित्याग कर दिया और ये 'सभरायळ' नामक स्थान पर रहने लग गये । सभरायळ पर ही रहते समय इन्होंने, सवत १५४२ की कार्तिक बदि ८ को विष्णोई (वा विष्णोई) सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया तथा उन दिनों वाले अकाल पीड़ितों की सहायता करने के साथ साथ अपने मत का प्रचार कार्य भी आरम्भ कर दिया । ये बहुधा जन समाज में उपस्थित होकर सबसाधारण को चानोपदेन देते तथा कभी कभी उनकी शकामों का समाधान कर देने का प्रयत्न करते और इसके साथ ही प्रायः विविध बाणियों की रचना भी किया करते थे जो इस समय सबदवाणी' नामक रचना-संग्रह के अंतर्गत संगृहीत समझी जाती हैं । अतः में म्वत १५९३ की मागशीप बदि ९ की समवत 'सभरायळ' पर ही रहते समय इनका देहात हो गया ।

जाम्भोजी के जीवन काल अर्थात् सवत १५०८ १५९३ के समय इनके प्रमुख कार्यक्षेत्र राजस्थान की दगा कुछ विविध सी थी और वह कम से कम उनके आरम्भिक दिनों में, प्रथम अंगठती जाती हुई ही जान पड़ती थी । वहाँ वाले विभिन्न राज्यों के बीच, बहुधा साधारण सी बातों को भी लेकर पारस्परिक युद्ध आरम्भ हो जाया करते थे । उनमें से एक दूसरे के ऊपर, कभी अपने आत्मसम्मान की रक्षा के कारण बस धावा बोल देता, तो कभी किसी बचन-पालन के ब्याज से, अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध भी हथियार उठा लेता । महत्वाकांक्षा से बढ़कर उह अधिकतर ऐसी अनेक बातें ही प्रेरित कर दिया करती जिन पर किमा न किसी प्रकार के काल्पनिक कलह्य का रंग चढ़ा हुआ रहता, जिसका एक स्पष्ट परिणाम इस रूप में दीखता था कि उनमें से छोटे या बड़े सभी राज्य सदा युद्ध के लिए जागरूक बने रहते थे । इसी प्रकार जहाँ तक साधारण सामाजिक स्थिति के विषय में कहा जा सकता है, सेतिहर, व्यापारी, कारीगर एवं कलाकार जस वगैरों की

१ देव-प्रथम 'विवर्णार' पृष्ठ २, 'मन्निमागर', पृष्ठ ७९ ३२३
४९३, ५१८ आदि तथा गरीबदासजी की बानी, पृष्ठ १४८ ।

धार्मिक दत्ता एक समान नहीं थी और न उनके भ्रष्टाचारी मानी एव साधु वर्ग तक के लिये ही कहा जा सकता था कि उनमें खान पान तथा भ्रष्टाचारी विषयक प्रवृत्तियों का समावेश नहीं था। एक और जहाँ मादक एव निषिद्ध वस्तुओं का खुला व्यवहार होता दीव्य पड़ता था, वहाँ दूसरी ओर उन लोगों के ऊपर ऐसी कुप्रथाओं एव क्रूरतियों का भूत भी सवार हो चुका था जिनके रहते किसी समाज का कभी कोई नतिक विकास हो ही नहीं सकता। इसके सिवाय यदि उस काल की धार्मिक स्थिति के लिए कहा जाय तो यहाँ पर भी धर्म के वास्तविक रूप का ज्ञान लगभग लुप्त सा हो चला था और उसका स्थान साधारण मान्यताओं ने ग्रहण कर लिया था। बाह्य साधनाओं को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान किया जाता था और साम्प्रदायिक सकीरता का सबभ्रंश हो चुका था।

इस प्रकार की अनेक बातें सामान्यतः उस काल के पूरे राजस्थान क्षेत्र के लिए कही जा सकती थी। उसके जिस भाग विशेष में जाम्भोजी का प्राविर्भाव हुआ था उसकी दशा इससे कुछ और गिरी ही समझी जा सकती थी। जिस प्रदेश के अंतर्गत इन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उसे भौगोलिक दृष्टि से साधारणतः 'वागड' कहा जाता था। यह सारा का सारा भूभाग प्रायः रेतीले मैदानों से पूरा था जिनमें टीले बन गये थे और अत्यन्त छोटे-बड़े जंगल भी पाये जाते थे जिनमें पशुओं के झुंड चरा करते थे तथा जहाँ ऊँचे स्थानों पर कहीं-कहीं वस्तियाँ भी बन गई थीं। इन छोटे छोटे गावों में से अधिकांश जाट जाति के लोग द्वारा आबाद थे। जाट लोग स्वभावतः सीधे-सादे और श्रमखंड हुआ करते थे तथा उनकी जीविका प्रमुख रूप में भोले भाले किसानों की जसी ही रहा करती थी। ये प्रायः अपने ऊपर शासन करने वाले राजपूत राजा महाराजाओं की ओर से विभिन्न युद्धों में भाग भी लिया करते थे तथा अपने सामाजिक एव धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं की दृष्टि से, बहुत कुछ उनसे मिलते जुलते भी जान पड़ते थे। इनकी विशेषताएँ बहुधा इस बात में देखी जाती रही कि उनके जस पदे लिखे एव सुसंस्कृत न होने के कारण, ये लोग बहुत अधिक भ्रष्टाचारी और परम्परा-पालक बन गये थे तथा इनमें मद्यसेवन एव स्त्री अपहरण जैसे बहुत से दुर्व्यसना वाले धर्मक ऐसे दोष भी आ गये थे जिनके कारण इनकी जीवन पद्धति को 'नतिक' मानना कभी उचित नहीं कहा जा सकता था।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि उस काल वाले 'वागड-देश' की प्राकृतिक दशा तथा वहाँ के निवासियों की मनोवृत्ति आदि की ओर किया गया एक स्पष्ट संकेत, हमें अतः बचीर की कतिपय पवित्रता में भी मिलता जान पड़ता है। उन्होंने अपने एक पद के द्वारा बहिर्जगत एव अन्तर्जगत की तुलना करते समय, प्रथम के लिए जहाँ 'वागड-देश' का रूपक बाधा है वहाँ द्वितीय को 'देश मालवा' कहा है और इस प्रसंग में बतलाया है— 'वागड-देश में बराबर लुएँ चलती रहती हैं इसलिए तू वहाँ मत जा, क्योंकि वहाँ जाने पर जल जाने का भय है। वहाँ के पूरे समाज को ही मैं धर्म-विहीन पाता हूँ। जब उनके सिर पर धूल उड़कर पड़ा करती है ताव उस बचीर की सजा दिया करते हैं। वहाँ न तो कोई सरोवर है और

न पानी ही है। यहाँ पर तो सद्गुरु है, तो साधुवाणी है, न यहाँ बोलिया है और तो कोई तोता ही है। यहाँ पर हृद्य (जीव) ऊँ । रत्ने हुए भी, मग्य करो ही ।" यहाँ पर, यहाँ वाले सरकासीर जन साधारण के नित्य स्तर को तो कोई यहाँ को गई नही दोग पढती तित्तु जो तित्तु धन्य कुछ बातों का हमारे समक्ष उपस्थित होगा है उगम पात्र चलता है कि वस्तुस्थिति की रही होगी। अतएव हम कह सकते हैं कि जिन 'वाग्द प्रदत्त' वाले भूगद म जाम्भोजी का जन्म हुआ था उस कई दृष्टियों से अद्भुत यहाँ उतराया जा सकता था तथा यह एक ऐसा क्षेत्र रहा जहाँ पर गुरुविरत गुधार का निपा जाया आवश्यक समझा जा सकता था। यहाँ के लिए इस बात की आवश्यकता थी कि कोई न कोई सच्चा पद्म-प्रदत्त (सद्गुरु) सच्च माग का प्रत्यान कर तथा यहाँ स्थित गुरुगुरुगों (साधुवाणी) द्वारा उक्त स्थिति में उपयुक्त गुधार लाया जाय और तभी यह समय था कि अपने को उच्च मानते हुए, मिथ्याभिमान के कारण अपने प्राण तिद्धावर करत बातों तक का भी बलियाण हो सके।

जाम्भोजी के उपयुक्त जीवनवत्त, उनसे सम्बन्धित प्रमुख घटनाया तथा उनके स्वभाव के ऊपर विचार करने से यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि इनमें अनेक ऐसे गुण थे जिनके आधार पर इन्होंने उस भूत बहुत कुछ किया होगा। वे अपने बचपन से ही मित-मापी रहे तथा पशुचारण के अवसरों पर जगला म भ्रमण करत समय इन्हें एकान्तवास एवं आत्म चिन्तन का कुछ न कुछ अभ्यास भी पड गया होगा। इनके विषय में लिखन वालों का कहना है कि जिन दिनों वे उक्त वाय म लगे रहे, इनके यहाँ सयोगवत्त अनेक ऐसे व्यक्ति भी समय समय पर आ जाते रहे जिनके ऊपर विविध कठिनाइयाँ पडी रहा करती थी तथा जिनकी सहायता से सदा किसी न किसी रूप में करते रहे। इनके मित्राव, न केवल इ हाने अपने माता पिता का दहाबसान हो जाने के अनंतर अपनी सारी सम्पत्ति का परित्याग कर दिया, अपितु जिस समय सवत १५४२ में वहाँ अफाल पडा, इन्होंने कष्ट में पडे लोगों की सेवा-सहायता भी की। इस प्रकार, ज्ञान की गभीरता, आत्मत्याग की भावना, हृदय की उदारता सहानुभूता एवं कर्मठता जसी अनेक बातें इनके जीवन की बिरसगिनी बन कर काम देती आई थी जिन्का एक सुन्दर परिणाम यह हुआ कि न केवल इनका व्यक्तित्व नमग निखरता चला गया, प्रत्युत इसके साथ ही इनकी लोकप्रियता भी बढ़ती चली गई तथा जो कोई इनके सम्पर्क में आये अथवा जिन्हें इन्होंने पूरत प्रभावित किया उनके ये सभी कुछ ही गए। फलत यह स्वाभाविक था कि इनके वाय क्षेत्र वाले इन्हें एक आदर्श मृगपुरत तथा कभी कभी अपने इष्टदेव के रूप तक में भी स्वीकार करते, और इस प्रकार

१ वाग्द देस ध्रुवन का घर है।

बहा जिन जाइ दाभन का डर है ॥ टेक ॥

सब जग देखो कोई न धीरा। परत धूरि सिरि कहत अवीरा ॥

न तहा सरवर न तहां पाणी। न तहा सतगुर माधू बाणी ॥

न तहा कालि न तहा सूवा। ऊँ के बडि चडि हुमा सूवा ॥ इत्यादि

—शरीर प्रदावनी, का ना प्र समा, सवत २०१३, पद ६८, पृष्ठ १०९।

इनके द्वारा सुझाये माग के अनुसार एक सम्प्रदाय भी चल पडा ।

जाम्भोजी द्वारा रचे गये किसी ग्रन्थ का पता नहीं चलता और न यही विदित हो पाता कि इन्होंने ऐसा करने का कोई प्रयास भी कभी किया था अथवा नहीं । हमें तो इनके विषय में इतना तक भी ज्ञात नहीं कि इन्होंने कभी कोई शिक्षा भी प्राप्त की थी और न हम यही कह सकते हैं कि इनका कोई दोषा गुरु भी रहा था । इनकी जो रचनाएँ इस समय हमें उपलब्ध हैं, उनके अंतर्गत भी हम ऐसा कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलता जिसे सूक्ष्म-वत् पकड़कर उसके आधार पर हम कोई तर्क सगत अनुमान कर सकें । इनका गुप्त गोरख नाम के लिए 'गोरख गुरु अपारा' कह डालना इस सद्भक्त में कोई महत्त्व नहीं रखता और जसा इसके पूर्व हम देख चुके हैं, यह किसी प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से कभी सिद्ध भी नहीं किया जा सकता, प्रत्युत इसके विषय में केवल यह अनुमान किया जा सकता है कि वसी कोई प्रचलित कथन पद्धति ही रही होगी अथवा यह भी हो सकता है कि नाथ पथ का विशेष प्रचार रहते आने के कारण उक्त प्रकार, उसके प्रभाव विषयक एक अभिव्यक्ति मात्र कर दी गई होगी । इसके सिवाय, इनकी रचनाओं में लक्षित होने वाली वेदांत, योग शास्त्र अथवा श्रय इस प्रकार की बातों के विषय में भी कहा जा सकता है कि वे भी बहुत श्रयो तक इनके उन अनुभवों का परिणाम हो सकती हैं जिन्हें इन्होंने स्वभावतः अपने चिंतन-शील एवं समभवत बहुश्रुत भी होने के कारण, अमग अज्ञित कर लिया होगा । यदि हम चाहें तो इसके प्रमाण में इनकी उपलब्ध रचनाओं में से अनक ऐसे अक्ष भी उद्धृत किए जा सकते हैं, जहां पर इन्होंने अपने सादर चयन, वाक्य प्रयोग, कथन गली आदि तक में प्रचलित परम्पराओं का अनुसरण किया है । हा, इतना अवश्य है कि इनकी पवित्रियों को पढ़ते समय जो हम इनके व्यक्तित्व की झलक देख पड़ती है वह अपूर्व है ।

जाम्भोजी के दार्शनिक मत पर विचार करते समय हम, सबसे प्रथम, उन विभिन्न नामों के ऊपर अपनी दृष्टि डालनी पड़ जाती है जिनका इन्होंने परमतत्त्व अथवा परमात्म-तत्त्व के लिए, अपनी रचनाओं के अंतर्गत प्रयोग किया है । वे न केवल अनेक हैं, प्रत्युत वे अपने विविध रूपों में, अनेक स्रोतों से उपलब्ध किये गये सभी जान पड़ते हैं । इन्होंने उसके लिए प्रघात विसन (विष्णु) शब्द का ही प्रयोग किया है, किंतु केवल इसे ही इन्होंने कदाचित् पर्याप्त नहीं माना है और इस सम्बन्ध में, इन्होंने यह भी कह दिया है कि उस 'मरे साईं के 'सहस्रनाम' (समवत असंख्य नाम) हैं, वह वस्तुतः 'सिमू' (स्वयम्भू) है, किंतु वह कभी पहले पहल 'आदि मुरारी' के रूप में उत्पन्न हुआ था' ।

इस प्रकार, उसके नामों में, इन्होंने 'विसन' के अतिरिक्त 'ओम्', 'पारब्रह्म', 'परमेस्वर', 'नारायण', 'हरि', 'राम', 'सतगुरु', 'कृष्ण', 'स्याम', 'लक्ष्मण', 'परसराम', 'रहीम', 'रहमान', 'करीम', 'खुदाबन्द', 'अल्लाह' आदि के भी विभिन्न प्रयोग यथास्थल, मनमाने रूप में किये हैं । ये उसे किसी मत मतान्तर अथवा दृष्टि विशेष के प्रभाव में आकर सीमित नहीं कर देना चाहते । ये उसे प्रायः अनादिवत समभक्ते जान पड़ते हैं, किन्तु फिर भी इन्होंने उसके द्वारा सारी सृष्टि का सृजन किया जाना तथा इस प्रकार, उसका अपने निरञ्ज-

निराकार के रूप में, प्रत्यक्ष साकाररूप प्रकट हो जाता भी बतलाया है, जो उगकी एकमात्र सत्ता का चोतक भी ठहराया जा सकता है। इस प्रसंग में इन्होंने स्वयं अपने विषय में कहा है कि "उस समय, जबकि 'घानि मुरारी' का आविर्भाव हुआ मैं 'निरालम्ब' रूप में भी था, मेरे, मां-बाप कोई नहीं थे और मैंने अपनी पाया का निर्माण स्वयं किया था मैंने ही स्वयं, समय समय पर, कच्छप, वाराह, गण्ड, वामन जैसे धरदार धारण किये तथा विविध लीलाएँ तक भी कीं"। अतएव, वाञ्छी, मुहना, पञ्चि घानि से ये स्पष्ट शब्दों में कहते दीए पड़ते हैं कि, "यदि तुम लोग 'दोजा' की प्रपन्ना मुक्ति चाहते हो तो मेरा कहना करो, तुम्हारे लिए इन्द्रपुरी, वैकुण्ठ या मधुवा मोग सभी कुछ समय हो सकेगा"। इस प्रकार, ये उस परमसत्य को, एक ओर जहाँ रूपरेखा एक वर्णन से 'विवक्षित'^१ बतलाते हैं, वहीं दूसरी ओर उस एक मात्र को मन्त्र प्रत्यय रूप में अनुभूत होता हुआ भी ठहराते हैं जो इनके मन्त्र तत्वाद का सूचक भी समझा जा सकता है।

जाम्भोजी का आत्मा के विषय में यह कहना है कि जिस प्रकार तिल व भीर तेल रहता है अथवा फूल में गंध होगी है, उसी प्रकार उसका प्रकाश पांचों तत्त्वों के अलगत हुआ करता है"^२। ससार के प्राणी सभी उत्सवों में रत जा पड़ते हैं किन्तु उन्हें यह पता नहीं चलता है कि यह सारा जगत बाजरे की भूसी के समान घोषा और निस्तार है^३। इसी प्रकार पञ्चि विचार किया जाय, तो अन्न 'माता पिता, भाई बहन परिवार, सगे सम्बन्धी कोई भी तास्तविक साथी नहीं है'^४। 'इस कलियुग के भीतर तत्त्व का जग न हो पाने के कारण, सभी भ्रम में पड़े दीखते हैं। ब्राह्मण वेदों को वाञ्छी मुरारि की ओर जोगी जोग को भुला बड़े हैं, तथा मुडियों के पास वो 'अकल' ही नहीं रह गई है और माता पिता तक भी, केवल भ्रम में पड़े रहने के ही कारण, अपनी सत्तानों के लिए, अनेक प्रकार की कामनाएँ करते रहा करते हैं^५। इनका यह भी कहना है कि "जसी सेतो की जाती है, वसी ही फसल भी तयार हुआ करती है"। 'वर्षा होती है उस दगा में भी जसा बीज रहा करता है, वस ही पीछे भी उगा करते हैं, अथवा उसमें अन्न पदा हुआ करता है, इसमें पानी का कोई दोष नहीं है। उसी प्रकार, सबमें अपनी करनी का ही दोष हो सकता है, क्योंकि उसी के अनुसार फल मिला करता है'^६। ओछी करनी वाला बराबर आवागमन के चक्र में पड़े रहा करते हैं और उनका कभी छुटकारा नहीं हो पाता। आवागमन में छुटकारा पा जाता ही मुक्ति है जिसके लिए इन्होंने स्वयं में जाना, वैकुण्ठ पहुँचना अथवा देवों के साथ रहना जन्म भी क्यन्त किये हैं तथा इन्होंने उनका स्पष्टीकरण, 'अमृत'

- | | | |
|---|---------|---------------------|
| १ | सबदवाणी | सबद ६३, पृष्ठ ३९८। |
| २ | वही | सबद २६, पृष्ठ ३३१। |
| ३ | वही | सबद १०७ पवित १३-१४। |
| ४ | वही, | सबद ६६, पवित १२-१३। |
| ५ | वही, | सबद ३१ पवित ६-११। |
| ६ | वही, | सबद ८३, पवित १५-१७। |
| ७ | वही, | सबद २८, पवित १५-१८। |

कर घूमा करना और फिर घरबारी की ही भांति मुई-तागे से 'करड' एवं 'मिखले' की सिलाई करना तथा झोली और कपड़े का बोझ कंधे पर डोना और वीर अतालो का जप करना अथवा मोह त्याग की बातें करना आदि सभी कुछ दिखावा मात्र है^१। इसी प्रकार, हम उन हिंदुओं के लिए भी कह सकते हैं, जो पाहन' की पूजा किया करते हैं और चले वन कर अपने गुरुओं के परो पर गिरा करते हैं, भूत प्रेतादि में विरवास करते हैं, उनके लिए बलि चढ़ाते हैं तथा ऐसे अनेक पाखंड किया करते हैं। ऐसे लोग इनकी दृष्टि में उन कुत्तो से भी बुरे कहे जा सकते हैं जो चोरो के आ जाने पर भोका करते हैं और सभी को सजग कर देते हैं^२।

जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओं में हम कहीं पर उन प्रसिद्ध २९ नियमों की एक गिनाया गया नहीं देख पड़ता, जिनका पालन उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई संप्रदाय के अनुयायियों के लिए परम कर्तव्य समझा जाता है। परंतु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो वे अथवा उनसे कुछ अधिक नियम तक भी यहां पर यथास्थल बतलाये गये मिलते हैं। ऐसे नियमों में केवल वे ही नहीं आते जिनकी आवश्यकता साधारण दैनिक आचरण के अवसरों पर पड़ सकती है तथा जिनमें इसी कारण, विधि निर्देश के रूपों में, अनेक बातों का समावेश कर दिया जा सकता है, इनमें बहुत से ऐसे भी पाये जाते हैं, जिन्हें हम मुक्ति प्राप्ति के हेतु किन्हीं साधनों के रूप में भी स्वीकार कर सकते हैं। इसके सिवाय, इनमें कई ऐसे भी आ गये हैं जिनका उपयोग किन्हीं अवसर विशेष पर ही किया जा सकता है। जहां तक ऐसे सभी नियमों के निर्दिष्ट करने की बात है, हम पता चलता है कि इनका अनुसरण जाम्भोजी के समसामयिक जसनाथजी द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय के अंतर्गत भी किया गया पाया जाता है और वहां पर ३६ नियम प्रचलित हैं। इसके सिवाय हम 'साध सदाय' के अनुयायियों द्वारा स्वीकृत व १२ नियम भी मिलते हैं जिन्हें व सर्वाधिक महत्त्व दिया करते हैं तथा जिनके पालन में किसी प्रकार की कमी का आ जाना उनके यहां कभी धम्म नहीं माना जाता। इन जनों विभिन्न नियमावतियों का यदि कोई सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन किया जाय, तो यह स्पष्ट होन दर नही लगती कि इनमें से बहुत से तो वही हैं जिनकी गणना सामान्य दैनिक आचरण के सम्बन्ध में की जाती है। परंतु इनमें अनेक ऐसे भी मिल जाते हैं जो ब्रह्म अपने पालन वाला के ही लिए विशेष रूप से निर्धारित प्रतीत होते हैं। ये उनकी विशेषताएँ सूचित करते हैं तथा इनकी दृष्टि से हम उनकी विभिन्न मनोवृत्तियों के समझने में भी सहायता मिलती है तथा इनके सहारे हम उनके विभिन्न संप्रदायों का समुचित सूचक भी कर सकते हैं। इनके द्वारा हम उनकी उन वास्तविक देना का भी पता लगान में कुछ सहायता मिल सकती है जिनकी दृष्टि में वे कभी प्रवर्तित किये गये थे।

जाम्भोजी आश्रित धर्मशास्त्रों में और उन्होंने न तो किसी साधारण गुरु के ही जीवन स्थिति किया और न किसी मन्थान की जमी सम्पत्ति का संपन्न करके उनके

१ महर्षिवाणी मन्थ ८० पंक्ति १६।

२ वही मन्थ ७१, पंक्ति १-७।

आधार पर कभी ऐश्वर्यशाली बन जाने का ही कोई प्रयत्न किया। उन्होंने, अपने गृहादि का परित्याग करके, आध्यात्मिक साधना एवं लोक सग्रह की वृत्ति अपनायी तथा तदनुसार ही वे बराबर जन कल्याण के वायु में लगे रहे और सब साधारण को एक आदर्श सात्विक जीवन यापन करने का सदुपदेश भी देते रहे। उनके विचार अत्यंत व्यापक थे और उनमें सब कहीं उनकी सम-व्याप्तक दृष्टि का प्रभाव लक्षित हो रहा था और यही कारण था कि उनके अनुसार निर्मित की गई 'नियमावली' में, कतिपय साम्प्रदायिक सी दीक्ष पढ़ने वाली बातों के आ जाने पर भी, उसमें किसी प्रकार की सकीर्णता के टूटने का प्रयास बहुत कम किया गया है। उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय भी आरम्भ से ही, जनसाधारण के उपयुक्त धार्मिक जीवन का ही प्रतिपादन करता आया और इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि इसके प्रारम्भिक अनुयायियों में भी अधिकांश वे ही लोग थे जो गृहस्थ जाटो वाले समाज के थे। जाम्भोजी ने कदाचित् उ ही के लिए सब प्रथम किसी 'श्रवजूवाट' अर्थात् सीधे वा सहज मार्ग के आदर्श की कल्पना भी की थी और उन्हें बतलाया था कि "जो कोई इस 'श्रवजूवाट' को अपना लेगा वह, देहावसान में अनंतर, स्वर्ग पहुँच जायगा"।^१ उन्होंने यही बात फिर अयन, राजयवग को भी सम्बोधित करके कही और उन्हें चेताया कि "हे राजेन्द्र, कूड माया-जाल में न भूलो, प्रत्युत उससे पथक 'श्रोजू की वाट को अपनाओ'"^२। इस मार्ग में न तो किसी प्रकार के प्रपञ्च का प्रलोभन आ सकता है और न किसी पाश्वर्य के कारण, विषयगामी बन जाने का भय ही वाधा डाल सकता है। इसके दोना पाश्वर्य, भ्रमण 'विचार' एवं 'आचार' के द्वारा सुरक्षित हैं, जिस कारण यह ठीक सीधी और ही जाता है। "बान् विवाद के भ्रम जाल में पड़े हुए लोग, आचार विचार के स्वाद को नहीं जान पाते,"^३ तथा जो सदाचारी आचार में लीन है और जिसकी सयम शील एवं सहज में पूरी आस्था है, उसे कभी आवागमन की आका भी नहीं हो सकती।^४

२

जाम्भोजी का जीवन काल सन् १५०८ से लेकर सन् १५९३ तक ठहरता है, जिस कारण, जहां तक पता है राजस्थान के क्षेत्र वाले हिंदी के प्रमुख सत-कविया में ये सबसे प्राचीन कहे जा सकते हैं। परन्तु आश्चर्य की बात है कि इनके विषय में, अभी तक हम पूरी जानकारी नहीं हो पाई थी और न इनकी यथेष्ट रचनाएँ ही उपलब्ध हो सकी थी। इनके द्वारा प्रवर्तित 'विष्णोई सम्प्रदाय' के प्रचार और प्रसार का, राजस्थान मध्य

१ 'श्रवजूवाट जे नर भया, काची काया छोड़ि कवलासे गया।'

—सवदवाणी, सवद २२ पवित ३४।

२ 'कूड माया जाल न भूलि रे राजेन्द्र, अलगी रही श्रोजू की वाट।'

—वही, सवद १०४, पवित ३४।

३ 'भरमी भूला वाद विवाद, आचार विचार न जाणत स्वाद।'

—वही, सवद २८, पवित ६६-६७।

४ 'को आचारी आचारे लीएँ, सजमे सीले सहज पतीना।

तिहि आचारी नै चीहत कौए, जिहि की पूक सहज आवागोग ॥

—वही सवद ५२, पवित १२-१५।

प्रदेन, पञ्जाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में होना बतसाया जाता है तथा यहाँ तक भी कहा गया मिलता है, कि उसने कुछ न कुछ अनुयायी बिहार एव नेपाल राज्य में भी पाये जाते हैं। इस कारण, उनकी सख्या भी बढ़ाचित्, नगण्य नहीं हो सकती और न, बिना उनके विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किये, उनके महत्त्व को किसी प्रकार कम ही माना जा सकता है। इसके सिवाय, इधर पात हुआ है कि विष्णोई सम्प्रदाय ने अनुयायियों में बहुत से ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने अपने प्रकार के साहित्य की रचना की है तथा उसका बहुत सा भाग स्वयं इनकी जीवनी आदि से सम्बन्ध रखता है। किन्तु फिर भी न तो इनका कोई उल्लेखनीय परिचय अभी तक दिया जा सका था और न, वसे ग्रन्थों के आधार पर, इनकी विचारधारा अथवा इनके किसी प्रभाव की चर्चा ही हो पाई थी जिसके द्वारा इनकी और हमारा ध्यान जा पाता। हो सकता है कि यह उन प्रकार के साहित्य के प्रकाश में न आने से अथवा, इस कारण से भी, नहीं हो सका था कि उसके प्रति कोई न कोई साम्प्रदायिक भावना मात्र बना ली गई थी और उसे उतना महत्त्व प्रदान नहीं किया गया था जिसके फलस्वरूप हम आज तक जाम्भोजी की उन सुन्दर बानियों के अध्ययन से भी वंचित रहते चले आये जिनकी रचना उन्होंने अपने विचित्रतम एव कष्ट जीवन में प्राप्त अनुभवों के आधार पर की है।

डॉ० हीरालालजी भादेश्वरी द्वारा प्रस्तुत किए गये ग्रन्थ 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' के प्रथम अध्याय के देखने से पता चलता है कि उन्हें इस विषय से सम्बन्धित एक विशाल साहित्य का परिचय प्राप्त हो गया है। उन्होंने महा पर इसका अतन्त्रत ऐसी ४०० से भी अधिक रचनाओं का नामोल्लेख किया है तथा उनके वण्य विषयों की और सबेत् करते समय, कभी कभी, उनका कोई न कोई आलोचनात्मक विवरण तक भी दे दिया है जिसके आधार पर हमें इस बात के स्पष्ट हो जाते देर नहीं लगती कि हम, उन्हें तदनुसार, कई विभिन्न कोटियाँ में स्थान दे सकते हैं। उनमें बहुत सी ऐसी रचनाएँ हैं जिनका विषय प्रमुखतः जाम्भोजी का जीवन चरित कहा जा सकता है, किन्तु फिर भी, उनमें से सभी के अतन्त्रत उसका पूरा परिचय दिया गया नहीं पाया जाता और न उन्हें, किसी ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा गया ही कहा जा सकता है। उनमें से कई में या तो जाम्भोजी के बचपन जैसे विषयों की चर्चा कर दी गई मिलती है अथवा कतिपय घटनाओं का बणन कर दिया गया दीखता है। इसी प्रकार, उनके भीतर वर्णित अन्य विषयों में, अनेक ऐसी कथाएँ आती हैं जिन्हें प्रातगिक मात्र कहा जा सकता है अथवा स्वयं जाम्भोजी के विविध चमत्कारों का लीलाभा के भी नाम लिये जा सकते हैं। इसके सिवाय, उनमें कभी कभी बहुत सी उन बानियों को भी स्थान दिया गया दीख पड़ता है जो उनकी अपनी रचनाएँ नहीं जा सकती हैं तथा जो वहाँ सगृहीत कर ली गई हैं अथवा वहाँ पर केवल वसे पद्य ही रखे गये हैं जो उनके सम्बन्ध में प्रशंसात्मक शाली में रखे गये हैं। इस प्रकार एकर की गई सभी रचनाएँ विभिन्न छंदों या काव्य रूपा में हैं और उट्ट प र्ण, सात्वियों व साधारण भजनों की अथवा अथवा कवितादि जैसे विविध

छात्रों की थोड़ी भ भी रखा जा सकता है। बहुत से छात्रों के विषय तो निरे साम्प्रदायिक से भी लगते हैं।

परन्तु यहां पर केवल उक्त अध्ययन मामलों का ही विवरण देकर नहीं छोड़ दिया गया है। इसके लेखक ने इसके द्वितीय अध्याय के प्रारंभ में, इस ओर किया गया उस काय का भी महत्वपरिचय दिया है, जो इस समय तक 'विद्यार्थी सम्प्रदाय' वाले लगकों अथवा इतर लेखकों द्वारा सम्पन्न किया जा चुका है, और उस पर अपनी ओर से टिप्पणी लगाते समय, यहाँ उसका मूल्यांकन भी कर दिया गया है जिसके द्वारा वैसे प्रयत्नों की उपलब्धियों पर प्रकाश भी पड़ जाता है। इनमें से प्रथम बग की पुस्तकों में से कई बसी हैं जो हमारे सामने लगभग वही चित्र उपस्थित करती हैं जो उक्त प्रथम अध्याय वाले प्रथा में पाये जाते हैं किन्तु थोड़ी सी ऐसी भी हैं जिन्हें किसी रूप में विवेचनात्मक भी ठहरा सकते हैं तथा जिनके लिए कहा जा सकता है कि वे आधुनिक प्रवृत्तियों द्वारा कुछ न कुछ प्रभावित होकर भी लिखी गई हैं। इस प्रकार की पुस्तकों की विशेषता अधिकतर इस बात में देखी जा सकती है कि वे किन्हीं 'जानकारों' द्वारा लिखित नहीं जा सकती हैं तथा इसी कारण यह कुछ अष्टियों से प्रामाणिक भी समझा जा सकता है। इनमें उतना अनुमान का धराया जा सकता नहीं कहा जा सकता जितना किसी न किसी आग्रह का भाव धराया माना जा सकता है। इसके विपरीत, जिन लोगों को इसके पहले 'इतर लेखक' नाम से सूचित किया गया है उनके विषय में, कहा जा सकता है कि यद्यपि उ होने अपनी कोई बात उक्त प्रकार से साधिकार नहीं कहें हैं, फिर भी उनके ऊपर किसी प्रकार के आग्रह का दोष भी नहीं मढ़ा जा सकता।

पुस्तक के तृतीय अध्याय के अनंतर इसका खण्ड १ समाप्त हो जाता है और फिर चतुर्थ अध्याय से लेकर इसके अन्त में अध्याय तक, जाम्भोजी उनकी वानी, विचार धारा एक सम्प्रदाय के प्रथम आते हैं, जो इसके खण्ड २ के विषय हैं। इसके उक्त तृतीय अध्याय में उस काल वाली युगोपरिस्थिति का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है जिसके परिपेक्ष्य में उहोंने न केवल अपना जन्म ग्रहण किया था अपितु जिसमें रह कर उहोंने अपना सारा काय भी सम्पन्न किया था। यहां पर उनके 'बागड देश' का भौगोलिक परिचय दिया गया है उनके आधिभारत-काल की राजनीतिक स्थिति का दिग्दर्शन करा दिया गया है तथा इसके साथ ही, उन तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिवेशों का भी एक चित्र उपस्थित कर दिया गया है जिनकी वस्तुस्थिति की ओर ध्यान देते हुए, उहोंने उनमें समुचित सुधार लाने का प्रयास किया था। उस समय वाले जनसमाज का स्वरूप क्या था, उसकी नतिक दशा कसी थी तथा किस प्रकार के धार्मिक जीवन को उन दिनों महत्त्व दिया जा रहा था अथवा इन सारी बातों के फलस्वरूप, उस काल के लोग कहा तक पतनशील बनते जा रहे थे, इस बात का सूक्ष्म निरीक्षण कर लेने पर ही, उहोंने उसके सुधार हेतु अपना कृत्य निर्धारित किया था। हमने इसका अनाधिक उल्लेख, इसके पहले ही कर दिया है और यहां पर हम केवल इतना ही कह देना है कि इस पुस्तक के विद्वान लेखक ने यहां पर इस प्रथम

की विवेचना बड़े ही अच्छे ढंग से की है तथा उसे इस प्रकार हमारे सामने रखा है, जिससे हम जाम्भोजी के द्वारा निश्चित किये जाने वाले धादश तथा उसकी उपनिष के लिए नियोजित भावी काम तम की एक रूपरेखा भी समझ पढ़ने लगे।

पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में जाम्भोजी के जीवन-वृत्त की चर्चा की गई है और इसका परिचय देते समय भरसक उन्हें ऐसे ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में ही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है, जिसे आजकल की दृष्टि से यथाम्भव विद्वग्मनीय ठहराया जा सके तथा जिसके प्रति कम से कम भापत्ति की गुंजायश भी पायी जा सके। यह साधारणतः देखा जाता है कि जाम्भोजी जैसे धार्मिक महापुरुषों के जीवन वाली विविध घटनाओं का उल्लेख करते समय, उनके जीवनी-लेखक उनके सम्बन्ध में प्रचलित जनक चमत्कारों वाली किम्बदन्तियों का बखान किये गिना नहीं रह पाते। प्रस्तुत पुस्तक की यह एक विशेषता जान पड़ती है कि यहाँ पर, जाम्भोजी के जीवन-वृत्त का परिचय दते समय-इसके लिए प्रायः सदा केवल विष्णोई लेखकों की ही रचनाओं से सहायता ली गई दीस पड़ती है किन्तु ऐसा करते समय भी, उन चमत्कारपूर्ण घटनाओं के उल्लेख का लोभ सवरण करने की ही चेष्टा की गई है, जिनसे वे आधार ग्रन्थ अधिकतर भरे पाये जाते हैं। उनकी और बड़ी-बड़ी सबेसत अवश्य कर दिया गया है किन्तु इसके साथ ही कभी-कभी, उनमें से कुछ के निरसन का भी प्रयास किया गया है। हाँ, इस सम्बन्ध में हमारा ध्यान, एक अन्य बात की ओर भी गये बिना नहीं रहता और वह जाम्भोजी एक जसनाथजी के मिलन-प्रसंग की है जिसका बखान जसनाथ सम्प्रदाय वाले साहित्य के अतगत वही कहीं बड़े विस्तार के साथ किया गया पाया जाता है। ये दोनों ही महापुरुष समकालीन थे तथा इनके निवास स्थान भी एक दूसरे से बहुत अधिक दूर न थे, जिस कारण इन दोनों के बीच कभी न कभी, भेंट हो जाने की बात प्रायः असम्भव नहीं कहला सकती थी। इसके अतिरिक्त, जसनाथी सिद्ध रामनाथ ने इस प्रकार की घटना का बखान स्पष्ट शब्दों में किया है तथा वहाँ इसका परिचय देते समय दोनों के पारस्परिक सवाद की चर्चा तक भी दी गई मिलती है, जिसे देखते हुए इसका कोई न कोई समीक्षात्मक निराकरण कर देना आवश्यक था, परन्तु जहाँ तक हम जान पड़ता है, इस विषय की ओर यहाँ पर कोई संकेत नहीं किया गया है।

इस पुस्तक वाले पंचम अध्याय के अतगत सत जाम्भोजी के दर्शन एक अध्यात्म का विवेचन किया गया है। इसके लेखक ने, ऐसा करते समय अपने प्रत्येक बचन के लिए, किसी न किसी उपयुक्त आधार की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है तथा इस संबंध में उस महापुरुष की उपलब्ध 'सवदवाणी' की पंक्तियों का हवाला तक भी दिया है। यहाँ पर न बचन उनकी प्रमुख विचारधारा तथा उनकी दृष्टि में उसके लिए सवदा उपयुक्त पाई जाने वाली साधना विधेय का ही उल्लेख किया गया है, अपितु कतिपय उन बातों का भी प्रसंग किया गया है जो उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय के अतगत, साम्प्रदायिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। इसके सिवाय, इसी प्रसंग में यहाँ पर उन कई 'परासों' की जाम्भोजी द्वारा की गई आलोचना का भी परिचय करा दिया गया है, जो

उग काल में प्रचलित योग पथ इस्नाम-धम एव हिंदू धर्म के भीतर धा गये थे तथा जिनके ऊपर, समय समय पर, मन बबौर जने कुछ धार्मिक महापुरुष भी, उसके पथ से ही, प्रहार करते आ रहे थे। जाम्भोजी न भी अधिकतर उन्हीं की आलोचना शक्ती अपनायी तथा ऐसा करते समय, इन्होंने भी उद्धृत स्पष्ट शब्दों के प्रयोग किये।

पुस्तक का पठ अध्याय, अर्थात् सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जा सकता है क्योंकि इसी के अन्तर्गत उपलब्ध 'जम्भवाणी' संगृहीत की गई है तथा उसके पाठों से सम्प्रतिष्ठित विषयों पर प्रकाश भी डाला गया है। इसके लेखक ने उसका संपादन करने से पूर्व उन कई प्रतियों की उद्धरण परीक्षा की है जो उसे विभिन्न स्थानों से मिल सकी हैं तथा जिन्हें उनमें अपने विचार से अधिक विश्वपनीय एवं प्रामाणिक माना है। उसने उनमें से केवल ७ को चुनते हुए योग ४१ के लिए कहा है कि ये भी सम्भवतः उन्हीं की 'गाथा' वाली उद्धरायी जा सकती हैं तथा फिर उन्हीं की उनमें अन्तर्गत परीक्षा भी विस्तार के साथ की है। हमने सिवाय उसने उनके प्रतिलिपि-सम्बन्ध की चर्चा की है, तथा मन्त्र प्रतीकानुसार उनका एक सख्या सूची भी दे दी है जिससे सारा चित्र सम्बन्ध रूप से सामने आ जाता है। अन्त में अपने सम्पादन-सिद्धांतों की एक संक्षिप्त रूपरेखा तथा कतिपय अपवादात्मक भी उल्लेख करके, उक्त 'पाठ संपादन-भूमिका' समाप्त की है, और इसके आगे उन १२३ वानियों का पाठ प्रकाशित किया गया है जो वास्तव में जाम्भोजी द्वारा रचित मानी जानी योग्य समझी गई हैं तथा उनमें पाये जाने वाले प्रमुख पाठभेदों की ओर संकेत कर देने के उद्देश्य से, उनके नीचे आवश्यक टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं, जिससे यह सारा कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किया गया कहला सकता है और इसके लिए पुस्तक का लेखक हार्दिक बधाई का पात्र है। 'जम्भवाणी' वाले प्रस्तुत पाठ के देखन से पता चलता है कि यहाँ पर एकाग्र एव 'सर्वद' अथवा उनकी पकितया का समावेश हो गया है जिन्हें हम अपने दूसरे कवियों की भी रचनाओं में संगृहीत पा सकते हैं। इसके संपादन ने इन बातों की ओर भी संकेत कर दिए हैं तथा कम से कम नाथों की कतिपय वानियों के साथ, वस म्यलों की तुलना भी की है।

इस पुस्तक के अन्त में अध्याय में 'विष्णोई सम्प्रदाय' का शीघ्र देकर उसका विवरण दिया गया है। इसके अन्तर्गत जाम्भोजी के विशिष्ट व्यक्तित्व, उनकी सर्वदवाणी, उनका छन्द विषय, आदि के विषय में चर्चा की गई है, तथा 'साखी' एवं 'हरजस' में पाये जाने वाले अन्तर्गत उल्लेख करते हुए ऐसी अन्य जाम्भोजी की (जाम्भाणी) रचनाओं के विषय में भी कुछ विचार प्रकट किये गये हैं जिनकी ओर समुचित ध्यान दिया जा सकता है। इस अध्याय के पाँचवें प्रकरण अर्थात् 'सम्प्रदाय का स्वरूप' नामक उप शीघ्र से आगे जाम्भोजी द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय की विस्तृत चर्चा का आरम्भ किया गया है और इसमें उसके तमिक विकास एवं वर्तमान रूप का एक दिग्दर्शन भी करा दिया गया है। इसमें उसके विभिन्न नाम और उसके 'विष्णोई' या 'विष्णोई' नाम के 'मूल कारण' पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है तथा इसके अतिरिक्त, यहाँ पर उन विशिष्ट कार्यों की ओर भी हमारा

ध्यान धारण कर लिया गया है जिसे लिए बीष्णोई एवं जाम्भोजी जगद्गुरु बिष्णोई जी की परावर श्रेय दिया जाता था। इसी प्रकार इस धर्मग्रन्थ के अन्तर्गत विष्णु, रामदास की या यागों, उनका विषय था। उनसे सम्बन्ध, उनका सम्बन्ध। और गुणों की वृत्त २६ विष्णोई साहित्य का भी परिचय दिया गया है। गुणों के अन्तर्गत मान उद्यम प्रभाव की धार सक्त भी कर दिए गए हैं। इस धर्मग्रन्थ के अन्तर्गत विष्णु के विवरण अत्यन्त रोचक जान पड़ते हैं और उनके ध्यान पर लेना अनुमान भी दिया जा सकता है कि जाम्भोजी तथा उनका उद्यम सम्प्रदाय का अन्तर्गत भी गुणों के अन्तर्गत ही।

'बिष्णोई साहित्य' का योग्यता तो इस सम्बन्ध में और भी अधिक उच्च मान्य ठहराया जा सकता है जिसके विषय में, इस गुणों का ध्यान भी धर्मग्रन्थों में अत्यन्त एव तबम के भीतर, कुछ विस्तृत यगन किया गया है। अष्टम अध्याय में ११ दिशाओं के साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवरण दिया गया है जिनमें म कुण्ड के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट सक्त मिलने का कारण, उह अज्ञात कहा गया है। इस उद्यम कवियों एवं लेखकों में स कई ऐसे हैं जिन्होंने विस्तृत साहित्य की रचना की है तथा जिनके विषय में कहा जा सकता है कि वे कतिपय प्रसिद्ध साहित्यकारों में भी अग्रणी मान योग्य रहे होंगे। उनके द्वारा रच गये ग्रन्थों के विविध विषय, उनकी रचना करने पर काश्य रूपों के ऊपर एक आधारणी सी दृष्टि डालने पर भी हम इस बात का पता चलत दर नही लगती कि ऐसी क्षेत्र में उनसे कुछ की योग्यता बहुत अच्छी रही होगी तथा वे कलाकार तक भी कहला सकते होंगे और इसके आधार पर, हम इस बात की आवश्यकता का भी अनुभव होने लग जाता है कि उह क्षेत्र प्रकाश में आना चाहिए। उस क्षेत्र में विष्णु और ऊँजी नाम (संवत् १५०५-९४), महोजी गोठारा (संवत् १५४०-१६०१) बीष्णोई (संवत् १५८६-१६७३) केमोजी गोठारा (संवत् १६३०-१७३६) मुरजनदासजी पुनिया (संवत् १६६०-१७४८) तथा हरजी वलियाळ (संवत् १७४५-१८३५) जैसे साहित्यकारों के नाम दिए जा सकते हैं जिन्होंने कुछ उल्लेखनीय रचनाओं का निर्माण किया है। इनके विषय में दिये गये परिचयों के द्वारा जान पड़ता है कि इनका काय अग्रणी और विशेष लोकप्रिय भी रहा होगा। जो तो यदि देखा जाय, तो कुछ अन्य ऐसे लोग भी मिल सकते हैं जिनकी कृतियों को अपने अपने ढंग से बहुत कुछ महत्त्व प्रदान किया जा सकता है तथा वे उपयोगी भी सिद्ध की जा सकती हैं।

इस सम्बन्ध में यहाँ पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि पुस्तक के अष्टम अध्याय में दो चार ऐसे साहित्यकारों की भी चर्चा आ गयी पाई जाती है जिनके नाम-साम्य के आधार पर कुछ श्रुति भी उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए इसके अन्तर्गत किसी वाजिदजी (संवत् १५३०-१६००) का परिचय आया है जिसे हम उन प्रसिद्ध दादूपथी वाजिदजी से अलग ठहराने लग सकते हैं जिनकी गणना मत आदालत के १५२ विष्णोई में की गई मिलता है तथा इसी प्रकार यहाँ किसी रदास धरतवाळ (संवत् १५३०-१६००) का भी वरण किया गया मिलता है जिसे हम प्रसिद्ध सत रदास मान लेने की प्रवृत्ति होती है। लेखक ने इन दोनों के विषय में लिखते समय, इन्हें उद्यम नाम साम्य वालों से भिन्न बतला

दने का प्रयत्न किया है किंतु जब तक इनकी सारी रचनाएँ प्रकाश में नहीं आ जाती और ऐसे नामों वाले इनसे भिन्न कवियों की उपलब्ध रचनाओं के साथ, उनकी ठीक ठीक तुलना नहीं कर ली जाती तब तक अतिम निरूपण नहीं हो सकता। अभी कुछ दिनों पूर्व जिस समय श्री मंगलदासजी स्वामी द्वारा सम्पादित 'श्री महाराज हरिदासजी की वाणी' का प्रकाशन हुआ था, और उसके उत्तर भाग में, परिचित कराये गये निरञ्जनी सत कवियों में, पीपादास का भी उल्लेख किया गया था, उन दिनों इस प्रश्न के ऊपर एक विवाद भी खड़ा हो गया कि क्या यह कवि प्रसिद्ध सत पीपाजी से कहीं अभिन्न तो नहीं ठहराया जा सकता ? तथा कभी कभी किसी एक रचना में बस नाम के आ जाने के कारण, उसके विषय में यह समस्या उठायी जाने लगी कि वह, उनमें से किस की वही जा सकती है, जिसका समाधान कदाचित् अभी तक नहीं हो पाया है। अतएव, ऐसे नाम साम्य वाले कवियों के सम्बन्ध में कुछ निश्चय कर पाने के लिए, उनकी विशेषताओं का पता लगा लेना भी उचित होगा।

इस पुस्तक वाले अंतिम अर्थात् नवम अध्याय के अंतगत विष्णोई-साहित्य के महत्त्व उसको देने तथा उसके मूल्यांकन का प्रयास किया गया है और, ऐसा करते समय सब प्रथम, राजस्थानी-साहित्य की उन विशिष्ट प्रवृत्तियों एवं रचना-शैलियों के ऊपर विचार किया गया है, जो उस क्षेत्र में, जाम्भोजी के आविर्भाव काल के पहले से ही पायी जाती आ रही थी और उहूँ यहाँ पर उनके विभिन्न नामों के अनुसार निर्दिष्ट भी किया गया है। इसके लेखक की अपनी मायता यह जान पड़ती है कि जिस प्रवृत्ति विषय का पता हम जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओं में चलता है तथा जिस रचना शैली का उनके द्वारा प्रयोग में लाया जाना कहा जा सकता है, उनके आधार पर निर्मित किये गये साहित्य के विषय में हम किसी एक नवीन प्रकार की काय धारा की भी कल्पना कर सकते हैं। लेखक ने उसका 'सिद्ध काव्य धारा जमा नामकरण किया है तथा उसका अनुमान है कि इसके कारण राजस्थानी साहित्य के इतिहास में, एक नया मोड़ आ गया दीखता है और वह, सबप्रथम, जाम्भोजी की रचनाओं में ही स्पष्ट होता है। लेखक ने बसे नाम की सायकता प्रनिपादित करते हुए हम बतलाया है कि इसका एक लक्षण यही किसी अभिव्यक्ति में मिल सकता है जो सिद्ध विषय के साथ सम्बन्धित हो और वह यहाँ अध्यात्म के क्षेत्र में पायी जाती है जो स्वयं नवीन है। उसके सिवाय यहाँ पर इन बातों की और भी हमारा ध्यान दिलाया गया है कि जाम्भोजी, उनके अनुयायी तथा स्वयं जसनाथजी भी उन दिनों सिद्ध कहे जाते रहे जिस कारण उनकी रचनाओं को भी 'सिद्ध काव्य' ही कहना चाहिए। इस प्रकार, जहाँ तक राजस्थानी साहित्य के इतिहास का चर्चा का सम्बन्ध है, उस दशा में, इस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती।

परन्तु इस प्रकार की धारणा को उक्त सीमा के बाहर की भी दृष्टि से प्रथम देने लगने पर यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि 'क्या तब हम मत जाम्भोजी की वाणी को किसी ऐसी कोटि विशेष में रख सकते हैं जो सत कवीरादि की रचनाओं के विचार से कुछ सीमित, अथवा उक्त प्रकार से विचित विलम्बण से भी कहीं जा सकती है ? इसके अतिरिक्त, 'साधारण विचार प्रधान कममय जीवन' क्या सत कवीरादि के भी साहित्य की साधारणभूमि

नहीं ठहराया जा सकता ?” यह एक श्रय भी होगा प्रश्न है जिसका समाधान होता साधारणतः उक्त प्रकार की धारणा के बल पर सम्भव नहीं प्रतीत होता तथा अभी दशा म 'सत' एवं 'सिद्ध' शब्दों के अर्थ की अपेक्षित व्यापकता भी बाधा उपस्थित कर सकती है। भारतवर्ष में इस प्रकार की धारणा बनाने की आवश्यकता हम केवल तभी जान पड़ती है जब हम सत कबीरानि के किसी निगु नियम मात्र के नाम विनियम द्वारा अभिहित करने लग जाते हैं तथा इस प्रकार, हम जाम्भोजी जैसे कतिपय सत जो प्रत्यक्षतः सगुणवादपरक बातें भी करते शीघ्र पड़ते हैं, उनसे बहुत कुछ भिन्न से लगने लगते हैं। यदि हम ऐसा न करके सत काव्य की उस विनिष्ट धारा की ओर भी ध्यान दें जो कभी महाराष्ट्र की ओर ज्ञानेश्वरादि सतों के युग में प्रवाहित हो रही थी तथा जिसका प्रमुख स्वर किसी परात्पर परमात्म तत्त्व के साथ सलग्न रहने के कारण उस केवल निगुण श्रयवा सगुण परक मात्र ही नहीं रहा जा सकता था, तो हमारी उक्त भाति दूर हो जा सके। हम तो ऐसा लगता है कि वस्तुतः उक्त प्रकार की प्रवृत्ति ही पीछे, उत्तरी भारत वाले सतों तक की रचनाओं के अंतर्गत भी लीति होती आई तथा सत कबीर की वाणी में उसके, निगुण पक्ष की ओर, अपेक्षाकृत कुछ अधिक उन्मुख प्रतीत होने के कारण उहे 'निगुणवादी मान समझ लिया गया, जो कदाचित् उसके प्रति श्रयाय भी कहा जा सकता है। ऐसी दशा में 'तथ्य' यह हो सकता है कि मूलतः एक ही सत वाक्य में एक ओर जहाँ सत कबीर, सत दाहू, सत गुरु नानक जैसे कई सत कवियों की रचनाओं का समावेश किया जाता है जिनमें निगुणवादी स्वर कुछ अधिक सुगुरित प्रतीत होता है, वहाँ दूसरी ओर, उसमें सत जाम्भोजी, सत हरिदास निरजनी मन साधनाम एक सत चरणदास जैसे अनेक सत कवियों वाली कृतियाँ भी समान भाव के साथ, उचित स्थान दिया जाता है। इस दूसरे वगैरे सत कवि भी उन परम तत्त्व को ही लक्ष्य करके अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं, कि तु इनके यहाँ निगुण पक्ष श्रयवा सगुण पक्ष म से किसी ओर भी अपेक्षाकृत अधिन मुक्तक नहीं जान पड़ता। इस बात की ओर समुचित ध्यान न दे सकने के ही कारण सम्भवतः स्व० डा० दत्तवाज को इस प्रकार अनुमान करना पड़ा था कि, यदि हरिदास निरजनी की जमी रचनाओं का पूरा पता चल सके, तो हम इनके आधार पर नामकवियों तथा सतों के बीच की किसी एक ऐसी कड़ी विनियम का भी परिचय पा सकते हैं जिसमें निगुण एवं सगुण दोनों पक्षों को एक साथ स्थान दिया गया हो (Preface to the Nirgun School of Hindi poetry pp II & III)

जो हा, इतना स्पष्ट है कि 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' नामक प्रस्तुत पुस्तक बड़े परिश्रम एवं मनोयोग के साथ लिखी गई है तथा इसे एक सवधा सुव्यवस्थित रूप दिया गया है। निम्ने वाले सत साहित्य के सम्बन्धी अध्ययन की ओर यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है जो मराठनीय एवं अनुसूचीय है। मुझे आशा है कि सत साहित्य के सभी प्रेमियों द्वारा उचित स्वागत किया जायगा तथा वस वाटमय के अन्तर्गत म इसे एक विरहायी स्थान प्रदान किया जायगा।

— परशुराम चतुर्वेदी

मुखबन्ध

१

जाम्भोजी का जन्म सन् १५०८ म पीपामर (नागीर राजस्थान) नामक गाव के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित राजपूत परिवार मे हुआ था। इनके पिता लोट्टजी ऊमट शास्त्रा क पदार तथा माता ह्रीसा (अपरनाम-केतर) छापरा (बीकानेर राजस्थान) के मोहकमसिंह भाटी की बेटी थी। जाम्भोजी का जन्म ब्रह्मचारी रहे थे। सन् १५४२ म इन्होंने पीपामर से चार कोस दूर स्थित सम्भरायल नामक रेत के बहुत बड़े और ऊँचे टीले (धोरे) पर विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और सन् १५६३ म वे यहीं पर वकुण्ठवासी हुए थे। जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था किन्तु उनका विशेष कायक्षेत्र राजस्थान रहा था। ठेठ मरुनाया मे उन्होंने वाणी-कथन किया था। सम्प्रदाय मे जन्मवाणी "सवदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है तथा यह अत्यन्त पवित्र, स्वत और अतिम प्रमाण मानी जाती है। विष्णोई सम्प्रदाय उत्तरी भारत के सत सिद्ध सम्प्रदायों म पहला सम्प्रदाय है। विष्णोइया ने साम्प्रदायिक मायताओं और वचारिक परम्पराओं को एक जीवन पद्धति के रूप मे स्वीकार किया है। अत विष्णोई समाज का सांस्कृतिक धरातल कुछ भिन्न और विगिष्ट है। इस सम्प्रदाय मे अनक महान कवि हुए हैं, जिन्होंने अनेक प्रकार की उत्कृष्ट रचनाएँ साहित्य ससार को प्रदान की हैं। इन रचनाओं की विषयवस्तु का फलक व्यापक रहा है। स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त, वक्त्रव्य वस्तु का सचयन सम्प्रदाय, इतिहास, पुराण और लोक चार क्षेत्रों मे विनैष रूप से किया गया है। बहुत सी रचनाएँ रूप, प्रवृत्ति और गुण की दृष्टि मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उत्प्रेम्ननीय है कि साहित्यिक दृष्टि म उत्कृष्ट कोटि की सभी रचनाएँ सा प्रदायिक और धार्मिक वातावरण एव आग्रह से रचयी मुक्त है।

प्राय सभी रचनाएँ मरुभाषा मे हैं कुछ पिंगल और खी बोली म भी हैं। कवियों ने समय विशेष म लोगो मे प्रचलित मरुवाणी म भावाभिव्यक्ति की है। इसी प्रकार, मरुप्रदेश म प्रचलित पिंगल (वजभाषा) और लखी बोली को अपनाया गया है।

२

हिंदी और राजस्थानी भाषा, इनके साहित्यो, साहित्यिक प्रवृत्तिया वचारिक परंपराओं, काव्यरूपो तथा सम्प्रदाय, संस्कृति, समाज और इतिहास आदि क्षेत्रा म जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और उसके साहित्य की दृष्ट ही महत्त्वपूर्ण और महत्त्व देन है। स्वतन्त्र रूप म भी राजस्थानी और हिंदी की प्रमुख काव्यधाराओं के समानांतर प्रवृत्तमान विष्णोई काव्यधारा और सम्प्रदाय की वचारिक परम्परा का विगिष्ट स्थान है। राजस्थानी और हिंदी काव्य तथा राजस्थान और अन्य क्षेत्रा के भी, बहुत से सत सम्प्रदायो की पूर्ववर्ती और परवर्ती अनेक प्रकार की परम्पराओं को सम्यक रूप मे समझने, उनके समुचित मूल्या-

पन करने एक बोलचाल की मरुभाषा के समय विज्ञेय के पान और नम निवास के लिए, यह साहित्य और सम्प्रदाय, महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक साधन है। साहित्य, बिना तन और मस्तिष्क के क्षेत्र में इनसे अनेक नई दिशाओं का बाध और सकेत, लुप्त और दूरी हुई कवियों का साधन, कतिपय समस्याओं का समाधान और अज्ञात विषयों का प्रमाण मिलते हैं। आर्याण काव्य, लोगो की बोली के गुंदाशुद्ध सप्रमाण प्रयोग विषयक रचनाओं का प्रणयन आदि कतिपय क्षेत्रों में तो इस साहित्य की देन अनुपम है। आर्याण काव्य-परम्परा का सूत्रपात विष्णोई कवियों की रचनाओं से होता है। यहाँ देगी भाषा में नाटकों का बीज वपन आर्याण काव्यों की मनोभूमि में हुआ है। विष्णोई समाज गतिशील और प्राणवान समाज है। इस सम्प्रदाय, प्रवक्तृ की वाणी और साहित्य सम्बन्धी विवेचन और प्रामाणिक जानकारी, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन के लिए परम उपयोगी है। सिद्ध मन्त्रों और उनकी वाणी परम्परा में विष्णोई साहित्य, जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धों का गौरवपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत प्रबंध में यथास्थान उपयुक्त सभी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सकेत-उल्लेख किया गया है।

३

अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ, देन और कतिपय होत हुए भी अभी तक जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और इसके साहित्य का स्थूल रूप से परिचय मात्र भी साहित्य सत्तार को नहीं है। और तो और, राजस्थान भाषा और साहित्य पर काय करने वाले विद्वानों के लिए भी यह विषय अज्ञात विषयों का अज्ञात और अज्ञात ही रहता है। इसके कतिपय प्रधान कारण ये हैं—१-सम्बन्धित सामग्री का प्रकाश में न आना २-परिचित प्रकाशित सामग्री का भी सामान्यतः उपलब्ध न होना तथा उनमें अशुद्ध-ज्ञान का उल्लेख न होने के कारण प्रामाणिकता पर सन्देह ३-पद्यान्त लक्षण और शब्द का अभाव, ४-मूलभूत सामग्री के प्राप्ति स्रोतों विषयक अज्ञता तथा उसकी उपलब्धि में अनेक कठिनाइयाँ ५-भाषा-दुरुहता ६-पूर्वग्रह और विषय-परिचय प्रवृत्ति ७-चारण, जन और लौकिक साहित्य की और विशेष ध्यान फलतः इस और उपेक्षा भाव, ८-साहित्य-विज्ञान विषयक खण्ड दृष्टिकोण, आदि।

४

विभिन्न गजेटियरों, जनगणना, सूचकांक और प्रशासन सम्बन्धी रिपोर्टों में ही अब प्रथम एक विनिश्चित धममन और उसकी मानने वाली जाति के रूप में विष्णोई समाज, सम्प्रदाय तथा उसके प्रवक्तृ के नाम जाम्भोजी का परिचय दिया जाता आरम्भ हुआ है। स्पष्ट ही उनका मूल में सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण प्रदान था। इस परिचय के निम्न क्षेत्र और समय विषय में विभिन्न स्रोतों में प्रचलित बातें और विवरणियाँ इनके लेखकों का आधार रही थीं। राजस्थान के इतिहास विषयक ग्रन्थों में भी इन्हीं आधारों पर एतद्-विषयक नामो-रस मात्र किया गया। विष्णोई साहित्य का तो परिचय मात्र भी इनमें नहीं मिलता। साहित्य के विद्वानों ने भी इन्हीं आधारों को अपनाया। सम्प्रदाय के व्यक्तियों द्वारा किए गए परिचित कार्यों में साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का ही प्राधान्य रहा। यही नहीं,

जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय विषयक मोटी मोटी बातों में भी इनमें परस्पर मतभेद मिलता है। अपने अपने सस्कार, रुचि और सामयिक वातावरण के अनुसार इन लेखकों ने बातें कही हैं जिन्हें भावना मुख्य है, तथ्य, प्रमाण और तर्क सगति सबका योग। यह सामग्री मात्रा यत सुलभ भी नहीं है। प्रमाण और तर्क सगति विचारणा का अभाव तो उपयुक्त दोनों ही प्रकार के कार्यों में है। हिन्दी में केवल दो ही उल्लेखनीय ग्रंथ हैं जिनमें जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सम्बन्धी उल्लेख मिलता है—(१) आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी द्वारा उत्तरी भारत की सात परम्परा तथा (२) प्रस्तुत पत्रिका के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य (संवत् १५००-१६५०)। इनमें भी विष्णोई कवियों और उनकी रचनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। पर्याप्त सामग्री के अभाव और अप्रामाणिक सामग्री के आधार से लिखे जाने के कारण, इनमें प्राप्त यत्किंचित् उल्लेख भी संशोधन की अपेक्षा रखते हैं।

५

यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध में सभी श्रेणी के परवर्ती लेखकों ने, यहाँ तक कि साहित्य से किसी न किसी प्रकार सम्बन्धित शोध ग्रंथ लेखकों ने भी अपने पूर्ववर्ती लेखकों के कथनों का अध्यानुकरण किया है। फलस्वरूप एतद्विषयक अनेक प्रकार की भूलों की उदरणी होती रही। इससे एक ओर जहाँ शोध ग्रंथों की गरिमा को आघात पहुँचा है, वहाँ दूसरी ओर साहित्येतिहास के प्रवाह को समग्रता में न देख सकने की दृष्टि भी धूमिल हुई है। अब तक इनसे केवल इतनी ही जानकारी हो सकी है कि जाम्भोजी महप्रदेश में उत्पन्न हुए एक सातवें और उहोन संवत् १५४२ में विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था। हमारे अध्याय के अंतर्गत दिये गये विभिन्न सन्दर्भों और उनके सार से इस कथन की सच्चाई सिद्ध होगी।

६

अनेक प्रकार की मूलभूत हस्तलिखित सामग्री और प्रमाणों के आधार पर व्यवस्थित रूप में लिखित प्रस्तुत प्रबंध के द्वारा इस अभाव की पूर्ति हो रही है। इसमें न केवल जाम्भोजी, उनके दशन, अध्यात्म विषयक विचार और विष्णोई सम्प्रदाय का ही, प्रत्युत सात महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जम्भवाणी का वैज्ञानिक सम्पादन और उसके विद्वान साहित्य का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत प्रबंध में अध्ययन के चार विशिष्ट पहलू हैं—१-जाम्भोजी, २-जम्भवाणी, ३-विष्णोई सम्प्रदाय तथा ४-साहित्य। इन सबको समाविष्ट करने कारण, समग्रता में एतद्विषयक प्रामाणिक और वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने का है, क्योंकि चारों ही पहलू अयोयाधित, परस्पर सम्बद्ध और अखण्ड इकाई के रूप में हैं। इस प्रकार, यह अपने ढंग का प्रथम तथा सबका मौलिक ग्रंथ है।

७

एतद्विषयक आधारभूत सामग्री केवल हस्तलिखित रूप में ही है और वह भी— १-सम्प्रदाय के सकोचशील विभिन्न पीढी (साधरियों और मंदिरों) और २-अनेक स्थानों के विष्णोई

व्यक्तियों के पास, अस्त-व्यस्त, अनेक इतर रचनाओं के बीच अगम्यद्वार और विशृंखल रूप में प्राप्त हुई है। ये साधारणों भी मरुप्रदेश में स्थित अनेक छाट छोटे गाँवों में कुछ दूर, जन शून्य स्थानों में अवस्थित हैं जहाँ आवागमन की विषय सुविधा नहीं है। दोनों प्रकार के स्रोतों और उनसे सम्बन्धित सामग्री का पता लगाना तथा किसी प्रकार प्राप्त कर अध्ययन करना बहुत कठिन कार्य है। यह कार्य पर्याप्त समय, श्रम, धन, साधन तथा सम्बन्धित व्यक्तियों से निकट परिचय और उनके विश्वास की अपेक्षा रखता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। इस हेतु राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश क्षेत्रों के अनेक गाँवों की, जहाँ विष्णोइयों की विनोप आवादी हैं समय समय पर मुझ अनेक बार यात्राएँ करनी पड़ी हैं। मेरे जन्मजात विष्णोई न होने और सम्बन्धित हस्तलिखित सामग्री के प्रति उनके स्वामियों की विशिष्ट घम भावना निहित होने के कारण, उसे देखने और अध्ययन करने में अनेक कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़ा है। फिर, अस्तव्यस्त और अनेक इतर रचनाओं में मिली होने के कारण, सम्बन्धित सामग्री को छाँटने, छँटी हुई को सम्यक् रूप से जोड़ने और व्यवस्थित करने में भी बहुत समय लगा। एक स्रोत की समस्त सामग्री एक साथ तो कभी मिल ही नहीं सकी, इसके लिए सतत और अनेक बार प्रयास करने पड़े। फिर, यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह सम्पूर्ण उपलब्ध हो ही गई है। यही नहीं ज्यों ज्यों अध्ययन में प्रगति हुई, त्यों त्यों बहुत से हस्तलेखों की तो पुनःपरीक्षा भी करनी पड़ी। इसके उपरांत ही उनका सम्यक् अध्ययन करना सम्भव हो सका।

८

मविष्य में इस विषय में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित किसी प्रकार के कार्य करने वाले शोधार्थियों को एक आधारभूमि प्राप्त हो सके इस हेतु इस अध्ययन सामग्री का यथामुम्भव व्यवस्थित, पूर्ण किन्तु सक्षिप्त परिचय दिया गया है (—द्रष्टव्य—अध्याय १, अध्ययन-सामग्री)। प्रस्तुत प्रबंध के लिए भी ऐसा करना आवश्यक था। यह सामग्री यदि प्रकाशित या अप्रकाशित किन्तु सामान्यतः सुलभ अथवा सत्या विनोप में व्यवस्थित रूप में सुरक्षित और सहज सुलभ होती तो इस अध्ययन में अनेक स्थलों पर उसका हवाला देकर ही काम चलाया जा सकता था। किन्तु इस अध्ययन-सामग्री के सम्बन्ध में ऐसी कोई सुविधा न होने से इनके सम्यक् परिचय के लिए एक पृथक् 'अध्याय' रखना पड़ा, जिसे परिशिष्ट की मना भी दी जा सकती है। यह करने की आवश्यकता नहीं है कि प्रस्तुत अध्ययन विषयक उल्लेख विषयन तो दूर राजस्थानी साहित्य का मोट्टा रूप में भी परिचय अभी तक साहित्य मंगार को नया दिया जा सका है। इस कारण, इस अध्ययन से सम्बन्धित अनेक विचार विचारों का धारणात्मक निष्पत्ति और बातों का स्पष्टीकरण हेतु सभी स्थलों पर उल्लेख-विषयन का उल्लेख किया गया है कि तन्विषयक सम्यक् और पूर्ण विवरण, समुचित पीठिका शक्ति सुभाषणों का सम्यक् उपस्थित हो सके। विष्णोई काव्य विषयन में उनके समुचित सुभाषण और प्रस्तुत की गई भाष्यताओं का प्रमाणस्वरूप सम्बन्धित उद्धरण तथा अन्वयविषयक भाष्यता नवान, रचयिता विनोप की संस्कार मिदता और प्राणिक रंग में रगी होने

के कारण रचनाओं का सार देना भी आवश्यक था। प्रमाणस्वरूप महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियो, ताम्रपत्र, लिखत और पट्टे परवाना आदि के एक सौ बारह चित्र भी दिए जा रहे हैं। शोध की गरिमा, मर्यादा, प्रामाणिकता और विषय के साथ सम्यक् न्याय करने के लिए यह आवश्यक था। इन कारणों से प्रबन्ध आकार में बड़ा घबराहट लगता है किन्तु मेरी दृष्टि में हममें अनावश्यक, परिहाय और भरती को कोई सामग्री नहीं है और न ही कहीं ऐसी कोई चेट्टा भी गई है। बड़ा होने के कारण यह दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

६

सुविधा के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध तीन खण्डों में विभाजित किया गया है जिनमें नौ अध्याय हैं। साथ ही उल्लिखित चित्रसूची सहित ग्यारह परिशिष्ट हैं। इनमें, दो खण्डों के प्रथम सात अध्याय तथा प्रथम परिशिष्ट के ११२ चित्र (जाम्भोजी का भादि में दिया गया चित्र इनके अतिरिक्त है) तो प्रथम भाग में और तीसरे खण्ड के शेष दो अध्याय, - १० परिशिष्ट, सदभ-ग्रन्थसूची और नामानुक्रमणिका दूसरे भाग में है। इनकी सूची इस प्रकार है —

पहला भाग खंड १ पृष्ठसूचि

अध्याय १-अध्ययन सामग्री

अध्याय २-जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अन्त तक का कार्य—

१-विष्णोई लेखक द्वारा किया गया कार्य

२-इतर लेखकों द्वारा किया गया कार्य

अध्याय ३-तत्कालीन स्थिति -क- राजनीतिक स्थिति, ख- सामाजिक स्थिति ग-धार्मिक स्थिति

खंड २ प्रवक्तक, वाणी और सम्प्रदाय

अध्याय ४-जाम्भोजी का जीवनवृत्त

अध्याय ५-जाम्भोजी दर्शन और अध्यात्म

अध्याय ६-जम्भवाणी पाठ सम्पादन—क- भूमिका, ख- सम्पादित पाठ और पाठांतर (१२३ सबद)

अध्याय ७-विष्णोई सम्प्रदाय

परिशिष्ट १ चित्रसूची (कुल चित्र सख्या-११२)।

दूसरा भाग खंड ३ साहित्य

अध्याय ८- विष्णोई साहित्य (काल क्रमानुसार १२६ साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

अध्याय ९- विष्णोई साहित्य - महत्त्व देन और सूर्याकन

परिशिष्ट २-से ११, - कुल सख्या १०, सदभ-ग्रन्थ-सूची तथा नामानुक्रमणिका।

१०

पहले अध्याय में आधारभूत हस्तलिखित सामग्री का परिचय दिया गया है। इसमें ३८३ हस्तलिखित प्रतिमाँ १८ परवाने, ३, विगत, १ ताअपत्र, १ रुक्का और ६ लिखत-जुल ४०८ सदभ सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त, जम्भवाणी के सम्पादन में प्रयुक्त ४ प्रीर प्रतिया तथा १ ताअपत्र (चित्र सख्या ८३) का परिचय यहाँ न देकर सम्बंधित स्थलों पर दिया गया है। उल्लिखित कारणों के अतिरिक्त प्रस्तुत विषय के सदभ में इस सामग्री को इस रूप में देने के ये कारण भी हैं—१-इनसे विभिन्न रचनाओं के मूल पाठ निर्धारण और सम्पादन में सहायता मिलती है। २-अनेक कवियाँ और रचनाओं के काल का पता चलता है—(क)-लिपिबाल से, (ख)-स्वयं कवि की लिखावट में होने से, (ग)-प्रति विशेष में रचा विषय के लिपिबद्ध होने से। ३-मुख्यतः प्रस्तुत विषय से और शीघ्रतः बहुत से इतर कवियों और रचनाओं की महत्वपूर्ण जानकारी के लिए। ४-इतिहास के अंधेरे और अज्ञेय क्षेत्रों पर प्रकाश के लिए। अध्येताओं के लिए इस सूची का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है। साहित्य सभार को इस सामग्री का परिचय पट्टी बार इसी प्रबंध में मिल रहा है।

११

समग्र सन्त १९०० तक की हिंदी और राजस्थानी (तथा अन्य वर्तमान देगी भाषाओं की भी) रचनाएँ, हस्तलेखों के रूप में ही हैं। अनेक गण्यमाय विद्वानों ने विभिन्न हस्तलिखित प्रतिमों (ताअपत्रीय, भोजपत्रीय की गणना भी इसी में है) के आधार पर अनेक रचनाओं का सफल-संपादन किया और उनका परिचय दिया है। नवीन, महत्वपूर्ण और प्राचीन प्रतिमों की उपलब्धि से अनेक शांत सम्पादित रचनाओं में परिष्कार संपादन-सुधार किया गया है तथा साथ ही सबका नवीन रचनाओं की प्राप्ति भी हुई है। इनसे निस्संदेह इतिहास के क्षण का विस्तार हुआ है। किन्तु हस्तलेखों के अध्ययन में जरा सी असुविधाओं और प्रमाणात् से बहुत बड़ी हानि होने की समावना भी रहती है। यह हानि और भी बड़ी होती है जब किसी प्रतिष्ठित विद्वान् अपना पूर्व निर्धारित योजनानुसार, संपादित रूप में या सख्या द्वारा हस्तलेखों के नाम पर, बिना उनका प्रमाण दिए ऐसा कार्य होता है। इसके तीन उदाहरण पचाते हैं।

पुरातन प्रबंध 'सप्त' में मुनि जिनविजयजी ने चंद्र के नाम से प्राप्त चार श्लोक दिए हैं, जिनमें से तीन नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पृथ्वीराज रामो में मिलते हैं। इनके आधार पर मुनिजी रामो को अष्टम भाग की रचना मानते हुए, चंद्र की महाराजा पृथ्वीराज चौहान का द्वारा कवि मिथ्या करने का प्रयास करने हैं^३। रामो की चिन्ता के तदनुसार 'सप्त' की रचना मानने और चंद्र का इन श्लोक का कवि घोषित करने में मुनिजी के अज्ञान का कारण है।

१-प्रकाशित-विषयों में जानना जानना सन् १९३६।

२-संख्या ११०

उनका वक्तव्य, विशेष रूप से रहे हैं। डॉ० राजगीप्रसाद द्विवेदी ने मुनिजी के ही उक्त आघार पर प्रकारांतर से अपनी बात कुछ विस्तार से कही है^१। उन्हीं को डॉ० विपिनविहारी शिवदी ने दोहराया है^२। इस सम्प्रधम ध्यातव्य है कि पुरातन प्रपञ्च सग्रह की कथा में पृथ्वीराज का देहांत सवत् १२४६ म होना बताया गया है और ग्रन्थ के पृष्ठ ८७ पर यही तिथि छपी है, किन्तु जिस हस्तलेख (P मग्रह पत्र १२) के आघार पर जो अत्र प्रकाशित हुआ है उसमें पृथ्वीराज का मृत्यु सवत् १८४६ लिखा है, यह 'प्रास्ताविक वक्तव्य' से पूव लिए हुए मूल प्रति के फोटा से स्पष्ट है। रचना और प्रति को इस प्रकार, २०० साल (१४४६-१२४६=२००) पुरानी बताने के प्रयास के मूल में क्या कारण रहे हैं, उनकी भीमासा यहाँ उचित नहीं है। किन्तु इससे भलोभाति सिद्ध होता है कि इससे 'हिन्दी' के 'आदिकाल', पृथ्वीराज रासी, रासी नामधारी अन्य रचनाओं आदि आदि को बानानिक ढग से अध्ययन करने और सम्यकरूपेण समझने में हिन्दी के छात्रों, शोधकर्ताओं तथा विद्वानों की सेवा और शक्ति का दुस्प्रयोग ही हुआ है। इस ओर इंगित भी किया गया है^३ तथा अब तो अनुसंधान शाला में विद्युत्चालित एपिडाइस्कोप (Epidiascope नामक यंत्र से देखकर निश्चय किया गया है कि उक्त पी० सनक प्रति बहुत बाद की है और उसकी पुष्पिका का सवत जाली है^४।

दूसरा उदाहरण वगोय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता से प्रकाशित मीरा स्मृति ग्रन्थ (प्रकाशन काल सवत २००६) में छपी मीरा पदावली का है। इसके सम्पादक स्वर्गीय प्रोफेसर ललिताप्रसाद सुकुल ने डाकोर और कागी की जिन प्रतियों के आघार पर पदावली के पाठ देने का उल्लेख किया है, उनका न तो उन्हीं कोई परिचय दिया है और न ही कोई प्रमाण। डॉ० मोतीलाल मेनारिया^५ तथा प्रस्तुत पवित्रों के लेखक ने काफी पहले- सुकुलजी के स्वस्थ जीवन काल में ही इन शिथिलताओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया था, जिनका कोई भी स्पष्टीकरण उन्हीं ने नहीं किया था। वस्तुतः उनकी सत्ता ही सदिग्ध है। आश्चर्य की बात है कि पदावली की भ्रष्टता सिद्ध हो जाने के बावजूद भी, उसको प्रमुख आघार बना कर, एकांगी दृष्टिकोण से मीरा पर शोध प्रपञ्च भी लिख डाला गया है^६, यही कारण है कि इनके लेखक के मीरा की भाषा विषयक तथा अन्य अनक निष्कर्ष और मायताएँ भ्रामक एवं गलत हैं।

१-हिन्दी साहित्य का आदिकाल, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, सन १९५२

२-(क) चन्द्र वरदायी और उनका काव्य, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् १९५२।

(ख) रेवाटट हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, सन-१९५३-

३-डॉ० मोलाशकर व्यास, प्राकृत पगलम, भाग, २, पृष्ठ ४६-४७, बाराणसी, सन् १९६२

४-द्विवेदी-मानस मन्त्र (प्रामाणिक शोधपत्रिका) वर्ष ३, प्रकाश ३, दिसम्बर, १९६६

(सम्पादनीय कार्यालय-दुर्गाकुण्ड, बाराणसी-५) में डॉ० वटेकुण्ड का 'पुरातन प्रपञ्च सग्रह के पृथ्वीराज रासी विषयक विवरण की प्रामाणिकता' नामक निबन्ध।

५-राजस्थान का पिण्ड साहित्य पृष्ठ ६४ हितपी पुस्तक भण्डार, उदयपुर, सन १९५२

६-डॉ० प्रभात मोरार्य, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई-सन् १९६५

तीसरा उदाहरण गगरी प्रचारिणी सभा, बनारस से प्रकाशित कबीर प्रयावली का है। बताया गया है कि इसका मूल आधार मगन १५६१ की लिखी हस्तलिखित प्रति है। प्रकाशित पुस्तक में उक्त प्रति के अंतिम पृष्ठ का पौरो दिया गया है। उमम जो मगन लिखा हुआ है यह भी न हस्तलिपि में है और बाद की लिखावट है। उमम यह प्रति उत्तरी पुरानी सिद्ध नहीं होती। यद्यपि आचार्य क्षितिमोहन मेन,^२ डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी,^३ डॉ० रामकुमार वर्मा,^४ डॉ० माताप्रसाद गुप्त^५ इस और सक्त भी कर चुके हैं तथापि बिना किसी ठोस तर्कों के, उक्त प्रति और उसमें के पाठ को पुराना मानने का आग्रह किया जाता है। अध्ययन की ब्यापक सरणियों में ऐसी बातें बाधक हैं। इसका एक मात्र निगम पाठ-सम्पादन के द्वारा ही किया जा सकता है। प्रति विगय का लिपिकार,^६ अिन हाथ की लिखावट, उसमें का परम्परा विशेष का पाठ आदि तथ्यपरक बात हैं जिनको भावुकता या किसी प्रकार के आग्रह से अध्ययन सिद्ध नहीं किया जा सकता।

सुधी पाठकों के अवलोकनाय इस कारण, मैंने विभिन्न महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे परवानों आदि के अनेक चित्र दिए हैं। जो कथन या बात कही गई है, उनके प्रमाण स्वरूप उदाहरणों और उनके मूल स्रोतों का हवाला दयाम्मान दिया गया है।

१२

प्रस्तुत अध्ययन की पुव पीठिका, महत्त्व दिग्दर्शन तथा एतद्विषयक अनेक प्रचलित भ्रात धारणाओं के निराकरण स्वरूप, इस विषय पर अब तक किए गए काय को बताना आवश्यक था। दूसरे अध्याय में इसका उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट होगा कि विष्णोई साहित्य का तो नामोल्लेख ही अब तक नहीं हुआ है। जाम्भोजी और सम्प्रदाय सम्बन्धी अधिकांश सूचनाएँ भी गलत हैं।

मेरी समझ में प्रत्येक शोधकर्ता को यह बताना आवश्यक है कि जिस अध्ययन को वह प्रस्तुत कर रहा है उससे सम्बन्धित उससे पुव कितना और कसा काय विभिन्न लक्षकों द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है तथा उसका अध्ययन किस बिन्दु से आरम्भ होता है। यह अध्याय इस बात को ध्यान में रखकर भी लिखा गया है।

१३

तीसरे अध्याय में जाम्भोजी के समय-विषय की सोलहवीं शता दी तक, मरुप्रदेग या 'काठ' देश की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। जाम्भोजी ने सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में युगांतर और क्रांतिकारी काम किया था। उस समय राजनीति, समाज और धर्म एक प्रकार से अयो-याश्रित ही थे। जाम्भोजी

१-सम्पादन-डॉ० दयामधुं देर दास, सवत २००९

२-महिएवल मिस्ट्रीस-म डॉ० इ द्विया, पृष्ठ ८८, लंदन, सन १९३५

३-कबीर पृष्ठ १९-२०, हिंदी अथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, सन १९४७

४-सत कबीर पृष्ठ ६-७, साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड इलाहाबाद, सन १९५७

५-कबीर-प्रयावली, पृष्ठ २६-३०, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन १९६९

के व्यक्तित्व और कृतित्व, सम्प्रदाय प्रवेतन की पीठिका और स्वरूप, चिन्तन और विचारों के पूर्वापर सम्बन्धों को सम्यक् रूप से जानने-समझने के लिए उनका निर्देशन करना आवश्यक था। राजनीतिक स्थिति-परिचय के लिए अनेक ग्रन्थों का सहारा लिया गया है। सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय गोणत अनेक इतर रचनाओं और विशेषतः विष्णोई रचनाओं के सदाभ से दिया गया है। विष्णोई रचनाओं को विशेष आधार बनाने के कुछ मुख्य कारण ये हैं— १—वे प्रामाणिक रूप में उपलब्ध हैं। २—वे सम्पूर्ण समाज में सम्पृक्त और तदनुगुण समष्टिगत मानव चेतना का पता देती हैं। ३—उनके रचयिता साधारण जनता में से—विशेषतः खेतियार वर्ग में से थे और इस कारण उनमें लोकजीवन सृजक रूप से मुखरित हुआ है। ४—अनेक रचयिता अथवा धर्म मता को त्याग कर विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायी हुए थे, उनकी वाणी में दोनों प्रकार के स्मृकारों की झलक मिलती है, जो सामूहिक रूप से इन स्थितियों की जानकारी के लिए बहुत उपयोगी है। उल्लेखनीय है कि विष्णोई रचनाओं से मद्रप्रदेश में स्थित और प्रचलित नाथ-पथ सम्प्रदायों तो बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इनसे पता चलता है कि नाथ पथ सवथा लोक विमुख, सामान्य और सहज जीवन से दूर तथा लोगों में कौतुहल और भय का प्रतीक बन गया था। जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धों ने एक ओर लोक को उनसे इस कुप्रभाव से मुक्त किया तथा दूसरी ओर नाथ पथ का शोधन और उसको लोक-मुख करने का प्रयास किया था।

१४

वतमान में प्रचलित नाथा की अधिकांश वाणियाँ उन नाथों की रचना नहीं हैं जिनकी वे बताई जाती हैं। ऐसी सामग्री पर किया गया कार्य भी प्रामाणिकता के अभाव में सवथा महत्त्वहीन होगा। यहाँ प्रसंगतः, नाथों के नाम से प्रचलित विभिन्न हिन्दी वाणियों के सम्बन्ध में, प्राप्त नवीन सामग्री के आधार पर, विचारार्थ एक बात कहना चाहता हूँ। ऐसी अधिकांश वाणियों का सफल-संग्रह पृथ्वीनाथ (देहावसाने समय-लगभग सवत १६००) के पश्चात्-विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ लगता है। अथवा कई कारणों के अतिरिक्त, इसका एक मुख्य कारण अनेक मिथ सत्यों द्वारा हुई नाथों के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी जिसके फलस्वरूप, आधारभूमि के रूप में देशभाषा में नाथ वाणियों का संयोजन और आवलन किया गया। इस प्रतिक्रिया का प्रधान कारण नाथों का सहज जीवन से दूर लोकविमुख होना था। प्रबन्ध में यथास्थान इसका संकेत-उल्लेख किया गया है। एक और रोचक उदाहरण इस सम्बन्ध में दिया जा सकता है। १८ वीं शताब्दी और उसके बाद में लिपिवद्ध पृथ्वीनाथ की रचनाओं की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। इनसे पृथ्वीनाथ की छोटी

१ इष्टपथ-अध्ययन और भवेपण नेगल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, सन् १९६६ में प्रस्तुत लेखक के 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ', नामक निबन्ध में इनका परिचय तथा प्रो० वृषांगवरजी तिवारी, जयपुर के पास सुरधित, सवत १७१० में लिपिवद्ध, एक हस्तलिखित प्रति, संख्या २०५।

बड़ी २६ रचनाया का पता जाता है। सभी प्रतियों में रचना विष्णु का एक मात्र प्राप्त पाठ मूल का माना जाता चाहिए। उनके "कुम्भित स्वस्व सिद्ध सन्त जोग ग्रन्थ" में पचास ग्रन्थ हैं। प्राप्त सभी प्रतियों में ग्रन्थ का पाठ और छन्द मन्था मन्था है। इनमें ४५ छन्दों के अतिरिक्त, महाराजा का सारा ग्रन्थ उत्ती रूप में गोरगवानी^१ में 'ज्ञान मित्तक'^२ नाम से गोरखनाथ की रचना मानकर छापा गया है (पृष्ठ २०७-२१८ पर)।

पृथ्वीनाथ की ग्रन्थ रचनाया के अनेक छन्द भी गोरगवानी में गोरख के नाम से मिलते हैं। ग्रन्थ अनेक सिद्धों द्वारा रचित छन्द गोरख के नाम से प्रकाशित हैं ही, सातवें अध्याय में इनका उल्लेख किया गया है। यही कारण है कि ग्रन्थ गोरगवानी के दान और साधना विषयक ग्रन्थों में ऐसी सामग्री को आधार में बनाकर उनका नाम से प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों का सारा लिया जाने लगा है^३ जो उचित ही है।

धार्मिक स्थिति के अध्ययनोपरांत यह पता लगता है कि मध्ययुग के चार प्रसिद्ध व्याख्याकारों के प्रभाव से मरुप्रदेश प्रभावित नहीं हुआ था। दान के क्षेत्र में यहाँ तो गोरगवानी से भी पूर्व प्रचलित उपनिषदों और गीता की विचार धारा ही मान्य रही थी तथा सभी स्मृत मत्तानुयायी थे। मलदाश्रु भक्ति, स्वयं की अधम पतित और सुच्छ मानन की भावना यहाँ के सिद्ध-सत्ता और भक्तों की वाणी में नहीं मिलती। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में—“कबीरदास की वाणी वह सत्ता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पठने से अकुरित हुई थी”। “कबीर की भक्ति साधना का केन्द्र बिन्दु प्रेमलीला है”। “यह प्रेम ज्ञान द्वारा नीत और श्रद्धा द्वारा अनुगमित था”। इन तथा उल्लिखित बातों में जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धों की वाणियों में कबीर आदि का वाणियों से मौलिक भेद है।

१५

चौथे अध्याय में प्रामाणिक हस्तलिखित सामग्री के आधार पर बालश्रमानुसार जाम्भोजी का जीवनवत्त दिया गया है। अब तक राजस्थानी और हिन्दी साहित्य में जीवनियों को प्रस्तुत करने का कार्य बहुत कुछ एकांगी रहा है। हिन्दी साहित्य में प्रायः सभी सिद्ध सत्तों का जीवनवत्त अनिर्णीत है। सत्तो में कबीर पर अपेक्षाकृत अधिक काय हुआ है। किन्तु उनके जन्म और स्वगवास काल तक का पता भी गोपिकर्ता निश्चित रूप से नहीं लगा पाये हैं उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का आवलन तो दूर की बात है। कबीर और ग्रन्थ कुछ प्रसिद्ध सत्तो के जीवनवत्त विषयक उस सामग्री की ओर ध्यान ही नहीं गया है जो राजस्थान में उपलब्ध है। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में स्थित, विभिन्न धर्मावलम्बियों के माय

१ सपादक—डॉ० पीताम्बरदत्त बडववाल हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, मगत २००३

२ भाग्यकुमार बनर्जी फिलॉसफी ऑफ गोरखनाथ, महत्त दिग्विजयनाथ ट्रस्ट, गोरखपुर

३ कबीर, पृष्ठ १५२-१८७, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, सन १९४७

४ हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ १०५, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई, सन १९५६

और पवित्र स्थानों में प्राप्त, अनेक हस्तलिखित प्रतियों में अनेक उल्लेख और याददास्त के लिए रखे पत्रा, वहियों आदि में लिखित अनेक मन्त्रों के जीवन विषयक महत्त्वपूर्ण वार्ता और उनके सन्तों के उल्लेख मिलते हैं। इसी प्रकार, राजस्थानी की अनेक रचनाओं में भी प्रसंगा नुसार अनेक सन्त-उल्लेख मिलते हैं, जो इस दिशा में सहायक हो सकते हैं। उन सन्त नष्ट होती जा रही इस सामग्री की और हमारा ध्यान प्रेरित होना चाहिए। रचयिता विशेष के जीवनवत्त और काल निर्धारण के बिना साहित्येतिहास-लेखन का काय सुकर नहीं हो सकता। कवि का जीवनवत्त, उसकी क्षेत्रीय सामाजिक पृष्ठभूमि, उसकी कृतियों का विकास क्रम, उसकी चेतना, चिंतन, विचार और दृष्टिकोण का सामूहिक रूप से प्रामाणिक आकलन-सचयन हमारे शोधकाय और साहित्येतिहास की नींव है। जाम्भोजी के इस जीवनवत्त में मैंने यथासंभव इनका ध्यान रखा है।

यहाँ मैंने सन्देशम्पद, मुख्यतुति से प्राप्त और अपेक्षाकृत प्राधुनिक और एकांगी सामग्री में प्राप्त जाम्भोजी विषयक कथना का कोई उल्लेख नहीं किया है। उदाहरण के लिए, जसलमेर और फलीदी क्षेत्र में जाम्भोजी और प्रसिद्ध पाँच पीढ़ों में से एक-रामदेवजी तँवर के मिलन, दोनों के सवाद और एक दूसरे के प्रति किये गये कार्यों का प्रवाद प्रचलित है। विष्णोई सिद्धों में कवि सुरजनजी (कवि सख्या ६९) ने अपनी दो रचनाओं-कथा और तार की^१ और कथा परसिद्ध^२ में तथा परमानन्दजी वगियाळ (कवि सख्या ८८) ने एक साखी^३ में, बादशाह बाबर और जाम्भोजी के मिलने का उल्लेख किया है। जसनाथी साहित्य में भी इसी प्रकार जाम्भोजी और जसनाथजी की भट का उल्लेख मिलता है। किन्तु उल्लिखित कारणों से इन कथना की प्रामाणिकता सदिग्ध है, अतः इस जीवनवत्त में इन पर विचार नहीं किया गया है।

१६

पाँचवें अध्याय में स्व-सम्पादित जन्मवाणी (मबदवाणी) के आधार पर जाम्भोजी के दान और अत्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट किया गया है। जाम्भोजी न केवल एक सम्प्रदाय प्रवक्तृ ही थे, प्रत्युत वे मरुभाषा में अपने विचार व्यक्त करने वाले दार्शनिक भी थे। सन्देशवाणी में उनके एतद्विषयक विचार असम्बद्ध और विशुद्ध रूप में हैं। इन सन्तों के मुनियोजित करने की कोई विचार श्रृंखला मिलाई जा सकती है। इस अध्याय में इनसे सम्बन्धित सभी विचार विद्वेषा का सम्यक् रूप से स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया गया है। जाम्भोजी के विचारों का विष्णोई कवियों और तत्कालीन समाज पर गहरा और

१. यदि आप बाबर पतिसाह । रतों हीय मित्यो तिष्य राह ।
सेप सदी करणाटक माहि । परचा दे वकसाई माय ॥ १९० ॥

२. जैनला पौर समार जाग लाप लेपा मही पाय लाग ।
भजियो काढ बाबर भाई, पावियो बय भुर अयाई ॥ ८७ ॥

३. जैसाण रावळ जतसी, अजमेर क्रमसी पुकार ।
महभदला हारणाली सेप सदी हसबदर बाबर पतिसाह ॥ ३ ॥

‘यारक’ प्रभाव पडा था। तत्कालीन एनद्रिययक विचारों की पूर्वापर सम्बन्ध स जानन के लिये भी इस ग्रन्थ का महत्त्व है। इस सम्बन्ध में मेरा मझ निबन्ध है कि संस्कृत के पुराने प्राचार्यों के दार्शनिक, आध्यात्मिक मतों का परिष्कार कर, उनके आलोचक में ही मध्ययुगीन सिद्ध सतों और भक्तों की समझने का प्रयास न किया जाय, प्रस्तुत उनकी स्वयं की दार्शनिक, आध्यात्मिक विचारधारा का स्वतन्त्र तथा तुलनात्मक रूप से अध्ययन भी किया जाय। यह समझना गलत है कि संस्कृत ग्रन्थों में निबद्ध दार्शनिक विचारधारा या धारामो के किसी न किसी प्रकार की सीधे प्रभाव में मध्ययुगीन सिद्धा, सता और भक्ता ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की थीं। उहाँन तो समय और क्षेत्र विशेष के विसिष्ट, सद्भव में अपनी बातें कही थीं। प्राप्त अनुभवों, अनेक क्षेत्रीय और युगीन परम्पराओं तथा तत्कालीन सामाजिक परिपाठ में वे स्वतन्त्रचेता और दार्शनिक भी थे। हमारे अनेक सिद्ध मतों का इस पहलू की गवेषणा अभी बाकी है।

२१

१७

छठे अध्याय में चुनी हुई सात हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जम्भवाणी का वज्ञानिक सम्पादन किया गया है। इसकी भूमिका में सम्पादन सम्बन्धी समस्त शाब्दिक प्रतियों की बहिरंग और विस्तृत रूप से अवतरण परीक्षा, उनकी प्रतिलिपि परम्परा, सम्पादन सिद्धांत आदि देकर पश्चात्, सम्पादित पाठ पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण रूपांतर दिये गये हैं। कहा जा चुका है कि जाम्भोजी, उनकी वाणी और विचार अनेक प्रकार से विष्णोई कवियों के प्रेरणा स्रोत, आधार और प्रभावक तत्त्व रहे हैं। तत्कालीन समाज का प्रायः सभी वर्गों के लोग भी इनके प्रकार में, किसी न किसी रूप में आनुरोक्त हुए हैं। सब वाणी इनका मूल-धार है। अष्टावधि सब वाणी का प्रकारान्तर सम्प्रदाय का विज्ञानो न ही किया है सभी का पाठ रा० गो० पी० या/और म० ब० प्रतियों की परम्परा का है। समय समय पर प्रकाशनकर्ता भी अपनी और स सुधार सगोधन करते रहे हैं। वगैरे विषय, विराम चिह्न शब्द रूप परिवर्तन तथा पुष्प भाषा की अनेक प्रगतिवादी तो इनमें ही हैं। वाणी के प्रचलित पाठ का आधार मानने के कारण तो अध्येता की कठिनाइयाँ घटने की अपेक्षा बढ़ जाती हैं। इसका पता स्वीकृत पाठ के लिए गये विभिन्न पाठान्तरों से चल सकता है। ऐसे कार्य में नवीन महत्त्वपूर्ण प्रति प्राप्त होने पर अतिरिक्त सुधार-सगोधन की शुजाइस रहती ही है, अतः अतिम निष्पत्ति दिया जाना कठिन है। सबदवाणी विषयक निष्ठावान् सुप्रसिद्ध विष्णोई सिद्धों के कथनों के आलोचकों में भी उक्त सम्पादन की मैंने भली भाँति परखा है और मुझे प्रसन्नता है कि इस दृष्टि में भी स्वीकृत पाठ सगत सघटा है।

१८

वर्तमान में दार्शनिक रूप से सम्पादित रचनाओं की महत्ता दिन पर दिन बढ़ रही है। इति-विशेष का वैज्ञानिक पाठ-सम्पादन ही वह नींव है जिस पर साहित्यिक भाषा-शास्त्रीय, साहित्य-इतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन अनुगीतन का महत्त्व खडा होता है। सुबाद और वैज्ञानिक रूप से सम्पादित पाठ को आधार न बनाने के कारण, उल्लिखित किसी

भी प्रकार का अध्ययन केवल आर्थिक रूप से ही किसी सत्य या तथ्य का उद्घाटन करेगा। यह भी प्रसम्भव नहीं कि कालांतर में ऐसे अध्ययनों का महत्त्व केवल नाम गिनाने के लिए और ऐतिहासिक दृष्टि में ही रह जाय। राजस्थानी और हिंदी की अनेक मध्ययुगीन रचनाओं के वर्तमान में प्रचलित पाठों के सम्बन्ध में ये बातें कही जा सकती हैं—(१) अधिकांश में उनकी एक परम्परा का पाठ है, (२) मिथित पाठ है, (३) जिस समय रचना-विशेष लिपिवद्ध की गई थी उस समय तक लोकरुचि के अनुसार उसमें पाठ मिथ्या हो गया था, (४) मुद्रश्रुति में प्राप्त पाठ ही लिपिवद्ध किया गया था। इन चारों प्रकार के दोषों से युक्त पाठ ही अधिकांश में आज चालू हैं। जहाँ तक उत्तरी भारत के सतों की वाणिज्य का सम्बन्ध है, कन्नौर, नानक और दरिया जैसे दो-तीन सतों की वाणिज्य के अतिरिक्त किसी भी मुख्य या गौण सत की वाणी का वैज्ञानिक सम्पादन नहीं हुआ है। राजस्थानी और हिंदी साहित्य के पिछले सऊँठे वर्षों के अनेक वाक्य-ग्रन्थों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। जब सिद्ध सत-विशेष की वाणी का पाठ ही सदिग्ध है तो उस पर किया गया कोई भी कार्य और दिए गए निष्पत्ति इन पाठों के अनुपात से सदिग्ध ही रहते। पृथ्वीराज रासो, कन्नौर, मूर (तीनों के गगरी प्रचारिणी मन्त्रावाले संस्करण), मीरा आदि पर जो शोध-कार्य अद्यावधि किए गए हैं, उनका महत्त्व, वास्तव में इसके कि इनके अध्येताओं ने, खूब सूक्ष्म निष्ठा और लगन का परिचय दिया है, उनके विषय में प्रांशिक सत्य ही कहते हैं और कालांतर में, यह निश्चित है कि उनका महत्त्व केवल ऐतिहासिक रह जायगा। अनेक सतों में प्राप्त विभिन्न प्रकार का सामग्री के आधार पर जब इनका और ऐसे अनेक कवियों का सुसम्पादित वैज्ञानिक पाठ प्रस्तुत किया जायगा, तो इन अध्येताओं के निष्पत्ति और निष्कर्षों की पुनर्परीक्षा आवश्यक होगी।

यह आश्चर्य है कि बहुत से कवियों की रचनाओं के वैज्ञानिक पद्धति पर सुसम्पादित संस्करणों के प्रकार में आज जान पर भी हमारे शोधकर्ता उनको आधार-रचनाकर, बिना कोई माय और तत्संगत काव्य दिए, उही संस्करणों के आधार पर शोध-कार्य करते हैं, जिनमें उल्लिखित चार प्रकारों में से एक या अधिक या सभी दोष पाये जाते हैं। एम० ए० के पाठ्यक्रम में भी अधिकांश ऐसे ही ग्रन्थ निर्धारित हैं। संस्करण विशेष के पाठ का मायता या अभावता का उत्तर, केवल वैज्ञानिक पाठ सम्पादन ही हो सकता है, उसके लिए कोई अन्य कारण विशेष महत्त्व नहीं रखते। इसका किंचित पता डा० पारसनाथ तिवारी और डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित कन्नौर प्रयागियों की सूचिकाओं से लग सकता है। डा० तिवारी का पाठ जहाँ कन्नौर वाणी का निर्णायक पाठ देना का प्रयास है, वहाँ डा० माताप्रसाद गुप्त का पाठ उही के सत्य में—‘उसकी एक परम्परा राजस्थानी परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन है’। कन्नौर विषयक किसी भी प्रकार के अध्ययन में, एक परम्परा का होने में डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया गया पाठ माय नहीं हो सकता।

१-कन्नौर प्रयागिणी, हिंदी परिपद, प्रयाग विश्वविद्यालय सन १९६१

२-कन्नौर अद्यावली, पृष्ठ ३१, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन १९६६

प्रकारांतर से यह उ होने स्वोकार भी बिया है। फिर डा० श्यामसु दर दास द्वारा सम्पादित कबीर-अष्टावली का पाठ, जो एक परम्परा का ही नहीं अनेक प्रकार के मिश्रणों से भी युक्त है, ऐसे किसी अध्ययन का आधार बन ही कैसे सकता है? दोला मारु के अनेक दोहों का इसमें पाया जाना उक्त मिश्रण का बहुत बड़ा प्रमाण है। यह तो केवल एक उदाहरण है।

प्रस्तुत प्रसंग में एक और शिथिलता की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। वह है—शोध विषयक कठिनाइयों से पलायन वृत्ति, प्राप्त प्रकाशित पाठ विषयक शोधकर्ता की मनमानी और पूर्वग्रह तथा भावुकता। अनेक उदाहरणों में से एक यहाँ प्रस्तुत है। डा० गोविन्द त्रिगुणाचल ने अपने पी-एच० डी० के शोध-ग्रंथ 'कबीर की विचारधारा' में पृष्ठ ५१ पर लिखा है—'जहाँ तक बेलबडियर प्रेस के संग्रह में यों का सम्बन्ध है, उनकी प्रामाणिकता सदिग्ध कही जा सकती है', विद्वान् लखन ने इसके तीन कारण भी बताये हैं। किन्तु इसी प्रेस के संग्रह में उनके डी० लिट० के शोध-पत्र—'हिंदी की निगुण काव्य धारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि'^१ में एकाएक स्वयं प्रामाणिक बन जाते हैं। उनके शब्दों में—'मेरी भी अपनी धारणा यही है कि सतों की वाणियों का यदि कोई प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध है तो वे बेलबडियर प्रेस के ही हैं इसलिए हमने अपने आधार इन्हीं ग्रंथों को बनाया है' (पृष्ठ ५६)। ऐसे विरोधी वक्तव्यों का कारण स्पष्ट है। कबीर पर काय करते समय उस समय में अपेक्षाकृत प्रामाणिक समझी जाने वाली कबीर-अष्टावली मौजूद थी। किन्तु डी० लिट० विषयक काय में, इसके अतिरिक्त अन्य अनेक सतों की वाणियों की भी आवश्यकता थी। इनकी वाणियों के हस्तलेखों की खोज दुष्कर कार्य था, घत जो वाणी जिस सत के नाम से छपी हुई सुलभ हो सके, उसी को थोड़ा और भावावेश में प्रामाणिक करने का प्रयास किया गया। इसका कारण केवल उनकी 'धारणा' ही है, किन्तु आज का शोधकर्ता इस 'धारणा' का कारण भी जानना चाहता है। निवेदन है कि इन बातों को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। प्रस्तुत वाणी-सम्पादन के मूल में उसका निर्णायक पाठ देने का प्रयास इन कारणों से भी रहा है।

१९

सातवें अध्याय में विष्णोई सम्प्रदाय का धनकविद्य परिषय और स्वरूप विवेचन किया गया है। समग्र विष्णोई साहित्य के अध्ययनोपरांत तथा प्रचलित परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए सभी माय विष्णोई स्थानों पर जारी समझने के पश्चात् ही यह लिखा गया है। इस अध्याय का विशेष महत्त्व सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से है, इसके अतिरिक्त विष्णोई साहित्य को मिला प्रति समझने में भी हमसे पर्याप्त सहायता मिलती है।

विभिन्न सम्प्रदायों, उनके स्वरूपों और उनमें स्वीकृत निगिष्ट धर्म नियमों का तुलनात्मक अध्ययन हमारी सांस्कृतिक विरासत और विचारधारा को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं।

१-प्रकाशक—साहित्य निवेदन, कानपुर मदन २०१४

२-प्रकाशक—साहित्य निवेदन, कानपुर, मन् १९६१

२०

आठवें अध्याय में विष्णोई कवियों और साहित्य का विस्तृत परिचय तथा विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तगत विक्रम की १५-१६ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक के, अद्यावधि १२९ अज्ञात कवियाँ और उनकी छोटी-बड़ी, विभिन्न प्रकार, रूप, रस और विषयों की लगभग पौने तीन सौ रचनाओं का परिचय और विवेचन किया गया है। इनमें डेल्हजी, पदम भगत, अल्लुजी और रामलला का यत्किंचित पता यद्यपि साहित्य सत्तार को था तथापि वह आंशिक और अपूर्ण ही था।

इन ज्ञात कवियों और इनकी अज्ञात कृतियों का विवेचन और तत्संबंधी अनेक नवीन तथ्यों का उद्घाटन यहाँ किया गया है। सभी रचयिताओं के परिचयोंपरांत प्रत्येक रचयिता और रचना का महत्त्व-दिग्दर्शन और मूल्यांकन किया गया है। इन १२९ रचयिताओं और उनकी रचनाओं सम्बन्धी जो नवीन तथ्य और सामग्री प्रकाश में आई है सामूहिक रूप से वह राजस्थानी साहित्य के इतिहास को नवीन रूपरेखा प्रदान करेगी। यह काव्य धारा साहित्येतिहास की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कड़ी है। साहित्य सम्बन्धी यह प्रस्तुत प्रबंध की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। रचयिताओं और उनकी रचनाओं की खोज, विवेचन, मूल्यांकन, महत्त्व-दिग्दर्शन तथा प्रस्तुतीकरण मेरा मौलिक प्रयास है। इनमें पदम भगत वृत्त 'हरजी रो ब्यावलो और मेहोजी वृत्त 'रामायण' के, महत्त्वपूर्ण होने के कारण, इनकी विभिन्न प्रतियों में प्राप्त पाठों के आधार पर, मूल पाठ विषयक निष्कर्ष भी प्रस्तुत किए गए हैं, जो पाठ-सम्पादन के अध्ययनों के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। इनमें, मेरी दृष्टि में, डेल्हजी, पदम भगत, ऊदोजी नण, अल्लुजी कवियाँ, भालमजी, मेहोजी, धोलहोजी, कसोदासजी गोदारा, मुरजनदासजी पूनिया, गोकलजी, सेवादास, परमानन्दजी बणियाळ, रामलला, ऊदोजी भडींग और साहब्रामजी राहड तो अनेक कोणों से, स्वतंत्र रूप से अध्ययन के विषय हैं। इस अध्याय की महत्ता इसी से स्पष्ट है। प्रत्येक कवि के जीवनवृत्त-निर्धारण में निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त सामग्री को परीक्षणोपरांत आधार बनाया गया है —

- १—कवि विशेष के निवास स्थान में परम्परा से प्रचलित मायता,
- २—अनेक कवियों के बंशजा और सम्बन्धियों से,
- ३—महलाणा (जोधपुर), दरीवा (भोलवाडा) के विष्णोई भाटों की बहियों और लिखतों से,
- ४—विभिन्न साम्प्रदायिक स्थानों और सागरियों के मेलों में एकत्र हुए अनेक क्षेत्रों के लोगो से,
- ५—विभिन्न विष्णोई क्षेत्र के लोगो से,
- ६—विष्णोई साधुओं, महर्तों, घापनों और गायणों से,
- ७—शिलालेखा और भित्तिलेखों से,
- ८—विभिन्न स्थानों से प्राप्त विष्णोई साहित्येतर हस्तलिखित प्रतियों से,
- ९—अध्याय १ के अन्तगत दी गई अध्ययन-सामग्री से,

१०—विभिन्न विविधता प्रति विशेष में लिपिबद्ध-रचना विशेष से या विवक्षित कवि के सम्बन्ध में कवि-विशेष के अधन से ।

४१

साहित्य के इतिहास में अभी तक मान्य रचियाँ हैं विशेष रूप से लिखी गयी हैं और साहित्य कविता की उपेक्षा की गई है । अतः ही गौण रचियाँ का परम्परा में और उनकी पीठिका पर ही महान रचियाँ का प्राण होता है । अतः ही गौण कवि भी इस दृष्टि में महत्त्वपूर्ण हैं । साहित्य-विशेष में उनकी उपेक्षा, या य परम्परा विशेष को खिन्न रूप में ही प्रस्तुत करती है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में, रामदास-परम्परा में इनके एक मात्र महान कवि तुलसीदास ही विचित्र विचारों में गता है । परम्परा है कि तुलसीदास प्रसिद्ध एत ही है । यह स्थिति एक गौण कवियों की उपेक्षा करने के कारण ही अधिक है ।

इस कारण मैंने मान्य कवियों के साथ गौण कवियों को भी लिया है । इनके कविता उच्च कोटि के कलाकार हैं ।

कवि या रचना विशेष से सम्बन्धित एक श्रेण में प्रचलित तथ्या घटनाओं सूचनाओं और विवरणों को मैंने तभी स्वीकार किया है जब ऐसी उल्लेख अनेक ग्रन्थों में प्रचलित उल्लेखों से तथ्यात्मक दृष्टि से मान्य पाए गए या मिलें हैं । इस खाति से प्राप्त सूचनाओं और तथ्यों को मैंने प्रबंध में यथास्थान—“प्रसिद्ध है” उक्त किया जाता है, कहा जाता है, पवा प्रचलित है’ इत्यादि शब्दावली से प्रकट किया है । प्रबंध में कई स्थलों पर अनुमान से भी बात कही गई है । इस अनुमान का प्रमुख आधार उपयुक्त दस्तावेजों के अतिरिक्त, स्वयं कवि का अनुमान भी रखा है । मेरा यह दावा नहीं है कि कविता से सम्बन्धित काल निर्धारण में रहस्य सम्भव नहीं है । उपयुक्त स्रोतों के अतिरिक्त, तत्विषयक यदि कोई और सामाजिक प्राचिन और महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्राप्त हों तो उन पर पुनर्विचार भी सम्भव है ।

आठवें अध्याय में जिन साहित्यकारों को विष्णोई कवि माना गया है, उनको ऐसा मानने में मेरा कोई अनुरोध, आग्रह, प्रवृत्ति या दुःशास्त्र नहीं है । इनके स्रोत से मुझे अनेक विषय प्रमाण मिले हैं, उन पर समुचित विचार करने के पश्चात् ही मैंने उनको ऐसा माना है । अध्यायों को यदि किसी या किसी कविता के बारे में और अधिक स्पष्ट प्रमाण मिलें तो उनको ऐसा नहीं माना जा सकता ।

३२

नव अध्याय में राजस्थानी साहित्य-विशेष के विभिन्न सभ में विष्णोई साहित्य का महत्त्व और उसका सामूहिक रूप से स्थापना किया गया है । इस विषय में मुझे साहित्य में इस अध्याय के अन्तर्गत का ही विचार अनुरोध करता हूँ । ध्यातेय है कि पृथक् रूप से तो अध्याय कवि और रचना का विवरण और स्थापना विष्णोई साहित्य नामक अध्याय में ही किया गया है । नव अध्याय में तो प्रस्तुत साहित्य

का ममप्रता म महत्त्व-विद्या, उमरी देन और उसका मू-यावन किया गया है। एसा करन म मंग-विशेष ऐतिहासिक रण है। इतिहासिक पीठिका और पूव प्रवृत्तमान काय परम्पराका और प्रवृत्तिका के विविष्ट गाम म प्रत्येक कवि और रचना का विद्वान-मू-यावन प्रस्तुत किया गया है। मेरा विश्वास है कि साहित्य-विद्या-म-लयन म मरे एम प्रयाम-म कुत्रन कुछ सहायता अत्रय मितगी। दोनो भागा म कुत्र ११ परिशिष्ट दिए गये हैं जो प्रस्तुत अ-यवन से किसी न किसी प्रकार मे सम्बन्धित है।

२३

ऐतिहासिक-विष्ट सं-(१) उगतक सम्प्रदाया और सिद्ध सतो की परम्परा म (२) राजस्थानी साहित्य क इतिहास म तथा (३) यदि राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग माना जाय, तो हिन्दी साहित्य के इतिहास म प्रस्तुत अ-यवन अनक दृष्टिया से उसने कतिपय अ-धेरे क्षेत्रो को आलोकित करता है।

२४

जहा तक देग के उपासक सम्प्रदायो तथा सिद्ध सत-‘परम्परा’ का प्रश्न है स्पष्ट है कि इनके अध्ययन म अभिव्यक्ति का माध्यम-भाषा का महत्त्व गौण है। मुख्य बात सम्प्रदाया क स्वरूप तथा अनेक धारा-अतर्पाराया और रूपवाली सिद्ध सत परम्परा की है। यही कारण है कि विद्वाना ने इनस सम्बन्धित अ-यवनो म प्रात, क्षेत्र और भाषा-विशेष का प्रश्न गौण रखकर इनमें निहित अतश्चेतना, मूलनत्व स्वरूप-स्पष्टीकरण और उनकी सांस्कृतिक देनो का ध्यान रक्या है।

प्रस्तुत अ-यवन का इम क्षेत्र म यत्किञ्चित् योगदान है। कितना, क्या और कसा है, इमका विगण तो विद्वान् करेगे किन्तु इस सम्बन्ध मे एक दो-बातो की और पाठना का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, और मूल प्रवृत्त म इनका थोडा-बहुत उल्लेख यथास्थान किया भी गया है। यह स्पष्ट है कि अभी तक अनेक छोटे मोटे उपासक सम्प्रदायो और सतों विपयक हमारी जानकारी बहुत ही कम है और अनेक सिद्ध-सतो के बारे मे लोक प्रवादो, अनुश्रुतियो तथा उनकी वाणियो के नाम पर लोक मे उनके नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित वाणियो का ही सहारा लिया गया है। तथ्यों की अपेक्षा प्रवाद को और वज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा भावना को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसका मोदाहरण स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है। इस अध्ययन के सन्ध मे पाठ सम्बन्धी एक अत्यन्त रोचक तथ्य का पता लगता है। अनेक सिद्ध-सतों की वाणी-सग्रह की प्रतियो मे, उनके वन्दुत से लिपिकारों ने यह भी उल्लेख किया है कि लिपिवद्ध की जाने वाली वाणी का प्राप्ति-स्रोत और आधार क्या है? यह बताते समय, उहाने जहा विभिन्न प्रतियो से पाठ लेने का उल्लेख किया है वही यह भी कहा है कि उनमे की अधिकांश वाणिया उस समय के अनेक साधुआ के मुख से सुनकर उहोने लिपिवद्ध की हैं। इस प्रकार, ऐसी प्रतियो म- (१) लिखित और (२) मुखश्रुति से प्राप्त पाठ लिपिवद्ध किया गया मिलता है। अभी तक पाठ सम्पादन के विद्वान प्रति-विशेष को सम्पादन-काय मे एक आधार बनाते समय मुखश्रुति मे इस प्रकार प्राप्त

व्यक्तित्व कृतित्व, स्वरूप विश्लेषण और स्पष्टीकरण हुआ है वहाँ उपयुक्त धारणा को भी भनजाने ही बढ़ावा मिला है। मेरी समझ में सामाजिककरण की यह प्रवृत्ति तथा कबीर विषयक उल्लिखित दोनों बातों में केवल आशिक सच्चाई ही है। विशिष्ट धर्ममत, सम्प्रदाय उसके प्रवक्तृ और उसकी वाणियों का पूष्ण रूप से किया गया अध्ययन भी उतना ही उपादेय है। वह हमारी विद्य खल सांस्कृतिक विरामत, चि तन प्रवाह और अनेक कोणों से उसकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि और देना का कहीं अधिक स दिल्ष्ट चित्र प्रस्तुत कर सकता है, उसमें व्यापकता के स्थान पर गहराई अधिक होती है।

जसा कि अन्य विद्वानों ने भी कहा है, हिन्दी में उत्तरी भारत की सत परम्परा के आद्य सत नामदेव हैं, कबीर नहीं। यद्यपि नामदेव दक्षिण के थे तथापि उनकी हिन्दी वाणी, तथा परवर्ती काल में उत्तरी भारत में प्रचलित और प्रवहमान उसकी परम्परा का अध्ययन करने पर यह बात प्रमाणित होती है। सिद्ध-सतों की यह परम्परा उत्तरी भारत में दो रूपों में चली। परवर्ती काल में एक के प्रमुख सत कबीर हुए तथा दूसरी के मह-अचल में जाभोजी। उत्तरी भारत में मोट रूप से, इस प्रकार सिद्ध-सतों की दो परम्परारें समानांतर रूप से प्रायः कुछ भागों-पीछे चलती रही। इनमें जो समानताएँ मिलती हैं उनका प्रधान कारण क्षेत्र-विशेष में कबीर से पूर्व प्रचलित एतद्विषयक विचारधारा को अपने-अपने ढंग से अपनाना है, अथवा समानता है दोनों के अनुभवों की। विद्वानों से मैं इस बात पर अनेक सदमों में तटस्थता पूर्वक विचार करने का अनुरोध करता हूँ।

२५

राजस्थानी साहित्येतिहास के सदम में इस काव्यधारा का, जिसे मैं सिद्ध काव्यधारा कहना चाहता हूँ (जसनाथी काव्य के साथ) महत्त्वपूर्ण योगदान है, स्वतंत्र रूप में तो है ही। इस पूरे साहित्य के प्रकाश में आ जाने पर ही हम राजस्थानी साहित्य के इतिहास में उसका यथायोग्य मूल्यांकन और स्थान निर्धारण सम्पन्नरूपेण कर सकेंगे। किन्तु एतद्विषयक प्रस्तुत किए गए परिचय और विवेचन से इसका महत्त्व आंकने में एक सुदृढ भूमिका इस प्रबोध में मिलती है। ग्रन्थ में यथास्थान मैंने ऐसी सभी सम्बन्धित बातों की और सप्रमाण ध्यान दिलाया है। अभी तक राजस्थानी के चारण, जन और लौकिक साहित्य की चर्चा अपेक्षाकृत अधिक हुई है, अब सिद्ध सतों के साहित्य की भी विशेष रूप से होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सिद्ध काव्य का महत्त्व इन पाँच दृष्टियों से भी है - १ युगयुगीन लोकभाषा के स्वरूप परिचय के लिए, २ लोक और जन-जीवन की समग्रता में समझने के लिए, ३ सामाजिक - धार्मिक चिन्ताधारा और सांस्कृतिक स्वरूप-निर्देशन के लिए ४ अनेक काव्य परम्पराओं के ज्ञान और उनके पूर्वापर सम्बन्ध - निर्धारण के लिए, ५ अनेक काव्य रुढ़ियों, लोक कथाओं रचनाओं और कवियों विषयक जानकारी के लिए।

२६

इस सम्बन्ध में यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि ऐसे प्रयासों का 'हिन्दी' साहि-

त्य के इतिहास में क्या, यथा और कितना महत्त्व है। यह प्रश्न का जवाब उदाहरण की भाषा रखता है — १ हिंदी और राजस्थानी का सम्बन्ध, २ राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट परम्पराओं अर्थात् जातीय विगपताओं की हिंदी साहित्येतिहास में उन्नीसवीं और प्रवहमानता।

यह उतारने की आवश्यकता नहीं है कि 'हिन्दी' एकरूप भाषा नहीं है, यह कई बोलियों का समूह है। मध्यदेश के पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी प्रयोगों की भाँट बोलियों के समुदाय को 'हिंदी' कहा जाता है। बांग्ला, सड़ो बोली, ब्रज, जम्भोजी तथा मुन्नेरी—पश्चिमी हिंदी समुदाय की हैं और ब्रजभाषी या ब्रजवाली, बघेली और छत्तासगढ़ी - पूर्वी हिंदी की। अतः हिंदी साहित्य का इतिहास उसकी इन बोलियों के साहित्य का इतिहास ही है। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से जहाँ तक राजस्थानी या मरभाषा और हिन्दी का सम्बन्ध है, यह सबमाय है कि दोनों पृथक् पृथक् भाषाएँ हैं। अतः इनमें निम्न साहित्य भी एक दूसरे से पृथक् माना जाना चाहिए। इधर कुछ समय से कतिपय 'उत्तमो हिन्दीवादो' राजस्थानी भाषा का मान्यता का प्रश्न को लेकर, हिंदी और राजस्थानी (मरभाषा) विषयक भाषाशास्त्रियों के उक्त सबमाय निराय को ताक पर रखकर राजनीति की भाषा और शब्दों में बात करने लगे हैं। वे मरभाषा की विभिन्न बोलियों के नाम पर उसकी मत्ता से भी इकार करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि बोलियों का अस्तित्व तो मरभाषा की सत्ता और व्यापकता का निमदिग्ध प्रमाण है। मध्ययुग और वर्तमान में भी साहित्य निर्माण के समय यही एक साहित्यकार एक केन्द्रीय भाषा की ओर उन्मुख होते थे और होते हैं। उनकी इस वे द्राभिमुखी प्रवृत्ति से मरभाषा में आवश्यकतक एकरूपता नहीं रही है। नागौर और मत्ता तथा इनके चारों ओर के क्षेत्रों की भाषा ही अधिकांशतः कवियों की केन्द्रीय भाषा रही है। राजस्थान के दूर दूर और विभिन्न क्षेत्रों के अनेक कवियों की भाषा में कोई अंतर नहीं है उनकी रचनाओं को सभी क्षेत्रों के निवासी समझते आएँ और समझते हैं। इन प्रयासों के मूल में यही के द्राभिमुखी प्रवृत्ति है।

जैसे 'हिन्दीवादो' राजस्थान को भी हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र मानते हैं जो सबथा भ्रामक है। किम प्राप्त या प्रदान में कौनसा भाषा बोली जाती है इसका निर्णायक तत्त्व क्या है? इसका एकमात्र निर्णायक तत्त्व यहाँ के किसान, किसानों से सम्बन्धित लोग और अन्तर साधारण जन की भाषा है, क्योंकि सर्वाधिक संख्या इन्हीं लोगों की है। कुछ शहरों में रहने वाले कतिपय पण्डित-लिखे लोग ने यदि किसी न किसी कारणवश 'हिन्दी' को अपना लिया है तो इस आधार पर हिन्दी यहाँ के निवासियों की मातृभाषा नहीं हो गई। इसी प्रकार राजनीतिक दृष्टि से 'राज्य' राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए और राष्ट्रभाषा के रूप में सम्माननाय राजस्थान ने यदि 'हिन्दी' (सड़ी बोली) को स्वीकार किया है, तो हिन्दी यहाँ के लोगों की मातृभाषा कस हो गई? राजस्थानी या मरभाषा की भाषा के रूप में क्या किन प्रकारण गत्ता न मानने या एकरूपगी स्वीकार करने के मूल में ऐसे 'हिन्दी-

वादिया' की सकुचित, और स्वार्थी मनोवृत्ति प्रतीत होनी है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पिछले आठ-दस सालों से हो रही एतद्विषयक यत्किंचित् चर्चा से इस बात की पुष्टि होती है। यहाँ मैं इस प्रश्न की गहराई में तो नहीं जाना चाहता किन्तु प्रणतिपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि वर्तमान सदमों में राजस्थानी भाषा की मायता का प्रश्न यहाँ के निवासियों की रोजी-रोटी का प्रश्न है। फिर, यदि स्वतंत्रता का फल, हिंदी को राष्ट्रभाषा मान लिए जाने के कारण, 'हिंदी' व्यवहार करने वालों को विशेष रूप से मिला है, तो उम्मा किंचित् लाभ तो ढाई करोड़ लोगो को भी मिलना चाहिए, जिनकी मातृभाषा मरुभाषा है। केवल भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से ही नहीं, प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली में औचित्य के आधार पर भी इतने बड़े भूभाग और उसके निवासियों की भाषा को भी उचित महत्त्व, गौरव और सम्मान प्रदान किया जाना चाहिए।

यहाँ राजस्थानी साहित्य की विशालता, विविधता, गुणवत्ता, प्राणवत्ता, महत्त्व आदि तथा पिछले लगभग एक हजार सालों से चली आ रही निर्विच्छिन्न परम्परा का उल्लेख करना अनावश्यक है। सभी विद्वान प्रकारांतर से इस अतुल्य और अनुपम साहित्य-सम्पदा पर गर्व अनुभव करते हैं। राजस्थानी प्रत्येक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और स्वयं आत्म-निभर है। वह खड़ी बोली की अज्ञेय बेटे नहीं, प्रत्युत उसकी बड़ी बहन है, अब उसने स्वयं आत्म-निभर होने का निश्चय किया है। फलस्वरूप, यहाँ खड़ी बोली सम्बन्ध भाषा के रूप में ही रहे तो अज्ञेय है। ध्यान में रखना चाहिए कि 'हिंदी' का हिन और राजस्थानी का हिन दो विरोधी बातें नहीं हैं। राजस्थानी का हिन अततांगत्वा व्यापक रूप से 'हिंदी' का ही हिन है। अब मैं उल्लिखित दूसरे प्रश्न को लेता हूँ। कतिपय विद्वान मारस्वत दृष्टि से तो राजस्थानी को हिंदी से पृथक् मानते हैं किन्तु राजस्थानी साहित्य को हिंदी साहित्य के अंतर्गत लेने की बात करते हैं। इस सम्बन्ध में मुझे दो बातें बहनी हैं - राजस्थानी साहित्य की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो, 'हिंदी' की किसी बोली के साहित्य में उस रूप में उपलब्ध नहीं है, इसके अनेक छन्द भी पृथक् हैं और शब्दावली भी। अर्थात् जिन साहित्यिक परम्पराओं और काव्य-रूपों का प्रवाह राजस्थानी साहित्य में हुआ उसका प्रायः 'हिंदी' में नहीं। इस प्रकार, भाषा, साहित्य, औचित्य-सभी दृष्टियों से राजस्थानी का स्वतंत्र भाषा के रूप में महत्त्व है।

फिर भी, यदि राजस्थानी साहित्य को हिंदी साहित्य के अंतर्गत लेने की बात कही जाती है, तो मैं आज से लगभग दस वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में कहे गए अपने शब्दों को दोहराना ही उचित समझता हूँ - "हिंदी बनाम राजस्थानी के सम्बन्ध में प्रश्न दो हैं- (१) क्या राजस्थानी साहित्य का मूल्यांकन हिंदी साहित्य के अंतर्गत किया जाय अथवा (२) अथ प्रमुख भारतीय भाषाभाषाओं की भाँति स्वतंत्र रूप से। पूर्वग्रह को यदि छोड़ दें, तो सब प्रकार से दूसरी बात ही ठीक है। यदि पुरानी राजस्थानी या जूनी गुजराती के साहि-

१ द्रष्टव्य-लेखक का 'राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ' नामक निबंध, विजयभारती पत्रिका, शान्ति निकेतन, जुलाई-सितम्बर, सन १९६७

एव की छादि काल मे विवेचनीय समझा जाय, तो कोई कारण नहीं कि गद्य और पद्य की अनेक रचनाओं में उसके केवल भीतलदेय रास का ही उल्लेख किया जाय। ^{जब} सिद्धांत रूप में एक बार यह मान लिया गया कि राजस्थानी साहित्य हिन्दी साहित्य के अंतर्गत विवेचनीय है, तब ही ही साहित्य के इतिहास की दीर्घ परम्परा में उगवा मनुष्यगत उल्लेख न करना दुराग्रह की कहा जायगा^{११}।

राजस्थानी का मामला ठाक मैथिली की भांति ही है। मैथिली एक स्वतंत्र भाषा है किन्तु हिन्दी के तथान्वित छादिकाल की सत्ता बनाए रखने के लिए विद्वान् इसी प्रकार, विद्यापति का तो उल्लेख-विवेचन करते हैं किन्तु परवर्ती काल में एत भी मैथिली कवि या रचयिता का नहीं। यह कहना अनावश्यक है कि लगभग आठ गौ गाथा में गौ भा रही मैथिली की भी गौरवपूर्ण साहित्य परम्परा है^{१२}।

हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन अत्यन्त ही कठिन कार्य है। यहाँ मैं इस बात के विस्तार में नहीं जाना चाहता कि क्या साहित्य का इतिहास लेखन अपने उचित अर्थ और सदर्भ में सम्भव है भी या नहीं यहाँ तो अद्यपयत् लिखे गए ऐसे ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ही बात कह रहा हूँ। इनमें कतिपय ऐसी गिणितताएँ दृष्टिगोचर हाती हैं जिनके कारण न केवल हिन्दी साहित्य सम्बन्धी ही, प्रत्युत उल्लिखित अनेक ज्वलन्त समस्याओं का सम्बन्ध समाधान और तदविवेक उठे हुए अनेक प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल पाता। कुछ ये हैं— १ हिन्दी की परिभाषा न करना, २ सामाजिककरण की प्रवृत्ति, ३ महान् रचयिताओं का महत्त्व और गौण रचयिताओं की सर्वथा अपेक्षा ४ तटस्थ व नानिक् दृष्टिकोण का अभाव तथा एकांगी खण्डित और मनमाना दृष्टिकोण अपनाना, ५ इतिहास के अनेक अघोर और अद्भ-अधरे कोनों की ओर बिल्कुल ही ध्यान न देना, ६ अप्रामाणिक सामग्री को भी आधार बनाना, ७ विगिण्ट सदर्थों में बाधित श्रेणीय परम्पराओं की उपेक्षा आदि।

२७

यह एक शोधप्रवृत्ति है। शोध का लक्ष्य सत्या वपण और उसकी प्रामाणिक स्थापना है। इसकी प्रक्रिया मूलतः वैज्ञानिक है। ज्ञान क्षेत्र का सीमा विस्तार इसका प्राणतत्त्व है। इसके प्रस्तुत करने में मैंने शोध-तंत्र की सीमा-भ्रंशना और तत्त्वों का भरसक ध्यान रखा है। शोध प्रवृत्ति के रूप में इसके विषय में मेरा कुछ भी कहना अनुचित होगा इसका निम्न शोधकर्ताओं पर है।

२८

इसमें अने जो मन व्यस्त किए हैं वे सम्बन्ध अध्ययनोपरा त ही किए गए हैं। जसा कि मैं निवर्तन कर चुका हूँ, अपने निम्न- निष्कर्षों, धारणाओं और विचारों के प्रति मेरा, किसी प्रकार का कोई आग्रह, प्रवृत्ति या दुराग्रह नहा है अथवा महत्त्वपूर्ण प्रमाण मिलने पर उनमें परिवर्तन भी सम्भव है। वस मुखव व और प्रवृत्ति में जिन विद्वानों की मा पताओं

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ३७२, कलकत्ता सन १९६०

२ द्रष्टव्य डॉ० जयकांत मिश्र ए. टि. म्ही आफ मैथिली लिटरेचर, वाल्थूम १, सन १९४६-४७ तथा २, सन १९६६ तीरभुक्ति पत्रिका, स, इलाहाबाद

श्रीर धारणाओ से मैंने असहमति प्रकट की है, उनके प्रति मेरी श्रद्धा और निष्ठा भावना है । इस सम्बन्ध में मैंने सिद्ध कवि परमानन्दजी वरिणियाळ (कवि सख्या ८८) के इस कथन को सदा ध्यान में रखा है —

आपणपो न सराहिपे, पर निदिपि न कोप ।
मात सराह पुत हू, लोक न मानं सोय ॥

फिर भी यदि कोई अथवा ध्वनि निकलती प्रतीत हो, तो उसको मेरी जडता, प्रमाद और अनता समझ कर विद्वान क्षमा करें ।

२६

इस अध्ययन का आरम्भ सयोगवश हुई एव छाटी सी घटना से है । ६ अगस्त, सन् १९६१ को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में मेरी नियुक्ति हुई थी । तब मेरा अनुज चि० सोहनलाल और उसके मित्र श्री श्रीमप्रकाश गोदारा यहाँ एम० ए० (अर्थशास्त्र) में अध्ययन कर रहे थे । मैं आने लिए मकान देखने हेतु श्री गोदारा के यहाँ गया । वहाँ सीमाय से मेरी भेंट श्री गोदारा के पिताजी श्री सोहनलालजी, अग्रज श्री अमरच दजी तथा सब्धी महोरामजी धारणिया, कृष्णचन्द्रजी, राजारामजी और रायमाह्व कडवासरा से हुई एव तीन घन वात जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य पर चल पडी । इस विषय के अद्ययन का सब्धा अभाव मेरी भाँति उनको भी बहुत खटक रहा था । इन सब सज्जनो ने मुझे इस अध्ययन की ओर प्रेरित ही नहीं किया, एतद्विषयक सभी प्रकार की सहायता करने का आश्वासन भी दिया । फलस्वरूप मैं इस ओर प्रवृत्त हुआ । पिछले नौ सालो से ये लोग अपना बहुमूल्य समय लगाकर अनेक प्रकार से मेरी सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहें हैं । सब्धी महोरामजी, सोहनलालजी और अमरच दजी ने स्वयं अनेक अशुविधाओ का सामना कर मुझे सुविधाएँ प्रदान की हैं । उनके सतत सहयोग से ही यह काय इस रूप में सम्पन्न हो सका है । इनका बदला तो मैं कियो प्रकार चुँना ही नहीं सकता था कि तु सब्धा महोरामजी और सोहनलालजी को, अपने हृदय की कृतनता नापन स्वरूप यह अद्य समर्पण कर, कुछ भक्तोप अवश्य अनुभव करना चाहता था । इन्होंने सदा मेरी भावनाओं का ध्यान रखा है किन्तु यह अनुरोध स्वीकार नहीं किया । ऐसी स्थिति में इनके प्रति यहाँ कुछ भी कहना कोई अर्थ नहीं रखता ।

अद्ययन और तदसम्बन्धी अनए म, इन नौ वर्षों में, अनेक व्यक्तियों से मुझे समय-समय पर अनेक प्रकार की सहायता मिली है, उन सबका नामोल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है । सबसे अधिक मैं उन लोगो का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हस्तलिखित प्रतियाँ आदि दिलाकर अध्ययन का अवसर प्रदान किया । मैंने इस सन्दर्भ में अनेक लोगों से विचार विमर्श किया है । खेद है कि उनमें कई तो इस सत्सार में नहीं रहे, एमो में मुकाम के सा गोपालदासजी सालासर के मह न ननूरामजी, जागलू के महत्त केवटदासजी, पीपासर के साधु उम्मेदरामजी, दुनारावाली के धोक्लरामजी का नाम मैं श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूँ । जम्भवाणी के पाठ सम्पादन में सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० माताप्रसादजी गुप्त से मुझे महत्त्वपूर्ण

सुझाव मिले थे। दुप की बात है कि व स्वगवासी हो चुके हैं। मैं निवृत्त धारमा को प्रगाम करता हूँ।

रामदासास व मट्ट श्री रामनारायणजी व दग ध्ययन विषयक धनेर तरह न भरी सहायता की है। इनस विचार-परामर्श कर मैं बहुत ही सामां वत हुआ हूँ। मवथी महंत रणछोडदासजी, कोगलदासजी, जाम्भा गूणतगामजी, रडछोडदासजी, रडवता, रामप्रकाशजी, चंद्रप्रकाशजी, सम्भराषळ, ब्रह्मगामजी, गीरा (महराणा), वीरमरामजी तथा धन्य धापन वध, मुकाम हरिराम गायणा, रामदासास, भागोरय गायणा, २६ वीं गी, (श्री गगानगर) से भी मुझे सूचनाएँ मिली हैं।

श्री पूनमचन्द्रजी विष्णोई उपाध्यय, राजस्थान विधान सभा, जयपुर तथा श्री रामनारायणजी, एडवोकेट, जोधपुर ने समय-समय पर इस काम में विनोप रचि लकर मेरा उत्साह बढ न किया है।

श्रद्धेय डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डॉ० सुकुमार सेन, डा० सत्येन्द्र, डॉ० धान-प्रकाश दीक्षित, डॉ० लक्ष्मीधर मातवीय, डा० गोपीनाथ गर्मा, डा० ब्रह्मदत्त शर्मा जससमर व श्री हरिदत्त गोविंद व्यास से मुझे धनेक सुभाव मिले हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय व हिंदी विभाग के प्राध्यापक सहयोगियो— विनोपत विज्ञान सभाय (महाराजा बालज) के सभी प्राध्यापको स तो विचार विमश करता ही रहा हूँ। सवथी कृपाशंकरजी तिवारी, शम्भुसिंह मनोहर डा० जगदीशचंद्र जोशी, डॉ० रामकुमार गुप्त, डा० मूलचंद्र सेठिया को तो इस सम्बन्ध में मैंने काफी कष्ट दिया है।

मैं इन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

धनेक विष्णोई बहना न मुझे लोकगीत लिखाए और इस सम्बन्ध में सहायता की है, इनमें सब श्रीमती तुलसीदेवी गोदारा परमेश्वरी देवी भाद्र, चूनी सारण और छोटी गोदारी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

विभिन्न हस्तलिखित प्रतिमा के चित्र आदि लेने में सवथी मुमेरजी माथुर, बटपालजी और धार० वी० गौतम ने धपना बहुमूल्य समय लगाया है। टोक के श्री मौलवी मोहम्मद इमरान साहब ने उद्ग फारसी के बहुत से तात्रप, पट्टे-परवान आदि पढ़कर उनका हिंदी रूपांतर करने में सहायता दी है।

सवथी हरिरामजी बोला रामजसजी जेलदार रामरखजी भाद्र, रामचन्द्रजी कानड सनीरामजी धारगिया, राजलालजा डेवू, मालारामजी राव, हरीगारामजी डाका वीरवलजी धारलिया, पृथ्वीराजजी कडवासर पुर के सोहननालजी गोदारा, रामचन्द्रजी ठेकागर ने भी धपना महयोग प्रदान किया है।

मैं इनको तथा उा सभा विष्णोई वधुधो और बहनों को जिनका नामोल्लेख यहाँ नहीं कर पा रहा हूँ उनकी सहायता व निष्प हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मेरे शोध छात्रो-सवथ्री भैंवरसिंह सामोर, शंकरलाल गुप्त, गोपालसिंह राजावत और भोमप्रकाश ने इस काय हेतु अपना बहुमूल्य समय लगाया है। नामानुक्रमणिका सवथ्री राजावत और भोमप्रकाश ने तयार की है। मैं इनके सुखी जीवन की कामना करता हूँ।

सवथ्री रतनलालजी पचीसिया, नदलालजी राठी, मदनगोपालजी सारडा, हरि प्रसादजी माहेस्वरी, ऊधोदासजी मूँघना, भाई मूलच दजी बाहेती ने कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली आदि स्थानो से मेरे लिए स दभ-अथ तत्परता से मुलभ किए हैं। श्रीमती डॉ० स नोष मुकुल, एम०बी०बी०एस० और श्री डॉ० रामकुमार गोनारा, एम०बी० बी०एस० ने इस दीर्घ काल मे मेरे और परिवार के सभी सदस्यों की शारीरिक व्याधियो के उपचार की ओर से मुझे सवथा निश्चित कर दिया था। सवथ्री मुकुलजी, डा० के०सी० गुप्ता, नानप्रकाशजी पिलानिया और हनुमानप्रसादजी धर्म सदा प्रोत्साहित करत रह है। मेरी सुपुत्री चि० वीणा निरंतर रूप से मेरे अनक छोटे मोटे काय घर मे करती रही है। इसी प्रकार, कलकत्ता मे चि० राज राठी और चि० अगोक सारडा तथा दिल्ली मे चि० जग मोहन पचीसिया ने मेरी खूब सेवा की है। अपने आत्मीयों और परिजनो का धन्यवाद समपण करने मे मुझे सदा सकोच का अनुभव होता है, जो यहा भी है।

सत साहित्य के ममन आचाय श्री परशुरामजी चतुर्वेदी ने बिना किमी व्यक्तिगत परिचय के, मेरे जरा से अनुरोध पर प्रस्तुत प्रबंध की प्रस्तावना लिखकर मुझे गौरवाँ वत किया है। अत्यन्त कायब्यस्त रहते हुए भी उन्होंने थोडे समय में ही अपनी सारगर्भित प्रस्तावना लिख भेजी है। इस सम्बंध मे वे लिखते हैं (ता० ३१-१२-६६ के पत्र में) —“इसके प्रस्तावना मात्र होने के कारण, मैंने इसे भरसक परिचयात्मक रूप ही दिया है तथा प्रसंगवश, कही कही एकाध वार कुछ सुझाव तक भी दे डाले हैं। आपकी यह पुस्तक बहुत अच्छी है और मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपा करके केवल जाम्भोजी वाली रचनाआ का एक पृथक् सस्करण भी आवश्यक गद्दाय के साथ निकाल दें, जिससे उनका उपयोग अधिक मे अधिक पाठको द्वारा किया जा सके”।

मैं श्री चतुर्वेदीजी के बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। ऐसी रचनाओ मे पाँच के सम्पादित सस्करण तयार हैं और शीघ्र ही पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत किए जाएंगे, शेष पर काय चालू है। मैं श्री चतुर्वेदीजी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

अनेक मित्रो एव शुभपियों ने पुस्तक की अग्रिम प्रतियाँ खरीद और इस हेतु सहयोग प्रदान कर प्रकाशन काय को बहुत मुलभ बना दिया है। मैं उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रबंध मे कतिपय राजस्थानी शब्दा का प्रयोग जानबूझ कर ही किया गया है। उपयुक्त घय और भाव शेष की दृष्टि से उनके पर्यायवाची शब्दा का खडी बोली मे अभाव भी एव मुख्य कारण है।

यदि पाठकों ने इसको कुछ भी उपयोगी समझा, तो मैं अपने धर्म को साधक मानूँगा। इस सम्बंध में मैं विद्वानों के शुभावशेषों का सदा स्वागत करूँगा। अंत में जाम्भोजी के शब्दों में यही निवेदन करना चाहता हूँ —

सजवा बाग ज हसा टोळी, भुगला टोळी भी बागू ॥८७ ३१-३२

सजवा साग ज नागर वेली, बूचर बगरा भी सागू ॥८७ ३५-३६

सी-१८ ए, मोती बाग,
बापूतगर, जयपुर-४
शनिवार, ३१ जनवरी, १९७०

-हीरासात माहेदवरी

विषय-सूची

पहला भाग

(खण्ड १ तथा २)

पृष्ठ १-४७०

खण्ड १ पृष्ठभूमि

पृष्ठ १-२१८

अध्याय १ अध्ययन सामग्री

पृष्ठ १-१४२

इसमें निम्नलिखित सामग्री का परिचय दिया गया है

(क) हस्तलिखित प्रतियाँ-३८३

(ख) परवाने — १४ (क्रम संख्या ३६१ से ३६५ तथा ३७१ से ३८३)

(ग) विगत — ३ (क्रम संख्या ३५७, ३५८, ३६०)

(घ) ताम्रपत्र — १ (क्रम संख्या ३६६)

(ङ) रुक्का — १ (क्रम संख्या ३५५)

(च) लिखित — ६ (क्रम संख्या ३५२ से ३५४, ३५६, ३८४, ३८५)

कुल योग—४०८

विशेष—इसमें जम्भवारी के सम्पादन में प्रयुक्त ७ हस्तलिखित प्रतियों में से ४-
(प्रति जा० रा० गो० और पी०) को गणना नहीं की गई है।

अध्याय २ जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य सम्बन्धी किया गया अब
तक का काय

पृष्ठ १४३-१६६

इसका विवेचन—१-विष्णोई लेखको द्वारा किया गया काय

१४३-१५४

२-अन्य लेखको द्वारा किया गया काय

१५५-१६६

अध्याय ३ सत्कालीन स्थिति

पृष्ठ १६७-२१८

(वित्रम १६ वीं शताब्दी तक, मरुप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में)

(क) राजनीतिक स्थिति

१६७-१८१

१-राजस्थान नाम— २-जागलु—३-इवालक, माड, मेदपाट—४-वागड, वागड-

देग—५-वागड देश में राजनीतिक उथल-पुथल राठीड—६-जागलू के साखले—७-

पूगल के भाटी—८-भटनेर के भाटी—९-वागड देश के जाट, उनका विस्तार—१०-

जोहियावाटी के जोहिये—११-मोहिलवाटी के मोहिल—१२-शेखावाटी के कायमखानी—

१३-राजस्थान में मुसलमानों का प्रवेश अजमेर,—१४-मुसलमान और नागौर—१५-

राठोड मंडोर, जोधपुर—१६-राठोडो का विस्तार—१७-मेवाड—१८-जसलमेर के माटो—१९-आमेर के कछवाहा तथा अन्य राज्य—२०-दिल्ली सयद, लोदी, सूर, मुगल—२१-निष्कप ।

(ख) सामाजिक स्थिति

१८१-१९५

१-विभिन्न वर्ग—२-राजवर्ग—३-जाट, सेतिहर वर्ग—४-सम्बन्धित उल्लेख—५-कारीगर और मजदूर वर्ग—६-यापारी वर्ग ७-आर्थिक या पूरा रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत वर्ग—८-शकुन और ज्योतिष—९-कलावाज वर्ग—१०-निम्न वर्ग ११-साधु वर्ग १२-स्त्री, बहु-विवाह, विषवा-विवाह, घाचरण—१३-गोठ, 'जागर', 'जमला', चारी-डाके—१४-भाषार-विचार, खान-पान—१५-अफीम—१६-मद्य-माम, जीव-हत्या—१७-भाग और तम्बाकू—१८-जाटो का विशेष उल्लेख—१९-समग्रता में समाज, जाम्भोजी के कार्य

(ग) धार्मिक स्थिति

१९५-२१८

१-पीठिका—२-सोलहवीं शताब्दी विष्णोई कवियों के धार्मिक स्थिति विषयक प्रामाणिक उल्लेख—३-हिंदू धर्म (क) विष्णु—(ख) शिव—लकुलीन—रावल—नाथपथ—रसेश्वर दगन—(ग) ब्रह्मा—(घ) सूर्य—(ङ) शक्ति चारण देवियाँ—(च) गणेश । ४-स्मात मन—धार्मिक सहिष्णुता—निष्कप—५-जन धर्म—६-मुसलमान धर्म—७-नाथ सम्प्रदाय—विष्णोई साहित्य के आधार पर निष्कप—दक्षिणभुण्डी पात्र देव यात्रा-पथ-गम्या—प्रमुख नियाँ—बारह पथ—नी नाथ—राजस्थान म नाथ पथ—(क) बालनाथ—कपितानी पथ—(ख) हंडीभग पावपथी, सत्यनाथा—(ग) धूमलीमल गरीरनाथ सत्यनाथी—(घ) जाल-धरनाथ पावपथी—(ङ) हम्मरदेव रावल पथी—(च) गापीच ८, भरथरी, चपट बालगुदाई, लक्ष्मणनाथ पस्वीनाथ पावपथी, बराय पथी—(छ) गोरल-नाथ । ८-पापट पुत्रा (कल्ट वर्ग) —(१) गोगोत्रा—(२) तेजोजी—(३) रावल मल्ली-नाथ—(४) पावुत्री राठोड—(५) रामदेवजी तवर—(६) महोजी मागनिया—(७) हठभूजी सांगसा । ९-निष्कप-विष्णोई सम्प्रदाय—प्रवृत्त की भूमिका ।

संख २ प्रवृत्त, धानी और सम्प्रदाय

पृष्ठ २१९-४७०

संख्या ४ जाम्भोजी का जीवन-वृत्त

पृष्ठ २१८-२५४

मल्लुखा राव सातल-(३) द्रोणपुर के राठौड राव बोदा से मोती मेघवाळ को छुडवाना-
(४) सवत १५५३-५४ के अकाल में सहायता करना-(५) अन्य मतानुयायी और विप्लोई
सम्प्रदाय-मुहम्मदखा नागौरी-(७) गदशाह सिक्ंदर लोनी-(८) कर्नाटक का नवाब शेख
सदो और मुल्तान का सधारी मुल्ला-(९) जसनमेर के रावळ जतसी-(१०) मेवाड के
राणा सागा, भाली राणी-(११) बोकानेर के राव खूणकरण और कुँवर जतमी-(१२)
मूला पुरोहित । (ख) घटनाय या वात जिनका काल अनिश्चित है-(१) भोत गाव के रावण,
गोय द भोरड-(२) नाथूमर का सती जोखानी-(३) मेडतावादी के पडवालो गाव के ऊदो
और अतली-(४) रिणमीनर का मगोवल और उसकी पत्नी लाहणी-(५) जागनु ग
वरसिंह बणियाळ । वकुण्ठवात-प्रभाज और महत्व-वाणी (सबदवाणी) ।

अध्याय ५ जाम्भोजी दशन और अध्याय - - पृष्ठ २५५-२७४

१- स्वयम्भू विष्णु - अनेक नाम - २- विष्णु नाम - ३- स्वयम्भू विष्णु की
विभूतिया - स्वरूप बखान - ४- विष्णु की व्यापकता - ५- विष्णु मूलतत्त्व है - ६-
अवतार धारण - ७- मूर्ति पूजा की नि दा - ८- सदगुरु - ९- जाम्भोजी विष्णु है -
१०- जाम्भोजी के यहाँ आन का धारण - ११- आत्मा - १२- मया- (क) जगत की
नश्वरता - (ख) पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं - (ग) नाने-रिश्तो की अक्षरता - (घ) सांसा-
रिक मोह माया जाल है - (ङ) दुनिया का स्वरूप - (च) मानव माया जाल में है - (छ)
मृत्यु की अनिवायता । १३- शरीर-मन-ईंद्रिया - १४- सृष्टिक्रम - १५- पुनजन्म और
कर्म सिद्धांत - आवागमन - १६- स्वर्ग-नरक - १७- मुक्ति - १८- ज्ञान, मक्ति और
प्रेम - १९- साधना, योग दिव्यदर्शि - २०- आचार-व्यवहार - आत्मानुशासन के मुख्य
नियम - २१- पाखंड - (१) क- जोग पाखंड - ख- मुसलमान पाखंड- ग- हिंदू पाखंड
(२) पाखंडों का सामान्य रूप से सामूहिक बखान - (३) सम्भावित पाखंड ।

अध्याय ६ जम्भवाणी (सबदवाणी) पाठ - सम्पादन - पृष्ठ २७५ - ४१६

(क) सूक्तिका - - - - २७५ - ३०२

१- हस्तलिखित प्रतियाँ प्रतियों की बहिरंग परीक्षा - (१) जा० प्रति - (२)
रा० प्रति - (३) गो० प्रति - (८) म० प्रति - (५) ला० प्रति - (६) पा० प्रति - (७)
ब० प्रति । २- अग्र प्रतिया । ३- प्रतियों की अंतरंग परीक्षा- (क) जा० रा० गो० पी० म० व०
प्रतियाँ - (ख) रा० गो० पी० म० व० प्रतिया - (ग) रा० गो० पी० प्रतियाँ - (घ) म०
व० प्रतिया - (ङ) ला० म० व० प्रतियाँ - (च) जा० म० व० प्रतियाँ, - ४- सबद प्रतीक -
तुलना मरु सख्या-सूची- ५- प्रतिया का प्रतिलिपि सम्बन्ध- ६- सम्पादन-मिद्धात- ७-
अपवाद ।

(ख) जम्भवाणी पाठ (पाठांतर और महत्वपूर्ण रूपांतर सहित) - - ३०३-४१६

अध्याय ७ विप्लोई सम्प्रदाय - - - पृष्ठ ४१७-४७०

१- प्रवक्तव्य जाम्भोजी व्यवहितत्व- २- जम्भवाणी (सबदवाणी)-(क) कथन, रूप
परिमाण आदि- (ख) सबदवाणी और नाथ मिद्धा की वाणियाँ- (१) गोरखनाथ (गोरख

यानी)- (२) काणोरीपाव, भरघरी- (३) छत्र-विशेष का मिश्र-मिश्र नामों के नाम से चलन- (४) गोरग और पाटपतीजी- (५) गवतवाणी और जलधरीपाव, बरपटनाय (५) विष्णोई कवियों की रचनाएँ और नाम मिथ्या की वाणियाँ- (६) बानू और भरघरी- (७) हरिराम और गोपीचंद- (८) निष्प- (९) जाम्भोजी के व्यक्तित्व और सत्त्ववाणी का प्रभाव मूल स्वर- ३- सातियाँ- (क) मायता और रूप- प्रकार- (ग) सक्तन-सग्रह- (ग) निष्प- (घ) अज्ञात कवि कृत साखी- (ङ) साखी-रचना, परिमाण और महत्त्व- (च) चण्य-विषय । ४- हरजस- हरजस और सागी म अंतर- ५-सम्प्रदाय का स्वरूप- ६- २६ घमनियम- ७-सम्प्रदाय विभिन्न नाम- ८- विष्णोई नाम मूल कारण- ९-सम्प्रदाय का क्रम-विकास- (क) जाम्भोजी महाराज का वसुण्डवास और पद्मावत- (ग)समाधि-मंदिर का निर्माण रणधीरजी की मृत्यु- (ग) मेहोजी का जांगलू प्रस्थान, पचायत का मुकाम-मंदिर पर अधिकार- (घ) पचायत का 'चने की चोपा करना- (ङ) सम्प्रदाय की स्थिति- (च) वील्होजी का आगमन और काय- (छ) कैमोजी के काय- (१) स्थानों सवधी- (२) पचायत सवधी- (ज) १८वीं शताब्दी पूर्वार्ध -अथ लोगों के काय और महत्त्व- (झ) मुसलमानी प्रभाव की कल्पना- (ञ) १८ वीं शताब्दी उत्तरार्ध से वर्तमान काल तक- (ट) पचायत । १०-जम्मा, जागरण और जागर - ११ - जम्मा, जागरण गेय सामग्री - १२ - हवन- १३ - मुख्य प्राचीन स्थान और साधरी - (१) पीपासर - (२) मभरायन - (३) लोहाबट- (४) जांगलू- (५) पिछोवडो-जांगलू- (६) रोह- (७) जाम्भोजी- (८) रिण-सीसर- (९) भीयासर- (१०) गुडा- (११) रुडकली- (१२) रामडावास- (१३) छान नाडी (रामडावास)- (१४) पुर- (१५) दरीवा- (१६) समला- (१७) लादीपुर- (१८) नगीना- (१९) रावतखंडा- (२०) लालासर- (२१) मुकाम- (क) मुकाम-मंदिर की प्रथम-परम्परा साधु थापन, (ख) पचायत- (ग) महासभा- (घ) राजाणाएँ और परवाने । १४ अथ स्थान तथा २२ भण्डारे- १५-जाम्भोजी के उपदेशों का प्रभाव- (क) नियम-पात्रन म दढना और तोर-सग्रह वृत्ति- (ख) उल्लेखन पर 'खडाएँ' (प्राणत्याग) । १६-विभिन्न राजाओं के परवाने आदि-जोधपुर, उदयपुर बीकानेर, अमरेजी राज्य ।- १७-पचायतों के काय और महत्त्व-व्यावहारिक जीवन- १८-'पुह' (पुण्य)- (क) ३५ पुह- (ख) २७ 'तुगाइयो की पुह'- १९-६ राजकवियों की विगत और 'चोईसा को सूरों- २०-घाट, जाम्भोजी दाग, 'सागड' दागना, दई गाय । २१ मत्र- २२-समाज- (क) थापन- (ख) गायणा- (ग) भाट- (घ) गामाय गृहरथ- (ङ) साधु- (च) अभिवादन प्रणाली- (द) जातियाँ । २३-आवादी- २४-विष्णोई गाँवों की सरया- (१) राजस्थान- (२) पंजाब-हरियाणा- (३) उत्तर प्रदेश- (४) मध्य-हैराबाद- (५) मध्यप्रदेश- तथा अथ । २५-जनगणना- २६-विभिन्न संस्कार आदि- (क) संस्कार- (ख) माय त्योहार- (ग) विधियाँ- (घ) सूत-पक्षेवडी- (ङ) वेग-भूषा । २७-तीरनाथ और हरजन- २८ कवियत्र प्रमुख सामाजिक सम्पाएँ- (क) भारतवर्षीय विष्णोई महासभा- (ख) क्षत्रीय सम्पाएँ (१) अग्नित भारतीय जन्मेदर मेवक दल- (२) विष्णोई ममा, त्रिता पीरोत्रपुर- (३) विष्णोई सभा, हिमार- (४) श्री विष्णोई सभा समिति

कानपुर १-२९ जम्भेदेवरीय सत्र ।

परिशिष्ट १-चित्र-सूची (कुल चित्र-सख्या-११२) पृष्ठ-१-४९

(सम प्रति सख्या (अध्याय १, अध्ययन-सामग्री) सामग्र-१६, २३, ४८, ५२, ६५, ६६, ६८, ८१, १०८, १४२, १५९, १६०, १९३, २०१, २०४, २०७, २११, २२७, २६१, ३६२, ३६३, ३७५ से ३८५ और ४०६ के ९२ चित्र तथा शेष २०, ताम्रपत्र एवं विभिन्न स्थानों के हैं)

इस सूची की दो तालिकाएँ प्रस्तुत की गई हैं—एक वह, जिसमें पृष्ठ-सख्या-क्रम से चित्र और प्रति सख्या तथा दूसरी वह, जिसमें चित्र-सख्या-क्रम से पृष्ठ सख्या का विवरण दिया गया है ।

तालिका-१ • पृष्ठ सख्या-क्रम :

पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	प्रति सख्या
३	१, ३१	२०१
४	२	२०१
५	३, २२	२०१, १६
६	४, ७, ६	२०१
७	५, १३, १९	२०१, पी० प्रति, १६
८	६	२०१
९	८	२०१
१०	९, १०, ११, १२	जा०, रा० प्रतिर्या
११	१४, २३, ६७	पी० प्रति, ६८, ५२
१२	१५, १६, ७६	६५, ३८०
१३	१७, १८, २०	८१, २०१
१४	२०, ३७, ३८	१६, २३
१५	२१, २४	१६, ६८
१६	२५, २६, २७	६८, २०१
१७	२८	२०१
१८	३०	२०१
१९	३३, ७१	४८, १६०
२०	३२, ३६	४८
२१	३५, ३४	४८
२२	३९, ४०	२०१
२३	४१, ४२	२०१
२४	४३, ४४, ४५	१९३

पृष्ठ संख्या	विषय संख्या	प्रति संख्या
२५	४६, ६०, ६१	१९१, १०८
२६	४७	२०१
२७	४८, ४९	२०१
२८	५०, ५२	२०७, २०१
२९	५१, ५३	२०७, ४०६
३०	५४, ५८	४०६, २२७
३१	५५, ५६	२०४, २११
३२	५७, ७४	२२७, ३८१
३३	५९, ६६	२२७, ५२
३४	६२, ६३, ६४	भक्तमाल की प्रति, २६१
३५	६५, ६८	१५९, १६०
३६	६९, ७०, ९०	१६०, १४२
३७	७२, ७३	३८४, ३८५
३८	७५, ७६	३८३, ३७७
३९	७८, ८३, ८४, ८५	३७९, ताम्रपत्र, ३०२, ३६३
४०	८०	३८२
४१	८१, ७७	३७६, ३७८
४२	८२	३७५
४३	८६, ९२, ८७, ९३	२०१, ६६
४४	८८, ९१, ८९	१४२
४५	९८, १००, ९९, १०४, १०७, १११	लोहावट साधरी, विष्णोई मंदिर समेता, रुडकली, बरीगभाळी नाडी, विष्णोई मंदिर, वाँट बरीसाल नगाडा
४६	१०१	जाम्भोजाव
४७	१०२, १०३, १०५, ९६, ९७	समाधि मंदिर मुकाम, भीवासर साधरी, पिंड द्वियो बरो' रुडकली, जागळू साधरी, पिछोवडो'- जागळू ।
४८	१०८, १०६, ९५	विष्णोई मंदिर हिसार, लोदीपुर साधरी, समरायळ
४९	९४, ११०, १०९, ११२	पीवासर साधरी, विष्णोई मंदिर, टीबा (महाराणा) विष्णोई मंदिर, रायसिंहनगर, सवथी महत्त रामनारायणजी, महात्मा श्रीरामदासजी ।

तालिका-२ : चित्र सरया-क्रम :

चित्र सख्या	पृष्ठ सरया	चित्र सख्या	पृष्ठ सरया
१	३	४६	२५
२	४	४७	२६
३	५	४८-४९	२७
४	६	५०	२८
५	७	५१	२९
६	८	५२	२८
७	९	५३	२९
८	१०	५४	३०
९ से १२	१०	५५-५६	३१
१३	७	५७	३२
१४	११	५८	३०
१५-१६	१२	५९	३३
१७-१८	१३	६०-६१	२५
१९	७	६२ से ६४	३४
२०	१४	६५	३५
२१	१५	६६	३३
२२	५	६७	११
२३	११	६८	३५
२४	१५	६९-७०	३६
२५ से २७	१६	७१	१९
२८	१७	७२-७३	३७
२९	१३	७४	३२
३०	१८	७५-७६	३८
३१	३	७७	४१
३२	२०	७८	३९
३३	१९	७९	१२
३४-३५	२१	८०	४०
३६	२०	८१	४१
३७-३८	१४	८२	४२
३९-४०	२२	८३ से ८५	३९
४१-४२	२३	८६-८७	४३
४३ से ४५	२४	८८-८९	४४

चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या
६०	३६	१०४	६१
६१	४४	१०५	४७
६२-६३	४३	१०६	४८
६४	४६	१०७	४९
९५	४८	१०८	४८
६६-६७	४७	१०९-११०	४९
६८ से १००	४५	१११	४५
१०१	४६	११२	४६
१०२-१०३	४७		

त्रिपय-सूची

दूसरा भाग

खण्ड ३ विष्णोई साहित्य

पृष्ठ ४७१-१०५१

अध्याय ८ विष्णोई साहित्य

पृष्ठ ४७१-९५८

(कालरुमानुसार प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

क्रम सं०	कवि-नाम	काल (विक्रम संवत्)	रचनाएँ	पृष्ठ संख्या
१	२	३	४	५
१	तजोजी चारण-	१४८०-१५७५	१-छन्द, २-गीत, ३-साखी, ४-हरजम, ५-मरसिये-	४७३-४८३
२	समसदीन-	१४६०-१५५०	साखी-	४८३-४८५
३	डेल्हजी-	१४९०-१५५०	१-मुघ परगास, २-कथा अहमनी-	४८६-५११
४	आधरे-	१५००-१५५०	साखी-	५११-५१२
५	पदम भगत-	१५००-१५५५	१-त्रिसराजी रो व्यावलो-	
	विभिन्न प्रतिपा- तीन परम्पराएँ-तीन समूह-प्रथम-द्वितीय- तृतीय-कथासार-विवेचन, २-फुटकर पद, आरती, हरजस-			५१२-५२२
६	बील्हजी चारण-	१५००-१५६०	१-वारामासो, २-कवित्त-	५२२-५२६
७	सुरजनजी (हुजूरी)-	१५००-१५७०	साखी-	५२६-५२७
८	सिबदास	१५००-१५७०	साखी-	५२७-५२८
९	एकजी-	१५००-१५७०	साखी-	५२८-५२९
१०	अमियादीन-	१५००-१५७०	साखी-	५२९-५३०
११	जोषो रायक-	१५००-१५७०	साखी-	५३०-५३१
१२	केसीजी देडू-	१५००-१५८०	साखी-	५३१-५३२
१३	लालचन्द नाई-	१५००-१५८०	साखी-	५३२-५३३
१४	काहोजी वारहट-	१५००-१५८०	१-बावनी, २-फुटकर छन्द, गीत, कवित्त, हरजस-	५३३-५३७

१५	आसोजी-	१५००-१६००	भूमणो-	५३७-५३८	
१६	से	१६	वी शताब्दी	साधियां-	५३९-५४१
२८	अशात				
२९	अशात-	१६	वी शताब्दी	अशातोत्र (शोत्र)-	५४६-५४७
३०	से	१६	वी शताब्दी	साधियां-	५४७-५४८
३४	अशात				
३५	अशात-	१६	वी शताब्दी	छप्पय (कवित्त)-	५५०
३६	कोल्हजी चारण-	१६	वी शताब्दी	छप्पय (कवित्त)-	५५०-५५२
३७	ऊजोजी नाग-	१५०५-१५९३/९४	जीवन-प्राप्त नथीन	जीवन-प्राप्त नथीन	
			२९ धर्मनियमां सम्बन्धी कवित्त-पाठ पाठांतर आदि रचनाएँ-		
			१ सासी, २-हरजस, मारती, ३-कवित्त, ३-प्रथम चिंतावली-		
			भावभ्यजना-(१) जाम्भाणी रूप-(२) नारी रूप म आत्म्यानुभूति		
			और निवेदन-(३) मुक्ति हेतु प्रयास और चेतानो-वाक्य का		
			लक्षण-महत्त्व और मूल्यांकन-(क) वाक्य रूप-परम्परा म (ख)		
			लोकजन मनोवृत्ति परिष्कार-(ग) भावधारा-(घ) अनुभूति,		
			प्रोक्त तत्त्व-		५५२-५७८
३८	अल्लूजी कवियां-	१५२०-१६२०	जीवन-प्राप्त नथीन	जीवन-प्राप्त नथीन	
			सामग्री के आधार पर निष्पन्न-अत साक्ष्य, बहिर्साक्ष्य-		
			रचनाएँ-कवित्त गीत, योग, गीतरमात्मक आयात्म-वीर		
			रसात्मक-मरसिये-		५७९-५९१
३९	दीन महमद-	१५२५-१६००	हरजस-	५८२-५९३	
४०	रायचंद सुधार-	१५२५-१६१०	साधियां-	५९३-५९५	
४१	कुलचंद्राय अप्रवाल-	१५०५-१५९३	साधियां-	५९५-५९७	
४२	राव त्रुणकरण-	१५२६-१५८३	स्तुति-कवित्त-	५९७-५९९	
४३	देडाजा-	१५३०-१६२०	साखी-	५९९-६००	
४४	वाजिदजी-	१५३०-१६००	साखी - दादूपदी वाजिद		
			से भिन्न-पादपदी वाजिद की ६८ रचनाओं की सूची-	६०१-६०३	
४५	लक्ष्मणजी				
	गीतरा-	१५३०-१५९३	साखी-	६०३-६०५	
४६	आलमजी-	१५३०-१६१०	१-साखी, २-हरजस-	६०५-६११	
४७	गाम घत्तरवाळ-	१५३०-१६००	१-हरजस २-साखी-	६१२-६१५	
४८	भावराज-	१५३०-१६००	साखी-	६१५-६१६	
४९	दान सुन्दरी-	१५३५-१६००	साधियां-	६१६-६१८	
५०	मनोज्ञा गात्रा-	१५४०-१६०१	रामायण-क्यासार-		
			प्रचलित कथा और इमम कुठ अंतर-विवेचन-	६१९-६३५	

५१	रहमतजी-	१५५०-१६२५	हरजस-	६३५-६३६
५२	गुगदास-	१५६०-१६४०	साखी-	६३६
५३	लाखू-	१५६०-१६५०	साखी-	६३७
५४	अज्ञात-	१५६६/१५६७	छप्पय (कविता)-	६३७-६३९
५५	वील्होजी-	१५८६-१६७३	जीवनवत्त-रचनार-	
(परिचय और विवेचन)-१-कथा धडावध, २-कथा भौतारपात, ३-कथा गुगलिय की, ४-कथा पूल्हेजी की, ५-कथा दूगपुर की, ६-कथा जमलमेर की, ७-कथा भोरडा की, ८-कवत परसग का, ९-कथा ग्यानचरी, १०-सच अखरी विगतावळी, ११-साखियाँ, १२-हरजस, १३-विसन छत्तीसी, १४-छपइया (छप्पय), १५-दूहा भक्त अयरा-अवतार का, १६-छुटक माधी (दोहे)-महत्त्व और मूल्यांकन-				
५६	दसधीदास-	१७ वी शताब्दी	सवया-	६३६-६८६
५७	अनद-	१७ वी शताब्दी	१-कवत गोपीचंद का, २-कवत करवा पाडवा का महाभारत का, ३-फुटकर छंद-	६८६-६८८
५८	अज्ञात-	१७ वी शताब्दी	साखी-	६८८ ६८९
५९	नानिग-	१७ वी शताब्दी	१-साखी, २-नोमाणी-	६८९-६९०
६०	नालोजी-	१७ वी शताब्दी	साखी-'भाबेलो'-	६९०-६९१
६१	गोपाल-	१७ वी शताब्दी	फुटकर छंद-	६९१-६९३
६२	हरियो(हरिराम)-	१७ वी शताब्दी	गोपीचंद की साखी-	६९३-६९४
६३	दुगदास-	१६००-१६८०	हरजस-	६९४-६९६
६४	किशोर-	१६३०-१७३०	सवया-	६९६-६९७
६५	अज्ञात-	१७ वी शताब्दी	गीत (डिगल गीत)-	६९७-६९८
६६	अज्ञात-	१७ वी शताब्दी	कविता (छप्पय)-	६९८
६७	बालू-	१६३०-१७३०	साखियाँ-	६९९-७००
६८	केसोदासजी गोदार-	१६३०-१७३६	जीवनवत्त-रचनार-	

(परिचय और विवेचन)-१-साखिया, २-हरजस ३-कविता, ४-सवय, ५-चंद्रामणा, ६-दूहा, ७-स्तुति अवतार की, ८-दस अवतार का छंद, ९-कथा बाललीला, १०-कथा ऊद मतली की, ११-कथा सम जोखानी की, १२-कथा मेडत की, १३-कथा चित्तीड की, १४-कथा इसकंदर की, १५-कथा जती तळाव की, १६-कथा विगतावळी, १७-कथा लोहापागळ की, १८-पह्लाद चिरत, १९-कथा भौव दुसामणी, २०-कथा मुरगारोहणी, २१-कथा बहमोवनी, २२-कथा अघलेखा की। महत्त्व और मूल्यांकन-कथाओं का महत्त्व-नारी-नाथ जोगी-समाज सवधी

- अथ सवेत-विष्णोई समाज सम्बन्धी-आत्मनिवेदन-भाव और विचार-
कतिपय सुप्त और अज्ञान्य रचनाओं के संकेत-(१) महाराजा हरि चन्द्र-
परित या कथा पर किंगी विष्णोई कवि के वृत्त काव्य की सम्भावना,-
(२) सबबाणी के कतिपय (क) अज्ञान्य और मुक्त तथा (ग) प्रकृत गद्य,
(३) जाम्भाणी विचारधारा उगकी धार्मिक वृत्तमूर्ति का परिचय तथा
सम्प्रदाय पर सामान्य या मुक्तमात्रो प्रभाव का धारणा का विवरण- ७०१-७६४
- ६६ गुरजनदासजी पूनिया-१६४०-१७४८ जीवनवत्त- रचनाएँ (परिचय
और विवेचन)-१-सातियाँ, २-गीत, ३-हरजस, ४-भागी अग-
चेतन, ५-दस अक्षरार दूहा, ६-असमय जिग वा दूहा, ७-गुरजनजी के
छन्द ८-कवित्त,- विचारधारा-इतिहासिक कवित्त-मन्द इतिहासिक, वीरा
शिक-नाम गणनात्मक,-९-कवित्त-बावनी, १०-गवदए, ११-कथा चतस्र,
१२-कथा चितावणी, १३-कथा धरमचरी १४-कथा हरिगुण, १५-
कथा औतार की १६-कथा परसिध १७-ग्यान मन्तम १८-ग्यान
तिलक १९-कथा गजमोक्ष २०-कथा उधा पुराण २१-भोगळ पराण
२२-रामरासी (कवित्त रामरास का)-मदृत्व और मूल्योक्त-स्वानुभूति,
आत्मनिवेदन-कतिपय महत्त्वपूर्ण सवेत और उल्लेख- ७६४-८२५
- ७० मिठुजी- १६५०-१७५० १-हरजस, २ सबए- ८०५-८२६
- ७१ माखनजी- १६५०-१७५० हरजस-'सोहलो'- ८२६-८७७
- ७२ रामू खोड- १६७५/७६-१७०० साखी- ८२७-८२९
- ७३ रूपा बणियाळ- १६८०-१७५० साखी- ८२६-८३०
- ७४ दामोजा- १६८०-१७६८ १-कवित्त २-साखी- ८३०-८३१
- ७५ देवोजी- १७००-१७८० हरजस- ८३१-८३२
- ७६ हरिन- १७००-१७८० १-हरजस, २-फुटकर छन्द- ८३२
- ७७ गोकलजी १७००-१७६० जीवनवत्त-रचनाएँ-
(परिचय और विवेचन)-१ इ देव छन्द २ अक्षरार की विगति,
३-परची, ४-स्तुति होम की, ५-साखियाँ- ८३३-८३९
- ७८ रासानन्द- १७००-१८०० हरजस- ८३६-८४१
- ७९ मुकनजी १७१०-१७९० १-फुटकर छन्द,
(मुकनदास)- २-हरजस- ८४१-८४३
- ८० सेवादास- १७२०-१७८० १-इ देव छन्द
२-चौडुगी, ३-पिसण सिधार- ८४३-८४८
- ८१ चतरदास- १७००-१८०० भजन (गोपीचन्द विषयक)- ८४८
- ८२ अनास- १८ वी अताणी हरजस (भरथरी विषयक)- ८४६
- ८३ अनास- १८ वा अताणी हरजस (गोपीचन्द विषयक)- ८४६-८५०

८४ सुशामा-	१७००-१८००	वारहखडी-	८५०-८५१
८५ अजात-	१७५०	भजन-	८५१
८६ होरानन्द-	१७५०-१८००	हिडोलगो-	८५१-८५२
८७ हरजी वसिष्ठाळ-	१७४५-१८३५	१-सागियाँ, २-फुटकर छन्द-	८५२-८५७
८८ परमानन्दजी वसिष्ठाळ-	१७५०-१८४५	जीवनवक्त-रचनाएँ-	
(परिचय और विवेचन)-१-प्रसा-दोहे २-हरजस, ३-मगविया ४-विसन असतोत्र, ५-फुटकर छन्द, ६-साका (गद्य), ७-उमछरी (सवत्सरी)-काव्य का उद्देश्य और भावधारा-(१) हरि-(२) अनुभव, -दशन और अध्यात्म-ब्रह्म-विष्णु नाम-विष्णु स्वरूप-जाम्भोजी विष्णु हैं-अप्य देव पूजा, जीव, शरीर-माया (मन, जगत)-सष्टि त्रय-पुनर्जन्म-कर्म सिद्धांत-मुक्ति-भक्ति-ज्ञान-प्रेम-गुरु-साधु और सत्सग-आत्मानुगमन के मुख्य नियम-पाखण्ड-जाम्भोजी-सम्प्रदाय की श्रेष्ठता और महत्ता-उक्तियाँ और उपमाएँ-गद्य-			
८९ गोविन्दरामजी			८५७-८८९
वगडिया-	१७५०-१८५०	जम्माष्टक (संस्कृत)-	८८९
९० रामलला-	१७७५-१८५०	१-हकिमशी मगल, २-हरजस, - हकिमशी मगल का कथासार-कतिपय भ्रामक बातों का निराकरण-विवेचन-	८९०-८९६
९१ हरमन्दजी ढुक्किया-	१७७५-१८६०	१-लघु हरि प्रह्लाद चरित २-फुटकर कवित्त-	८९६-८९९
९२ अजात-	१७७५-१८५०	कवित्त (छप्पय)-	८९९-९००
९३ गगाराम(गगादास)-	१७८३-१८८३	हरजस-	९०१
९४ सूरतराम-	१७८७-१८८७	हरजस-	९०१-९०२
९५ मयारामदास-	१८००-१८७०	१-अभावस्या कथा, २-फुटकर छन्द-	९०२-९०४
९६ खरातीराम मेरठी-	१८००-१८६०	वारहमासा-	९०४-९०६
९७ विष्णुदास-	१८००-१८८५	१-आरती, २-हरजस ३-जम्माष्टक की विष्णु-विलास टोका (गद्य में)-	९०६-९०७
९८ हरिकिसनदास-	१८००-१८९९	पत्रो (गद्य-पद्य)-	९०७-९०८
९९ पाकरदास(पोहकर)-	१८००-१८५०	१-नुगरी सुगरी को भगडो, २-भजन-	९०९-९१०
१०० उदोजी अढीग-	१८१८-१९३३	जीवनवक्त-रचनाएँ-	
(परिचय और विवेचन)- १-प्रह्लाद चरित, २-विष्णु चरित, ३-कक्का छत्तीसी, ४-सूर, ५-फुटकर छन्द-			
			९१०-९२०

१०१	मोतीराम-	१८५०-१९२५	आर्यभटी-	९०
१०२	अज्ञात-	१८५०-१९२५	अर्यभटी-	९१
१०३	सीमकट (विष्णु)-	१८५०-१९२०	गुरुकर्म-	९२
१०४	गोविन्दरामजी गोपाल-	१८५०-१९५०	१-गोविन्दजी की स्तुति २-गणित, ३-जन्म मरणा की रीति ४-विजय मन्त्र (गद्य)-	९३-९५
१०५	अज्ञात-	१८५५-१९५१	अर्यभटी (गद्य)-	९६-९७
१०६	अज्ञात-	१९५१-१९५२	आर्यभटी की रचना की प्रस्तावना-	९८
१०७	साधु गुप्तीराम-१९५१	अज्ञात-	गुरुकर्म-	९९-१००
१०८	अज्ञात-	१८७५	गद्य (गद्य-गद्य)-	१००
१०९	अज्ञात-	१८७५	अज्ञात-	१०१
११०	अज्ञात-	१९५१-१९५२	गुरुकर्म-	१०२
१११	पीताम्बरदास-	१९५१-१९५२	१-आर्यभटी की स्तुति, २-जन्ममरण की रीति नाम	१०३-१०४
११२	परमरामजी-	१९५१-१९५२	दीर्घ-	१०५-१०६
११३	नेमीदासजी-	१९५१-१९५२	अज्ञात-	१०७-१०८
११४	साहबराजजी साहब-१८७१-१९४८	जीवनवृत्त-रचनाएँ (परिचय और विवेचन)-१-सत्त्वगुण पदार्थ का परवाना, २-नारद गुरुकर्म, ३-सार बत्तीसी, ४-अज्ञात बत्तीसी ५-महामाया की स्तुति, ६-कुटुम्ब रचनाएँ- साहित्यी दृष्टि में भजन, आर्यभटी तथा ७-जन्ममरण, महत्त्व और मूल्यवर्णन-		१०९-११०
११५	विहारीदास-	१८७०-१९५०	१-गुरुकर्म, २-जन्ममरण की स्तुति, ३-जन्ममरण-	११०-१११
११६	अज्ञात-	१९००-१९५०	भजन गायन की रचना-	११२-११३
११७	अज्ञात-	१९००-१९४२	आर्यभटीय महात्म्य (गद्य)-	११४-११५
११८	गीतल-	१९००-१९७५	भजन और रचना-	११६
११९	ईश्वरानन्दजी गिरि-१८९१-१९५५	१-श्री जन्ममरण २-गुरुकर्म अर्थात् जन्ममरण, ३-श्री जन्म संहिता, ४-ब्राह्मण वर्ण व्यवस्था, ५-शिक्षा वर्ण-		११७-११८
१२०	अज्ञात-	१९२०	बेलोजी की रचना (गद्य)-	११९-१२०
१२१	स्वामी ब्रह्मानन्दजी-१९१०-१९८५	१-श्री जन्ममरण चरित्र भाष्य, २-साक्षात् प्रकाश ३-मृतक सत्कार नियम ४-श्री बिल्वोजी का जीवन चरित्र तथा बिल्वोजी का सक्षिप्त वृत्तान्त, ५-विद्वानों के विषय ६-विद्या और अधिष्ठाता पर भाष्य, ७-गोप्याचार, ८-भाष्य, ९-आर्यभटी तथा भजन-		१२०-१२१

१२२ हिम्मतराय-	१९००-१९८०	फुटकर छंद-	६५१
१२३ किशोरीलाल गुप्त-	२०वीं शताब्दी	फुटकर छंद- उत्तराखण्ड	६५२
१२४ भाषवानन्द-	१६२५-१९७५	भजन-	९५२
१२५ ब्रवीदास (विरधीदास)-	१९५०	भजन-	६५२-६५३
१२६ जगमालदास-	१९५०/६०	भारती-	६५३
१२७ श्रीरामदासजी गोदारा-	१६२०-२०१०	इनका महत्त्व और प्रकाशन- काय-स्वसम्पादित रचनाएँ-१७ तथा अग्र्य ७-	६५४-६५५
१२८-कुम्भारामजी पूनिया-	१६३७-१९९५	१-निवेदन नाम प्रकाश, २-पचयज्ञ प्रदोत्तर मणिभाषा-	६५५-६५७
१२९ साधु जगदीशराम-	१९६०-२००५	भजन- साखी- भारती- और फुटकर छंद । अग्र्य कवि-नामोल्लेख-	६५७-६५८
अध्याय ९ विष्णोई साहित्य : महत्त्व, देन और मूल्यांकन			पृष्ठ ९५९-९८४

राजस्थानी साहित्य का काल विभाजन— तीन धाराएँ और शलिया १ जन शानी, २ चारण शली ३ लौकिक शली,-सिद्ध काव्यधारा- नामकरण । सिद्ध काव्यधारा महत्त्व, देन- (१) साहित्य के क्षेत्र में-

(क) काव्य रूप और शैली की दृष्टि से १ साखी, २ हरजस, ३ भजन, ४ गीत (डिगल गीत), ५ छंद, ६ विभिन्न छंद परक रचनाएँ, ७ स्तुति-स्तोत्र, भारती, ८ चारहमासा, ९ माहात्म्य, महिमा, १० व्यावली (विवाहली), ११ भगल, १२ बावनी, चारहखडी, छत्तीसी (कवको काव्य), १३ कथा काव्य, १४ चरित काव्य, १५ आख्यान, इसके उपादान, १६ नेतन, चितावणी (प्रतिबोध परक), १७ सवाद, १८ रासी १९ तिलक, २० थरी (आचार-विचार), २१ लोक प्रचलित विशिष्ट गीत-भूमखी, रगीली, मधुकर, लूर, जखडी, आवेली, हिंडोलणी, धुन लावनी, २२ लघु कथ परक और मुक्तक रचनाएँ, २३ सार, २४ लखण (लक्षण), २५ अग्र, २६ परची, २७ परसग (प्रसग), २८ दष्टिकूट, गूढाय, २९ परवाना, ३० सख्यापरक काव्य ३१ माल (माला), ३२ परगास (प्रकाश), ३३ चौडुगी (विवाह पाटी), ३४ भगडो, ३५ रूपक और प्रतीक का य तथा ३६ गुण ।

(ख) प्रवृत्ति और बण्य विषय की दृष्टि से-(१) जाम्भाणी रचनाएँ-(क) जाम्भोजी विषयक, (ख) सम्प्रदाय विषयक,- (२) पौराणिक रचनाएँ-(३) धर्म, नाम, नीति और लोकोत्थान विषयक रचनाएँ-(४) अध्यात्म परक रचनाएँ-(५) ऐतिहासिक-अर्थ-ऐतिहासिक रचनाएँ- गद्य म, पद्य मे- मरतिया या पीछोला- इसकी प्रमुख विशेषताएँ-अर्थ ऐतिहासिक- (६) लोक कथा और लोक जीवन विषयक रचनाएँ-(७) लोकभाषा विषयक

रचनाएँ । जाम्भोजी साहित्य वर्गीकरण - विष्णोई लोकगीत । साहित्य क्षेत्र में विनिष्ट उपलब्धि- १ गेय पत्र परम्परा म - २ द्विगत गीत,- ३ कवित्त (एकपद्य),- ४ बारहमासा-वाक्यनी,- ५ आर्यायान वाक्य,- ६ पौराणिक परिनाम इत्यादि विविध महत्त्व- ७ जाम्भोजी-जाम्भोजी से सम्बन्धित प्रबंध और मुद्रित रचनाएँ- महत्त्व के धर्म कारण- एक प्रेरणा स्रोत । सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक विचारधाराओं के क्षेत्र में- धार्मिक-शास्त्रिक विचारधारा । भाषा के क्षेत्र में- इतिहास के क्षेत्र में- अर्थ एतिहासिक । सांस्कृतिक- सामाजिक क्षेत्र में ।

परिशिष्ट (सख्या २ से ११)-

६८५-१००६

२ आरती । ३ हिंदोलणो (हीरान ८, कवि सख्या ८६ वृत्त) । ४ जाम्भोजी र भक्ता री भक्तमाल । ५ मंत्र (१-नवण, २-बलंग पूजा, ३-पाहळ, ४ विष्णु या गुरु, ५-तारक या गुरु, ६-बालक, ७-धूप, ८-सुजोवण और ९-ध्यान) । ६ लोकगीत और हृत्जस (१-हिंदोलो-हर री हिंदोलो, २-हाली सहियाँ ए, ३-पुरली, ४-मिंदर) । ७ साम्प्रदाय और परवाने । ८-लिखत । ९-विष्णोइयो की जातिमा । १० अगरेज सरकार के आदेश । ११ साधु परम्परा ।

सदम सूची-

१००७-१०१६

नामानुक्रमणिका-

१०१७-१०५१

सतगुर मिलियो सतपथ बतायो भ्राति चुकाई
 भवर न बूझिवा कोई ॥ ४३ ५, ६ ।
 घई ऊध बोह वरसत मेहा, नीर पियो पणि ठालू ॥ ५५ ४ ।
 दुनिया राच गाऽ वाज ताह मा कणो न दाणो ॥ ६६ १३
 दुनिया क रणि सोह कोई राच, दीन रच सो जाणो ॥ ६६ १४

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से

खबर पही रिण मा विड्या, जदि ही बूही सार ।
 लागी सोई जाणसी, का जाण बाहणहार ॥
 गलै मा मोतो पड्या, अघा निकस्या आय ।
 जोति बिना जगदीस की, जगत उलाड जाय ॥

—परमानन्दजी बणियाळ

हाथ पाव कर कूबडी, नीचे मुख अरु नन ।
 इन कष्टा पोधी लिखी, तुम नीके रलियो सन ॥

—साहब रामजी राहड

पहला भाग

खण्ड १ तथा २

खण्ड १

पृष्ठभूमि

अध्याय १

अध्ययन-सामग्री

यह सामग्री अद्यावधि सबया अज्ञात और अप्रकाशित है तथा प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे-परवाना, ताम्रपत्र, 'लिखत' और 'विगत' आदि के रूप में अनक स्थानों से प्राप्त हुई है। नीचे इसकी तालिका दी जा रही है —

स्थान-नाम	कुल सामग्री संख्या	अध्ययन-सामग्री (प्रस्तुत अंश) की जम सख्या
१	२	३
१-ऋषिकेश	१	१३२
२-काठ (मुरादाबाद)	१	१८६
३-कोलायत (बीकानेर)	१	७८
४-गुडा (जोधपुर)	२	१६१, ३४०
५-चक २९ बी० बी० (श्री गगानगर)	७	२६४, ३६६, ३६७, ४०४, ४०५, ४०७, ६०८
६-जागलू माथरी (बीकानेर)	४६	४९ म ५३, १२६, १४०, १७२ स १८०, १८३, १६०, २७०, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २८१, २८६, २६२, २६३, २६६, ३१०, ३१४, ३२०, ३२५, ३२६, ३३१, ३३४, ३३५, ३३८, ३३९, ३५०, ३८४, ३८५, ३६१, ३६२, ३६३ तथा गी० प्रति (जम्भवादी-सम्पादन म प्रयुक्त)
७-जाम्भा (आयली और आयली जागा) (फलीदी)	५१	६६ मे ७४, ७६, ७७, ११८, १३५, १६७, १७०, २१०, २३४ म २६५, २८२, ३०४, ३०५, ३२१, ३५७ तथा जा० प्रति (जम्भ वादी-सम्पादन म प्रयुक्त)
८-जेमला (फलीदी)	१	३४१
९-भूलनिया (नाडोडी, हिमाच)	७	३५६, ३६८ मे ४०३
१०-डोली (जोधपुर)	२	३२८, ४०६
११-डाणी खासा (महाजनान) (फतहाबाद, हिमाच)	१	३३३
१२-दरीवा (भीनवाडा)	१	३६६

१३-दुतारौवाला (फीरोजपुर)	५०	३८ से ४८, ६८, ८८ स ९२, ९४, ९५, १८१, १८२, १८४ से १८८, १९२, १९३, १९८ से २००, २०२, २११, २७९, २९६ स २९८, ३००, ३०१, ३०६, ३२४, ३६७ से ३७४, ३९०
१४-धीपासर साथरी (नागौर)	५५	१६ से १९, ५४ से ६४, ७९, ८२ से ८५, १२७, १३६ से १३८, १४७ स १५१, १५७, १६२, १६३, १६८, १६९, २८४, २८५, २८७, २८८, २९०, २९१, ३०७, ३०८, ३१२, ३१३, ३२३, ३३२, ३४७, ३४९, ३५८, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९ तथा रा० और पी० प्रतियाँ (जम्भवाणी सम्पादन म प्रयुक्त)
१५-पुर (भीलवाडा)	४	२१३, २१४, ३६४, ३६५
१६-पोनास (मडता)	१	३९५
१७-भोयामर (त्राघपुर)	५	२६९, ३४२, ३४३, ३४५, ४६
१८-मुगाम (गिरानर)	१७	२६, ६५, ६७, ८१, ८६, १२५, १२६, १३३, ३७५ स ३८३
१९-गोडा (भोनमाल)	१	२०३
२०-रामणायाम (गाधपुर)	१९	१२४, १६०, २०१, २१५ से २२६, ३१५, ३१६, ३६२, ३६३
२१-रामेश्वर (हिमर)	२७	९६ स १०८, ११३, १३०, १३९, १५२, १५५, १५६, १७१, २७३, २७५, २८०, ३११, ३१३, ३४४, ३५१
२२-रामणायाम (त्राघपुर)	११	५१७ स २३३, ३०९, ३१८, ३१९, ३५९
२३-राज (नागौर)	१	२०९
२४-रामणायाम (त्राघपुर)	६	१०८ स २०८, ३४८
२५-रामणायाम (गिरानर)	१७	१० स २५, ८०, १०९, ११०, ११२, ११६ स १२१, १३१, १४१, २७१, २८९, २९५, ३१७, ३५४
२६-रामणायाम (त्राघपुर)	५६	१ स १०, २७ स ३७, ६६, १२८, १४२ स १४६, १५८, १५९, १६१, १६४ स १६६, १९८ स १९७, २१२, २६६ स २६८, २८३, ३०२, ३०३, ३०७, ३५२, ३५३, ३५५, ३६०, ३९१

२७-सगरिया मठी (श्रीगगानगर)	६	७५, १५४, ३०६, ३३०, ३३६, ३६४
२८-मदलपुर (हिसार)	५	८७, ६३, १३३, १३४, ३२७

कुल याग—४१२ । इनमें ४ प्रतियों का परिचय अध्याय ६ (जम्भवाणी पाठ-सम्पादन) की 'भूमिका' में दिया गया है । गैप सामग्री (कुल सख्या-४०८) का परिचय आगे किया जा रहा है —

१ कथा बाल चिरत, केसौदास कृत, छंद सख्या-६१ । पत्र सख्या-४, देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ-१०-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-४० । लिपिकार-अनात, अनुमानत मवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी । आदि-राग आशा ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ लिपते कथा बाल चिरत ॥ दोहा-॥ लोहट लोका न कहै । सुत धन कर समाल ।

मौ सुत साईना सह । परिखि चराव पाल ॥१॥

अत-दियि दई परचो दियो बिसन बिसोवा बीस ।

कहे केसो पेल पुसो । जगल थल जगबीस ॥६१॥ कथा बाल चिरत सपूर्ण ॥

२ पत्र सख्या-३ । देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-डेढ़ इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२ । लिपिकार-अनात, अनुमानत मवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-मुवाच्य । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) उमाहो, बोल्होजी कृत । २१ दोहे । (ख) पतवो, आलमजी कृत, १० दोहे तथा (ग) हरजस, १, ऊवोजी नण कृत, ८ दोहे । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-श्री विष्णु जी ॥ मत्ये द्य लिप्यते उमाहो

बाबो जाबू दीपे प्रगथो चौहचकि कीयो उजास ।

अप दीठो केवल कथ, जिह गुर की हम आस ॥१॥

अत नाव दोरावो देवजो जा थे ऊतरीय पारि ।

ऊवोजी बोल बोनती आवागवणि निवारो ॥९१॥ श्री

३ पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३४ । लिपिकार-अनात, अनुमानत मवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-मुवाच्य । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) उदे अतलो की कथा, केसौदास कृत, छंद-७७ । आदि से ५ वें पत्र तक । (इसमें रचयिता का नाम भूल से गुरजनदाम बताया गया है) । (ख) कथा सस जोषाणी की, केसौदास कृत, छंद सख्या-१०६ । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी । आदि-श्री गणेशाय नमः राग हमा ॥ दोहा ॥

श्री पति पहली सिंवरीये आदि गुरु आदेस ।

सभ गुरु सदा जिहि स्यवर सुर सेस ॥१॥

अथ—जोषाणी सत सणी कथा गुणी वित साय ।

केस कहै सतार म भोग मुकति पत्र पाय ॥१०६॥

इति श्री राम जोषाणी की कथा सम्पूर्ण २ ॥

- ४ उमाहो, घोहोमी वृत्त । छन्द मन्वा-२२ । पत्र मन्वा-२ । पत्रमा देशी कागज ।
 भावार-८ ५ X ४ इंच । हाणिया-दाए, बाए-भाषा इंच । पत्रित-प्रतिपृष्ठा-१० ।
 अक्षर-प्रति पत्रित-२८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० क लगभग
 लिपिबद्ध । लिपि-२५०० । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री गणगायत्रि त्रिपदा उमाहा

जबू बोपे परगठ्यो घोहोषि बोयो उमाहा

अपदीठां केसल कथ निह गुर की बतिहार १

अथ-काहो र मन बो घणी काहो र गुर पोर

घोहो कहै वितनोइयां आया नाय वितन क सोर २२ इति उमाहो सम्पूर्ण ।

- ५ अथतार धारत शांभाजी का, घोहोमी वृत्त । छन्द मन्वा-१४० । पत्र मन्वा-६ ।
 देशी कागज । भावार-६ X ८ इंच । हाणिया-दाए, बाए-पोन इंच । पत्रित-
 प्रति पृष्ठा-८-६ । अक्षर-प्रति पत्रित-३०-३३ । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-२५०० ।
 अनुमानत सवत् १८५० क लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी त्रिपदा अथतार धारत शांभाजी का

दोहा-नयनि कथ गुर आपन नऊ निरमल भाय ।

कर जोइ बंदु धरत सोस नया नवाय ॥१॥

अथ-धनि विहाडो रण धनि गुर परगठ सतार ।

घोहो कहै जा ओलप्यो । त उतरित पार ॥१४०॥ कथा सम्पूर्ण समाप्त ।

- ६ परची, मोकलजी वृत्त । छन्द मन्वा-३७ तथा अत म इनक २ कवित और हैं । पत्र
 मन्वा-३ । देशी कागज । भावार-६ X ४ इंच । हाणिया-दाए, बाए-भाषा इंच ।
 पत्रित-प्रति पृष्ठा-११ । अक्षर-प्रति पत्रित-३१-३२ । सवत् १८६६ म रामदासजी
 के लिपि द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-२५०० । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी त्रिपदा अथ परची लिपत ।

सुपेठ्यो स्वामी सोवन धार नमो निजनाय जको निराकार ।

नरापति निरय कर मन राव विछाण्यो दूद परस्या पाय ॥१॥

अथ-जम जुरा जीव जोषू नहा कोई ताक न गिब अयर अरि ।

अमर आनु पम अरिमा राय जासी जित आप हरि ॥२॥ समत १८६६ मिति

भोगसर सुध ॥ वा मगल ॥ ४ ॥ सीध श्री साध १८ बाबाजी रामदासजी रा सि ।

- ७ लोहापागल की कथा, केशीदास वृत्त । छन्द मन्वा-१८७ । पत्र मन्वा-६, गहरे भूर
 देशी कागज, जीण । भावार-६ X ४ इंच । हाणिया-दाए, बाए-पोन इंच । पत्रित-
 प्रति पृष्ठा-१० । अक्षर-प्रति पत्रित-३०-३३ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत्
 १८०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य सही ॥ राग हसो ॥

दोहा-॥चरण घाद चरचा करू ॥ अवगति अकल अलेप ॥

छह दरसन सेवा करू ॥ रुद्र ब्रह्मा मूर सेप ॥१॥

अत-मिली जुति गुर आपो जोय ॥ जुगति मकति हरि तूठा होय ॥

केस कया कही कर जोडि ॥ आवागुवणि चुकावौ पौडि ॥८७॥

इनि श्री लोहापगल की कथा सपूरण ॥ समापत अ ॥ अर ॥अ ॥श्री ॥श्री ॥

- ८ जभ स्तुति, रचयिता-गोकलजी तथा जभाष्टक (संस्कृत में) केवल ५ श्लोक । छंद सख्या-४५ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । आकार-९ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-२९ । लिपि-स्पष्ट और मुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५-१९०० में लिपि-बद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-अ स्वन्ति ॥ श्री गणेशायनम ॥ श्री जभ गुख नम ॥ श्री विष्णुव नम

दोहा-॥अ ॥ रिधिपति सिधिपति शीलपति सुरपति सदा सहाय ॥

गति दाता गोबद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गा ॥१॥

अत-गत क्रोध काम गत पद्विकार ॥ परब्रह्म रूप भजे जभमीश ५ दयाज्ञा

- ९ मुगरी सूगरी की भगडो, रचयिता-पोहकर । छंद सख्या-१६ । पत्र सख्या-१ । आकार-२४ × ४ इंच । देशी कागज । हाशिया-नगण्य । रचना की कुल पकितया-८१ (७३ + ८) । अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । आदि-श्री त्रिपुण्जी अथ भगडा लिपत

हरिजन साकट नारि घाता बहोत अडो ।

कूप चडो पणीयार दोनो क्षगड पडो ॥

अत-युर चीती मेला भया पोहकर ज्ञान विचार ।

राम नाम प्रताप त ए जीती हरिजन नार ॥१६॥

एती नुगरी सूगरी की भगडो सपूरण ॥

- १० दूगपर की कथा, रचयिता-बोल्होजी । छंद सख्या-६० । पत्र सख्या ४, देशी कागज । आकार-९ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६ । लिपिकार-अज्ञात । लगभग सवत १८५०-७१ में लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-लिपत दूगपर की कथा ॥ राग आसा ॥

दुहा-नवण्य करू गुर आपण । बडू चरन सुभाव

भगता तारण भव हरण । तीन लोक रो राव ॥१॥

अत-सतगुर सेती बाद करि । जीती सुण्यो न कोय ।

बोल्हू कहै सेवा करे । नय नय निज मयो होय ॥६०॥

दूगपुर की कथा सपूरण ॥

११ विष्णु चिरत, ऊदोजी अडोंग कृत । छन्द सख्या-१०६ । पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२८ । फरसरामजी द्वारा सवत् १८८७ म लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री गणेशाय नम ॥ विष्णु चिरत लिख्यते ॥

श्री गुरु सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्णु जस गाउ ॥

महा विष्णु क चिरत अपारा । सुर नर मुनो जन लहै न पारा । १।

अ त-गाव मुनि जन सत ॥ विमल जम भव जल तरण ॥ १०६ ॥ इति श्री विष्णु चिरत संपूर्णम् ॥ समत १८८७ ॥ वषेति आसाठ वद तीज मिय श्री री । १०८ । गगाविसनजी का चेलो फरसराम ॥ लिख्यत्यू गी ग्रामी सिसवाल माई ॥

१२ कथा बाल चिरत, रचयिता-कैसोजी । छन्द सख्या-६१ । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । आकार-६ ५×३ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१८ । पीतावरदास द्वारा सवत् १८७७, द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा नवमी की लिपिवद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी । आदि-श्री वायूसूनवेनम अथ बालचित लिखते राग आसा

तुहा-लोहट लोका न कहै सुत धन कर सभाल ।

मो सुत साईना सहू परिपि चराव पाल । १।

न्त-देवि दई प्रचौ दीयी विस्न विसोवा घोस ॥

कहै कैसी पेलीं पुसी जगल थल जगदीस ॥ ६१ ॥ इति श्री कथा बाल चित संपूर्ण ॥ १॥ सवत् १८७७ रा वषे मितो द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे ६ लिपिकृत पीता वरदास ॥ पत्र १० छ ॥

२३ पत्र सख्या-२५, देशी कागज । आकार-६ ५×३ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१४-१८ । लिपिकार-अनात । लिपिकाल-सवत् १८८८, जेठ सुदि ४ । लिपि-सुवाच्य(वद पर हस्ताल फिराकर सुद किया गया है) । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी । इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) तलाव की कथा, कैसोजी कृत । आदि से पत्र १२ तक । रोहा मसूह-१२, प्रत्येक के बीच प्राय ५-६ चौपड्याँ हैं, जिन पर सरया नहीं दी गई है ।

(ख) उद अतली की कथा, कैसोजी कृत । छन्द सख्या-७६ । पत्र १२ से २५ तक । आदि-श्री गणेशाय नम । लिखते तलाव की जत । राग सोरठ ॥

पारबहा पहली नऊ ॥ जग मडण जमदीस ॥

लय चोरासी दे चुगो तिण साम नवाऊ सीम ॥

अत-सतरास र छिडोतर । वद भादवी वर्षाण ॥

उदा अर अतली तणो । कथा चडो प्रवाण ॥७७॥ इति श्री उद अतली की कथा संपूर्णम् समत १८८८ वषे मिति जेठ सुत् ॥ ४ सोम ॥

१४ ऊदोजी का कथित, रचयिता-ऊदोजी नण । सख्या-४५ । अपूर्ण, पत्र सख्या-६ ।

आठवा श्रौट अन्तिम पत्र अप्राप्य । दशै कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-
दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्कि-३१-३३ ।
लिपिकार-अनात । सवत १८५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट, सुवाच्य ।
प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-श्री विमनजी सत्य ॥ लिपते कवित ऊदजी का ॥ छप छंद ॥

सासि आस दातार ॥ तास विनि ओर न जाणौ ।

जपौ दिवस और राति ॥ सदा बोनऊ थापाणौ ।

अत-कु ण जाण तीनि त्रिलोक ॥ भाजै घड रोप ठव ॥

धनि धनि स्वामी कौ नाव ऊदा ॥ अतनो मैं सब सारवें ॥५२॥

अचल विसन क आथि ॥ अरथ साप धन लिछमौं ॥ निहच पाणौं पवण ॥

१५ बोलहैजो का कवित्त, रचयिता-बोलहैजो । सख्या ४४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-
५ (१ स ४ तथा ८ वा) । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । पक्कि-प्रति
पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्कि-३१-३४ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । साध
गुमानीराम द्वारा सवत् १८८८ मे लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट
सायरी ।

आदि-लिखत कवित बोलहैजो का ॥

धम किया सुप होय । लाछ लिछमी धन पाव ।

धम उतिम कुल अवतर । जन्मि बालद नहीं आव ।

अ-३-आप सवारथ मन मुवि । कौया कुवधी पापडा ।

बोलहै कहै भव भागरा । बह्यी जाहि रे बापडा ॥४४॥ इति श्री बोलहैजो का
कवत संपूरण ॥ सवत १०८८८ (१८८८) रा मीति भाइवा सुद १४ लिपत साध
गुमानीराम श्री १०८ गगारामजी का चेला । गव रासेसर मधे । वार मगल ॥

१६ गव्द वाणी श्री जाभजो की । सबद सख्या-१२०, विना प्रसंग । पत्र सख्या-६५ ।
देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रति
पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्कि २७-३० । लिपिकार-अनात । सवत १६०४ मे लिपि-
वद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।

आदि-६॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ गव्द वाणी श्री जाभजो की लिपते ॥

उ गुर चीहीं गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुवि धम बघाणो ।

अ-१-भलीयो होय तो भल वृधि आव बुरीयो बुरी कमाव । १२० ॥ गव्द वाणी
श्री जाभजो संपूर्ण ॥ सवत् १६०४ रा वृषे मित्ती काती मुदि ८ ।

१७ तलाव की कथा, रचयिता-बेसोदास । दोहा-समूह सख्या-१२, प्रत्येक के बीच कई
चौदहवाँ हैं जिन पर सख्या नहीं दी गई है । पत्र सख्या-२० । मगिन के बन
कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । अक्षर मोटे और
छोटे दो प्रकार के । पक्कि-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्कि-२२-२३ । श्री सतोप-
दास द्वारा सवत् १६३८ मे लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-

पीपासर साथरी ।

आदि-श्री जमेश्वराय नम लिपते वधा तलाव की राग सोरठ

दोहा-पारब्रह्म पहली मउ जग मडण जगदीस ।

रुप चौरासी दे घुगो तिण स्वाम नवाउ सोस ॥१॥

न-तीय जाभोलाव जो कलि कल्याण निवास ।

जो जन मन इक्षा कर सब को पूर आस ॥ इति श्री केशवदास विचित तलाव की कथा संपूर्णम् शुभभूयात्कल्याणरस्तु पठणाथ मुक्तिदण्डम् सवत १६३८ रा ववे मिति आश्विन सुद १३ वार बुधवार लिपिवृतम् साध श्री १०८ । बालकदासजी का शिष्य सतीषदासेन पठणार्थे स्वयं शुभमस्तु कल्याण रस्तु उ तत्तत् विष्णु सत्य हरी श्रानम् शातायतेजसे ।

१८ अमावस्या की कथा, मयाराम कृत । छन्द सख्या-१४५ । पत्र सख्या-१६ । देगी कागज । आकार-१० X ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग एक इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-२६-२८ । श्री मोतीराम द्वारा सवत १६०७ में लिपिवद्ध । काली स्याही से मोटे अक्षर, लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री जमेश्वराय नम लिपते अमावस्या की कथा

कुडलीया-प्रथम वदु गुरदेव कू दुतिये वदु सब साध ।

विष्णु वदु पुन तीसरे जाते मिटे जु घ्याध ॥

अत-सोस धरण धर करत हू निमस्कार सो वार ।

ईष्ट देव मम जभ गुरु लीला हित अवतार । ४५ । इति श्री महाभारते श्री कृष्णाडुन सवादे अमावस्या महात्मे कथा मयाराम विरचनया समाप्तोय सवत् १६०७ मिति जठ सुदी ७ (?) वार इतवार लिपते साध श्री १०८ पीतवरणामजी का शिष्य मोतीरामजी गाँव धोरू माये कुमला गोदारि के सिदी ।

१९ गोबलजी के छन्द आदि । अपूर्ण । पत्र सख्या-११ । पतला देगी कागज । आकार-१० X ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-प्राय एक इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६-३८ । त्रिपिकार-अज्ञात । अनुमानित सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी । इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) अवतार की स्तुति, छन्द-४७ (४५ + २), (ख) परची, छन्द-३७ । दोनों के रचयिता-गोबलजी । त्रिपिकार न दाना को ८२ छन्दों को एक कृति माना है ।

(ग) स्तुति अवतार की, केशोत्तम कृत, मोरठे-१३ । (घ) इदव छन्द, गोबलजी कृत । ३० छन्द और २ पक्ति, अन्तिम पक्ति अपूर्ण ।

आदि-श्री विष्णु साय । त्रिपति मनुज अवतार की । छन्द मोतीराम ।

दोहा-रिष्यपति मिष्यपति सोलपति । सुरपति रुदा सशाय ।

मनि दाना गोविन्द सुमरि । गोबल हरि गुण गाथ ॥१॥

अत-लाज त्रिलोक मा रापि पूरा धर्मी विपम भ जल लघी वाट भारी ।

सब सासो मिट प्रव पापा इसो सदा राप्यो सरण गदाधारी ॥ आदि अ-।

- २० गोकलजी के छन्द, सख्या-३२ । अपूर्ण । १५ पत्रों की प्रति, जिसके पहले ५ पत्र अप्राप्य । दशो कागज । आकार-८ ५×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-३१ । लिपि-स्पष्ट । लिपिकार-अज्ञात, लगभग मवत् १८५० के ग्रामपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर माथरी ।

आदि-न यत्तु ॥ तदि हुतो तुही त्रिकम अगम अगाध अजोनी सिमू जलख निरजण अकल कलु ॥ आकार करण घटबरणि निवाजण भगत उधारण भाव कोयो ॥

अत-रह्या वाकी तका वचन पालो गिसन किसन किरपा कगे काज सारी ॥

दास गोकल कहै आस पूरो अल्प अवरु जादि पुरप ओट थारी ॥२॥

इति श्री गोकलजी वा छन्द सपूर्ण समाप्ता ॥श्री॥श्री॥श्री॥

- २१ परची, गोकलजी कृत । छन्द सख्या-३७ । पत्र सख्या-३ । देशी कागज । आकार-८ ७५×८ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ पौन इंच । पक्ति-प्रति पत्र- ६ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानन सवत् १८२५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लालासर माथरी ।

आदि-श्री विष्णु जी अथ परची लिपत ॥

सुपेय्यो सामी सोवन धार नमो निज नाथ जको निराकार ॥

नरापति निरप कर मन राव पिछमाणों बुध परस्या पाव ॥१॥

अन-जपोयो जदि जाप रिद हरि एक आयो अघ मोचण आय अरेप ॥

भण बड भूप सुप्यो ससार निरजणनाथ ऊतारण पार ॥३७॥ श्री विष्णुजी

- २२ वारपडी, ऊधवदास कृत । (अपर नाम-कक्का छत्तीसी) । छन्द सख्या ७ । पत्र सख्या-६ । जीण । देशी कागज । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पत्र सख्या-३, ४ तथा ६ अपेक्षाकृत मोट अक्षरा म लिखे गये हैं । पक्ति-प्रति पृष्ठ ११ । छोट अक्षरा वाले पत्रों में, अक्षर-प्रति पक्ति-३१ ३४ । दोप म २४-२७ । लिपिकार-रतनदास । रचनाकाल-मवत् १८८८ है और इसी के ग्रामपास इसका लिपिकार भी होना चाहिये । लिपि-विशेष स्पष्ट नहीं है किन्तु पाठ्य है । प्राप्तिस्थान-लालासर माथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी सतगाही ॥ कवत कु डलीया ॥

कका केवल विष्णु भजो हृद धर विसवा (स) ॥

आन भरोसो छाड दो राघ राम को जास ॥

अन-जा दिन में सपुरण भइ तिय तीज दुधवार ।

ऊधव वरस चौरासीयो कह्योय समत अठार ॥३७॥ इति श्री वारपरी मपूरण १ गाव सारगमु मधे लिपत साध परमरामजी वा मिय रतननाम की । जे कोइ वाच विच तो नुण मान लिजोजी ।

- २३ तेजाजी के छन्द । रचयिता-तेजा चारण । छन्द सख्या-१६२ । पत्र सख्या-७ । दश

कागज । आकार-१०×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । छूटे हुए अक्षर हाशिया में लिखे गए हैं । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१३-१४ । अक्षर-प्रति पवित्र-३७ ४० । लिपिकर-अज्ञात । सबसे १८७६ में लाहावट गाँव में लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य छ । लिपित तेजजी का छद ॥

गाथा-जवगत्य तु प्रगट जाजू कोडयां तारण काजू ।

सहि मङ्गण माहराजू ॥ सोह सार्ण्य सुभराजू ॥१॥

अत-पच वरस न बले पच दिन पथ पल्लाद को । ता तल दोर तप तेजा ॥

ताह तल्प तसकरा नारि भायोजसे । अलह नवी ताज के भया न हेजा ॥६॥

१६२ ॥ इति श्री तंजजा का छद कवत गीत गुण संपूर्णम् ॥ समत १८७६ रा मितो

माघ सुद ५ वार बमवार ग्राम लोहावट मध्य लि० ॥

२४ सप्त जोषाणी की कथा, रचयिता-केसौजी । छद सत्या-१०५ । पत्र सत्या-६, देशी

कागज । पत्र जरा से मुडन पर सूखे पर्तों की तरह टूटते हैं । आकार-६×४ इंच ।

हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पवित्र-प्रति पृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पवित्र-३६-

४२ । पीताम्बरदास द्वारा स० १८८१ में लिपिवद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-

लालासर साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा समा जोषाणी की राग हस्ता ।

दोहा-निरहारी पहली नउ सतगुर साम मुजाण ।

एक सत निवारयो सामजी वाइ करू वषाण ॥१॥

अ न-इण करणी बेसो कहै आवगवणि न होय ।

जसो जाणो तसो वही जोडी कथा संपूर्ण होय ॥१०५॥ इति श्री सप्त जोषाणी

की कथा संपूर्ण लि० पीताम्बरदासेण स० १८८१ मिगससुदि ११ ॥

२५ उद अतली की कथा, रचयिता-केसौजी । (इसमें भूल से इसके रचयिता सुरजनजी

बताए गए हैं) । छद सत्या-७७ । पत्र सत्या-५, देशी कागज । आकार-६×४

इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पवित्र-

३२-३६ । लिपि-स्पष्ट और पाठ्य । लिपिकर्ता एक कान-पीताम्बरदास द्वारा सबसे

१८८१ में लिपिवद्ध । आरम्भ में पत्र पत्र के प्रथम पृष्ठ पर ॥ अथ उदाजी की

कथा ॥ श्री ॥ निराला ॥ प्राप्तिस्थान-नातामर साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा उदा अतली की राग हमो ।

दोहा-धीरत पत्नी तिवरीय आदि गुट आदेस ॥

शभ गुरु तियल मदा जहि सयरे मुर सेस ॥१॥

अथ-निध दसो पुरवा नयत भगलवार विचार ।

जन गुजन की बीनता आवगवण निवार ॥७७॥ इति श्री कथा संपूर्ण नि

पीताम्बरदासेण स० १८८१ मिगस स १०

२६ पायो । देशी कागज का आकार वाच में गिराई की गद है । आकार-६×८ ७५

इ'च । हाशिया दाएँ, बाएँ-साधारणतः पौन इ'च । १२८ फोलियो तक लिपिवद्ध, वाद के बहुत से पने खाली हैं । तीन चार भिन्न हाथों की लिखावट में । लिपिकारों के नाम कहीं कहीं दिए गए हैं जिनका उल्लेख यथास्थान आगे है । सवत १८७६-१८९७ के बीच लिपिवद्ध । लिपि-सामान्यतः पाठ्य । लिपिकार अलग अलग होने से प्रति पृष्ठ में पवित्रता की सख्या भी भिन्न भिन्न है । प्राप्तिस्थान-श्री रामचन्द्र थापन, गाव मुकाम । इसमें ये रचनार्य हैं —(क) विष्णु पञ्जर स्तोत्र मन्त्र, ध्यानम, विष्णु मन्त्र, ध्यान, २८ नाम आदि सस्कृत में । २८ श्लोक । लिपित ताजा अतीत बड़े तर्किए का लिपावत सुदराजी का चेला । (ख) सबद जाभजी का प्रसंग समेत । १२२ सबद । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-२२ । अक्षर-प्रति पवित्र-१६-२४ । प्रसंग और प्रश्न लाल स्याही में ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य ॥ लिपितु सबद भाभजी का आदि सबद बाणी

बाभण न प्रचो दीया ॥ त समे को सबद श्री वायक ॥

गुर चीहो गुर चीह पिरोहित ॥ गुर मुदि घरम वषाणी ॥

अत-बिसन बिसन तौ भणि रे प्राणी । प क लाप उपज ।

रतन काया बकु ठे वासो । जुरा मरण भव भाज ॥१२२॥

इतिश्री सबद श्री वायक सपूण ॥

दोहा-अनत सबद सतुगुर कहुया । बरस चोरासी बाणि ॥

नायजी के कठ रह्या । लिप्या बोल्है सुजाणि ॥१॥

(ग) धू चिरत, जन गोपाल कृत । छंद सख्या-२१६ । (घ) गोकलजी के छंद । गोकलजी कृत । छंद सख्या-३२ । इनकी लिपि विशेष गुदर नहीं है । (ङ) भावस्या रो कथा, मयाराम कृत । छंद सख्या-१४४ । कई हाथों की लिखावट में । लिपि-काल-म० १८७६ चत मुदि १० वार सोमवार । (च) प्रह्लाद चिरत, केसौजी कृत । छंद-५६६ । स० १८९७ माघ सुदि ५, बुधवार को थापन तेजा मोटाशी द्वारा गाव बगला में लिपिवद्ध । (छ) पाडवगीता, शकराचाय कृत (मस्कृत में) ११७ श्लोक । (ज) हरिनाम माला (मस्कृत) १६ श्लोक । (झ) विष्णुलहरी-शकराचाय कृत (मस्कृत) ५ श्लोक । (ञ) गगाष्टक, शकराचाय कृत (मस्कृत) श्लोक ८ । (ट) देवाष्टक, शकराचाय कृत (मस्कृत) श्लोक ८ ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य ॥ श्री गणेशायन ॥ उ अस श्री विष्णुपञ्जर मतोत्र मनस्य ॥ नारद ऋषिरनुष्टप छंद । श्री विष्णु परमात्मा देवता अह बीज मोह गविन । अत-नमो देव देवाय कमल निवासी नमो देव देवाय बकु ठवासी इति श्री गणाचाय विरचिताया देवादिदेव स्त्रोत्र सपूण ।

२७ झांभजी का अघतार चित्त कथा, रचयिता-बोल्होजी । छंद सख्या-१४० । पत्र सख्या २६, देवीवागज । आकार-६ ५"×३ २५" । हाशिया-दाएँ बाएँ-पौन इ'च । प्रथम और द्वितीय पत्र पर बीच में ६ पन्डियों वाले २ चक्र बनाये गये हैं । लिपिकार-पीतावरजी, सवत १८८० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-

लोहावट साधरी ।

आदि-श्री हनुमत नम ॥ दोहा ॥ नमनि करे गुर आपन नऊँ निरमल भाव ॥

कर जोडे बँडुँ चरण सीस नचाइ नचाय ॥१॥

अन्त-लिपीकृत पीताम्बर श्री १०८ विष्णुनासजी तिलिछम्यश निवाश्रेष्वा जपुर मध्ये ॥

२८ पत्र सख्या-२ । देशी कागज । आकार-६५×२ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-

पौन इंच । पत्रि-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पवित-२१-२४ । लिपिकार-अज्ञात ।

अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहा

वट साधरी । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) पुह पतीस, (ख) लुरा, (ग) सती

लुगाइयाँ की पुह, (घ) राजवीयारी वीगत्य ।

आदि-श्री विमनजी ॥ लिप्यतु पु ह पतीस डू में भादु की पुह बूढ धीलहरी की पुह

रावल जाणी की पुह ॥

अन्त राजवीयारी वीगत्य गिकर लोदी १ महमदपा लोपी २ दुदो राठोड ३ सातन

राठो ४ जनसी भाटी ५ सागा सीमा-नीयो ६ या की पुह राज-नीया मगाई एती

लुरा पुह सपुगम् ॥

२९ गोकलजी का छन्द, रचयिता-गोकलजी । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-

६५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पवित-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-

प्रतिपवित-३४-२८ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत १८६२ । लिपि-स्पष्ट ।

प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी । इसमें कवि की दो रचनाएँ हैं —(क) अवतार

विगति छन्द, सख्या-४५, पत्र ४ के आरम्भ तक । (ख) इन्दव छन्द सख्या-३२ ।

आदि-श्री विमनजी स्तम्भ हाय छन्द ।

दाहा-रिधपति सिधपति तिलपत मुरपति सदा सहाय ॥

गत दाता गोविंद सुमरि गोकल हरि गुन गाय ॥१॥

अन्त-रह्या वाकी तका बचन पालो विसन विसन किरपा करो काज सारी ॥

दास गोकल कहै आस पुरो अल्प ऊवर जादि पुरप ओट घारी ॥२॥ इतिथा

गाऊनजी का छन्द सपुग सवत १८६२ मित्ती भाटवा उद ३ वार मगल ॥

३० अमावस्या कथा, मयाराम रचित । छन्द सख्या-१४४ । पत्र सख्या-१०, देशी

कागज । आकार-६५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पत्रि-प्रति पृष्ठ-

१० । अक्षर-प्रति पत्रि-२६-३८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५

के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-श्री गणगायम श्री विष्णुनासजी अथ मावस्यारी कथा लिपित

कृतवापा-प्रथम बद्रु गुरदेव कू द्वितीये बद्रु सय साध

विष्णु बद्रु पुत्र तोमर जान मित्त जु वराप ।

अन्त-सात धरणि धरि करत हू नमसकार सो धार

इष्ट देव मम शोभ गुरु सोला हित अवतार १४४ इति श्री महाभारत श्री

कृतवापुन गणगायम अमावस्या मन्त्रात्म कथा मयाराम विरचनाया सपुग सवत ।

- ३१ तलाव की कथा, रचयिता-कैसोजी । दोहा समूह सख्या-१२, बीच में आई चौपइया की सख्या नहीं दी गई है । पत्र सख्या-४ । देशी कागज । पत्र-जीएण, जरा सा मोड़ने पर टूटते हैं । आकार-१०×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३६ । लिपिकर्ता-अज्ञात । लिपिकाल-सबत् १८७६ । लिपि-सामायत पाठन । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।
आदि-श्री विसनजी स्यत्य सही लिपते तलाव की कथा राग मोरठ

पारब्रह्म पहली नऊ जग मडण जगदीस

लथ चोरासी दें चुगो तिण साम नवाऊ सोस ॥

अत-बड तीरथ को गुण यो केस गुण भू वि सुणायो

दिल अ तर दूजि न आणी जत माहि कह्यो सत जाणो ॥१२॥

तलाव की कथा संपूर्ण १ सबत् १८७६ रा मितो भादवा सुदी ४ वार मगल । १॥
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु श्री ।

- ३२ अमावसरी कथा, रचयिता-भयाराम । छंद सख्या-१४५ । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सामायत पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३६ । प्रथम पत्र पर बीच में एक ६ पखु-लिया वाला (सफेद, पीला, काला व लाल रंगों में) चक्र बनाया हुआ है । परसराम न जाभा म सबत् १८८७ म लिपिबद्ध की । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।
आदि-श्री भूभेस्वरायनम ॥ अथ अमावसरी कथा लिपते ॥

॥ कु डलिया ॥ प्रथम बढों गुरदव कू ॥ दूतिपे बडू सब साथ ॥

विष्णु बडू पुन तीसर ॥ जात मिट जु व्याघ ॥२॥

अत-इति श्री महाभारते श्री कृष्णा अर्जुन सवाद अमावस महात्म कथा भयाराम विरचिताया समापताय ॥ सबत् १८८७ रा वृषे मितो असा शुदि १० बुधवार लिपत नाथश्री १०८ हरकिमनदाम महतजी का सिष्य परमराम तीथ जाभा मध्ये १

- ३३ विष्णु चरित्र, ऊधोदास कृत । छंद सख्या-११० । पत्र सख्या-१२, देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सबत् १६२५ । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-आ श्री गणेशायनम अथ विष्णु चरित लिष्यते ॥

॥ चौपाई ॥ श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ॥ अता होय विष्णु जस गाऊ ॥

महा विष्णु के चरित अपारा ॥ गुर नर मुनि जन लहै न पारा ॥

अत-। सोरठा । हरि अघतार अनत ॥ अनत चरित अघगत तणा ॥

गाव मुनि जन सत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥११०॥ इति श्री विष्णु चरित्र संपूर्ण सबत् १६२५ ॥ वार सोमवार मितो अमाजो वदि ६ ॥ उ हरि तत सत ॥

- ३४ विष्णु चरित, ऊधोदास कृत । छंद सख्या-११० । पत्र सख्या-६, देशी कागज ।

आकार-६ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पीन इंच तक । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । सवत् १८८५ म साधु गोविंदराम द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री स्वस्ति श्री गणेशायनम ॥

चापई-श्री गुरु सत चरण सिर नाऊ आज्ञा होय विष्णु जस गाऊ

महाविष्णु के चरित अपारा मुर नर मुनि जन लहै न पारा

अत-दुहा सोरठा-हरि अवतार जनत अनत चरित अवगत तथा

राव मुनि जन सत विमल जस भव जल तरण ॥११०॥

इति श्री विष्णु चरित संपूर्णम् ॥ सवत्सर १८८५ रा मिति काति मुदि ५ लि० साधु गोविंदरामेण ग्राम जाम्भी जन्म मंदिर

३५ कका छत्तीसी, रचयिता-ऊधोदास । छंद सरया-३७ । पत्र सरया-६, दशो कागज । आकार-६ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६ । फरस्राम द्वारा सवत १८६७ मे लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लाहावट साथरी ॥

आदि-श्री विष्णुजी । अथ कका छत्तीसी लिपते ॥

कका केवल कृष्ण भज हृद घर विसवात

आन भरोसो छाड दे । राघ राम की आस ॥२॥

अन-अपर पतीस उपर कवत सती विचार ॥

उपव घरस चोरासीयो कहीय समत अठार ॥३॥ (३७)

इति श्री वापळी संपूर्ण १ सवत ॥ १८६७ । रा वषे मिति असाठ वदी ॥६॥ श्री री ल्यपी कृत साध्य श्री री ॥१०८॥ गगाविसनजी को शिष्य ॥ फरस्राम लिप्यनु । ग्राम सोसवाल । श्री री लिपनु बीच तार सररामम

३६ पहलाद चरित, रचयिता-केसोदास । छंद मख्या-५६४ । पत्र सरया-३५, देगी कागज । आकार-६ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३४ । साधु गोविंदराम द्वारा सवत १८८५ म लिपि वद्ध । (८५ पर हरतात फिराई गई प्रतीत होती है) लिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम रागमान्-दोहा-

नारायण पहली नऊ स्वामी सव मुजाण

आदि भगत कहसु कया प्रह्लाद चरित प्रमाण १

अन-में दावण पश्यो दोन को सतगुरु कर सहाय

पांच सान नम थाहरा अथ क मोहि मिलाय ५९४ इति श्री पन्ना चरित संपूर्ण मन्मर १८८१ रा मिति मधु वदि (३ ?) दशोवारे (?) एसाणी लिपिकृत साधु गोविंदरामेण ग्राम मोठ्या मध्ये

३७ मगनाष्टक, केसोपी कृत । छंद मख्या-४३ । पत्र मख्या-३, मोठ्या देगी कागज ।

आकार-११ × ५ इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३७ ।
हाणिया-दाएँ, वाएँ-साधारणत आधा इंच । लिखावट-मोटे अक्षरो म, जो एजाध
म्यल पर स्याही फल जान से अपाठ्य, अथवा समायत पाठ्य । लिपिकार-अनात ।
अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ मंगलाअष्टक लिपते

दुहो-श्री गुरन पति बृहस्पति कहै देवन पति गोविंद

देवन पति ब्रह्मा वद सायन पति पति अ ब १

अत-विघन हरण मंगल कर ब्रह्म ड यभण विण यभ

अनड चित केधा विघु नमो उघव पत गुरु जभ ४३

इसके पश्चात धरती के ३० नाम हैं, जिमकी अंतिम पक्ति यह है—

कव अप हो कव पणी तीस नाम धरती तणा १

३८ विष्णु छतीसी, छद-३७ तथा छप्पय, छद ४१ । दोना के रचयिता-बोल्होजी ।

पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-१० × ५ इंच । हाणिया-दाएँ, वाएँ-१

इंच । पहले तीन पना म पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति ३०-३२ । पत्र

सख्या ४ से १० तक पक्ति प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । साधु

हरिकृष्णदाम द्वारा सवत १८६३ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री

धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री विसनु सत्यायनम विष्णु छतीसी लिपते

कुडलीया-ऊं कारे आद गुर निरजण निरकार

आकारे जुध जोगीयो आप रह्यो निरकार

अत-छ राजमद्र के के अवर आचारे ओलपीयो

बोल्ह कहै मागु पुयह जा मुक्त न हायो दीयो इती बील्हजी के छपदए सपू-

राम् सवत १८९२ मित्ती भाघ वद २ लिपते साध हरिकृष्णदास

३९ पत्र सख्या-९, दगी कागज । आकार-१० × ५ इंच । हाणिया-दाएँ, वाएँ-साधा-

रणत १ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-३८-४१ । लिपिकार-

अनात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-

श्री धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसम ये रचनाएँ हैं—(क) कथा

गुगलिये की, बोल्होजी कृत । छद सख्या-८६ । (ख) कथा शोरडा की, बोल्होजी

कृत । छद सख्या-३३ । (ग) बाल लीला केसोजी कृत । छद सख्या-६१ ।

आदि-श्री त्रिमनु जी लिपते कथा गुगलिये की राग आसा

दाहा-जगत गुरु जगल बस वासो मह बणाह

भेद प्रकास भाव करि गुर तारसी घणाह १

अत-देपि दई परचो दीयो विसन विसोवा विस

कहै केसो पेल पुसो जगल थल जगदीस ॥६१॥ एती श्री बाल लीला केसो-

दाम विरचता सपुरण ॥३॥ (९वें पत्र का प्रथम पृष्ठ) इसके पश्चात् ९वें पत्र के

दूसरे पृष्ठ पर सवत्गरी है—अथ माठ सवत्गर निपते इति था गमत्गरी मपूण १
 ४०. पत्र सख्या ७ । आकार-१०×५ इंच । दशमी कागज । हाणिया-दाएँ, बाएँ १ इंच ।
 पत्ति-प्रतिपृष्ठ-१४, त्रिभु अतिम पृष्ठ पर १५ है । अक्षर-प्रति पत्ति-३८-३८ ।
 लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठ्य, त्रिभु जगह जगह
 हरतान फिराई हुई है । प्राप्तिस्थान-श्री धाम्भोजी, विष्णुत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
 मम ये रचनाएँ हैं — (क) कथा जलमर की, चोत्तोती श्रुत । यह कथा
 ८८ दोहे-चौपइया म दग्य पश्चात् २१ कवित्त और ११ श्लोक हैं । लिपिकार के
 अनुसार ९० दोहे-चौपई तथा २१ कवित्त-मय दग कथा क छद्म है, जो भूल है ।
 (ख) पुटकर सवइये-गख्या ८ । इनम ७ वेसोती के और १ कितोर का है ।
 आदि-॥ श्री विसनजी सत सही लिपते कथा जलमर की राग आगा
 दोहा-सतगुर आग यिनती कर बिलगु पाए

रह कारण गुण धरणउ आपर दो समजाए १

अन-प्रगटे जद रूप निरजण यस्तु जांभध नांव बर्हायण कू

भगवां कपडा करि जाप जय सभरयल जाग जगायण कू

बाएँ हासिए म-गुर ध्यान ही ध्यान की ध्यान धर यह लोडन को समजायण कू

धरणी उर जघ पाव न धरह बल हों २ इन पांघन कों ८ इति मपूण

४१. हरि प्रह्लाद चिरत (अपरनाम-लघु प्रह्लाद चिरत), रचयिता-हरचदजी । अपूण ।
 केवल अतिम-३४ वा पत्र नहीं है । प्राप्य छत्र-१६९ । पत्र सख्या-३३, मोटा
 देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच । पत्ति-
 प्रतिपृष्ठ-१८-२० । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपि
 -वद्ध । लिपि-स्पष्ट और मुदर । प्राप्तिस्थान-श्री धाम्भोजी, विष्णुत्त विष्णोई,
 दुतारावाली ।

आदि-श्री हरयेनम ॥ श्री गुरुभ्योनम ॥ श्री अनंत कोट वट गवायनम ॥ हरये ॥

अथ प्रथम हरि प्रह्लाद चिरत लिखते

दुहा-जन्म गरु अब द्रवह ॥ मम देहु दुध वि २ साल

गाये चहु प्रह्लाद गुन ॥ पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥

अत-॥ दुहा ॥ श्रीमती श्री भागोत में । धरणे चिरत अपार ।

तिनकी आस देव के । कछु एक किये उचार ॥१६९॥

नारद कहै युधिष्ठिर ही । सुपहु परोभित ।

४२ हरि प्रह्लाद चिरत, रचयिता-हरचदजी । छद्म सख्या-१७२ । पत्र सख्या-२६,
 दशमी कागज । आकार-८ ७/५×४ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पत्ति-
 प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपत्ति-२२-२५ । लिपिकार-अज्ञात, सवत् १९०० के
 आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धाम्भोजी, विष्णुत्त विष्णोई,
 दुतारावाली ।

आदि-अथ प्रथम हरि प्रह्लाद चिरत लिखते

॥ दुहा ॥ जभ गुरु अब ब्रह्म ॥ मम देहु दुघ वित्ताल ॥

गाये चहु प्रह्लाद गुन पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥

अत-आस पास की साथ हे ॥ कीए प्रथ प्रकास ॥

दया सब सत रावियो ॥ हरचंद तुमरे दास ॥१७२॥

इति श्री लघु हरि प्रह्लाद चरित मपूर्ण ॥ शुभमसतू विलाण रमतू ॥ रररर

- ४३ (क) जभावसरी कथा, मयाराम रचित । छंद सख्या-१४४ । तथा (ख) बोल्लोजी कृत १० फुटकर कवित्त । पत्र सख्या-७ । दाी कागज । आकार-११.५×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति पवित्र ४०-४३ । लिपिकार-अनात । लिपिकाल-मवत १८६७ । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धानलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । आदि-श्री गणगायनम ॥ श्री विष्णो जयति ॥ अथ जभावसरी कथा लिपते ॥ ॥ कुटलीया छंद ॥ प्रथम बद्ध गुरुदेव को ॥ दुतिये बद्ध सब साथ ॥

विष्णु बद्ध पुनि तोसर जात मित्त जु व्याधि ॥

अत-कुगर कुवरणों दपय जबलि हीण उवस हिये

वीहल कहै जो पारयो कुगर कुपात न बधि १० । राम राम ।

- ४४ प्रह्लाद चरित, बेसोजी कृत । छंद सख्या-५९४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-२० । कुल पत्र सख्या ३९ है, जिनम सख्या-७ से २५ तक, १९ पत्र अप्राप्य हैं । प्रति-जाण । दासी कागज । आकार-९ २५×४ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पवित्र प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पवित्र-२९ से ३१ । सवत १८८४ म माघु श्री हरकिसनदामजी के विष्णु परमराम द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धानलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री भभेरवराय नम ॥ श्री परमात्मनम ॥ अथ प्रह्लाद चरित लिपत ॥

राग मान् ॥ दोहा ॥ नारायण पहली नऊ ॥ सामी सरव मुजाण ।

आदि भगति कहिन्ह्यो कया ॥ पह्लाद चरित परवाण ॥१॥

अत-में दावण पकडयो दीन बी ॥ सतगुर फर सहाय ॥

पाच सत नव वाहरा । अबक मोहि मिलाय ॥९४॥ इति श्री प्रह्लाद चरित केन्वदास विरचिताया सपूर्ण ॥ भवेत ॥ मवत १८८४ रा वषे मित्ती श्रावण मुदि ११ गुनवार ॥ लिपते साथ श्री १०८ महत् हरकिसनदासजी रा दिग्ग परमराम ॥ तीरय जाभोजाव मधे ॥ पोथी माघ मायावराम की

- ४५ अद्यतार कथा, सुरजनदासजी रचित । छंद सख्या-२३६ । पत्र सख्या-२० । बीमवें पत्र म बेसोजी के ३ और किसोर का १ छंद और लिखे गए हैं । दाी कागज । आकार-९ ७५×५ इंच । हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-एक इंच । लिपिकार साह्य रामजी के ज्येष्ठ पुत्र गणेशरामजी । अनुमानत सवत १९४० मे लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । अक्षर-प्रति पवित्र २५-२८ । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१०-१२ । (प्रथम पृष्ठ म ९ ही पवितर्या हैं) । प्राप्तिस्थान-श्री धानलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ लिपते भवतार क्या ॥

॥ दा० ॥ वेद कतेम ने पुली मद्र मद्र बिची तयार

जीव पत्र जोषों टल सतगुर ले भवतार १

अन्न-(पत्र १९ से) सतगुर सेतो घोनती अरज कर लिय लाय

पांच सात नय धारही अबके मोह मिलाय २३६ ईति श्री गुरजन-
दास विरचतायां श्री भवतार क्या सपूग लिपतु साथ शाह्वराम जी का शिष्य
गणेशरामेण हरी हर

(पत्र २० से) गुर ध्यान हो ध्यान की ध्यान घर बेह सोहन की समभावण कू

परणी उर जय पाय न घरहु बलहू २ इन पावन कू ?

४६ छप्पय, ऊदोजी वृत । छंद सख्या-५५ । पत्र सख्या-७ । मीन के अन कागज ।
आकार-१०×५ इंच । हांगिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ १३ ।
अक्षर-प्रति पक्कि-३४-३६ । हरिकृष्णदास द्वारा सबत १८९१ म विविद्ध ।
लिपि-१९०८ । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला ।

आदि-श्री विष्णु जयती श्री भगेश्वरायाम अथ छपईया ऊजो का

सास प्राप्त दातार तास विषय अथर न जानी

जपू रात अर दिवस सदा धोनऊ यपाणी

अत-अलय अछेव अजोनी सिभू पार तिह की कोण लहे

हलत पलन तिह सरण बिसन भक्त ऊदो कहै-५५ इति श्री ऊदजी रा बच्यत
सपुरण १ लिपते साथ श्री सटपदासजी रा शिष्य हरिकृष्णदास समत १८९१ रा
मिती माघ सुदी ४

४७ पत्र सख्या-३ । माटा दशी कागज । आकार-१२×६ इंच । हांगिया-दाएँ, बाएँ-
एन से सवा इंच तक । पक्कि-प्रति पृष्ठ-१२-१३ । अक्षर-प्रति पक्कि-१४ । दो
हाथी की लिखावट है । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सबत १८७५ के लगभग
लिपिवद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुता-
रावाली । इसम ये २२ छंद है —(क) गुरजनजी के कवित । छंद सख्या-१८ ।
(ख) बीलहोजी के कवित छंद सख्या-४ ।

आदि-श्री विष्णुजी सतसहा छ जी लीपते कवत मुजन जी का कल्या दुगदाजी न

मन राजा हेरीयो उध दोम रोपी अथर

जडी भेप धारज पाव दे सास सधर

अत-सेसार जुगत जागें मुक्त लाभ घणो छ दहू पहोर

बील कह आलस न थर जो गुर कह्यो सो घरमे कर २२

४८ हरजस, सख्या १११, विभिन्न कवियों क । राग-रागिनियो मे गेय । पत्र सख्या-२७ ।
दो कागज । जाग । मोट और पतल दो प्रकार के । आकार-१०×५ इंच ।
हांगिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पत्र पत्र-तत्र चारो ओर से रचित । पक्कि-प्रति
पृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति पक्कि-३३-३४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सबत

१८२५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमें इन कवियों के हरजस हैं —

(क) बील्होजी के-सख्या १९ । (ख) सुरजनजी के-सख्या ४८ । (ग) फुटकर-११ । ये इन कवियों के हैं —

- | | |
|-------------------------|--------------------|
| (१) ऊधोजी (ऊबोजी) के-२, | (२) बील्होजी का-१, |
| (३) काहोजी का-१, | (४) तेजोजी के-२, |
| (५) आसान-इ का-१, | (६) दुरगदास के-२, |
| (७) पदम के-२ । | |

(घ) केसौजी के-सख्या १२ । (ङ) आलमजी के-सख्या १२ । (च) फुटकर हरजस-सख्या ७ । ये त्रयश इन कवियों के हैं —

- | | |
|------------------|------------------|
| (१) केसौजी का-१, | (२) मापनजी का-१, |
| (३) मिठुदास-१, | (४) देवो-१, |
| (५) ऊबोजी के-२, | (६) हरिनद-१, |

(छ) हीरानन्द वृत्त हिंडोलणो, १० पद । (ज) रहमत वृत्त-१ ।

आदि-श्री जभेस्वरायम लिपते हरिजस विल्होजी का राग आसावरी

दिल दुरमत दुजा साथ कहाव ताका भोह अचभा आव टेक

पढ गुण गत परमोघ रात दिवस विषोया कुँ सोघ

वस सभा मा ग्यान विचार भीतर लयण विली का घारं १

अत-इ द्र सहत सब देवता आए करण जुहार रे हेली

चरण प्रस्याजी स्याम का गाव मगलचार ४

पहराजा के कारण रे हेली सभरयल अवतार

जन रहमत की घीनती जभ गह अवतार ५ ११

४६ विष्णु चरित, ऊधोदाम रचित । छन्द सख्या-११० । पत्र मख्या-२०, मनीन के बने कागज । आकार-९"×४" । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२३-२५ । नृसिंहदास द्वारा सवत् १९३७ म लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तस्थान-जागलू साधरी ।

आदि-श्री गणोपायनम ॥ अथ विष्णु चरित लिख्यते ॥ + + + इ

श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ॥ आज्ञा होय विष्णु जस गाऊ

अत-इनि श्री विष्णु चरित सपूर्णम् ॥ मामोत्तममासे कातिकमासे वृष्ण पक्षे जीव वागरे मया लिप्यत नृसिंग दास श्री । १०८ । श्री मोतिरामजी का गिण्य रहने वाला रणी वासे पपुर पदर का ॥ सवत् १९३७ ॥ पठनाथ साधु बुधरामजी श्री सावल-दामजी का गिण्य महर नगीने मदिरे विष्णु ॥ श्री बुधरामजी श्री ॥ श्री जभाय नमोनम श्री गुग्गुलुकमतेभ्योनम ॥ श्री रामजी राम राम ॥

५० अमायस की कथा, मयाराम रचिन । छन्द सख्या-१५० । पत्र मख्या-२६, मनीन के बने कागज । आकार-९"×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रति

पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पत्रित-२२-२५ । नृसिंहदास द्वारा सवत १६३७ म तिपिवद्ध ।
अक्षर-मोट, लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।
आदि-३ श्री गणेशायनम ॥ अथ भावतारो वया लिप्यते ॥
कुटलीया-प्रथम बड़ गुरुदेय की ॥ द्वितीय बड़ सय साध

विष्णु बड़ पुंय तीतर ॥ जात मिट जु द्वाध्य ॥२॥

अ-१-इति श्री महाभारत श्री वृष्णसुत न गवान् अभावम महत्तम मयाराम विर-
चिताया सम्पूर्णम् ॥ सवत १९३७ मासोत्तम मास अस्वीन् मास ॥ शुक्ल पक्षे पुण
माया शुभ तिथी ॥ चंद्रनामरे व मुक्ताम नगान मन्दि म ॥ लिपि कृत साधु नृसिंहदास
श्री १०८ मोतिरामजी का लिप्य साध विष्णोई ॥ पठनाथ साधु बुधराम जी बर
श्री सावलदामजी व मन्दि रनी के ॥

गो कहते सुप ऊप ॥ ता कहते तम नास

नृसिंहदास गीता जो कहै ॥ सहज मुक्त हो जात ॥१॥

राम राम राम राम श्री राम श्रीराम धारम थीराम जभायनमोनम ॥ श्री
गुरवनम ॥ श्री भगलम्नु ॥ श्री ॥

५१ गोवलजी क छन्द आदि । कुल छन्द सत्या-१३५ । पत्र सत्या-१८ । दगी वागज ।
आकार-९×४ इंच । हागिया-गाँ, वाँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-
प्रति पक्ति-२५-२६ । परसराम द्वारा सवत १८८९ म तिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य ।
प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी । इममे ये रचनाएँ हैं —

(क) अवतार विगति-४५ छंद, (ख) परची-३७ छंद, (ग) स्तुति अवतार
की-१३ दोहे-कैसीजी कृत । लिपिकार के अनुसार ये तीनों अस्तुति अवतार
का के अलगत हैं । (घ) इन्दव छन्द-३२ छंद । (ङ) स्तुति होम की-८
छंद ।

आदि-श्री भूभेस्वरायनम ॥ लिपित अस्तुति अवतार का छंद मोतीदाम

दोहा-रिषपति तिषपति सीलपति सुरपति सदा सहाय

गतिदाता गौबिंद सुमरि गोरुलि हृदि गुण साय १

जत-जाभ थभा किम ऊधरे जिण रहै गिर सागर ओट तर

श्रीकमजी ताहरी तपु जपन विराश्री ईश्वर ८

एनि श्री गोवलजी का कहा छन्द कवल सपूर्ण ॥१॥ सवत १८८९ रा वये मिति
असाढ सुदि ८ बसपतवार लिपित साध श्री १०८ श्री हर किसनदास महतजी का
सिद्ध परमराम गाव फतपुर मध्ये ॥१॥

५२ जगनीस घम की आकड़ी, पत्र-१ जिसको बीच म मोडकर २ बनाए गए हैं । दगी
वागज । १ पत्र के दोनो ओर (१ + २) कुल ११ पक्तियों मे यह रचना है । दूसरा
मुडा हुआ पत्र एकदम खाली है । लिपिकार-अज्ञात अनुमानत सवत १८५० म
तिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । आकार-एक पत्र का ९×४ इंच ॥ प्राप्तिस्थान-जागलू
साधरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ उद्यतीस घम की आकडी लिपते ॥

तीस दिन सूतक पाच रतघती प्यारो

सेरो करो स्नान सील सतोप मुच प्यारो

अन्त-उणतीस घम को आकडी हूदे घरियो जोय

जाभेजी कृपा करो नाम विष्णोई होय

श्री ६ उद्यतीस घम सपूण १ ॥ शुभम् इति

५३ लघु हरि प्रह्लाद चरित्र, हरचदजी कृत ॥ छंद सख्या-१७२ ॥ पत्र सख्या-११,
मंगीन के बने कागज । आकार-९ ७५×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत
पौन इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६, आदि और अत म
दो पृष्ठ खडिन हैं । सतापदाम द्वारा सवत् १६४१ म लिपिवद्ध । लिपि-मुपाख्य ।
प्राप्तिस्यान-जागलू मायरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ यथ प्रह्लाद चरित लिपते ॥

दोहा-जभ गुरु अथ द्रबहू नम देहु बुधि विशाल

गाये चहु प्रह्लाद पुन पुन हरि चरित रसाल १

अन्त-आस पास की साप ले कीये प्रय प्रकाण

दया सर्व सत राषियो हरचद तुमरो दास १७२ ॥

इति श्री भवन हरचद कृतया लघु (हरि प्र) ह्लाद चरित सम्पूराम् ॥

दोहा-शृष्टी कारण जभ गुरु व्यापक है घट माह

सतोपदा (स स) रण परयो रायो चरणा माह १ ॥

समतात्रीसेकतालीमे मामोत्तमामे मार्गंगीप मासे शुक्ल पक्षे तिथी चर्योम् शुनवासरे
लिपिकृतम् सत श्री १०८ स्वामी जी बालकदासस्य तस्य शिष्य सतोपदासेन ग्रान
नीवग्राम विष्णु नदिर मध्ये श्री रस्तु कत्य ।

५४ तलाव की कथा, रचयिता-केसोजी । रूप-सख्या-१२, दोहो के अतगत आई हुई
चौपडयो की सख्या नहीं दी गई है । पत्र सख्या-३, देगी पतला कागज । पुरान
होन के कारण चारा ओर के किनारे खचित हैं । आकार-९ २५×४ ७५ इंच ।
हाशिया दाएँ-बाएँ-साधारणत-आधा इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति
पक्ति-३४-३६ । सवत १८८२ म परमरामजी द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाख्य ।
प्राप्तिस्यान-पीपासर सायरी ।

आदि-श्री विष्णु जीनम ॥ लिपते कथा तलाव की ॥ राग सोरठ ॥

पारब्रह्म पहली नऊ ॥ जग मडण जगदीस ॥

लप चोरासी दें घुगो तिण साम नवाऊ सीस ॥

अन्त- ॥चो०॥ बड तीय को गुण गायो ॥ केसजी गुण भू यि मुणायो ॥

दिल अ तर दूज न आणी ॥ जत माहि कह्यो सत जाणी ॥१२॥

इति श्री तलाव की कथा सपूण ॥१॥ सवत १८८२ रा कृपे मिति प्रथम
आवण मुदि तिरोदमी बुधवारे ॥ लिखत साध श्री १०८ हर किसनदास जी

का शिष्य परसराम ॥ सह्र नगीना मधे ॥ श्री ॥ श्री मंगलमस्तु ॥

- ५५ कलस, पाहल और बालक मत्र, पत्र सख्या-४ ॥ मोटा देशी कागज । आकार-
९×४ इंच । हाशिया-दाएँ-बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति
पक्ति-२५-२८ । परसरामजी द्वारा लिपिवद्ध । अनुमानतः सवत् १८७५ के आस
पास । अक्षर-मोटे, लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।
आदि-अथ कलस लिख्यते ॥

उँ अकल रूप मनसा उपराजी ॥ ता भा पांच तत होइ राजी ॥

आकाश बाप तेज जल धरणी ॥ ता मा सकल सिष्ट को करणी ॥

अन्त-जल स हाये त्याग मल विष्णु नाम सदा निरमल ॥

विष्णु मत्र फान जल छुधा ॥ गुर फुरमाण विष्णोई हुवा ॥ इति बालक को
मत्र सपूरा ॥१॥ श्री जभायनम श्री विसवे नमो जय विष्णो । गगाविसनजी को
सीप परसरामजी ॥

- ५६ प्रह्लाद चिरत, ऊधोवास कृत । जद सख्या-३४५ (३४४ छद के पश्चात् इसमें
३४८ की सख्या भूल से लिखी गई है) । पत्र सख्या-३४ । अपेक्षाकृत मोटा देशी
कागज । आकार-साधारणतः ९५×४२५ । हाशिया दाएँ बाएँ-१ इंच ।
पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०, किंतु किसी पृष्ठ में ६ भी हैं । अक्षर-प्रतिपक्ति २४-२८ ।
गायणे हणवतराम द्वारा सवत् १६३४ में लिपिवद्ध । अक्षर मोटे हैं किन्तु लिपि
विशेष स्पष्ट नहीं है । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । पुढिका के पश्चात् ३४ वें
पत्र के प्रथम पृष्ठ पर, 'गीतामाहाम', 'सूय जलचढाव' मत्र लिखे गए हैं ।
आदि-॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रह्लादि चित्र लिख्यते ॥

दोहा-प्रथम बडु गरु देव कु बुतीऐ बडु सब साध ।

त्रिती बडु म्हा विष्णु कु कहु चिरत प्रह्लाद । १

अन्त-समत १८६८ । अठातरा स अडसठा माघ सूकल पक्ष जान

तिथी तीज सपूरण भयो प्रह्लाद चिरत आसन ॥३४८॥ इति श्री प्रह्लाद चिरत
सपूरा सवत १९३४ ॥ मीती धावण सुल्काया तीथी १५ वार बृहस्पतवार लिख्यते
गायणा हणवतरामेण पठनारथ गीला नधुरामेण गाव भाण । मध्ये । आ निमो
भगवतेवासदेवायनम ॥ श्री राम

- ५७ श्री गोविंद स्वामी कृत सस्कृत जन्माष्टक की विष्णोदासविलास टीका । टीकाकार
विष्णुदास । टीका गद्य में है, आदि अन्त में टीकाकार ने स्वरचित दोहे भी दिए हैं ।
पत्र सख्या-२८ । मगोन के बने कागज । आकार-साधारणतः ८२५×३५ इंच ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-नाममात्र को । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-(टीका
के) २३-२५ । सस्कृत लोक की अर्द्धांगी पहरे दकर टीका चलती है और प्रम भग
नहीं होता । श्री नर्मिहंशम द्वारा सवत १६४८ में लिपिवद्ध । मोटे अक्षर । विवि-
स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।
आदि-प्रथम पत्र के पहरे पृष्ठ पर-अथ जन्माष्टक मटीन लिख्यते । आ श्री गण

शायनम् ॥

मायातीत त्रिगुण रहित ॥ श्री गुरु जभनतोस्मी ॥

सकल भुवन प्रकाश ॥ सच्चिदानन्द रूप ॥१॥

दो० ॥ श्री गुरु पदरज आन कं ॥ सब सतन के पाय ॥

मौली ऊपर धार क ॥ टीका करू सुहाय ॥२॥

॥ अथ टीका ॥ श्री जमेश्वर कु नमस्कार करू हु ॥ कैसे है सबके इश्वर है ॥

परमब्रह्म रूप है ॥ परे स परे है सत सत सरूप है सब के भजने योग है ॥

अत—॥दो०॥ श्री गुरु सत सरोज पद वसे हृदे मम आय

जभाष्टक प्रवष को दोनो तिलक बनाय ॥३॥

अतद्रित पठन्तित्य सब पाप प्रमुच्यते १०

शुद्धा शुद्ध को गम नहीं अक्षर का नहीं बोध

विष्णोदास अष्टुति कर सत जु लीजो सोध ४

इति श्री गोविन्द स्वामी कृत विष्णोदास विलास टीकाया जभाष्टक संपूर्णम् ॥

लिप्यत साधु श्री १०८ महाराज श्री मोतिराम जी का पिण्ड नसिगदास मासोत्तम—

मासे अस्वमासे शुक्ल पक्षे तिथि सप्तम्या शनिवासरे साल १६४८ ॥ पठन्नाथ

विहारीदास साधु विस्नोई ॥ श्री जमेश्वरायनमोन श्री विष्णु

५८ चिंतावणी, सुन्दरदासजी की तथा सुरजनदासजी की । पत्र सख्या—७, देशी कागज ।

आकार—६×४ इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—पौन इंच । पक्ति—प्रतिपृष्ठ साधा-

रणत—१०, किंतु किसी किनी में ११ पक्तिवा भी हैं । अक्षर—प्रतिपक्ति—४१—४६ ।

सुन्दरदासजी की तीसरी रचना—तक चिंतावणी के पश्चात् पत्र ६ के प्रथम पृष्ठ

पर पुष्पिका इस प्रकार है—सवत् १८५४ । मिति माह सुदि नौमी वार शुनवार

लिपते साधु गगाराम ताजजी का चेला गाव अलाय मधे किसान सीहागर घरे । मगल

मस्तु ॥ तत्पश्चात् सुरजनजी कृत अथ चित्रामणी का आदि अक्ष इस प्रकार है—

श्री परमात्मनेम लिपते चित्रामणी सुरजनजी की

दोहा—कहा कम जर कोयली कहाँ तिसना कहा तीर

रे मन कित पित भात तु सपति बघ्यो सरोर १

इस रचना के पश्चात् पुष्पिका नहीं है, पर लिपिकाल सवत् १८५४ ही मानना

चाहिए क्योंकि पत्र, लिखावट, स्थाही या प्राचीनता में किसी प्रकार का भेद नहीं

है । लिपि—मुवाच्य । प्राप्तस्थान—पीपासर सायरी । इसमें चार चिंतावणी ग्रंथों

का संकलन है पहली तीन सुन्दरदासजी की और चौथी सुरजनजी की—(क)

विवेक चिंतावणी—छंद सख्या—५३ । (ख) हरिबोल चिंतावणी—छंद सख्या—३० ।

(ग) तक चिंतावणी—छंद सख्या—४० । (घ) अथ चित्रामणी—छंद सख्या—२५ ।

आदि—अथ सुन्दरदासजी की विवेक चिंतावणी ॥

पूरनहार निरजन राया जिनि यहू नख सख बनाया

ताको भूलि गयो विभचारो अईया मनिपहु बूझि तुम्हारो १

रुका कमल नयन नारायण स्वामी ॥ सब द्वारका अंतरजामी ॥

वासुदेव सकर्येण छाज ॥ प्रद्युम्न अनिरुद्ध विराज ॥

अन-वारायणो आनंद गुण गाऊ ॥ सब सतन को सीत नवावू ॥

बोन परतोते है शमु सुदाना ॥ नभसकार गुरुदेव समाना ॥ इति श्री सुदामा की धारणी ममाप्ता भीता वमाय धी १४ वार व्रमपतीवार १

६२ प्रह्लाद चिरत, ऊयोजो कृत । अपूर्ण । उपन-घ-पत्रमभ्या-२७, (१ से २५ तक तथा २८वा और ३०वा) । दगी कागज । जीग, खडित । आकार-९×४ २५ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पत्र २५ तक २७२, २८ म २९६ से ३०५ और ३०वें मे ३१८ म ३२८ तक छट है । लिपिकार-अनात । अनुमानत भवत १८८० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।

आदि-॥ दो० ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रह्लाद चिरत लिप्यत ॥ दोहा ॥

प्रथम बडू गुरुदेव कौं ॥ दुतीये बडू सब साद ॥

त्रितीय बडू महा विष्णु कौं ॥ कहीं विरत प्रह्लाद ॥१॥

अन्त-(३०वें पत्र का दूसरा पृष्ठ)

अजर जरे अस्त नहीं भाये ॥ कृष्ण अना निर उपर राये ॥२८॥

जाका कारज हरजी करया ॥ नव कोडी ले सहये त + + ॥

६३ आदि बसावली, पचोस नाम (विष्णु के), कलस आर पाहल । अपूर्ण । प्राप्त पत्र मभ्या-३ (सटना-३, ४ तथा ५) । पत्रा के बाएँ हाणिए म हो० लिखा है जिमस विदिन होता है कि हाम पाठ है । दगी कागज । आकार-९×४ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२८ । लिपिकार-अनात । अनुमानत भवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । सम ये रचनाएँ हैं —(क) आदि बसावली, (ख) पचोस नाम, (ग) कलस, (घ) पाहल (अपूर्ण)

आदि-सिनान सुभाइया चौथो सिनान तो पिमा रुपी पचमू सिनान जल सागरा, विसन जले विसन यते

अत्र-(पाहल मत्र)-नेम तलाई नेम जल तेमे क जी पाहली

कायम राजा आईयो वे + + + ॥

६४ होम पाठ आदि । पत्र मभ्या-५, दगी कागज । जीग, खन्ति । आकार-९×४ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । लिपि-मुपाठ्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । लिपिकार-अनात । अनुमानत भवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । सम ये रचनाएँ हैं —(क) पारवती इश्वर सवादे गोप्राचार, (ख) बसदर के २५ नाम, (ग) ईश्वर का पारवती को उपदेश-विष्णु-महता के संघ म । (घ) आदि बसावली, (ङ) विष्णु के पचोस नाम, (च) विषरस, (छ) अस्तुति, (ज) कलस, (झ) पाहल, (ञ) फुटकर कवित्त-३, (ड)

बालक को मंत्र (यह वाद म लिखा गया प्रतीत होना है क्याकि भिन्न हाय की लिखावट म है) ।

आदि-था गणेशायनम ॥ श्री महादेव उवाच ॥ उ जद्र वास रूप ॥ पूजयन्नुत्पाम
निधु ॥ गुणे निधु ॥ आकास पृथ ॥ सता रामु ॥

अत-जदि कान पड्या छूया तदि वदा विसनोई हूया इति बालक को मंत्र १

६५ (म०-प्रति) । १४ इच लम्बाई के दशी कागजो को मोडकर बीच से सिली, पतले गत्ते की जिल्द बधी हुई पोथी । जीण । आकार-प्रति पत्र-७×७ इच । गहरे वादामी पत्र । हाथिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन से एक इच तक । तीन-चार हाथो की लिखावट म, अत प्रति पृष्ठ मे पक्तिर्या समान नही हैं । सबत १८४८-१८५३ के बीच लिपिवद्ध । यत्र तत्र स्याही फली हुई है । लिपि-सामान्यत -पाठ्य । मुकाम गाँव के श्री मल्लूराम थापन से प्राप्त होने के कारण इसका नाम म०-प्रति रखा गया है । इसम ये रचनाएँ हैं —

(क) धूर्चरित्र, रचयिता-जन गोपाल । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१५ । बीच मे कई पत्रो के एक ओर ही लिखा गया है । अत-विकसत सुत अपराध कौ । ज नाप पल पितमात ॥२१६॥ गाया ॥ चौपई ॥३००॥ इति श्री धूर् चरित्र संपूरण ॥ थापन मदा वाचनाथ ॥ स० १८४८ चत्र मुदि ७ लि । भगवानदास विनचद तारा भीमा लिपत हेमटसर मधे ॥ (ख) सबद, पहला । प्रसग समेत । (भिन्न हाय की लिखावट म) । (ग) सबद थाणी, प्रसग समेत । प्रसग पद्य म हैं । सबद सख्या-११७ । सबद ६७ स पूव के पत्र सिलाई की ओर स कट कर अलग हो गए है तथा चारो ओर से गडित है । लिपिकार-अज्ञान । मोट अक्षर । लिपि-स्पष्ट । सार सबद एक हाय की लिखावट म ।

आदि-"द० ॥ श्री गणेशायनम ॥ लिपते श्री वायव्य ऋभजी का ॥

काच करव झल रपा । सबद जगाया दीप ।

घाभण को प्रचा दिया । अ सा अचरस्र कीप । १ ।

जो ब्रूसा सोइ कहा । अल्प लपाया भेव ।

घोषा सब गमाइया । जदि सबद कह्या झभ देव । २ । गुर ची-हीं गुर ची-हू ॥

अन-भल कीषां ती भल बुधि पाव बुरीया बुरी कमाव ११७ इति श्री ऋभजी री वाण साप्या संपूरण समाप्ता ॥ श्री रस्तु कल्याणमस्तु सभवस्तु ॥ पक्ति-प्रति पृष्ठ-१८ । अक्षर-प्रति पक्ति-२०-२१ । लिपिकाल-सबत १८४८ और १८५३ के वाच किमी समय, क्याकि इसक पश्चात् भिन्न हाय का लिखावट म बडीनवण है जा सबत १८५३ मे लिपिवद्ध की गई थी । (घ) बडी नवण ।-इति श्री बडी नुण संपूरण भवत सम १८५३ । (ङ) श्री कृष्णा अनुम सवादे श्री विष्णु अठाईस नाम । (च) गोत्राचार (पावता ईश्वर सवाद) । आदि म-लिखत मदा थापन पम थापन का बेटा । (छ) वसद का नाम,-धन्त म-लापतू थापन कीसरा समत १८५२ मित्ता वनाके व ८ । (ज) फुटकर छद, दाद्रू के चार दोहे तथा मुरजनजी की यह ए

साखी-पनारास आतार लीया गुर आठम सोम अठोतर । (भ) फुटकर भजन, मख्या-३ । कबीर, मोरा तथा अज्ञात कवि कृत । (व) दस अवतार, रचयिता-अज्ञात । (ट) गुगलिय की कथा, बील्होजी कृत, छंद सख्या-८६ । (ठ) सच अपरी विगतावली, बील्होजी कृत, छंद मख्या-४८ । स्याही फल जान और कही कही पत्र भोग जाने से अक्षर मुवाच्य नहीं हैं, दो पत्र एक ओर ही लिखे गए हैं । (ड) कथा दूणपुर की, बील्होजी कृत, छंद सख्या-६० । ८ पत्रों में एक ओर ही लिखी हुई है । लिपि कही कही अस्पष्ट । (ढ) कथा जसलमेर की, बील्होजी कृत, छंद सख्या १११ । २२ पत्रों में सम्पूर्ण, जिनमें केवल ९वा पत्र ही दोना ओर लिखा गया है, शेष सब एक ओर लिखे हुए हैं । लिपि-अस्पष्ट । (ण) कथा शोरडां की, बील्होजी कृत, छंद सख्या-३३ । ६ पत्रों में, जो सभी एक ओर लिखे हुए हैं । (त) कथा चित्तौड़ की, केसोजी कृत, छंद सख्या-१३० । यह १९ पत्रों में समाप्त हुई है जो सभी एक ओर लिखे गए हैं । कही कही स्याही फलन से लिपि-अस्पष्ट ।

आदि-॥ ६० ॥ श्री गणेशनायक । अथ धूर्चिरन ग्रंथ लिखते ।

गुरु गोविंद प्रणाम करीज । मन वचन भ्रम चरण चित्त दीज ।

राम भक्ति को प्रारंभ होई । गुपति बात समझाय सोई ।१।

सतयुग तेना द्वापरि गईयो । तब कलियुग की आगम भईयो ।

पडवा राज परीछत दोनो । कलि प्रवेश प्रथमो परि कीनो ।२।

अत-बारा सोला सम करि घर ॥ गुर फुरमाई करणी कर ॥

पाच पचीसु रहै समय ॥ जीवत पाक चलक में होय ॥१२९॥

सुख बचन सतगुर का गहो ॥ कारण क्रिया गुर मुखि बहो ॥

सतरा स छिहोत्र सही कथा विचारि कसजो कही ॥ १३० ॥ ॥ कथा सपुराण

समापिता ॥ तत्पश्चात् भिन लिखावट में, फीकी स्याही में अस्पष्ट रूप में यह लिखा

है—ममाध ॥ विसनु ॥ अठाईस नव ॥ सतो सरम पुरण ॥ समापिता ॥

६६ पोथी । १२ इंच लम्बे देशी कागजा का मोडकर बीच से सिली हुई । सिलाई दूट

जानने पाने पृथक हो गए हैं । बीच में एकाध स्थल पर पत्र अप्राप्य । आकार-

६×९ इंच । जीण और खडित । हाशिया-गाँ, बाएँ-आधे से पौन इंच तक ।

अंतिम दस पत्र और जिल्द दीमक के न्याये हुए हैं । चार भिन हाथा की लिखावट

में । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२० से २८ तक । सवत १८२० से १८२५ तक लिपिबद्ध ।

आदि से बीच की सिलाई तक ११५ और पदचाल ११७ फोलियो हैं । प्रान्तिस्थान-

लोहावट साधरी । इसमें प्रमाण ये रचनाएँ हैं—(क) कबीर का रेखता-१ । इस

पर फोलियो सख्या नहीं है । (ख) पहलाद चरित, केसोजी कृत, छंद मख्या-५९५ ।

लिपिकाव-सवत १८२० । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१ ।

अत-पाच सात नव बारहा ॥ इवक मोहि मिलाय ॥५९५॥ कथा सपुराण समापता

त्रिपतु हरजी दामोजी का चेला बचनारथी मन्पी वरये म्यनी असाठ दुनीय वदि ॥

तिथ ५ । बार विसपति ॥ समत १८२० गाव गुना मये लिपत पहराज सीहाग ॥

परे । (ग) धूचिरत्त, जन गोपाल कृत, छन्द सख्या-२०८ । प्रति पृष्ठ म २४ पक्तियाँ । अत-में अज्ञान मत आपनी । कपि कहि कुछ बात ॥ बनसत सुत अपराध वू । जन गोपाल पित मात ॥ २०८ ॥ एती धूचिर सपूर समापिता ॥ लिपतु काहा नायाजी का स्यप सुपलात दूधाधारी का पोता स्यप वचनारथी सरुपा ॥ लिपतु गाव गुदा मधे पहराज सीहाग रे धरू ॥ समत ॥ ॥ १८२० ' । (घ) मोहमरद राजा की कथा, रचयिता-जन जगन्नाथ । छन्द सख्या-११७ । प्रति पृष्ठ म २१-२२ पक्तियाँ । अत- ॥ लिपतु प्रेमनास नायाजी का स्यप ॥ सुपलाल दूधाधारी का पोता स्यप । पठनारथी सरुपा ॥ समत १८२० ॥ वृषे मित्ती दुतीय असाढ मुत्त तिथ ६ ॥ वार थावरवार ॥ गाव गुदा मधे पहराज सीहाग रे धरू ॥ । (ङ) कथा सुरगारोहणी, केंसौजी कृत, छन्द सख्या-(२१६ + १)=२१७ । "लिपतु हरजी ॥ दामजी का चेना ॥ वाचनारथी सरुपी ॥ समत १८२० ॥ वृषे म्यती ॥ आसाढ दुतीय मुदि ॥ ८ ॥ वार सोमवार । लिपतु गाव गुदा मधे ॥ पहरा सीहाग धरे ।" (च) धडाबध, बोलहैजी का । छन्द सख्या-५३ । प्रति पृष्ठ म २५ पक्तियाँ । (छ) अवतार कथा, सुरजनजी कृत । छन्द सख्या-२४० । प्रति पृष्ठ म २६ पक्तियाँ । (ज) चित्रामणी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या-२७ । (झ) धरमचरी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या-८० । (ञ) चेतन कथा, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या-३० । लिपिकार के अनुसार (झ) और (ञ) एक ही रचना है । दोनों की छन्द सख्या का अलग अलग उल्लेख नहीं है । कवल ८० व छन्द के बाद 'अथ चेतन कथा लीपते' नाम दिया है । पुष्पिका म दोना का उल्लेख ऐसा है — एती चेतन कथा धरमचरी सपुरण समापिता ॥ (ट) ग्यान महात्म, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या-२३६ (भूल से २३५ के बाद ३३६ लिखी गई है) । (ड) छत्रदया उदजी का । छापय सख्या-५४ । उदजी का छत्रदया सपुरण समापेता । लिपतु परमाणद वणहाल ॥ (च) से (ड) रचनाएँ परमाणजी मणिहाल की लिखी हुई हैं । (ड) बहसोवन की कथा, केंसौजी कृत । छन्द सख्या-५२० । लिपते हरजी दामजी की चली ॥ पोथी लाल जाणी की बी उतारी कीपी छ ॥ समत १८२१ ॥ वृषे मित्ती चय वदि १० ॥ वार थावर ॥ गाव जाभोलाव मध ॥ (ड) बसावली, रचयिता-अनात । फोलियो ११५ व के दाएँ पत्र सफ । प्रति पृष्ठ-२२ पक्तियाँ । इससे आगे की फोलियो सख्या अलग से आरम्भ होती है, आदि क दा पत्र नहा हैं । (ए) वाहन नाम-२८ । (त) सूत नाम-२७ । (थ) रिपु नाम-२८ । (ऌ) गूनाय-८१ + १ सबइया । (ध) होरावेधी-छन्द-१० । (न) पदिमनी-हस्तनी-चित्रणी-सपणी-वणन-सरकृत म-छन्द-५ । (प) गोशवार ७ छन्द । (फ) मसवर क नाम । (ब) ईश्वर-भारवती सवाद । (भ) आदि बसावली । (म) पञ्चोत्त नाम (विष्णु क) । (य) विवरस । (र) स्तुति । (ल) कलस । (व) पाटल । (७) बालक की मत्र । (प) ग्यान तिलक-सुरजनदाम कृत । छन्द सख्या-१०५ । (म) गज भोप, सुरजनदासजी कृत । छन्द सख्या-७० । (ह) कवित राम रात का थापन सुरजनजी का कहा । छन्द सख्या-३६४ । फोलियो-२१ स ३३ वें के दाएँ पत्र

तक । इसमें मुरजनजी को थापन बनाया गया है जो मूल है । (क्ष) छींकारो आरजा (त्र) सतरज री विगत । (ज्ञ) हीरावेधो (१ छप्पय) — चव पदम श्री राम पह ये मदो-वरि उचरह १ । (घ) कया अपाडतिथ की, वनकदास कृत । छद सख्या ११२ । लिखावट अत्यन्त घसीटी लिपि में है । अक्षर बहुत मोटे । लेपतु पेता थापन लेया-वतु सरुपा अतीत ॥ (आ) कया चीतौड की, रचयिता-कैसौजी, छद सख्या-१२८ । लेपतु थापन अमरा पेतारा ('दोरा छ' लिखकर काटा गया है) पस दसवत दोय जरा रा छ ॥ समत् १८२४ भीति आसाड सुद ११ देव पोडणी एवादसी गाव चीढो + + + + ॥ (इ) साखियां । सख्या-१०१, तीन हाथो की लिखावट में । कुल १०१ साखिया इस प्रकार हैं—(१) साखी कणाकी-सख्या ८ । (२) साखी छदा की-सख्या ९ से ५६ । (३) साखी कणाकी स०-५७ से ८५ तक । (५) साखी छदा की-सख्या ८६ से ९५ तक । पन चाग धोर से खडित । दीमक खा जाने के कारण अनेक पत्रो में छेद हो गए हैं । (५) रगौलो (९६), (५५ छदो का) । (६) साखी खेजडली की (९७), (१२ छदो में) । (७) साखी गोपेचद की (९८), (३८ छदो में) । (८) आबिलो (९९), (१७ छदों की बीच में सखृत श्लोक हैं) । (९) रामो की चीनती (१००), (११ छद) । (१०) उमाहो- (१०१), (२१ छदो में)-फो० १०७ के बाएँ पृष्ठ तक) । पुष्पिका-मापी सपूरणो स० १८२६ त्रिपे म्यती भादवा सुदि १२॥ धार थावरवार लिपतु हरजी वणिहाल ॥ वाच जिक न नवण । (ई) फुटकर भजन आदि । दीमक खा जाने के कारण पत्रो में छेद हो गए हैं । जन रहमत-१, तुलसीदास-१, नुरसीदास-४ । कबीर-१ । अज्ञात-१, जन हरोदास-१, हीरानंद को हिंडोलणो, २४ अवतारो के नाम आदि हैं । लिपि-स्पष्ट नहीं है । (उ) पूलहैजी की कया, रचयिता-बीलहोजी, छद सख्या-२३ । लिपि-पाठ्य नहीं है । (ज) साखियां-फोलियो १११ व के बाएँ पत्र से । इसके पश्चात् १११ वें के दाएँ पत्र से फोलियो ११५ तक-पने अप्राप्य । फो० ११६ वें का दाया पत्र उपलब्ध है, जिसमें किसी रचना का कुछ अंग तथा झाडा आदि है । (ए) गोरख गणेश की गुसटि, रचयिता अनात । छद-३५ । फोलियो-११७-११८ व के दाएँ पृष्ठ तक । लिपि-पाठ्य नहीं है । पूरी रचना नहीं पढी जा सकती । छद ३३ के पश्चात् का अक्षर पुष्पिका नीचे उद्धृत है -

आदि-श्री विसनजी सत सही ॥ लिपते रेपता कविरजी का

सति कबीर सबग गुर स्पेले । दया के तपत पबठ भाई ॥

ग्यान के महल में सकल सुप साहबि ॥ साध सतसग मिल भेद पाई ॥

भेद पाये बिना भरम भाज नहीं भरम जजाल घर काल पाई

देव दिव्य विष्टि सब सिष्टि जहूड ॥ गई मड रहा दुप सब घट छाई ॥

अन्त-आकास घसते अयगति ३३ एता + + + । प्रकृति का भेद पवन

का यथा अ + + + । पानो ज माया प्रान पुरसि तहा उतपति हूवा

गुरति निरनि ले मुनि समाना ३४ सोई प्यडे सोई ग्रहमडे ३५ इती गोरप

गणेश की गुाटि संपूरण समत १८२५ मती पागण व ७ स्वपन हरजा ॥
पोषी जीवण दार पी मां गू गांव रासीगर मंघे । ()

६७ गुटका, वीच से सिना हुआ जिल्द यथा । जीण, यत्र-तत्र गडिन, वाच के कई पत्रे
अप्राप्य । देगी वागज, मोटा और पतला दो प्रकार का । आकार-५ ५ ५ ४ २५
इंच । हाशिया-गाएँ, बाएँ-गामायत भाषा इंच । तीन भिन हाथा की निगा
घट म । फोलियो सख्या - १४८ (७८ से ९५ और ९६ ग ११३ तथा १ स ५६
और ८० से १३५) । यह सख्या प्रमानुसार न होकर पृथक् पृथक् है । पवित्र-
प्रतिपृष्ठ-साधारणतः ८-१० । लिपिकाल-संवत् १८२७ स १८९९ तक । लिपि-
प्राय पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम धापन, मुशाम । इतने प्रमाण य रचनाएँ
हैं - (क) मातृका सगुन (अपूर्ण) । --लिपिवृत्त काँहा जाणी वचनायतु हिराम सेंटर
समत १८२७ । (ख) गण । (ग) लीय पतरो । (घ) अजप्पा जाप । (ङ) पारबती
ईसर सवाद । (च) फुटकर साहित्या--(१) मेलो बर्हि मोटा घणी गिए तेंतीसा वान,
केसौजी वृत्त, २७ छंद । (२) पनरास अवतार लीयो गुर भाटिम सोम अठोतर,
सुरजनजी वृत्त, छंद काँ, छंद-४ । (छ) आदित्या--२, साखी-१ । प्रमाण पीतांबर-
दास, ऊषोदास, और अज्ञात वृत्त । (ज) गोबलजी के छंद सख्या-३३ । इ दव छंद
सख्या-३२ (३० + २), तथा एव छंद अस्तुति होम की । (झ) गोत्राचार (महादेव
पावती-सवाद-रूप म) । (ञ) आदि वसावली । (ट) बसदर के पच्चीस नाम । (ठ)
महादेव का पावती को ज्ञानोपदेश (स्नान आदि सम्यधी) । (ड) पच्चीस नाम (विष्णु
के), (ड) विवरस्य, (ग) अस्तुति, (त) कलस, (य) पाहल, (द) बालक-मंत्र, (प)
होमपाठ, (१ कवित्त), (न) चौजुगी, (प) इ इ चौजुगी, (फ) भगलाटक-केसौजी वृत्त,
(२९ छंद), (ब) दस अवतार (१० छंद, अज्ञात वृत्त), (भ) सप्त श्लोकी गोता,
(म) एक श्लोकी भागवत, (य) एक श्लोकी रामायण, (र) सूय स्तोत्र--समत १८९९
रा मि । (ल) उमाहो, बोलहोजी वृत्त, छंद सख्या-२२, (व) पतवो, आलमजी वृत्त,
छंद स०-११, (श) हिंडोलणी-हीरानद वृत्त, छंद सख्या-८, (ष) साखी १-केसौजी
की-साधो मोम्यणी कीयो अलोच जमु रचावोयो (फो० ५५ से ५६ तक) । इनके
पश्चात् ५७ फोलियो से ७९ फोलिया तक के पत्र अप्राप्य हैं क्योंकि ८० वें फोलिए
के दाईं ओर के पृष्ठ पर, प्रह्लाद चिरत का अतिमास और यट पुष्पिका है--"ति
श्री प्रह्लाद चिरतर संपूरण ॥ समत १८९९ मिति चत दुती व मुदि ८ लिपि वृत्त
साथ श्री १०८ श्री श्री वीरमदासजी रो चलो दयारामेण पठनारथी राज्जो" ।
(स) अमावस्या कथा, मयाराम वृत्त, छंद सख्या-१४५ । (ह) तलाव की कथा
केसौदास रचित । रूपक सख्या-१२ । (श) अस्तुति अवतार की, गोबलजी वृत्त, ४५
छंद । (प्र) परची-३७ छंद, गोबलजी वृत्त तथा अस्तुति केसौजी-१३ दोह, केसौजी
वृत्त । (प) जांगडो-कसौजी वृत्त-५ दोहले । (फ) फुटकर भजन-(१) प्राये म्हार जम
गुर जगदीस, गगादास वृत्त, (२) आरती ह्री जी द्वारिका रो राव किसन हरि आरती
तेरो-बबोर वृत्त । (भा) महादेवजी रो नरोदो-दा हाथा की लिखावट म ।

आदि-ऋकारे असुभ ॥ ८ ॥ लृकारे सुभ ॥ ९ ॥ लृकारे असुभ ॥ १० ॥

एकारे सुभ ॥ ११ ॥ ऐकारे असुभ ॥ १२ ॥ ओकारे सुभ ॥ १३ ॥

अत-(सरोदो से) सुरज सुर न चलतो ॥ वेज एक जीव ॥ १ ॥ श्री महादेव पारबती

सेवादो सरोदो सपुरण समोपेता समत १८४८ मत वसाय वद ५

६८ पोथी । १४, १३, १२ और ११ इ च लम्बे देशी कागजो को मोडकर बीच से सिली हुई, जिल्द युक्त । फोलियो ५०-५७२ । पत्राकार-७×१२ इ च, ६५×१२ इ च, ६×१२ इ च तथा ५५×१२ इ च । हांगिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत-१ इ च, किन्तु ५५×१२ इ च आकार के पत्रो का दाएँ-१ इ च, बाएँ-आधा इ च । तीन भिन्न हाथो की लिखावट मे जिनमे एक लिपिकार हरजी वणियाल हैं । लिपिकाल-विष्णोई रचनाओ का-सवत १७८८ तक, रामरसो का सम्भवत इससे पूर्व ही तथा शेष का सवत १८२८ तक । लिपि-स्पष्ट । रामरसो तो बहुत ही सुंदर लिपि मे है । पोथी के पूर्वादि भाग के फोलियो ३५ की साखी उत्तरादि भाग के फोलियो ५५० से पुन आरम्भ होती है । आदि के ३५ तथा अत के २३ (५५० से ५७२) फोलियो का अथ एक हाथ की लिखावट मे है । पक्ति सामान्यत-प्रति पृष्ठ ३५-३७ । अक्षर-प्रति पक्ति १५-१९ । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसम क्रमश ये रचनाएँ हैं—(क) पहलाद चिरत, कैसोजी वृत्त । छंद सख्या-५९६ । (फो० १ से २२ तक) । (ख) साखिया-(फो० २२ से ३५ तक), पुन इसी क्रम मे इनसे आगे की छंद सख्या देकर फो० ५५० से ५५५ तक और साखिया लिखी गई है, जिनका विवरण आगे है । इस प्रकार फो० ३५ तक २४ और ५५० से ५५५ तक १५ साखियाँ-कुल मिलाकर ३९ साखियाँ है । प्रस्तुत २४ साखियो का विवरण इस प्रकार है—साधो कणाकी-६ साखिया । (अत मे सख्या ७ भूल से लिखी गई है), (फो० २२-२४) । (१) साधो मामणे कीयो छ अलोच जुमो रचा-वीयो, उदोजी वृत्त ४१ पकिन्या । (२) आवो मिलो जमल जुलो । सिवरी सिरजण हार, कैसोजी वृत्त, १३ पकिन्या । (३) जुमल आवो गुर भाइयो ॥ सुपही करो जे काय, सुरजनजी वृत्त, १३ पकिन्या । (४) आवो मिलो साधो मोमियो ॥ गुर मिलि जुमो रचाय, धौल्होजी वृत्त, १२ पकिन्या । (५) आवो रलो साधो मोमियो ॥ रल करि जुमु रचाय, आलमजी वृत्त, १३ पकिन्या । (६) दिवलो दीन दयाला भा घ्याइय ॥ होइय मुरा सरीपा गुर भाइयो, अनात वृत्त, १० पकिन्या । (ग) होम को पाठ गोआचार-फो० २४ । (घ) बसद्र का नाव, साथ ही विष्णु-महिमा आदि है । फो० २५, (ङ) आदि बसावली । (च) पच्छीस नाम, विष्णु के । (छ) विवरस-फो० २५-२६ । इति विवरसि होम को पाठ सपुरण । (स्पष्ट है कि ऊपर की सभी वृत्तियाँ-(ग) से (छ) तक होम पाठ से संबंधित हैं) । (ज) व्याह सुरत-फो०-२६ । (झ) चौजुगो हौंदगी, फो०-२६-२७ । (ञ) गुरमत्र-फो०-२७-२८ । (ट) परम तत मत्र फो०-२८ । (ठ) बालक को मत्र, फो०-२८ । (ड) गुणेश गावत्री, फो०-२८ । (ढ) निरजण गावत्री, फो०-२८ । (ए) गाइत्री, फो० २८-२९ । (त) साखी

जाम्बोजी, (२९ से ३५ फी० तक) — (१) दिलमां दामम बीन्गे माघो मोधिरणी ॥ प्रदेसी सगारी, अनात कृत—१० पक्तियाँ, (२) जीव क काज जमल जाडय ॥ कीज गुर पुरमाइ मरी भाइयो, बेसोजी कृत, १२ पक्तियाँ, (३) भागो गु लो गु गयतो देव ॥ जहक गु ए न लाभ छव, योल्होजी कृत, २२ पक्तियाँ, (४) राइया जुगदातार ॥ पाणी मु पीड करणां—सिधदास कृत, २० पक्तियाँ, (५) सिक्को ओमनि को राव ॥ माइ राजा मय जपिय, सुमसबोन कृत—१९ पक्तियाँ । साखी छदा की — (६) रे मन गीटा लोभ पदटा—अनात कृत—४ छंद, (७) रे मन मरा न करि मुक्करा—बेसोजी कृत, ८ छंद, (८) रे गुर भाइ मानु विमन सगाइ—सुरजनजी कृत—छंद ८, (९) रे विगजारा न करि पमारा, भीषराज—छंद ४ । (१०) कलिडुग तीरथ थापियो । भाग परागति पावीयो, रायचंद कृत—४ छंद । (११) श्री निज तीरथ तालयो, बेसोजी कृत—छंद सत्या—४ । (१२) गुर क कभय जुत्या मेरा बाबा ॥ जाह का हरिया भाग, ऊदोजी कृत, छंद ४ । (१३) गुर पुरी दातार ॥ म्हे छा यारा मगता—ऊदोजी कृत, छंद ५ । (१४) मी तु मांहेरो सांमै स पीहर सिव रियां—ऊदोजी कृत, छंद ७ । (१५) ओह गुर आया जाभराजदव, ऊदोजी कृत, छंद ५ । (१६) बाज बाज र मदनिया—ऊदोजी कृत—छंद—४ । (१७) बाया ता मोमिली रतन मरीखी, ऊदोजी कृत—छंद—५ । (१८) बाबा सामत्य ज छ बागड दस, बील्होजी कृत, छंद—५ । यह फी० ५५० पर पुन आरम्भ होकर पुरी हुई है (पहा केवल ऊपर की पक्ति मात्र ही लिखी गई है) । फोलियो ३५ का दायाँ पत्र खाली है । यह तक की रचनाएँ एक हाथ की लिखावट में हैं । (य) गृण श्री रामरासो—भाषोदान दधवाडिया कृत—फी० ३६ मे ७० । (विशेष—३६ वें फोलियो के दाएँ पृष्ठ पर इसके १९ छंद हैं, पश्चात् दाएँ पृष्ठ पर छंद सख्या ३ से आरम्भ होती है । इन १९ छंदों और दूसरे पृष्ठ के ३ छंदों के बीच सीधा कोई सन्ध या तारतम्य नहीं चलता प्रतीत होता । हो सकता है जिन्द बचवाते समय एकाध पत्र या फोलियो ब्रूल से टूट गए हों) । इती श्री रामरासो मानवदास धधवाडीयारो कह्यो संपूरण समाप्ता ॥ रासो जस श्री राम रस ॥ वदियो निगम वपाण ॥ कथित माधवदास कवि ॥ लिपि मुपात्र मुजाण ॥३॥ प्रथाग्रय सहस दोइ २००० ॥ (द) श्री मद्द भगवदगीता का संस्कृत श्लोको सहित दोहे छंद से भाषानुवाद । अनुवादक—नाजर आनन्दराम । हरजी बलिहाल द्वारा सवत १८२८ में लिपिबद्ध । फोलियो ७० से ११० तक । पढ़ते संस्कृत श्लोक और बाद में उसी का भाषानुवाद दोना में किया है ।

अन्त—करत कहू चुइयो जु कवि । लेपक लिप्यो जु मूल ।

नाजर आनन्दराम सब । कौयो सोष लय मूल ॥ १ ॥ समत १८२८ रा वर्षे शाके १६९३ प्रवतमान । मामोनममास कृष्ण पक्ष आनाद दुतीय वत् २ वार शनीस्वर ॥ लिपीकृत हरजी बलिहाल ग्राम नूडावास मध्य काहा जाली घर ॥ प्रथ गीता पुस्तक जोइनी अनोपराय र मा मू लिमीक्षी ॥ ॥ (ध) गोपीचंद

चरित्र बगवत बोध ग्रन्थ, रचयिता रज्जवजी के शिष्य घेमदास । छन्द मध्या-१५३ ।
 (फोलियो-११० स ११७), पक्ति प्रतिपृष्ठ ३०-३२ । (न) भगवत भाषा हरिवल्लभ
 कृत । भागवत के दोहे चौपाइया म हिंदी मे भावानुवाद । (फोलियो ११७ स ५५०
 तक) यह तीन भिन्न हाथा की लिखावट म है । कुन दगम् स्वघ के ३९ व अन्ध्याय
 तक का अनुवाद है । अन् हरिवल्लभ ह सग हूतो प्रभू सेवा के हत ॥ राजा कछु
 समझी नहीं मन म भयो अचेत ॥ ४६ ॥ २५५८ ॥ इति श्री भागवते दगम
 स्वघे हरिवल्लभ भाषाकृते एकोन पचासतमोऽध्याय ॥ ४९ ॥ २५५८ ॥ पुरवाद्ध
 संपूरण समाप्त पुरण ॥ (प) साखिया (फोलियो ५५० से ५५५)-१५ साखिया ।
 (पहले की २४ तथा १५ ये, कुल ३९ साखिया है) प्रतिपृष्ठ म ३४ से ३६ पवतिया ।
 (१) बावो साभल्य ज छ वागड देस, बील्होजी कृत, छन्द-५ । (२) बाव आपि लियो
 धवनार । । साम्य सभरियलि आखियो, केसौजी कृत-छन्द-५ । (३) बावो मिलीयो
 छ ल भुवण तार जोति विराज निज थला-सुरजनजी कृत, छन्द-५ । (३) बावो
 विसनो विसन भणित, दामोजी कृत, छन्द-५ । (५) साधो सिवरो नीरजण हार ।
 पारवग्भ पहली नऊ, केसौजी कृत छन्द-५ । (६) सभरि आयो साम्य । सु चीयारा
 माचो धणी, लघमणदास कृत-छन्द-५ । (७) बावो तेतीसा प्रतपाल, गोकल कृत,
 छन्द-५ । (८) सिवरा मिरजण हार-॥ भाभेसर जवा धणी-केसौजी कृत,-छन्द-
 ४ । (९) जवडा जप्य जगदीस । भाभेसर जीवा धणी-केसौजी कृत-छन्द-४ ।
 (१०) मील पद्यम र देसि । हीवर तुरी पलाहिमी-केसौजी कृत-छन्द-४ । (११)
 पनराम अदतार लीयो । अठाम्य नीम अठोतर-सुरजनजी कृत-छन्द-४ । (१२)
 साम्य सिधाय्यो चीनत कीयो । पनरसरि तिराणवें-रायचद कृत- छन्द-४ । राग
 घनासी सापी कणाकी-(१३) दीने जागो दीन जागो । ओह गुर परगट आयो,
 ऊदोजी कृत-१६ पवतिया । (१४) जीवलाजी घय महरति घय सुबेला । गुर
 भाभेसर आयो-नानग कृत, १६ पवतिया । (१५) हम र दसीया होजी । ओ दमडो
 वीडाली (अपूरण), ऊदोजी कृत । (फ) सच अपरी वीगतावली, बील्होजी कृत, छन्द
 मध्या-८७ । (फो०-५५५-५५६) । (व) कया दूणपुर की, बील्होजी कृत छन्द-६० ।
 (फो० ५५६-५५८) । (भ) कया उदा अतली की, केसौजी कृत-७७ छन्द-(फो०-
 ५५८-५६१) । (म) कया सहसा जोयाणी की, केसौजी कृत, छ० स०-१०५ । (फो०
 ५६१-५६४) । (य) कया पुलहाजी की, बील्होजी कृत-छन्द सख्या-२५ (फो०-५६४-
 ५६५) । (र) कया बाललीला की, केसौजी कृत, छन्द सख्या-६१ । (फो०-५६५-
 ५६७) । (ल) कया प्रमचरी (तथा कया चेतन), सुरजनजी कृत-छन्द सख्या-११५ ।
 (फो०-५६७-५७१) । (फो० ५७१ से) —

जन सुरजन की बीनती ॥ अज्या तिघ सहाय ॥

पुर गुर की पु-हैले ॥ सरण घठा आय ॥ ११४

भनसा बाचा करमना ॥ सुणी प्रातम साय

जन सुरजन की बीनती ॥ बाने की पन राय ॥ ११५ ॥

कथा संपूर्ण समापिता ॥ ॥ सवत ॥ १७८८ ॥ ॥

(ब) विष्णु पजर स्तोत्र (फो० ५७१-५७२) (मस्तूत म)

आदि-श्री विष्णुजी सत्य ॥ तिपतु पहलाद चिरत ॥ । राग मार ॥

दोहा ॥ नारायण पहली नऊ स्वामी सरय सुजाण ॥

आदि भगति कहस्यो कथा पहलाद चिरत परयाण ॥ १ ॥

॥ ओपई ॥ पहलाद चिरत परयाण पय पू ॥ विधि मू यात ययाणो ॥

यात बहु सांभलियो स्वामी ॥ मो मति सारे जाणो ॥ २ ॥

अ-न-इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इन्द्र नारत् सवाद विष्णु पजर स्तान सपुण । । श्री हरे नम ॥ श्री मंगलमस्तु ॥

६९ कथा ससे जोपाणी की, बेसोजी वृत । छंद सत्या-१०५ । पत्र सख्या-५ । देश कागज । आकार-९ × ४ इंच । हागिया-दाएँ, वाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । साधु हरकिसनजी के गिप्य परमराम द्वारा सवत् १८७९ म तिपिवद । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत रणछोडदासजी, धायूणी जागा, जाभा ।

आवि-श्री विष्णुजी ॥ सत्य सहा तिप्यते कथा सस जोपाणी की । राग हसो ॥

॥ दोहा ॥ निरहारी पहली नऊ । सतगुर स्याम सुजाण ॥

येक सत निवाजयो सांमजी । बाइक कर वपाण ॥ १ ॥

अ-न-इण करणी बेसो कहै ॥ आवगवण न होय ॥

जसो जाणी तसो बही ॥ जोडी कथा सपूण होय ॥ १०५ ॥ इति श्री कथा सस जोपाणी की सपूण भवत् ॥ तिप्यते साध श्री हरकिसनजी का गिप्य परम-राम ॥ समत १८७९ वप मित कार्तिव यदि । १४ वार मंगलवार ॥ गाव सोहावत मधे ॥ श्री ॥

७० गोकुलजी के छंद । पत्र सख्या ८ । देश कागज । यत्र तत्र खडित । आकार-९ × ४ इंच । हागिया दाएँ वाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-साधारणत ३४-३६ । श्री परमराम द्वारा सवत् १८७९ म लिपिवद । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत रणछोडदासजी, धायूणी जागा, जाभा । इसम गोकुलजी की ये दो रचनाएँ हैं -(क) ओतार की अस्तुति-छंद सख्या-४५ । (ख) इदव छंद, छंद सख्या-३२ ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य ॥ तिप्यते ओतार की अस्तुति ॥ गोकुलजी क कथे छंद ॥

॥ दोहा ॥ रिषपति सिधपति सोलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

पति दाता गोविंद सुमरि ॥ गोकुल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अत-रह्या बाकी तका बचन पाली बिसन किरपा करो काज सारी ।

दास गोकुल कहै बास पुरो अल्प ॥ ऊबर आदि मुरय ओट चारी ॥ २ ॥ इति श्री गोकुलजी का छंद सपूण ॥ सवत १८७९ मिति कार्तिक सुदि १५ वार

वसन्त ॥ लिपते माघ श्री हरिकिसनजी रा मिप परमराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥ १ ॥

७१ पत्र सख्या-३६ । देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्कि-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्कि-३४-३६ । माधु श्री हरिकिसनजी के चले फरमरामजी द्वारा सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महान रणछोडदामजी, आधुणी जागा, जाम्भा । इसम अमग निम्नलिखित ९ रचनाएँ हैं —

(क) कथा दूणपुर की, बील्होजी कृत, छंद सख्या-६० । (ख) कथा चित्तौड की, केसौजी कृत, छंद सख्या-१२८ । (ग) कथा उदा अतली की, केसौजी कृत । छंद सख्या-७७ । (घ) कथा धरमचरी, सुरजनजी कृत-छंद सख्या-८० । (ङ) कथा झोरडा की, बील्होजी कृत, छंद सख्या-३२ । (च) बाल लीला, केसौजी कृत, छंद सख्या-६१ । (छ) कथा गुगलोए की, बील्होजी कृत । छंद सख्या-८६ । (ज) कथा लोहापागल की, केसौजी कृत । छंद सख्या-११८ । (झ) कथा मेडत की, केसौजी कृत । छंद सख्या-१६३ ।

आदि-श्री विष्णु जी ॥ सत्य सही । लिपते कथा दूणपुर की ॥ राग आमा ॥

॥ दोहा ॥ नवनि करू गुर आपण ॥ बहू चरण सुभाव ॥

भगता तारण भो हरण ॥ तीन लोक को राव ॥१॥

अत-॥ दोहा ॥ सतरासँ अर छिडोतर ॥ तियि नव मगलवार ॥

जिन केस की धोनती ॥ सतगुर पार उतार ॥१६३॥ इति श्री मेडत की कथा सपूर्ण ॥ सवत अठार म अठतरा मिति कार्तिक सुदि ७ वार वसपतवार ॥ लिपते माघ श्री हरिकिसनजी रा चला फरमराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥१॥

७२ कथा इसकदर की, केसौजी कृत, छंद सख्या-१९२ । पत्र सख्या-१०, देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । अक्षर-प्रति पक्कि-३३-३६ । फरमरामजी द्वारा अनुमानत सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महान रणछोडदामजी, आधुणी जागा, जाम्भा ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम लिपते कथा इसकदर की ॥ राग मोठि ॥ दोहा ॥

श्री पति पहली तिचरिय ॥ अलप अपार अनत ॥

ज्ञान गुरु जल बल रहै ॥ भव भाजन भगवत ॥१॥

अत-केस कथा कही कर जोडि ॥ आयागवणि चूकावी पोडि ॥

जो यह कथा सुण पित लाय ॥ सत कर मान सुरगे जाय ॥ १९२ ॥ इति श्री इसकदर की कथा सपूर्ण ॥ लिपते माघ परमराम ॥

७३ विष्णु चरित, ऊधोदास कृत । छंद सख्या-११० । पत्र सख्या-१०, मगिन के वन पतले कागज । चारो ओर से खडित । आकार-६ ५×८ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्कि-३२-३६ । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्ति-

स्थान-महत् रणछोडदासजी, श्रायूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ अथ विष्णु चरित लिप्यते ॥

चोपई ॥ श्री गुर सत घण सिर्नाऊ । अज्ञा होइ विष्णु जस गाऊ ॥

महा विष्णु के चरित अपारा । सुर नर मुनि जन लहे न परा ॥१॥

अत-सोरठा । हरि अवतार अनत ॥ अनत चरित अथगत तथा

गाव मुनि जन सत । विमल जस भव जल तिरण ॥१०॥ इति श्री विष्णु

चरित संपूर्ण ॥ ॥ ॥ श्री ॥ श्री श्री श्री

- ७४ परची, गोकलजी कृत, छन्द सख्या-३७, अत म २ ववित्त और है । पत्र सख्या-३ । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । देशी वागज । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३६ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत १८९८ । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत् रणछोडदासजी, श्रायूणी जागा, गाँव जाभा ।

आदि-श्री विष्णुव नम अथ परची लिपते ॥

सुपेण्यो स्वामो सोवनधार नमो निज नाय जको निराकार

नरापति निरथ कर मन राव पिछाण्यो दूद परस्या पाव १

अन्त-जपीयो जदि जाप रिद हरि एक क आयो अथ मोचण आप जल्ये

भण बड भूप सुण्यो सत्तार निरजण नाय उतारण पार ३७ इति परची संपूर्ण ॥

जम जुरा जीव जोपू नहो कोई ताक न सिक्क अवर अणि

अमर आनुपम आत्मा राव अतो जित आप हरि २॥ (ववित्त) । समत् १८९८

रा मिति दुतिक आसो वद १ सुकर

- ७५ गुटका । जित्द वधा । १२ इंच लम्ब देशी वागजो को माडकर वाच स सिला हुआ जिसके कई पत्र पृथक् है । जीण । आकार-६×४ ५ इंच । हाशिया-साधारणत - दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पानी गिरन से अनेक पत्रो पर स्याही फल गई है । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-सामान्यत -२० । सवत १७७९ से १८५२ तक लिपिरुद्ध । फोलियो या पृष्ठ सख्या नहीं है । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री मही रामजी धारणिया, मगरिया मडी । इसम उमग ये रचनाएँ हैं —(क) भ्रुचरित जन गोपाल कृत (अपूर्ण) । इति श्री भ्रुचरित संपूर्ण ॥ समत १८ ॥ ५२ ॥ तिय ॥ ११ वार गुकरवार ॥ लिपनु ॥ अजबो पूराणी ॥ चेतो गगारामजी को ॥ (ख) श्री माधोदानजी के सथोमे । छन्द सख्या-५ । (ग) पहलाद चरित, केसौजी कृत-अपूर्ण, छन्द सख्या १-१७ । (घ) पहलाद चित केसौजी कृत-छन्द सख्या-५९६ ॥ गुणिका-इति श्री पहलाद चरित समाप्तिता ॥ समत १८५२ ॥ विरये मितो-असाठ वद तीत्र ३ ॥ वार मुकरवार ॥ लिपनु अजबो पूराणी चेतो, गगारामजी को गाव जाभा माह भनगाव मभ पीपी छ जा ॥ श्री विमनजा मरय सही श्री रामजी सत्य मन् ॥ (ङ) अथ जडभरथ, जन गोपाल कृत । छन्द सख्या-१०३ । (च) हरिरस, ईसरदास कृत । छन्द सख्या-१६९ । समत १८५२ ॥ विरये मितो असाठ वद तीत्र

१३ ॥ वार सोमवार । (छ) छमछरी (मईकी) (सवत्सरी) (सवत १७०० से १०० साल) । (ज) गुराचार । समत १७७९ । अर्धे मती असाढ सुध १२ वार सोमवार । (झ) राह को विचार । (ञ) कया ध्रमचरी तथा कया चेतन, सुरजनजी कृत । छद सख्या-१०९ । (ट) गोत्राचार । (ठ) बसदर के नाम । अतिम पृष्ठ मूल से उलटा चिपका दिया गया है । (ड) ईश्वर-पावती सवाद रूप म-स्नान आदि का महत्व । (ढ) आदि वसावली (अपूर्णा)

आदि-॥ नीसान द्वारा बाजही ह्य हीसे हायी गाजही

अमराव सीत नावही बीत माप पावही ॥

कनक थार क्षारीया गडई कटोरी भारीया ॥

रूपाय हेमता करू रसोईदार सरप रू ॥३॥

अत-(ड)-से झाल भाला कुले विसन ॥ विसन थान थनतरे ॥

विसन सरबा सरप तरे ॥ आवो देयो सरबा सरबी की धर्णी ॥१॥

॥ आदि वसावली ॥ आहु अन + + + सिसटे न भवणे ॥ भव

७६ गूढका, फोलियो सख्या-६६६ । १२ इंच लम्बे देशी कागजों को मोडकर बीच से सिला और जिल्द बंधा हुआ । पत्राकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- साधारणतः-पीन इन्च । पविन-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-सामान्यतः-१३ । विभिन्न निपिकारा द्वारा सवत् १८३५ से १६०१ के बीच लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, आगूणी जागा, जाभा । इसमें ये रचनाएँ हैं - (क) आवाहन, (संस्कृत २ श्लोक) । (ख) विसरजन-(संस्कृत) छद-४ । (ग) रामाष्टक स्तोत्र, शंकराचार्य विरचित (संस्कृत) छद-८ । (घ) नव ग्रह पूजा, पुष्पिका में रक्षा नाम दिया गया है । (संस्कृत), छद सख्या-६ । इति रक्षा समाप्त समत ॥ १९०१ सुदि ७ श्री हरेनम (इस रचना के पश्चात् फोलियो सख्या पुनः १ से प्रारम्भ होती है) । (ङ) हरिभक्त जस रचयिता अग्रदास के शिष्य नरहरिदास । छद सख्या (४ दोहे + ३ छप्पय)=७ । (च) श्री राधे किष्ण री सगाई री महमा । छद सख्या-५२ । रचयिता भिवानीदास (?) रचनाकाल-(१८३५) काती सुदि ५ । (छ) नरसी मुहता री हुडी री महमा, रचयिता-जेठमल कायस्थ, छद सख्या-८४ । रचना काल, सवत १८२०, जेठ शुक्ल पक्ष-पंचमी, बुधनिवार । (ज) गीता का हरिबल्लभ कृत हिंदी में पद्यानुवाद । (झ) सनेह लीला (अपरनाम सनेह लीला भवर गीता), रचयिता जगमोहन, छद सख्या-१४१ । (ञ) प्रह्लाद चिरत, केशोजी कृत । छद सख्या-५६२ । (ट) ऊमाहो, धोलहोजी कृत । छद स०-२२ । (ठ) पतचो-आलमजी कृत । छ० स०-११ । (ड) हिंडोलणी-होरानद कृत । छ० स०-८ । (ढ) साखिया-विभिन्न विष्णोई कविया द्वारा रचित । (फोलियो-४४४ से ५८४) । भाखी सख्या-५८ । (ण) श्री नृसिंह स्तुति, ध्यान, नृसिंह मंत्र, कवच आदि (संस्कृत में) । (त) विष्णु शत नाम (विष्णु पुराण से) (संस्कृत में) । (थ) विष्णु बठाईस नाम (संस्कृत में) । (द) सप्त श्लोकी गीता (संस्कृत में) । (ध) चतुर श्लोकी भागवत (संस्कृत में)

(न) श्री शंकराचार्य विरचित-श्री कृष्णाष्टक (संस्कृत म) । (प) हरिनाम माला (संस्कृत म) । (फ) विष्णु पञ्चर स्तोत्र (ब्रह्माण्ड पुराण स) (संस्कृत म) । (ब) विष्णु लहरी-शंकराचार्य कृत (संस्कृत मे) (फोलियो ६११ तक) । (भ) उपाधरित्र-छन्द १२८ । रचयिता-अज्ञात । (म) जान राय लीला, गोसाई माधोदास रचित । छन्द ११७ । (य, विवाह, गणेशस्तोत्र, रक्षा (संस्कृत म) । (र) विवरस्य आदि । (ल) अस्तुति, (व) दगावतार । (स) मंगलाष्टक, (२९ छन्द) । (प) चौगुजो, (स) इन्द्र चौगुजो (फो० ६६६ तक) ।

आदि श्री गणेशायनम । वृष वाहन स्मा रढो सप्तजिह्वा हुतासन ॥

सातिक पणक चव अग्नि आवाह्याम्यह ॥ १ ॥

केगव पुडरोकास माधव मयसूदन ॥

लक्ष्मणो सहितो देव विष्णु आवाह्याम्यह ॥ २ ॥

इति आवाहन ॥ अतः-(फो० ६६६) अनेक अनेक नर पोजि पोजि रहीलो तो पण पारि कियो न पाईलो वर वयकावरदायक स्वामी सरण सुभदानक इति इदं षोडुगो सुभद २ समत १६०१ रा मितो असाठ सुदि ६ तिपी कृत्य श्री १०८ श्री वीरमदाम रो चेला दयाराम पठनारयी साधु श्री मावतरामजी

७७ गुटका । जोण । कइ पत्र अप्राप्य । दशो वागज । आकार-६×४५ इंच । हागिया-दागें, बागें-आधा इंच । दो हाया की लिखावट म । लिपिकाल-सवत १८२० । लिपि-सामायत पाठ्य । बीच की सिलाई तक पूर्वांड के फोलिया की मन्दा १२६ दी हुई है । इतनी मन्दा उत्तरांड की भी होनी चाहिए किंतु नहीं है । पत्रि-प्रति पृष्ठ-१३, १४ तथा १०-११ । अक्षर-प्रति पत्रि-क्रमशः २१-२२ तथा १७-२० । प्राप्तिस्थान-महत-शैलदासी, ग्राम्णो जागा, जामा । मम प रचनाएँ हैं — (क) नामदेवजी की बाणो । १८ मन्दा-७५ । राग टोडी, गुड और गोरान्त म गेय । (ग) फुटकर पद-६, रामरसिक-१, हरिबस-१, हरिदास-१, हितहरिबस-१, कबीर-२ । (ग) हरचन्द सत प्रथ-रचयिता- ध्यानदास । छन्द सन्दा-२६२ । गमन १८२० वये मितो वमाप वन्ति तियि १४ वार मगल गाव गुण मधि लिपनु दगवत दोय जणा रा छ वाहा हरजी रा चेला नायाजी वा दामेजी वा छ, जो ॥ (घ) वन्ति गहक ववित्त-मन्दा-११ । (ङ) नातकेत पुराण बालाबोप-१८ पन्पाप । गद्य म । (च) फुटकर छन्द-समझये-७ बेसोजी कृत, तथा दोहे ८, अज्ञान रचित । (छ) मूम माया सवाद-बेसोजी कृत-१२ छन्द । (ज) फुटकर छन्द-५, बेसोजी कृत-(न) ववित्त की विगत्य । सुरजनजी कृत । ववित्त-मन्दा-२६ । गमन १८२० ॥ वय मितो अगाड मुनि तिय ॥ ७ ॥ वार मनीमरवार । लिपनु प्रेमनाम नामाजा वा मय सुवतार दुभाधारी वा पात्र मय ॥ गाव गुण मध सुवता गागा र पर तिया ॥ ममन हरजी प्रेमनाम दोयाराछ । (ञ) राम रछया-रामानन्दजी कृत-(टिप्पणी म) । (७) छव सरया-८, सुरजनजी कृत । (८) सुरजनजी के ववित्त मन्दा-१५ । (९) नरयराजी वा श्लोक मूली वा समये वा (मन्दा-

हिंदी दोना म) । (ड) सवइये, सख्या-६, सुंदरदासजी कृत । (ण) एकादसी माहा-
तम कथा-(गद्य म)

आदि-अय नामदेवजी की बाणी माडी प्रथम राग टोडी ॥

हरि नाम हीरा हरि नाव हीरा । हरि नाव कित कटें सब पीरा के टेक

हरि नाव जाती हरि नाव पाती । हरि नाव सकल जीवन मे ऋती ॥ १ ॥

हरि नाव सकल सुपन की रासी ॥ हर्नांव काटे जम की पासी ॥ २ ॥

हरि नाव सकल भजन ततसार ॥ हरि नाव नामदेव उतरे पार ॥ ३ ॥ १ ॥

अत-अजोव्या नगर परस चीत्रकुट श्रीपती रामेश्वर को दरमण कर श्री लीछमनजी
को दरमण कर और सब तीय कीया पुन होय कया दान कीया पुय होय श्री
सालगराम मेवन कर ॥ ११ के व्रत पुय सब तीय कीया पुय होय ११ सु ईषको
पुय है मुक्कि को सामो कोही ११ ।

- ७८ गुटका । जीण, दीमक खाया हुआ । कतिपय पत्र अप्राप्य तथा बीच म खाली भी
हैं । देशी कागज । आकार-४×३ तथा ४ ५×३ इ च । हातिया-दाएँ, बाएँ-
आधे से पीन इन्च । फोलियो सख्या एक क्रम मे न होकर अलग अलग रूप से (क्रमश
६५, १२, २१८, और ८६) ४११ तक है । अधिकांश गुटका एक ही हाथ की लिखा-
वट में, किन्तु अन्तिम कई रचनाएँ दो भिन्न हस्तलिपियों में हैं । लिपिकाल-सबत्
१८६६ से १६०५ तक, अत की (त्र) से (इ) तक रचनाओं का सं० १६२३ । लिपि-
प्राय पाठय । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-५-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-८-१० । प्राप्तिस्थान-
श्री विष्णोई मंदिर, कोलायत । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) हरजस, सख्या-४ ।
अज्ञात कृत-३ तथा अन्तिम काल कृत । कई पत्र अप्राप्य । (ख) सोल सुपना रौ विवरो-
रचयिता-अज्ञात । (ग) हरजस १, अ सा गुर हमारा अबधु हाडू तुरक दोया स यारा ।
छंद-५ । सुरजनजी कृत । (घ) कका छनीसी-ऊषोदास कृत । छंद सख्या-३७ ।
(ङ) भगलाष्टक-पेसौजी कृत । छंद सख्या-२६ । (च) भाडली पुराण-गद्य म ।
रच०-अज्ञात । इति श्री भाडली पुराणे वार माम तीन स साठ दिनारा आरिष सपूरणम् ।
(छ) धुज पु दो रौ विचार-असाढ उनता सावण लागता पुयों जिण रौ नाम धुज
पुमू कहोज । ये सब फोलियो-६५ तक हैं । इसके पश्चात ४० पत्र खाली हैं तथा
आगे की फोलियो सख्या पुन १ से आरम्भ हुई है । (ज) दस अवतार, छंद-१० ।
रचयिता-अज्ञात । (झ) कवित्त-१ । (ञ) गोत्राचार । (ट) आदि बसावली, (ठ)
बसदर के २५ नाम, (ड) जभ स्तुति, गोकलजी रचित । छंद सख्या ४५ । (ड)
जम्भाष्टक, गोविंदरामजी कृत, संस्कृत म । (ण) इ दब छंद-सख्या-३२, गोवलजी
रचित । फो०-४३ से ४५ अप्राप्य । (त) गायत्री, संस्कृत म, सख्या-२५ । नाम ये
हैं—ब्रह्म, राम, विष्णु, रुद्र, लक्ष्मी, नसिंह, लक्ष्मण, कृष्ण, गोपाल, परगुराम,
तुलसी, हनुमान, गरुड, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चंद्र, गुरु, पवन, हंस,
गौरी, देवी एव अन्नग । समत् १८६६ रा मितरी फाल्गुण वदि ११ पठनार्थी श्री वीर-
मदामजी लिपीकृत्वा दयाराम । आगे (घ) से (घ) तक सभी रचनाएँ संस्कृत म हैं—

(घ) श्री विष्णु पुराणे शत नाम । (द) विष्णु अठाईस नाम स्तोत्र । (ध) एक श्लोकी रामायण । (न) एक श्लोकी भागवत । (प) एक श्लोकी महाभारत । (फ) सप्त श्लोकी गीता । (ब) चतुश्लोकी भागवत । (भ) हरिनाम माला । (म) सूप द्वा-
नाम । (य) भ्रमवेपाक गीता । (र) राम रक्षा । (ल) सनेह लीला भवर गीता, जय मोहन रचित । छ० स०-१३० । समत १८९९ रा मिति ज्येष्ठ सुनि १४ । (व) अमावस्या महात्म कथा-मयाराम रचित । छ० स०-१४५ (फो० सख्या-१६० से २१८ तक, रचना के ७२ छंद पूरे होते हैं, परन्तु फोलियो सख्या नहीं दी हुई है) । (स) एकादशी महात्म (गद्य म) । (प) धू चरित्र-जन गोपाल कृत । छ० स०-२२२ । (स) एक श्लोकी गीता, (संस्कृत) । (ह) विष्णु पजर स्तोत्र (संस्कृत) । सवत १९०६ रा मिति महा सुदि ३ वार शनिसर । (क्ष) विष्णु सहस्र नाम (संस्कृत) (फो० १५-८६, परन्तु सख्या नहीं दी गई है) । (त्र) गभ चेतावणी-रामचरण कृत-छन्द स० १२३ । समत १९२३ रा मिति श्रावण सुद १४ वार सनीस । (न) दोन दरवेश का एक छन्द-तथा राम रामेति रामेति-श्लोक । (घ) २९ घम की आपड़ी-तीन दिन सूतक पाच रनवती चारो । (आ) अवतारों की महिमा-१ छन्द, अप्रदास कृत । (इ) फुटकर छंद, अज्ञात कृत । (लिपि-पाठ्य नहीं है)
आदि-कौ चल्या सीता लोनी लार

य धन में हम रणयास में कौन सहे तिर भार ३

रामधर त्यागी नही हम लीयो वराग

जो तुमको सग ल चल पड जोग में दाग ४

कर डोवी गल मूढो घरयो भिपारी भेष

नाम निरजन कारण गुरु गोरय दोया उपदेग ५ ॥ ३ ॥ (फोलियो-२)

अत-ज ज मीन वाराह कमठ नरहर बल बावन ।

परसरांम रुपुवीर कृष्ण श्रित जु पावन ।

सुप नीकलकी ध्यास पिरयुय रहस मत्र ।

जग्य रस ह्योव श्वरधेन धनत्र ।

बदरो पतक पल बत सनकादिक कदण करो ।

धोबिस रूप लिला रघो श्री अमरदास उर पद धरो । (आ-रचना से)

७९ प्रह्लाद बिरत, ऊपोजी कृत । छन्द मन्त्रा-३४६ । गूढका । ऊपर स मित्ता हुमा ।

पत्र मन्त्रा-४८ (फोलियो ८७) । दगी बागज । चिकनार्द तगा हुमा, मटरा वाग्नी ।

भाहार-५ ५×८५ च । हागिमा-मिनार्द की ओर पीन द्वा, किनाम की ओर

१ च । पति-प्रति कूट-११ । धार-प्रति पति-१६ । मवन १६४१ म प्रागमुग

विना, नगीतवाट द्वारा विविध । विवि-पाठ्य । प्रातिस्थान-पानागर मावगे ।

आदि-छों श्री गणेशपुनम धय प्रह्लाद बिरत लिगत

॥ योग ॥ प्रथम बड गुरु देव हू ॥ कुनिपे बडु सब साद ॥

विनापे बडु महा विष्णु हू ॥ कटु बिरत प्रह्लाद ॥१॥

अन्त-सोरठा-अधवणा सवत् जाण ठार से अडसठ भए

सत करो परमाण प्रह्लाद चिरत वणन करयो ३४७ (३४६) इति श्री ऊजोजी कृत भाषाया प्रह्लाद चिरत मपूणम् १ भवत १६४१ मित्ती चत गुदि ८ वार वक्ष्यत के दिन लिप्यत प्राणगुय विष्णोई दिनदार वा वेटा नगीन मध्ये रहन वाला उं हरि तत मत १ * ।

- ८० रश्मणी मगल रचयिता-रामलला । विभिन्न राग-गगिनिया के अतगत छंद सग्या पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-१७, देगी कागज । आकार-९×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । लिपि-कार-अनात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्ति स्थान-लालामर सायरी ।

आदि-श्री गणेशायनम राग देवगरी

निगम जाकों नित्य गाव ध्यान गिव उर आनहीं

आदि अनादि परिव्रह्मजु के भवत मोक् जानही १

अ-न-राज करो नागरी द्वारिका भवत बछल श्री गोपाल

रामलला जन गाव मगल कृष्ण भज जन होय निहाल ८ इति श्री रामलला कृत रश्मणी मगल सपूणम् १११ ।

- ८१ पोथी, जिल्द बधी (ब०-प्रति) । यत्र-तत्र खडित । एकाध पत्र-अप्राप्य । अपक्षा-कृत मोटा देगी कागज । पत्र सख्या-१५२ । आकार-१०×७ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । तीन लिपिकारो द्वारा भवत १८३२ से १८३६ तक लिपिवद्ध । लिपि-सामायत -पाठ्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-(क) हरजी लिखित रचनाआ म २३-२९, (ख) तुलछीदास लिखित सवदवाणी म-३१ तथा (ग) ध्यानदास लिखित रचनाआ म-२४-२५ । अक्षर-प्रति पक्ति-अनात (क) १८-२०, (ख) २४-२५ तथा (ग) २३-२५ । गाव मुकाम के श्री बदरीराम थापन की प्रति होने से इसका नाम ब०-प्रति रखा गया है । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) औतार पात का वषाण, बील्होजी कृत । छंद सख्या-१४० । (ख) मूगलीय की कथा, बील्होजी कृत । छंद सख्या-८६ । (प्रथम रचना का अन्तिम और दूसरी का आरम्भ का एक पना भूत में गायद जिल्द बाधते समय, कथा जेमलमेर की के बीच म लगा हुआ है) । (ग) सत्र अपरो विगतावली, बील्होजी कृत । छंद सख्या-४८ । (घ) कथा डूणपुर की, बील्होजी कृत । छंद सख्या-६० । (ङ) कथा जेमलमेर की, बील्होजी कृत । छंद सख्या-८६ । (च) कथा शोरडा की, बील्होजी कृत । छंद सख्या-३३ । (छ) कथा ऊदा अतली की, केसौजी कृत । छंद सख्या ७७ । (ज) कथा सप्त जोषाणी की, केसौदासजी कृत । छंद सख्या-१०६ । (झ) कथा चीतोड की, केसौदासजी कृत । छंद सख्या-१३० । (ञ) कथा पुलहेजी की, बील्होजी कृत । छंद सख्या-२५ । (ट) कथा असकदर पानिसाह की, केसौदासजी कृत । छंद सख्या-१६१ । (ठ) कथा बाल लीला, केसौदासजी कृत । छंद सख्या-६१ । (ड) कथा भ्रमचरो तथा कथा चेतन,

गुरजनराजजी का । ६२ गणना-१११ । (६) स्वान मन्त्रालय, गुरजनराजजी का ।
 ६२ गणना-११६ । गणना १२३३ विना जेड म-१३ विष्णो मन्त्रालय हरजी विष्णो
 पर अतिव गणनाजी सागाजा का धरा पोषा मार जगान्नीदा मन्त्रे विष्णो मन्त्र
 मन्त्रु कर्ताग ॥

कथा चतुरदश धी विष्णो अरज कर् कर् धारि ।

पद्य कवि अरज जो हृष । मन्त्रे हवीर गुपारी ॥१॥

(ग), पहाड विरत, कर्गोरामजी का । ६२ गणना- ६२ । (ग) धी वाचक भास्वो
 का (सबदवाणी) पद्य प्रथम मन्त्र । मन्त्र गणना-११७ ।

आदि-श्री परमात्माम । धी गणनात्म ॥ विष्णो धी वाचक भास्वो का ॥

वाच कर्ष जल रक्ष्या ॥ सबद जगाया बीर ॥

भाभण दू परथा रिया ॥ अता अगा अचरज बीर ॥ १ ॥

जो बुझ्या सोई कल्या ॥ अतथ सागाया मेव ॥

धोवा साथ गमाईया ॥ जदि सबद कल्या साभैव ॥ २ ॥

गव ॥ गर वाचन गुर धीर विष्णो । गर गुप्त धरम यगर्णी ॥

अन-भलीयो होइ स भल बुधि आय ॥ बुधिया दुटी कयावे ॥ ११७ ॥ मन्त्र ।

१८३३ ॥ निष ताज भाचो मन्त्र ॥ गणना गार मध्य विष्णो । यगन मागर स ॥

विष्णोवन्तू रागा अनाज भाभायया ॥ मन्त्र भास्वो का गुरुराग ॥ विष्णोवन्तू सुनीयो

दाम ॥ भाभायया कर्गोरामजी का धरा ॥ कर्गोरामजा कानागाम ॥ बाबाजा गुर

जी का निष ॥ गुरजा पराजजी का निष । पराजजी जगर्णी । भाग बाबा भाभाजा

ताई पावो छ मू ह्म जोगन भा नाटा । विष्णो गुणाविष्णो की निष्णि या निमी

विष्णो छ यथाथ प्रिति उतारी है ॥ मन्त्र । दाहा ॥ कवि । धरिल जो बुध या

सोई ॥ (प) कथत गुरजनजी का कल्या, सख्या-३२९ । गणना १८३९ का कमान

माम तिथो ५ देवा गुरवार निषत यदगव ॥ ध्यानात्स दुगाती मध्य जया प्रति तथा

निषत ॥ वाच विचार तिष्णनु राम गम । (१) होय बी पाड । (प) आदि कसावली ।

(न) विवरस । (प) कलस पापन । (क) पाहल । (व) धीभूगी धीवाहकी । (म) पाहलि

(पुन)

आदि-नी गणोमायम धा मारदायम श्री विष्णोजी सत सही ॥ निषतु घोठार

पात का यपोण

॥ दुहा ॥ नवनि कर गुर आपण ॥ नउ निरमल भाय ।

कर जोडे बडू धरण ॥ सीस नवाय नवाय ॥ १ ॥

अत-मछ की पाहलि ॥ कछ की पाहली ॥ धारा की पाहली ॥ नारिंसिध की

पाहलि ॥ बावन की पाहलि करसराम की पाहलि राम लक्षमण की पाहलि ।

कनकी पाहलि बुध की पाहलि निषलकी पाहलि ॥

८२ सबद वाणी । सबद सख्या-१२०, विना प्रसंग । गुटवा, कोलियो सख्या-६६ ।

मशीन के बने कागज । आकार-६ २५ × ४ इंच । हाणिवा-दाएँ बाएँ-भाये से

पौन इ च । पक्वि-प्रति पृष्ठ-० । अक्षर-प्रति पक्वि-१९-२० । त्रिपि-मुवाच्य ।
विहारोदान द्वारा सवत् १९३० म त्रिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपामर सायरी ।
आदि-श्री जभगुरवे नम । अथ गद्द वाणी श्री जाभजी की लिपते ॥

गुर चीहो गुर चीह पिरोहित । गुर मुख धम बयाणी ।

अत-भलीया होय तो भल दुध आवे ॥ दुरीया दुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री गद्द
वाणी जाभजी की सपूणम् मवत ॥ १९३० मिति फागन यदि २ वार मगन
कु त्रिपिबद्ध माधु विष्णुनामजी वा विष्णु विहागीनाम न ॥

८३ सवदवाणी । सवद सख्या-१२०, विना प्रमग । गुटका । फोलियो सख्या-७६ ।
मगीन के वन कागज । आकार-६×३ ७५ इ च । हागिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च ।
पक्वि-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्वि-१६ । सवत् १९४१ म प्राणमुख विष्णु देह
द्वारा लिपिबद्ध । त्रिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-पीपामर सायरी ।

आदि-श्री गणगायनम ॥ अथ गद्दवाणी श्री जाभजी लिपते ।

ओं गुर ची हों गुरचीह पिरोहित । गुर मुख धम बयाणी ॥

अत-भलीयो होय सो भल दुद्धि आवे ॥ दुरीयो दुरी कमाव १२० ॥ इति श्री
गद्द वाणी श्री जाभजी की सपूणम् ॥ १ ॥ मवत १९४१ मिति जेष्ठ वती २
वार मगलवार कू लिप्यत प्राणगुण विष्णोइ नगीन वाला । वेटा रिलदार
का ॥ ओ० हरि तत मत

८४ सवदवाणी । सवद-सख्या-१२० । विना प्रमग । गुटका । फोलियो सख्या १०५ ।
मगीन के वन कागज । आकार-६ २५×४ इ च । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च ।
पक्वि-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्वि-१४-१५ । त्रिपि-मुवाच्य । सवत् १९६७
म स्वामी साह्वरामजा द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपामर सायरी ।

आदि-श्री गणगायनम ॥ श्री जाभजी जभगुण्योनम ॥ ० ॥ अथ गद्द वाणी श्री
जाभजी की लिपते ॥ ओं गुर चीहों गुर चीह पिरोहित गुर मुख धरम बयाणी ।

अत-भलीया होय सो भली युधि आवे दुरिया दुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री मज्जम
प्रणीता गद्द वाणी सम्पूणम् ॥ सवत् १९६७ मिति फाल्गुण यदि ६ रविवार को
नगीना वटा मन्दि श्री १०८ श्री स्वामी रामानन्दजी का मिष्य स्वामी साह्वराम
लिखतम

दोहा-हाथ पाव कर बूबडी नीच मुख अह नन

इन कष्टा पोयी लिखी तुम नीके रखियो सैन १

८५ प्रह्लाद चिरत-ऊदोजी कृत । छन्द सख्या-३५० । गुटका । फोलियो सख्या-३८ ।
मगीन के वन हल्के पाले रंग के कागज । आकार-६ २५×४ ५० इ च । हागिया-
दाएँ, बाएँ-आधा इ च । पक्वि-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्वि-२०-२० । मवत
१९५८ म मतोपनामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपामर
सायरी ।

आदि-श्री गणगायनम अथ प्रह्लाद चिरत लिपते ॥

दोहा-प्रथम बट्ट गुरुदेव कु बुतिये यदु सब साध

त्रितिये यदु महा विष्ण कु कट्ट चरित प्रह्लाद

अत-समत अठारे स अडसठा माध सुकल पक्ष जान

तियौ तोज सम्पूण नयो प्रह्लाद चरित आध्या ३५० इति श्री ३० पा० प्रह्लाद चरित समाप्तोय समत १६५८ मीती माघ वदी १३ लिपीवृत्त साध श्री १०८ बालकदासजी का शिष्य सतोयदास प० स्वय ॥

८६ गूढका । फोलियो सख्या-८२ । मशीन के बने वागज । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च, पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति १८-१६ । सवत १६३९ म प्राणमुस विष्णोई द्वारा नगीने म लिपिवद्ध । तिपि-मुपाठ्य । प्राप्ति-स्थान-श्री कीरमरामजी थापन, मुकाम । इसमे दो रचनाएँ हैं —(क) विष्णु सख नाम । (ख) सयदवाणी । सवत सख्या-१२०, विना प्रसंग ।

आदि-उ श्री गणेशायनम ॥ उ यस्य स्मरण मात्रेण जन्म सत्तार बधनात् ॥

अन्त-भलीयो होय सो भल बुधि आव ॥ बुरीया बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री गव बाणी भावजी की सपूगम् ॥ सवत ॥ १६३९ ॥ मीती थाव गुदि ३ वार सोमर क नि लिपिते पिरानमुष विष्णोई ॥ नगीन मध्ये ॥ श्रीं तत सत् ॥

८७ प्रह्लाद चरित, केमोदासजी वृत्त । छन्द सख्या-५६५ । पत्र सख्या-९६ । मत्र तत्र खडित और जीण । दगी वागज । आकार-६ ५×३ २५ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च, पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१८-१६ । सवत १८८७ म श्री दमाराम द्वारा लिपिवद्ध । तिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-श्री भीवाराम गायणा, सदलपुर ।

आदि-श्री गणेशायनम श्री गुरुभ्यानम अथ प्रह्लाद चरित ॥ राग मार ॥

दोहा-नारायण पहली नऊ । सांमी सब सुजाण ।

आद भवत कहसु कया । पह्लाद चरित परवाण १ ॥

अत-मैं बावण पकडयो दीन कौ ॥ सतगुरु करे सहाय

पाच सात नव पाहरां ॥ अक्क मोह मिलाय ॥ ५९५ ॥ इति श्री पह्लाद चरित सम्पूगम् ॥ १ समत ॥ १ १८८७ ॥ रा वपे मित्ती पौह बदि । ३ ॥ वार गुरुवध्रे ॥ तिपी वृत्त माध श्री बाबाजी था बाबाजी १०८ श्री बीरमरामजी रा तस्मिप दायाराम लिपित गाव सावणाऊ मध्ये टांणी घतरवाता री बगिचो मध ।

८८ (हरि) प्रह्लाद चरित, साह्यरामजी राहड वृत्त । छन्द सख्या ६८ । पत्र सख्या-१७ । दगा वागज । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ २५ इंच, पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८ । सवत १६४४ मे साह्यरामजी द्वारा लिपिवद्ध । तिपि-गाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकतराम विष्णुत्त विष्णोई, दुनारा बानी ।

आदि-अम गुरु कृपा करो ॥ मम बुधि गुन गन देहु ॥

आद भविन गुन अमित अति ॥ हृद परे रहु सहेहु ॥ १ ॥

अन-शाहवरांम हा पुस्त के । पग दाशिन के दाग

जाभ उपागक मम कया । सुन हिय करहि विलास ॥ ६८ ॥ समत १६४४ रा वये मोती फागए वदो ११ लिपी कृत शारी शाहवरामेण ॥१। (पत्र के बीच में)—इति श्री मत शाह रामेण विरचतेर्या ॥ हरि प्रह्लाद चिरत । सपूरण भवेत । उ तत शत् उं हरियेन्म)

- ८९ पत्र सख्या-७ । देशी कागज । आकार-११ ५×५ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रति पक्ति-४१-४३ । लिपिकार-भगवान-दास तथा भजात । लिपिकार-सवत १८६४ । लिपि-मुवाच्य । इसमें ये रचनए हैं —(क) धम सवाद, धेमदास कृत । छद सख्या-१७८ । लिपत साध भगवान । समत १८६४ रा मि भादवा सुति ७ बार मगलवार लिपि । चसरकठा मधे ॥ प्राप्ति-स्थान-श्री धावलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । (ख) ३ कवित्त अल्लूजी के, तुही सान सधीर, जिणिए गोवल रापीयो, तथा जठ नदी जल विमल । (ग) २ सबइए, अज्ञात कृत ।

आदि-श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजी शत्य ॥ अथ ग्र थ धम सवाद लिपते । श्लोक ॥ अथमेषु विल्वर्षु

अत-अस बड मै परि विपता । तब सिधु की काज तो काहू न कीनां ॥२॥

- ९० खमणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग रागिनिया के अतगत लिखित छदो की स० पृथक पृथक् है । पत्र सख्या-५३ । देशी कागज । आकार-६ ७५×४ ७५ इ च । हाशिया-दाएँ-बाएँ-पीन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-४२-४६ । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात, सवत १६२४ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री सतकुमारजी विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री गणेशाय नम ॥ अथ पदमईया कृत खमणि मगल लिख्यते

॥ दोहा ॥ गौरीनदन चीनवा । सुरपति सुरति मुजान ।

कृष्ण तणो र विवाहलो । रिध सिध परमाण । १ ॥

अन-राग सोरठ ॥ जो मगल कु गाव जाक पाप परा हो जाव ।

जो मगल सु है काने जाके कोट जम के पुन है । १ ।

द्वारामति आनद भयो है । सुर नर देत आसीस ।

भणे पदेमैयो वण्य यु । सिधसण जगदेस । २ । इति श्री

पदमया कृत खमणी मगल सपूरण ॥ सवत १६२४ स रा मोती चत सुद एकम ॥ भार सुकरवार ॥

- ९१ खमणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियो के अतगत लिखित छदा की सख्या पृथक पृथक् है । पत्र सख्या-७० । देशी कागज किन्तु पत्र ४७ से ५८ तक, १२ पत्र मनीन के बने । आकार-१२×६ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१.२५ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति २८-३५ । सवत १९३९मे साहवरामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-श्री सतकुमार विष्णोई,

दुतारावाली ।

आदि ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम

॥ दो० ॥ सशर शगर अयाह जल ॥ मुसत यारं न पार ॥

गुर गोंबिद कृपा करो ॥ मं गाऊ मगलचार ॥ १ ॥

अत-जो मगल कृ सु न गाय गु न है । पाने अधिक यजाय ।

पूरण ग्रह पदम के स्वामी । मुसत भक्ति फल पाय ५ इति श्री पञ्चमइया कृत
रत्नमणी मगल सपूरण स्मृत १६३६ मीती म्हा ४० ६ लिपिकृत गारी साह्यराम
६२ गनेगजी सुरसती के भजन, साह्यरामजी कृत । भजन मख्या-५ । पद मख्या-२ ।
मान के बने वागज । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ-बाएँ-१ इंच ।
पवित्र-प्रतिपृष्ठ म १२ । अक्षर-प्रति पवित्र-३३-३६ । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य ।
साह्यरामजी द्वारा अनुमानत सवत् १६३६-४० म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री
सतकुमारजी विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अथ गनगजी मुरमती के भजन लिपते

नाचन गवरी नद आये क नाम सिम २ छिव छाये डेर ०

अन-सुरसत गनपत जो नर गाव जीवत हा मुक्ति पद पाव

साह्य सत भव तस्या म्हा ७

६३ गुटका, किनारा से दीमक खाया हुआ । कतिपय पत्र-अप्राप्य । देगी वागज । आकार-
५ ७५×४ २५ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१३ ।
अक्षर-प्रति पवित्र-१०-१२ । सवत् १८८७ म श्री रतनदासजी द्वारा लिपिबद्ध ।
लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामरिख गायगा, सदलपुर । इसमें ये रचनाएँ हैं -
(क) वारपडी, ऊदोदास रचित । छंद सख्या-३७ । श्रुती श्री वारपडी उदीगम
विचते सपूरण लिपत साध भभणा श्री १०८ परमरामजी का सिष्य रतनदास का
जे कोई वाच विचार तो नुवण वाचजोजी समत १८८७ मीती भादव सुदि १२
मगलवार । (ख) लूर-१, छंद सरया-६ । हरजस-१, छंद सख्या-६ । कमग
ऊजो अडीग और ऊजो नण कृत । (ग) साखी मख्या-१८ । इन कवियों द्वारा
रचित - रायचंद-२, केशोजी-५, ऊदोजी नण-३, वीरहोजी-१, सुरजनजी-२,
दामोजी-१, गुणदास-१, रिचदास-१ तथा अज्ञात-२ । (घ) कथा तलाव की,
केशोजी कृत । छंद सख्या नहीं दी है । (ङ) बिहारी के दोहे । सख्या-१३० । (च)
अमर गीत-नददास कृत । छंद सख्या ७४ । (छ) ध्रुवचरित, जनगोपाल कृत । अपूर्ण ।
प्राप्त छंद सख्या-२७० ।

आदि-श्री विष्णुजी सत गरी श्री गणेशायनम अथ लिपते वारपडी

कवत कुडलिया ॥ बका केवल विष्ण भजो । हृद धर विसवास ।

आन भरोसो छाडदो । राय राम की आत ।

अन-उलटी मोन चल जल माही हरि भगति मिल हरि माही

जसे सोप समुद त यारो स्वात बूद वरिय सुप भारी २७०

जसे चंद कमोदनि भावं जल में बसे सप्रेम (अतिम डेढ पवित अस्पष्ट है)

६४ साखी । सख्या-६४ (लिपिकार न भूल से सख्या ६३ दी है) । विभिन्न विष्णोई कविया द्वारा रचित । पत्र सख्या-३३ । देगी कागज । आकार-१२×६ इंच । हाणिया-दाएँ, बाएँ-सवा इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति- ३५-३७ । सवत् १६१० म श्री माह्वराम द्वारा लिपिकृत । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान श्री सन्तकुमार विष्णोई, दुतारावाली । आदि-श्री जभायनम राग मुह्व ॥ कणाकी ॥ साथे मोमणे शीयो अलोच जनु रचावीयो ॥ १ ॥

इ हि जमल प्रजली करोडि गुर फुरमाइयो ॥ २ ॥

अत-अत ही सुहायो म्हारो सायबो । पोयो म्हारो प्रमें दयाल ।

आलम प्रभुजी रो लाडलो । गोरघर लाल गवाल । १० । ६३ इति श्री सापी नामजी की सपूण लिपते गाव श्री गोविंदरामजी रा गिंग गायवराम सवत् १९१० रा वये मिति पोह वध १४ वारे गरूवार गाव रामडास (म) घे श्री म्हाराज विलजि रि जाग्या ह वठी ता सम मा स्व थ ।

६५ हरजस, सख्या-१०५ । पत्र सख्या-४० । देगी कागज । आकार-१२×६ इ च । हाणिया-दाएँ, बाएँ-सवा इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३७ । सवत् १६०८ म साह्वरामजी द्वारा लिपिबद्ध (१६०८ मीती पो सुघ १ लिपते माघ श्री गाविंदरामजी रो तिस सायवराम-पत्र १६ वें पर) । लिपि-स्पष्ट । प्राप्ति-स्थान-श्री सतकुमार विष्णोद, दुतारावाली । इमम सुरतराम, सूरदास, लालदास, चंद्रसखी, विसनदास, शीनल, अली, तुलसीदास, अग्रदास, नानक, खबीर, सुन्दरदास, नरसी, भीराबाई, सुरसीदास, माघोदास, भानीनाथ, रामदास, बटनावर, देवादास, नामदेव, रदास, कसौजी, मिठुदास, सुरजनजी, पदम आदि के हरजस सग्रहीत हैं । आदि-श्री वीसनजी रा गोडी । श्री भापोत उधारा जग मै । टेक

श्री भापोत सुनि तिनकादिक इमूत पोये एक धारा

ध्रु प्रहैलाद भभीषन नारद सिमूत बारमबारा १

अन-तुलछीदास सिवरी फल पाए दसरत नद कीसोर हो ३

भइया जी आज के सवाद मोठे बोर हो लछमेंना ईति हरजस १०५

६६ सबदवाणी । सबद सख्या-१२३ । गद्य प्रसंग समेत । गुटका । जीण और सडित । फोलियो-८० । आकार-६×४ इ च । हाणिया-दाएँ, बाएँ-पीन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१२-१६ । अनुमानत सवत् १६२२ मे लिपिबद्ध । (इमी लिखावट मे रावतछेडा से सुन्दरदामजी के सबइयो का एक गुटका और प्राप्त हुआ है, जिनके अन्त मे लिखा है-“इति श्री सुन्दरदाम जी के सबइयेसपूण भवेन पठनयें माघू महाराज प्रमहम केसोदासजी सवत् १६२२” । लिपि-पत्र भोग जाने से यत्र तत्र अस्पष्ट, पर मामागत-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतछेडा । इमम स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०४, १०५) मान हैं तथा स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसमें १०३ वी सख्या पर है ।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विष्णवेनम अथ श्री भाभजीरा द्वा लिख्यते । वाच
वरव नीर राष्यो वाचो माटी वा दीवटीया कराया जा माहि पांणो घनाय हुनम
सू दीया जगाया वाभण न परची दिपाल्यो

१७ अ १-रतन क्या धकू ठे वासो तेरा जुरा मरण भय भाज १२३ इति श्री राम श्री
प्रह्लाद चिरत, ऊदोजी वृत्त । छन्द सख्या-३५६ । पत्र सख्या-४१ । जोग और
राटित । मशीन क वने वागज । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा
इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-२४-२६ । सवत् १६२८ म प्रानमुख
विष्णोई द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-महत भोला-
रामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-जे श्री गणेशायनम अथ प्रह्लाद चिरत लिखते

दोहा-प्रथम बहु गुरदेव कु द्वितीये बहु सब साद

त्रितीये बहु महा विष्णु कु चतु चित प्रह्लाद १

अत-सोठां आयवणा स वत जाण ठार से अडसठ भए

सत करो परवाण प्रह्लाद चिरत यणन करयो ३५६ इति श्री ऊधोनामजी

वृत्त भापाया प्रह्लाद चित संपूर्णम् १ सम्बत् १९२८ मिति भाद्रु दुजा वनी ३ लिपि
वृत्त प्रानमुख विष्णोई नगानेवाला ओ तत सत श्री राम राम ॥

१८ परची, गोकलजी वृत्त । छन्द सख्या-३७ । पत्र सख्या-४ । देगी वागज । आकार-
९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से १ इ च तक । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ ।
अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६ । लिपिवाल-अनात, अनुमानत स० १८५० के लगभग
लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावत
खेडा ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ लिपते परची

सुषेण्यो सामो सोवन धार नमो निजनाय जको निराकार

अत-भर्ण बड भूप सुष्यो ससार निरजणनाय ऊत्तारण पार ३७ इति श्री गोकलजी
की परची संपूर्णम् १

६६ जमावस्या री क्या, मयाराम कृत । अपूर्ण । प्राप्त छन्द सख्या-१२९ । पत्र सख्या-
१२ । देगी वागज । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ- १ स सवा इ च ।
पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२० से २५ । लिपिवाल-अनात । लिपि
वाल-अनुमानत विरम उनीमनी गतावनी उत्तराद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-
महत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिपतु अमावस्या री क्या कु डलीया ॥

प्रथम बहु गुर देवकू द्वितीये बहु सब साध

विष्णु बहु पुत्र तीसर जात मिट जु ध्याच्य २

अत-रतन दिन चित्त भूजरि आई ॥ कदली वन म बटत घघाई ॥

यधु आय पाय सब लागी ॥ आसिस दई हाहु सुभागी ॥

१०० क्या बहसोवनी, केसोजी कृत । छंद सख्या-५३८ । पत्र सख्या-४४ । देगी कागज ।
आकार-६×४ इंच । हाशिया-दारें, बाएँ-पान से १ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ ।
अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६ । माघु तुलसीदास द्वारा सवत १८०२ म लिपिवद्ध ।
लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।
आदि-॥ श्री जभेस्वरायनम श्री गुरुन्यनम अथ क्या बहसोवनी लिपन राग गवटा
दोहा-आदि व्यसन साभलि अरज नवपड नाव नरैस

सु गौया बग सुणाइ स आप दीयो उपदेस १

अत-केसो क्या कही कर जोडि आवागवणि मिटायो पोडि ॥५३८॥ इति श्री वह
सोनो की क्या संपूरण समाप्त ॥ समत १८६२ रा अये मितो आसोज वदि तिय
१२ वार सनीसर ॥ लिपते साध थी १०८ श्री महाराजजी श्री मनरूपदानजी रा
सिष्य साध तुलसीदास ॥ सर नगीना मध्ये श्री जामजी र मिदर मा लिपो छ जी ॥
श्री विष्णु जी सत सही छ जी ।

१०१ प्रह्लाद चिरत, ऊदोजी कृत । छंद सख्या-३४८ । पत्र सख्या-२७ (पत्र सख्या २
अप्राप्य) । देगी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दारें, बाएँ-नाम मात्र
को । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६ । ठाकर थापन द्वारा सवत
१९३९ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विष्णोई
मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ अथ प्रह्लाद चिरत लिप्यते दुहा ॥

पुथम बहु गुरदेव कु । दुतीय बहु सब साध

अत्र-सम अठारं अडसटा माघ सुक्ल पय्य जानि

तियो तीज सुपुरण भयो प्रह्लाद चिरत अक्षान ३४८ इति श्री प्रह्लाद चिरत
संपुरण समाप्त ॥ लिपते ठाकर थापन गाव बडेपल माही समत १९३९ मीनि
फागु वदी १० वार मगलवार ॥ श्री राम ।

१०२ प्रह्लाद चिरत, ऊदोजी कृत । छंद सख्या-३४६ । मगोन के बने कागजा की मिनी
हुई प्रति । फोलियो-४१ । आकार-९×५ २५ इंच । हाशिया-दारें, बाएँ-पान
इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-०-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२३ । रामानंदजी के लिप्य
साह्यरामजी द्वारा सवत १९५६ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत
भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विष्णुवेनम

दोहा-प्रथम बहु गुरदेव कु दुतीये बहु सब साध ।

अत्र-इति श्री वगनवी धर्मावलम्बी ऊदोदान कृत भापाया प्रह्लाद चिरत संपूरण
सवत् १९५६ पोप वदि १२ गनि लिखत थी १०८ महाराज श्री रामानंदजी का
तन्निष्य साह्यराम स्वपठनाथम नगीना हरी भक्त लाता गिवलाल जी के मकान प ।

१०३ स्वमणी मगल, पद्म भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियो के अतगत छंद सख्या
पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-७३ । यत्र तत्र स्थित । देगी कागज । आकार-११ ५×

६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२७-३० । सवत १९४७ म बिहारीदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-मुवाच्च । प्राप्ति-स्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-भा जम गुस्वेनम + + + रक्मणी मगल लिपते ॥ दोहा ॥

सू डाला दुष भजना सदा जो बालक भेस ॥

सारां पैली सिबरीये गोरो पुत्र गणेश ॥ १ ॥

अन्त-जो मगल कु सुण और गाव बाजा इधक बजाव ॥

पूण ब्रह्म पदम के स्वामी भक्त मुक्त फल पाव ॥५॥ इति श्री व्यावलो सपूर्ण ॥ म० १९४७ ॥ मी० ॥ कातिक वदी ९ ति० बिहारीदास

१०४ पूलहोजी की कथा, बोलहोजी वृत । छन्द सख्या-२३ । आकार-१०×५ इन्च । कुल पक्तियौ-२८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३७-३८ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । लिपि-मुवाच्च । सवत १८८७ म साधु हरिकृष्णदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री विसनु मयायनम अय पूहेजी का कथा लिपत दूहा

भीयाणो भाइ क जण परोयावट पुवार

अन्त-छहा जणांसो पूलहोजी दिठी गयो पुलाय २३ इति श्री बोलह विरचताया पूलहोजी की प्रचा समापत १ लिपिते साध हरिकृष्णदास तीय जाभो डेरा मधे समत १८८७ रा मित्ता जेट वद ८ वार गनिवार मगजगमस्तू कल्याणरम्तु ॥

१०५ पुण्य, अज्ञात वृत । पत्र-१, दगी । आकार-९×४ इन्च । कुल पक्तियौ-२१ । अक्षर-प्रति पक्ति-२०-३० । हाशिया-दाएँ स पौन इन्च । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकार-अनुमानत सवत १८५० क लगमग । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-भा विसनु जयति लिपत पुण्य पतीग

इ म भाहु की पुन १ वृद्ध बोलहरी की २

अन्त-लिपते विगत वार काड का पत्र जांसा मयी १००००००० सायर गोशरी मया १००००००० अन्तया कम्पागी मयी १००००००० ॥

१०६ अररती जांभाणो । स१पा-५ । (अडोजी की-४, प्रोत्तम की-१) । दगी बागव । आकार-६ ७५×४ ५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । कुल पक्तियौ-२५ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३६ । लिपि-मुवाच्च । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकार-अनुमानत १९वा गगाभा उत्तराष्ट्र । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-भा गयेगामनम लिपत धारता

अररती कात्र गुर शम जनी की हर हर भगन उधारण प्राणयनी की टेर

अग्न-पांचमी अररती प्रीयम गाव मर्शाविरनु डू सीत मवाव ५

१०७ कथा बीनोड की, देवीजी वृत । छन्द सख्या-१२८ । पत्र सख्या-८ । दगी बागव ।

आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपवित्र-३२-३४ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८८६ में रामदासजी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री जभेवराय नम ॥ श्री विष्णुजी लिपते क्या चीतोड की ।

राग हंसो दोहा-अभ गुरु सिकरों सदा सबल विद्यापी सोइ

बुल भेटण दालद हरण जिह तिथरयां सुप होइ १

अन-सुध बचन सतगुर का गहै कारण किरौपा गुरमुप बहै

सतरासं छोडोतर सही क्या जोडि केसजो कही १२८ इति श्री चीतोड की क्या सपूर्ण ॥ समत् १८८६ मिति थावरण गुद २ वार थावरवार । लिपते साध श्री १०८ कनौरामजी रो सिष्य रामदासजी ॥ गाव मलाय मध्ये ॥ श्री विष्णु ॥

१०८ स्वमणी मंगल, रामलला कृत । छंद सख्या-३६५ । पत्र सख्या-१६ । देगी कागज ।

आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पवित्र-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पवित्र-३०-३२ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८६४ म साधु तुलसीदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

दि-॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ लिपते एक मंगल ॥ रागनी देवगौरी ॥

निगम जाकों नित्य गाव ॥ ध्यान सिध उर आनीय ॥

आद अत प्रप्रह्य जु के ॥ भवत नीक जानिय ॥

अन्त-राज करो नम्र द्वारका को ॥ भगत वछल श्री गोपाल ॥

रामलला जन गाव मंगल ॥ कृष्ण भजन जन होय नीहाल ॥ सरव जोड ॥ ३६५ ॥ इति श्री अथ स्वमणी मंगल पूर्ण समापति लिपते साध श्री १००८ श्री मूलतजी श्री मनरूपजी का शिष्य साध तुलसीदास ॥ सवत् १८६४ रा मिति कागण सुदि सिध १० वार मंगलवार श्री विष्णु जी सत सही छ जी ॥ १ ॥ लिपते सहर नगौना मध्ये ।

१०९ विवाह क्रम (जाभाणी) । रचयिता-अज्ञात । पत्र सख्या-१५ । देगी कागज । आकार-९ २५×४ २५ इंच । हाशिया-साधारणत-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पवित्र-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपवित्र-२९-३० । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८६१ म केसो दास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालामर साधरी । इसम ये रचनाएँ हैं — (क) आवाहन (संस्कृत में) । (ख) गोश्राचार । (ग) बसदर के नाम । (घ) आद वसावली । (ङ) नाम (संस्कृत) । (च) विवरस । (ज) अस्तुति । (झ) विष्णु रक्षा (संस्कृत) । (झ) नवप्रहरक्षा (संस्कृत) । (ञ) पोढी पालटण (संस्कृत) । (ट) बगवानर पूजा (संस्कृत) । (ठ) क्या लक्षण (संस्कृत) । (ड) चोजुगी । (ढ) मंगला पटक । (ण) देवता विदा कण ।

आदि-श्री गणेशायनम । मंगल भगवान विष्णु मंगल गुरुडवज

अन-इति श्री यात्रम सपूर्णम् समत् १८६१ रा मिति साध सुध पूरणवामी वार मुत्रवार लिपते साध श्री १०८ रावलजी का सिष्य केसीदास ॥ लिपिविक्तम् ॥ श्री

विष्णु ॥

- १० चारै भासी, रचयिता-खरातो मेरठी । नमवार छद सख्या नही दी है । पत्र स०-४ । देगी कागज । आकार-१०×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १४-१५ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-४७ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । सवत् १८७६ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णु सत्यायम

दोहा-आसाद सम विनती कर घेरासाह अधीन

तुम विन व्याकुल मन हैं जस जल विन मीन १

अत-दोहा-कहै घेरातो मेरठी सुनीया वार मास

आस दरस लागी रहो जब लग घट म साम १२ इति वार भासी सपूरण ॥

१ ॥ सवत् १८७६ मिति चत सुदि १३ वार शुक्रवार ॥ गाव लोहावट मभे ।

- १११ सबदवाणी । सबद सख्या-१२० । बिना प्रसंग । पत्र सख्या-५८ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से एक इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२७ । साधु माधोदामजी द्वारा सवत् १८८२ म लिपिवद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-महत कौशलदासजी, आगुणी जाग, जाभा ।

आदि-श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजी सत्य लिपत सब्द श्री जाम्भोजी का श्री वायक

उ गुर ची हौं गुर ची हि विरोहित गुर मुपि धम वपांणी

अत-भलीयो होय तो भली बुधि आव बुरियो बुरी कमाव १२० इति श्री सब्द

वाणी श्री जाम्भोजी की समाप्त लिपत साधु माधोदास श्री तिलोकदासजी का शिष्य आप पठनाथ सवत् १८८२ रा मिति भाद्रवा सुदि ४ वार भृगुवारे वाच विचार जिना नू नि प्रगाम श्री विष्णु

- ११२ पद्य प्रसंग, सबदवाणी के । १२० सबदो पर । पत्र सख्या-१६ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३०-३४ । लिपि-सुवाच्य । सवत् १८७७ म पीताम्बरदासजी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी

आदि-श्री विसनजी अथ गंगा का प्रसंग

दोहा-हांसा लोहट न कहै सुनो बात चित लाय

बालक प्रोट बोल नहीं कोई जतन कराय १

अत-गहा विसनोई न तबही हरिसो भूसी बात

विष्णु भजन से करौं मोह सुनावी तात १

गद्य विसन विसन तो भणि रे प्राणीं इस जोवणि ० १२० इति श्री प्रसंग सहज गद्य सपूरणम् ॥१॥ ममत १८७७ मिति अरजे मासे गुबल पथे अमुरा साधाय्यवार्थे विष्य नाग्य लिपि कृत पीताम्बरदास श्री १०८ विसनुदासजी रा गिष्य पठनाथ राबलजी श्री १०८ गगारामजा रा गिष्य । सख्या श्लोक वतीमा ४४० ।

- ११३ सबदवाणी, सब्द सख्या-११७, बिना प्रसंग । पत्र सख्या-४१ । देशी कागज ।

आकार-१×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणतः पौन इन्च । पवित्र-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पवित्र-२९-३६ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८५८ मे सुरतराम जी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा । आदि-श्री विसनजी सत्य । लिपते सबद भाभजी का श्री वायक ।

गुर चीहों गुर चीहों ह पुरोहित गुर मुधि घम बयांणी ।

अन्त-भलीया होय तो भल बुधि आव । बुरिया बुरी कमाव ॥ ११७ ॥ इति श्री सबद बाणी भाभजी की संपूर्ण समाप्त । सवत् १८५८ मीतो आसोज वदि ५ वार दीत-वार । लिपत गगारामजी के खेल सुरतराम । गाव भाभोलाव मध्ये ॥

११४ सबदबाणी । सबद सख्या-१२०, विना प्रसंग । किनारो से खडित । पत्र सख्या-३१ । देशी कागज । आकार-१०×४ ७/५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पवित्र-३०-३२ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८८४ म परसरामजी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी ।

आदि-श्री भाभेस्वराय नम ॥ श्री सरस्वत्य नम ॥ अय लिप्यते शबद बाणी

भाभजी की गुर चीहों गुर चीहों ह पुरोहित ॥ गुर मुय घम बयांणी ॥

अन्त-भलीया होय तो भलि बुद्धि आव ॥ बुरीया बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्द बाणी श्री भाभजी की संपूर्णम् ॥ १ ॥ सवत् १८८४ मीतो असाढ वदि ६ सोमवार ॥ लिपते साथ श्री १०८ हरिकिसनदास महतजी रा सिष्य परसराम विसनोई साथ ॥ गाव धवा मध्ये ॥ श्री कल्याणमस्तु श्री मंगलमस्तु ॥ श्री सुभर ० ।

११५ पुंय । पत्र-१, देशी । आकार-१०×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । कुल पवित्रया-२७ । अक्षर-प्रति पवित्र-३२-३७ । लिपि-मुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानत उन्नेसवा शतादी उत्तराद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी । आदि-श्री विष्णुजी सत्य सही लिपतु पुंय पतीस की

मा भादु की ० १ बूढ पोल्हरी की ० २

अन्त-सब्द नीहूध आप लाग्य फल वठा छाया तात निरीकार नाव कहाया निराकार मा विसन १

११६ इसकदर की कथा, केशीजी कृत । छत्र सख्या-१६२ । पत्र सख्या-१३ । देशी कागज । आकार-६ २/५×४ २/५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपवित्र-३२-३५ । लिपि-साधारणतः पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-सवत् १८८४ । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी । आदि-श्री गणेशाय नम ॥ अय असकदर की कथा लिपते ॥ राग सोठी ॥

दोहा-श्रीपति पहली स्पवरिये अलय अपार अनत

सभ गुरू जल धल रहै भव भाजण भगवत १

अन्त-कसे कथा कही कर जोडि आवागवणि चुकावो पोटि

जो यहै कथा सुण चित लाइ सत करि भान सुरगे जाइ १९२ ।

इति श्री इगकदर की कथा संपूर्ण ॥

२१७ सप्त जोषाणी की कथा, केसौजी कृत । छन्द सख्या-१०६ । पत्र सख्या-६ । देसी वागज । आकार-८५×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३६ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी । आदि-श्री गणेशाय नम ॥

दोहा-निरहारो प्रथम नऊ सतगुर सांम मुजांण

एक सत निवाज्यो सांमजो थायक करू थपांण १

अत-जोषाणी सप्त तणी कथा मुणों चित लाइ

केसौ कहै ससा में भोय मुकति फल पाइ १०६ ।

इति श्री सप्त जोषाणी की कथा संपूर्णम् ॥ १ ॥

२१८ उद अतली की कथा, केसौजी कृत । किनारो से खडित । (इसमें यह रचना मुरजन दासजी की बताई गई है, जो भूल है) छन्द सख्या-८९ । पत्र सख्या-६ । देसी वागज । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणतः-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३२ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी ।

आदि-श्री गणेशाय नम राम हसो ।

दाहा-श्री पति पहलो सियरोये आदि गुष आवेस

जभगुष सिवरू सदा जिहि सिबर मुर शेत १

अत-भवत पठ प्रीत सहित थोता मुन मुजान

तारुं मनकी वासना सुफल कर भगवान ८९ । इति श्री उद अतली की कथा संपूर्णम् १

२१९ विष्णु चिरत, ऊबोदास कृत । छन्द सख्या-१०५ । किनारो से खडित । पत्र सख्या-१० । देसी वागज । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३६-३० । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालामर साधरी ।

आदि-श्री विष्णाय नम ॥ श्री प्रमात्मननम श्री गुरुम्योनम

थी गुर सत १ सि नाऊ अण्णा होय विष्णु जस गांउ

अत-भोरठा-हरि अयतार अ नत अनत चिरत अयगत तणा

गाव मुनि जन सत विमल जस भयजल तरणां १०५

इति श्री विष्णु चिरत उधवनाम कृत संपूर्ण

२२० धरमबरी, मुरजनजी कृत । छन्द सख्या-८० । पत्र सख्या-४ । देसी वागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३५ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । सवत् १८७७ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालामर साधरी ।

आदि-॥ श्री विसनजी सत्य छ जी ॥ लिपते धरमचरी ॥

दुहा ॥ चोरासी वृष देषि क भुगत्या क्रम अघार

मोह ओसर मिनपा जलम मिल न धारोवार ॥ १ ॥

अन्त-दोहा ॥ धीरो पकडी धौहट । इतो पूगो दाव ॥

सुगति विदर क पूत नं । विदर न सिर पाव ॥८०॥ इति श्री धमचरी सपूर्ण ॥ समाप्तोय ॥ भवत । समत १८७७ रा वषे मितो वसाय सुदि १० वार थावरि

१२१ सुरजनदासजी के कवित । सख्या-३२६ । पत्र सख्या-३५ । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३६ । लिपिकार-अज्ञात । सवत १८८४ मे लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लालासर सायरी ।

आदि-श्री जामेश्वराय म धरम जप धारणा ग्यान भारी गुण सागर ।

सहज सोल सतोय कीयो पथ माहि उजागर ।

अन्त-राग दोय लज्या रसण । भाया मोह अकार भणि ॥

प्रकीर कौथ तिण प्यजर । गुर तत भेद आकाल गण ॥ ३२९ ॥

इति श्री सुरजनदास विरचिताया कवित सपूर्णम् ॥ समत १८८४ वषे मितो भाद्रवा सुदि अष्टमी वसपतवार ॥ लिपते तीरथ नामोल्लाव मध्ये ॥ १ ॥

१२२ गोकलजी के छन्द आदि । पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६ । लिपि-सुवाच्य । परसरामजी द्वारा सवत १८७८ मे लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर सायरी । इसम में रचनाएँ हैं -

(क) अस्तुति अवतार की । छन्द-१३ । (अपूर्ण) ।

(ख) इ दव छन्द । छन्द-३२ । (ग) अस्तुति होम की । छन्द-१० ।

इति श्री गोकलजी का कहा कवत सपूर्ण १ ॥ लिपते साध श्री हरकिसनदासजी रा सिष्य परसराम ॥ सवत् १८७८ रा मितो चत सुदि १२ वार रवि । गाव लोहावट मध्ये ॥ थी । (घ) कवित (जाम्भाली)-३ । अपूर्ण । रचयिता-अज्ञात ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ लिप्यते असनुत अवतार की छन्द मोतीदाम ।

दोहा-रिषपति सिषपति सीलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

गतिदाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥१॥

अन्त-रहत पची कृत बेह परगट वष पु हमी धारयो

जीव रूपम बहु कुटल अंध अत मारग जानें

१२३ ग्यान महात्म, सुरजनदासजी कृत । छन्द सख्या-१६६ तथा अज्ञात कृत ४ कवित । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । आकार-१०×५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-४० । लिपि-सुवाच्य । साधु हरिद्वणदास द्वारा सवत् १८८७ मे लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर सायरी ।

आदि-श्री जाभेस्वराय नम अथ ग्यान महात्म लिपते

दोहा-माया ब्रह्म मिलाय क हस बसोयो मोहि

गुर बिप्य ग्यान न पाईए ग्यान बिना सच नाहि १

अत-परहर घाट आग यह घास यहै ज घाटरा

बायरां बिपो ह्याल नहीं बिपो नरदां नाहरा ॥ ४ ॥

इति श्री सुरजननास विरचन ग्यान महात्म संपूर्ण गमापतोनय १ लिपत माघ हरि
विष्णुदास तिरथ तलाव मभ्य समत १८८७ रा मिति जठ मुद १५ ।

१२४ सबदबाणी तथा विष्णुसहस्र नाम । सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । दगी
कागज । फोलियो-१४३ । आकार-५×४ इ च । पकित-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति
पकित-१३-१४ । हाशिया-आध से पौन इ च । लिपि-सुबाध्य । सवत् १६३८ म
वष्णव रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत्त रामनारायणजी, रामडावाम ।
आदि-श्रीमते रामानुजाय नम ॥ अथ शब्द बाणी श्री जाभजी की लिपत ॥

उं गुर चीहो गुर चीहि पिरोहित गुर मुपि घम बयाणी ॥

अत-श्री विष्णोनाम सहस्र संपूर्ण ॥ सवत् १६३८ मीगर वदि ११ ति० वष्णव
रामदास नम्र राहेण मध्ये ।

१२५ सबदबाणी, सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । फोलियो-८० । मशीन के
वने कागज । आकार-६ २५×४ इ च । हाशिया-पौन से एक इ च । लिपि-सुपाठय ।
पकित-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपकित-१५-१८ । सवत् १६४० म प्राणसुख विष्णोई
द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री वदरीराम थापन, मुकाम ।

आदि-उो श्री गणेशायनम । गुर चीहो गुर चीहि पिरोहित । गुर मुप घम बयाणी ।
अत-भलीयो होय सो ॥ भल बुद्धि आव । बुरीयो बुरी बमाव ॥ १२० ॥ इति श्री
गन्त बाणी श्री जाभजी की सम्पूर्ण ॥ १ ॥ सवत् १६४० रा वये मिति माघ वदी
८ लिपत प्राणसुख विष्णोई बेटा दिलदार का नगीनेवाला उो हरि तत मत ॥

१२६ गुटका । फोलियो-१७५ । मशीन के वने हके नीले रंग के कागज । आकार-
६ ५×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पकित-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति
पकित-१७ १६ । सवत् १६२५ म साधु नृसिंहदास द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठय ।
प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम । इसमे ये रचनाएँ हैं - (क) सबदबाणी,
सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । (ख) प्रस्ताव चरित, ऊधोजी वृत्त । छन्द सख्या-
३४८ । इति श्री ऊधो भक्त वृत्त प्रह्लाद चरित्र सम्पूर्णम् ॥ ३४८ ॥ समत्त १६२५
लिखत मया साधु नमिषाणसेण श्री मोतीरामस्य शिष्य पठनाथ साधु श्री मया
रामदासजी बेला श्री गू मानिरामजी का लिपि वृत्त गाव रणी मध्ये ॥ (ग) सप्त
श्लोकी गीता (मूल और टीका संसेत), (घ) ८ छन्द केसौजी के । (ङ) ४ भजन
तुलसीदासजी के । (च) ३ हरजस, साखियां (जाभाणी)

आदि-उा श्री गणेशायनम ॥ श्री जभाय नमोनम अथ लिप्यते गन्त बाणी जाभजी
की गुर चीहो गुर चीहि पिरोहित ॥ गुर मुप घम बयाणी ॥

अत-कस म कट कहू जन केशो बिष्णु सितवर मन भाई ॥४॥ ३ भूठी भोजन उलटो
इसत्री गवन बीज छूट जाणा नयठी छूटणो नाड री छोट बिसा जावणो अ सात
छोट टाल ॥

१२७ सबदवाणी, अपूर्ण । पत्र प्रसंग समेत । पत्र सख्या-५१ । देशी वागज । (सख्या-
३,२० तथा ५१ के पश्चात् के पत्र नहीं हैं) । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ,
बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति ३२ ३६ । लिपि-सुवाच्य ।
लिपिकार अज्ञात । अनुमानत उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-
पीपासर साथरी ।

आदि-(४ था पत्र) राय न ते पणि रूप हमारा धीर्यो ॥ जतो तपो तक पीर
रयेसर ॥ काय जपोज ॥ ते पणि जाया जीर्यो ॥

अन-विसन विसन तू भणि रे प्राणो ॥ इस जीवणों क हाव ॥ तिल तिल आव
घटतो जाव ॥ मरण दि ॥

१२८ सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र-सख्या-४४ । देशी वागज ।
आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-
प्रतिपक्ति-२६-३० । लिपि-पाठ्य । गोविन्द द्वारा स० १८८५ म लिपिवद्ध । प्राप्ति
स्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ लिख्यते शब्द जाभजी का श्री वायक ॥

गुर चीहों गुर चीह पिरोहित गुर मुखि धम वषाणों

अत-भलीया होय त भलि बुद्धि आवं बुरीया बुरी कमाव १२० इति श्री शब्द वाणी
श्री जाभजी की मपूर्णम् ॥ १ ॥ जे च द्रवातु को वमुरेव वमु महा भूतायब्दे वातिक
तृतीया गाविदनतल्लिखित १

१२९ सबदवाणी-सबद-मर्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र सख्या-३० । देशी वागज । आकार
११ ५×५ इ च । हाशिया-माधारगत -दाएँ, बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रति
पृष्ठ १२ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७ । लिपि-सुपाठ्य । सवत १९२५ म साधु
लक्ष्मणदास द्वारा लिपिवद्ध । सबदवाणी के पश्चात् स यामन ह । प्राप्तिस्थान-जागलू
साथरा ।

आदि-श्री गणेशायनम । श्री ऋमेशुरायनम ।

ओं गुर चीहो गुर चीह पिरोहित । गुर मुख धम वषाणों ॥

अत-रतन काया बेहु ठे वासी । तेरा जरा मरण भव भागू ॥ १२० ॥ इति श्री ग द
वाणी । जाभजी मपूर्णम् । मिति वसाप सुद १५ । ममत १९२५ त्रिपत साधु लक्ष्मण
दास गिण्य बुधरामजी के ॥ श्री गणेशायनम अथ सध्या मन लिखते । ओं बिष्णु बिष्णु
तु भण रे प्राणी । साध भवते ऊद्धरणो । इति श्री जभ तानु सवाद । सध्या
मत्र ।

१३० सबदवाणी, सबद सख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र सख्या-३४ । किनारो से खडित ।
देशी वागज । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ

११ । अ १२-प्रतिपत्ति ३४-३६ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८८७ म रामनाम द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-मन्त्र भोनागमजी, विष्णोई मन्त्र, रावतगण ।

आदि-श्री जभस्वराय नम श्री प्रमाणा नम निपत गन्त्र जाभजी वा श्री वाचन ॥

गुर चीहो गुर चीह पिरोहित ॥ गुर मुवि धरम वषाणी ॥

अत-भलीया होय ता भल दुधि आय ॥ वराया वुरी वमाय ॥ १०० ॥ इति श्री गन्त्र वाणी भाभजी वा सपूण ॥ समाप्त ॥ ममत ॥ १८८७ रा वृष मित्ता भास्वा वद ६ ॥ वार विरमपतवार ॥ निपत साध श्री १०८ वनोरामजी रा मित्य रामनाम ॥ गाव रावतपन्ना मध्य ॥ श्री जभस्वराय नम ॥ श्री गणनाम नम ॥ १ ॥

१३१ सबदवाणी, सवत् सत्या-१-०, विना प्रसंग । पत्र सत्या-३२ । जाण, राहित । देगा वागज । आकार-६×४ इ च । हांगिया-गा, वाए-१ इ च । पत्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपत्ति-२२-३६ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १८६१ म रामनामजी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-नालागर मायरा ।

आदि-श्री जभस्वराय नम निपत गन्त्र जाभजी वा श्री गायक

गुर चीहो गुर चीहो पिरोहित गुर मुवि धरम वषाणी

अत-रतन काया बहू ठ वासी तेरा जरा मरण भव भाजो १ १२० इति श्री गन्त्र वाणी जाभजी वा सपूण ॥ ममत १८६१ रा मित्ता काती वद ६ वार विरमपतवार लिपत साध श्री १०८ वनोरामजी रा मित्य रामदासजी गावें माटभरा मध्य ॥

१३२ गुटका । पठित । फालिया सत्या-१८२ (१४२+४०) । देगा वागज । आकार-५×३ २५ इ च । हाशिया-गा, वाए-पौन इ च । पत्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपत्ति-१२-१६ । लिपि-मुवाच्य । साधु दिलराम द्वारा सवत् १६१२ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-स्वामी गिवानजी महाराज, मुक्तिधाम, ऋषिकण । इसम ये रचनाएँ हैं — (क) सबदवाणी, सवत् सत्या-१२०, विना प्रसंग । (ख) विष्णु सहस्र नाम ।

आदि-श्री गणेशायनम उं गुरु चीहो गुरु चीहो पिरोहित । गुरमुवि धरम वषाणी । अत-सवत् १६१२ रा वृष मिति आसाढ गुदि तियि ६ वार वृषवार । लिपिवद्ध साधु दिलराम ॥ ग्राम ब्राह्मणवाता मध्य ॥ वटगाव भगवाननाम की दुकान मध्य ।

१३३ गुटका । फालियो सत्या-११२ (८६+२६) । मनीन व वन वागज । आकार-६×३ ७५ इ च । हांगिया-गा, वाए-एक इ च । पत्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपत्ति-१२-१६ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १६२६ मे मनात लिपिकार द्वारा लिपि कृत । प्राप्तिस्थान-श्री भीयाराम विष्णोई, मदनपुर । इसम ये रचनाएँ हैं — (क) सबदवाणी, सवत् सत्या-१२०, विना प्रसंग । इति श्री गवद वाणी भाभजी की सपूरणम समाप्त १ सवत् १६२६ माती वगाप सुदी २ वार वृषपतिवार के दिन ॥ १ ॥ उ त्त मत । (ख) विष्णु सहस्र नाम । (ग) विष्णु पजर स्तोत्र आदि-श्री गणेशायनम ॥ उं गुर चीहो गुर चीहो पिरोहित गुर मुवि धरम

अत-इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इन्द्र नारद सत्राद् विष्णु पञ्चर स्तोत्र मपूण १ उं तत्
मत ।

१३४ सबदवाणी (अपूण) सत्र-संख्या-११७ । पद्य प्रसंग ममेत । पत्र सख्या-५४ । जोग,
वृद्धित । शैली कागज । आकार-८ २५×३ ५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सगभग
१ इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपवित्र-३०-३३ । लिपि-मुपाठ्य ।
अनुमानत सवत १८०० व सगभग अनात त्रिपिकार द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तित्स्थान-
श्री भीयाराम विष्णोई, सत्लपुर ।

आदि-(दूसरे पत्र से) का साला सतगुर है तू सहज पिछाणीं विसन चिरत विन काच
कर्वे रह्यो न रहिसी पाणीं ?

अन्त-भलयो होय तो भल बुध आव बुरीयो बुरी कमावें ११७ इति श्री निघात
वाणी सतगुर भभेसर विरचनाया मपूण ॥

१३५ सबदवाणी । सत्र संख्या-१२०, विना प्रसंग । गुटका । देशी कागज । आकार-६
७५×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-
प्रतिपवित्र-२०-२३ । लिपि-मुपाठ्य । सवत् १६३६ म अनात त्रिपिकार द्वारा त्रिपि
वद्ध । प्राप्तित्स्थान-महत्त कौशलरासजी, आगूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ गद्द वाणी श्री जाभजी की लिपते ॥

उ गुर चोहों गुर चोहिह विरोहित गुर मुपि धम बघाणीं

अत-भलयो होय तो भल बुधि आव बुरीयो बुरी कमावें ॥ १२० ॥ इति श्री शब्द
वाणी श्री जाभजी मपूण ॥ सवत् ॥ १६३६ ॥ मिति साठ बदि श्रोत्री ॥ राम राम

१३६ सबदवाणी, सबद-संख्या-१२० । विना प्रसंग (केवल पहले सबद का पद्य प्रसंग
ह) । पत्र सख्या-३६ । मंगीन के बने हल्के नीले रंग के कागज । आकार-११ १×६
इंच । हाशिया-साधारणत-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-
प्रतिपवित्र-३४-३६ । लिपि-मुवाच्य । सवत् १६११ म गोपालराय द्वारा लिपिवद्ध ।
प्राप्तित्स्थान-पीपासर साधरी ।

आदि-श्री जभेस्वरायनम ॥ अथ लिप्यते सबद ॥ जाभेजी का ॥

काच करबो जल रथ्यो ॥ सबद जगावा दीप ॥

वांभण को परच्यो दयो ॥ ओं सो अचरज कोय ॥

अत-भलयो होय तो भल बुध आव बुरीयो बुरी कमावें ॥ १२० ॥ इति श्री सबद
वाणी श्री जाभेजी की मपूणमस्तु ॥ श्री जभेस्वरायनम ॥ श्री रामचद्रायम ॥
सवत् १६११ वरपे मीती फालगुन सुद्ध १३ गुरवासरे प्रथम प्रहरे ता दिने समाप्त ॥
हस्ताक्षर गोपालराय ब्राम्हन सनोडिया बस्ती हरदा ग्राम मध्वे ॥ श्री बृष्णायम
सवत् १५६३ मागनीर बद्य ८ आगली को पालठिया रूप रह्यो रिधु अधिक जोत
समरायते ॥ ६ ॥

१३७ प्रह्लाद चिरत, कैसीजी इत । पत्र संख्या-५४६ । पत्र संख्या-३४ । देशी कागज ।
आकार-१२ ७५×६ ५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत सवा इंच ।

पवित-प्रतिपृष्ठ-१२-१३ । अक्षर-प्रतिपवित २६-३२ । लिपि-पाठ्य । सवत् १६६२
मे साधु विहारीदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपागर साधर ।

आदि-श्री गणेशायनम प्रह्लाद चिरत ॥

दो० ॥ नारायण पत्नी निऊ स्वामी सरथ मुर्जाण ॥

आद भगत कहस्यु कथा प्रह्लाद चिरत परयाण ॥ १ ॥

अत-मै दावण पकडयो वीन की सतगर करो सहाय पाँच सात नय बाहरा अबक

मोय मिलाय ५४६ इति श्री प्रह्लाद चिरत कभोजी कृत सपूरण लिपने साध
विहारीदास चेला विष्णुदासजा वा स्व पठनारथ १६६० मिती बभाप बदी ९ सुन-
वार गाव भगतासणी मै ।

१३८ रुक्मणी मंगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियो के अतगत छंद सख्या
पृथक् पृथक् दी हुई है । पत्र सख्या-१३९ । दगा। कागज । आकार-१३×६ ५ इच ।
हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-सवा इ च । पवित-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति
पवित-२१-२४ । लिपि-मुपाठ्य । सवत् १९४८ म केवलदासजा द्वारा लिपिवद्ध ।
प्राप्तिस्थान-पीपासर साधरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ रुक्मणी मंगल लिप्यत ॥

दोहा-सु अयाला दुख भजणा ॥ सदा जो बालक बेग ॥

सारा पहली सुमरिय्य ॥ गवरी पुत्र मनेदा ॥ १ ॥

अ-सुनरन भजन कछु ना जानू ॥ लीज्यो आप मुधारो ॥ ५ ॥ पदम० कोज्यो कृपा
मुरारी ॥ ६ ॥ इ ति श्री पदमदास कृत रुक्मणी मंगल समाप्त ॥ समत १८ ॥
४८ अवरण सुदी ६ वार मंगलवार लिपित विष्णु पत्नी रूपरामजी के सिस्य केवलदा
सजी ग्राम अलाय मध्ये ।

१३९ ग्यानचरी, बील्होजी कृत, छंद सख्या-१३० तथा सुरजनजी कृत धरमचिरी और
चेतन कथा-छंद सख्या-१०९ । अणुण । चारो ओर से खडित । प्राप्त पत्र सख्या-८
(६ से १६) । देशी कागज । आकार-८×३ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत
पौन इ च । पवित-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पवित-३१ से ३४ । सवत् १८७०
म साधु भगवानदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत भोला-
रामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-णि ॥ सावो करि हिरद मा आणि ॥

मति प्रवाणी बरणी सहो ॥ ग्यान चिरी बील्होजी कही ॥ १२९ ॥

अत-मनसा बाचा श्रमता ॥ सुनु पुरातम सावि ।

जन सुरजन की धीनती ॥ बान की पति रावि ॥ १०९ ॥ इति श्री धरमचिरी
जन सुरजन कथत ॥ समाप्तोय ॥ लिपित साध भगवानदास पठनार्थी आप हतारथ ॥
समत १८७० रा मिला जेट मुनि । १३ । इसके पश्चात ३ दोहो की एक
साथो है ।

भवसागर कू देव क ॥ डरयो जो मेरो चित ॥

सतन को त्रिपा हुव ॥ दरसन पावौ नित ॥ ३ ॥

- १४० हरजस । सख्या-१६४ (विभिन्न राग रागिनियो मे) । पत्र सख्या-३० । देशी कागज ।
 आकार-१२ ५×६ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत-सवा इ च । पक्ति-
 सामायत —प्रति पृष्-१५ । अक्षर- प्रतिपक्ति-२९-३४ । लिपिकार-अज्ञात ।
 लिपि-सुपाठ्य । सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तस्थान-जागलू सायरी ।
 इसमें सूर, ऋषिकेश, कबीर, मनसुपदास, रज्जब, ध्यानदास, सुदरदास, अग्रदास,
 श्री भट्ट, तुलसीदास, नामदेव, मीरा, अनायदास, परमानन्द, माधोदास, तुरसी, नरसी,
 जन हरिदास, रामदास, दादू, भोंव, अमरदास, अनन्तदास, वाजिददास, तानसेन,
 दीपराम, बुघानन्द, विष्णुदास, घेमदास, सुरतराम, रामलला, भीठुदास, जन रोवदास,
 सुरजनदास, गगादास आदि के हरजस हैं ।

आदि-॥ श्री विष्णु जिसहाय अक्षराग रागनि के हजस लिखत ॥ प्रथम राग गवडी ॥
 माधो मन मरजाद तजौ ॥ ज्यु गजमत जानि हरि तुम सौ ॥ यात विचार सजी ॥
 अन्त-नवका रूप धण्यो सत सगत जामेँ बठो सब कोई आई

धोर उपाय नही तिरवा को सु द्र फाढो रांम बवाई २ । १६४

- १४१ साखी सप्रह (जाभाणी) । साखी सख्या-६६ । अपूर्ण । विभिन्न कविया द्वारा रचित ।
 प्राप्त पत्र सख्या-२२ (कुल पत्र सख्या-२६ है, जिनमें से प्रथम दो तथा २३-२४, ४
 पत्र नहा हैं) । किनारा से सङ्घित । देशी कागज । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ,
 बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३६-४३ । लिपि-पाठ्य ।
 सवत् १८९० में पीतावरदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तस्थान-लालासर सायरी ।

आदि-लोज जिहि मन पोटा तिहि सब तोटा न करि पराई निदा

हृद जो हरये हरि जपो तो सत सोधे बदा ४१ (कैसौजी कृत)

अन्त-(पत्र २६, प्रथम पृष्ठ, चौथी पक्ति)—

अत ही सुहायो मेरी साहिबी पीब मेरी प्रमदपाल

आलम प्रभुजो री लाडली गिरधरलाल गवाल १० २ (आलमजी कृत) ।

(द्वितीय पृष्ठ, दसवी पक्ति) लिपीकृत पीतावरदास पठनाय स्वयं स० १८९० ।

- १४२ साखी सप्रह । साखी सख्या-६३ । पत्र सख्या-४३ । देशी कागज । आकार-६×४
 इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-
 ३१-३५ । लिपि-स्पष्ट । सवत् १८८६ में रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तस्थान-
 लोहावट सायरी ।

आदि-॥ श्री जमायनम श्री विष्णुवेनम लिपते सायी ॥ राग सुद्व ॥ बणाकी ॥

साधे मोमणो कीयो अलोच जमु रचावोयो । १ ।

इ हि जमल पूजली करोडि गुर फुरमाईयो ॥ २ ॥

अन्त-करि सुकरत सुरगे गया ॥ से जन पुहता पारि ॥

धीनतजो रांमो कहै ॥ म्हारो आवागबणि निवारि ॥ १ ॥ ६३ ॥ इति श्री सायी

भाभजी की सपूर्ण लिपते साध श्री कवीरामजी से सिध्य रामदास ॥ समत ॥ १८८६
रा वषे मितो भासाड शुद्ध ॥ १० वार शनीसरवार ॥ गाव अलाय मध्ये ॥ १ ॥
सपूर्ण श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥ श्री मग । श्री गणेशायनम श्री जमस्वरायनम ॥ श्री
विष्णुजी ॥ -

१४३ साखी सग्रह । साखी सख्या-१४ । अपूर्ण । प्राप्न पत्र सख्या-११ । देशी कागज ।
आकार-६×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इंच से एक इंच ।
पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-३२ । लिपि-पाठ्य । निपिवाल-
अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट
सागरी ।

भादि-श्री गणेशायनम ॥ लिपतू सापी जमल की ॥ राग भुव ॥

साधे मोमणे कीयो अलोच ॥ जमलौ रचावोयी ॥

इण जमल पूजली विरोड ॥ गुर फुरमावोयी । १ ।

अत-बुग दवापुर रे मोमणो पाचू । धीर नें सगि राणीं द्रोपती ॥

सतवादिणि रे मोमणो कूतां दे माय न गनि न ले तरी ॥

सतवादिणि रे माय नें कूता तरी गति न तारि न सति हूता घडया वेंडे ॥

१४४ हरजस, सख्या-१७३ । पत्र सख्या-५५ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८-३२ ।
लिपि-मुपाठ्य । सवत १८६१ म कसोणस द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट
सागरी । इसम तुलसीदास, मुरदास, मोरत, जन हरिदास, नामदेव, रामदास, कबीर,
माधोदास, अग्रदास, श्री भट्ट, अनामदास, मनमुपदास, दाडू, ध्यानदास, व्यासदेव,
परमानंद, धाजिददास, रज्जब, धेमदास, अमरदास, बीपराम, नरसी, तानसेन,
तुरसीदास, काजी महमद, लालदास, विष्णुदास, सुंदरदास, गंगादास, रामलला, मिठु
दास, मुरतराम, मुरजनदास, जन रिवदास, धाविददास आदि के हरजस हैं ।
भादि-श्री विष्णुजी सत सही ॥ लिपते हरजस ॥ राग परज ॥

निरवत जात जटाई रथ पर ॥ टेक

मुरजवत राजा नप जतरथ ॥ उनके सुत दधराई ॥

अत-इनि श्री हरजस सपुरणम् लिपतु साध विमनोई ॥ गाव भवानीपुर ॥ समत ॥
१८६१ रा मितो भासा यदि नाम ५ । वार रवि ॥ साध श्री रावलजी का गिप्य
कसोणम ॥

१४५ होमपाठ । अपूर्ण । पत्र सख्या-६ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हागिया-
दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८ । लिपि-
पाठ्य । निरिवाल अनुमानत उन्नामवा गता श्री पूर्वादि । लिपिकार अज्ञात । प्राप्ति
स्थान-लोहावट गावरा । इसम इन रचनाओं का सग्रह है -(क) विष्णु अठाईग
नाम स्तोत्र । (ग) एह न्योही रामायण । (ग) विष्णु गतनाम । (घ) देवाधिदेव
स्तोत्र । (च) पारबती ईश्वर सपाइ गोत्राधार । (च) वसुदेव के २५ नाम । (छ) आदि

बसावली । (ज) पचीस नाम । (झ) विवरस्य (अपूर्णा) ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अत्रु न उवाच कितु नाम सहस्राणि जपत च पुन पुन
अत्र-हलिन को भारग छाडि क पलित यो ले जाहि तेरवो गुर पापो पापडो ठग चोर
चोइसा को सायो साई राजा हेत कीयो

१४६ बालक मन तथा बडी नुवण । पत्र मख्या २ । देशी कामज । आकार-८७५×४ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति २७-३० ।
लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात ।
प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-॥ बालक को मत्र ॥ उँ सबद देव निरजन ताह इछया त भए अ जन
अत-विष्णु भणियो विष्णु मन रहोयो तेतीस कोडि पार पढु ता साच सतगुर की
मत्र कह्यो इति श्री बडी नुवण सपूर्ण १

१४७ जाभजी की आरती, विष्णुदास रचित । छद-६ । पत्र मख्या-२ । देशी कामज ।
आकार-६×४ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ६-७ ।
अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत
१६०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साधरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ आरती जय जय श्री जगेश्वर देवा—

अत-मुद्ध सच्चिदानंद धन जभ लीन अवतार

विष्णु नाम उपदेस कर जीव किये सब पार १

१४८ हिंडोलणी, हीरानंद कृत । छद-८ । पत्र-१ । आकार-६×४ इंच । हाशिया-
दाएँ, बाएँ-एक इंच । कुल २० पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३६-३६ । लिपि-
सुवाच्य । अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात ।
प्राप्तिस्थान-पीपासर साधरी ।

आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ लिपत हिंडोलणी

दूदो देसोटे गयो मन म धर्णो सधीर ।

अत्र-ज्ञानण रायचंद्र जसा पचायण सबद का आचार

हीरानंद की अरज ऐती सगत पार उतार ८ । हिंडोलणी सपूर्ण ॥ १ ॥

१४९ भवरो, रामो कृत, छद-११ तथा वतीम लक्षण । देशी पत्र-१ । आकार-६×४
इंच । हागिया-नाम मात्र को । कुल १६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६ ।
लिपि-पाठ्य । सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-
पीपासर साधरी ।

आदि-श्री विसनजी लिपते भवरो राग मलार ॥

जा घलीया देवजी भवरो अवतरहो

अत-बुद्धि प्रवासवत ३१ परवेदन लपन हार ३२ इति वतीम लछन सपूर्ण

१५० सध्या यदन मत्र । देगी पत्र-१ । आकार-९×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन
इंच । कुल १० पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३३ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-

अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-नागपुर सायरी ।

आदि-श्री विष्णुयेनम ध्य सध्या यदन मत्र उं विष्णु विष्णु तु भग रे प्राणि
अन्त-साध सतगुरु को मत्र बहियु १ । इति श्री जम तांनु गवाग् माया वन् मत्र
धूम ११ ।

१५१ उमाहो, बोलहोजी कृत । छन्द-२१ तथा पतयो, आलमजी कृत, छन्द सख्या-१० ।
पत्र सख्या-२ । देगी कागज । आकार-६×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-एक
इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपवित्र-२८ ३१ । लिपि-सुपाठ्य । निवि
काल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पासा
सर सायरी ।

आदि-श्री विष्णुजी सत्य छ लिप्यते उमाही

बाबो जांबू दीपे प्रगटयो चौहचकि कीयो उजास ।

अन्त-अतही सुहायो मेरो साहियो पीय मेरो प्रम बयाल

आलिम प्रमूजी रो लाडिलो गिरधरलाल गुवाल १०

१५२ पोयो, जिल्द अथी । देगी कागज । आकार-६, ५ ५×६ २५ इंच । हागिया आधा
इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-२१-३१ । अक्षर-प्रतिपवित्र-१६-२२ । परमानन्दा, प्रम
दास और हरजी बगिहाल द्वारा सवत् १८१७ से १८३३ के बीच लिपिबद्ध । लिपि-
पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा । इसमें य
रचनाएँ हैं —

(क) पहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द सख्या-५६६ । लेपतु परमाण्ड ॥ पं-
नारथी देवजी रा चेला तालाका ॥ समत १८१७ ॥ अये मीती भादवा बन् ४ । (ख)
ग्यान महातम, सुरजनजी कृत । छन्द सख्या-२३४ । (ग) कथा मोहमरदी, जन जप
धाय कृत । छन्द सख्या-११४ । (घ) कथा ग्यानचरी, बोलहोजी कृत । छन्द-सख्या-
१३३ । (ङ) ब्याहलो विष्णुजी को । पन्म कृत । छन्द सख्या-२४१ । (च) आरती,
पदम कृत, छन्द-६ । नवरम लाल विहारी । १ । टेक । (छ) कथा अहदावणी अहमनी,
डेल्ट कृत । छन्द सख्या-७१७ । (ज) कथा यहसोवनी, केसोजी कृत । छन्द सख्या-७३८
(झ) धुचौरत, जनगोपाल कृत । छन्द सख्या २१४ । (ञ) कथा इमकदर पानिसाहनी,
केसोजी कृत । छन्द सख्या-२१४ । लेपतु परमाण्ड बचनारथी देवजा का चना
तेलाका समत १८३३ मगसर वद १३ । (ट) सायी-सख्या-६० । (ठ) अथ रामा
यण मेहोजी कृत । छन्द सख्या-२७१ । (ड) राम चौरत, थापन सुरजनजी को कही
कवत ९१ ॥ दुवाला ५९ ॥ सवदका १० ॥ दुहा १९ ॥ कु ॥ ३६१ ॥ घड चौपद ॥
(ड) गोत्राचार आदि ।

आदि-श्री विसनजी मति सही ॥ तपतु पहलाद चौरत राग मार
दुहा ॥ नारायण पहली नउ ॥ सामो सरव मुजाण ॥

अत-हरावतजी अरुनी का पूत पवन का नाती बजर की काछ बजर का लगीटा
या चल ज्यू हरावत जती की गिजा चल ज्यू ॥

१५३ गुटका । फोलियो-१०६ । देशी कागज । आकार-६ ७५×४ ५ इन्च । हागिया-
दाएँ, बाएँ-पीन इच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१९-२१ । थापन
रासा द्वारा स० १६०७-०८ मे लिपिवद्ध । लिपि-कही कही अस्पष्ट पर साधा-
रगत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री वररीराम थापन, मुकाम । इसमे ये रचनाएँ हैं -
(क) ह्रीडोलणो, होरानद वृत्त, अपूर्ण । छ ७ स०-५ । (ख) असतुती अवतार की
गोकलजी वृत्त । समत १९०७ मीती दुतीय वसाव सुद ७ दसकत थापन राग रा
छ । (ग) छन्द गोकलजी के । सख्या-३२ । (घ) प्रह्लाद चिरित, केशीजी वृत्त ।
अपूर्ण । छन्द सख्या-४७६ । (ङ) वायक श्री जाभजी का (सबदवाणी)-प्रमग समत ।
अपूर्ण । केवल ४४ मबद ।

आदि-थी गणेशायनम दुदो देहोड गयो मन म धनी सघोर ।

कु व ऊपर नीरघोयो औ जुग तारण पीर १ ॥

अन-डडत डडो मुडत मुडो ॥ मुडीन माया मोही कीसी ॥

अमी बादी बादे भुला ॥ काय न पाली जीव दयो ४४

१५४ पोथी । खडित और वृद्धित । देशी कागज । आकार-८ ५×३ ७५ इच । हागिया-
दाएँ, बाएँ-पीन इच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-९-१६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१६-२४ ।
सवत् १६४० म अमेद थापन द्वारा लिपिवद्ध । पत्रो के आपस म चिपके होन और
पानी गिरन से लिपि यत्र तत्र अस्पष्ट । प्राप्तिस्थान-श्री महीरामजी धारणिया, सग-
रिया । इसमे ये रचनाएँ हैं -(क) कथा जसलमेर की, बील्होजी वृत्त । छन्द सख्या-
१५४ । (ख) कथा चित्तौड की, केशीजी वृत्त । अपूर्ण । बीच के दो पत्र निकले हुए
हैं । (ग) कथा मेडल की (अपूर्ण) । (घ) औनार कथा, बील्होजी वृत्त । (ङ) बाल
लोला, केशीजी वृत्त । (च) कथा गुगलिये की, बील्होजी वृत्त । (छ) कथा पुलजी की,
बील्होजी वृत्त । समत १६४० मीती सावण सुद ११ लीपी वार मोमदार थापन
सोभजी र सौप्य सुत अमेद । (ज) भेटवाल्लों के नाम । (झ) इसकदर की
कथा, केशीजी वृत्त । (ञ) कथा श्रेणपुर की, बील्होजी वृत्त ।

आदि-थी वीसनजी मत सही ॥ लीपनु कथा जमलमेर कि राग आमा दुहा ॥

सतपुर आगल्प बीनती करे घेल गु पाय ॥

राह कारण्य गुर बीनऊ ॥ आवर दयो समझाय ॥ १ ॥

अत-सतगुण सेती धाद करि ॥ कदे न जीतो कोय ॥

बीहल कह सेवा करी ॥ नवे नवे नेजम होय ॥ ६३ ॥ दुगपुर की कथा
सपुरण ममापना गाव धाम मुकाम मधे पोथी पोथी ।

१५५ कथा इसकदर की, केशीजी वृत्त । छन्द सख्या-१९२ । खडित । पत्र सख्या-१३ ।
कागज । आकार-८ २५×३ ७५ इच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पीन इच । पक्कि-
प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-३१-३३ । लिपि-पाठ्य । सवत् १८७० म भग

वानदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भालारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत-
खेडा ।

आदि-श्री विसन जा ॥ लिपतु क्या इमक दर की ॥ राग सारठि ।

दाहा- श्री पति पहली स्थवरिये ॥ अलय अपार अनत ॥

झभ गुरु जल थल रहै ॥ भव भाजण भगवत ॥ १ ॥

अत-केस क्या कही कर जोडि । जावगवणि घुकावो षोडि ।

जो यह क्या सु ण वित लाइ ॥ सत करि मान सुरगे जाइ । १९२ ।

इसकदर की क्या सपूरण समापिता ॥ लिपत साध श्री हरकीसन सा जी का वता
भगवनदास ॥ समत । १८७० । बार झतवा मोती जेठ सुदी सातू ७ ॥

५६ अमावस्या महात्म्य क्या, मयाराम वृत । छन्द सख्या-१४४ । खडित शोर फटा
हुई । पत्र सख्या-१० । देशा वागज । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाए, बाए-
एक इच । पवित-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३८ । लिपि-पाठ्य । सक
१८८४ म सूरतराम द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई
मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ मावसरी क्या लिपत

कु डलिया-प्रथम बडू गुरदेव कू द्वितिये ब डू सथ साध

विष्णु ब डू पुन तीसर जात मिटत जु व्याध २

अत-सोस धरणि धरि करत हू नमसकार सो बार

इष्ट देव मम झभ गुरु लीला हित जवतार १४४ । इति श्री महाभारत था
वृष्णाजुन मवादे अमावस्या महात्म क्या मयाराम विवताया सपूरणम् १ निपत
साध था गयारामजा का चना सूरतराम समत १८८४ रा मितो मिगथ वरि ५
बार गनागर ॥

१५७ इस अवतार, रचयिता-अज्ञात । छन्द-१० । पत्र सख्या-२ । देशी वागज । आकार-
६×४ इ च । हाशिया-दाए, बाए-पान इ च । पवित-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति-
पक्ति-३८-३६ । लिपि-मुपाठ्य । निपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग ।
निपिकाल-अज्ञात । एक १० छन्दों के पदचात ५ छन्दोंक सस्कृत के हैं । प्राप्तिस्थान
पीपार माथरा ।

आदि-श्री नमस्तरायनम अथ दम अवतार लेपन आडू अनाडू सिष्टे न भवण
अत-इति दम अवतार पदत सूनते गगा सनान फल सभते सथ पाप मुचते मुण
सोह गणने । अथ अवतार मम सपूरण ॥ १० ॥

१५८ घूमर, ऊगेराम वृन तयो पत्र कविन । आकार-७×४ इ च । हाशिया
नग है । कुन २० पक्तियां । अक्षर-प्रति पक्ति-१३-१७ । लिपि-पाठ्य । अनुमान
नव मवतू १६०० के लगभग लिपिवद्ध । लिपिकाल-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-नागपुर
माथरा ।

आदि-अथ घूमर विष्णु सरय गुर भरसन इष्ट जास्या निव घूमर श्रीत विष्णोई के मा

अन्त-पाप न कर रे पिरांणीय्यां आक्षर तो दिन उपसी ॥ १ ॥

१५९ १ देशी पत्र । आकार-१० २५×४ २१ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल २४ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३१ से ४१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) विष्णोई घम, ऊदोजी कृत । छंद-३ । (ख) सायी उ डारय की, रायचंद कृत । छंद-४ ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ जल छाण र लीज ॥

अत-कव रायचंद हरि नाव लीज अत चित्त रहोजीय

जीवड सहारण विष्णु मिलीयो भूधि धीरज कीजीय ४ ॥

१६० आदि वशावली, लखक-अज्ञात । देशी पत्र । सफ्या-२ । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से एक इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३६-४० । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकाल-उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध । प्राप्तिस्थान-महत्त रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-श्री विष्णुवे नम अथ आदि वशावली लिख्यते प्रथम आदि विष्णु १

अत-मुक्ताजी क जगनाथजी जगनाथजी क कुमलोजी कुमलजी क छवुजी छवुजी के दलोजी

१६१ बडी नवण । देशी पत्र-१ । आकार-८×४ २५ इ च । हाशिया-नाम मात्र की । कुल ११ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ अथ निवण ॥ विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी ॥

अत-साच सतगुर मत्र कहोयो ॥ १ ॥ इति श्री वडी निवण ।

१६२ पतीस पुह, लूर एक मीठुदास कृत १ हरजस । देशी पत्र-१ । आकार-६ ७५×३ ७५ इ च । जोण । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इ च । कुल २७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३७ । लिपि-पाठ्य । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी मत छ अथ पुह पतीस की ॥ डुम बाडेट की पुह वुड पीलरी की पुह ।

अत-अनत कोड जाक दावन वीरुमै दाश मीठु + + + + ।

१६३ सध्यावदन मत्र, तारक मत्र तथा अत म २ श्लोक । देशी पत्र-१ । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८ । लिपि-पाठ्य । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुवेनम अथ सध्या वदन मत्र उ विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणि ।

अत-सकला मुर वस भूषणे जनित त्व विमले कुले मया ॥ १ ॥

१६४ पत्र सध्या-३ । देशी कागज । आकार-६ २५×३ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा

मात्र का । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पवित्र-२३-२६ । लिपि-पाठ्य । लिपि काल-अनुमानत सबत् १८७५ के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लाहावट साधरी । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) गुरु महिमा, मुरली वृत्त । (ख) धनि, गंगादास वृत्त । (ग) भजन-२ ।

आदि-श्री गणेशाय नमः लिपितु गुरु महिमा-उपारा सब सतन मिलि कौन बिदारा ॥ अत-६२२ तेरो पोर मुरीद तू जाका अस्तुति करे ॥ ३ ॥

१६५ आरती, ऊदोदास वृत्त । सख्या-२ । दंगी पत्र-१ । आकार-६५ × ३२५ इ. च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ. च । कुल-१५ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित्र-२०-२२ । लिपि-पाठ्य । अनुमानत स० १६०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लाहावट साधरी ।

आदि-आरती बीज श्री जभ गुरु देवा ॥ पार न पाव गुरु अलय अमेवा ॥ टक ॥ अत-पाचमो आरती घट घट वासा । हरि गुन गावें ऊयोदासा ॥ २ ॥

१६६ नुवण । देशी पत्र-१ । आकार-६५ × ६५ इ. च । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित्र-२४-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत उती सबी गताब्दी उत्तरार्द्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लाहावट साधरी । आदि-श्री बीलीनीजी उ सबद गुरु सुर चेला पाच तत मे रह्या अवेला । अत-साच सतगुरु का मत्र कईयो । एतो श्री नुण सपूरण ।

१६७ देशी पत्र-१ । आकार-८२५ × ४ ट. च । हाशिया-नगण्य । कुल २३ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित्र-२४-२६ । लिपि-पाठ्य । लगभग स० १६०० म लिपिवद्ध । लिपि कता-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-महत्तरा रणोडोडासजी, आधूणी जागा, जामा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) हरजस-१ । सुपसान वृत्त । छ द-६ । (ख) जाम्भोजी की आरती, ऊदोजी वृत्त । छ द ५ । (ग) भजन-१ कबोर वृत्त ।

आदि- ॥ श्री विमल जा ॥ त्रिपन हरजम गग त्रिलावल ॥ ज गगा जुग पांवतो । भागीरथ आणी ॥

अत-दास कबोर जुगत कर जोडी उर की उर मै चीनी । ३ ।

१६८ बगावली, लपट-अज्ञात । दंगी पत्र सख्या-२ । आकार-९ × ४ इ. च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पान इ. च । पवित्र-प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर-प्रतिपवित्र-३२-३६ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सबत् १९०० के आसपास । प्राप्तिस्थान-पीपासर साधरी ।

आदि-अथ आदि बगावली लिखत प्रथम आदि विष्णु १ विष्णु के ब्रह्मा सुत २ अत-अठार गत निनाणव वद पाच मधु मास

हरिकृष्णजी हरितारण भयो समाप वास ४ थी

१६९ बगावली (सिद्धजी की परम्परा), तथा बालक मंत्र । दंगी पत्र-१ । आकार-९ × ४ इ. च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इ. च । कुल १७ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित्र-२६-३० । रामदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत स०

१९०० के आसपास । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ अथ प्रथम भामाजी कि आदि वशावली लिपत ॥ प्रथम
आदि विष्णु १ ।

अत-विष्णु मत्र कांन जले छुवा गुर फुरमाण विष्णोई हवां ॥ १ इति सपूर्णम् ॥

- १७० केसौजी कृत १ गीत तथा वशावली (वील्होजी की परम्परा) । देशी पत्र-१ । अपूर्ण ।
इस पर पत्र सस्या ४ लिखी हुई है, आरम्भ के ३ पत्र अप्राप्य हैं । आकार-८×४
इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल १९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति-
२२-३० । लिपि-पाठ्य । अज्ञात लिपिकार द्वारा स० १६०० के आसपास लिपिवद्ध ।
प्राप्तिस्थान-महत रणछोडदासजी महाराज, आयूरी जागा, जाम्भा ।
आदि-तिरय बडो कीयो कल डीकम जन तारण जाभेसर जाइ
अत-ग्यानजी का चेला अ मरदासजी ॥ १ ॥ फतोजी । २ ।

- १७१ पत्र सख्या-३ । (४ पत्तो मे से दूसरा अप्राप्य) अपूर्ण । मशीन के वन कागज । जीए
और खडित । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । लिपि-सुपाठ्य
लिपिकार-सभवत स्वामी ब्रह्मानदजी । लिपिकाल-अनुमानत सवत १६५० । पक्ति
प्रति पृष्ठ ६-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-२६ ।

प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, रावतखेडा । इसमें ये रचनाएँ हैं -

(क) घम अ ग, ब्रह्मानदजी कृत-अपूर्ण । (ख) भजन-१, ब्रह्मानदजी कृत । छ-द-
६ । (ग) भजन-१, पदम भगत कृत । पक्ति-४ ।

आदि-६ ॥ श्री गणेशायनम श्री जभेस्वरायनम कृष्णाय गोविदाय नमो नम

प०-मत (विश्वोई पय) के होने का निमित्त

उ०-सतजुग में प्रह्लाद कु वचन दिया था

अत-पदम भग पडवा पाय लागु चदेरी नु दाग लगायसी ॥ ४ ॥

- १७२ साध्या-वदन मत्र तथा तारक मत्र । देशी पत्र-१ । आकार-८ ७५×४ इ च ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । कुल १९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति-३८-३७ ।
लिपि-सुपाठ्य । सवत १९३८ म सतोपदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू
साथरी ।

आदि-श्री विष्णुवे नम अथ स या वदन मत्र उ विष्णु विष्णु तू भए रे प्राणी
अत-सवत १६३८ मिति श्रावण शुद्ध ४ लिपिकृत मसतोपदासन लालासर की
साथरी मध्ये श्री रस्तु पठणार्थ स्वयम् विष्णुवनम उ तत्सत

- १७३ आरती-१, भजन-४, साहब्रामजी कृत । मशीन का वना पत्र-१ । जीए, खण्डित ।
आकार-१६×५ इ च । हाशिया-नही है । कुल ७५ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति
१६-२१ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानत सवत १९५० के आसपास ।
प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-० रामजी लीपते आरती कु कु म रा पगल्या पधारो गुरु जभे देव

अत्र-माहावराम सरन सतगुरु की धारे धरना मैं हूँ मारो मीग ५

१७४ साखी-१, रचयिता-अज्ञात । अपूर्ण । मीग का बना पत्र-१ । आकार-१२×६७ इंच । हागिया-नगण्य । कुल पत्रियाँ-३८ । अक्षर-प्रतिपत्रित १०-१५ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागजू साधरी ।

आदि-श्री जम्भ गुरुवे नमः लिपितु सागरी

दोहा सत्तनाराण सियरीये तियरां सवा सहाय

ब्रह्म सुता सु विनती अक्षर छो समझाय

अत-अहो जोर न वेस्यां जाणो ब गारां किमा बलाणो । डेर

१७५ छप्पय ६, गोविंदरामजी वृत । मीग का बना पत्र-१ । आकार-१०×६५ इंच । हागिया नगण्य । कुल पत्रियाँ-३८ । अक्षर-प्रतिपत्रित १६-१६ । लिपि-पाठ्य लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागजू साधरी ।

आदि-श्री रामजी अक्षयत अल्प अ मदा नांव बकुट अपड जोत जाहां राजीय

अत्र-गोविंदराम कहै जभ कु सीधरो हीन चीत लाय भरम न भुलो भाईयो ६

१७६ पद-४, सुरतराम वृत । अपूर्ण (आदि व २ पद नहीं हैं, कुल पद सख्या ६ है) । प्रात-पत्र सख्या-२ । देगी कागज । आकार-६२५×४२५ इंच । हागिया नगण्य । पत्रित-प्रति पृष्ठ ६ । अक्षर-प्रति पत्रित २० । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानत सवत् १६०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागजू साधरी ।

आदि टेक ॥ दरस करत दिल को भ भाग ॥ मन में हूँ भगन भई ॥ १ ॥

अत-जन सुरतराम ऐ हिरद धारो ॥ ऐहीं ग्यांन सतगुर का बिचारो ६ ॥ पद ॥ ६

१७७ हिंडोलगो, हीरानंद वृत । पद ८ । १ देगी पत्र । आकार-६×५ इंच । हागिया नगण्य । कुल ३८ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपत्रित-१६-१६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानत स० १९०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागजू साधरी ।

आदि-रा विमनजी सन सही ॥ लीपते हीडोलगो

दोष सील सजम पभ रोपे नाव बडो धारि ।

अत्र हीडोलगो सभरथल भूल साथ ८ इती हिंडोलगो

१७८ देगी पत्र-१ । काग, गडित । आकार-१०७५×५७५ इंच । हागिया-नगण्य । कुल ५७ पत्रियाँ । अक्षर-प्रति पत्रित-१६ २२ । लिपि पाठ्य । अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । दो भिन्न हाथों की लिखावट में प्रतीत होना है किसी वी प्रति का यह एक पत्र है । प्राप्तिस्थान-जागजू साधरी । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) साखी १ । ४ पद, केसौजी वृत । (ख) साखी-४, रचयिताल वृत । (ग) कवित्त २, बोलहोजी वृत ।

आदि- + + जानेतर जीवा धणो दावार भव भाजण जीवां भणी २

अन-फेई २ कुपर कुयाव ॥ व निरताह न जाण ।

घोरी लाव चित्त साह सू परचो ।

१७६ भजन-१ तथा लावनी-१ । रचयिता-शीतल । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-१३ × ४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ३५ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१५-१८ । लिपि-मुपाठ्य । सम्भवत रचयिता ही लिपिकार है । अनुमानत सवत् १६५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी । (पत्र यत्र तत्र फटा हुआ है) । आदि-ओ३म् भजन न० १ ज जै गुरु जभे स्वामी कलि कलुप विनाशन हारे ॥

अत-सच्चा प्यारा विशनोई घम सिखाया शीतल कह फिर से घेद माग विस्तारे
१८० जोवपुर के महाराजा तहर्तसिंह द्वारा जारी किए गए, विष्णोई घम सबधो सवत् १९२३ के आज्ञा-पत्र की नकल । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-२० × ६ ५ इंच । ३५ पंक्तियाँ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।

१८१ गुरुदेव महिमा, साहबरामजी कृत । अपूर्ण । आदि के ५ पत्र हैं । मशीन के बन वागज । आकार-६ २५ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१२-१३ । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ श्री गणेशाय नम ॥ दो० ॥ गुरु गरवा सुमेर स्म ॥ गहरा समद समान ॥

मीठा इमूत उदिय इव ॥ शागव नेना भान १

अत-पिपा छिपा ॥ सजन रेना ॥ पर्सा अति देव गुरु रत ॥

विद्व उधा ॥ घना कुवा ॥

१८२ हरजम-१, साहबरामजी कृत । अपूर्ण । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-६ २५ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१७-१८ । लिपि-मुपाठ्य । लिपिकार-साहबरामजी । अनुमानत सवत् १६२५ के लगभग लिपिवद्ध । यह २७ वा पत्र है । इसके पहले के २६ और पश्चात् के पत्र अनुपलब्ध हैं । प्राप्तिस्थान-श्री धोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-ज ज जभ गुरु जग जाना मुक्ति सोई मुकामा टेक

अन-साहबरामा भक्ति अकांमा पायो पद निरवाना ६

१८३ कवित्त-१, साहबरामजी कृत । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-६ ५ × ४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ८ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१६ । लिपि-मुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६५० के लगभग लिपिकृत । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।

आदि-॥ श्री रामजी कवत काहां गनपत को ग्रेह कहो काहा बल्य नारायण

अन-साहब पुछ पडितां काहां तेज पुज अस्यां १

१८४ प्रवाना (परवाना) तथा पाना, साहबरामजी कृत । पत्र सख्या-४ । देगी वागज । आकार-६ २५ × ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-

७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१६ । लिपिकार-शाहबरांमजी । लिपिकार-सवत् १६५० से पूर्व । प्राप्तिस्थान-श्री धांरलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अथ श्री प्रवना प्रारभन उ ह्य ॥ निरजन देहा सोह थुति माया है ॥

अ-सर्वों शब्द समाप ॥ प्रयाप हात है ॥ विष्णु ॥ इति श्री गतपान ममात् ॥

१८५ शार (सार) बलीसी, साहबरांमजी कृत । छन्द मस्या नही है । मदीन के बने कागज । पत्र सख्या-१८ । आकार-६ २५×४ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपिन-१३-१५ । लिपि-मुपाठय । शाहबरांमजी द्वारा लिपिकृत । अनुमानत सवत् १६५० से पूर्व लिपिकृत । प्राप्तिस्थान-श्री धांरलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । आदि-॥ ६ ॥ प्रमात्मप्रलोक तें आतम दीनों का

अथ गात्र में शाहबरांम सतपुर भये अघार ?

अ-लिपिकृत शाय शारी ॥ गोविंदरामजी का सिष्य ॥ शाहबरांम ॥ ? ॥

शारवतीसी यहै कृताया शाहबरांम ॥

१८६ अमर चालीसी, साहबरांमजी कृत । कुल छन्द मस्या नही दी है । देसी कागज । पत्र सख्या-१३ । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-१८-२१ । श्री गणेशराम द्वारा अनुमानत सवत् १६५० से पूर्व लिपिकृत । प्राप्तिस्थान-श्री धांरलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ ई ॥ श्री गणेशायनम ॥ अमर चालिसि प्रारभने ॥ श्री अण्डकाराय नम

उ बावन अ गुर बुद है ॥ गई दशक द्वार ॥

अत-शाहब मोला स्थान का मार करे मदान ईती श्री अमर चालिसि गाथ गात्र बरांमगा विरचतेया ॥ लिपिकृत शाय शाहबरांमजी का सिष्य गणेशरामण लिपित सपुरणम् भवेत ॥ उ तत शत ।

१८७ शार शब्द गुजार, साहबरांमजी कृत । छन्द मस्या-१८७ । मदीन के बने कागज । पत्र सख्या-५६ । आकार-६ ५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१४-१६ । लिपि-मुपाठय । सवत् १६३६ म शाहबरांमजी द्वारा लिपिकृत । (बीच के कई पत्र गणेशरामजी के हाथ के लिखे हुए हैं) । प्राप्तिस्थान-श्री धांरलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अथ श्री गार गज गुजार प्रारभे श्री अण्डकाराय नम ॥ श्री गुरुभोनम ॥

पावर विगई अस्त मत निदक जड अज्ञान

अ-समत १६३६ रा मीनि चत मुदि ११ वार वृस्तवार सपूरणम् । कृताया गाथ

श्री महतजी श्री १०८ गोविंदरामजी का सिष्य शारी श्री शाहबरांमण गाथ मरदो मध्ये-

१८८ आरतो और भजन । देसी पत्र-१ । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति ३०-३५ । लिपि-मुपाठय । लिपिकार-अनुमानत म० १६५० के आसपास । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-

श्री धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई दुनारावाजी । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) आरती-
२ (डूमरी ऊदोजी कृत ह) । (ख) भजन—३ कबीर, रिचदास तथा नामदेव कृत ।
आदि—श्री गणेशायनम लीपत चारनी आरती कौज श्री जभ गुर देवा—
अन्त—रामजी का हर भू ण नामदेजी गाव ५ ॥

१८६ पुस्तिका । हरजस श्री आरतिया । मंगीन के वन कागज । पत्र सख्या—१७ । खडित,
जोरा । आकार—५ ५×४ ५ इंच । हाशिया—नगण्य । पक्ति—प्रति पृष्ठ—७ । अक्षर—
प्रतिपक्ति—१३—१५ । लिपि—मुपाठ्य । लगभग सवत १६५० के असपास लिपिवद्ध ।
लिपिकार—अज्ञात । प्राप्तिस्थान—विष्णोई मंदिर, काट । इसमें माखनजी, मोट्टुदास,
ऊदोजी, मुरारी और मोतीराम की आरतिया, तथा कबीर, रिचदास और परमा-
नन्दजी के हरजस हैं ।

आदि—जाम् श्री गणेशायनम श्री विष्णु जी सहाय जिभीया जप ले जभ सवेरा ॥
अन—इति श्री ठाकुरजी की आरती स्मरणम् ॥ १ ॥ १७ ॥ आरती हैंई समाप्त ।

१९० पोथी । फोलियो सख्या—१०१ । देसी तथा मशीन के बने कागज । खडित और फटे
हुए । आकार—१०×६ ५ इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—पौन इंच । पक्ति—प्रतिपृष्ठ
१६ । अक्षर—प्रतिपक्ति—१६—१८ । लिपि—पाठ्य । सवत १६४५ म ५० कृपाराम
द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान—लिपिकार के पौन से, जागलू । इसमें ये रचनाएँ हैं—
(क) राग—रागिनी वणन, (ख) स्वमणी मंगल । विभिन्न राग—रागिनियों के अतगत
छंद सख्या—पृथक् पृथक् दी गई है ।

आदि—अथ राग रागिनी वणन ॥ कवत छप

+ + भरु घटका च्यार ४ रात रहिया सु सोध

अन्त—सवत १९४५ वर्षे गाके १८१० चन मासे गुवल पक्षे तिथी चतुर्थी ४ भृगुवारे
पृथम पहेर जगलगढ मध्ये निपीकृत प्रोहित कृपाराम स्वपठनाय—।

१९१ पुस्तक । मशीन के बने कागज । फोलियो सख्या—१२८ । आकार—६ ५×६ २५
इंच । हाशिया—दाएँ, बाएँ—पौन इंच । लिपि—मुपाठ्य । पक्ति—प्रतिपृष्ठ—१६ ।
अक्षर—प्रतिपक्ति—११—१४ । विहारीदास द्वारा सवत १६७२ मे लिपिवद्ध । प्राप्ति
स्थान—श्री साधु मिट्टारामजी महाराज, गुडा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) साखिया,
सख्या—८० । विभिन्न कवियों द्वारा रचित । (ख) प्रह्लाद चरित्र, ऊदोजी । छंद
सख्या—४०१ ।

आदि—श्री जमगुरुवे नम ॥ अथ साखी लिख्यते ॥ राग सुहन ॥

साथे मोमणो कियो अलोच । जमो रचाबीयो १ ॥

अन—इति श्री प्रह्लाद चरित्र ऊधवदास कृत समाप्तम् लिखित साधु विहारीदास
चेला विष्णु दानजी का १६७२ अपाठ मुदी १४ गाव भगवान्‌ली में चौधरी लामू
बणियाल के घरा १ ।

१९२ रजिस्टर । पृष्ठ सख्या—१४० । मंगीन के वन कागज । आकार—१३ ५×८ इंच ।
श्री गणेशायनम तथा श्री नन्दमोनारायणजी का सवत १६४६ स १६५० के बीच

लिखा हुआ। इसमें श्री साहब रामजी के सग्रह की प्रकाशित और हस्तलिखित पुस्तकों की सूची है। साथ ही साहब रामजी, ग्रहानन्दजी तथा जम्भसार सबधी महत्वपूर्ण सूचनाएँ भी हैं। प्राप्तिस्थान—श्री धोंकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

१६३ जम्भसार आदि। साहब रामजी कृत। देशी वागज। आकार—१२×६ इंच। हाशिया—दाएँ, बाएँ—सवा इंच। पकित—प्रतिपृष्ठ—११। अक्षर—प्रति पक्ति—२४—२७। साहब रामजी द्वारा सवत १६४४ स १६४७ के बीच लिपिवद्ध। लिपि—सुपाठ्य। अपेक्षाकृत मोटे अक्षर। प्राप्तिस्थान—श्री धोंकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) सतलोक पठु घने का परवाना। (ख) सार शब्द गुजार, ५ प्रकरण। पत्र १—२८। (ग) सार बत्तीसी—छन्द ४१। पत्र २६—३४। (घ) अमर चालीसी—छन्द ४४। पत्र ३५—४१। (ङ) महामाया की स्तुति। छन्द—३७। पत्र ४१—४७। सवत १६४४ मितो आसोज वदि ६ को साहब रामजी द्वारा स्वपठनाथ गाव नादडी में लिपिवद्ध। (च) जम्भसार। २४ प्रकरण, जिनकी सूची अप्रलिखित है—

प्रकरण	प्रकरण — नाम	रूपक—सख्या	कुल पत्र—सख्या
१	२	३	४
—	(विषय—सूची)	—	६
१	वशावली वरण नाम	४२	१०
२	प्रल्हाद चरित्र आख्यान	५०	२४
३	सनतकुवार चरित्र कथा	२०	१२
४	अवतार स्तुति	४०	१८
५	अवतार चरित्र ग्रंथ	५७	१५
६	वाल चरित्र कथा	६८	२७
७	सिकंदरशाह पातस्याह परच्या नाम	१७२	५४
८	विष्णोई स्थापना	५६	२७
९	भक्त विडदावली	७८	३६
१०	राज उपदेश	८६	३०
११	जोगी उपदेश	१२७	२६
१२	रावन प्रबोध	१४६	४७
१३	नद राजिद्र उपदेश	१४४	२७
१४	जम्भ सागर महात्म वरण	१६७	५७
१५	भूत पतटणी—दव वस्तव्य	१३६	४६
१६	महाप्रलय	६६	३६
१७	जोगीशाख्यानो	७८	५६
१८	वक्त्र—विभाग	२००	५८

१६	जाम रमणोवो -	७८	४०
२०	भक्तगिरिगत प्रकाश	४३	२०
२१	जयों महात्म्य वरण	५७	२९
२२	जमचलण मद्र अस्यानो	५१	७८
२३	(कोई नाम नहीं)	२८२	७१
२४	नीत घरम महारम सयुक्त	१६८	६७

आदि-॥ ६ ॥ श्री प्रमात्मने नम ॥ श्री गुरुभ्योनम ॥ दलोक ॥ प्रणम्य प्रमात-
मान ॥ प्रणम्य पुरुहोतम ॥ प्रणम्य प्र ब्रिह्म प्रणम्य परापर ॥ १ ॥

मन्त-इति श्री जम शारेण ॥ शाय श्री शाहवरामेण ॥ वृरचतेमा ॥ नीत घरम-
म्हात्म सजुक्तो नाम चञ्चुवीसो प्रकरण सवत १६४७ रा मीती जेष्ठ सुदी १२ लिपि
कृत शारी शाहवरामेण ।

१६४ देशी पत्र-१ । अपूर्ण । खडित । आकार-८ ५×४ इ च । हाशिया-नाम मात्र को ।
कुल १२ पक्तिर्या । अक्षर-प्रतिपक्ति-३१-३२ । लिपि-पाठ्य । सवत १८५० के
लगभग लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमें किशोर
शौर केसौजी के ८ छन्द हैं ।

आदि-हू त ओई दोर करत समानी सोर बाहु नै कहत कहा तेरो के गयो (केसौजी)
अन्त-धरणी उर जय पाव न धरह बलह बलहू इन पावन कू ॥ ८ ॥

१६५ देशी पत्र-१ । फटा हुआ । आकार-११ ७५×८ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन
इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १७ । अक्षर-प्रतिपक्ति १८-१९ । लिपिकाल-अनुमानत सवत
१६०० के आसपास । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठ्य । इसमें लालदास का बारह
मासा तथा पीतांबरदासजी का एक भजन है । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-ये सो मैं न जोऊ गी अरो अरो उन स्याम सु दर बिन

अन-अन पिताबरदास जीवन जन को जस बढाव ॥ ५ ॥

१६६ देशी पत्र-१ । अपूर्ण । आदि के १० पत्र अप्राप्य हैं । आकार-९×४ २५ इ च ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल ९ पक्तिर्या । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३४ ।
लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग ।
प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमें ऊढोजी के २ भजन हैं —

आदि-गग काफी ॥ घर आवोजी मीठा बोला ॥ प्यारी तमारी वातीया ॥

अन्त-ऊधवदास क रहो प्रभु पास ॥ नित नबला पावणा ॥ ६ ॥

१६७ देशी पत्र १ । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल ६
पक्तिर्या । अक्षर-प्रति पक्ति २७-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमा
नत स० १९०० के आसपास लिपिवद्ध । इसमें मोट्टुदास के दो छन्द हैं । प्राप्तिस्थान-
लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ होता एक घोरो पापन का घोरो अंत का अघोरो

अन-कहै दास मिठु जब धोलदी किवारी है ॥ २ ॥

१९८ इतक दर पानस्या की कथा-कसीदासजी वृत् । पत्र सख्या-२०८ (१६२+१२) । अपेक्षावृत्त पनला दगा कागज । पत्र सख्या-१० । आकार-१०×५ इच । हांगिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पविन-प्रतिपृष्ठ-१८ । अक्षर-प्रतिपविन २८-३५ । लिपि-पाठय । सवत् १८७८ म परमराम द्वारा लिपियुक्त । प्राप्तिस्थान-श्री पावनराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । १६२ सख्या क परचाण पुस्तिका है-“इति श्री कस्व विष्णुदाया पातगात्र इगकपर की कथा संपूर्ण ॥ समापन ॥ लिपन माध धा हर-किमनरामजी रा मिष्ट परमराम ॥ सवत् १८७८ रा मीनी धन मुनि १५ ॥ वार मगन ॥ श्रीरस्तु ॥ मगलमस्तु ॥ १ ॥” इगक परचाण पुन इगक छूट हूण १२-छट्ट आर हैं ।

आदि-सवत् इस्वपर दादु प्रागरया की कथा ॥ श्री गणगायनम लिपय कथा इगक दर की ॥ राग माठि ॥

दोग-॥ श्रीपति पहली तिथरिय । अलय अपार अनत । नाम गुरु जल धन रहे । भव भांजण भगवत ॥ १ ॥

अन-लेण दण उपज ससार विसन जप्यां तां भोप दधार ।

जेसो वाहै तसो गुण बेद कतेय भगत गुरु भण ॥ ८६ ॥ दादा मोनी ५ पातो ६

१९९ चेतन कथा, सुरजनदासजी वृत् । अपूर्ण । अंतिम दा पत्र-१३ और १४ उपलब्ध हैं । अपेक्षावृत्त पनला दगा कागज । आकार-१०×५ इच । हांगिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पविन-प्रतिपृष्ठ १४ । अक्षर-प्रतिपविन-३८-४५ । लिपि-पाठय । सवत् १८८६ म हरिवृष्णजी द्वारा लिपियुक्त । प्राप्तिस्थान-धोंकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इमम सुरजनदासजी वृत् धम चितावणो क अंतिम १९ स २७ छट्ट ह । पश्चात चेतन कथा है, जिसम ३१ छट्ट हैं, जो पूर्ण है ।

आदि-हरि कू भज हरि का होय ॥ १८ ॥ दुग

अत-इति श्री सुरजनदा की चेतन कथा संपूर्ण ४ लिपन माध हरिकिता सम १८८६ मिति जेष्ठ मुत् ८ ॥

२०० कवित्त, गाविंदरामजी वृत् । सख्या-१८ । पत्र सख्या-२ । देगी कागज । आकार-१२×६ इच । हांगिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । लिपि-मुपाठय । अक्षर-अपेक्षावृत्त मा । पविन-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपविन ३२-४० । लिपिकार-अनात । लिपिकान-अनुमानत सवत् १६२५ क लगभग । प्राप्तिस्थान-श्री धोंकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ ६ ॥ श्री गणगायनम श्री जभेस्वरायनम

पूरण गुरु परमात्मा जभेसर जगदीश ।

आदि पुरय अबचल तु हि तोहि नवाउ सीस ।

अन्त-सरणागत सुप करन कु तुमरो विडव विराज ।

अपनो ही जन जान क कृपा करो महाराज ॥ १४ ॥

२०१ पोथी । ला० प्रति । फोलियो सख्या-५९० (२५+५६५) । बीच से मिली हुई । देगी

कागज, गहवा बादामी रंग। प्राचीन, जीरा, यंत्र-त्रिनिरो से खडित। कही कही आपस में चिपके हुए पत्रे पृथक् करने से फट गए हैं, ऐसे स्थानों अपठ्य है। आकार— 15×12 इंच। हाशिया-सिलाई की आर-आधे से एक इंच। किनारों पर आधा इंच। श्री परमानंदजी वशिष्ठ द्वारा सवत १७६६ स १८१० के बीच लिपिवद्ध। लिपि-साधारणतः पाठ्य। पवित्र-प्रतिपृष्ठ-सामायत—३० (कही कही ३६ तक)। अक्षर-प्रतिपवित्र-२५-२६ (कही कही ३३ तक)। कतिपय पत्रे अपेक्षाकृत मोटे अक्षरों में। इनमें पवित्र-प्रति पृष्ठ-२५-२८ और अक्षर-प्रतिपवित्र-२५-२६। लिपिकारों की रचनाओं का सूचीपत्र दिया है, जिसमें इससे पूर्व की, स० १८ तक की (आदि के फोलियो १ से २५) रचनाएँ सम्मिलित नहीं हैं। फोलियो ५३६ से सूचीपत्र में लिखित रचनाओं के नाम और फोलियो सत्या में कुछ व्यतिक्रम है जो सम्भवतः मिलाई करते समय पत्रों के इधर-उधर लगा देने से हो गया है। आदि अतः कुछ पत्रे निकले हुए प्रतीत होते हैं। लालासर साधरी की प्रति होने से इनका नाम ला० प्रति रखा गया है। प्राप्तिस्थान—श्री महंत रामनारायणजी, रामडावाम।

यह अत्यंत प्रामाणिक और विश्वसनीय प्रति है। इस वृद्ध सक्लन प्रथम निम्नलिखित रचनाएँ हैं—१ छनोसी बारपडी-छंद-३६। २ चौपई, छंद-९ (बारपडी)। ३ जपडी, छंद-१०, ऊदोजी कृत। ४ क्रम ध्रम सवाद, छंद-९५। ५ सुघतानाम, छंद-४३, खेमदास कृत। ६ नाम मजरी, छंद-२६४, नददास कृत। ७ फुटकर श्लोक, ३०। ८ श्लोक-२४। ९ छुटक भाषी, दोह-३६। १० दुहा-दोसट कूट, २२। ११ उदराज का दुहा-१२२। १२ दुहा-१६। १३ फुटकर दुहा-२६। १४ जोग समाध्य, छंद-४०, जन हरिदास कृत। १५ साषी (छंदा की), केसोजी-१, परमानंदजी-३। १६ सोहल, छंद-५, ऊदोजी कृत। १७ हरजस, परमानंदजी-४, जतरसूल-१। १८ दस भवतार का छंद, सख्या-११, केसोजी कृत। ये रचनाएँ फोलियो १ से २५ तक हैं, इनके पश्चात् सूची पत्र है। १९ चौडालियो, छंद-१००। २० समन की साष्य, दोहा-२०। सूची पत्र सहित ये रचनाएँ (१९-२०) पुनः आरम्भ किए गए फोलियो १ से ५ तक हैं। २१ पाटी पाठ की, ८। २२ पाटी की वेगते। २३ पाठा, एकावली-६। २४ पाटी एकाकी-४। २५ चरणायक-८। २६ मोत्राचार। २७ आदे वसा वली। २८ पचीस नाम। २९ विसन पजर। ३० वेसन सते नाम। ३१। विवरिस। ३२ कलस, पाहल। ३३ बालक की मत्र। ३४ व्याह की पीढीया की सुरति। ३५ कलमा नीवज। ३६ फातेमा। ३७ मछली की दवा। ३८ पजनाम। ३९ हरफ। ४० नवण्य। ४१ (सत्या २१ से ४० रचनाएँ-फोलियो २१ तक)। सबद श्री वायक (सवदवाणी), सबद सख्या-१२१। गद्य प्रसंग सहित। पुष्पिका के पश्चात् २ सबद अतिरिक्त।

आदि-श्री वेसनजी सति सही लेखतु सवद श्री शांभजी रा वायक ॥ काच करव नीर रापी कावी माटी का दीवटीया करीय जा जाहि पाणी घतायो ठुकम सु दीया जगाया

बांभण न परचो बीवात्यो आवि सबद बांभो सतगुर की श्री सतगुर धाच ॥ गुर चोहू
गुर चोहि पेरोहित गुर मुयि भ्रम बर्षाणी ॥ जो गुर होयबा सहजे सोले ॥ नारे
विदे ॥ तिह गुर का आलीवार पिछांणी ।

अन-बीसन बीसन तु भण रे प्राणी । एक लाय उज । रतन कया वकुठ बातो ।
जुरा मरणभोव भाज ॥ १२१ ॥ एतो सबद श्री वायक सपुरणो समत १७९६ । सब
दवाणी फोलियो म० २१ मे ४३ तक है ।

४२ साधो—(१) राग सुहब की-१८ । (२) राग घनांसी की-२८ । (३) राग आसा
की-१० । (४) राग मारु की-१५ । (५) राग भुवरो की-१ । (६) राग हस की-
२ । (७) राग मलार की-३ । (८) राग सोरठि की-३ । (९) राग गवडि की-१० ।
(१०) राग रामगोरो की-९ । (११) राग सोपू की ८ । (१२) राग जतसोरी की ३ ।
(१३) उ माही-१ । (१४) असतोतर-१ । (१५) रगौलो-१ । (१६) आंबेली-१ ।
(१७) बाराभासो-१ । (१८) मुष परगास-१ । (फो० ४४ - ८१) ।

“॥ एक सो तेरा प्राय साधो सपुर समापिता समत १७९७ परमाणव बणिहाल लोचो
छ सहो श्री विसनजी सति सहि ॥”

कुल साखिया ११६ हैं किन्तु लिपिकार ने भूल से ११३ बताई हैं । ३ साखियों का
अन्तर, ५४ वीं पर सख्या न लगाने तथा ५६ के स्थान पर ५३ लिखने के कारण है ।
(भाग्ये छद-सख्या लिपिकार के अनुसार दी गई है, तत्पश्चात् कोष्ठक में रचना-
विशेष के आरम्भ होने की 'पाना' (फोलियो) सख्या है) ।

४३ हरजस वील्हजी का-२० । (८१) । ४४ हरजस सुरेजनजी का-४८ । (८४) ।
४५ हरजस केसजी का-११ । (९१) । ४६ सोहलो मुकनजी को-११ । (९२) ।
४७ हरजस और फुटगर-१० । (९३) । आलमजी वृत् । ४८ हरेजस रासजी का-
२२ । (९४) । ४९ दुहा वील्हजी का-२६ । (९८) । ५० दुहा केसजी का-४१ ।
(९९) । ५१ साप्य केसजी की-४५ । (१००) । ५२, साप्य नाटारम की-३० ।
(१०१) । ५३ सापि मुरजजी को-११२ । (१०१) । ५४ असमेध की साये-४५ ।
(१०६) । ५५ चद्रापणां केसजी का-८९ । (१०७) । ५६ छद सुरेजनजी का-
१३६ । (११०) । ५७ छद मुकनजी का-५५ । (११४) । ५८ छद काह चारण
का-५४ । (११६) । ५९ छद तेज चारण का-१६२ । (११८) । ६० गीत सुरेज-
नजी का-१७ । (१२३) । ६१ कवत असु चारण का-१६ । (१२५) । ६२ छपइया
उदनी का-५७ । (१२६) । ६३ छपइया वील्हजी का-४५ । (१३१) । ६४ कुड
सीया बीमन छतोमो-३६ । (१३४) । ६५ कवत परसग का-१३ । (१३६) । ६६
कवत मुरजनजी का-८९ । (१३७) । ६७ कवत गोपाल का-७ कुडनिया ।
(१५५) । ६८ सबइया फुटगर १६ । (१७७) । ६९ कवत बांभजी का १४ । (१७०) ।
७० कवत उपोदाग का-११ । (१८०) । ७१ कवत केसजी का-८१ । (१८१) ।
इनमें गोपाल, वील्हो घोर गढ़ के छद भी हैं । ७२ कवत वील्हजी का २६ । (१८८) ।
७३ कवत फुटगर-२० । (१८९) । ७४ कवत बराठ का-१० । (१९१) । ७५

कवत महाभारत का-१० । (१६२) । ७६ कुडलीया-६ । (१६२) । ७७ सवइया
 पनर तीय का-१५ । (१६३) । ७८ सगीत (के सवइये)-४ । (१९४) । ७९ सव-
 इया फोसनजी का-१२ । (१६४) । ८० सवइया सुरजनजी का-२६ । (१६५) ।
 ८१ सवइया केसजी का-३६ । (१९७) । ८२ मत्र सात तीय काज-७ । (२००) ।
 ८३ कथा प्राय घडावध दुहा-५३ । (२०१) । वील्होजी कृत । ८४ कथा औतार-
 पात १४२ । (२०२) । वील्होजी कृत । ८५ कथा बाललीला ६१ । (२०६) । केसोजी
 कृत । ८६ कथा गुगलीय की-८६ । (२०८) । वील्होजी कृत । ८७ कथा पुल्हजी
 की-२५ । (२११) । वील्होजी कृत । ८८ कथा सचअपरी वेगतावली-५४ । (२११)
 वील्होजी कृत । ८९ कथा लोहापागल की-१८७ । (२१३) । केसोजी कृत । ९०
 कथा इसकदर की-२१२ । (२१८) । केसोजी कृत । ९१ कथा दुणपुर की-६३ ।
 (२२५) । वील्होजी कृत । ९२ कथा जेसलमेर की-१५८ । (२२७) । वील्होजी कृत ।
 ९३ कथा चीतोड की-१६८ । (२३१) । केसोजी कृत । ९४ कथा मेडत की-१७२ ।
 (२३६) । केसोजी कृत । ९५ कथा सस जोपाणी की-१४४ । (२४०) । केसोजी
 कृत । ९६ कथा झोरडा की-३२ । (२४५) । वील्होजी कृत । ९७ कथा उइ अतली
 की-७७ । (२४५) । केसोजी कृत । ९८ कथा जति तलाव की-८० । (२४७) ।
 केसोजी कृत । ९९ कथा ग्यानचरो-१३० । (२५०) । वील्होजी कृत । १०० कथा
 प्रथ भोगल प्राण-३०७ । (२५२) । सुरजनजी कृत । १०१ कथा औतार की-२३७ ।
 (२६३) । सुरजनजी कृत । १०२ कथा सेठ सुदरसन की-२८ । (२७०) । १०३
 कथा चन्नामणी-२५ । (२७१) । सुरजनजी कृत । १०४ कथा घरमचरो-१११ ।
 (२७२) । सुरजनजी कृत । १०५ कथा ग्यान तलक-१०४ । (२७५) । सुरजनजी
 कृत । १०६ कथा ग्यान माहातम-२२८ । (२७८) । सुरजनजी कृत । १०७ कथा
 गजमोय-७१ । (२८५) । सुरजनजी कृत । १०८ कथा हरे गुण-१९७ । (२८७) ।
 सुरजनजी कृत । १०९ कथा परसीय-२०१ । (२९३) । सुरजनजी कृत । ११०
 नाय भेटवाला का-६२ । (२९९) । १११ कथा उपा पुराण-२३२ । (३०१) ।
 सुरजनजी कृत । ११२ कथा पहलाद चीलत-५९६ । (३०७) । केसोजी कृत । ११३
 कथा रामायण-२६१ । (३२३) । मेहोजी कृत । ११४ कथा बहसोवन की-५५६ ।
 (३२९) । केसोजी कृत । ११५ कथा भीव दुसासणी-६६ । (३४५) । केसोजी कृत ।
 ११६ कथा अहमनी-७१७ । (३४७) । डेल्होजी कृत । ११७ कथा सुरगारोहणी-
 २१६ । (३६३) । केसोजी कृत । ११८ कथा विगतावली-३७७ । (३७०) । केसोजी
 कृत । ११९ कथा अघलेया की १३८ । (३८३) । केसोजी कृत । १२० कथा पच इ ड्री
 की बेल-३८ । (३९०) । १२१ कथा अघाडसीय की-११६ । (३९१) । कीनकदास
 कृत । १२२ कथा सतकवार की-५५ । (३९४) । १२३ कथा नेमकवार की-६४ ।
 (३९५) । १२४ कथा व्याहलो कीसन-२५५ । (३९७) । पदम कृत । १२५ छम-
 छरी सइको-१०० । (सवत् १८००-१९००) गद्य । (४०५) । १२६ भाव्या छम-
 छरी दुरा-७७ । (सवत् १७००-१८००) । (४१३) । १२७ भाडली पुराण-गद्य ।

(४१४) । १२८ सुषचार-गद्य । (४१८) । १२९ सुकर असत वेचार-गद्य । (४१९) ।
 १३० प्रहणचार-गद्य । (४१९) । १३१ इषक मास वीचार-गद्य । (४१९) । १३२
 वार सक्रायत रो भाव-गद्य । (४१९) । १३३ गुराचार-गद्य । (४२०) । १३४
 सपचार-गद्य । (४२१) । १३५ भोगल पुराण-गद्य पद्य मिश्रित । (४२२) । १३६
 अठाइस कुड-गद्य । (४३०) । १३७ वराठ पुराण-पद्य, ६ पटल, शंकर-पावती
 सवाद रूप म । (४३१) । १३८ सरोदो, आरेजा फुटकर । गद्य । (४३९) । १३९
 बार भुवन-गद्य । (४४३) । १४० अभीच लगन, बाल लगन, मूल लगन । गद्य ।
 (४४६) । १४१ होडवक्र-गद्य । (४४६) । १४२ कात्यग ग्यान-क्रम वेपाक-गद्य ।
 (४४७) । १४३ आरेजा फुटकर (चंद्र आरेजा)-पद्य । (४५०) । १४४ क्रम वेपाक-
 गद्य । (४५३) । १४५ कवत फुटकर-८ । (४५६) । १४६ कया हरेचद पुराण-
 ३०७ । (४५७) । ध्यानदास कृत । अपर नाम-कया हरचद की, हरचद सत कया ।
 १४७ कया गोपीचद की-१३६ । (४६७) । खेम कृत । १४८ कया प्रमताव माल-
 २१६ श्लोक, दोहा, चौपई । (४७१) । १४९ जम गीता-संस्कृत, ग्रहदान, ग्रह प्र
 घट । (४८५) । १५० नासकेत पुराण-६७०, दोहा, चौपई । १८ अध्याय ।
 (४८५) । १५१ प्रम वीपाक-२२, कृष्ण अजु न सवाद रूप म । (५०१) । १५२
 महादेव का श्लोक २० संस्कृत । (५०२) । १५३ भरयरो का श्लोक ४७ संस्कृत ।
 (५०२) । १५४ निरजन अ ग, गकराचाय रचित-११४ श्लोक । (५०४) । १५५
 कवत फुटकर-४ । (५०६) । १५६ अरेजन पुराण-७५ । (५०७) । १५७ सात
 पताल को वेचार-२५ । (५०९) । १५८ धम समाधे-३०१ संस्कृत, हिंी ।
 (५००) । १५९ जतेम कवार का श्लोक-१५ । (५१६) । १६० जड भरथ नल
 घोष पडवां का श्लोक-२४ । (५१६) । १६१ गोरपनाय की सबदी-२६९ ।
 (५१७) । १६२ बतीस लपण-५ । (५२५) । १६३ कवित्त-० । (५२६) । १६४
 गुडा गाह दूहा-११२ । (५२६) । १६५ धू चेरत-२२५ । (५२९) । जन गोपाल
 कृत । १६६ सुगन आठ दिसा, सम भाव की आरेजा । (५३५) । १६७ फुटकर
 कवित्त । (५३५) । १६८ बार सक्रायतां रो वार विचार । (५३७) । १६९ वार
 सक्रायतां रो भाव । (५३७) । १७० कया जडभरथ की-८९ । (५३८) । जन गोपाल
 कृत । १७१ कवत गोपीचद का । (५४१) । १७२ फुटकर कवित्त-१७ । (५४२) ।
 १७३ गोन-१ । (५४४) । १७४ साडा पचीण आय देग रा नाम । (५४४) । १७५
 साका । (५४५) । १७६ बीलायत रो वारता । (५८७) । १७७ आदि विसन क
 नाम । (५४८) । १७८ फुटकर छंद-कवित्त, कु डलो, दोहा भांि । (५४०) ।
 १७९ मोह जीव की कया-११७ । (५५५) । १८० भगत भावती भागोत सनुगन
 ३१६ । दाग, चौपई, चांगमण भांि । (५६८-५६४) । लालदास कृत । पुणिया-
 (५६०) ।

आदि-धी विसनबी सति सही स्पीयनु छनीसो बारपकी बुहा ॥

जो विमन विमनु मय्यो विगनु ॥ तन पुरेय वासदेवाय धामही ॥

तनी वास परची दया ॥ १ ॥ दुहा

अआ आदि विसन ओउ फार सु ॥ सोह सोरज्यो ससार ॥

ओर सकल भ्रम आन तज्य ॥ वरि सीवरण करतार ॥ १ ॥

अ १- श्रीविसनजी रा प्रथ ग्यान सासत्र पुसतग नाम पोयो सपुरण
समापीता लीपतु परमाणद सत जात्य घणहाल थापन
सुरताणजी रा सुत रामजी रा चेला दामजी रा पोता सीप
मारवाडे नव कोटी रा थापना अतीता ग गापार रा अतीता
रा जुना पुसतक देख्य महता रो पोयी देवि ओह प्रथ
ग्यान लोप्यो छ समत १७९८ पोयी कोयी समत १८१०
चत्र सुदे १ पोयी सपुरण लोप्यो छ वार बुधवारि यचनारयो
कांहा गाव रासीसर सुभ सुथाने दामजी रो थापनां ।

२०२ सबदवाणी । सबद सख्या-१२० । पद्य प्रसंग ममेत । पत्र सख्या-७४ । कतिपय पत्र
खटित । देशी तथा मदीन के वन कागज । आकार-१२×६ इंच । हागिया-दाएँ,
बाएँ-सवा इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति २२-२५ । श्री साहब-
रामजी द्वारा सवत १९३७ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । अपेक्षाकृत मोटे अक्षर ।
प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री प्रमात्म नम ॥ श्री गुरूभ्या नम -
गद प्रसंग चौ० क्षत्रीय जात लोहट तेहि नामा ।

जात पु वार पीपासर धामां ॥

अन-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरियो बुरी कमाव ॥ १२० ॥

इति श्री शबदवाणी श्री जाभजी की प्रसंगा समेत समाप्त भवेत श्री वाक्य मख्या
८०० अथ श्री म्हारराज रो बाणी रो म्हात्म प्रारभते ० जो सब्दनि सीप सुन ॥ वाच
६ विचार ॥ साहवराम एक पलक म होत पतित भव पार ॥ १ ॥ लिपिकृत शाध
श्री गोविंदराजी का सिप साहवराम ॥ सारी ॥ गाव नादडी म्थे । समत । १९३७ ।
भीती जेठ सुद ॥ १ ॥

०३. विवाह पद्धति बिश्नोई समाज । गुटवा । फोनियो-सख्या-८० । खडित । दंगी
कागज । आकार-६×४ २५ इंच । हागिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-
प्रतिपक्ति-१४-१९ । लिपि-पाठ्य । श्री सतोपदास द्वारा सवत १९५२ म लिपिबद्ध ।
प्राप्तिस्थान-श्री पनालाल गायण, गाव मोढा, पो० गु दाऊ, (भीनमाल से), जिला-
जालौर । इसमे ये रचनाएँ हे —

(क) गाठ रो मत्र । (ख) हयलेव रो मत्र । (ग) जगनी साप रो मत्र । (घ) भूमी
देव साप मत्र । (ङ) मगल मत्र । (पाचा सस्कृत म) । (च) कलस । (छ) पावती
ईश्वर सवादे गोत्राचार । (ज) वासदर के पचीस नाम । (झ) विष्णु अठाईस नाम ।
(ञ) सप्याण । (ट) आदि बसावली । (ड) दस अवतार । (ड) विवरस । (ढ)
अस्तुति । (ण) हरी नाम माला (मस्कृत) । (त) दस अवतार । शकराचाय विरचित

(सस्कृत) । (घ) रत्नमाला, ४१ दोहे-ऊद्वददास रचित । (द) किष्णजी र ध्याव से सायोधार । (ध) चौजुगी । (न) पोढा बदलण रो मत्र (सस्कृत) । (प) देवता विवा करण मत्र (सस्कृत) । (फ) पाहल मत्र । (व) बालक मत्र । इती व्याय री पाटीया घडा वध सपूरण । (भ) अमावस्या रो कया-मयाराम रचित । (म) कवित्त-१३ । सुरजनजी-३ । तत्ववेत्ता-२, बोलहोजी-७, अल्लुजी-१ ।

आदि-उ श्री गणेशायनम अथ गाठ वाधण रो मतर लिष्यते ॥

ॐ एक इतो महाबुद्धि सव गुणो गणनायक

सव सिद्धि करो देव गवरो पुर विनायक

अन-समत १९५२ रा मितो आसाज सुदी १० पोथी गायण रामचद धीराणो रो छ लिप० सा० स० दा० वान र पातर लिपी छ हुज रो दावो नहा छ ॥

दोहा ॥ नारी क्यारो मित्र कू वेद ग्यान वृत्तान (?)

यता वग सभालीय धान पान भगवान १

समन सपत पाय के वडो न कीज चित

ये कबहु न विसारीये हरी अरो अपनो मित २

हरो सुमरया पातक क्षर मितर मिटाव पीर

अरी सुमरया एता वध वृद्ध प्राप्रम अरु धीर ३

२०४ पोथी । फोलियो सत्या १३६ । अपूग, जीण, खडित, दीमक खाई हुई । देशी वागज । आकार-८×५ ५ इ च । हागिया-प्राय आधे से पीन इ च । पकित-प्रतिपूठ-१०-१३ । अक्षर-प्रतिपकित-१४-१९ । धापन तेजे तथा अनात लिपिकार द्वारा स० १९०१-०२ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्यान-धी सिमरयाराम धापन, साम्रा (विनाडा, जोधपुर) । इमम ये रचनाएँ हैं —

(क) प्रह्लाद धीरत, केसोजी वृत्त । लिपते धापन तेजा मोनाजी सुत जात बीरी-यान ॥ वाम लाव मधे पोथी लीपी भुल चुक तो बीसनजि जाए । समत १९०१ मोना अगाड ४ २ । (ग) विष्णू चिरत--ऊद्वददास रचित । (लिपिकाल-सन्ना १९०२) । (ग) पाटीया पढण रो-मिथो वरणा । (घ) जभेस्वर स्तोत्र, सुरजनान रचित । (न) नासकत भाषा । (च) सबदवाणी जामजी की । ६३ वें सपद तक, ६४ वा अपूग ३ । गद-याणा क ४६ व छन्द के पदवात । (छ) सेवानाम वृत्त २० ६६४ छ ७ है ।

पुन गवन् तिगे गये हैं ।

आदि-चिरतो सनकस भयो विरोध ॥ एकण मन मां कीयो विरोध ॥४९॥

दरवांना न पहु तो पाप । सनकादिक् बहै ये लीपी सराप ।

सनकादिक् विधि बहै विचार ॥ अतरा घर पायो अवतार ॥५०॥

अन-ब्रह्मा ईह भटेमर परप्पा । दोनो करामत कनो वारी

अर भूर होय सायो परप्पा । पवन पनेसर पवन " ॥

२०५ रचनारा भगव, रामकल्या वृत्त । अपूग । तिनारा मे वृत्तित । अनया वृत्त मोन इये

कागज । प्राप्त पत्र मलया-८ । आकार-९ ७५×५ २५ इ.च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-
एक इ.च । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२३-२४ । अनात लिपिकार
द्वारा सबत् १८७५ के आसपास लिपिवद्ध । लिपि पाठ्य । प्राप्तिस्थान श्री मिमरया
गम थापन, लाम्बा ।

आदि-श्री विष्णुजी सत छ जी निपते हरी रम श्री विष्णु प्रमातमाए नम लिपते
रूपमणी मंगल राग देवगरी

निगम जाकों नित्य गात्र ध्यान गिव उर आन हीं

आदि अनादि परिवह्य जु के भक्त नीक जान ही ?

अ-न-जुवत सों पत्रो जु लिप करि विप्र के हायन दर्ई

माय छुवाय जु लई विज न ।

२०६ गूटका । अप्रुण । किनारा से खण्डित । देगी कागज । आकार-६×४ इ.च । हाशिया-
सिलाई की ओर पौन इ.च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १०, ११ । अक्षर प्रतिपक्ति-१६ १६ ।
थापना तेजा तथा अनात लिपिकार द्वारा सबत् १८७८-१८८१ के बीच लिपिवद्ध ।
लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री सिमरधाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं -
(क) विष्णोई घम-२ कवित्त, ऊन्नेजी कृत । (ख) प्रह्लाद चिरत केसौजी कृत, छन्द
२२३ तक (अप्रुण) । (ग) गीता का दसवा अध्याय (मस्कृत) । (घ) गणपति स्तोत्र
(मस्कृत) । (ङ) इ दव छन्द-गोकलजी कृत । (च) विष्णु सहस्र नाम (अप्रुण) । (छ)
विष्णु चिरत-उदोजी कृत । समत् १८७८ विरपे मीती फगुण व्द ६ लिपते थापन
तेजा मोटावत " पोथी गाव डावगरी हाणी मा नीपी छ वास लाव मधे । (ज)
३ श्लोक (सस्कृत) । (झ) हरजस-१ । (ञ) गीताजी की भायपा । (ट) वेमाहो श्री
किमनजी रो पदम भगन कृत, विभिन्न राग रागिनियो के अतगत छन्द सख्या पृथक
पृथक है ।

आदि-श्री विष्णु जी सत छ जी १ । लिपते कबत ॥२॥

प्रथम परभाते उठ जल छाण र लीज ॥

सज्यम मुच सिनांन । सुद ह्य नाव जपीज

अत-आरती कीज भुगत लीज । च्वर ढोल देवता ॥

सु र नारी गीत गाव ॥ का ह जुव येलता ॥

घण रापे मोरी ॥ गहर गाज ॥ सकल सुर नर मडली ॥

पदम गाव भुगत पावे ॥ अहै मन पुगी रली ॥३॥

ध्यावली किसनजी रो सपूरण ॥ १ ॥ समत् १८८१ विरपे मीती स्वाण सुद १ ॥

वार मल ॥ दसवत थापन तेज मोटावत रा छै ।

२०७ पोथी । अप्रुण । आदि से बीच की मिलाई तक फोलियो मख्या-६३ जिनम आदि
के २० अप्रुण्य । खण्डित, जीण । अपक्षाकृत मोटे देगी कागज । आकार ६×८ इ.च ।
हाशिया-सिलाई की ओर-१ तथा किनारा पर पौन इ.च । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१६-
१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२४ । दनाजी तथा परमानन्ददाम वणिहाल द्वारा सबत्

१७८६-१७९१ म लिपिबद्ध । लिपि-गामायत पाठ्य, कहा कहा पत्र भोग जान स घषाठ्य । प्राप्तिस्थान-गिम्बरधाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) कथा औतार पात, छन्द सख्या-१४० । चौहोजी वृत (ध्रुव) । लेपतु दत्ता तीर्थी पोथी परमाणु की मा गुरु ।

(ख) रामायण, छन्द सख्या-२२५, मेहोजी वृत । समत १७८६ ॥ म ॥ पौह बने १० वार त्रिसप्तति ॥ लीपत दत्ता ध्रुवजी का सीप । सीपावनु प्रमाण वहीणीवाल सुरताण सुत । (ग) छन्द-२, राम-युद्ध सम्बधी । (घ) हरिजन-सख्या-१२, चौहोजी वृत । (ङ) कथा घडावध-चौहोजी वृत । (च) बोहे-१५, केसोजी वृत । (छ) भोगल प्राण घष-सुरजनजी वृत । (ज) कथा सुरगारोहणी-केसोजी वृत । (झ) कथा चौतोड की-केसोजी वृत । (ञ) कथा इसबद्ध की-केसोजी वृत । लिपतु परमाणु वणीहाल ल्पावनु दत्ता घोहाण पठनारथी समत १७९१ व्रपे मती जेट सुदि २ (३ ?) वार वसपतिवार गाव घरटीय मधे । (ट) कथा अह्वावणी-केह वृत । (ठ) बान सील तप भाव री घोडालीपी-वाचक समैसु दर वृत । (ड) बुध परगास-केह वृत । (द) कथा कुणपुर की, चौहोजी वृत । लेपतु परमाणु दत्त समत १७९१ । (ण) नाहरपान का छन्द-सख्या-१३ । (त) वसावली । (थ) कवित्त-सुरजनजी क स०-८ । (द) कथा जेतलमेर की-चौहोजी वृत । (व) कथा मेडताजी, केसोजी वृत । (न) वेसन पीजर, श्री सकरा आचार प्रसतोतर । (प) चप्रामणौ-सुरजनजी वृत । (फ) सापी गोपीचन्द की, हरियो वृत ।

आदि-रोग मान दीस नहीं ॥ दीस घणौ सपीस ॥

गड सुती पाव नहीं ॥ कहो कुणों की दोस ॥ ३९ ॥

चोपई ॥ पीठ पीठायी सुपवासाणि । फिरि हुवौ इसकी क ताणि ॥

बासी भमै न देइ देय ॥ कुण जाण सतगुर की भेव ॥

अन-गोपीचन्दजी हेत करे मोलीयी ॥ बाइ भुजा पसारी जी ॥ ६४ ॥

रो रो हे पहारी जामण जाई ॥ हू गोपीचन्द भीपीयारी जी ॥ ६५ ॥

लीप दीये गोपीचन्द राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ ।

जामणि जाया की बुध दोहेरी ॥ बहनड बल न आइ जी ॥ ६७ ॥ ॥

२०८ पोथी । प्रुटित । देगी कागज । आकार-८×७ इंच । हरणिया-नाम मात्र की । पत्रिन-प्रतिपृष्ठ-१३-१६ । अक्षर-प्रतिपत्रित-१७-२० । थापन वसता द्वारा सबतु १८८१-१९०७ में लिपिबद्ध । लिखावट भेदी और कई स्थलों पर अपठ्य । प्राप्ति स्थान-श्री सिम्बरधाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) विष्णुचरित-ऊदोजी वृत । (ख) सूरदास का १ भजन । (ग) किमानजी रो ध्पावली-यदम भगत वृत । १८८१ वीरपे मीती आसाड सूद ४ वार सनीमरवार दसकत थापन वेसता रा । (घ) गोपाचन्दजी की सापी-हरियो वृत । (ङ) कथा मगलेया की-केसोजी वृत । (च) कवित्त-२, तेजोजी और चौहोजी के । (छ) ऊ मावस कथा-मयाराम रचित । (ज) सनेह लीला-जगमोहन वृत । समत १८९५ का मती जेट बंद ६ बुक-रवार । (झ) बाणलीला-रचयिता अज्ञात । (ञ) गोबलजी की असतुत । (ट) छद

मोतीदाम-गोशुलजी कृत । (ज) श्रीर (ट) एक ही रचना है । (ठ) बुध परगास-
केलु कृत । (ड) क्या अहवावणी-केलु कृत । (मपूरण) । (ढ) सिधदास कृत सापी-
१ । (ण) पहलव चिलत क्या-केसोजी कृत ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ विष्णु चिरत लिप्यते ॥

चौपई ॥ श्री गुरु सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्णु जस गाउ ॥

अन्त-इती श्री प्र पाप्र य क्या पहलाद चरित मपूरण " पापन वसता वेट मोट
जी र जात रा वणीवला प्रपे मती अंसड यदे भाठ ८ समत १६ सात र ७ धर (म) ।

२०६ पोयी । त्रुटित । फोलियो सख्या-१०० । मगीन के बने कागज । आकार-८×६
इंच । हाशिया-माधे से पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-

१६ । साधु बिहारीदास द्वारा सवद १६४६ म लिपिवद्ध । लिपि-मुपाठय । प्राप्ति
स्थान-श्री रामकिशन भाद्र, रोद्र (तहसील-जायल, नागौर) । इसमें ये रचनाएँ

हैं - (क) गद्द जांभजी का-गद्य प्रसंग समेत (आदि-प्रसंग मपूरण) । सबद सख्या-
१२३ । इसमें स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो मवद (सख्या १०३, १०४) माने

हैं । स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सबद है । (न) विष्णु चिरत-
ऊपोदास कृत । आदि-ऊपर मगला अक्षरवार हुपज्यो । बालक अक्षरवार हुया । सगलाई

सलकार कीवी ॥ पाडवीयां र निजर कटक भायो । सांड छोड र नाठा ॥ रबारी
साडा लारे या तका वार घाती ॥ ओं मोरें छाया न माया लोही न मामू (सबद-२)

-- (सबदवाणी का अन्त-बिसन बिसन सू भण रे प्रांणी पक लाय उपाजू ॥

रतन काया बकु ठे बासो । तेरा जरा मरण भो भाजू । १२३)

अन्त-इती श्री विष्णु चिरत ऊपोदास कृत समापत ॥ सबत १६४६ मिति आसोज
सुदो ४ लिप्यते माधु श्री बीसनुदामजी रा शिष्य बीहारीदास विष्णु विष्णु विष्णु ॥

२१० पित्तण-सिधार, सेवादास कृत । छद्द सख्या ८६ । देशी कागज । किनारो से खडित ।
पत्र सख्या-४ । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- एक इंच । पक्ति-

प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७ । लिपि-मुपाठय । भगवाननाम द्वारा
सबत १६१२ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत्त रणछोडदासजी, आधुणी जागा,
जाम्मा ।

आदि-श्री प्रभात्मनेनम ॥ अय प्रथ पित्तण सिधार लिप्यते ॥

दोहा ॥ उनमन नेजा फरहर ॥ नहदा घूर निसान ॥

इन विधि भोम्पां ऊपरें ॥ चडियो सबद दीवान ॥ १ ॥

अन्त-जहाँ काल तणां धारा नहीं ॥ फिरी राम को आण ॥

सेवादास जग जीपिया ॥ परस्या पद निरबाण ॥ ८९ ॥ इति श्री पित्तण सिधार
प्रथ समाप्ता । सबत १६१२ मिति पो सुध १३ वार दानिसर । लिपिकृत भगवान-
दास रामदासजी का चेला ॥ गाव तिलवासण मधे ॥

२११ पित्तण सधारण, सेवादास कृत । छद्द सख्या-१०२ । देशी कागज । किनारो से
खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच ।

१७८६-१७९१ म लिपिबद्ध । त्रिपि-नामाच्य पाठ्य, कथा कथा पत्र भाग जान म अपाठ्य । प्राप्तिस्थान-गिरधाराय धापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) कथा औतार पात, छ-सख्या-१८० । धोल्होजी वृत (प्रपूर्ण) । स्पनु दना साया पोषी परमाण की मा गु ।

(ख) संमाषण, छ-सख्या-२२५, मेहोजी वृत । समत १७८६ ॥ म ॥ पौह व १० वार त्रिसपति ॥ लापत दना छजुजी का गीप । सापावतु प्रमाण बहोणीवाल मुरताण मुत । (ग) छश-२, राम-मुड सख्य धी । (घ) हरिजत-मख्या-१३, धोल्होजी वृत । (ङ) कथा पडाबंम-धोल्होजी वृत । (च) बोहे-१५, बेसोजी वृत । (छ) भोगल प्राण घष-मुरजनजी वृत । (ज) कथा मुरगारोहणी-बेसोजी वृत । (झ) कथा धीतोड की-बेसोजी वृत । (ञ) कथा इतकड की-बेसोजी वृत । त्रिपु परमाणद वणीहाल सपावतु दना चोहाण पठनारमी समत १७९१ वये मती जेट मुनि २ (३ ?) वार वसपतिवार गांठ भरटोय मधे । (ट) कथा अहवावणो-डेल्ह वृत । (ठ) दान सोल सप भाव री धीशालोधी-वाचर सममुडर वृत । (ड) बुष परगास-डेल्ह वृत । (ढ) कथा बुणपुर की, धोल्होजी वृत । स्पनु परमाणदाव समत १७९१ । (ण) नाहरपान का छद-सख्या-१३ । (त) वसावली । (प) कवित्त-मुरजनजी के स०-८ । (द) कथा जेतसमेर की-धोल्होजी वृत । (ध) कथा मेड़ता की, बेसोजी वृत । (न) बेसन पोजर, श्री सकरा घाचार मसतोतर । (पे) चप्रामणी-मुरजनजी वृत । (फ) सायी गोपीचंद की, हरियो वृत ।

आदि-रोग मान दीस नही ॥ दोस घणो सपौस ॥

गड सुतो पाव नही ॥ बहो कुणां को दोस ॥ ३९ ॥

चोपई ॥ पीठ पोढायी सुपयासाणि । फिरि हृयो इसकी क ताणि ॥

बासी भमे न देइ देव ॥ कुण जाण सतगुर को मेव ॥

अग्न-गोपीचंदजी हेत करे मीलीयी ॥ बांइ भुजा पसारो धो ॥ ६४ ॥

रो रो हे म्हारी जामण जाई ॥ हृ गोपीचंद भीषीयारी जी ॥ ६५ ॥

सोष दीमे गोपीचंद राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ ।

जामणि जाया को दुय दाहेरी ॥ बहनड वले न आइ जी ॥ ६७ ॥ ॥

२०८ पोषी । त्रुटित । देगी वागज । आकार-८५७ इच । हाणिया-नाम मात्र को । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२० । थापन वसता द्वारा सवत १८८१-१९०७ म लिपिबद्ध । लिखावट भद्दी और कई स्थलो पर अपाठ्य । प्राप्ति स्थान-श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) विष्णुविरत-ऊढोजी वृत । (ख) सूरदास का १ भजन । (ग) कितनजी रो वयावलो-पदम भगत वृत । १८८१ वीरय मीती आसाड सू ४ वार सनीसरवार दसवन थापन वेसता रा । (घ) गोपीचंदजी की सापो-हरियो वृत । (ङ) कथा मगलेया की-बेसोजी वृत । (च) कवित्त-२, तेजोजी और धोल्होजी के । (छ) ऊमावस कथा-मपाराय रचित । (ज) सनेह लीला-जगमोहन वृत । समत १८९५ का मती जेट बंद ६ सुक-रवार । (झ) बांगलीला-रचयिता अज्ञात । (ञ) गोवलजी की असतुत । (ट) छद

मोतोदाम-गोकलजी कृत । (अ) और (ट) एक ही रचना है । (ठ) बुध परगास-
डेल्लह कृत । (ड) कथा अहवावणी-डेल्लह कृत । (अपूर्णा) । (ड) सिवदास कृत सापी-
१ । (ए) पहलव चिलत कथा-केसौजी कृत ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ विष्णु चिरत लिप्यते ॥

चोपई ॥ श्री गुरु सत चरण सिर नाउ । अज्ञा होय विष्णु जस गाउ ॥

अन्त-ईती श्री प्रथाप्र य कथा पहलाद चरित सपूरण थापन वसता वेट मोट
जी र जात रा वणोवला प्रये मती असड वदे आठ ८ समत १६ सात २ ७ वर (स) ।

२०६ पोथी । नूटित । फोलियो सख्या-१०० । मंगीत के चने कागज । आकार-८×६
इंच । हाशिया-आधे से पौन इंच । पकित-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपकित-१७-

१६ । माधु विहारीदास द्वारा सवत् १९४६ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्ति
स्थान-श्री रामकिशन भाद्र, रोड (तहसील-जायल, नागौर) । इसमें ये रचनाएँ

हैं —(क) शब्द जांभजी का-गद्य प्रसंग समेत (आदि-अक्षर अपूर्ण) । सबद सख्या-
१२३ । इसमे स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो मवद (सख्या १०३, १०४) माने

हैं । स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सबद है । (ख) विष्णु चिरत-
ऊधोदास कृत । आदि-ऊपर सगला असवार हुयज्यो । बालक असवार हुया । सगलाई

ललकार कीवी ॥ घाडवीया र निजर कटक धायो । साढ छोड र नाठा ॥ रवारी
माढा लारे था तका बार घाती ॥ ओं मोर छाया न माया लोही न मासु (सबद-२)

-- (सबदवाणी का अन्त -बिसन बिसन तू भण रे प्राणी पक लाय उपाजू ॥

रतन काया बकु ठे बानो । तेरा जरा मरण भो भाजू । १२३)

अन्त-इती श्री विष्णु चिरत ऊधोदाम कृत समापत ॥ सवत १९४६ मितो आसाज
-सुदी ४ लिप्यते माधु श्री वीसनुदासजी रा शिष्य वीहारीदास विष्णु विष्णु विष्णु ॥

२१० पिसण-सिधार, सेवादास कृत । छद सख्या ८६ । देशी कागज । किनारों से खडित ।
पत्र सख्या-४ । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- एक इंच । पकित-

प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपकित-३३-३७ । लिपि-सुपाठ्य । भगवानदास द्वारा
सवत् १९१२ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् रणदोडदासजी, आधूणी जागा,
जाम्ना ।

आदि-श्री प्रमात्मनेनम ॥ अथ अथ पिसण सिधार लिप्यते ॥

दोहा ॥ उनमन नेजा फरहर ॥ नहदा घुर निसान ॥

इन विधि भोग्यां ऊपर ॥ चडियो सबद दोवान ॥ १ ॥

अन्त-जहा काल तणां चारा नहीं ॥ फिरी राम को आण ॥

सेवादास जग जोपिया ॥ परस्या पद निरबाण ॥ ८९ ॥ इति श्री पिसण सिधार
अथ समाप्ता । सवत १९१२ मिति पो सुध १३ बार शनिसर । लिपिकृत भगवान-
दास रामदासजी का चेला ॥ गाव तिलवासणि मधे ॥

२११ पिसण सिधारण, सेवादास कृत । छद सख्या-१०२ । देशी कागज । किनारों मे
खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच ।

पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३६ । लिपि-मुपाठ्य । मयन १९०८ म साह्यरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धानराम विष्णुसिंह शिणोई, दुतारावाली ।

आदि-षय षय ॥ विगत सेघार विगने ॥

दुहा-उ नमून नेजा परहर ॥ अनहद घुर निसान ॥

महो तो भोम्या ऊपर घडोयो सयद दिवान ॥ १ ॥

अत-काल तणो सारो तहो ॥ विरगा रोमराय बी अंग ॥

सेवादात जग जीत कर । परस्या पद निरवान । १०२ । इति श्री विष्णु स्यारण प्रथम संपूर्ण १ सवत । १९०८ । रा षय मिति भाष्य मु १० । विपु माय साहिवराम ॥

२१२ गीता-माहात्म्य, दोहे-चोपइयो म, तथा ऊबोजी वृत १ बोहा भीर १ छप्पय । देशी कागज । पत्र-सख्या-४२ । आकार-६ × ४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८-३० । लिपि-मुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

आदि-श्री वृष्णायनम ॥ चोपई ॥ गीता की महिमा पुनि गाऊ । क्यास कहि तो

कहि समताऊ । पदम पुरांन मांहि विस्तार ॥ सो कछु वनें मनि अनुसार ॥

इति श्री पदम पुराणे उतर पडे सता ईश्वर सवादे जतराम वृत भाषाया अष्टाशोध्याय । १८ सवत १८८९ मितो माहा मुद १४ वार दितवार लिपते विसनाई साध श्री गगारामजी का चेना गुमानीरा गाव वावड मधे लिपत ।

अन्त-बद राष्यो मरत लोक म आवीत कु असय दोयो ।

रतन चवद उदधा बाट विसनु सुर कारज कीयो ॥ २ ॥

२१३. गुटका । फोटियो स०-२१३ । अपूर्ण, किनारो से खडित । देशी कागज । आकार-६ × ४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पोन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-१८ । माधु गोविंदराम द्वारा मयत १९०७ म लिपिबद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री भगवतीताल चौहान (मुपुत्र, श्री आकारलालजी), पुर (भीतवाण) । इसम म रचनाएँ हैं - (क) गद बाणो श्री जांभजी की । सवद सख्या १२० । विना प्रसंग ।

अन-विसन विसन तू भणि रे प्राणीं प क लाय उपाजो

रतन काया बकू ठे बासी तेरा जरा मरण भय भाजो १२० । (ख) प्रह्लाद चिरत-कैसोजी वृत । छंद सख्या-५९४ । इति श्री पह्लाद चिरत संपूर्ण समन १९०७ रा वूपे मितो कागुण वदि अमावस्या १ लिपीकृत साध गोविंदराम । (ग) अमावस्या री कथा-मयाराम वृत । छंद सख्या-१४५ । (घ) पाणिग्रहण-सस्कृत श्लोक १० । (ङ) महादेव-पावती सवाद आदि (गोत्राचार) । (च) बसवर के २५ नाम (सस्कृत) । (छ) सख्याण तथा ईश्वर पावती सवाद । (ज) आदि बशावजी दस अष सार वणन, छंद १० । (झ) पञ्चोस नाम विष्णु के । (ञ) विचरत । (ट) स्तुति ।

(ठ) विष्णु रक्षा-८ श्लोक । (ड) नवग्रह रक्षा-६ श्लोक । (ढ) पीढी पालटण ३ श्लोक । (ण) बदधानर पूजा-(संस्कृत) । (त) कन्या घर लक्षण-(संस्कृत) । (प) घोनुगी-४ छन्द । (द) स्तुति जाभोजी की । (ध) मगलाष्टक-केसव वृत् । (न) देवता बिदा करण, अग्नि बिसजन-२ श्लोक । (प) सापिया-केसोजी, सुरजनजी, रायचन्द, ऊदोजी, गुणदास तथा अज्ञात रचित । (फ) छपरिया-बोल्होजी वृत् । अपूर्ण । आदि-॥ ६ ॥ श्री जभगुरवे नम

उं गुर चीहों गुर चीहि पिरोहित गुर मुपि धरम बयाणीं

जो गुर ह्व बा सहजे सोले शब्दे नादे घेदे तिहि गुरका आलींकार पिछाणीं ।

अत-सुगर सोलधत होय सुगर मय सदा सतोपी

सुगर सहज्य सुप लोल सुगर पर जीया पोयो

सुगर सुमारग दापव जण तारण आयी तरण (-बोल्होजी कृत)

२१४ सबदवाणी । अपूर्ण । सबद-सख्या-११७ । बिना प्रसंग । कितारा से खडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या-२८ । (कुल ४२ पत्रो मे से सख्या १, ११, २८, २६, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३८, ३६, ४० और ४२ अप्राप्य) । आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पकित-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपकित-२८-३० । लिपि-पाठय । साधु कनीरामजी द्वारा सवत १८८६ म, पुर मे लिपिवद्ध । प्राप्ति-स्थान-श्री गामीलालजी सीमोदिया विष्णोई (सुपुत्र-श्री नारायणजी), पुर (भीलवाडा) आदि-न रहिसी पांणी ॥ १ ॥ उं न मोर छाया न माया ॥ लोही न

मासु रातु न घातु ॥ मोर माई न बापु ॥ आपेण आपु ॥

अत-भलीयो होई तो भल बुधि आवं ॥ बुरीयो बुरी कमावं ॥ ११७ ॥ ईति श्री सबद वाली भाभजी की सपूरण समापता ॥ लिपत पुर मधे मायरी जाभजी की लीपते साध श्री ॥ १०८ ॥ बलुजी का सोप कनीरामजी ॥ श्री विमनजी ॥ समत ॥ १८८६ ॥ रा भिती श्री थसाढ सुध ॥ १४ ॥ बार बुधवार श्री विसन ।

२१५ साखी, सख्या-५२ । विभिन्न विष्णोई कवियो द्वारा रचित । अपूर्ण, खडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या-३५ । (कुल ४१ पत्रो म से सख्या १, २, ३, ४, ६, और २८ अप्राप्य) । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पकित-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपकित-३०-३२ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-प्राय पाठय । प्राप्तिस्थान-महत श्री राम-नारायणजी, रामडावास ।

आदि-सुरबांणी २ माया मोह निधारी

अजप्यो जाप जपे मन मेरा करि उनमन सु धारी

गरज गिगन इधक सुर सुणीये उपज अ नहव बाणी

जिहि डोरी सिध साध बिलध्या सा जोवडा सत्य जाणी ॥ ३ ॥ (-केसोजी)

अग्न-कहै रायचन्द हरि नाव लीज अ ति चित रहोजीय

जोवडा कारण विसन मिलीयो मुध्य घोरज कीजीय ॥ ४ ॥ ५२ ॥

२१६ जांभजी २ भवनां री भक्तमाल, छन्द सख्या-२४ (२५ वां वृत्तित) । प्रपूग । दगी वागज । पत्र-सख्या-२ । आकार-६×४ इच । हागिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर प्रतिपक्ति २६ २८ । लिपि-पाठ्य । रचयिता, लिपिकार एव काल-प्रज्ञात अनुमानत सवत १६०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान मटल श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-श्री विष्णु प्रमात्मने नम ॥ अथ श्री जांभजी री भवना री भक्तमाल तोपन ॥ दोहा-विष्णु की अवतार है ॥ श्री जाम्भोजीवरराय ॥

सिख ब्रह्मा ईद्रादि देव ॥ निस दिन घ्यांन घराय ॥ १ ॥

अन्त-पचायण जसा रायघद ॥ जिन घ्यायो विष्णु गौबिद ॥

हीरानन्द मिठ्ठजी जीय ॥ घ्यायो विसन जमे गु ॥

२१७ सबए, केसोजी वृत्त-७ तथा किसोर वृत्त-१ । मसीन के वने दा पत्र । आकार-६ ५×४ इच । हागिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३५ । लिपि-सुपाठ्य । प्रज्ञात लिपिकार द्वारा सवत १६५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-उं श्रीगणेशायनम आदि अनादि बुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लोयो है धन ही धन भाग बडो जिण हांसल कौ हरिमात कह्यो है-

अन-घरणि उर जघ पाव न घरहू बलहू २ इन पावन कु ॥ ८ ॥ इति श्री केगा दास वृत्त छन्द सम्प्राप्तम्

२१८ तारक मत्र तथा विष्णु मत्र । देशी पत्र-१ । आकार-८ ७५×४ २५ इच । हागिया-दाएँ, बाएँ-सवा इच । कुल ८ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६ । लिपि-पाठ्य । प्रज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १६०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-श्री विमनु जी उ सबद गरु मुरत चेला पाव तत मै रह अकेला

सहज जोगी सुन मा बास पाच तत मा लोमा प्रकास

अन-विष्णु मत्र प्राण अपरि जो जय सौ उत्तर पार

उं विष्णु आद विष्णु तत रपो तारक विष्णु ॥ २ ॥

२१९, साखी, जन हरजा वृत्त । देशी पत्र-१ । आकार-९ २५×४ इच । हागिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । कुल (११+६) १७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३१-३३ । लिपि-पाठ्य । प्रज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-श्री वीष्णुजी अथ सापी लोपडे-महो बीसोवा बीस साचो गुर सभलायले कान कबर नदलाल कीरपा कर आय भज २

अन-बोसन भजो बीसनोइयो धरो सींभु घ्यान

साच सील सचोल चालो मानो हक हलाल

जोन हरजी बी बीनती बीया गुर नीपट नीहाल पाव करता पापीया ५

२२०. सबदवाणी । सबद सख्या-११७ । पद्य प्रसंग नमेत । जीग, खण्डित । अपूर्ण । अनेकावृत पतले देशी कागज । पत्र सख्या-५४ । प्रथम पत्र नहा है । आकार-९×४ इ.च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणतः पौन इ.च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६ । लिपि-मुपाठ्य । प्रीतम द्वारा सवत १८७५ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-सन चिरत बिन काचं करव रह्यो न रहिसी पाणीं ?

दोहा-उषण का हावत बूझीयो देवजी किसू आचार

पेट पूठि बीस नहीं ताका कह्यो विचार ? जो बूझयो सोई कह्यो

गद-मोर छाया न माया लोही नु मासो रगतो न धातो मोरे माई न बापो-

अन-ज्यू ज्यू लाज दुनी की लाज त्यू त्यू दापो दाबं

भलीयो होय तो भल बुध्य जाव दुरियो दुरी कभाव ११७ इति श्री मिघात

वाणी सतगुरु सपूर्ण १ स० १८७५ लि० प्रीतम

२२१. साखी खडार्ण की, केसौजी कृत । अपूर्ण, २७ छंदा म से १६ छंद । देशी पत्र-१ । आकार-२१ ५×४ २५ इ.च । हाशिया-नहीं है । कुल ४४ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-११-१८ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-सापी पडाए की ? मेली कर मोटा घणी गीण तेतीसु ग्यान

दरसन बीज देवजी बीसन बीसोहा भान ?

अन-हाधु अर नाधु नीरखी कसवा कौमन सहाय

चलण कियो चिलत पुहता सुरगि पुलाय १६ हरीजन हरी बीन ।

२२२. साखी, मर्या-२ । केसौजी तथा अज्ञात रचित । देशी पत्र-मर्या-२ । आकार-७ ७५×४ इ.च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२,९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२६, २७-३२ । लिपि-पाठ्य । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-सिवरो २ सिरजन हार । कलि जुगि कायम राजा आवीयो ।

प्रमेसर प्रगट ससार । भागि परायति भगना पावीयो । (-केसौजी)

अन-उपहार मारा विचार रे जीव जाण मन कर्यो बीसर

अमर भगता भेद लाभ सेवा रुतगुर की कर ४ (-अज्ञात)

२२३. नवण । देशी पत्र-१ । आकार-८ ५×४ २५ इ.च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ.च । कुल (७+६) १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२१-२३ । लिपि-पाठ्य । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-श्री विष्णुजी उँ विष्ण २ तु भण रे प्राणी साघे भक्ते ऊपरण

अत-विष्णु हीं मन विष्णु भणीयो तेतीस कोड पार पोहु ता शाच सतपुर मत्र कहोयो
ईती मुण सपुराम् ।

२२४ साधा रो बसावली । खण्डित । देशी पत्र-२ । आकार-६×४ इंच । हागिया-दारै,
बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३२-३५ । अनात लिपिकार
द्वारा सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रामनारायणजी,
रामडावास ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ साधारो वशावली लिख्यत

जभ गुण के गिप्य अनेक कहता लहु न पार ।

क भगवा मरु रक्षिता काले सेती पार ?

अत-मानजी लूबड का चेला बलिजी गगारामजी बडहरोमा जीवणजी माषोजी
४ बलिजी का चेला सामुजी सुखोजी हरनायजी जीषोजी ४

२२५ शब्द बाणी श्री जाभजी रो । शब्द सख्या-१२० । पत्र प्रसंग समेत । पुस्तक ।
खण्डित । देशी कागज । पत्र सख्या-७४ । आकार १० ५×५ ५ इंच । हागिया-
दारै, बाएँ-एक इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति २३-२६ । लिपि-
सुंदर एव सुपाठ्य । साधु गाविंदरामजी द्वारा सवत् १६३३ म लिपिबद्ध । प्राप्ति
स्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम अथ शब्दा का प्रसंग

दोहा-हासा लोहट नै कहे सुणो वात चित लाम ।

घनाक्षरी-नागोर मे बांभण है वात सब अस कहे ईश्वरी की सेव गहै ताहि ल्याऊ
जाइ क । पृथार यहो सुनाई वात मन माहि भाई सहर में कहो जाई बोभन
हो सुनाई क ।

अन्त-ज्यो ज्यो लाज दुनी की लाज ह्यो ह्यो दाढयो दाव

भलीयो होय तो भल बुद्धि आव बुरीयो बुरी कमाव १२० इति श्री गणेशायणी
श्री जाभजी की संपूर्ण प्रसंगा सहित लिपित समत १६३३ तेनीमा रा वष भितो
अमाठ व ८ बहस्पतिवार लिपित माध श्री १०८ महत रतनदासजी तस्य गिप्य
साध गाविंदराम लिपितु धाम जाभोनाव मये लिपावतु साध भोनरामजी रा चना
साध गगारास गुभमन्तु कथाणरस्तु ।

२२६ गुटका । फोलिया मख्या-०६१ । मनीन के वने कागज । आकार-६×३ ७५ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१२-१४ ।
साधु नमिह्याम द्वारा सवत १६३७ म लिपिबद्ध । लिपि-स्वच्छ एव सुपाठ्य । प्राप्ति
स्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास । इसमे ये रचनाएँ हैं — (क) अमा
वस रो कथा, मयाराम रचित । (ख) शब्दबाणी श्री जाभजी की । सवत् सख्या-
१२० । मिला प्रसंग । मनीयो हाय ता भल बुधि आव ॥ बुरिया बुरी कमाव ॥
१२० ॥ (ग) विचार माल (रचयिता-अज्ञान, मवत् १७२६ म रचित) । (घ)
विष्णु सहस्र नाम स्तु गण मोचन मत्र (मस्तुन) ।

आदि-उं श्री गणेशाय नमः ॥ अमावस्य री कथा लिपते ॥ कुडलीया

प्रथम बहू गुरु देव कौं । दुतिये बहू सव साध ।

विष्णु बधु पुंय तोसरं । जात मिट जु ध्याय ॥ १ ॥

अत-इति श्री गग महिताया श्री विष्णो सहस्र नाम गाप माचन विमुक्ति विधि सम्पूर्णम् । सप्त ॥ १६३७ मिति कालिक सुदि ॥ २ ॥ वार वस्पत सु भमस्तु ॥ श्री गुरुवे नमः श्री ॥

२२७ पोथी । फोलियो सख्या-२०४ । दशो कागज । अपूर्ण । जोग, खडित । आकार-
६५×८७५ इंच । हागिया-गए, वाए-आधे से पौन इंच तक । अक्षर बडे एव
छोटे होने मे, पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२४ स ३३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६ से ३४ तक ।
श्री परमानंदजी वणिहाल द्वारा सप्त १८३३-१८३८ म लिपिवद्ध । लिपि-साधा
रणत पाठय । प्राप्तस्थान-साधु श्री हणू तरामजी महाराज, ऋकली । इमम
वे रचनाएँ हैं — (क) श्रव गुणि सापि, मख्या-६५५ । परमानंदजी रचित । “श्री
६५५ । १०२ ॥ एती एक मौ दोय प्रसंग सपुरण समापीत समत १८३८ ।” (ख)
चत्र सीरलोक भागोत । दुतीय सक्धे चत्र श्रलोकी टीका-मापि-६ । (ग) सप्त
श्रलोकी गोता टीका-दोहा-८ । (घ) राग नाम-२ कवित और १३ दोहे । ‘समत
१८३८ ।’ (ङ) नाव महातम नहचौ दीज पुत्री वापान, अज्ञात वृत । (६ अध्याय), कुल
छन्द-चौपई-दोहा-२६८ । (च) श्री महादेव पारबती सवादे सरोदौ-अज्ञात कृत ।
दोहा-चौपई-१६६ । (छ) प्रथम काफर बोध-गोरखनाथ कृत, छन्द स०-३० ।
(ज) मारकुडे पुराण-३० अध्याया मे सम्पूर्ण, भाषानुवादकता-दमोदर । छन्द,
चौपई, दोहा-सख्या-१३०६ । सुमरण भजन कर कोड । जोग ध्यान चित लाय ।
सो फल एहु कथा सुंय । दमोदर जम गाय ॥ ४२ ॥ १३०६ ॥ मारकुडे पुराण
सपुरण समापिता लीपतु परमाणद वचनारथी काहा पोथी सुपजी की मां सु लीप्यौ
गाव रासीसर मधे समत १८३३ भाद्रवा मुद ५ । (झ) सबद श्री वायक ।
गद्य प्रमग समेत । नवद मख्या-१२४ । (पुष्पिका के पश्चात ३ सबद और है
जिनम-‘विसन विसन तू भए रे प्राणी, साधा भगता उधरणो मत्र भी मम्मि
लित है) ।

आदि-श्री विसनजी सत्य सही लिपतु सबद श्री वायक आदे सबद वाणी दाभए न
परचो दाहो त ममै की मवद श्री वायक गुर चीहो गुर चिह पिरोहित गुर मुपि धरम
वयाणो ॥

अन्त-भाभोजी कह माड की पहेली जागी भाभजी कह्या जाण्यस्यो भाभोजी कह ॥

माडा सगते धरम कराइय ॥ जा धरमा उपरि भाव ।

दो-पौ पय वताइय ॥ मन मान जोह जाह १२४ ए पहेली उपरे वीहृजी ग्यानचरी
कही मवद मपुरण ॥

(अ) पजनांमु । (आरवी पारसी मा पजनामु हीदगी मा पजनमो) । (ट) मत्र । (१)
विसन मत्र । (२) वीरज मत्र । (३) तारग मत्र । (४) सुजीवण मत्र । (५) सोध

मन्त्र । (६) गुरु मन्त्र । (७) अघोर मन्त्र । (८) गायत्री-२५ (मन्त्र) । प्रमग यगायत्रा हैं — ब्रह्म, राम, विष्णु, वरा, रूद्र, लीछनी, नृस्यप, लक्ष्मण, प्रमन, गोपाल, प्रमराम, तुलसी, हनुमान, गुरुड, अगण्य, प्रथी, जल, अक्वाम, सुरेज, चण, गुरु, पुवन, हस, गारी, सगत । (३) सुपदेव लोला, अज्ञात कृत (अपूर्णा) । छन्द-गौडा, चौई, डिंगलगीत-१३६ । यहा म १०-११ पान अप्राप्य हैं । (६) पदम पुराण सतोत्र टीका सजुगत्य विसन सहस्र नाम (पदम पुराणे उधपडि उ मा महेश्वर सवादे । श्री विष्णु नामे सतोत्र) । २५२ श्लोका पर गद्य टीका । (ए)- (१) हरिताम माला (संस्कृत) १९ छन्द । (२) सत्यनाम सतोत्र (संस्कृत)-१७ छन्द । (३) पचीस नाम । (४) विसन विजर । (५) गोत्राचार । (६) गीत-वासद नाम, ४ दोहले । (७) वसद नाम । (८) आद्य वसावली । (९) विवरस्व । (१०) कलस । (११) पाहल । (१२) बालक शो मन्त्र । (१३) श्याह । पीया का सुरत्य । (१४) चौजुगी । (१५) सुरत्य । (१६) सदसी मुसली भाग्या, दोहा-चौपर्द-२३ । (१७) बार फरज मीवान के । (१८) असतोतर, बशीनाय का-६ छन्द । (१९) हरजस चौहजी का । सत्या १६ । (२०) हरि जस सुरजनजी का । सत्या ४८ । (२१) छुटक-हरजस स० ११ । ऊदोजी, चौहजी, काहीजी, तेजौजी, आसानन्द, दुरगदास, और पदम कृत । (२२) हरिजस वसजी का-मह्या १२ । (२३) हरिजस आलम का-स० १२ । (२४) हरिजस छुटक-बेसीजी, मास नजी, मीठुदास, देवीजी, और ऊदोजी कृत । (२५) हरिजस परमाणद का । सत्या-३९ । (२६) हरिजस गोरपनाथजी का । स० ८ । (२७) फुटकर हरजस । मीठुदास, अज्ञात, मुकनदास, तानमेन, भगाल, काग्होजी, भगवान कृत । (२८) रघ्या । (२९) हरजस वखनु, परमानन्ददास, रामदास अज्ञात, तथा किसनानन्द कृत । (३०) साहा (जाम्भागी) स० ३ । (३१) विसन असतोतर, २२ छन्द । (३२) अथर्षण वेदे नारायण पनिपद (संस्कृत) ।

आदि-श्री विष्णु जी सत्य मही ॥ ल्यपतु सावि ॥ यन्मकार परतग ॥

पहली नुयण नीरजणा ॥ सब का सोरजण हार ॥

सोरज्यां कु विसर नही ॥ दीयण चूगो दातार ॥ १ ॥

जाकु सोवरया अनत गुण ॥ पार न पाव कोय ।

आसा सबही पूरव ॥ अलय अजुनी सोय ॥ २ ॥

(परमानन्दजी की हस्तलिपि क अन्तिम २ छन्द, (ब) स) —

सेस सुर नर जाकी सरण्य । सीव अ भा ध्यावत सोय ।

सोय लोक तारण तरण ॥ अवर न बुजो कोय ॥ ४ ॥ (३)

दुत भाव अक्वम प्रम ॥ प्रयो धेय अमेमा ॥

अम क म बधीया ॥ होतु मसेलमान ॥ ५ ॥ (४) ३४ ॥ असतोतर सपुरण ॥

अन्त-त्रिये दस भागेण पट भागेण च वति ग्रहे

बोपारेसु थोड भागेण करता कम्म न लिपते ॥ १ ॥

जला रयेत स्थला रयतू रयेतू सोयल वचना

मूय हस्ते न दातव्य एव वदति पुस्तक ॥ २ ॥

२२८ बहीनुमा पुस्तिका । खण्डित, दीमक खाई हुई । अपेक्षाकृत पतल देशी कागज । ९ पत्रे । आकार-२१×४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-३३ से ४३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-११ से १७ । सवत १६०२-०३ म बिहारीदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रङ्कली । इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) कवित्त-१, बिहारीदास कृत । (ख) गुरु नानक जप (अपूर्ण) । (ग)-(१) प्रातः कालीन पूजा-पाठ विधि तथा आरती । (२) कलस धापण मंत्र, पूजा विधि (अपूर्ण) । (३) पाहल मंत्र । "इति श्री पाहलि करने का मंत्र संपूरन मिति फागुन सुदी २, १९०२ ।"

(४) बालक के कान फूँके को मंत्र । (५) तिलक मंत्र । (६) पैसेव करने का मंत्र । (७) दिसा जवे को मंत्र । (८) दतीन को मंत्र । (९) अस्नान मंत्र । (१०) भस्म धाग्न करवे को मंत्र । (११) सध्या वदन । (१२) नवण मंत्र ।

(घ) सप्तया आरती, सख्या-५ । (ङ) आरती प्रथम मंगलाचार, सख्या-४ । (च) विभिन्न मंत्र-(१) भोजन पापवे के सम को मंत्र । (२) भोजन कर चुक पर मंत्र पढ़े । (३) अनत वाधिवे को मंत्र (संस्कृत) । (४) जुर को मंत्र (संस्कृत) । (छ) अवनार नाम । (ज) नमस्कार, (संस्कृत) । (झ) शिवपावती सवाद-सख्याण । (ञ) चौजगी । (ट) बिहारीदास कृत ५ दोहे, जभ सरोवर अस्तुति छंद-१०, जभाष्टक, छंद-१० । इति श्री सतगुरु भावाजू की अस्तुति सपूर्णम् स० १९०३ मु० कालपी ।

(ठ) आरती-२, मोतीराम कृत । (ड) दोहे-५, बिहारीदास कृत ।

आदि-कवित्त-दीनन के भ्राता दुष्य दाता सिध्द दाता जाहि ध्यावत विधाता सिव सकट निवारी है । नाम के लिये त सकल सकट पराहि जाहि ध्यान के धरें ते करत बुध उजियारी है ।

अत- वार वार वर मागऊ सरन राधिय नाथ ।

दास बिहारी की सुनी तुव चरनन पर माथ ॥ ५ ॥

१२६ मनीन के बने कागज । पत्र सख्या-७ । जीण, खडित । आकार-८ ५×४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति २२-२३ । लिपिकार-सम्भवत गोविंदरामजी । अनुमानत सवत १९१०-१२ के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रङ्कली । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) साखी खेजडली री-गोकुलजी कृत । (ख) श्री गोविंदरामजी कृत-(१) जाम्भोलाव महात्म्य छंद-६ तथा (२) साखी, ६ छंदों की ।

आदि-॥ श्री विसनु जी लीपते सापी येजडली री दो०

पण पालण पीसणा गजण दया राधण हार ।

जोवार्ण जालम तप्यो अजमलजी अवतार ।

अत्र-सुध जीव सोध्या सही दोनो कवल नीभाय

गोमदरांम बहै जभ बु सीवरो हीत घोट लाय भरम न भुलो भाईयो ६
 २३० पोथी । मगोन के बने पानो की । फोलियो ४१ । आकार ५ ५×४ ५ इंच । हागिया-
 आधे से पौन इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर प्रतिपन्ति १५-१६ । लिपिकार-
 प्रज्ञात । अनुमानत सवत १६५० के आसपाम लिपिवद्ध । लिपि-मुपाद्य । प्राप्ति
 स्थान साधु श्री हणू तरामजी, रडकली । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) कवित्त
 जांभोजी के जन्म समय का सख्या-८ । केसोजी, विशोर और अज्ञात कृत । (ख)
 निज धम उनीस का कवित्त-(१) ऊदोजी कृत-५ कवित्त, (२) तीस तिन मृतक
 पाच रतवती यारा । (ग) रामसरण के कवित्त-स० २ । (घ) जमे सबधो कवित्त-
 १ । (ङ) फुटकर छंद । हरचंद, ऊदोजी, केसोदास, गहू, गिरधर कविराम,
 रामचरण, तत्त्ववेता तथा अज्ञात कविया के । (छंद सख्या १७ स ५३) । (ज) अठार
 पुराणों की सख्या, निपट निरजन, तत्त्ववेता, बालकराम, जगनाय, रजब, मुदर,
 दत्तराम, सिंह, मीर, भगवान, बील्होजी, खेमदास तथा अज्ञात कृत-छप्पय-कु इलिया
 आदि, छंद सख्या-५४ से ११३ । (झ) श्लोक कवि कालदासजी के-५ । (ञ)
 फुटकर छंद-ऊदोजी, तत्त्ववेता, सहजप्रताप तथा अज्ञात कृत । (छंद-११४-१२८
 और अंतिम दो दोहे) ।

आदि-श्री जभगुर गुरवे नम कवित्त श्री जांभोजी के जन्म समय का ॥

आदि अनादि जुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लीयो है ।

धनहीं धन भाग बडो जिन हासल कु हर मात कह्यो है ।

अत-दोहा-वृष्णा चितवन दोष बुध नर सग तृप मन दोष

कायक बायक मानसो दसू दोष तज मोष २

२३१ गुटका । अपूर्ण । दीमक खाया हुआ । फोलियो-२९ । देशी कागज । आकार-१
 २५×५ ७५ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इंच । विभिन्न अज्ञात
 लिपिकारों द्वारा लिपिवद्ध होने से, पवित्र-प्रतिपृष्ठ ९, ११, १७ । अक्षर-प्रतिपन्ति-
 प्रमा १०, १५, तथा २५ । अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-
 पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रडकली । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क)
 सबदवाणी (अपूर्ण), सवद सख्या-३ । (ख) ससृष्ट श्लोक, गद्य टीका सहित । (ग)
 श्रो-पुष्टय तथा पशु आदि के लक्षण (ससृष्ट श्लोक पद्य टीका सहित) ।

आदि-तिट्टि गग होलोतेहे जाय सतगुर धीहै सहजे हाय

निरमल पांणी निरमल घाट निरमल धोवो बध्याहा पाट

अन-पर नारी मुरति कीय पर दोष जिय जानि जहू

जो मन घबल बसि नही सोउ इनस बेलिन मनीये ॥ ७८ ॥ नारी दोष

॥ दुहू ॥ निलज - ॥

२३२ गुटका । देगा कागज । अपूर्ण । जीग और सडित । बीच के कई पृष्ठ रिक्त हैं ।
 आकार-६×४ ५ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-साधारण पौन इंच । पवित्र-
 प्रतिपृष्ठ-८-१० । अक्षर-प्रतिपन्ति-१० से १५ । ऊदोजी मडीग तथा अग्र अनेक

लिपिकारों द्वारा लिपिबद्ध । लिपिकाल-संवत् १८३६ से १८३८ (तथा इसके पश्चात् भी) । लिपि-कही कही पाठ्य, अधिकतर कही और दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली । इसमें ये रचनाएँ हैं -(क) प्रसन्न सीणगार (पिसण सिघार), सेवादास कृत (अपूर्ण) ७० छंद । (ख) सिदा-घात पाटी । (ग) लघुचर्णायके राजनिष्ठ सास्त्रे (सस्कृत) । (घ) एकावलि री पाटी । (ङ) सबद-कबोर का । (च) सीवरासरी कथा-गद्य (अपूर्ण) । (छ) ऐकादशी री कथा-गद्य (अपूर्ण) । (ज) हरिरस गुण, बारहद ईसरदास कृत । (अपूर्ण) "स० १८३८ वर्षे शाके प्रवृत्तमाने : मासे ज्येष्ठ वद १० बुधवारं विनोई केसा अडोग तत पुत्र उदा लिपा कृत विस० ॥ वमनो पुन सावत् पुवार पठनाथे ॥ ग्राम रुडकली सुभ भवेतु ॥" (झ) जोगणी चक्र, गग के फुटकर कवित्त आदि । (ञ) सायी-जाम्भाणी । (ट) कबीर, मोरा, वपतावर तथा अज्ञात रचित भजन । (ठ) दसु अवतार । (ड) राजा भोज डोकरी री कथा (गद्य) । (ढ) गौडा विगनान । "स० १८३६ रा वये वमाक सुद ९ ।" (ण) पावस रितरा दूहा । (त) चद्रायणा लालदासजी रा कह्या सख्या-७ । (थ) ऊदोजी अडोंग की लूर । (अपूर्ण) । (द) मोरा के भजन, फुटकर सबए वाजिद के चद्रायणे आदि । (ध) वारापरी (सुदामा की) ।

आदि- ॥ ६० ॥ अय प्रसन्न सीणगार गुण लीपते ॥

उनमन नेजा फ्रहर । अनहृदं धुरं नीसान

सहीत भोम्पा उपर । चढीयो सबद बीवाण ॥ १ ॥

अत्र-लबावर गजवदन तु ॥ सीव सुत गवरो नद

तु + त प्रन हीरदे कर ताकी हरो दुप दु द ॥

+ भजन भगवान है सकट हरन गनेस ।

बीपती हरन थी लछीमी माया देन महेश ॥ श्री रामजु ॥

२३३ पुस्तिका । मंगीन के बने कागजा की । अनेक पृष्ठ रिक्त हैं । आकार-७ ५×५ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत संवत् १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-भिन हाथा की लिखावट म, कही पाठ्य, कही दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रुडकली । इसमें ये रचनाएँ हैं -(क) भाडली पुराण (गद्य म) । (ख) औपद । (ग) मंत्र । (घ) साखी-सख्या-३ ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ भाडली पुराणे लिप्येते प्रथम वर्षा रूप पुत्र हनी जनम उत्तपत कहे काती महिन दिवाली मूय पद्य उगत आयमें तें आम रातडा होव निका आगला बरसनि बरपा रूप अदिम रित आवी कहिज

अत-मीनया तो देई दुलब ह जीव पडो सगट भारीये ।

पाप परासित भेट जभराज हीरद हर न धीसारीये ॥

२३४ पोथी । कोलियो सख्या-५१ । अपूर्ण, खण्डित । देशी कागज । आकार-१० २५× ६ ७५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-डेड इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११-१३ । अक्षर-

प्रतिपत्ति-२४-२६ । लिखमगदास गायणे द्वारा सवत १६३५ म लिपिवद्ध । लिपि-
पाठ्य । अनेक पने आपस म चिपक जाने म फट गए हैं, ऐम स्थल अपाठ्य हैं ।
प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा । इसम ये रचनाए
हैं —

(क) कथा मेडत की, कैसीजी वृत । छंद मर्या-१६३ । समत १९२५ मीती अमाव
वद २ ॥ वार अश्विनवार क तिन कथा मपुग्ग कीनी ॥ तपीत गावण लीछमणाम
बेटा श्री आमारामजी का ॥ पोधी लीपी गाव पडीयात मधे । (ख) अहदावैणी
(कथा) डेल्ह वृत । छंद मर्या-६५५ ।

जादि-श्री गणगाममी । श्री जभस्वरायनम ॥ अथ कथा मेडत की लिप त ॥ राग
हमा ॥

दोहा-पार ब्रह्म पहली नउ ॥ जिहि सिवर्या सुप धाय ॥

जभ गुह सिवरू सदा ॥ सकट कर सहाय ॥१॥

अत-कहो जोमा जोमण कुण जोमसी तो सुन कियो काल

नोठर बाभण बाभणी प्रच्या तात अहमात

अरजन कहै उचर नोठर (-छंद ६५५ वा) ।

२३५ गोत्राचार आदि । अपूण । देशी पत्र-२ । जीण । आकार-१० २५×४ २५ इंच ।
हागिया-नाम मात्र को । लिपिकार-अनात । मवत् १८०० के लगभग लिपिवद्ध ।
लिपि-पाठ्य । पत्ति-प्रतिपृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रतिपत्ति-४६-४८ । प्राप्तिस्थान-
महत श्री रणछोदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा । इसमय रचनाए हैं —(१)
गोत्राचार (महादेव पावती समाद) । (२) वसदर के नाम । (३) आद वसावला ।
(४) कवत । (५) विवरस्य । (६) अस्तुति । (७) कलस (अपूण) ।
जादि-श्री विष्णजी ॥ अथ गोत्राचार ॥ श्री महादेव उ० ॥ उं जडु वास ह्यु ।

पूज्यत्र । स्याम निघू । गुणे निघू आकास पत्र

अत-पांचा कोड्या के मुपी । गुप हलाद कलस थाप्यौ ॥ वह कलस जस धम ह्व म
इह कलस हुदयो । सुप सुवायन करी । द्युप दुवायन पास टाली ।

२३६ साली । सम्या-३, वीत्होजा, कैसीजी वृत । खडित । देगी वागज । आकार-८ ५×
४ २५ इंच । हागिया-नाम मात्र का । पत्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपत्ति-
२६-२४ । लिपिकार-अनात । अनुमानत समत १८५० के आसपास लिपिवद्ध ।
लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री विष्णु जा ॥ सापी लिपते ॥

घाघी साभलजस धागइ देस जी यो पोमी पितबर आवियो

कहि पूरवल सं धम न रेसो जी यो रांक रतन धन पावियो

अन पार गराये देव धामो मिल सर नर कामणी

कह कैसो सुणो साधो भारी अरज सुणो मोटा धणी ॥ ५ ॥

२३७ सामो ७ तथा कुंवर छंद-४ । जन हरजी वृत । अपूण, विनारा म मन्दिन ।

देशी कागज । पत्र सख्या-५ । आकार-६×४, इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३८ । लिपिकार अनात । अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णुजी सहाय लीपतु शापी जाभाणी ॥

रे मन गहला सारा पहला कुद र काम मचाव
धुरो कहे सब कोई तोकु तोही सरम न आवे
अन्त-गिण न ठोड कुठोड मन सू कदे न धोजिये
मन क बोहत मरोड भाय हतो इ द आपसू ४ ॥
सतो मन की कहा परतोत ब्रह्म देव सू

२३८ । साखी-१, हरजी कृत तथा २ श्लोक, १ दोहा । पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ इंच । हाशिया-नही है । कुल ४३ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१९ । सतोप-दास द्वारा सवत् १६४३ मे लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि- ॥ श्री ॥ श्री गणेशायनम उ

बायो सही विद्वा धीस साची गुरु सभरायल्
कान कवर नदलाल किरपा कर आयें भले २
अन्त-अर श्री हत्या भाग है गोहत्या मद जान
ब्रह्म हत्या तमाल है यह निश्च कर मान १

२३९ छप्पय-७ और प्रभ चितावणी, छन्द-१३३ । ऊदोजी कृत । पत्र सख्या-१२ । देशी कागज । अत्यंत जीण, खण्डित । आकार ६×४ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ आधे से पीन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ६ १० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५ ३० । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत् १८०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विगनजी नृत्य सही ॥

नमो नमो गुरु जभ नमो गुरु ज्ञान दिवाकर ।
नमो गुरु उपदेस नमो गुरु देव विद्याधर ।
नमो नमो सिध साथ नमो रिप राज मुनिवर ।
नमो नमो पित मात नमो अब देव पुरद्र ।
पाच तत ब्रह्म मडलु नमो नमो अब्बात्मा ।
कर जोडे उधव कह नमो विष्णु प्रमातमा ॥ १ ।

अन्त-हर कृपा सु मनय तन गुरु कृपा सु भक्ति ।
उधव हरि कु सियरलो बोहोड न अ सो जगत ।
हर सेवा गुरु बदगी कर सतन सु भाव ।

- २४० "ऋषय बोहुरे न पायबो अ सो उतम बाव ॥ इति श्री चितावली सपूर्ण ॥
सात धार, आठ यग, चारह राग और बलिजुग तथा जाम्भोजी के अवतार लिये की
विगति । देगी पत्र-१ । गण्डित । आकार-६×३ इंच । हाशिया-नाम मात्र की ।
पक्कि-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर प्रति पक्कि-२७ ३० । लिपि-मुपाठम । सबत १८३५ में
लिपिवद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोडदासजी, भायूणी
जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री विसनजी सत्य ॥ अथ लिपते सात धार ॥ आदीतवार ॥ १ सोमवार २ म-
गतवार ३
अन्त-अथ वीलैजी तो बचत में चौरासो वरस देह रापी कही जाम्भोजी की ॥ अरु प-
रमाणदजी लपो करि पच्यार्सी वरस कही ॥ इति सबत १८३५ ॥
- २४१ कथा अहमनी, डैह कुन । छन्द सख्या-६९५ । पत्र सख्या-३९ । खण्डित । देगी
कागज । आकार-९×४.२५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ
१० । अक्षर-प्रतिपक्कि ३०-३२ । लिपि-पाठय । माधु कनीरामजी द्वारा पुर में सबत
१८८१ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी महाराज, भायूणी
जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री विष्णुजी सत सही ॥ लीपते अदावली ॥
पणउ गुणोउ गु णा गहोर ॥ सदीरी पोजर सरीर ॥ १
मुस चुड फरस जो कर ॥ को को दोप बीपायक हर ॥ १ ॥
विघन हर लाबोवर देव ॥ गिर मुक तो सायर सेव ॥
पहलु नाव नारायण तणो ॥ नास पाप घम होय घणी ॥ २ ॥
अत-कथा सवारी जुगत सु ॥ भारत री साया घरी ॥
गीता की सब रीत ॥ कथा सु ण जे अमनी ॥ नर नारी सब लोग ॥
जे नर तो मुख भोगव ॥ जाह वीसन के लोक ॥ ६९५ ॥ कथा सपुरण समापी-
ता ॥ समत ॥ १८८१ अये मीनी चत मुख १२ वार सोमवार ॥ लीपतु साध कनी
रामजी ॥ सोय बलुजी को ॥ उदयार चीत सु लीपाय छ अहमनी सपुरण ॥ समा-
पीता ॥ गाव पुर मधे ॥ मुधान वास परगट ॥ साधरी जाम्भोजी की सुचीत ॥ श्री
वीसनजी छत छ जी ।
- २४२ विभिन्न मत्र । पत्र सख्या-३ । गण्डित । देगी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशि-
या-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर प्रतिपक्कि ३२ ३४ । लिपि
पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत मवत् १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्ति
स्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, भायूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये मत्र हैं—(क)
बलस । (ख) पाहल । (ग) बालक को मत्र । (घ) स्तुति ।
आदि-श्री विमनजी सत्य महीं ॥ उँ अकल रूप मनता उपराजी ॥
ता माँ पाँच तत होय राजी ॥
अन्त-आइ बलाइ बरु करी ॥ बुर वालीयो बुर चीनीयो ॥ तिसक चक्र मारी ॥

त्रिलोकी नाय भलौ है स करी ॥ इति स्तुति सपूण । ७ ।

२४३ पहलाद चरित्र, केसौजी कृत । छन्द सख्या-५९६ । पत्र सख्या-६७ । खण्डित । अप
 क्षाकृत मोटे देशी वादामी रग के कागज । आकार-८ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ,
 बाएँ-आधे से पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति साधारणत २८-
 ३२ । लिपि-पाठ्य । प्रभुदास दादूपथी द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास
 लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।
 आदि-श्री विष्णुजी शत्य अर्थ पहलाद चरित्र लिप्यते

नारायण पहली नउ सामी सर्वं मुजाण

आदि भगति कहस्यो कथा पहलाद चिरत वाण १

अन्त-दो० मो मत साह बौनवो बिसन तणा बापाण

कर कथणी के + + + + + यो सत मुजाण ९५

में दावण पकडयो दिन की सतगुर कर सहाइ

+ + + + + बारिहा अबक मोहि मिलाइ ५९६ इति श्री पहलाद चरित्र

स + + + + + त साद प्रभूणस दादू पथी ॥ वाच विचार ज्यानु नू ग मलाम
 ॥ श्री ॥

२४४ आदि वसावली । (आदि विष्णु से जाम्भोजी तक) । देगी पत्र-१ । खण्डित । आकार
 ६×४ इंच । हाशिया-नाम मात्र को । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५
 २७ । लिपि-पाठ्य । अनात लिपिकार द्वारा सवत १८७८ मे लिपिवद्ध । प्राप्ति
 स्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु जी प्रथम आदि वसावली लिपत प्रथम आदि विष्णु १ विष्णु को
 पुत्र ब्रह्मा २

अन्त-सेतराम रो रोलो २६ रोल को लोहट २७ लोहट को श्री जाम्भोजी २८ सवत
 १८७८ मित्ती आमोज सुदी ३ ।

२४५ ध्रमचिरी, सुरजनजी कृत । छन्द सख्या ७८ । पत्र सख्या ४ । खण्डित । देगी कागज ।
 आकार १० २५×४ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग पौन इंच । पक्ति-
 प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-४३ ४५ । लिपि-साधारणत पाठ्य । लिपिकार-
 अनात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री
 रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ लिपत ध्रमचिरी ॥

दोहा-कहाँ कम जल कोपली ॥ वहाँ तिसनां कहा तीर ।

रे मन कित पित मान ततू सपत बघ्यो सरीर ॥ १ ॥

अन्त-दो०-चोरी पकडी घोहट । दूतो लागो दाव

मुक्ति विद्र के पूत न ॥ विदर न तिर पाव ॥ ७८ ॥

इति ध्रमचोरी सपूण ॥

२४६ श्री विष्णुचरित, ऊदोजी कृत । छन्द मर्या-११० । अपूर्ण । खण्डित । देगी कागज ।

प्राप्त पत्र सख्या-१० । ११ पत्रों में से पहला अप्राप्य । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अग्र-प्रतिपवित्र-२०-२४ । साधु रामदास द्वारा सबत् १८८१ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-तोय तारत अग्न सूत चद सोई ॥ सब मै तेज विष्णु का होई । १२ ।

पुरुष प्रकृत का सकल पसारा ॥ भक्त काज कीनों सेंसारा ।

अत-सोरठा-हरि अवतार अतत अनत चिरत अवगत तणा

गाव मुनी जन सत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥ १० ॥ (११०)

इति श्री विष्णु चिरत सपूण ॥ लिपतु साथ रामदास श्री माघोदासजी रा सिप । समत १८८१ मितो पोह सुद १२ ॥

२४७ अवतार चौरत मामाजी का, बील्होजी हृत । छद सख्या-१४० । पत्र सख्या-११ । सङ्घित । अपेक्षाहृत मोट देगी कागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-गाएँ, बाएँ साधारणत पीत इंच । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-११ । अग्र-प्रतिपवित्र २५-२७ । सदा रामजी द्वारा अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्ति-स्थान-महंत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री श्री विमलजी लिपतु अवतार चौरत मामाजी का-

दोहा-नघनि कर गुर आपन नऊ निरमल भाव

कर जोडे यदु धरन सोस नवावय १

अन्त-घनि दिहाडो रण घनि गुर परगट सतार

वाल्ह कहै जाँ ओलण्यो ति उतरिस पार १४० । कथा सपूरण समाप्त देती श्री भोतार का चौरत सपूरण भेणेत लीपतु विमनोई साथ श्री पराजजी का बेस मदारामजी लिपतु पुस्तक ।

२४८ तलाव की कथा, बेसोजी हृत । रूपक सख्या-१२ । पत्र सख्या-४ । देगी कागज । जोण, सङ्घित । आकार-८ ५×४ इंच । हाशिया-नगण्य । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-१० । अग्र-प्रतिपवित्र-३१-३४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सबत् १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु । लिप्यते तलाव की जत ॥ राग सोठ ॥

पारघह्य पहलो नऊ जगमरण जगदोम

रुप धोरामो दे धुणो त्रिण सांम नवांड सोस ।

अन्त-यदु तोय को गुण गायो बेस गुण गु वि सुणायो

रिख म तर डूजि न बांणो जत मोहि कह्यो स्त जांणो १२ ।

तलाव की कथा सपूण ॥ य

२४९ पत्र सख्या-८ । सङ्घित । देगी कागज । आकार-९.७५×४ इंच । हाशिया-नग मान की । पवित्र-प्रतिपृष्ठ १० । अग्र-प्रतिपवित्र ४०, ४२ । लिपि-पाठ्य । लिपि-

कार अज्ञात । अनुमानतः सबत् १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) औतार की विगत्य की अस्तुति-गोवलजी के कहे छंद, सख्या-४७ । (ख) इदव छंद-गोकलजी का कहा, सख्या-३२ । (ग) सबया-१, मुदरदासजी का (घ) सबया-१, पेतसी कृत । आदि-श्री विष्णुजी सत्य लिपते औतार की विगत्य की अस्तुति ॥ गोवलजी के कहे छंद । दोहा-रिघपति सिधपति सोलपति सुरपति सदा सहाय ॥

गतिदाता गोविंद मुमरि । गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त-दू डत न पायो राम तायें भया दूडोया

जोगी में न जती में न साथ में न सती में न गछ में न गती में न ज्ञान हीन मूडोया
पुंय में न वान में न भसम सनान में न सुधि में न ज्ञान में न महा सठ सूडोया
सिब की न वात गहै जैन क न ठाठ रहै घडत न आव घाट पर को सो घुडोया ।
पेतसी कहत इन वकुठ में ठोर्नाहि दु डत न ०

२५० चितावणी, मुरजनजी कृत । छन्द सख्या २६ । पत्र सख्या ३ । खडित । देशी कागज । आकार-९×४ इंच । हाथिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः सबत् १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी आयूणी, जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिखतु चितावणी ।

दोहा-कहा करम जल कोयली कहा तिष्णा कहा तीर

रे मन कित पित मात तो सपति बप्यो सरौर १

अन-दुहा-साच को घर एक मुरजन घर मुनि जन ध्यान

रहै नाच अलेप को क आपणों ईमान २६

इति श्री मुरजनजी की चितावणी समाप्त ॥ १ ॥

२५१ क्या दूणपुर की बोलहोजी कृत । छंद सख्या-५६ । पत्र-सख्या-३ । देशी कागज । आकार-१० २५×४ २५ इन्च । हाथिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३८-४१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः सबत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विसनजी लिखते क्या दूणपुर की राग भासा

दोहा ॥ नविनि करु गुर आपण बद् चरण सुभाव

भगना तारण भी हरण तीन लोक को राव १

अन्त-सतपुर सेती बाद कर कदे न जीना कोइ

बिहू कहै सेवा करो नीब नीब नीब मय होय ५९ । इति श्री दूणपुर की क्या संपुरणम् ॥

२५२ आरती, सख्या ५ । ऊडोत्री-३, श्रोतम-१, अज्ञात कृत-१ । मंगीन का बना हल्के नील

रग का एक पत्र । खण्डित । आकार ६×४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल २२ पंक्ति या । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४ ३६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्रीरणाछोडदासजी, आयुणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम उं आरती कीज श्री जभ गुर देवा पाट न पाव अल्प अमेवा अन्त-चौथी आरती अनु नवाए भूच लोक प्रभू पात कहाए ॥ ४ ॥

पात्रमो आरती सामू जन गाव सोई या अ मरा पव ॥५॥५॥

२५३ नवण, संस्कृत श्लोक-१ एवम् मनहर छन्द-१ । देशी पत्र । खण्डित । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल १६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति २४ २५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६०० के लगभग लिपि बद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रणाछोडदासजी, आयुणी जागा, जाम्भा ।

आदि-उं स्वस्ति श्री विष्णवेनम ॥ उं विष्णु विष्णु भण रे प्राणी साथे भवते उद्धरणों

अत-प्रसन्न वदन जाकी निस दिन रहै सदा लछमो निरप ताकी आनद भरत जु अ सी रूप विष्णु को गति अरथ विघन कू नित प्रति चित महीं चितवों करत जु २

२५४ मयारामदास कृत अभावस्था कथा, छंद १४४ और कवित्त-१ । अपूर्ण । जोण, खण्डित । प्राप्त पत्र सख्या ७ । कुल ८ पत्रों में से प्रथम पत्र अप्राप्य । अप्रकाशित मोग देशा बागज । आकार-८ ५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२९ ३२ । रचयिता द्वारा सवत् १८५१ में लिपि-बद्ध । लिपि-मात्रायत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रणाछोडदासजी, आयुणी जागा, जाम्भा ।

आदि-तृभयन धनी ॥ ८ ॥ इहि छत करत पाप सब नास ॥ हूवे उजल ज्ञान प्रकास ॥

अ सी मुनि + + + की बानी । अजन मन आसका आनी

अनु न उ० । सोनदयाल दीन पूत पारक ॥ सांसय हरन ज्ञान विस्तारक ॥९॥

अन-पाटि पाटि जो में लिपि सो छमियों सब साथ ।

मो मति अति ही तुष्टि है अभावत महिमा अगाध ॥२॥

सवत् १८९१ थावण दाम आदि पद्ये लिपि सप्तम्यां गनिवामरे । नियन मत श्री १०८ स्वामशमजी तम्य ि०२ मयाराम । अथ दम अदतार जम को कवि ॥

नेउ आदि रवि कछ ॥ मछ अतित मयु बानी ॥

कोक मयु पह आदि ॥ नृसिध मापव भोगु जाना ॥

आरथ तित निव मन ॥ करसपर दगटे जनि ॥

मयु पह गिनराम ॥ भार बानन नित भानु ॥

कूरम अतिन यमु भाऊ में ॥ नेउ नित जर मयु जानि ॥

ता दिन निवमय मयाराम ॥ उन कोजी अथ हानि ॥ १ ॥ ३ ॥

२५५ पुह श्रीरं लूर । पत्र १ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । किनारे खण्डित हैं ।
हासिया-नाम मात्र को । कुल २६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३९ । लिपिकार-
प्रज्ञात । अनुमानतः सवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-
महंत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये कृतियाँ हैं — (क) पुह पतीस की । (ख) लूर (२४ का) । (ग) चुगाइया की पुह (२७ की) । (घ) छव
राजवीया न पुह । (ङ) प्रनाली (जाम्भोजी से लेकर सावतराम तक शिष्य-परम्परा) ।
आदि- ॥ श्री विष्णु ॥ लिपितु पुह पतीस की ॥ इमें भादु की पू० बूड विलेरी
की पू०

अन्त-सुजाणजी का चेला कंनौरामजी ११।२। कंनौरामजी का चेला अजुबोजी । १२।१
सावतराम २ ॥

२५६ ब्याह (पद्धति) । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-५ । ६ पानों में से प्रथम अप्राप्य । जीण,
खण्डित । देशी कागज । आकार-८ ५×४ २५ इंच । हासिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच ।
पक्ति-प्रति पृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३५ । लिपि-प्रायः पाठ्य । सवत्
१८४९ में साधु मयारामदास द्वारा अलाय में लिपिबद्ध । कतिपय पक्तियाँ भिन्न हस्त-
लिपि में भी हैं । प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।
इसमें ये कृतियाँ हैं — (क) विष्णु महिमा । (ख) आदि चत्वारली । (ग) पचीस नाम ।
(घ) विवरस । (ङ) कलस । (च) सूरति । (छ) चौबुगी । (ज) सूरत मुसलमानों ।
(झ) गजल ।

आदि-विसन सब सबधे ॥ विसन धान धन तरे आवो देयो सर्वा सरयो को धनी ।
ध्यान धूपे मन पोह्ये पच इट्टी होतासणीं । होम जाप समाधि पूजा पूजा देव
निरजणीं ॥

अन्त-ब्याह सम्पूर्णम् ॥ स ॥ लिपितु साधु मयाराम सामजी का शिष्य । पठनाय
थापन । हरिविसन । सवत् १८४९ ज्येष्ठ सुदि ४ बहस्पति । स्थान अलाय में लिपी
छ । श्री ॥

२५७ पूरहोजी की कथा, वीरहोजी कृत तथा बड़ी नवण । अपूर्ण । जीण, खण्डित । देशी पत्र-
१ । आकार-६ ७५×४ २५ इंच । हासिया-दाएँ, बाएँ एक इंच कुल १७ पक्तियाँ ।
अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३६ । लिपि-पाठ्य । दो भिन्न हस्तलिपियों में । लिपिकार-
प्रज्ञात । अनुमानतः सवत् १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महंत श्री
रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-सेती सोप सुण पूरहो चालण हार १७

घोपई-पूरहो मती करि सण हकारया नीवतो मांग्य बचन कहि सारया
केती एक गाय कितो एक मांणो कापड घोपड धन झांमाणो १८

अन-विष्णु भजियो विष्णु मन रहियां तेतीस कोड पार पठु तो साचे सतगुर को मत्र
कहोयो । इति श्री बड़ी नुवण ।

२५८ कथा अष्टावर्णी-बेल्ह वृत्त । अपूर्ण । आदि से ८८ छंदा तक । प्राप्त-पत्र सख्या ४

देशी कागज । जोरें, खंडित । आकार १×४ इन्च । हाथिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च पक्ति-प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३४ ३५ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडास, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु श्री सत्य ॥ ॥ श्री ॥ गणेशामनम ॥ अथ कथा महदावणी लिपते ॥
राग धनाश्री ॥

प्रणउ गणपति गुणा गहोर ॥ सहूरो पिजरे सरीर ॥

मूस चड करस कर घर । को को दोय विनायक हर ॥ १ ॥

अत-छपन कोड जादय घोळ ॥ गुण नारायण पात ॥

घारं वरस रो मोटी होयसी ॥ किण विष लांवां घांत ॥ टंटे ॥

घारं वरस रो मोटी होयसी । वाह ॥

२५६ मत्र आदि । अपूरा । कुल १६ पत्रा मे से अंतिम ७ पत्र प्राप्त । चारों ओर से खंडित । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाथिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३१ । लिपि-सुपाठ्य । मेघदास द्वारा सवत् १८७८ मे लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडासजी, आधूणी जागा, जाम्भा । इसमे मे रचनाएँ हैं — (क) रामरदया, रामानंदजी की (अपूरा) । (ख) कलस । (ग) पाहल । (घ) बालक को मत्र । (ङ) कवित तेजोजी कृत । (च) बालक को मत्र । (छ) चद्रायणा छंद ६, अज्ञात कृत । (ज) कवि गढ़ कृत कुइली १ । (झ) दोहे-७, अज्ञात कृत । (ञ) मत्र मोहनी की । (ट) विछु की मत्र । (ठ) मत्र अदासिनी की ।

आदि-ले प्रात बाने ॥ जे नरा मोक्ष पावते ॥ इति श्री रामरदया रामानंदजी की मपूणम् मवत ॥ १८७८ ॥ पोह सुध ॥ ६ ॥ वार अदीतवार । लिप्यत वमनी श्री राम दासजी का घेटा मेघदास लिखत ।

अत-पापा वाली न पाव गुल वाली न सुरजी कानी फक तीन गोली तीन दीन पाव बीष्णजी रा साय कनिरामजी रा सीप सावतराजी पठणारये ॥ नगर जाबपुट वागामधे पोथी प्यारीराम की हर हीया की हार घणा जतनु मु रापजा पोथी सेती प्यार मुभमस्तु

२६० ऊदोजी कृत १ कवित घोर १ सवया । देशी पत्र-१ । आकार-६×४ इन्च । हाथिया-दाएँ, बाएँ पौन इन्च । कुल ६ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३५-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९०० के धामपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडासजी, आधूणी, जागा, जाम्भा ।

आदि-कवन गुर महमा को ॥ गुर देवन के देव गुरां ता अवर न कोई
भव मे इवन जीत सतगुरु तारे सोई ॥

अन-निज अपराधि सेतो प्रम पत लोथी सेतो

उध्व विचार विद्व सरण तोह आधो है ॥ २ ॥

२६१ प्रह्लाद चिरत, ऊदोजी कृत । छन्द-२३२, (लिपिकार ने ३३० छन्द वताए हैं) ।
अपूर्ण । जीण, खडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या-१६ । कुल २४ पत्रा मे से
८ पत्र, सख्या ३, ४, ५, ६, ७, १६, १७ और १८ अप्राप्य । आकार ६ २५×४ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्कि-३०-३४ ।
लिपि-मामामत पाठ्य । सवत् १८६६ मे स्वय रचयिता द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्ति
स्थान-महत् श्री रणछोडदासजी, आयुगी जागा, जाम्मा ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ ॥ श्री प्रमात्मन नमः ॥ अथ प्रह्लाद चिरत लिप्यत ॥

दुहा-प्रथम षडु गुर देव कू ॥ दुतिय षडु सय साव ॥

त्रितिय षडु म्हाविष्णु कु ॥ कहु चिरत प्रह्लाद ॥ १ ॥

अत-जम गद मम इष्ट है सत सबै सिर मोड ॥

जन ऊधो की थीनती ॥ सोस न्वाय कर जोड ॥ ३० इति श्री प्रह्लाद चिरत
सपूणम् ॥ १ समत १८६६ रा असठ सुध ६ ॥ चार वसप्तवार माघ भाहाराज श्री
मुदरजी का चेला लिख्यते ऊधोदास वाच जाकु नीवरण वाचणी जी (दाएँ हागिए मे-
लाल स्याही से-॥ समसत चोपई दुहा छन्द षवत ३३० ॥)

२६२ इसकदर की कथा, केसौजी कृत । छन्द सख्या-१०२ । अपूर्ण । जीण, खणित । प्राप्त
पत्र सख्या ७ । कुल १० पत्रो मे से ३ पत्र सख्या १, ७ और ८ अप्राप्य । देशी कागज ।
आकार-६×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ एक इंच । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर
प्रतिपक्कि-३५ ३९ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के
लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान महत् श्री रणछोडदासजी, आयुगी जागा, जाम्मा ।
आदि-ई सु णि लोग सहर की आई

साभलि सनगुर सुरदाणी तहा घरम दया मनि आणी २०

दो० सख साहब का साभल्या विवर बिचारी बात

दरजी चाल्या देव दिस जम गुरू की जात २१

अन-फेस कथा कही कर जोडि आवागवणि चुकावो घोडि

जो यहै कथा सु ण चित लाय सत करि माने सुरगे जाइ १९२ इति श्री म्म-

क(र) की कथा सपूणम् श्री परमारमन नम

२६३ साधो-सप्रह । अपूर्ण । भाखी सख्या ३७ से ८४ तक पूण । विभिन्न विष्णाइ कवियों
द्वारा रचिन । जीण, खडित । प्राप्त पत्र सख्या-१६ । आकार-८ ५×४ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ एक इंच । लिपि-पाठ्य । पक्कि-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर-प्रति
पक्कि-३८-४१ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपि-
बद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रणछोडदासजी, आयुगी जागा, जाम्मा ।

आदि-वन हेड आयो ॥जी । काढे तेग गरदन बाई । सोस उत्तारि भुय थायो । ४ ॥

आपे पडोयो आपे पतरो ॥ आपे आप सिझायो ॥

अन घर मिदर माता पितो ॥ भूवा भतीजा वीर ॥ तजि तीरध नू नोसरो ॥

सकल चुकायो सोर ॥ ६ ॥ भती करे मौमण मित्या ॥ पैड चल्या पुलोई ॥

कुण कितना दिना ॥ पोहो ॥

२६४ सडयां की विगति-३५ पु ह, २२ को लूरो, विगत लुगाइयां री, तथा राजा की पुह ।
अपूरण । देशी पत्र-२ । खडित । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक
इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२१-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनु-
मानत सबत १८०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री
रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-१०००००००० पेतु जाणों की पुनह मुयो कोडि को

अत-राजा की पुह असकर लोदी महमदवा लोदी सांतल राठोड़

जतसी भाटी सागा सीसीदीयो दूदो राठोड इति सत्य

२६५ सूय स्तोत्र (संस्कृत) श्लोक १६ (अपूरण) तथा विगन बाईस भजार की । दो पत्रों में
मे दूसरा प्राप्य । खडित । देशी वागज । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ,
बाएँ-एक इंच । कुल ११ पक्तियां । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४ । लिपि-पाठ्य ।
लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १६०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-
महत श्री रणछोडदासजी, आधूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-एक भक्ति क्रता भावो पोसते रवि बीसरे व्याधि कुटि न दालिद्र

अत-नगोंपो १८ लोदोगोड १९ भीयांतर २० कोसाणो २१ पांडवालो २२ भगार
बाईस

२६६ हिंडोलपो-हीरानद वृत । देशी पत्र-१ । जाण, खडित । आकार-६×४ इंच ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल १३ पक्तियां । अक्षर-प्रतिपक्ति २८-३० ।
लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सबत १८५० के लगभग लिपिवद्ध ।
प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-दूदो देसोट चलयो मन म घणा अधीर

कुव उपर ओलइयो निरपोयो जुग तारण जभ पीर १

अत-घनण रायचद जता पचापण सवद के आचार

हीरानद की आरज ऐति सगत पार जतार ॥

२६७ कु डलिमा-४, केसीजी वृत । देशी पत्र-१ । जीण, खडित । आकार-९×४ इंच ।
हाशिया-नगण्य । कुल २९ पक्तियां । अक्षर-प्रतिपक्ति-१२-१६ । लिपि-पाठ्य ।
लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सबत १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-
लोहावट साधरी ।

आदि-॥ श्री वीष्णुजी सपतु कवत कुडलया

हेज न कर रे हीया ॥ सजन न करही हेज ॥

मन भाग मेलो कर ॥ जामा घाज न पेज ॥

अन्त-श्रीवीणो हामो ही श्रीरुम जप्यो न तप (कीया)

कहि केसो मुवीच्यारि करि हुडरको न करि रे हीया ४

२६८ विगन बाईस भजार की, गूगल की विधि तथा ओपधियों की सूची । देशी पत्र-१ ।

सङ्घित । आकार-६×४ इंच । हाशिया-नही है । प्रथम पृष्ठ में १६ पक्तियाँ ।
अक्षर-प्रतिपक्ति-१६-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत्
१८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि-॥ श्री विष्णव नम विगत ब्राईम भडार की ॥ प्रथम श्री सभरायल १ पोपा
सर २ ईवारी ३

अत-पाणों सेर पका चढाय दे जिसका छेटेका भर रहै ।

२६६ पत्री, अज्ञात कृत । गद्द पद्य मिश्रित । देशी पत्र-१ । आकार-१२ ५×६ इंच ।

हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । कुल १६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३७-४० ।
लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के आसपास लिपिवद्ध ।
प्राप्तिस्थान-भीयासर साधरी ।

आदि-श्री जामुजी सीहाय छ जी ॥ प्रथम सति श्री स्वामी आडू ग्यान भगति जिन त
लही

अत-श्री १०८ महतजी तुलछीदासजी बाबाजी दयारामजी भगतारामजी बकसीराम
की सतराम नुरा प्रणाम सहत बचज्यो जी और आपकी त्रपा सू आनद ह आपका
सदा आनद चाहि जी और कृपा म्हरवानोगी रापो तिनसू बसेप रापज्यो जी और
स्वामी जी श्री गशायम उ नम सीध

२७० गोविंदरामजी कृत, विभिन्न छन्द-१३ । देशी पत्र-१ । आकार-२४×२ इंच ।
हाशिया-नही है । कुल ७७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ६-८ । लिपिकार-अज्ञात ।
१६२० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।

आदि-श्री विसनजी सत म कुडिलीया

ॐ पूरण गुर प्रमात्मा अविगत जलय अमेव ॥

जभ गुरु महाराज है देवां हीं अति देव २

अन्त-साधरी की साला बणी सोई समईयो जाण

साध गुमानीरामजी साल कीयी हित मान ६

२७१ अल्लूजी का कवित्त-१ तथा सुदरदासजी के सबंधे-२ । देशी पत्र-१ । सङ्घित ।
आकार-४ ७५×२ ७५ इंच । हाशिया नगण्य । कुल १८ पक्तिया । अक्षर प्रतिपक्ति-
२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के आसपास
लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साधरी ।

आदि-कवित्त ॥ असो लाय कबाड ॥ पदम दस लोंग सुपेपी ॥

चावल पदम पचास ॥ घत पण पार अलेपी ॥

२७२ अत-सुदर कहत और भुगत अनत द्युप सतनि कों निव ताकी सत्यानास जाय है ।
बोल्होजी के कवित्त-११ तथा अल्लूजी के कवित्त-३ । पत्र सख्या-४ । देशी वागज ।
सङ्घित । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-
८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत
सवत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।

- । - आवि-श्री विष्णुजी लिपते गयीया घोलजी कहा का १ " " । ।
 - - - अनत घेर यो जीव भु यो घोरसी भीतर " " -
 आयागवर्ण फिरत सह्या सपट बहोली पर
 अत-आंघद धयो मन मांहर जीव तणों पायो जतन
 नारायण नाम मेलता नहीं अलु रक हाय पायो रतन ३
- २७३ जम्भ महिमा विपयक अज्ञात वृत्त कवित्त-३ तथा सूरदास वृत्त भजन-१ । देश पत्र-
 १ । खडित । आकार-६×४ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल २१
 पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२ से ३८ । दो भिन्न हस्तलिपिया म । लिपिकार-
 अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्ति-
 स्थान-जागलू सायरी ।
 आवि-जम्भगुरु जगदीश ईस नारायण स्वामी
 निरपयक निरलेश सकल घट अ तरजामो
 अत्र-सूरदास भगता क कारण कस घपावण आयो हेरी ॥ १ ॥
- २७४ सूर-१, डाल-१ । प्रमश ऊदोजी अर्धौं और ऊदोजी नण वृत्त । देशी पत्र, सख्या-
 २ । आकार-८ २५×३ ७५ इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रति-
 पृष्ठ-८ । अक्षर प्रतिपक्ति-१८-२२ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १६००
 के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-जागलू सायरी ।
 आवि-सोरठा लुहर की डाल ॥ गिरधर गोकल आव गोपी सनेसा मौकल ॥
 मोह दरसन का घाव । प्रेम पियारे कानजी । डेर ॥
 अत-प्रेम मे पायो भइ अनुरागी । हरि सु नेह बघाणी ऐ माय । ५ ॥
 उधोदासा प्रेम प्रयासा । हरि मे मुरत समाणी ऐ माय ६ । १० ॥
- २७५ भागडो, पोहकर वृत्त । छंद १६ । देशी पत्र-१ । खुडित । आकार-१०×२ २५
 इंच । हागिया-नगण्य । कुल १०८ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१२ । लिपि-
 पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्ति-
 स्थान-महत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।
 आवि-॥ अथ भागडो लिपते ॥ हरिजन साकट नारि याता बहोत अडी
 रूप घडी पणीयार दोनों भागड पडी टेक ॥
 अत-बुर चीली मेलत भया पाहकर ज्ञान विचार
 राम नाम प्रताप त ए जीती हरिजन न नार १६ ॥
- २७६ साखी और हरजस, सख्या-४ । जीण और खडित । देशी पत्र-२ । आकार-९×४
 इंच । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-
 ३४-४१ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के आसपास
 लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा । इसमें
 ये रचनाएँ हैं -(क) साखी-१, भरवरी सबधी, कालू वृत्त । (ख) हरजस-२, प्रमश
 भरवरी और गोपीचंद सबधी, अज्ञात वृत्त । (ग) हरजस १, गोपीचंद सबधी घतर-

दास कृत ।
आदि-॥ श्री गणेशाय नमः सुग रामगरी ।

सुनि हो राजा रांणी कहै बग महल पधारी
जिन जोगी भरमाईया ताका सग निवारो टेक

अत-शब्द सुनत भूपति चलयो उभी मेलि बगाल

चतरदास अवला कहै कवन हमारा हवाल ७ (1) ४ ।

२७७ साखी और हरजस, सख्या-४ । काल, अज्ञात तथा चतरदास कृत । अपूर्ण । पत्र स०
५ । देगी कागज । आकार-८ २५ × ३ ७५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च ।
पविन-प्रतिपृष्ठ-७, ८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत
सवत् १९०० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।
आदि-राम सत्य ॥ रान घनाश्री ॥

आज नगर में एक जोगी देख्यो बोरा गोपीचंद के उणिहार रे लो ॥

इसका तो जोगी न जाण न दोज । आगणि मढी बघायने रे लो ॥ १ ॥

अत-अमर भया ससार में वह कारिज सारया

कहि काल पुरुषा तणा गुर ज्ञान बिचारा १७।३

दोहा आदि है अतै-दह मध्य रहै इका ।

२७८ विष्णोई साधुओं के निधन काल का उल्लेख । देशी पत्र-१ । आकार-९ × ४ इन्च ।
हाशिया-नगण्य । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर प्रतिपक्ति १२-१४ । लिपि-माध्य । लिपि-
कार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू
साधरी ।

आदि ॥ दोहा ॥ समत अठार तेरासियो एकम चत सुदि शनिवार ।

गगारामजी तन त्यागियो पायो भोप दवार

अन्त-समत १९१०० रा आसोज बंद ३ तीज ससीबार ।

फरसरामजी तन त्यागियो भेट्या विसन दवार ।

२७९ गोकलजी की रचनाएँ । पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार १२ × ६ इन्च ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-३९ ।
श्री माह्वरामजी द्वारा सवत् १६१० म लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री
धोखराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसम कवि की ये रचनाएँ हैं-ओतार
की विगत, छंद-४७ । (क) परची, छन्द-३७ । (ग) इ दव छंद-३२ । (घ) अस्तुति
होम की, छंद-१० ।

आदि-श्री गणेशाय नमः । लिपित ओतार की विगत । गोकलजी के कहे छंद ।

रिधपति सिधपति सिलपति सुरपति सदा सहाय ।

यति दाता गोविंद सुमरि गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

११८

अ-ब्राह्म यभा किम ऊधरे ॥ जिण रह गिर सागर ओट तर ॥

गोकलजी ताहरो तबु ॥ अक्षर विराज्यो ईश्वर ॥ ८ ॥ इति श्री गोकलजी का

कह्या । कवत संपूर्णम् । सवत । १९१० वृषे मित्ती पोह सुष । ४ । सोमेवारे लिपते साध श्री ॥ १०८ ॥ गोवि (द) रामजी वा शिष्य दायवराम रामदास म ॥

२८०. सापी-१, छद २७ । केसोजी कृत । देशी पत्र १ । जीए, खण्डित । हाशिया-नगण्य । आकार ६×४ इंच । कुल २१ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ४२ ४६ । लिपि-पाठ्य । सवत् १८७३ मे साधु क-हीरामदास द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री मोता रामजी, विष्णोई मंदिर, रावतसेडा ।

आदि-। श्री विस्नजी । सापी । बरसन दीज देजी गीण तेतीसां भान
मेलो करि मोटा घणो बोस्त बिछोहा भान ?

अत-बोनती केसो कह इला फरो जुग रेरि २७ ।

लिपते साध क-हीरामदास ॥ सवत १८७३ ।

२८१ जभाष्टक, (संस्कृत) श्लोक-६ । गोवि-ददास कृत, देगी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच । कुल १७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति २६ २८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । सम्भवत साहवरामजी द्वारा अनु मानत सवत् १९१० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साधरी ।

आदि-॥ ६ ॥ श्रीम-महागणाग्रधिपतये नम उँ मुखे, चाह शोभ महामद हास्य
अत-असद्वित पठेनित्य सब पाप प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ इति श्रीमद्गोवि-ददासन विच ताया जभाष्टक सम्पूर्णम् ।

२८२ विष्णोई धम के कवित्त ३ । ऊदोजी कृत । देशी पत्र-१ । जीए, खण्डित । आकार-८ ७५×३ ७५ इंच हाशिया-नाम मात्र की । कुल ११ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३३ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत् श्री रणछोड-वासजी, आधूणी जागा, जाम्मा । आदि-श्री विष्णजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ ज जल छाण रे लीज

सजम सुच सितान सुष ह्य नाव जपोज-

अत-आप मरत मरण न रहे हर हैतात पडे सही

एह धम विष्णोइया तणां विष्ण भक्त उधी कही ॥ ३ ॥

२८३ हरिनद के कुटकर छद । दा कवित्त और १ दोहा । देशी पत्र-१ । जीए, खण्डित । आकार-६ ५×४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साधरी ।

आदि- ॥ कवित् ॥ प्रथम बदरा पवम अठार राम येड रोसाण

अन-भाते कु भकरण रा भाई तबुवां तणां तमास । २ ॥

२८४ ऊदोजी के कुटकर छद । सख्या-२४ । पत्र सख्या-५ । देगी कागज । जीए, खण्डित । आकार-९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पक्ति-प्रतिपक्ति-६-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२७-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७३ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीथामर साधरी ।

आदि-श्री विष्णुजी । करणा को अग लिप्युत । सबईया । इकतिसा । मनोहर छद । माया है अपार तोहि पार नही पाव कोय सुर नर नाग परं तु हि भगवान है ॥

अन-विडद विचार सुद लीजिय उधदास गुलाम की ॥

बावण पकडो दोन ह्य ॥ प्रभू तेरे नाम की ॥ ३५ ॥ (२४)

२८५. जाम्भोजी की स्तुति-१ दोहा, २ श्लोक तथा सरस्वती अष्टक, ८ श्लोक । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पविन-प्रति-पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत संवत् १६०० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-उ स्वमि श्री गणेशाय नम श्री सरस्वत्यनम श्री कभदेवाय नम

श्री विष्णवे नम कर प्रणाम कहत ह्य क्षम गुरु जगन्नाथ

अन-भावार्तोंत त्रिगुण रहित सदगुरु त नमामि ॥ १ ॥

२८६ हरिन्द के फुटकर छद । २ कवित और १ दोहा । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । एक पृष्ठ म कुल १३ पक्तिया । अक्षर-प्रति-पविन-१८-२० । लिपि-पाठ्य । संवत् १६५६ मे गणेशरामजी द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि- । कवीत ॥ प्रथम बदरा पदम अठार राम षेठ रोसाण

अत-भलो कुंभकरण रा भाई तबुवा तणा तमासा । ३ । इती कवीत सपुणम् । लीपी गणेशराम माघ दुतारावाली म ॥ मी काती व्दी ४ स १९५६ साल ।

२८७ लूर, ऊदोजी वृत । छद-९ । मशीन का बना पत्र-१ । खण्डित । आकार-७ २५×५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १६५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री रामजी लीपत लूर टर गोरधर गोकुल आव घोपी सनेसी मौकल ।

अत-ऊदो कह करे जोड दरसन दया कर दीजीय ९ ।

२८८ श्री वीसनु सरूप, गोविंदरामजी वृत । गद्य मे । मशीन का बना पत्र-१ । त्रुटित । आकार-११ ७५×७५ इंच । हाशिया-नही है । कुल २७ पक्तिया । अक्षर-प्रति-पक्ति १७ २४ । संवत् १९५० मे लेखक द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पापामर साथरी ।

आदि- ॥ श्री गणेशाय नमो ॥ श्री नारायणजी का सरूप ईस भात है स्याम रंग कमल नन

अन-तब सोनकादीक बकु ठनाय की उडवत कर न ऊपरत विदा हो कर चले गये ईती श्री विसनु सरूप स० १६५० असाठ व्द १३-विष्णु गोविंदराम ।

२८९ साहो, सख्या-५ । केशीजी, सुरजनजी, लालचद और अज्ञात वृत । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । जीण और खण्डित । आकार-५×४ ५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पविन प्रतिपृष्ठ ९-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । लिपि-

कारं भजात । अनुमानत स० १८५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-नालासर सायरी ।

आदि- ॥ श्री जमगुरुदेवाय नमः लिपते सायी साधो विंढरो सिंदरजणहार पार वरु
पहलो नऊ ।

अत-जो हो हम गुह्री गुर म्हारो पूरो दाता म्हारो गुह्री मांऊ करावो ।

२९० नवण तथा वील्होजी के २ छप्पय । दशी पत्र-१ । जोग्य, मुटित । हाशिया-नगण्य । कुल २३ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित-२०-२२ । लिपि-पाठय । संकरणस द्वारा स० १६०० (?) में लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पोपासर सायरी ।

आदि-श्री विष्णु जी श्री रामजी अथ नवण लिखते ।

विष्ण विष्ण तू मणि रे प्राणी ॥

अत-आप सवारय मन मुयो ॥ कोया कुबयो पोपडा ॥

वील्ह कह भय सागरा ॥ यह्यो जर्हि रे यापडा ॥ २ ॥

लीपते साध सकरदास १६ ॥

२९१ साखी-२ । केशीजी और वील्होजी वृत्त । दशी पत्र-१ । खण्डित । हाशिया-नगण्य । कुल २५ पवितर्या । अक्षर-प्रति पवित-४३-४५ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अनात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पोपासर सायरी ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ बृचं वार कोडि सू कोयो वेकुठे वास

अत-वील्ह कहै गति साभलो साधां तणां यपाण १७ ॥

मुग पोहोता सासो गयो मिट गई आवागोंण १७

२९२ गायना सम्बन्धी कविता । छंद ५ । मसोन का बना एक पत्र । खण्डित । आकार-१०×६५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ९ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित-३०-३२ । लिपि-पाठय । (अनेक जगह अक्षर, मात्रादि छूटे हुए हैं) । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जांगलू सायरी ।

आदि-ओ३म् जम गुरुवे नम दोहा-निवण २ गुह सन्त की गार्डिस गावण की काया
अत-दुब गये लुगाडै गावण केभो मुख दीम्लाते हो ।

२९३ उत्तिस घम । छंद-८ । मसोन का बना पत्र-१ । आकार-८ ७५×५५ इंच । पत्रा दुप्रा १ हाशिया-नगण्य, बाएँ-१ । इंच । कुल १३ पवितर्या । अक्षर-प्रतिपवित-२४-२८ । लिपि-पाठय । प्रस्तुत रचना एक ही पृष्ठ में है, दूसरे में उसी हस्तनिर्मित में ६ पृष्ठकर इलोक लिखन के पश्चात् लिपिकाल का उल्लेख इस प्रकार है -ममत् १६४४ मीली अपाठ बदी १ ली० स० ५० सा० म० गुम भूयात उ तत्स हरीम् । प्राप्तिस्थान-जांगलू सायरी ।

आदि-श्री गणेशायनम उ तौस दिन मूतक १ पाच रितुवती नार २

अन-जाभजी वृपा करो जहां रो नाम विष्णोई होय । १ । इति गुणगीम धर्म समाप्त

२९४. पहलाद वीरत, केशीजी वृत्त, छंद ५६६ । तथा घज पुमो रो विचार एव हानी र

पुन रो विचार । गुटका । फोलियो ३०-७४, विन्दु बीच के अनेक पत्र अप्राप्य । अप्रूण, खण्डित । देशी कागज । आकार-५×६५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-प्राथे से पीन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४ से २० । दो भिन्न हस्तलिपियो मे । लिपि-सामायत पाठ्य । सवत १९२५ मे गायखी हणू तराम द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्तस्थान-श्री सोहनलालजी गोदार, चक २६ बी० बी० (श्री गगानगर) ।

आदि-दो-०सतर लाप सतजुग ह्यो । ओर अठाईस हजार मछ रूपी मोवन ईल लीयो अवतार । ईती श्री पहलाद चीरत सपूण समत १९२५ रा वीरपे मीती सावण वदी १० वार बूध लीपतू गायखा हणू तराम बेटा मदरूपजी रा लीपा वतू हरूप बेटा दान रा गाव सीत मध्यो ।

अन-अथ होली मगाल जीण पुन रो विचार १ पुरव दीसा रो वायरो वाज तो राजा परजा सुप कर २ दीपण दीस रो पुन चाल तो देरभगे दुरभक्ष पड ३ पिछम दीस रो वायरो वाजे तो तीण सपत बढ उत्र दीस रो वायरो वाज तो धान वषतो होयजो होली रो धुवो आकास न चढ तो राजा गढ छुट जाय इती होली र पुन रो विचार ५

२८५. अल्लूजी के कवित्त-सख्या-३ । देशी पत्र-१ । जीण, खण्डित । आकार-६५×३२५ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल १७ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तस्थान-लालासर सायरी ।

आदि-श्री विसजी सत्य लीपतु कवत ॥ बंद जोग वरग ॥ योज दीठा नर निगम अत-विसन देव त्रपत्य ह्यो ॥ बल राजा जोमाडीयो ।३॥

२९६ रामो वृत १ भजन, तथा सुरतराम वृत १ हरजस । देशी पत्र-१ । जीण एव खण्डित । आकार-९×४२५ इन्च । हाशिया-नगण्य । दो भिन्न हस्तलिपियो म । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११,५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६, ४०-४१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८८० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तस्थान-श्री धानलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-राग भवेरो-जा थलीया देवजी भवरा अवतरयो जा थलिया छै गाढो नूर अत-सुरतराम श्री पति की महमा गाव सत पियारा ४ । श्री भगवतेवासुदेवाम ।

२९७ बोलहोजी के कवित्त, सख्या-८ । देशी पत्र-१ । आकार-८७५×४ इन्च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल ५८ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तस्थान-श्री धानलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि- ॥ कवत ॥ बीन्हजी ॥ पाप नि कर मति होण हलति हारिसँ जलमतर्दि

अत-बीन्ह कहरे भाइवो ॥ वा भलो हो; कित, लान्यसी ॥ ८ ॥

२९८ पत्नी, हरिकिसनजी की-चौपई ९ और-सोपारा गद्य मे । देशी पत्र-१ । जीण,

राहित । आकार-१५४ इच । हाशिया-नगण्य । ६६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-
१७-१९ । लिपि-पाठ्य । सवत १८७३ म साध हरिकिसनदासजी द्वारा मोहावट
में लिखित । प्राप्तिस्थान-श्री धाकतराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला ।
आदि-श्री विसनुजी सत्य ॥ तिथि श्री सप्त ओपमां लाइफ सत्य धर्म के सदा गहाइए
अन्त-श्री माहाराज तुम जोग्य ह नयण याचजो साध

मूल सूक्त जो है लिपि छिमा करो सत्य साध

२९९ गुटका । फोलियो सस्या-१५९ । देशी वागज । आकार-४ २५×२ ७५ इन्च ।
हाशिया-आधा इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२० । सवत
१९०९ में विसनदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-मुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागदू साधरी ।
इंगम ये रचनाएँ हैं—(क) विष्णु पजर स्तोत्र (संस्कृत ब्रह्मांड पुराणे ६३ नारद
संवाद) । (ख) सबद घण्टी । मंत्रद महारा-१००, त्रिना प्रसंग । ग्तर काया बकुठ
वामी तरा जरा मण भव भाजी १२० इति श्री शब्दवाणा श्री जाम्भोजी की संपूर्ण ।
(ग) अस्तुत श्री जाम्भोजी श्री, छन्द-४७, गोकुलजी वृत्त । (घ) परचौ, छन्द-३७,
गोकुलजी वृत्त । (ङ) श्री विष्णु चिरत, छन्द ११०, ऊदोजी अङ्गी वृत्त ।
आदि-श्री गणेशायनम उँ अस्य श्री विष्णु पजर स्तोत्र, मन्त्रस्य नारद ऋषिपुष्ट्य
छन्द

श्री विष्णु परमात्मा देवता अह वीज सोह पक्ति

अत-सोरठा-हरि अवतार अन्त अन्त चिरत अवगत तणा

गाव मुनी जिन सत वि (म) ल जस भवजल तरण १० (११०) इति
श्री विष्णु चिरत उधोदास विरचित संपूर्ण समत १६०६ रा विरये मित भादवा
सुदि १३ तिपत साध श्री १०८ मावलदासजी रा चेला विसनदास तिपावतु साङ्ग
सगरामजी वास रामदास रा गाव जाम्भोजी मध्ये ।

३०० कवित्त-२, अज्ञात वृत्त (विष्णोइया को ली गई छूट के सवध म) । देशी पत्र-१ ।
आकार-८ २५×५ ७५ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल ११ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति
पक्ति-१८-२० । लिपि-पाठ्य विष्णु अगुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत
१९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धाकतराम विष्णुदत्त विष्णोई,
दुतारावाली ।

आदि-श्री विसनजी क० पाट सिर जोधपुर जोधा टीकायत जाणी

अत्र-सूर अजा जसवत मजा तिण पाट बीजा बगतेतरा २

३०१ पदम भगत वृत्त-१ आरती, छन्द १० । देशी पत्र-१ । लघुदित । आकार-११×५ ५
इच । हाशिया-गएँ, वाएँ-एक इच । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४
३६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १६५० के आसपास
लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धाकतराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-आरती । आरती हो जी द्वारका रो राव कृष्ण दक्षमण आरती जी
अन्त-भण पदमइयो जान आरती आवा र गवण नीवार १० इति श्री आरती सपुरज ।

- ३०२ हरजस-१, छन्द-५ । सुरजनजी कृत । देशी पत्र-१ । आकार-६५×३२५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल १० पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१ । लिपि-मुद्र एव सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-लिपते हरीजस ॥ राग आसावरी ॥ अँसा गुर हमार अवघू हीँडू तुरक दोया स पारा ॥ टेक ।
अत-सुरजनदास विसन क सरनै । सहज रूप समाना ॥ ५ ॥
- ३०३ भजन-२, नरसीजी और केसौजी कृत, देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६५×४ इंच । हाशिया-नाम मात्र को । कुल २० पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३२ । लिपि-मुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-॥ राग मुखरा रो वासी काहवो रह्यो दुवारका छाइ (नरसीजी)
अत-कर करणी केसो कह जाबीज उण देस ॥ ७ ॥
- ३०४ शकर स्तुति, कवित्त-१, अज्ञात कृत तथा वशावली और नवण । देशी पत्र-१ । आकार-८२५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग पौन इंच । २२ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति २६ ३० । लिपि-मुपाठ्य । साधु हरिकृष्णजी द्वारा अनुमानत स० १८८० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री विष्णु जी ॥ कवित्त ॥ जटा जूट सिर गग चद्र सेपर चप हुत वह ॥
अत-तेतस कोडि बकु ठ पठु ता साच सतगुर को कलमों कहियो इति श्री वडी नवण मपूण १ लिपत साध हरिकिष्ण ।
- ३०५ कबीर कृत आरती-१, हरजस-१ तथा सुरजनजी कृत हरजस-१ । छन्द-७ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-९५×४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३५ । लिपि-पाठ्य किंतु अशुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।
आदि-हूसरी आरती बावन सोवा बल पार पधारे हर दवा ॥ २ ॥
अन-मन विच करम चरण चित्त धरीय जन मुजन भो सागर तीरीय ७
रात को पाय अधाय क सोवत ॥ काला बस म ।
- ३०६ पदम भगत कृत ११ छन्द और विविध राग-रागिनियो म गेय ८ गीत । देशी पत्र-१ । जीण, खण्डित । आकार-१२×६ इंच । हाशिया-नगण्य । ६६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८२५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोक्तराम विष्णुदत्त विष्णोद, दुता रावानी ।
आदि-॥ श्री विष्णुजी छन्द-पीता घर अर प्रीत ल्याये कसु कीजिय

राजा तवत घट क गापाल बसु जोईये

अन-बघर दकमईया पु उठ घोस्वी कुल को घरम घटाव २

पवम भर्ष प्रणव पाय लागु भीतम तोत मयाय ३

३०७ अदोदास क भजन, सख्या-५ । मणीन वा बना पत्र-१ । अपूण, लण्डित । आकार-१२ ५×७ ७५ इंच । हाशिया-नगण्य । पवित्र-प्रति पृष्ठ-२३-२५ । अक्षर-प्रतिपत्रि-१७-२० । अक्षर-प्रतिपत्रि माट अक्षर । लिपि-पाठ्य किन्तु अगुद । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १६५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री दोहा पुलहे पर्वो पायोमा बीनो दोनदपाल

सुरग हे दोपायो स्यामजी सता की प्रतपाल

अन-अवसो अरज मुणा गोरदारा भगतो पाऊ पारो

अनुपायनी भगतो दोने असी अरज हमारी ६

असी मुण जयसुर मोले सुणलो पीता हमारी सो वर मागो सोई दोनो

३०८ कुम्बर छद-८ । अपूण । मुरली-२, मयाराम-१, केशवदास-१ तथा गेप ४ अज्ञात कृत । मणीन वा बना पत्र-१ । आकार-१३×४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ४६ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपत्रि-१७-१९ । लिपि-पाठ्य किन्तु अगुद । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १६५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी । आदि-श्री रामजी ॥ राम गुन गाथी जीत अतो सुय पायो है (-मुरली कृत)

अन-जस हो तो कवीजनन म होती कछु न हान

३०९ अशाली । देगी पत्र-१ । लण्डित । आकार-४ २५×४ ५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ९ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपत्रि-१६-१७ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-माधु श्री हणू तरामजी, रुन्नी ।

आदि-श्री विसनजी श्री श्यामजी को चेलो रेडोजी १ रडजी को चेलो नाथोजी

अत-मनहपजी का चेलो साथलजी पुरोजी ॥ श्री

३१० कवित्त-२, ऊदोजी कृत । मणीन वा बना पत्र-१ । आकार-६ २५×५ ५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल १४ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपत्रि-१३-१६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी ।

आदि-कवत जीव अत जल माहे पार गीणती नहीं पाव

अत-उपव व जन उषर भवसागर को भय नही ३

३११ कवित्त-४ । गहू, रजजय, ऊदोजी और अज्ञात कृत । देगी पत्र-१ । अपूण, लण्डित । आकार-६ २५×५ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल २४ पत्रियाँ । अक्षर-प्रतिपत्रि-१७-२१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत-

खेटा ।

आदि-श्री विष्णु भक्त सहो अथ कवित नव ढीकली तोय सर्वहिषेत पिलाव (-गद्द)
अन-यू साधु भक्त न छाडहो जो दुय पडे अनेक २ (-ऊदोजी)

३१२ कवित, सर्व-२३ । रचयिता-बील्होजी-१८, मधुसूदन-१, अनात-१, ऊदोजी-३ ।
मगीन के बने ६ पन्ने । आकार-८ २५ × ५ २५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को ।
पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति १८-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार अनात
अनुमानत सबत् १९५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।
आदि-अथ कवित उ विष्णुके नम उ धर्म कीया सुय होय लाल लिछमी धन पावे :-
अन्त-उषव बं जन ऊधरं भवसागर भरमै नही ॥ २३ ॥

३१३ देवी कागज । प्राप्त पत्र सख्या-५ । अपूर्ण । चौथा तथा छठे के पश्चात पत्र नहीं हैं ।
आकार-९×४ इ च । हाशिया-दाएँ बाएँ पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-
प्रति पक्ति-२५-२६ । लिपि-मुदर, सुपाठ्य । लिपिकार-अनात । अनुमानत सबत्
१८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । इसमें ये रचनाएँ हैं -
(क) मगलाष्टक-कैसोजी कृत, छंद २८ । (ख) दस अवतार (अपूर्ण) । (ग) कृष्णा-
बुन सवादे विष्णु अठाईस नाम (संस्कृत)-७ श्लोक । (घ) पचचौस नाम, विष्णु क ।
(ङ) चौबुणो (अपूर्ण) ।

आदि-श्री जगद्गुरुदेवरायनम अथ मगलाष्टक लिपत श्री गुरुरनपति वृसपति देवन
पति गोविंद देवतान पति ब्रह्मा साधन पति सकर १

अन्त- यमा तो रूपवां बरो तो रामचंद्र कया तो सती सीता ब्राह्मण तो

वासिस्त मुनि बंद तो जुजरबंद पढते गुणते सामीजी हमे त ।

३१४ पुस्तिका । प्राप्त पन्ना की सख्या-१२१ । मगीन का बना कागज । अपूर्ण, जीण,
खंडित । आकार-८ ५ × ५ २५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति प्रतिपृष्ठ ५ से १७ तक ।
लिखावट प्राय मही, बहुत में स्थलो पर दुष्पाठ्य । मवथी रामदासजी, गणेशराम
जी, निलोकदासजी तथा अनेक अनात व्यक्तियों द्वारा समय समय पर लिपिवद्ध ।
लिपिकार-भवत् १९४४ से १९६० । प्राप्तिस्थान-जागलू मायरी । इसमें अनेक
जाम्भारी तथा अन्य कविया की फुटकर रचनाएँ हैं, जिनमें ये उल्लेखनीय हैं - (क)
गोविंदरामजी के छंद-७ । (ख) साहबरामजी के भजन-१० । (ग) श्री रामदासजी
का पत्र-संस्कृत व्याकरण नियम-लेखन, सबत् १९४४ में । (घ) अमर चालीसी, छंद
४३, साहबरामजी कृत । (ङ) आरती-१, साहबरामजी कृत । (च) पदम भगत कृत
कृष्ण दक्षिणो विवाह सबधी भजन । (छ) धुन, गंगादास कृत ।

३१५ रजबजी के कवित ४, कैसोदासजी के सबये ५, तथा भजन १ अनात कृत (अपूर्ण) ।
देवी पत्र-१ । जीण, खण्डित । आकार-११ ५ × ५ ७५ इ च । हाशिया-नगण्य । कुल
३१ पक्तियां । अक्षर-प्रतिपक्ति-४२-४६ । लिपिकार-अनात । अनुमानत सबत्
१८२५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महान श्री रामनारायणजी,
रामगढ़ाम ।

आदि-लीपतु कवत ॥ मत मुराल मदुरिक्ष वाय घणराय विछाण ।

अन्त-बहो बचन मोठाइ मेवा हसि हसि-वे गोरधारी

बहो राए कुण सुय कहिए ले ला मधकारी ॥ ८ ॥ आज

३१६ बील्होजी के कवित्त, सख्या-१४ । देगी पत्र-१ । जीण, खडित । आकार-११ ५×
५ ५ इ च । हाशिया-नगण्य । कुल ३१ पविनयाँ । अक्षर प्रतिपक्ति ४८-५० । लिपि-
पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्ति
स्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावाम ।

आदि-श्री विसनजी कवत-धम कीया सुय होय लाख लीछमी धन पाव

अत-भलो बपाण आपको पराइ पु णो कह

बोल्हा विरतो ना भलो सण कीयो डु णो बह ॥ १४ ॥

३१७ कलस, पाहल, विवाह पद्धति । अपूर्ण । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१० २५×
४ २५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल २४ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-४३-
४५ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपि
वद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-तेरोजा करी ॥ सतान की वेजा करी ॥ आई बलाइ दफ करी ॥ १ । देव ।

वार लाप छराणव हजार तेता जुग प्रबाण

अन-विज नार जाय जाडु । बीज नी कवि जनर । मोरी क मोरा । नय बप

बोहो हलाली मुकर ।

३१८ रदास कृत साधो-१, (छत्र ४) तथा फुंकर दोहे-४ । देगी पत्र-१ । यह तीसरा
पत्र है । आकार-८ ५×४ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल १८
पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-३१ ३३ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत
सवत १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रडकली ।
आदि-दास कहै विणजारा त जलम लीयो ससार वे १ बूज पहर रण ब विणजारीया
अन-हसा न सरव (र) घणा वास घणी भवरा सुगणा न साजन घणा देस ब्रसेस
गया ४ ॥

३१९ पुह पतीस की, लूर तथा २७ सुगाइयाँ की पुह, अपूर्ण । देगी पत्र १ । आकार ८ ५
×४ २५ इ च । हाशिया दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल २२ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति
पक्ति-३२-३५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के
लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणू तरामजी, रडकली ।

आदि-श्री विसनजी सत्य ॥ लीप्यतु पुह पतीस की ॥ इ मै भावु की पुह ॥ ३३

पोलहरो की पुह

अन-बोरी गोदारी ॥ १७ । आल्हो जांधुय ॥ १८ ॥ चीयो सोहवो ॥ १९ लाह्य

धरी २० ।

३२० पत्र सख्या-१०, तासरे स बारह्य तक । अपूर्ण । देगी वागज । अत्यन्त जीम, मक्ति
आकार-५ २५×३ ७५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७-८ । अक्षर-

प्रतिपत्ति-१५-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-आगलू साथरी । इसमें ये रच नाएँ हैं — (क) साईदोन के सबवे-१३ (सम्या ६ से १८) । आदि के कुछ छद अपाठ्य । (ख) दोन दरवेस की कु डलियां-६ । (ग) हाँडोलणो, हीरानद वृत्त-छद ७ । (घ) वा अपूर्ण ।

आदि-(जीव धे) ट के सुल भुल गय घु इ पेट के काज भटवता है (६ वा छद) ।

अन्त-मुजा मुरजन आलम कैसे ग्यान का परवेस

चदण रायचद जता पचायण सधद का आचा ।

३२१ साखी-१५, बेसोजी, मुरजनजी, भीमराज, रायचद, ऊदोजी, गुणदास एव अज्ञात वृत्त तथा प्रभु नामावली (मस्कृत) । पुस्तिका । प्राप्त पाना की सम्या-२३ (३ से २५) । अपूर्ण, खडित । मणी और मणीन के वन कागज । आकार-६ ५×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पीन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१७ । लिपि-मुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९२५ के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री कौशलदासजी, आगुली जागा, जाम्भा ।

आदि-सत जाणो ३ रे मन भाई सहज (राहा) ई पया पयो नहि कीजे । (-बेसोजी) ।

अन-जगनाय जग जाडय दिनाशन जामदग्नि घत ज्योति स्तवधे जल गापि ॥

३२२ कक्का बत्तीसी, ऊदोजी वृत्त । कु डलिया-३६ । पुस्तिका । मणीन के वन कागज । आकार-६ ७५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९२५ के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री श्री जभ गुरुभ्यो नम अथ कक्का बत्तीसी कवीत कु डलीया ॥

कका केवल किण भजो हृद पर विस्वाम

अन-जभ गुरु आचार उर मे सत सब शिर रे वेसू

क्षक्षीप लग सब भया सपूरणां कह्या कु डलीया कक सु । इती ।

३२३ साखी-४ । हरजी, साहबराजजी तथा अज्ञात वृत्त । पुस्तिका । मणीन का वना कागज । आकार-८ ५×५ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-२० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६५० के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-असुद्ध और घसीटी, साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-श्री परमसरजी अथ साखी लीघतु मनो

मन सो वुरो न कोय सीव शकर सतावीयो,

पारबती पत सोय ॥ ध्यान अटारभ थापोयो २

अन्त-भभकार पकड पसारीयो चौक मे

नें जाण है जुग सत्तार रे सायर भग सग रमे सपूरण ।

३४ गोत्राचार तथा होम के सबद-६ । १० पानों की पोथी । देशी कागज । आकार-

६×६ ७५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पवित्र प्रतिपृष्ठ १२-१३ । अक्षर-प्रति पवित्र-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १६८० मे लिपि बद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोक्तराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-लीपते गोतराचार उ अदु वास रुपु पुजत रु साम नीधु - गुणे नीधु
आकार पुतरु

अन्त-रायण मत तो पडवे रायां ज्यु रायें पांन वनासपतो ६ सबद सपुरणम्
सवद होम का पूरा हूवा लीपीकृत वावा साहब्रामजी का पुत्र गणेशराम
पठणाक्षरधे सेर यापन क लीप्या सनद रहे भी० पोह मुनी १४ स०
१९८० हाय पाव कर कुबरी नीच मुख अठ नन इन कसटा पोयी लीपी
नीकें रपोयो सैन वाच जीस कु नीवण

३२५ गुटका । फोलियो सख्या-८१ । मशीन का बना कागज । आकार ६ ५×४ २५ इ च ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपवित्र-२०-२१ ।
लिपि-स्पष्ट एव सुपाठ्य । विष्णोई प्राणमुख द्वारा सवत् १६१६ मे लिपिवद्ध ।
प्राप्तिस्थान-जागलू सायरी । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) नवण । (ख) विष्णु पञ्च
स्तोत्र (सस्कृत, श्लोक-२५, ब्रह्माण्ड पुराणे इन्द्र नारद सवादे) । (ग) सबदवाणी,
सवद सख्या-१२०, बिना प्रसंग । भलीयो होय तो भल बुद्धि भाव ॥ बुरीयो बुरी
कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाम्भोजी की संपूर्ण ॥ १ ॥ सवत् १६१६
रा वृषे मित्ती वातिक बदी ६ लीपी कृत विष्णोई प्राणमुख नगीने वाला ॥ (घ) मन्त्र
गल का ।

आदि- ॥ उ श्रीगणेशायनम ॥ लिपत नोण ॥ उं विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी ॥
साधे भवते उचरणो ॥

अन्त-भगवान भवतां भाजवा भहर पधारे महमाण १ । इति गूगल का संपूर्णम् १ ।

३२६ गुटका । फोलियो सख्या-४६८ । देशी कागज । आकार-६ ५×४ २५ इ च । हाशिया-
दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पवित्र-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पवित्र-१६-१६ । निनि-
मुन्त्र और सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपि
बद्ध । बीच म कई पृष्ठ रिक्त हैं । प्राप्तिस्थान-जागलू सायरी । इसम ये रचनाएँ
हैं —(क) सबदवाणी । सवद सख्या-१२०, बिना प्रसंग । भलीयो होय तो भल बुद्धि
भाव ॥ बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाम्भोजी की संपूर्ण ॥
(ख) पाठ्य गीता (सस्कृत), श्लोक १६३ । (ग) श्री भगवद्गीता (सस्कृत), १८
अध्याय । (घ) एकादशी महात्म्य-२६ अध्याय । चौपद्या म । इति एकादशी की
कथा संपूर्ण छ ॥ (ङ) जन्म अष्टमो की कथा, चौपई-३१ ।

आदि- ॥ द ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथी शब्द वाणी श्री जाम्भोजी की लिपत ॥

उं गुर चीहो गुर चीह पिरोहित गुर वि धम बर्षाणी ॥

अन्त-एक जन्म अष्टमो कृत करावे ॥ चौबीस ग्यारस को पस पाव ।

या विधि राम कृष्ण ने कहे ॥ निरखे कु क नवका ये है ॥ ३१ ॥ इति श्री

ब्रह्म ङ पुराण ब्रह्म नारद सवादे जन अष्टमी क्या सपूर्ण । यह पुस्तक साधु जीया रामजी री छ दसकत साधु भगलदास रा छ ।

३२७ रक्मणी भगल, पदम भगत कृत । प्रत्येक राग रागिनी के अतर्गत आए छन्दो की म० पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-८३ । अपेक्षाकृत मोटे देगी कागज । आकार-११×५ ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३० । लिपि-पाठय किन्तु बीच में कई पत्रों के आपस में चिपक जाने से अपाठय । श्री साहब रामजी द्वारा सवत १९३५ में लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-तोहावट सायरी ।

आदि-श्री विष्णुजी श्री रामचन्द्रजी नम अथ श्री प्रदमईया कृत रक्मणी भगल लिपत दोहा-ससार सागर अयाग जल ॥ सूक्ष्म वार न पार ॥

गुरु गोविंद कृपा करो ॥ गावा भगलचार । १ ।

अन्त-जो भगल कू सु न गाय गु नहै बाज अधिक बजाय

पूरण ब्रह्म पदम के स्वामी भुक्त भक्त फल पाय ५ ॥ १९२ ॥ ईती श्री पदम ईया कृत रक्मणी भगल सपूर्ण १ समत १९३५ रा वष मीती भाद्रवा द्द ४ वार आदित्तवारे लोपीकृत शाय श्री १०८ श्री म्हतजी श्री आतमारामजी का मिय दाय-बरामेण गाव फीटकासली भेघे विष्णुजी के भीदर म जीसी प्रीत देपी तसी लिपी मम दोस न दीजीये—हाय पाव कर कुबडी मुप अरु नीचं नैन । ईन कष्टा पोयी लोयी तुम नीके रापीयो सेन सुभमस्तु कल्याणमस्तु विष्णुजी । (भिन्न हस्तलिपि म) प्रीत व्यावलो श्री विसन रक्मणी री भगलाचार री पोयी साद गोविंददास विष्णु वईरागी की कोई उजर करण पाव ही ॥ साद रुपराम विसनोइया रा कना सु लीनो छ गाव रामडावास रा छ ।

३२८ हींडोलणो, हीरानद कृत । छन्द-८ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१० ७५×५ ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । कुल २३ पवितर्या । अक्षर-प्रति पवित-३०-३३ । लिपि-सुन्दर एव सुपाठय । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । डोली गाव (जोधपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्रीराम सत स कामण चली हींडोलण गाव आल जाल । जभ अचभो न गावही

अन्त-चदण रायचद जसा पचाय(ण) सबद का उ आचार

हीरानद की अरज सेती सगत पार उतार ८ ।

३२९ क्या अहदांणों, डेल्ह कृत । अपूर्ण । मशीन का बना कागज । प्राप्त पत्र सख्या-२२ । जीण, खण्डित । आकार १० ५×५ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२८-३० । लिपि-पाठय । लिपिकार-अनात । अनुमानत सवत् १९५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान डोली गाव (जोधपुर) से श्री महारामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्री विष्णुजी ॥ सत सही ॥ लिपत क्या अहदांणी ॥ राग धनासो ॥

पणउ गूणोउ गूणों गहीर ॥ मुस चंड करस जो कर ॥

को को दोप वि ग्रंथक हर ॥ १ ॥

अत- रे मन जगत सुपनो जाणि ॥ ओ ससार विकार परहर सिवर सौरजनहार ॥
राग घोवल । चोयपहर रो विचार अणदकुवरो सुहणों सह । नोस दीन अ धारो
रात ॥ ईंद्र भुवण औवचाट ह्य ॥ ईंद्र देव ।

३३० पत्र सख्या-७३ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार-१० ७५×५५ इंच ।
हागिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-२८ ।
लिपि-मुन्दर एव पाठ्य । सवत् १९३६ म रावलदाम द्वारा लिपिबद्ध । डोली गाव
(जोयपुर) से महीरामजी धारणिया (सगरिया मंडी) को प्राप्त । इसमें ये रचनाएँ
हैं —(क) कथा लोहापागल की, केशीजी कृत । छंद १३२ । (ख) कथा सत जोपाणो
का, केशीजी कृत । छंद-१०६ । (ग) कथा जैसलमेर की, बोलहोजी कृत । छंद-
१४६ । (घ) चन्नामणी, सुरजनजी कृत । छंद-३१ । (ङ) ग्यान महातम, सुरजनजी
कृत । छंद-२०१ ।

भाव- ॥ श्री विनजी सति सही लीपतु कथा लोहापागल की ॥ राग हसी ॥ दुग-
नीरहारी पहली नीज ॥ उरि भेटो अपराध ॥

सीवष सौरजनहार ने ॥ जीह सीमरे मुर साध ॥ १ ॥

अत- जन सुरजन की वीनली ॥ अरज कह तिच लाय ॥

पाच साता नव बारहा ॥ इब के मोही मिलाय ॥ २०१ ॥ इति ग्यान महातम
संपूरण ॥ समापत्ता ॥ समत १९३६ का भीती मोगसर सुट ५ पचमी वार बहस्पति ।
लिपिकृत श्रीमाली बाह्यवो रावलदास ॥ जोयपुर नगर ॥ पठनारय ॥ सा गण
दासजी चेला मोतीरामजी का ॥ + + + यह बात इए मीरोव मे बही है के
पुस्तक सु इतनी चीज आगी रापगी एक् ती तेल १ दुजो जल २ और मुरप के हान
नही देवणी पुस्तक ॥ १ ॥ वाचे जीए न राम राम बचसी ।

३३१ कथा छत्तीसी, ऊदोजी कृत । कुडली-३७ । पत्र सख्या-९ । अपेक्षाकृत मोटा देशी
कागज । खण्डित । आकार १४×५५ इंच । हागिया दाएँ, बाएँ-डेड इंच । पक्ति
प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३३ । लिपि-मुन्दर एव मुपाठ्य । सवत् १९४०
म माधु मतोपदासजा द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागनु साधरी ।

आदि-ॐ श्री गणेशायनम अथ कथा छत्तीसी प्रारम्भे ॥

ओं कथा केवल कृष्ण भजो हिरद धर विश्वात् ॥

आन भरोसा छाड दे ॥ राख राम की आत । २ ।

अत- अक्षर पतीसा ऊपर ॥ कवि छत्तीस विचार ॥

उदय सरय घोरसिमो । कहि सबत अठार । ३७ । इति । श्री । उदयग
कृत कथा । छत्तीसा गम्पूगम् ॥ मरत् १९४० मिति आदिवा मावे कृष्ण पणे निपे
दग्याम् बुधवार ॥ निपाटनम् । माधु । श्री १०८ । महाराज बालकृष्णगरी का
निन्द सनापनामन निगा प्राम र्नाशडे मध्य श्री ॥

३३२ हरजस २८ । मीरा-५, सूरदास-४, रामप्रताप-१, दयाल १, बखतावर-३, बखना १, अज्ञात-१, रदास-२, नामदेव-१, लालदास-३, कबीर-३, रामदास-१, सत-दास-१ तथा ध्यानदास १ । पत्र सख्या १४ । देशी कागज । आकार-८ २५×३ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२१-२३ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । सवत १८८६ म लिपिग्रन्थ । प्राप्तिस्थान-पीपासर भायरी ।

आदि-श्री विसनजी राग बहग ॥ एकर सु मुप बोल रे मेरे प्यारे हो जोगी डे०
साँगी नाद भमुत का बटवा मू द मतो दिरग घोल रे मेरे प्यारे हो जोगी (मीरा)

अन-वेद पुराण सास्त्र कह हरजन कहत बजाय

जती सती सिव सेस कह ध्यानदास लिबलाय १३ इति श्री ग य हरजस सपूरा
वपे मीती मगसर सूदी समत १८ रा ८६ गाव बावी मधे म वाच विचार जिसकु राम
राम ।

३३३ गुटका । फोलियो सख्या-१४२ । बीच के कई पने अप्राप्य । जोरा, खडित । देशी
कागज । आकार-८×५ ५ इ च । अनेक लिपिकार द्वारा लिखे जाने के कारण पक्ति
प्रतिपृष्ठ और अक्षर-प्रतिपक्ति में एकस्पता नहीं है । हाशिया-किनारो पर-१ इ च ।
सवत १७१०० (१७००) (छ) से १६२३ (ज) तक की लिपिबद्ध रचनाओं को एकत्र
कर सिलाई किया गया है । लिपि-सामायत पाठ्य । प्राप्तिस्थान--श्री भागी
(मुपुत्र श्री चौवा वसिहाल), गाव दाणी खासा महाजनान, पो० किरमाय (तहनील
फतहाबाद, हिसार) । इसमें ये रचनाएँ हैं -(क) लघु चणाइक्य राजनीत सास्त्र,
८ अध्याय (संस्कृत) । (ख) गरभ चितावणी-रामचरणजी कृत । छंद १२८ । (ग)
देवियो कृत १ सवया, फुटकर दोहे-४ । (घ) लुक्मान हकीम की कही 'याय नसीयत
(अपना घेडा कू) । वर्चानका दाली म ८५ नसीहत । (ङ) देवीदास रा कवत राजनीत
रा । कवित्त-१६ । (च) फरीदजी महाराज की कह्यो काफर बोध । गद्य पद्य में ।
समत १९१५ रा वसाप मुदि ३ लिपित साध मरूपदास (छ)सवद जोगारभ का ।
इसके अतगत इन कविया के पद या भजन हैं-गिर-२, लालदास-४, कबीर पद-८,
सवए-२, गोरख-१, रामदे-१, लिखमण-१, सोनी अपो-१, अज्ञात-१, लियमो १,
अज्ञात सवए-२, कमाल-सवया-१, नामदेव की सगरी-१, गुरुदेव परतप सु दाम
नामा कहै मुगत क दम की रीक पाया ॥ १ समत १७१०० स (१७००) रा अमाड
१३ ॥ नौसाणी हरीया की सत की ॥ (ज) हरीया की नौसाणी-१ (लिपिकार के
अनुसार सख्या २ है) । (झ) अज्ञात कृत प्याल-१, -सापी-१ । मीर की कु डलिया-
३, परमाल-अज्ञात कृत-४ छंद । (ञ) बमेक वारता री नौसाणिया, केसौजी कृत-
नौसाणी-२९ । इति श्री बीमेक वारता री नौसाणीया सपुरण समत १६२३ रा
भाइवा मुद १० वार दुध-पोथी वीसनोई धुमजी री छे सोमन मे लीपी छे । (ट)
गिरपर की कु डली १ । (ठ) उपदेस की नौसाणी १ कवि जालम कृत तथा अज्ञात कृत-
१ पत्र । (ड) रामदास की साखिया । सख्या नहीं दी है । (ड) बवुती (भभूती) मत्र,

जालमगरजी का सबया-१ । (ए) कमाल, बबेदास, तुलछीदास, साईंदीन के एक एक सबए । दीनदरवेश-कु टली-२, लालगुलाम-१, कवित्त, कबीर का रेखता और दोहे, जन आतम, नाथुराम तथा अज्ञात वृत फुटकर दोहे । (त) गीतराचार, पाहल । (प) विभिन्न भद्र-नागफणी लंगोट कापीद का मत्र, धुली का मत्र, वभ्रुती का मत्र । (द) करमरेया की पहचान । समत १६१६ रा वसाक व्द ७ । हरजस फुटकर अज्ञात वृत । (ध) भुल को लछन, अज्ञात विष्णोई कवि वृत तथा फुटकर दोहा सबया । (न) गुण-तोस धरम कवत । (अपूरण) । १८ दोष (सब-के तू कारण किरिया चूकयो-) । (प) नरसीजी का भजन-१, इद्रजाल तन विद्या मामत्र-(मम्बृत) । नोपीयन बाम-नोई पगारो-समत १६१५ रा मीती चत सुद १० गाव राणासर । (क) कया घुनारी लावणी, भवानोसोंग वृत, ६ छंद । (ब) सरोदो, चरणदासजी कृत, छंद-२४० । (भ) श्री रामचरणजी की बाणी अणभ-स्तुति का किवत, प्रथ गुर महमा, २५ छंद । प्रथ नाव प्रताप (अपूरण), ५४ छंद ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ चरणगायका लिप्यते ॥

प्रणम्य शकर देव ॥ स ह्याण च जगदगुरु ॥ विष्णु प्रणम्य तिरसा ॥

व्यापी सास्त्रमुत्तम ॥ १ ॥

अत-हिरदा मू ले धरणी गई ॥ नाभ कबल म चेतन भई ॥

सबद गुजार नाड सब जागै ॥ रुम रुम सीतग सो लाग ॥ ५४ ॥

नौ स नारी मगल गाव ॥ ता मधि (-रामचरणजी वृत प्रथ नाम प्रताप) ।

३३४ गुटका । अपूरण । फोलियो सख्या-१४२ (११६ + २ + १३ + ३ + ५) । विनारो रान्ति । देशी कागज । आकार-७ २५×५ इंच । हागिया-विनारो पर पौन इंच । पकित-प्रतिपृष्ठ-६, ११ । अक्षर-नमन प्रतिपकित-१६-२१, १४-२० । बिहारी दाम तथा अज्ञात लिपिकारा द्वारा सबत् १६३० म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्ति स्थान-जागू माधरी । इमम य रचनाएँ हैं -(क) सबदबाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रमग । भलीया होय तो भल वृष आव । बुरीया बुरी कुमाव ॥ १२० ॥ इति श्री गदवारो सगुण । (ख) विष्णु सहस्र नाम । (ग) विष्णु पजर स्तोत्र (सकृत) । (घ) स्वमनी मगल-रामलला कृत । फो० ८५-११६ । विविध राग-रागिनियों के अन्तर्गत छन्द स० पृथक्-पृथक् है । इति श्री रामलला कृत स्वमनी मगल समाप्त सबन १६३० मिति पाह बनी ६ लिपित बिहारीनास । (ङ) फुटकर साविर्या-जाम्भा पी (अपूरण) । (च) अमावस्या की कया, मयाराम कृत । छन्द १४१ । (छ) साविर्या-६, जाम्भाणी । बेशीजी-२, ऊदोजी-१, दामोजी १, भीवरान-१, श्रीर रिक्ताम कृत ।

आदि-(तो) इत मोहा । अति बुरसाणी छोडत छोहा पाणी । छल तेरो खाल पनासा ।

सतगुर तोड मग का साला ॥

अन-घत्यो अरुसो पथ दुखी जाहा मु कर सनेह ये

जन रिक्ताम कहै (विग) जारा तरी चरहर कपी बेह रे ४ (६) ।

३३५ गुटका । प्राप्त फोनियो सख्या-६६ । अपूर्ण, खडित । मशीन का बना कागज । आकार-८×५ २५ इ च । हाशिया-आधे से पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-एकरूपता नहीं है किन्तु माधारणत ११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-प्राय पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसमें इन कवियों के हरजन, भजन आदि हैं — काहडदास, चद्र-सखी, मीरा, तुलसीदास, रामसेवक, कृपाराम, नानकदास, रामचरण, लालदास, विष्णुदास, सूरदास, खेमदास, हरिदास, पूरणदास, कबीर, बखतावर, रामसरण, तानसेन, हरिराम, सेवादास, कालूराम, गगादास, केवलदास, जन रिखदास, बुधरमल, चरणदास, जमलदास, सहज, रसिकनाथ, नागरीदास, साईदीन, सुरतराम, पोकरदास, (भजन १ तथा नुगरी मुगरी को भगडो), रामराय, औघड, दयाराम, मुरारीदास, नामदेव, माधोदास, नरसी, अनक अज्ञात कवि तथा पदम भगत (कृष्ण रक्मिणी विवाह सन्धी) ।

आदि-(फो० ७ के द्वितीय पृष्ठ के नीचे म) —

जल कसे भरू सरजू गहरी सनमुप राजा रामजी खडे (टेर)

अवधपुरी सों चली मेरी सजनी हाय घडा सिंग पर ड इदुरी १

अपने अपने भवन सू निकसी कोउ स्यामल कोउ गोरी धरी २ । (-रामसेवक)

अत-कामण मिलकर कामण गाव करण कवर कु सुप उपजाव

सेस सहस मुप पार न पाव जगन हेत नर चिरत दियावै

पदम भगत तुमरो जस गाव बास बडु ठ, नहीं आव ६ । (-पदम)

३३६ गुटका । दे जी कागज । पत्र-सख्या-१० । आकार-६ २५×४ इ च । हाशिया-नगण्य । कुल १७ पक्किया । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-ब्रह्मानंदजी तथा अज्ञात । सवत १९५८ और उससे पूर्व लिपिवद्ध । डोली गाव (जोनपुर) से श्री महीरामजी धारिया (सगरिया मढी) को प्राप्त । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) जाम्भोजी, विष्णोई पथ तथा २९ धम नियमों सबधी विधेय विधेय ज्ञानव्य । (ख) भगव रो जाप (मंत्र) ।

आदि-श्री जम गुरुभ्योनम ॥ ईम बौसनोईया के होन का नीमित ॥ और देसा और गावा ॥ और अघतारी के माता पाना ॥ और ओतार लेने की अमुतता ॥

अत-डड कमडल विरमा दोनी ॥ सदा सोख दोनी झारी ॥

भगवा बसतर विसनु दोना बौचरो धीरमा चारी इती मत्र नपूरण ॥ १९५८ माह बनी १३

३३७ श्री जभेस्वर जनम कथा, किसोरीलाल वृत । (अपूर्ण) । पुस्तिका । मशीन के धन ८ पन्ना का । आकार-८ ५×६ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-१७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९८० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयाराम विष्णोई, सदलपुर (हिमार) । आदि-श्री जभेस्वर जनम कथा दोहा नासे विघ्न समुल ते श्री गणपति को नाम

जां चितयन विन होत नां देवनहु का कांम

अत-नसि मे घ्यानि लगाये फल ईच्छा पुण पाये छद कहे कीसोरील कटे जजाल ह

पुसहाल अ ति मौल भात भराये जो कके ॥ ४ ॥

३३८

पुस्तिका । फोलियो सख्या-१५ । मगीन वा वना वागज । आकार-८५×५२ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । भिन्न हस्तलिपियो म होने से प्रतिपृष्ठ म ६ से १२ तक पक्तियां तथा प्रतिपत्रित म १२ स २४ तक अक्षर । लिपि-प्राय पाठ्य । फोलियो ८ पर दसकत तालोकनास र हाय रा छ समत १६५८ मीत पगण मुग १४ लिखा है । प्राप्तिस्यान-जागलू साधरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) पदम कृत कृष्ण-रक्षमणी विवाह सम्ब धी पद । (ख) फुटकर रचनाएँ-कबीर, तुलसीदास, पदम के हरजस, साहब रामजी का १ छप्पय तथा रायचद कृत १ साली । (ग) शकर कृत १ भजन ।

आदि-श्री जभगुरुवेनम दोहा-हरिबुझ हरिदास सों ॥ कहो वेस री वात
आनद घांरो राई रक्षमण कहो कुसलात १

अत-तार पहू च गया धुर नदन में सब बसतु हे इस फवन में ॥

कहेता ज्ञान नीता के ॥ सक को टेक मोलती है ५ ॥

३३९.

रक्षमणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियों के अतगत छद सख्या पृथक पृथक है । पुस्तिका । अपूण । जीण, खडित । (पृष्ठ २५ से २३८ तक) । आकार-६×७ ७५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१७ । अक्षर-प्रतिपत्रित-१५-१९ । स्वामी ब्रह्मानंदजी द्वारा सवत १६५८ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्यान-जागलू साधरी ।

आदि-पाच सहस्र हस्ती श्रु गारा सात सहस्र केकाणो

सोवण साज वणो अति सुंदर हीरा जडित पीलाणो २ (पृष्ठ २५)

अत-दग २ पुत्र एक २ कया तक्षणी यह चक दीनां

निराकार निरलैव निरजन यो रग माया भोना ३

अपनी २ पोल निरंतर भजन करत हैं नारी पदम स्वाम सुखदायक नायक ।
(पृष्ठ २३८)

३४०

पुस्तिका । पृष्ठ सख्या-५८ । मगीन के वने वागज । आकार-५ ७५×६ ७५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२-२५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१५ । लिपि-पाठ्य । मगे गोदारे द्वारा सवत १९९३ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्यान-माधु श्री मिर्जा रामजी महाराज, गाव गुडा (जोधपुर) । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) बीष्णु चरित, ऊपोजी कृत । छद सख्या-११० । ईती श्री वीसनुचरीत सपुरणम् ॥ समत १६६३ रा जेट वद १२ ने । (ख) जभ स्तुति-जज्ञात कृत । छद ५ । (ग) साली-१, साहब रामजी कृत । (घ) बनानाय के भजन-८ । (ङ) अचलुराम की कु डलिया-२ तथा हरिया, सुत्तराम और हरिराम कृत भजन ।

आदि-॥ ३ ॥ आ वीष्णुवेनम ॥ अय वीष्णु चरीत लीपते ॥

चौपाई ॥ श्री गुरु सत चरण सौर नांड ॥ अज्ञा होय धीष्णुं जस गाऊ
महावीष्णु के चरीत अपारा ॥ सुर नर मुनी जन लहे न पारा । १ ।

अत-नाभी नगर नागगी जागो ॥ जाकु देप सकल जग भागो ॥

असो नागण न सब जुग पाया ॥ जा यां सतगुरु पुराही पाय ॥ १५ ॥ (बनानाय)

३४१ होमतराय की रचनाएँ । अपूर्ण । पुस्तिका । प्राप्त पने-१५ । मंगीन के बने कागज ।
आकार-८×६ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६ । अक्षर प्रतिपक्ति-
१७-२१ । लिपि-घसीटी किन्तु सामान्यतः पाठ्य । श्री कनीराम गायणो द्वारा स०
२००० के ग्रामपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री कनीराम गायणो, गाव जेसला
(पनोधी) ।

आदि-कोरतार ॥ हुदजी डेरा कीया कुव उग्र आय

सनबधी भेला कीया जाजम दई धीछाय ॥

अत-केइ नीनो के बाद लोहापागल बन म जावर सेरनाय अघोरी का चेला हो गया
तपमा वरन लाग्या फेर तपसा का धमड कीया अघर आसन बठ के कहा की मे लीछ-
मण का अवतार हु ढाई सो चेला लेकर समराधल आया ।

३८२ साधु जगदीशराम कृत साखियों-१०, भजन-३, आरती-१ और फुटकर छंद तथा
चंद्र, राजाराम गायणा, रितीलाल, शकरदास, सूरदास और गोरख के फुटकर पद ।
पुस्तिका । अपूर्ण । मंगीन का बना कागज । आकार-८ ५×७ इंच । हाशिया-नाम
मात्र को । प्रतिपृष्ठ में पक्तियों की एक रूपता नहीं है । अक्षर भी छोटे बड़े हैं । लिपि-
पाठ्य किन्तु अगुद । साधु श्री जगदीशराम द्वारा अनुमानतः सवत् २००० के लगभग
लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयामर साधरी ।

आदि-आत्मा रूपी एक परबत है तिस ऊपर आकास रूपी बन है तिस विषे ससार
रूपी मूल लगे हुये हैं

अत-शकरदास बुज सन्त बिचारी मृगा ने सिंह दबाया है

ऊलटा ग्यान समझे कर देखा जब ये मन पतियाया है ॥ ४ ॥ (३६ वा पन्ना)

३४३ जगमालदास कृत १ आरती तथा जगदीशराम कृत १ साखी । मंगीन-बना एक पत्र ।
आकार-१३ ५×४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ५७ पक्तिया । अक्षर-प्रति-
पक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । सवत् २००३ म जगदीशराम द्वारा लिपिवद्ध । प्राप्ति-
स्थान-भीयामर भाधरी ।

आदि-आरती रामजी श्री जाभाजी की

ओं जे श्री जभ ओंकारा ग्रहमा सोव सनकादिक गावत है सारा

हरी हरी हरी जभ देवा टेट (-जगमालदास)

अत-दुरद्योघन को मान घटाये भाल वॉडुर के जावीयो

जगन्नीस गुरुजी आगी कर रे पुकार पार लगावियो (जगदीशराम) समत २००३

मौवी सावरा बंद १४ यह सापी जगदीम लीपी छे

३४४ पुस्तिका । मंगीन का बना कागज । आकार-६ ५×४ इंच । हाशिया-नगण्य । प्रति-

पृष्ठ म पक्तियो और प्रतिपक्ति मे अक्षरा की, छोटे बड़े होने से एकरूपता नहीं है। कई पृष्ठ अक्षरे लिखे हैं। लिपि-सामान्यत-पाठ्य। अधिकांश म श सामु श्री जगदीशराम द्वारा अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिवद्ध। प्राप्तिस्थान-मन्त्र श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा। इसमें रामानन्द के ५ भजन, सा चचार, पचीकरण, अनेक मन्त्र (संस्कृत), ३५ पृष्ठ तथा सामु जगदीशराम का १ छ और २ साखिया हैं।

आदि-ओ३म् हरये नम भजन कीर्तन (१)

गाय गाय नित गूण गोविन्द रा कलीमल हरसी रे

हरिगुण गाय से। डेर। (-रामानन्द)

अन्त-दस धाम सोघ लो नास हूये सब ताप

जगदीशराम छुब देख लो घट ही मे गरु आप ॥ २ ॥

३४५ सामु जगदीशराम कृत ३ भजन। मशीन के बने छोटे छोटे ३ पन्नों म। रचयिता इ सवत् २००० के आसपास लिपिवद्ध। प्राप्तिस्थान-भीयासर साधरी। इनमें ये म हैं—पत्र १-बिना विद्या के प्रताप भोक्ष पद कैसे पावे रे।

पत्र २-ये तो दरसन बीजो माने आयो गुरुजी माने तारो नो।

पत्र ३-डार गुरु सरण तुमार कृपा मो पर बीजो रे।

३४६ विद्याह पद्धति। अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्य। पुस्तिका। मशीन का बना कागज आकार-८ ५×६ ७५ इंच। हांगिया-नाम मात्र को। दो हस्तलिपिया म। पक्ति प्रतिपृष्ठ-१६-१८, १०। अक्षर-प्रतिपक्ति-त्रय १६-२३ और १२-१५। लिं कार-अज्ञात। अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिवद्ध। लिपि-प्राय पाठ्य प्राप्तिस्थान-भीयासर साधरी। इसमें अनेक मन्त्र, बोलहोजी, तेजोजी के कवि आशीबचन, नाम, तथा रामचन्द्र, राधाकृष्ण और मंगल के शालीचचार हैं।

आदि-चतुर्विंशो उत्पन्नो गनिवासरे ऊरध मुल्ले दृष्ट पताले अगोचर पावत्पुवाव

कथण से माता कथण से पीता कथण से गोत्रे के जीम्या प्रकासते

अन्त-सहर फतेपुर बास है जन्म मोसर कुल गाय

हरमुख सुत प्रताप ही साखा कही बनाय ॥ ४१ ॥ (मंगल की शालीचचार)

३४७ मोरों का भजन-१ तथा अज्ञात कृत जाम्भोजी सबधी भजन-१। देनी पत्र-१। प खडित होने से अतिम भजन अपूर्ण। आकार ४ ५×३ ५ इंच। हांगिया-नहीं है कुल-२५ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-११-१३। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिका द्वारा अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिवद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपामर साधरी आदि-वेधो री सहेलां मारो मोहन भावण लुटजी। डेर (-मोरां)।

अन्त-भगवाँ टोपो भगवाँ चोलो भलो सुरगो भेष ५।

३४८ उमाहो-बोलहोजी कृत (अपूर्ण) तथा तेजोजी कृत १ कवित्त (गूगल मन्त्र)। देनी पत्र १। खडित। आकार ८ ७×४ इंच। हांगिया-नगण्य। कुल १३ पक्तियाँ। अज्ञात प्रतिपक्ति-२८-३०। लिपि-पाठ्य। माधु परसरामजी द्वारा अनुमानत स० १८५

के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री सिमरधाराम थापन, लाम्बा (जोधपुर) ।
आदि-मन रातो साम सू गुदडयो गुणा रो गहीर १६ निरघनीया धनवाल हो किर
पण वाल्हो दाम विर्योयां न वाल्हो कामणी तेरा साथ विसन के नाम १७
(-बोल्होजी)

अत-कच तेज पयप जोडि कर आसा पूरण जमेमण
भगवान भगत भो भजबा महुर पधारे महमाण १ ॥ (तेजोजी) लिप्यते साय
फरमरामजी सत्य

३४६ ज्ञानचिरी, बोल्होजी कृत । छन्द सख्या-१२६ । अपूर्ण । देशी कागज । प्राप्त पत्र
सख्या-४ । आदि के ५ तथा ६ वां पत्र नहीं है । आकार-६×४ इंच । हाशिया-
पीन इन्च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर प्रतिपक्ति २८-२९ । लिपि पाठ्य । लिपि-
कार-अनात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर
साथरी ।

आदि-री कहीं कद करारी धार मुप त बोल मारो मार ६२
तिल तिल कर सौ काट पिड काट कपट करे पड कुपड
बाट बिहच कर जूजूया तौऊ जोय न छूटे मूवा ६३
अत-सोर्ठा-सत सु धम विचार धर्मा उपर भाय है
दो यों पय सवार मन मान जिह जावहू २९ (१२९) इति श्री ज्ञानचिरी
सपूर्णम् ।

३५० सध्या बदन मत्र । मशीन का वना १ पत्र । आकार-८×६ इंच । हाशिया-पीन
इन्च । कुल १५ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३ । लिपि-सुपाठ्य लिपिकार-
अनात । अनुमानत सवत १६४० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू माथरी ।
आदि-श्री जभेगुवे नम अथ सध्यावन्न मतर लिपते ॥

ॐ विसनु विसनु तू भण रे प्राणी ॥ साथे भगते
अत-सेतीस कोड बकुठ पहु ता यू साच सतगुर को मतर कहियू
इति श्री जभ तातू सवादे साया वदन मत्र सपूर्णम्

३५१ साखी २, हरजी कृत । मशीन के वने २ पत्र । आकार ८५×५२५ इंच । हाशिया
नगण्य । कुल ६३ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । दोना द्वारा
अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महत श्री भानाराम
जी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-राजा बल क दुवार जाचण आयो नरहरी

बावन रूप मुरार तीन पेड सब घर करी

अत-हरजी हर की आस लोहट घरे बधावणो

कुल पुवार तण प्रगास पोपासर प्रगथ्यो सही । ५ । साखी सपुरण छ द ॥

दोना रा छ

३५२ लिखत, लोहावट गाव के लोगों की । कतिपय धम-नियम पालन करने सम्बधी ।

देशी पत्र-१ । स० १८६२ व फागुन सुदि १५ को त्रिगित । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

३५३ लिखत, लोहावट गांव के लोगों की । वनिपय धमनिपय-पालन-सम्बधी । देशी पत्र-१ । थापन राठ द्वारा त्रिगित । लिपिवाल अनुमानत स० १८६२ व भाद्रपाम । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

३५४ भेले मुकाम पर की गई, धम-निपय पालन सबधी सवत १८७२ की लिखत की नकल । मशीन का बना कागज-१ । पत्र का समय-सवत १९५० । प्राप्तिस्थान-सालागर सायरी ।

३५५ दक्का, पानी निवालने-विलाने सबधी । मशीन का बना कागज-१ । सवत १९८६ फागुन सुदि ११ का लिखा हुआ । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

३५६ बग्यापती (भादि विष्णु म मिश्रजा का लिप्य परम्परा) । देशी पत्र-१ । छडित । आकार-२६×२५ इंच । हाथिया-नहीं है । कुल ६५ पवितयाँ । अक्षर प्रतिपत्रित-६-८ । सवत १९०१ म दयाराम द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठम । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी चौबड, भूननिमा (नाडोजी) ।

आदि-॥ श्री विष्णुवेनम अथ प्रथम आदि दगावली लिपत ॥

प्रथम आदि विष्णु १ की ग्रहा २ की मरोवि ३

अ-४१ रायलजी चेला ८ सजरामजी मयारामजी बालविष्णुजी केसोदासजी ४१ समत १९०१ रा घये मितो बग्याप सुदि १४ लिखत दयाराम

३५७ जाम्भोलाव पर 'पट्टेवडो फिराने सम्बधी उल्लेख । देशी पत्र-१ । सवत १८११, चन वनि ११ को दयारामजी द्वारा त्रिगित । प्राप्तिस्थान-महलन श्री रणछोड्यास जी, जाम्भा ।

३५८ सूत फिराने पर 'पीछोवडो' बांटने सम्बधी उल्लेख । देशी पत्र-१ । सवत १८२३ म लिपित । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपामर सायरी ।

३५९ लिखत, रडवली गाव मे मुर्गे मारने सबधी, स० २००१, माघ सुदि ११, वार रवि वार की । मशीन का बना कागज-१ । प्राप्तिस्थान साधु श्री हणू तरामजी, रडवली ।

३६० लोहावट सायरी मे मवाड के विष्णाइया द्वारा स० १९८३ फागुन सुदि ८ को लिखे गए बग्याप का उल्लेख । मगान का बना कागज-१ । लिपिवाल-यही । प्राप्तिस्थान लोहावट सायरी ।

३६१ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का । सवत १८७८ मिंगमर सुदि २ का । सावडाऊ गाव पर, खेजडी आदि न काटने सबधी । देशी पत्र १ । प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी ।

३६२ परवाना, जोधपुर के महाराजा श्री विजयसिंहजी का । सवत १८२१, जेठ सुदि ५ का । जाधपुर परगन के समस्त गावा के पट्टायतों पर, विष्णाइयो से कर और बेवार न लने सबधी । देशी पत्र १ । प्राप्तिस्थान-महलन श्री रामनारायणजी, राम-डावाम (जोधपुर) ।

- ३६३ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का । सवत १८६०, पोह सुदि १४ का । विषय वही जो परवाने सख्या-३६२ म है । प्राप्तिस्थान-महत श्री रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर) ।
- ३६४ परवाना, उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी का । सवत १८७४, आषाढ वदि २ का । पुर के नायक मानसिंहजी को, छूट के सवध म । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर ।
- ३६५ परवाना, उदयपुर के महाराणा जवानसिंहजी का । सवत १८८५, मिगसर वदि १३ का । पुर के नायक सिवलालजी का, छूट के सम्बध म । देशी पत्र १ । प्राप्तिस्थान मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर ।
- ३६६ ताम्रपत्र-उदयपुर के महाराणा सरूपसिंहजी का । सवत १६०६, वैसाख वदि १२ का । विष्णोई साधु मनीराम मगनीराम को, दरीवा मे २॥ बीघा घरती श्रीर बावडी सवधी । प्राप्तिस्थान-श्री नाथूलालजी ओदिया विष्णोई, दरीवा (भीलवाडा) ।
- ३६७ भजन-२, रामलला का-१, तुरसी का १ । देशी पत्र-१ । आकार-५×१५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल २८ पक्तियां । अक्षर-प्रति पक्ति-७-१० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १६०० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-सावरं सु प्रीति लागी री हिवडा के बीच । टेक ।
अत-ताह सिधर रिन दन तुरसी । मनसा बाचा क्रमना । ३ ॥
- ३६८ गोविंदरामजी वृत साखी-१ । देशी पत्र-१ । जीण, त्रुटित । आकार-७ ७५×५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल २७ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १६५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्ति स्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-॥ छद छप ॥ श्री जाभेश्वरधाम जाय जन धका ज धाव
अत-अडसठ तीय उपर न जभ सरोवर धाम
जभेश्वर की दया सों वरणत गोविंदराम श्री जाभेश्वर ध्याईये सापी सपुरणम्
- ३६९ जाभोजी की आरती, सख्या ६ । देशी पत्र-१ । खण्टित । आकार ११×४ ७५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ५७ पक्तिया । अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १६४५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमे ऊदोजी की ४, प्रीतम की १ तथा कबीर की १ आरती है ।
आदि-श्री ॥ अय आरती श्री जाभजी की ॥ सध्या समरण आरती भजन भरोस दास
मनसा बाचा करमना सतगुरु चरण निवास
अत-तुलछि को पात कहत मन हीरा हरय निरय जत गाव कबिरा ॥
आरती सपुरण भवेत गणेशजि म्हाराज की लिपत समाप्त
- ३७० चार मासो-धरामाह वृत । अनुण । देशी पत्र-१ । आकार-६ ५×४ इंच । हाशिया

नगण्य । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पवित्र-३१-३५ । लिपि-प्राय पाठ्य ।
लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिरुद्ध । प्राप्तिस्थान-
श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-श्री विष्णु प्रमात्मननम भय वार मागी परा साह को ॥

दोहा-असाह सम धीनती कर ॥ परासाह अधीन ॥

तुम धिन ध्याकुल मन है जस जउ धिन धीन ॥ १ ॥

अत-जल धार धरध मेघला अर कोबुला बुलात है

जोहै मुहागन विद्या विद्यारी तीरु धेलन जात है ॥ तु पहन कसु मी धो ।

३७१ विवाह पद्धति-जाम्भोजी । अपूर्ण । देशी पत्र-४ । जोण, सडित । आकार-१२×६
इ च । हाशिया दाएँ, बाएँ-गवा इ च । पवित्र प्रतिपृष्ठ ३३ । अक्षर प्रतिपवित्र ३४ ३७ ।
लिपि-पाठ्य । सम्भवत श्री साह्वरामजी द्वारा अनुमानत सवत् १९४० के लगभग
लिपिरुद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमें
गोत्राचार आदि बसावली, बसदर के नाम, चौत्रुगो, सदाशिव महिमा, विवरस, कलस
श्रीर पाहल है ॥

आदि-॥ ६ ॥ श्री विष्णुजी सत्य । लिपत गोत्राचार ॥ श्री महादेव उ०

उं ॥ जदू वास रूपू-

अत-मछ की पाहल । कछ की पाहल । वाराह की पाहल । बावन की पाहल ।
नृसिंघ की पाहल-

३७२ प्रह्लाद चरित-केसरीजी वृत्त । अपूर्ण । छंद ८३ से ३८२ तक । आदि के ७ स २५
तक, १९ पत्र । देशी वागज । जोण, सडित । आकार-९ २५×४ २५ इ च ।
हाशिया-दाएँ, बाएँ-ग्न इ च । पवित्र-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पवित्र-३८-
३१ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपि-
रुद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई दुतारावाली ।

आदि-ध स आगी ॥ मुक्त नाड नवाई ॥ ८२ ॥

समहि पाग आश्री उर ऊपरि ॥ हिरण करे हाकारो ॥

मेरी धारी मोहि विणासो ॥ अबला मूलि न मारो ॥ ८३ ॥

अत-अनड पहाड अनेरा ॥ जित वाघन वाघ वघेरा ॥

रौंछ राकस रीस रहव ॥ हर डाकण भूत डराव ॥ ८२ ॥

३७३ महामाया की स्तुति, साह्वरामजी वृत्त । अपूर्ण । पत्र सख्या-११ । शीन का वना
वागज । आकार-६ ५×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इ च । पवित्र-प्रति-
पृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पवित्र-१५-१७ । लिपि-सुपाठ्य । श्री साह्वरामजी द्वारा
सवत् १९४० के लगभग लिपिरुद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलरामजी विष्णुदत्त विष्णोई,
दुतारावाली । अनुमानत सवत् १९४० के लगभग लिपिरुद्ध ।

आदि-श्री महामाया की अस्तु धारभते ॥ दोहा० ॥

महामाया स्तुति गव्व की ॥ चाली चार ओड

पुस जगणो प्रीत सु ॥ रहे सुय सेज्या पोढ ॥ १ ॥

अन-इ ड कटाक्ष भए प्य छारा जाहा ताहा देपू तेज तुम्हारा

मार निरजन किया हु कारा ॥ जग रहे नैन जगन पानों ॥ २९ धि-

३७४ साह्वरामजी की सापी, अणभ की-२ । मशीन का बना पत्र-१ । जीण, खटित ।
हाशिया-नगण्य । कुल ६६ पत्रितयां । । अक्षर-प्रति पकित-१५, १६ । लिपि-पाठ्य ।
लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६४५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-
श्री धावलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ जौ ॥ सापी साह्वरामजी की सापी अणभ की

परमभक्ति प्रहैलाद हीरणाकुस रूप है दयो घोल हलाहल क्षैर

उन पायो इन पी लीयो

अत-गुर किया भगवा भेत नेठ व्दो नौमो दिने

हरि दियो नव उपदेस शाहव सतगुर है सही ॥ ५ ॥ श्री बाबा साह्वरामजी

री २ सापी सपुरणम् ॥

३७५ परवाना, महकमा बौंसिल राज श्री बीकानेर का । सवत १९३०, मिति पोह सुदि १४
का । मुकाम गाव पर, मेढे सखी । देशी पत्र-१ प्राप्तिस्थान-थापन बधु (सबश्री
बदरीराम, वीरम, मखूराम, मोतीराम, काशीराम, द्योलाल एव नारायण), मुकाम ।

३७६ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १६०७, मिगमर वदि ११ का, समस्त कसा-
इया के नाम, विष्णोइया के गावो मे से बकरा लकर न निकलन सवधी । देशी पत्र-
१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३७७ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । राज्य की
जनता के नाम, थापना से बिना अपराध कुछ भी माग न करने सवधी । देशी पत्र-
१ । प्राप्तिस्थान-थापन ब धु, मुकाम ।

३७८ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । विषय-वही
जो परवाने ३७७ म है । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३७९ परवाना, बीकानेर अदालत का । ऊपर के (३७७, ३७८) परवान को पुन जारी
करने सवधी । सवत १८८७, पोह सुदि १ का । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन
बधु, मुकाम ।

३८० परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८६०, चत सुदि ७ का । मुकाम के थापनो
पर । मुकाम-मदिर के पुजापे को चार भागो मे बाँटकर लेने सवधी । देशी पत्र-१ ।
प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३८१ परवाना, बीकानेर के महाराजा अन्नूपसिंहजी का । सवत १७५२, जेठ सुदि ४ का ।
पवार जगरूप नाजर आनंदराम की और । गाव तालवे के १० खेत थापनो को
दिलाने और हरे वल न काटने सवधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु,
मुकाम ।

३८२ परवाना-बीकानेर अदालत का । सवत् १८६८, जेठ सुदि १ का । मुकाम के थापनो

की ओर । चढ़ावे की रहन रखकर श्री जांभाजी की मूर्ति हेतु लिए गए रुपये को बचाने और घास न उठाने सबधी । देगी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बाघु, मुकाम ।

३८३ परधाना-धीशानर के महाराजा मुजानसिंहजी द्वारा सालखे, मुकाम क थापनों की दो गई धरती सम्बन्धी । सवत् १७५८, जेठ बदि १ वा । देसी पत्र १ । प्राप्तिस्थान थापन बाघु, मुकाम ।

३८४ लिखत, मुकाम-मेले की । सवत् १८७२, फागुन सुनि १ की । विष्णोइया द्वारा धम-नियम पालन सबधी । देगी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-जांगलू सायरी ।

३८५ लिखत, जांभोलाय के मेले की । सवत् १६०६, चत बदि अमावस्या वा । विष्णोइयो द्वारा धम-नियम पालन सबधी । देगी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-जांगलू सायरी ।

३८६ फुटकर छन्द-५ । वारहटा सबधी, १ छप्पय तथा आनन्द एव अनात कृत । देसी पत्र-१ । आकार-६ x ४ इंच । हाशिया-पीन इंच । कुल-१६ पक्तिया । अक्षर-प्रति पक्ति २५ २६ । लिपि-पाठय । लिपिकार अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।

आदि-कवित् । तरवर एक उतग तास दोय पेड मयाण् ।

अथ साय जड बीस सिधर सोवन गढ थाण ।

अत-कचण केरे पींजर बाग न दोठा कोय २

३८७ विवाह पद्धति । पोथी । फोलियो सख्या-८२ । मशीन का बना कागज । आकार-६ x ५ ५ इंच । हाशिया-१ इंच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-१५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-७-६ । लिपि-पाठय । साधु विहारीदास द्वारा सवत् १६७२, जेठ बदि २० की लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान पीपासर सायरी । इसमें विभिन्न मंत्र, नाम, ऊदोजी के कवित, कृष्ण और शिव से संबंधित शालोच्चार, मंगलाष्टक आदि हैं ।

आदि-श्री जभगुब्बेनम ॥ अथ विवाह पद्धती लिखते ॥ अथ कलस थापण कलम लिखते ॥ जो समरथ क्या सुणो सब कोई ॥ तासों पयवी उत्पन्न होई ॥

अ त-विष्णु मंत्र का जल छूया ॥ गुरु की कृपा स बालक मुध हुया ॥ इति आ बालक मतर सपूणम् ॥ लिखत साध बीहारीदाम चला विष्णु दामजी का गाव भगतासरी के विमनोई बणीयाल लाधु के धरे सवत् ॥ १९७२ जेठ बदी ३० अमावस तिज पठनाम ॥ उं

३८८. माधवदास कृत भजन-१३ । पुस्तिका । मशीन का बना कागज । आकार-७ ५ x ६ इंच । हाशिया नगण्य । पक्ति प्रतिपृष्ठ-१४-१५ । अक्षर प्रति पक्ति १९ २२ । लिपि पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६७५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान-पीपासर सायरी ।

आदि-ऊ थी जम्भेस्वरो जयति दा

कलिमल हरण अह सुख करण मंगल मुरति रूप

दुष्टदलन मनमय मयन जम्भ गुरु मुर मूप

अन्त-अपरपार कलिपुग की भाया नहीं भेद कीसि ने पाया

कसा कुर जमाना आया भाधव भज माईजो ॥ ४ ॥

३८६ पुस्तिका । अपूर्ण । पने-२२ । आदि का १ तथा २३ के पश्चात् पने नहीं हैं । देगी कागज । आकार-७ २५×५ २५ इ.च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ.च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपि-पाठ्य । सवत् १९१५ मे बिहारीलाल विष्णोई द्वारा कालपी मे लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साधरी । इसमे ये रचनाएँ हैं -(क) विष्णु चरित-ऊधवदास कृत । अपूर्ण । छद-४-१०७ । मितो अयाड वदी ५ गुरो सवत् १९१५ दसवत् बिहारीलाल विष्णोई भूमया के मौजे रहै आ कालपी-पोयी लिपी । (ख) झावला सरोवर अस्तोत्र, छद-१३ । बिहारीदास कृत । (ग) जाभा अष्टक, छद-१० । बिहारीदास कृत । (घ) लीलकठ विष्णोई की बनाई अस्तुत छप्प । अपूर्ण । छद ६ ।

आदि-लाल उष्ण नहि सीला ॥ ३ ॥

विष्णु क नहि रूप न रेया ॥ लिया न जाव विष्णु अलेपा ॥

विष्णु निकट नहि कुछ दूरा ॥ विष्णु पूरन है भरपूरा ॥ ४ ॥

अत-बेचुव सुकवि सरण जाके लवले स भये छूटत भ्रम वद यह मेर मन आयो है ॥

कोई जिन मूलो साध भायो निज नाम ही कौ सोई पर ।

३९० चेलजी की कथा, अज्ञात रचित । खडी बोली गद्य म । पुस्तिका २ । कुल पृष्ठ सख्या-३१३ (१-१७९ तथा १८०-३१३) । एक इ.च हाशिये वाली । मशीन के बन कागज की । आकार-७ ७५×६ २५ इ.च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-११ म १९ । लिपि-प्राय अशुद्ध कित्तु पाठ्य । सम्भवत गणेशरामजी द्वारा सवत् १९५० के आगपास लिपिवद्ध । यह कथा किसी अय प्रति मे उत्तारी गई है, जिसके मकेत अनेक स्थानो पर मिलते हैं । आदि के प्रथम अध्याय म जाम्भोजी और २९ धम-नियमो सवधी उल्लेख करके फिर असली कथा आरम्भ होनी है । प्राप्तिस्थान-श्री धारसराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-अ सच्चिदानन्देवरायनमो नम १ आ गुं श्री जम्भेश्वरायनमो नम श्री गुरु जम्भेश्वरजि म्भाराज का अवतरण

अन-अन तीन दिन म मृत्यू सख्या लाखो की गिनती मे हो गई और वचे के सब दुखी जीवन म ही रहे अथात् जीये जितने तक २६ धर्मो को पालन करते गुम्जी को याद करने ही करने प्राणात हुए इति

३९१ गृध्रा । चारा ओर स खडित । देगी कागज । आकार-४×२ ७५ इ.च । हाशिया नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । साधु मगनीराम तथा बुधमराम द्वारा स० १९०० के आगपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जगदू मायरी । इसमे ये रचनाएँ हैं -(क) साईदीन के छद-१० । साधु जगदीश रामजी म्भाराज क चौपनो छ लिपित साधु मगनीराम । (ख) प्रथ पिसण सिघार, सेवादास कृत । छद-१०२ ।

आदि-अय दोनजी का छद दोहा

मिनया देही पाय कर ॥ जाण्यो मही जगदीश ॥

दीन रहे सुपर नहीं ॥ विगड़ी यीतया यीत ॥ १ ॥

अन-काल तणी सारी नहीं ॥ किरगी रामराय की आण ॥

सेवादास जम जीत कर ॥ परस्या पद निरमाण ॥ १०२ ॥ *नि श्री यम

पिसण मघार समाप्त वान विचार जिगगी साधु बुद्धमराम को राम राम वाकमी
घगा न घणा राम

३६२

गुटका । दंगी वागज । अपूण, सडित । आकार-६ २५४ ८ इच । हागिया-दाए,
बाएँ-१ इच । पन्ति-प्रतिपृष्ठ-७-६ । अक्षर-प्रतिपविन-१४-१७ । अनात तथा
विहारीलान द्वारा सवत १६२३ म लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागजू
साथरी । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) सबदवाणी, अपूण । सबद सख्या १०० । भनी
यो होय तो भल मुधि आव यु (१२०) । (ख) विष्णु सहस्र नाम स्तोत्र (सम्भृत)
श्लोक-१६३ । (ग) अमायस्या की कथा, मयारामनाम कृत । छन्द-१४४ ।

आदि-वा यपाणत ॥ उरथ ढाक से भिसुली ॥ ॥ आद अनाद तो हम रे रचौली ॥

हम सरजौली स कौण ।

अन-इति श्री महाभारते श्री कृष्णा भद्रु न सवादे अमावस्या महात्मे कथा मयाराम
विचित सपूणम् सवत १६२३ मीती आठ मुनी ४ सुनवार को लिखतम् विहारीलान

३६३

गुटका । मशान का वना वागज । आकार-६×३५ इच । हागिया-एक इच ।
पन्ति-प्रति पृष्ठ-६-६ । अक्षर-प्रति पन्ति-१३-२० । लिपि-पाठ्य । भिन भिन
लिपिकारी द्वारा सवत १९४२-५४ क बीच लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-जागजू साथरी ।
इसमें ये रचनाएँ हैं—(र) श्री जाभोलाय महात्म, गद्य म । (ख) जम स्तोत्र,
सुरजनदास रचित । छन्द-१७ । (ग) सबदवाणी, सबद-१२०, पद्य प्रसंग समेत ।
रतन काया बकूठ वासी तरा जरा मरण भो भागी ॥ १२० इति श्री गद वागा
श्री जाम्भोजी की सपूणम् गुभ सवत १६४२ मीती जेष्ठ वदि दूजा ११ वार वधवार
के दिन लिखत प्राणमुप विष्णोई वटा लिलदार का—। (घ) सख्या मत्र-जा विष्णु
विष्णु तु भग रे प्राणी साधा भवता उधरणी ॥ (ङ) अतीस घम । (च) जम्भाष्टक
(सदृष्ट) श्री गोविंदरामजी कृत । (ज) मत्र-२, (जे) सख्या गुरु श्रुत चला—तथा श्री
शास्त्र सो वार आप-। (ज) घम शास्त्र के श्लोक-२ । (झ) मयारामदास कृत
अमावस्या कथा के अन्तिम छंद तथा आरती-६ । कदोजी-४, कबीर-१, नामदेव-
१ ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री जाभोलाय महात्म लिख्यते ॥ एक सम श्री मृजनी
महाराज जहा तहा उपदेग करते हुवे दशन के लिये पक्षम तीथ जम सरोवर अर्थात्
जाम्भोजी तालाव के गये ।

७ १-पांचवीं आरती रामजी कु भाय श्री गामजी की आरती नामदेजी गाव १५१०
साकुराम स० १६५४ दारानगर गज मइ मध्य साठ मुद ५

३६४

रुक्मिणी मंगल, रामलला कृत । छन्द सख्या नहीं दी गई है । पत्र सख्या-११ ।

किनारे ध्रुवित । देशी कागज । आकार ९×४ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ एक इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । सवत् १६०७ मे रामलाल द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठय । डोली गाव (जोधपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्री गणेशायनम लिपते स्वमनी मगल ॥

निगम जाको नीत गावँ ध्यान सिध उर आनही

आदि अनादि पारब्रह्मजु के भक्ति नीक जानही

अन-राज करो मद्र द्वारका को भक्त ब्रह्मल श्री गोपाल

रामलला जन गाव मगल श्रृण भज जन होय नीहाल इति श्री स्वमनी मगल सपूर्णम् १ समत १९०७ माघ सूदी १४ वार थावरवार लिपते साथ श्री चनरामजी का सीप रामलाल पू टपेडा मधे सब सुम मगल ॥ श्री ॥

३९५. गुटका, सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसंग । अपूर्ण, खडित, जला हुआ । प्राप्त फोलियो सख्या-७९ । ८७ फो० मे से आदि के ८ अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६ २५×३ २५ इंच । हाशिया-सवा इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर प्रति पक्ति-१५-१६ । लिपि-सामान्यत पाठय । सम्भवत प्राणसुख विष्णोई द्वारा सवत १९४० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री कानाराम गायणा, पोनास (मिडता सिटी) ।

आदि-धो माग । रे विनहीं मुहँ जीव बपू मारो ॥

अत-विष्णु तू भणि रे प्राणी । इस जीवण कं हाव ।

तिल २ आय घटती जाव मरन दिने दिन आर्व (१२०)

३९६ प्रह्लाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द-५९४ । पत्र सख्या-३२ । देशी कागज । कति पत्र खडित । आकार ९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पक्ति-प्रति-पृष्ठ ११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३६ । सवत् १८६० म साधु रामदामजी द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठय । प्राप्तिस्थान-नवश्री सोहनलालजी गोदारा, भागीरथजी गायणा, चक २९ बी० बी० (तहसील पदमपुर, श्री गगानगर) ।

आदि-श्री विष्णुजी राग मारू दोहा

नारायण पहली नक सांभो सर्व सुजाण

आदि भक्त कहसू कया पह्लाद चिरत प्रवाण १

अन्त-में दावण पकड़्यो दीन को सतगुर कर सहाय

पाच सात नव बाहरा अबक मोहि मिलाय ५९४ इति श्री प्रह्लाद चिरत सपू रराम् ॥ १ ॥ समत १८९० रा वये मित्ती भादवा सुद ५ वार भालवार लिपते माघ रामदासजी कानजी रो सिष्य गावँ अलाय मध्ये । श्री जभाय नम

३९७ अमावस्या रो कया, भयारामदास कृत । छन्द १४६, पत्र सख्या-१४ । मनीन के बन कागज । किनारों से खडित, जीण । आकार-८.५×४ ५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२७ । श्री सनोप-

दास द्वारा सवन् १९५० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-सबधी सोहनलालजी गोठारा, भागीरथ गायगा, चक-२९ बी० बी० (तहसीन पदमपुर, श्री गयानगर) ।

आदि- ॥ श्री गणेशायनम अथ अमावस्या रा कथा लिख्यते कुंडलीया

उ प्रथम बटु गुरुदेव कौ द्वितीय बटु मव साथ ।

विष्णु बटु पुनि तीसर जात मिट जु ध्याय २

अन्त- लिपावृत सत श्री १०८ श्री बालकदासजी का शिष्य सतोपदासेन जेमनां माये श्री पठनाथ साध जीयाराम श्री जगरामदासजी का शिष्य उं तत्सत हरी

३९८ गोकलजी वृत (क) अवतार की विगति, छन्द सख्या-४५ और (ख) इदव छद, सख्या-३२ । पत्र सख्या-१० । जीण, खडित । देशी वागज । आकार-९×४ इ च । हागिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर प्रति पक्ति ३३ ३६ । श्री रामदास द्वारा सवत १८७५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान- श्री रामनारायणजी लीचड, भूलनिया (नाडोधी) ।

आदि- ॥ श्री जमेश्वराय नम । लिख्यते ओतार की विगह्य की अस्तुति ॥ गोकलजी क कहे छह दाहा ॥

रिषपति सिधपति सीत्पति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

गति दाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त- रह्या बाकी तका बचन पाली बिसन किरपा करो बाज सारी दास गोकल कह आस पूरो अरुप ऊबर आदि पुरप ओट घारी इति श्री गोकलजी क छन्द सपूण लिपत रामदास

३९९ बोट्टोजी क कवित्त, सख्या-४४ । पत्र सख्या-५ । जीण, खडित । देशी वागज । आकार-६×४ इ च । हागिया-दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रति पृष्ठ १३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४० । अगात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आस-पास लिपिवद्ध । लिपि-गुणाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी लीचड, भूलनिया (नाडोधी) ।

आदि- ॥ श्री विष्णवे नम विषय वचन बीहोजी का ॥

धम बीषां मुप होप लाछ लिछमो धन पाव

धम उत्तम बुनि अघनर जम दालद नही आव

अन्त- आप सवारय मुन मुयी बीषा बुबपी पापडा

बोट्ट कहै भव सागरा बह्यो जाहि रे बापडा ४४ इति श्री बोट्टोजी का कवित्त मूलम् समाप्त ॥ १ ॥

४०० अमचरी, गुरुनरजी वृत । छन्द-१०८ पत्र सख्या-८ । खडित । मानी का वत वागज । आकार ११×५ इ च । हागिया-नाम मात्र का । पक्ति प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३८-३६ । माधु वागवादिना तथा अगात लिपिकार द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । लिपिकार मवत १८५० आना पाणि, कनारि यहा वत दूष

प्रतीत हाता है । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी) ।
आदि-श्री गणेशायनम उ स्वस्ति लिपत्रु घमचरी ॥

दोहा-कहा कम जल कोयली ॥ कहा तिसना कहा तोर ॥

रे मन कित पित मात तू ॥ सपति बघ्यो सरोर ॥ १ ॥

अन-मनसा थावा क्रमना ॥ सुनु पुरातन सापि ॥

जन सुरजन की वीनती ॥ बाने की पत रापि ॥ १०८ ॥ इति श्री घमचरि
समापत ॥ समत ॥ १९ ॥ ५ । महीना चत मुदि । पचीमी । लीपिकृत साधु
वालगीविद ॥ श्री चारामजी के सिम ॥ बार रिव ॥

४०१ अभावम कथा, मयाराम वृत (छन्द सख्या नहीं दी गई है, पाठ में काफी मिश्रण है) ।
गिबजी की आरती, सेवानद वृत तथा रामाष्टक (सम्भृत) । पत्र सख्या ९ । खंडित ।
मशीन का बना कागज । आकार-१२×५ ५ इ च । हांगिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च
पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२ । अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३८ । लिपि-पाठ्य । अज्ञात लिपि-
कार द्वारा अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री राम
नारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी)

आदि- ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम अथ अभावम कथा लिखत ॥ कु डलिया ॥

प्रथम सिमरु गुर देव कु ॥ दुतिये सब साध ॥

विष्णु बडु पुनि तिसर ॥ जात मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥

अन-श्री स्वामी पवित्त मनसा प्रतीत रागे न गीत बचने अत्तीत

श्री रामचद्र सत्तत मामि इति श्री रामाष्टक सपूगम् ॥ १ ॥

४०२ अभावस कथा, मयाराम वृत । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-८ । खंडित । मशीन का बना
कागज । आकार-११×५ ५ इ च । हांगिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति-
पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । लिपि-पाठ्य । अज्ञात लिपिकार द्वारा
सवत १९५० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूल
निया (नाढोडी)

आदि-श्री गणेशायनम अथ अभावस कथा लिखते कु डलिया

प्रथम सिमरु गुरदेव कु ॥ दुतिये सब साध ॥

विष्णु बडु पुनि तिसर ॥ जाते मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥

अन-प्रात समे आई ज्यो सब करी प्रणाम गयो है ज घरं

गुरो घाम भई जो राति सोई ॥ कथा सुनो देव प्रीती बडो पुत्र मुजरा क
हुतो ॥

४०३ हवमणी मंगल, पदम भगत वृत । विभिन्न राग रागिनियो के अतगत छन्द सख्या
पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-४३ । खंडित । देगा तथा मशीन के बन कागज । आकार-
१०×५ ५ इ च । हांगिया-दाएँ, बाएँ-प्राय धाधा इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-
१५ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४२ । लिपि-साधारणत पाठ्य । बिहारीदास द्वारा
सवत १९३७ में लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया

(गाढांगी) ।

आदि-श्री जम्भोजी नमः सम वसुधैव कुटुम्बकम् मया विद्वान् ६०

सत्तार सागर अषाढ जल सुगत धार न पार ।

गुरु गोविन्द कृपा करो माया भगवत्धार १

अत-हर रो सामु कर शीतली गोभक्त कृपणनाथ

सोला सप्तम गोपी धर धार भोजन दरमण हाथ ९

सोनो दोनो सालयो रूपो अत न पार

भय पदमदयो जन भारती आयागवण निवार १०-१८३ इति श्री परमदयो

श्री रामजी मगन विद्याना ममालाम् १ गद्या १६३७ मिति बगण मुना २

त्रिपा विद्यानाम

४०४ छमछरी (सवतारी) पत्र, (गद्या १८०० ग १६००), श्री परमानन्दजी वगिहाल
कृत । पद्य गद्य मिश्रित । पाद्यो । प्रसूय, गति । प्राण पत्र मत्या-२० । दक्षी
पागा । आहार-८ ५ २५ ५ ७ । शनिपा-पाण्डे, वार्ते-पाण्डे ग पीत इ च । पति-
प्रति पृष्-२५ । अक्षर प्रतिपत्ति १८-२५ । श्री परमानन्दजी वगिहाल द्वारा सवत
१८०० ५ ग्रामपाम त्रिपत्ति । त्रिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-मय श्री मोहनलालजी
गोपारा रामनाथजा मायगा ११-२६ बी० बी०, नटमोल-पदमपुर, श्री गगानगर ।
आदि- ॥ एनी समत १८०५ पत्र ॥ ५ ॥ दुःख

छ व सम दुप छत्रोपया ॥ धरत धोह जल धार ।

नदीम्या नीर वट घण ॥ धरि धरि भगवत्धार । चन्द्र बसाय धन ससता जेठ
पाव वाज्यसी अगाढ प्रपा जेयमी सावण धीरपा काटि बदीस राप भाव
मध अगा भाद्रवा दाय २

अत-एनी समत १६०० पत्र ॥ दुःख ॥

सो वरसे समत पालट ॥ नाथ अक सचवाय

छमछरी अपर न पालट ॥ नु धो नुधे रो धाय १

+ + +

साठी सइ कीसय गुर ॥ धले ज धरत बेचारि ॥

दुहा कुरस्य ज दपीया ॥ परमाणद विचारि ॥ ५ ॥

हरि करिसी सो होयसी ॥ होतिव हरि क हाथ ॥

ए चतुराई चातरी ॥ वेद गरय की धात ॥ ६ ॥

जोत्यग मा सब कुठय लीध्या ॥ ह सब जोतिग माहि ।

दुणहार होत्यव की ॥ आगति लपी न जाय ॥ (७) ॥

वेद पढे जोत्यग पढे ॥ सब वातां समरथ ॥

मेहु मोत अर रीजक की ॥ कागद साइ हयि ॥ ८ ॥

साचो नाव विसन की ॥ अवर न सचा कोय ॥

आकास साचो अरथ ॥ धरत न सची होय ॥ ९ ॥

पडत नै झुठो कह ॥ मुरेय लोग मजुर ॥
दिणहे रावण क्यो नही ॥ दाल्यद घर मा पुरे ॥ १० ॥
पचायत मा पछोया ॥ राजा मान सोय ॥
साइ सेती सरय रू ॥ लोप्यो स साचो होय ॥ ११ ॥
इण ही पोहमी उपर ॥ परब न टाल कोय ।

४०५ पोथी । अप्रूण, अनेक पत्र अप्राप्य । जीण, खडित । देशी कागज । आकार-६ × ६ इंच । हागिया-आधे से पौन इंच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२४-२७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-२१ । श्री परमानदजी बणिहाल द्वारा सवत १८२० के भ्रानपास लिपिवद्ध । लिपि-माधारगत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-मवथी सोहनलालजी गोदारा, रामलालजी गायगा, चक्र २६ वी० वी०, तहमील-पदमपुर, श्रीगगानगर । इसमें ये रचनाएँ हैं - (क) श्रव गणी भाळी, छंद ५६८ । अप्रूण । परमानदजी बणिहाल कृत । बीच म अनात रचित अय फुटकर छंद भी हैं । (ख) डगव की कथा, अनात कृत । दोहा, चौपद ३०८ । (डगव भीम मन सवाद उखमी मोप) । (ग) गदफनेन की कथा, दोहा चौपद-१०८ । अज्ञात कृत । (घ) कथा भरथरी राज त्याग । अप्रूण, प्राप्त दोहा, चौपद १ में ४३५ । अज्ञान कृत । (ङ) कथा गोपीचंद, दोहा, चौपद ५२२ । अप्रूण । प्राप्त छंद-२६१ से ५२२ । मेरठ निवासी जोधोराम कृत । (च) मोहजोब की कथा (मोहमरद राजा की कथा), छंद ११७ । जन जगत्राय कृत । (छ) बिसन भगति महमा (दृष्टु और पाण्डवा से संबंधित) । अप्रूण, प्राप्त दोहा, चौपद, कवित्त-११० । अज्ञात कृत । (ज) घ म कथा, ४ अध्यायों म । हिंदी सस्कृत मिथिन श्लोक-३०० (१०० + ७२ + ७३ + ५५) । अज्ञात कृत । (झ) कौसनजी रो च्याहलो । अप्रूण, प्राप्त छंद ५ । पदम कृत । (भिन्न हस्तलिपि म) । यत्र तत्र अनेक फुटकर छंद भी लिखे हुए हैं । आदि-श्री निसनजी सति सही ल्यपतु श्रवगुणी साधी

ओ यमो नाथ निरजणा ॥ अवगति नाथ अनत
परमानद तस वदना ॥ भगत वछल भगवत ॥ १ ॥
वीनड नाथव वील्हजी ॥ घनो नेतो सुरताण ॥
परमाणद गुर पावीया ॥ सतगुर क्षम शुजाण ॥ २ ॥
पिना आपर सुरताण गुर ॥ चलु गुर दामु दास ॥
रासोजी दिष्या गरु ॥ तसा सुपदेव ध्यास ॥ ३ ॥
सेस महेश वमा सगति ॥ कवि सुरनेर केतान ॥
निहु जुगे रोय तापसी ॥ गुयया नेरय पोयान ॥ ४ ॥
केसो सुरेजन वील्हजी ॥ गुर मतपुर सामाय ॥
एता वायक सभल्या ॥ अनत गुण ग्यान धीयान ॥ ५ ॥

अन-घ्र म सवाद इद सुत ॥ श्रव पाप प्रमुचते ॥
परलोके भवेत गत ॥ भुक्ते रव न ससए ॥ ५४ ॥
पठते हरते पाप ॥ मुरत्वा भोयु सभते ॥
श्रव सीरय भवे फल ॥ महाघ्र म प्र दत्ते ॥ ५५ ॥

एती ध्र म कया सपुरण रामापेता (परमानवजी की हस्तलिपि में)

गुर गोचर घोनउ य अभोनासी देय तन मन धन आर्ग धरु
करु गुर की सेव । ५ । (ध्याहते से । भिन हस्तलिपि में) ।

४०६ हरजस । अपूर्ण । प्राप्ति के २ पत्र, विनारा से रगिद्धत । दगी वागज । आकार १५
४ इ च । हाशिया-राए, वाए-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपद्य-६ । अक्षर-प्रति पक्ति
२४-३० । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सबत् १६०० क आसपास लिपिबद्ध ।
लिपि-पाठ्य । गाव डोली (जोधपुर) में श्री महोरामजा धारणिया (सगरिया मंडी)
को प्राप्त । इसमें सुरतराम, तुलसीदास, नानकदास, बाजी महमद, बोलहोजी तथा अज्ञात
कृत एक एक हरजस ह ।

आदि-राग गावी श्री भागोत उपारा जग में २ टेक श्री भागोत सुणी सनकारिक

इमरत पीयो इकधारा ध्रु प्रह्लाद भभोछण नारद सुमरत वाहू धारा १
अ-मेल नहीं अमल हू घोषा ल्योह मेरे धीर मिठ सब घोषा ३

बोलहोजी अमल विसनु लिव लायो बहुत दिना को बायड भागी ४ ॥ ५ ॥
रे मन होय निरविरत भजि नरहरे छाडि ।

४०७ गोपीचंद का हरजस, अज्ञात कृत । देशी पत्र-१, जीण और विनारा से सहित ।
आकार १५×४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ १ इ च । कुल १८ पक्तिर्वा । अक्षर प्रति
पक्ति-३२ ३५ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सबत् १८५० के आसपास लिपि-
बद्ध । लिपि पाठ्य । प्राप्तस्थान-तोहावट सामरी ।

आदि-राम सत्य राग धनाश्री आज नगर में एक जोगी देव्यो घोरा गोपीचंद क
उणिहार २ लो टेक

अत-जलध्री प्रगादे राजा गोपीचंद बोलें हम तुम एहो विछोहा रे लो २२ ।

४०८ पहलाद चिरत, केसोदासजी कृत । छ द मख्या-५२० । गुटका । फोलियो संख्या-
१६७ । मशीन के बने कागज । आकार-३ ३/४×५ १/२ इ च । पक्ति प्रति पद्य-
५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१२ । रामचंद गायला द्वारा सबत् १६७१ में लिपिबद्ध ।
अपेक्षाकृत मोट अक्षर । लिपि सुपाठ्य । प्राप्तस्थान-श्री सीटनलालजी गोणरा, चर
२६ मी० बी०, (आगगानगर) ।

आदि-श्री गणेशानम अथ पहलाद चीत केनोजि यात्री लिपत । राग मार दोहा ।

नारायण पहिलि त्रिऊ स्वामी सब सृजाण । आद भक्त कहिसु कथा पहलाद
चोरत पर्वाण ॥ १ ॥

अ-३ में दांवन पकड़्यो दीन को । सतगुर करे सोहाय ॥ पांच सात नव बाहरी ।

अबके मोही भोलाम ॥ २० ॥ ईति श्री पहलाद चीत केसोदास बीबीतामा में
संपूर्णम् ॥ लीपत गायण रामचं गाव रासीतर वास चडा म लीपावनु । समत १९
७१ साल री बीरपे भीती भाखा मुदी १ बार मनीमरवार रे दीन पुसतक सपुता
हयो ॥ बाई वाच बोचार तो गायण रामचं री नुण परणाम बाचाजोना ।

कागल पोया ना कुछि थोया । ना कुछि गा'या गीयो ॥ २५४ ।
 वलि वलि कूरुस काय दलीज । जिहमा कणौ न दाणौ ॥ ७१८ ।
 वेद कुराण कु माया जालू । दत्त क्या जुगि थाई ॥ ९७२,३ ।
 भोज्या है पणि भेद्या नाही । पाणी माहि पखाणी ॥ १०५५ ।
 विण रणायर हीर न नीरे,
 गज न सीपे, तके न खोल्या नालू । २९१३-१५ ।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से ।

अध्याय २

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य-
विषयक किया गया अत्र तरु का कार्य

अध्याय २

जाम्बोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक क्रिया गया अत्र तक का कार्य

यह कार्य दो भागों में बाटा जा सकता है —

(१) विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया कार्य और

(२) इतर लेखकों द्वारा किया गया कार्य ।

पहले प्रकार की प्राय सभी सामग्री व्यक्तिगत प्रकाशनों के रूप में सीमित लोगों के सामने आई थी । लेखक, सम्पादक या सकलनकर्ता ही प्रकाशक था । प्रकाशन के मूल में धर्म या समाज-सुधार सम्बन्धी भावना विशेष रूप से रही थी । ऐसी पुस्तकें सीमित सख्या में और विशेषतः मतानुयायियों के लिए ही छपाई गई थी । अतः ये साधारणतः सुलभ नहीं हैं । इनमें जितना भावना का प्राधान्य है उतना वैज्ञानिक और शोधबुद्धि का नहीं । एकाध अथवा दो को छोड़कर मूल प्रति या स्रोत का उल्लेख किसी ने नहीं किया है । प्रकाशित और मूल पाठ में पर्याप्त भिन्नता है । अपनी अपनी रुचि के अनुसार बहुधा कवि-विशेष के कतिपय छन्द ही प्रकाशित किए गए । इनका आधार न बताने के कारण एक तो प्रामाणिकता पर सन्देह होना स्वाभाविक था और दूसरे कवि-विशेष की रचना के विषय में केवल अत्यल्प और आंशिक जानकारी ही प्राप्त हो सकती थी । फिर, धार्मिक आवरण के कारण से भी ये अन्य लोगों का ध्यान आकृष्ट नहीं कर सकीं । “सर्वदवाणी” का प्रकाशन अपेक्षाकृत अधिक बार और अनेक व्यक्तियों द्वारा किया गया । प्रत्येक की सर्वद सख्या और उनकी घटा बढ़ी का उल्लेख यथास्थान आग कर दिया गया है । जहां तक इसकी टीकाओं का प्रश्न है, वे आमक हैं और सन्तोषजनक तो कदापि नहीं हैं । इनमें खींचतान कर किसी न किसी प्रकार मनमाने अर्थ लगाए गए हैं । प्रत्येक टीकाकार ने अपनी-अपनी रुचि और सम्कार के अनुसार अर्थ करने की चेष्टा की है । मूल पाठ-विकृति, भाषा-दुरुहता और साम्प्रदायिक स्वस्व-अनता के कारण भी ऐसा हुआ है । वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने वालों के लिए यह सामग्री कतिपय तथ्यों और चिंतन-सम्बन्धी दिग्गा तो बताने में सक्षम है, आधारभूमि प्रदान नहीं कर सकती । अर्थ प्रमाणों के पुष्टि-स्वरूप इसका उल्लेख किया जा सकता है किन्तु स्वतंत्र प्रमाण के रूप में इसका उपयोग करने में बहुत मर्यादा की आवश्यकता है । ऐसी रचनाओं का सबसे बड़ा महत्व परम्परा, विचार-भिन्नता, सम्प्रदाय और समाज को जाग्रत करने के प्रयास की दृष्टि से है । इसके अतिरिक्त इनसे कतिपय अर्थ बातों का भी पता चलता है जिनका उल्लेख यथास्थान किया गया है ।

दूसरे प्रकार की सामग्री के अंतर्गत विभिन्न गजेटियर, रिपोर्ट, जाति धर्म सम्प्रदाय, इतिहास और साहित्य विषयक ग्रन्थों में आए प्रामाणिक उल्लेख तथा एतद् विषयक निबंध आदि सम्मिलित हैं । इनमें प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में प्रायः तो नामोल्लेख मात्र ही किया गया है । इन

सामग्री में विभिन्न गजेटियर और रिपोर्टें प्रमुख हैं। गजेटियरों और रिपोर्टों का आधार अधिकांश म क्षेत्र-विशेष में तत्कालीन कुछ लोगों से सुनी-सुनाई बात और दत्तक्याएँ मात्र हैं। सामाजिक दृष्टिकोण प्रधान होने के कारण इनमें समय-विधि में प्रचलित अनक बातों को आधार बना लिया गया है। फलतः एक क्षेत्र से सम्बंधित एतद् विषय उल्लेख दूसरे क्षेत्र के उस उल्लेखों में मिले हैं। इनमें परवर्ती अर्थों ने पूर्ववर्ती लेखकों के कथनों का अभाव-धुंध अनुसरण किया है। इसलिये पूर्ववर्ती लेखकों की अनक भूल भी दोहराई जाती रही हैं। तत्सम्बन्धी प्रामाणिक सामग्री के उपलब्ध न होने, वचारिक परम्परा और सम्प्रदाय के स्वरूप को समग्रता में भली-भाँति न समझने के कारण इनकी अधिकांश बातें भ्रामक और गलत हैं। कही कही तो ऐसा लगता है कि वे पूर्वग्रह से ग्रसित और दुविधाजनक स्थिति में लिखी गई है (द्रष्टव्य-आगे (२) सप्तम सर्ग ५ और २०)।

साहित्यिक धार्मिक दृष्टि से विचार करने वाले विद्वानों ने भी एतद् विषयक अप्रामाणिक सामग्री के आधार पर अपनी-अपनी बात कही है, अतः उनका मूल्य भी विशेष रह नहीं जाता (विशेष द्रष्टव्य-‘विष्णोई सम्प्रदाय’ नामक अध्याय)। उनको यह साहित्यिक सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी थी। प्रस्तुत विषय का मूलाधार सबदबाणी है। इसका भाषा १६ वा शताब्दी की ठेठ ग्रामीण मरुभाषा ज्ञान से राजस्थानतर विद्वानों को यह सहज रूप से बोधगम्य भी नहीं हो सकती। दूसरे, इसकी प्रकाशित प्रतियाँ भी साधारणतः प्राप्त नहीं हैं। तीसरे, इनका पाठ अनेक स्थलों पर विवृत है, अतः मूल मन्तव्य सही रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता।

इहा सब कारणों से, अपवादों को छोड़कर, अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ होते हुए भी, प्रस्तुत विषय का समग्र विवेचन और मूल्यांकन नहीं किया जा सका। प्रस्तुत अध्ययन की पूर्व-पीठिका के रूप में एतद् विषयक दोनों प्रकार के कार्यों की सूची, कालक्रमानुसार सम्बंधित सम्प्लित उल्लेखों सहित नीचे दी जा रही है। (पहले कालक्रमानुसार सप्तम अथवा आदि का विवरण और बाद में तारक चिह्न (*) से प्रारम्भ नई पंक्ति में उनका संक्षिप्त कथनोल्लेख और सार दिया गया है)।

यहा इस काय का विवेचन नहीं किया गया है, जिसके प्रमुख कारण संक्षेप में ये हैं —
१-इनमें अधिकांश का आधार अप्रामाणिक या आशिक रूप में ही प्रामाणिक है, अतः नामोल्लेख और ऐतिहासिक दृष्टि के अतिरिक्त इनका मूल्य विशेष नहीं है।

२-सम्प्रदायतर विद्वानों ने केवल प्रासंगिक या पृथक् रूप से उल्लेख मात्र ही किए हैं, सम्यक् और विधि रूप में समग्र विचार विवेचन नहीं किया। इस अध्ययन द्वारा ही प्रस्तुत विषय में सम्बंधित अनेक प्रकार की सामग्री पहली बार प्रकाश में आ रही है, अतः उनके लिए ऐसा करना सम्भव भी नहीं था। फिर, इस कथन में या तो सुने-सुनाएँ या और लोक-प्रचलित कथाओं का आधार पर कहे गए हैं अथवा उनमें पूर्ववर्ती लेखकों की बातों को उमी रूप में दोहराया गया है।

३-अब तक इस सम्बंध में जो कुछ भी लिखा गया है, उसमें-(क) जाम्भोजी के जीवन की दा-चार घटनाओं का, उमी मंत्र में सम्प्रदाय-प्रवृत्त न और उमक २६ अथवा कति

पय धमनियमो का नामो लेख है, या/और विष्णोई-समाज मे समय-विशेष म प्रचलित कुछ मान्यताआ और रीति-रिवाजो का उल्लेख भर है ।

४-सायद ही कोई कथन ऐसा हो जिसमे किसी न किसी प्रकार की-तथ्य, व्याख्या, परम्परा, विचार और मूल्याकन विषयक भूल न हो अथवा जिसम अप्रामाणिक बातें न-कही गईं हैं ।

५-इस प्रबन्ध मे यथाम्थान प्रस्तुत विषय का सप्रमारा और सविस्तर विवेचन करन का प्रयास किया गया है जिममे उल्लिखित काय की भूला, गिथिलताआ और अप्रामाणिक बातों का स्वयमेव निराकरण हो जाना है । अन यहाँ ऐसा करना पुनरावृत्ति ही होती ।

(१) विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय

१-श्री जम्भसागर स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित श-दाय दीपिका टीका सहित, मवत् १९४९ (लीयो मे) ।

* ११७ सबद और उन पर टीका । अन्त म "विनापन" मे जाम्भोजी का परिचय और २६ धमनियम । ६ स्वीकृत सबद (सख्या-१०, १०१, १०२, १०३, ११५, और १२१) भेदा हैं ।

२-जम्भसहिता स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित धम्म बोधिनी टीका, सवत् १९५५ ।

* विभिन्न मत्रो और २६ धमनियमो पर टीका ।

३-गद्दवाणी अर्थात् जम्भसागर सकलनकर्ता-स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, सगोधनकर्ता-प० जगन्नाथ तिवारी, सवत् १९५५ ।

* पत्र प्रमग सहित १५१ सबद । २ स्वीकृत सबद, सख्या १०२, १२१ नहीं हैं । इस प्रकार १२१ स्वीकृत सबद हैं, १५३० मे मे १-‘पवण स मोमण पाणी मारा’ (पृ० १२५, सबद ११५)-इसमे पृथक है जो स्वीकृत सबद १०३ का अर्द्धांश है । बाकी २६ अतिरिक्त सबदो का विवरण इस प्रकार है —

क्रम-संख्या	पृष्ठ-सख्या	सबद-सख्या	सबद
१	१२१	१०२	पडित जण जण वाद न होई । अणबोल्या अबधू नाइ
२	१२१	१०३	दूट पवण छोड काया । आसण दड कर वसो गया ।
३	१२१-२२	१०४	देवल यातरा गूय यातरा । तीथ यातरा पाणी ।
४	१२२	१०५	आऊ न जाऊ निरजण नाथ री दुहाई ।
५	१२२	१०६	चहु दिगि जोगी सदा मलग । खेल वर कामनी के सग ।
६	१२३	१०७	राज गए को राजा भूर । ईंध गए को रोगी ।
७-१२	१२३-२४	१०८-१३	श्री विष्णु विष्णु तू भगदे प्राणी । साधे भविन ऊपरणीं (यह बृहनवरा है, जिमके यहा ६ सबद माने गए हैं) ।
१३	१३०	१२२	आ अकल रूप मनसा उपराजी, ता मा पाच तत्व होय राजी (यह कल-पूजा मत्र है) ।
१४	१३१-३२	१२३	श्री नमो स्वामी गुम करतार । (यह पाहल मत्र है) ।

१५	१३३	१२४	धा दग्ध सोऽ धाप । धातर जो धजपा जाप । (यह तारक मंत्र है) ।
१६	१३४	१२५	धा दग्ध गृह मुरत धना, पांच तरय में रह धनेना । (यह गृह मंत्र है) ।
१७	१३५	१२६	धवधू दग्ध निरार गहिये । तहां दिवग न रगी बहिये ।
१८	१३५	१२७	धूल गाचोरे धवधू धूल सीचो । ज्या तरवर मेहूत दारु
१९	१३६	१२८	मारिया तो मन मस्त मारिया । मूर्त्तिया पवण भजारम् ।
२०	१३६	१२९	मङ्कि ७ बाधिवा गतो न प्रबोधिवा । भिशा न सायवा धूलम् ।
२१	१३७	१३०	कोटि मध्ये कोई एगटि जूभे । कोटि मध्ये कोई एकहि सूभे ।
२२	१३७-३८	१३१	तत ऐगातो तत ऐमातो किम कर बयू गभोरम् ।
२३	१४५	१४२	गृहवावा नाहा निगिया वा लग्य बाद मूर विवरत्रित परा ।
२४	१४७	१४४	तीम त्तिन मूलक पांच श्चतुवन्ती यारो । (धमनियमों सम्बन्धी ये ऊजोजी नए कृत २ ब्योड़े छप्पय हैं) ।
२५	१४८	१४५	हास्यवा खेतवा रहिया रग । काम श्रोथ न करिया सग ।
२६	१४८-४९	१४६	शण्डी सो जो काया दण्ड धावन जानी तुप्या सण्ड ।
२७	१४९	१४७	धवधू समय भहार कदरप नही ब्याप । वायु भहार सुधा न सताप ।
२८	१५०	१४८	धजप्पा जपो रे धवधू धजप्पा जपो । पूजो देव निरजन धानम् ।
२९	१५०	१४९	गगण हमारो बाजा बाज, मूल मय भल हाभी ।

४-विश्वोई धम विवेक स्वामी ब्रह्मानंदजी द्वारा सक्तित, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, प्रथम संस्करण-संवत् १९५५, द्वितीय संस्करण-संवत् १९७१ ।

* प्रस्तोत्तर धम से "विश्वोई धम" का स्वरूप वर्णन ।

५-श्रीजम्भदव चरित्र भानु स्वामी ब्रह्मानंदजी, प्रकाशक-लेखक, काट, संवत् १९५८, (ता० १-९-१९०१) ।

* जाम्भोजी का जीवन-चरित्र, भूमिका में आशिक रूप से सुरजनजी कृत कथा श्रीतारपात ("धवतार-चरित्र") भी छापा है ।

६-विश्वोई नियमावली स्वामीलाल आत्मज बद्रोप्रसाद वश्य विश्वोई कृत । प्रकाशक-बन्नी प्रसाद वश्य, मुहल्ला राजीतपुरवा, कानपुर, संवत् १९६७ ।

* जाम्भोजी का परिचय, २९ नियम, संस्कार-मूलक, पाहल, गुरुमंत्र, अत्येष्टि ।

७-जम्भाप्टक प्रकाशक गुरुवर्ता-स्वामी ब्रह्मानंदजी, प्रकाशक-श्री रामदासजी, जमशेदपुर धाम, संवत् १९६८ ।

* गोविन्ददासजी कृत जम्भाष्टक और सम्प्रदाय का स्वरूप आदि ।

८-जम्भदेव लघुचरित्र श्रीरामदासजी रचित, प्रकाशक-लेखक, जमसरोवर घाम, सवत् १९६९ ।

* पाताम्बरदामजी कृत जम्भाष्टोत्तर घतनाम, भारतिया, जाम्भोजी, सम्प्रदाय का परिचय, २९ धम-नियम ।

९-विष्णोई मत व्याख्या लाला मोहनलाल वदय, प्रकाशक-लेखक, कसबा अजीतमल, इटावा, सवत् १९६९ ।

* जाम्भोजी का परिचय और काय, तत्कालीन दसा, २६ नियम, उनकी व्याख्या ।

१०-भक्त सस्कार निणय स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्रीरामदामजी, विष्णोई मन्दिर, गणेशगज, कालपी, सवत् १९६६ (दूमरा मस्करण-स० १९७०) ।

* घव का भूमि म गाडने की पुष्टि ।

११-गदवाणी गुप्त जमिजी सप्राहक प्रकाशक-माधु गगादास, विष्णोई मन्दिर, फलावदा, जिला मेरठ, सवत् १९६६ ।

* कई पुस्तको से सग्रह किए गए सबद हैं, जिनकी कुल सख्या १२६ दी गई है किन्तु २ (स्वीकृत सख्या २७, २८) आशिक रूप से दो बार लिखे और गिने जाने के कारण, यह सख्या १२४ होनी चाहिए । इनमें से ६ स्वीकृत सबद (सख्या-७, ८, ९, १०, ६७ और ११५) नहीं होने से ११४ ही स्वीकृत सबद आ पाए हैं । शेष १० सबद अतिरिक्त हैं, जिनका विवरण यह है —

क्रम-सं०	पृष्ठ-सख्या	सबद-सख्या	सबद
१	१०३	६९	पडित जण जण वार न होई । अणवोल्या अवधू सोई ।
२	१०५	१००	चहु दिशि जोगी सदा मलग । खेल वर कामनी के सग ।
३	१०५	१०१	राज गए को राजा भूर । बध गए को रोमी ।
४ स ९	१०५	१०२	“गोत्राचारी शब्द”-आ विष्णु विष्णु तू भए रे प्राणी ।
	१०७	१०७	साधे भक्ति उधरणो । (यह वहनवण है, जिसके ६ सबद माने हैं) ।
१०	११७	१२४	तीस दिन सूतक पाच ऋतुवती यारो । (धम नियमो सम्बन्धी ये ऊदोजी नए कृत दो खोडे छप्पय हैं) ।

१२-“श्री महर्षि स्वामी बीरहाजी का जीवन चरित्र” तथा “श्री बीरहाजी का सक्षिप्त वृत्तांत” स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, विष्णोई मन्दिर गणेशगज, कालपी, सवत् १९७० ।

* बाहोजी का जीवन-चरित्र ।

१३-सासी सग्रह प्रकाश सग्रह-प्रकाश स्वामी प्रज्ञानदजी, सवत् १९७१ (११ घट्ट बर, सन् १९१४ ई०) ।

• अनेक विष्णोई कविया को ७८ विभिन्न माणियां । निगी तिगी नागी का मात्राय भी दिया है ।

१४-विद्या और अविद्या पर व्याख्यान स्वामी प्रज्ञानदजी, प्रकाश-श्रीरामनामजी, सवत् १९७२ ।

• तत्संबंधी विवचन व गम्भ म विष्णोई सम्प्रदाय की महत्ता और विद्या प्रचार पर बल ।

१५-गोत्राचार विधि सग्रह-स्वामी प्रज्ञानदजी, प्रकाश-श्रीरामनामजी, कानपी, सवत् १९७३ ।

• "बृहस्पतयण", गोत्राचार मन्त्र और उन पर टीका ।

१६-श्रीस्वामी बोलहाजी कृत याणी सग्रह-प्रकाश-श्रीरामदासजी, सवत् १९७५ ।

• वृत्तियों के १८, सुरजनजी के २ पुत्रकर छापय तथा ३ दोह ।

१७-ब्राह्मण वण व्यवस्था, सटीक सग्रह-स्वामी ईश्वरानंदजी सिरि, प्रकाश-श्रीरामदासजी, जागलू, सवत् १९७५ ।

• तद्विषयक अनेक धर्मशास्त्रों के रचना का सग्रह और प्रसंगानुसूल सबदवाणी का पत्रियों के उद्धरण ।

१८-शब्दवाणी जम्भसागर (गुटका) प्रकाश-श्रीरामदासजी, (द्वितीय बार), सवत् १९७६ ।

• १२० सप्रद । ३ स्वीकृत सबद, सख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं ।

१९-श्री विष्णु धम प्रकाश सग्रह-कामताप्रसाद गुप्त, सवत् १९७७, प्राप्तिस्थान-लाला गिबप्रसाद गुप्त, दुकान-गण्डीलाल नारायणदास, टरननगज, कालपी, यू० पी० ।

• वषयविषय इस प्रकार है —

१-भूमिका (विष्णु, लक्ष्मी और विष्णुधम शब्दा की व्याख्या) ।

२-विष्णुधम के २९ नियम (अनेक उद्धरणों सहित व्याख्या और मडन) ।

३-महामा जम्भेश्वर स्वामी और विष्णुधम ।

४-एकता तथा एका ("अविद्या की भूल-भुलझयो म विद्या के दीपक व परस्पर के मेल व प्रीति की आवश्यकता") ।

५-स्त्रीगिशा (उसकी आवश्यकता के कारण और पूणता के उपाय) ।

६-स्त्रीधम (श्रीमती कृमला देवी कृत) ।

७-यज्ञोपवीत का प्रभाव ।

८-पंच महायज्ञ विधि ।

९-सत्येष्टि सस्वार ।

१०-वट्टणविया के कृतय कम ।

११-अय उपयोगी विषय (ये सभी पद्यबद्ध हैं) —

(अ) योग, कवि अनयदास लिखित गृहस्थों और राजाओं के लिए ।

(ब) धम का सार (तत्व)-कवि नरस कृत ।

(म) उपदेशसार—कवि रामदयाल लिखित ।

(ट) ईश्वर प्रायना के भजन, गजल आदि ।

(ड) शान्तिपाठ ।

२०—ऊदाजी का कविता (जन्मसार) संप्राहक—प्रकाशक श्री रामदामजी, सवत १९७८ ।

• ऊदाजी नए के ५६ छप्पय, बील्होजी के ४ छप्पय और वाणी, सुरानजी के ६ छप्पय और १ हरजस ।

२१—श्रीजन्मसार (प्रथम और द्वितीय खण्ड) साहबराजजी द्वारा सक्तित और रचित ।

प्रकाशक—श्रीरामदासजी, सवत् १९७८ ।

• प्रथम खण्ड म ६ प्रकरण (१ से ९) । द्वितीय खण्ड म ९ प्रकरण—(१२, १४, १७ से २३) । मूल ग्रन्थ के २४ प्रकरणों म से ये १८ प्रकरण आंगिक रूप म ही प्रकाशित किए गए हैं ।

२२—श्री स्वामी बील्हाजी का जीवन चरित्र (जन्मसार—त्रयोविंगति प्रकरण) साहबराजजी ।

प्रकाशक—श्रीरामदामजी, सवत् १९७८ ।

• जन्मसार का २३ वा प्रकरण आंगिक रूप से पृथक प्रकाशित ।

२३—सार शब्द गुजार (सारबत्तोसी, अमरबालीसी और महामाया की स्तुति समेत)

शाहाबराजजी कृत, प्रकाशक—गणेशराम लक्ष्मीनारायण, दुताराबाजी, सवत १९७८ ।

• संपिप्त किन्तु महत्वपूर्ण भूमिका सहित इन रचनाओं का प्रकाशन ।

२४—जन्मसागर (प्रथम खण्ड) गद्दवाणी स्वामी ईश्वरानंदजी कृत भाषा टीका सहित

प्रकाशक—स्वामी विद्यानंदजी, ला० बन्हेयालाल मकूलाल विश्नीई रईम, कानपुर की सहायता से (प्रकाशन-काल नहीं है) ।

• २० सवत्, प्रसंग और टीका सहित ।

२५—श्री स्वामी बील्हाजी कृत कवका सतोसी संप्राहक—प्रकाशक—श्रीरामदासजी, प्रथम

संस्करण—सवत् १९७६, द्वितीय संस्करण—सवत २००३ ।

• इन रचना के ३७ छन्द कतिपय सूचनाओं सहित ।

२६—श्री बील्हाजी कृत जन्मदेव जीवन-चरित्र (श्री जन्मसार द्वाय प्रकरण) प्रकाशक—

श्रीरामदासजी, सवत १९७६ ।

• वा होजा कृत “कथा श्रीतारपात” और “कथा दूणपुर की” तथा सुरजनजी कृत “कथा श्रीतार की” (आंगिक रूप म) ।

२७—जन्मसार (साहबराजजी कृत) प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक का सूचीपत्र सम्पादक—

प्रकाशक सम्भवत श्रीरामदासजी, अनुमानत सवत १९७८-७९ म ।

• प्रति संख्या-१९३ (च) का सूचीपत्र । (सूची पूरा नहीं है) ।

२८—अविल भारतवर्षीय विष्णोई महासभा, कानपुर के वृत्तीय अधिवेशन के सभापति स्वामी

ब्रह्मानंदजी का भाषण प्रकाशक—स्वामी ब्रह्मानंदजी, सवत १९८१ ।

• विस्तार—स्वरूप, एकता, २९ नियम—पालन, सम्प्रदाय का प्रभाव, संस्कार-माहल, मुक्ति-कर्म-वाल्मीकी का उदाहरण और काय-जाम्बोलाव-नेला, विष्णोईया मे श्रद्धा-मक्ति,

४५-श्री जम्भसार-साखी सग्रह (तृतीय संस्करण) सम्पादक-प्रकाशक श्रीरामगनश, सवत २००० ।

- अन्तर् कवियों की ८२ विभिन्न साहित्या, वील्होजी कृत कथा घण्टाघ और १२ हरजन तथा १ हरजम सुरजनजी का । (वर्तमान में यही सग्रह सर्वाधिक प्रसिद्ध है) ।

४६-जम्भदेव आरती सग्रह चक्र-संग्रह मास्टर जगन्नाथ शेर 'सर्व', नामगान, प्रकाशक-श्री श्रीरामजी पवार, कडोला, द्वितीय संस्करण, सवत २००३ ।

- विभिन्न कवि कृत १६ आरतिया ।

४७-श्री जाम्भोजी महाराज का जीवन चरित्र, महात्मा सुरजनदासजी रचित सम्पादक-प्रकाशक-धारामदासजी, सवत २००७ (श्री महीरामजी धारणिया क सहायता में) ।

- सुरजनजी कृत 'कथा श्रीराम का' (आंगित रूप में), २६ नियम, जाम्भोजी के कुछ जीवन प्रसंग मजदूरी की कथा, हुतुरा नामावली आदि ।

४८-श्री विष्णु चरित्र, ऊदोजी अड्डाण कृत सग्रहकर्ता मास्टर जगन्नाथ शेर, नामगान, प्रकाशक-श्रीरामजी पवार कडोला, सवत २००७ ।

- विषय नाम में स्पष्ट है ।

४९-विष्णोई त्रितयकम पद्धति सग्रहक-प्रकाशक स्वामी जगन्नाथजी, माधुवाना, श्रीगणेशगर, सवत २००९ ।

- विभिन्न मंत्र, २६ नियम, १३ मंत्र ।

५०-जम्भसार (गद्य निबन्ध टीका समेत) स्वामी रामानंजी गिरि विरचित । प्रकाशक विष्णोई मन्ना, हिमाल, सवत २०११ ।

- जाम्भोजी का परिचय । विभिन्न मंत्र २६ धर्मनियम, १२० मंत्र और इन मंत्र पर टीका । ३ स्वाहन सब संख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं ।

५१-श्री जम्भदेव आरती व सांगी (हरजत ज्ञोत नियम) सम्पादक-प्रकाशक श्री श्रीरामजी हृषी गैरगण सांगी नूगनामारा, दारगाना-भवन जाटावाग, (जाधपुर) सवत २०१२ ।

- यह मंत्र संख्या ४० का संकलन है ।

५२-विष्णु पद्धति विष्णोई समाज मध्याह्न-राज्यगण संवत्साल प्रकाशक-श्री मनाराम, माधुपुर (श्री-विष्णारा) । (प्रकाशन संकलन नहीं किया है) ।

- नाम में स्पष्ट है ।

५३-विष्णु पद्धति विष्णोई समाज संस्था ५० हाराम नामी, प्रकाशक-श्री रामगान, माधुपुर, हिमाल । (प्रकाशन संकलन नहीं किया है) ।

- नाम में स्पष्ट है ।

५४-श्री विष्णोई जागरण महात्म्य-व्याख्या संग्रह-संग्रह मुग्धेश कृत प्रकाशक-दत्तु नारायण सांगी विष्णु, धाना बाणुकार, धाम हार्तागदी जोधपुर । (प्रकाशन संकलन नहीं किया है) ।

- संकलन कविता मंत्र और पुस्तक संकलन ।

(२) अय लेखकों द्वारा किया गया काय

- १-टाड कृत "राजस्थान", भाग २ (सन् १८३२ म प्रथम बार प्रकाशित ।
- * मिच के "ब्राह्मण विष्णवो" के मुद्दे गाडने आदि का ।
- २-गजेटियर आफ दि बीकानेर स्टेट क्स्टिन पी० डब्ल्यू पाउलेट, मन १८७४ ।
- * जाटा के अतगत "विश्वविद्या", उनको प्रकृति, नियम-पालन और जाम्भोजी का ।
- ३-रिपोर्ट आफ दि पोलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि राजपूताना स्टेट्स, सन १८७५-७६
- * जाम्भोजी का जीवन चरित, राव दूदा का मिलना, सम्प्रदाय-प्रवृत्तन, २६ धम-नियम, मुगलमानों के विरोध पर उनमे बढोत्तरी, पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज का ।
- ४-गजेटियरस आफ भारवाड, मालानी एंड जसलमेर मजर सी० के० एम० वाल्टर, सन १८७७
- * धम और वृषका के मदभ म "जाम्वा के अनुयायी विष्णविया" का ।
- ५-स्टेडिस्टिकल, डिस्ट्रिक्टिव एंड हिस्टोरिकल एकाउंट आफ दि नाय-घस्टन प्रोविन्सेस आफ इडिया वाल्यूम फिफथ, रूहेलखण्ड डिबीजन, पाट फस्ट, गजेटियर आफ दि नाय वेस्टन प्रोविन्सेस, बिजनौर डिस्ट्रिक्ट एडविन टी० एटकिंसन, सन १८७६ ।
- * धम के अतगत । विश्वोई भामाजी या शेख मसदुम जहान जहागत के अनुयायी ह । उहने अपनी मर्यु के पश्चात किसी को इस धम का अनुयायी बनाने का वजन विया था । फनस्वरूप अब यह कुलगत ही रह गया है । इसम हिंदू और मुस्लिम रीति-रिवाजो का विचित्र मिश्रण है । अभिवादन म सलाम अत्के, मुद्दे को गाडने और गुलाम मुहम्मद और इस प्रकार क अय नाम रखने मे विश्वोई हाल तक मुगलमाना की नकल करत थ । अब वे हिंदू रीति-रिवाज अपनाते लगे हैं किन्तु आदर सूचक सम्बोधन मे "नेखजा" कहे जाते हैं । कहा जाता है कि एक काजी की हत्या करने के कारण दण-स्वल्प उहने (जाम्भोजी न) इसलाम अगीकार विया था ।
- ६-राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम फस्ट सी० के० एम० वाल्टर, सन् १८७९ ई० ।
- (क) बीकानेर, पृष्ठ १६३ ।
- * "विश्वविद्या" के स्वभाव और रीति-रिवाज का ।
- (ख) जसलमेर, पृष्ठ १७६ ।
- * "विश्वविद्या" के निवास का ।
- ७-पंजाब सेन्सस रिपोर्ट आफ १८८१
- * विष्णोदया के नियम-पालन, मुद्दे गाडना, पहनावा, विवाह आदि का ।
- ८-हिंदू ट्राइब्स एंड कस्टम रेव० एम० ए० शेरिंग, वाल्यूम-थड, मन १८८१, पृष्ठ ७१ ।
- * बीकानेर के जाटा के अतगत "विष्णु" और उनके नियम-पालन की दृढता का ।
- ९-जनरल कोड आफ ट्राइबल कस्टम इन दि सिरसा डिस्ट्रिक्ट आफ दि पंजाब जे विमन, सेन्सस-आफिसर, गिमला, २१ अक्टूबर, सन १८८२ (इट्रोडक्शन-नागडी जाट, जन

रल कोड आफ ट्राइबल कस्टम, सक्कन-१ तथा "पार्टिशन", सक्कन ११ के अंतगत)।

* विष्णोई-पृथक् जाति, धर्म-पालन में दृढ़, जीव-दया विशेष रूप से पालने वाले किन्तु भयङ्करो। रीति-रिवाजों का उल्लेख।

१०-पंजाब कास्टस बोर्डिंग ए रीप्रिंट आफ दि चप्टर आन दि रीसेस, कास्टस एंड ट्राइबल आफ दि पीपल "इन दि रिपोर्ट आन दि ससस आफ दि पंजाब पब्लिशड इन १८८३ वाई दि लेट सर डेविडन इवेटसन, लाहौर, सन् १९१६।

* (जाति सख्या-१०६)-विष्णोइया की विभिन्न जातियाँ-सही रूप में यह जाति नहीं, सम्प्रदाय है-, ववाहिक सबंध आदि का।

११-बीरबिनोद कविराजा श्यामलदास, सन् १८८६ (संवत् १९४३) भाग १, पृष्ठ १३७, भाग २, पृष्ठ ४८०।

* "पटदगन" के अंतगत विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिरों के लिये धर्मों की जमीन के मन्तव्य में "भामादेव" का।

* "वरीशांत नवकारे" का।

१२-तवारोख राज श्री बीकानेर मुन्शी साहनलाल, सन् १८६० ई० (संवत् १९४७)।

* विष्णोई जाम्भोजी का फिरका, जाम्भोजी, रीति-रिवाज, लाश दफनाना, सती होना, नियम-पालन आदि।

१३-तवारोख जसलमेर (तीनों भाग) महता नथमलजी की सहायता से लेखक लखन-चन्द रईम, जसलमेर द्वारा सन् १८६२ में प्रकाशित, पृष्ठ १७३, १७५, १७६, २२२।

* इस राज्य में विष्णोइया द्वारा अनेक स्थानों पर कुएँ बनवाये और गाँव बसाये जाने का उल्लेख, परगने-नाचणो, नोख और मोठडियो, नगराजसर आदि में। विष्णोइया के ऊँटों की मजदूरी और सुन्दरता के सम्बन्ध में।

१४-इतिहास राजस्थान चारण रामनाथ रत्न, सन् १८६२ ई०, पृष्ठ ११।

* बीकानेर राज्य के जाटा के अंतगत-विष्णोइया के धर्मनियम पालन की दृढ़ता और जाम्भोजी का।

१५-बिलसन की सिरसा सटर्लैट रिपोर्ट परायाफ-१०७। सन् १८६३ में इसका उल्लेख किया गया है किन्तु यह लगभग का प्राप्त नहीं हो सकी। दस-आगे मन्तव्य सख्या १६।

१६-गनेटियर आफ दि हिस्टार डिस्ट्रिक्ट पी० जे० पागन, सन् १८६३ ई०, चप्टर ३ बी, * गो और ३ डी (पृष्ठ ७४-७५, १०२-१०३, १०६, १०८, १३१-१३२)।

* "विष्णोई धर्म- 'नरगि' पुराण के अनुसार जाम्भोजी विष्णु के धवनार, धवनार-कथा धार प्रयोजन, जाम्भोजी का परम्परागत पन्थिय, प्रह्लाद और होतिका, होना मनाना, गाधु-गायणा, -हवन-नाथ-यात्रा, सामाजिक-जीवन, ववाहिक रीति-रिवाज, नूँ गाहना, कनियम मानाथ और शिगिण् वातें, विभिन्न जातियाँ उनका गोत्र और शिवाट-मन्थय, धर्म-नियम-पालन आदि।

१७-भी बीकानेर के राज भी बीकानेरी और नराजी का जीवन धरित्र सचित्र मुंगा दवी-प्राण कावम्भ, सन् १८६३ ई०।

- पूजनीक चीजो मे जाम्मोजी प्रदत्त बरीसाल नगाडा भी, इनके लिए बीका की जोघपुर-चढाई ।
- १८-दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरवार, जोघपुर, सन् १८६४, पृष्ठ ४१-४२। "प्रिनोई" के अतगत ।
- विष्णोइयो की सख्या-४००२३ । जाम्मोजी और सम्प्रदाय का । रीति-रिवाजो म हिंदू और मुस्लिम धम का मिश्रण । सन् १८८१ की पजाब सन्सस रिपोर्ट का उद्धरण ।
- १९-रिपोट आन दि सेसस् आफ १९८१, चाल्यूम यर्ड, दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरवार, जोघपुर, सन् १८६४ ई० ।
- जाम्मोजी का जीवन, उनकी भायता-विचार, सम्प्रदाय-प्रवृत्तन, धम-नियम, सामा-जिक रीति-रिवाज आदि । (विशेष द्रष्टव्य-सदभ सख्या-२०)
- २०-रिपोट मरदुमगुमारी राज मारवाड, बाबत सन् १८९१ ई० तीसरा हिस्सा, पहला विभाग, सन १८६५, पृ० ९३-९६ ।
- "प्रिनोई" । जाम्मोजी-राव दूदा का मिलना-अकाल, सम्प्रदाय- प्रवृत्तन, २९ धम-नियम, नागौर के शासक मुहम्मदखा के विरोध पर मुसलमानी मजहब की पाच बातें धार जोडना, जाम्मोलाव, स्वगवास मुकाम-बहा फागुन का मेला और पचायत द्वारा भगजे का निपटारा, साडिया छोडना, रोट्ट मे जाम्मोजी की तलवार और पाव के निशान का पत्थर, विष्णोई गावा और मुकाम-मंदिर म पूजा -पद्धति, नियम-पालन, नाता-विवाह, मुर्दे गाटना, छुआछूत-विचार, थापण, गायगा, भगडो के निपटारे की रीति, पागाक, कतिपय सामाय और विशिष्ट वातो आदि का ।
- २१-दि टाइम्स एंड कास्टस आफ दि नाय वस्टन प्रोविंसेस् एंड अवघ डवल्यू-कुक्, सन् १८६६ ।
- विष्णोइयो का उल्लेख ।
- २२-रिवाइज्ड इन्स्पेक्शनस फार स्पोटस्मेन अदर दन सोल्जरस इस्पूड अंडर पजाब गवर्न-मेंट आडरस कंटेड इन देयर सकूलर न० १-११५, डेटेड थड फब्रुअरी, १८९६ ए० एम० स्टा, डिपुटी कमिश्नर, हिसार डिस्ट्रिक्ट द्वारा ।
- हिसार के विष्णोई-गावा म गिकार न करने सबधी राजाता । हिसार जिले के ६, तह-सा न हिसार के १२, तहसील फतीहाबाद के २६ और तहसील मिरमा के १३ गावा के निण (गावा क नामालेख सहित) ।
- २३ आइर-ता ८ माच, १८९९ ई० सी० एम० किंग, डिपुटी कमिश्नर, फीरोजपुर द्वारा ।
- फाराजपुर के १६ विष्णोई-गावों मे गिकार न करने सबधी राजाता (गावो के नामो-लेख सहित) ।
- २४-दबिस्थाने मज्राहिब मुल्ला मोहसिन फानी, नवलकिंगोर प्रेम, कानपुर, जनवरी १६०४ ई० (अपक फाना वादगाह शाहजहा का समकालीन बताया जाता है) ।
- विनाई मन को मानने वाले हिंदू-मुसलमान दोना, पूव की धार मुह करके नमाज पढ़ना, नियम-पालन, स्रुग और मिकाइल, इजराइल, जिवराइल, मुहम्मदाइल आदि

परिस्ता का नाम जपना, मुँहें गाडना-आदि ।

२५-सत-सदेग^१ जिल्द ६, न० १ थी शिवव्रतलाल लाहोर, पृ० ६५ ।

- मूनीन्द्र जम्भनाथ देवजी द्वारा ईश्वर भजन-प्रचार, लाला का उद्धार विष्णोई मत आचार्य-शर-अभ्यासी और सुरत गव्द यागी ।

२६-(क) आर्य-समाज में शांति का उपाय-रामचन्द्रजी का सच्चा दर्शन^२ प० लखनऊ मद्रम प्रचारक प्रेस, जालंधर ।

- जाम्भोजी का मतवियों से शास्त्राथ करके उनको और सबको आदिमियों को ही इसलाम से नफरत लाकर बंदिक धमानुयायी बनाने का ।

(ख) कुलियात आय मुसाफिर प० लखराम, सन् १९०४ (उद्गू सस्वरग) । हिं सम्बरस पहला भाग, सन् १९६३, पृष्ठ ११०-१११ ।

- "पुराण किसन बनाये" ? के अतगत अन्य मतवादी (सिक्ख गुरुआ के अनिखित अद्योजा (ऊनोजी नग में तात्पय प्रतीत होता है) द्वारा तम्बाबू नियथ का "पतिनोदर के अतगत" बण्णवी (विष्णोई) वनिया (वन्मो) के साहम का ।

२७-पजाब डिस्ट्रिक्ट गेनेटियरस, बाल्यूम-सेकेड, हिसार डिस्ट्रिक्ट (पाट-ए) प० जे फागत, रिवाण्ड एंड घाट अपटूडेड वार्ड-मी० एम० किम, सन् १९०७, पृष्ठ ६२, ७०, १०२, ११०, और १४१ ।

- विष्णोइया म विवाह-मस्कार, जनसख्या-विभिन्न जातिया, रीति-रिवाज, विगत धम, जाम्भोजी का जीवन-परिचय, २६ धमनियम-उनका पालन विष्णु नाम जपण पढ़ावा, गान और पाहन-मस्कार, हवन, साधु, मुँहें गाडना, होली मनान म भिन्न तनमरघा कथा तीथ-मुकाम, सभराथ, जाम्भोजी, अपराथ उनका निगय भाति

२८-पजाब गेनेटियरस, सन १९०८ ई० ।

- सम्प्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ, विष्णु के धवनार जाम्भोजी की धवतरण-कथा, पूजा पढ़नि, गामाजिक राति-रिवाज आदि ।

२९-वि इम्पारियल गेनेटियर आफ इंडिया, यू एडिशन, सन् १९०८ ।

(क) बाल्यूम-१७ मुरानागान, पृष्ठ ४२४ ।

- विष्णोई मूलत धार्मिक सम्प्रदाय, जन सख्या-१६००, पू० पी० म अथय नहीं ।

(ख) बाल्यूम-१४, जोपपुर पृष्ठ १८६ ।

- विष्णोई-विष्णु सम्प्रदाय, जन सख्या ३००००, मान-पान, रीति-रिवाज धार्मिक

(ग) बाल्यूम-२१, हनगान, पृष्ठ ३०८ ।

१-विष्णु धम प्रकाश सम्प्रदाय-या कामनाप्रमाण कृत, बालवी, सन १९०० प्राति स्थान-माना विष्णुधम कृत, दुकान-गणानान नारायणगाम, बालवा पृ० ७०-७१-७२-७३-७४ ।

२-कथा, पृष्ठ ७१ ।

* यहा विश्वोद्यो के निवासी हाने का ।

३०-प्रोविन्सियल गजेटियरस आफ इन्डिया, राजपूताना वेस्टन राजपूताना स्टेटम् रसिडसी मेजर व० डी० इस्किन, सन् १९०६, जोधपुर, पृष्ठ १८०-१८१ ।

* विष्णाइया के रीति-रिवाज, नियम-पालन आदि का ।

३१-राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम थर्ड ए, दि वेस्टन राजपूताना स्टेटस रसिडेन्सी एंड दि बीकानेर एजेन्सी मेजर व० डी० इस्किन, सन १९०९ ।

(क) जसलमेर स्टेट, पृष्ठ २२ ।

* विष्णाइया द्वारा मुर्दे गाडने का ।

(ख) जोधपुर स्टेट, पृष्ठ ८३, ६०-६१, ६६, १००, १०१, १६७ ।

* वासनर, जोधपुर, जसलमेर और उदयपुर मे विश्वोड्या का निवाम, जाम्भोजी, २६ धमनियम, नागौर के मुसलमाना के प्रतिरोध पर इनम पाच इसलामी बात और जोडना, मुर्दे गाडना, रीति-रिवाज-पहनावा, राव दूदा को लकडी की तलवार देना । मडौर-तनाम करोड देवनाग्रा का स्थान म एक प्रतिमा जाम्भोजी की ।

(ग) बीकानेर स्टेट, पृष्ठ ३३७, ३३९

* विष्णाइया द्वारा मुर्दे गाडने का, जन सख्या-८५६८ ।

३२-ए गजेटियर आफ दि जसलमेर स्टेट एन्ड सम स्टेटिसटिकल टेबलस मेजर व० डी० इस्किन, सन १९०९, इन्डेक्स-पृष्ठ ४५ ।

* इस "विलक्षण" सम्प्रदाय का उरलेख ।

३३-बीकानेर राज्य का इतिहास कु वर कहीया जू देर, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, मन् १९१२ (सवत १९६६) पृष्ठ २७, पाद-टिप्पणी ।

* जोधपुर से बीकानेर लाए गए राजबिहूरी मे जाम्भोजी-प्रदत्त बरीसाल नगरे का उल्लेख ।

३४-अगरवाल अगरोहा की जागती जोत श्री ब्रह्मानदजी के शिष्य निभयानदजी रचित, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, सन १९१२, पृष्ठ ८७-पाद-टिप्पणी ।

* झारोहे के चारो ओर बहुत से ग्रामा मे विद्वानोई कौम के हजारो घर, जाम्भोजी, उनकी गीभन्ति ।

३५-कास्टमरी ला आफ दि हिंसार डिस्ट्रिक्ट (एकसट दि सिरसा तहसील) वाल्यूम-२५, एच०-वी० ए० एच० टाउनसेन्ड, पंजाब गवर्नमेन्ट प्रेस, लाहोर, सन १९१३ ।

* इस क्रिम म भय लोगा और जातिया के साथ विष्णोइया के भी माय-रीति-रिवाजो, प्रयागा और परम्पराग्रा का प्रश्नोत्तर रूप म स्पष्टीकरण और निरूपण ।

३६-दि टाइम्स एंड कास्टस आफ दि सेटल प्रोविन्सेस आफ इन्डिया (वाल्यूम सक्सेड) प्रार० वी० रमल और रायबहादुर हीरालाल, मकमिलन एंड व० लि०, लंदन, सन १९१६ ।

* विष्णोई निम्नलिखित गीपको के अतगत अनेथावृत विस्तृत परिचय -सम्प्रदाय का

उद्भव, जाम्भोजी का जीवन, २-जाम्भोजी के उपदेश, गजनाथी, २९ वननियम, ३-पजाव के विद्वानों के रीति-रिवाज, ४-दीक्षा-संस्कार, ५-सम्प्रदाय का स्वल्प, ६-मध्यप्रदेश के विद्वानों, उनका परिचय, ७-विवाह, ८-मृतक-संस्कार, ९-सम्प्रदाय का सामान्यतः जाति में विवक्षित होना, कतिपय ग्राम सामाजिक नातन्त्र्य ।

३७-ए प्रोफेस रिपोर्ट आन दि यक इन ड्यूरिंग दि ईयर १९१६ इन कनकान वि दि वाडिक एंड हिस्टोरिकल सर्वे आफ राजपूताना डा० एल० पी० टपीटरी, जनन एंड प्रोसिडिंग्स, एजियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (यू तिराज), वायूम-१३, १९१७ न० ४, १० नवम्बर, १९१७, पृष्ठ २०७ ।

• जाम्भोजी का मन्दिर, चोल और जाम्भोजी का ।

३८-एन इन्साइक्लोपेडिया आफ रिलिजस मोरिस ए० कने, ई० पी० डटन एंड कम्पना, न्यूयार्क, सन १९२१ ।

• जाम्भोजी, सम्प्रदाय पजाव में स्थापित, स्वल्प और कतिपय धर्म-नियम ।

३९-मडोर (अ प्रोजी) जाधपुर गवर्नमेन्ट, जोधपुर ।

• 'तेतास कराड देवता का स्थान' की १६ प्रतिमाओं में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का राव दूदा की लकड़ी की तलवार देना ।

४०-मडोवर का इतिहास जगदीशसिंह गहलोत, सन् १९२१ ई० (संवत् १९७८), पृष्ठ १६-२१ ।

• 'वीरभवन' की मूर्तियाँ में एक जाम्भोजी की जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय प्रवृत्त, नागौर के हाकिम मुहम्मदखाना के विरोध पर मुसलमानी मजहब की बातें भी शामिल करना, जाम्भोजी, मुकाम-फागुन का मेला, भगडे निवारणाय पचायतें, नियम-पालन, रहन-सहन, पहनावा ।

४१-भारत का धार्मिक इतिहास वेयर निवासी प० शिवशंकर मिश्र कृत आर डा वात्तो एट व०, न० ४, चोर बगान लेन कलकत्ता, सन् १९२३ (संवत् १९८०), पृष्ठ ३३१

• विष्णुस्य जाम्भोजी द्वारा दिल्ली में स्थापित, गव-गाडना, विवाह में कुरान और हिंदू शास्त्रों के वाक्यों का उच्चारण ।

४२-मारवाड राज्य का इतिहास (द्वितीयावृत्ति) जगदीशसिंह गहलोत, हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, सन् १९२५, पृष्ठ ६२ ।

• मडार के 'वीरभवन' की मूर्तियाँ में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय, 'विद्वानों के नियम-पालन आदि का ।

४३-तवारीख-टावरी मुहता महजना के खानदान की मुहता उमेदसिंह वल्द अजार्तसिंह, विमा मूहणलाल जगनाथ, जसलमेर, सन १९२५ (संवत् १९८२), पृष्ठ ६३-६४ ।

• नाचणों से कमरामिध द्वारा बिक्रपुर में मुहता विसनमिधजी को लिखित पत्र-"विद्वानों के लिए पाँच रुपये लेन और उनसे तकरार के लिये उलाहना ।

४४-अमर काव्य कवि अमरगान अचतुप्रताप 'यायी' एंड व०, जोधपुर, तृतीया मस्करण,

सन १९३०, पृष्ठ ७२, ३३३-पाद-टिप्पणियाँ ।

- * जाम्नाजी, "बिसनाई", नियम-पालन, पाहल से शुद्धि का, कविता म भी नामोल्लेख ।
- ४५-सेसस आफ इंडिया, १९३१, वाल्यूम फस्ट, पार्ट फस्ट जे एच हट्टन, पृ० ४०२ ४१० ।
- * टाड के आधार पर मिथ के ब्राह्मण "विश्वोइयो" तथा हिसार के विश्वोइयो द्वारा मुद्दे गाढन का ।
- ४६-सन्सस आफ इंडिया, १९३१, वाल्यूम २७ ले०-कनल वी० एल० कोले, पृष्ठ १२४, १२६ ।
- * पश्चिम म "विश्वोई" (जनसख्या-६६८७३) पहले सम्प्रदाय था, अब एक पृथक जाति, प्रधानत जाट, बीकानेर, जैसलमेर, मारवाड म ।
- ४७-सन्सस रिपोर्ट आफ बीकानेर स्टेट, सन् १९३१ ।
- * रणधीरजी को बने का जहर देकर मारना और दिल्ली भागना, मुसलमान बनना, काजी की लडकी से विवाह, मुकाम-मंदिर और ग्रंथो पर कजा करना, "विश्वोइयो" द्वारा कतिपय मुसलमानी बातें मानने के बदले कब्जा छोडना, पाहल से स्वय की शुद्धि प्राप्ति ।
- ४८-नयमलक्षप्रकाश गोपालसिंह मेडतिया, सन् १९३२ पृष्ठ ७१, पाद-टिप्पणी ।
- * मजर के० डी० इस्किन के आधार पर "बप्पाव" सम्प्रदाय के स्थापक जाम्नाजी, उनका राव दूदा का लकडो की तलवार देना ।
- ४९-दि हाउस आफ बीकानेर गवर्नमेन्ट प्रेस, बीकानेर, सन १९३३, पृष्ठ ११० ।
- * राजबिहों मे जाम्नाजी प्रदत्त बरीसाल नगारे (सख्या १२) का ।
- ५०-विजयम एन्ड बेस्ट इन दि पंजाब विलेज लेखक-माल्कम ल्याल डालिंग, सी० आई० ई०, इन्डियन सिविल आफिसर, हम्फ्रे मिलफोड यूनिवर्सिटी प्रेस, सन् १९३४, चप्टर ६, पृष्ठ १५०-१५२ ।
- * सदलपुर गाव के विष्णोइयो के मदभे मे जीवरक्षा, मुसलमानो को गाय न बेचना, २९ नियम, उनके पालन की दृढता, जाम्नाजी, मुकाम के दो मेले, सफाई का विशेष ध्यान, पचापत का आदर, उद्योगी और परिश्रमी बित्तु भगडालू ।
- ५१-बीकानेर की ऐतिहासिक गाथाएँ प० अर्थाग्याप्रसाद तिवारी, प० सत्यनारायण द्विवेदी, एग्ज्यूकेनल बुक डिपो, बीकानेर, सन १९३४, पृष्ठ ४-५ ।
- * जाम्नाजा का जीवन, २६ नियम, नियम-पालन, मुकाम म फागुन मेला ।
- ५२-योगेश, कल्याण - वय-१०, सख्या-३, गीताप्रेस, गोरखपुर, अगस्त, १९३५, पृ० ८१७ ।
- * जाम्नाजा का परिचय, वगनोई (बप्पाव) सम्प्रदाय-प्रवक्त न, तालवा म समाधि, मले ।
- ५३-राजपूतान का इतिहास (प्रथम भाग) जगदोगीमह गहनोत, सन् १९३७, पृष्ठ ७२, ६०, ६३३ ।

- निवासियो म 'विसनोई' जाति का, जगलमर म विसनोइया की सख्या ३६४६ ।
- ५४-हरमो धरित्र विजोरगिह धाट्स्परय, राजस्थान रिमध सोसाइटी, कलकत्ता, सन् १९३८, पृष्ठ १८४, २४४-२४९ ।
- जाम्भोजी का परिचय, राय दूदा का मिलना, २९ धम-नियम, नापीर के मूवेदार के विरोध पर ५ बात मुसलमाना की स्वीकार करना, मुकाम-मेला, राव जोधा को बरी साल नगारा देना ।
- ५५-जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गोरोगवर हीराचंद भोभा, सन् १९३८, पृष्ठ २५-२६, २६५ ।
- मडोर के 'तेतीस बरोड देवता' के देवालय की १६ मूर्तिया म एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय । पूजनीक चीजा म दरोगार नगाड़े का नामोल्लेख ।
- ५६-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौरीशंकर हीराचंद भोभा, सन् १९३६, पृष्ठ १६, २६, ५६ ।
- धम के अतगत । 'विसनोई' मत के प्रवक्तक 'जाम्मा नामक सिद्ध' का परिचय, मुख्य धम-नियम, हिंदू मुसलमाना म एकता के लिये मुसलमाना धम की कुछ बात जारी की । मुकाम-मेला, भगडे निपटाना, पुनर्विवाह । जगतू म जाम्भोजी के मन्दिर और चोल का ।
- ५७-बीकानेर के बीर नरोत्तमदाम स्वामी, नवयुग अथ कुत्तर, बीकानेर ।
- जाम्भोजी का परिचय, विसनोद पद्य, नियम-पालन, मुकाम-मेला ।
- ५८-एससमेट रिपोट आफ दि फस्ट रगूलर सटलमे ट आफ गग केनाल कोलोनो रायसाइब्र विहागीलाल, सन् १९४६, पृष्ठ ३१ ।
- विष्णु के श्रवतार जाम्भोजी, उनके अनुयायी विसनोइया की प्रवृत्ति, जीविका आदि ।
- ५९-पजाब प्रांत सम्पादक-रामनारायण मिश्र प्रकाशक-भूगोत्र कार्यालय, प्रयाग, सन १९४६, पृष्ठ ४६ ।
- जनसख्या के अतगत विसनोई सम्प्रदाय की उत्पत्ति, जाम्भोजी का परिचय, धम-नियम, पाहस-दीक्षा-सस्कार ।
- ६०-दयालदास की रथात, भाग २ सम्पादक-डा० दशरथ शर्मा, अन्नप सस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, सन् १९४८ (संवत् २००५) पृष्ठ २१ ।
- पूजनीक चीजो मे जाम्भोजी-प्रदत्त बैरासाल नगारे (सख्या ११) का ।
- ६१-साध सग्रहअथवा नूतन भक्तमाल (राधा स्वामी) सतदास माहेदवरी, प्रकाशक-लेखक, स्वामीबाग, आगरा, सन १९५०, पृष्ठ २२४-२२५ ।
- 'गू गा पीर-भामाजी' का परिचय ।
- ६२-उत्तरी भारत की सत परम्परा थी परदुराम चतुर्वेदी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग ।
- (क) प्रथम सस्करण, सन् १९५१ ई०, पृष्ठ २५७, ३७०-३७२ ।

- सत जन्मनाय या जाम्भोजी का संक्षिप्त परिचय, रेचनाएँ, सिद्धांत व साधना, 'सतमाल' से रचना के उदाहरण ।
- (ख) द्वितीय संस्करण, सन् १९६४, पृष्ठ ३३२-३३७ ।
- पूव मत म किंचित परिवर्तन, विद्वानों सम्प्रदाय-संक्षिप्त परिचय, जाम्भोजी का जीवन, रचना और विचार-धारा, मन्माधि तथा सम्प्रदाय ।
- ६३-सत शाय श्री परशुराम चतुर्वेदी, कृताव महल, इलाहाबाद, सन १९५२ ई० ।
- 'सत जन्मनाय' का परिचय, उनकी प्राप्त पुस्तक रचनाओं का वर्णन-विषय, १ पद और ३ दाह उद्धृत ।
- ६४-हिंदी साहित्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, अंतराचार कपूर एण्ड सन्स, देहली, सन् १९५२ ई०, पृष्ठ १४७ ।
- विद्वानों सम्प्रदाय के सम्पादक जन्मनाय-उनकी रचनाओं में योग, अज्ञान-जाप आदि बातों की प्रधानता का उल्लेख ।
- ६५-भक्त चरिताक, कल्याण वय २६, सख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन १९५२, पृष्ठ ४५६ ।
- 'मन्त श्री जाम्भोजी महाराज' का परिचय, विद्वानों-मत की स्थापना, २९ धर्म-नियम ।
- ६६-राजस्थान की जातिया प्रस्तुतकर्ता एवं प्रकाशक-बजरगलाल लोहिया, कलकत्ता, सन् १९५४ ई०, पृष्ठ ३३-३४ ।
- विद्वानों जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय-स्थापना, रीति-रिवाज, पेशा, नियम पालन ।
- ६७-इसाइक्लोपेडिया आफ रिलिजन एंड एथिक्स मन् १९५५, वाल्यूम ६, हिन्दुइज्म - माडन हिन्दुइज्म डिफाइड, पृष्ठ ६६८ ।
- पञ्जाब के विद्वानों के मुर्दा गाडने का उल्लेख ।
- ६८-सतवाणी अक, कल्याण वय २९, सख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन् १९५७ ई०, पृष्ठ ३५९ ।
- सत जन्मनाय (जाम्भोजी), उनकी ३ साखिया (दोहे) । ये दोहे वही हैं जो सतम सख्या ९३ में उद्धृत हैं ।
- ६९-सत इवोट एंड सापल-राजस्थान डाइरेक्टरेट आफ एथिक्ल्स, राजस्थान सरकार, मई १९५८, पृष्ठ ३४ ।
- विद्वानों सम्प्रदाय-बोकानेर और मारवाड़ में-इनके रीति-रिवाजों में हिन्दू और मुसलमान-दोनों सत्कृतिया का सम्मिश्रण, जाम्भोजी, वीस और नौ से विद्वानों नाम ।
- ७०-राजस्थानी भाषा और साहित्य (विश्व सत १५००-१६५०) डॉ० होरालान माह्वरी आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७, सन् १९६०, पृष्ठ २७६-२७९ ।
- जाम्भोजी का जीवन, विद्वानों सम्प्रदाय का स्वरूप, २६ धर्मनियम, कतिपय रावदा के धार्मिक उदाहरण ॥

- ७१-मत परम्परा और साहित्य (धर्मोद्भूत अभिनन्दन ग्रन्थ) धर्मोद्भूत अभिनन्दन ग्रन्थ सविनि, पटना, सन् १९६०, पृष्ठ ३१३ ।
- हिन्दी सत कवियों का तिथिग्रन्थ, ज्ञानामार्गी गानक भवनान्, सल्या १४-मत जमनाथदा वा जभो, ममय-मयन् १५०८-१५८०, सम्प्रदाय-फुटकर ।
- ७२-गनेटियर आफ इंडिया, राजस्थान, घाडमेर डो० सी० जोत्फ, मन् १९६२, पृ० ५५ ।
- विष्णोई जोधपुर, बीकानेर, जगनमर और उज्जयपुर म, जाम्भोजी नागौर के मुसलमानों के विरोध से उनकी ५ बात म्बानाए का, मुँ गाडना, पटनावा भास् ।
- ७३-क्षत्रिय जातिर्या का उत्थान-पतन एव जाटों का उत्थय कविरान् योगद्रपाल धाम्बी, प्रवागव-ठाकुर समारसिंह, कया गुरुकुल, हरिद्वार, सन् १९६२ पृष्ठ ६११ ।
- 'जाट माधु मत' के अन्तगत 'महात्मा जम्भयेव' का परिचय, उनके विचार, नगीना के विस्नाइया का हाफ्रिज को मारना और दण म उचने के लिए मुगलमाना बाले प्रदूष करने की बात अमाय, सामूहिक रूप से सम्पूर्ण विष्णोइया क धामसमाजी होने का ।
- ७४-राजस्थानी सबद कोस प्रथम दण श्री मीताराम लानम, राजस्थानी ग्णोय सस्थान, नाथपुर, सन १९६४, पृष्ठ १२३ । 'राजस्थानी साहित्य का परिचय' -
- जाम्भोजी का परिचय, १ सख (म्बोदृत सख्या ११) का उदाहरण ।
- ७५-श्री महाराज/हरिदासजी की वाणी सम्पादक-श्री मंगलदास स्वामी, निविल भारतीय निरजनी महानमा, दादू महाविद्यालय, माता डूगरी रोड, जयपुर, सन् १९६२ या परशुराम चतुर्वेदी लिखित प्रस्तावना, पृष्ठ १० ।
- 'जमनाथ वा जाम्भोजी' की विचारधारा का परिचय ।
- ७६-हिन्दी सत साहित्य डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली, सन १९६३, पृष्ठ ५८ ।
- पथ निर्माण का सूत्रपात (सवत् १५५०-१६००) फुटकर सत-विष्णुई मत के प्रवक्त सत जमनाथ का उल्लेख ।
- ७७-सेतस आफ इंडिया १९६१, वाल्सूम-१४, राजस्थान, पाट सिक्स्थ-ए, विलेज सर्व मानोप्राफस-४ मुकाम सन १९६५ ।
- मुकाम-मवेक्षण, जाम्भोजी का जीवन, काय, यहा क लोग का धार्मिक, सामाजिक-साम्कृतिक, आर्थिक जीवन, भारतीय, परिणिष्ट से कतिपय पटटे परवानो की नकन और सबदो के कुछ अश आदि ।
- ७८-कास्ट एण्ड रेत इन इण्डिया जी एस घुग्ये, प्रथम मन्वरण, सन् १९३२, पृष्ठ २९, ६५ । तीसरा सस्करण-कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया सन् १९५७, पृष्ठ ३३, पापुलर बुक डिपो, बम्बई ।
- विष्णोई सम्प्रदाय के पृथक् जाति बन जाने का उल्लेख ।
- ७९-भारतवष मे जातिभेद क्षितिमोहन सेन, अभिनय भारती प्रथमाला, १७१-ए, हरिसन रोड, कलकत्ता, सन् १९४० पृष्ठ १५४ ।
- बम्बई प्रात म विष्णोई सम्प्रदाय के पृथक् जाति बन जाने का उल्लेख ।

- ८०-वाल्डस इन डौडया इटसे नेचर, फन्क्शन एण्ड आरिजिस जे एच हट्टन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई-१, चौथा संस्करण, सन् १९६३, पृष्ठ २३६, २५३ और २७८ ।
- * मिथ के विस्नाई ब्राह्मण, हिमाल के विष्णोईया द्वारा मुर्दा गाडना, विभिन्न जातियो का ।
- ८१-नाथ और सत साहित्य (तुलनात्मक अध्ययन) डा० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५, सन् १९६५, पृष्ठ ४०, ५१, ६६ ।
- * नाथपथ मे सत्रद पश्चिमी प्रदेश के जम्मनाथ, सतमत के २५ प्रमुख सम्प्रदाया में विस्नुई सम्प्रदाय, विस्नाई साम्प्रदायिक जाति का ।
- ८२-"अध्ययन और अक्षेपण" मे डा० हीरालाल माहेश्वरी का "पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ", निवध । नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली-७, १९६६, पृष्ठ १२८-१३१ ।
- * "अक्षम" जाम्भोजी का विशेषण, कतिपय प्रसिद्ध विष्णोई कवियो की 'अक्षम जभ' प्रयागवाली रचनाया के उदाहरण, जाम्भोजी का काल ।
- ८३-ब्रज साहित्य का इतिहास डा० सत्येन्द्र, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९६७ (म० २०२४), मूमिका, पृष्ठ १४-२२ तथा ७०३-७०५ ।
- * विष्णोई सम्प्रदाय का स्वरूप और कतिपय कविया की सूची ।
- ८४-सोशल लाइफ इन मडिएवल राजस्थान (अ प्रेजी) डा० गोपीनाथ शर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवान, आगरा-३, सन १९६८, पृष्ठ २२६ ।
- * 'जाम्भा' उनके काव्य और कतिपय धर्म नियमो का उल्लेख, मुमलमानी प्रभाव की कल्पना ।
- पत्र-पत्रिकाएँ —
- ८५-महू भारती, पिलानी, वष ७ अ क २, जुलाई, १९५६ । राजस्थान के प्रमुख मत सम्प्रदाय-एक परिचय पृष्ठ ४५-५१ ।
- * सत जभनाथ, विस्नोईया का नियम-पालन ।
- ८६-राजस्थान-भारती, भाग ७ अ क ४, साङ्गल राजस्थानी रिसच इन्स्टीट्यूट, बीकानेर, प्रगन्त, १९६१, पृष्ठ ५७-६३ ।
- * "विस्नोई पथ" का परिचय ।
- निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाया मे डा० हीरालाल माहेश्वरी के निवधो मे प्रामाणिक उल्लेख —
- ८७-"जागन महिला" (साप्ताहिक), मानु सेवा सघ, सीतावर्डी, नागपुर-१, ३०-३-६२, ६-४-६२ और १३-४-६२ के अ का मे ।
- * "जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सामाज्य परिचय"
- ८८-पत्तोप, चौथा अ क, सन् १९६६, हिन्दी विभाग, पञ्जाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ, पृष्ठ-११८-१२३-"राजस्थानी के विस्मृत कवि गद् और उनके कवित्त"
- * गद् क विष्णोई कवि होन की सम्भावना, प्रसंगवात मुरजनजी का भी उल्लेख ।
- ८९ गौप्य-पत्रिका, उदयपुर, वष-१८, अ क १, सन १९६७, "राजस्थानी कवको काव्य और चर नार की बारहखडी," पृष्ठ ५७-६५ ।
- * बाहोत्रा कृत कक्का सतीसी का ।

६०-धरदा, विसाऊ, वष-१०, भाग २, फरवरी अप्रैल, १९६७, "सत ज्ञानीजी और उनकी साक्षी"- "सत को धर्म", पृष्ठ ४८-६६ ।

• जाम्भोजी के भाव-गूढ के सम्बन्ध में ।

६१-कल्चरल फारम, नम्बर-३६, शिवा मन्नालय, भारत सरकार, सन् १९६७ "कृष्ण-इन गुजराती एंड राजस्थानी लिटरेचर" (मं गरेजी) ।

• विष्णोई सम्प्रदाय के कृष्ण-कवियों का भी नामो-लेख ।

६२-विश्वभारती पत्रिका, साहित्यनिवेदन, दुलाई सितम्बर, सन् १९६७-"राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ" ।

• सम्प्रदाय के स्वरूप, कवि और उनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण ।

दिल्ली सिबदर साह, दे परची परचायो ।
 महमन्सा नागौरि, परचि गुर पाए भायो ।
 दूद भेडतियो राव, भाय गुन पाय विलग्यो ।
 रावल जसलमेर, परचता सासो भग्यो ।

सातिन सनमुखि भाय, मुचील जित हुवो सिनानी ।
 साग राण मुणि सीख, जका गुर कही स मानी ।
 छव राजिदर के के भवर, आचारे ओलखियो ।
 बील्ह कहै भागो पुह, जाह मुक्ति नै हाथो दियो ॥
 —बील्होजी कृत 'कथा जसलमेर की' से ।

कल्लिजुग चारो घ म, एकठा फुरमाइया ।
 मुसल व भा जण, जोग जुगति दिढाइया ।
 —अज्ञात कवि (सख्या २५) कृत 'साखी' से ।

जोगी जगम नाद डिगवर । सयासी ब्राह्मण व भाचारी ॥ ४५ ६ ७ ।
 मनहठ पढिया पिढत, काजी मुल्ला खेल् भाप दुवारी ॥ ४५ ८ ९ ।
 हाली पूछ पालो पूछ, आ कलि पूछणहारी ॥ ८३ २४ ।
 अवर पूछ चाकर पूछ, पूछ कीर कहारी ॥ ८३ ३१ ।
 —जम्भवाणी (सबदवाणी) से ।

अध्याय ३

तत्कालीन स्थिति

जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था। यद्यपि उहाने देग के अन्ध भागो म भी अपन उपदान दिवे थ तथापि उनका प्रमुख काय-क्षेत्र राजस्थान रहा था। सम्प्रदाय के अधिकांश पुराने स्थान यहा पर स्थित हैं। साहित्य-निर्माण भी अधिकांशत यही के कवियो ने किया। इन कारण, जाम्भोजी, विष्णोई-सम्प्रदाय और साहित्य की समग्रता म सभ्यक रूपेण सम-मन और महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए पृष्ठभूमि के रूप म १६ वी शताब्दी राजस्थान की राज नीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। आगे इनका सिंहावलोकन किया जाता है —

(क) राजनीतिक स्थिति -

(१) राजस्थान नाम-सारे राजस्थान या राजपूताने के लिए पहले किसी एक नाम का प्रयोग होना पाया नहा जाता, उसके कई अंशो के तो प्राचीन काल मे समय-समय पर भिन्न भिन्न नाम थे और कुछ विभाग अन्ध बाहरी प्रदेशो के अंतगत थे^१। शासकों के परिवर्तन के साथ-साथ उनके द्वारा शासित प्रदेशों की भौगोलिक सीमाओं म भी परिवर्तन-परिवर्द्धन होता रहा है।

(२) जागलू-राठोडो के अधिकार से पूव बीकानेर का दक्षिणी हिस्सा जागलू नाम से प्रसिद्ध था। वह सावल्ले परमारो के अधीन था और उनका मुख्य नगर जागलू कहलाता था। भव तक वह स्थान उसी नाम से प्रसिद्ध है। जागलू देश के उत्तरी भाग पर राठोडो का अधि-कार होने के बाद जबसे उसकी राजधानी बीकानेर स्थित हुई तबसे उक्त राज्य को बीका-नेर राज्य कहने लगे^२। तब जागलू के अंतगत सावल्लो के केवल ८४ गाव ही थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक पृथक् प्रदेश की प्रसिद्धि के रूप मे जागलू अपना महत्त्व खो चुका था और सुप्रसिद्ध नाम 'वागड देश' के अंतगत माना जाता था। बीकानेर के राजा जागलू देग के स्वामी होने के कारण अपने को जागलू घर (जागलू देश) के वादगाह कहते हैं^३।

(३) श्वालक, माड, मेदपाट-साभर चौहानो की मूल राजधानी हाने के कारण पीछे से उनके अधिकार का साभर, अजमेर आदि का मारा प्रदेश सपादलक्ष कहमाने लगा। इसी को सवालक या श्वालक कहते थे^४। जाम्भोजी ने एक 'सवद' (६३ १४) म इसका उल्लेख किया है। पहले इसके अंतगत जागलू, जयपुर राज्य का गैलावाटी से लगाकर रण-

१-श्रीमा श्रीमा निबन्ध-संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १७, सन् १९५४ (उदयपुर)।

२-श्रीमा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४, सन् १९३६।

३-श्रीमा श्रीमा निबन्ध संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १८, १९।

४-श्रीमा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३६, ४१, सन् १९३८।

धभोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमें बौटा रियासत का उत्तरी भाग भी है, मेवाड़ का माडलगड से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बू दी राज्य का पश्चिमी ३, रा, विंगल का राज्य तथा अजमेर का सारा प्रदेश माना जाता था ^१। नागौर पट्टी को अब तक श्वाल्क या 'सवालख' कहा जाता है ^२। जसलमेर राज्य का प्राचीन नाम माड है ^३। मेवाड़ का पुराना नाम मेदपाट और प्राग्वाट मिलता है ।

(४) बागड, बागड देश-श्रीभाजी के अनुसार डूंगरपुर और बासवाडा राज्यों का सम्मिलित नाम बागड मिलता है ^४। अथवा उनका क्या है कि बीकानेर राज्य का दक्षिणी और पूर्वी भाग बागड नाम की विंगल मरुभूमि का और कुछ उत्तरी पश्चिमी भाग भारत की मरुभूमि का अंश है ^५। श्रीभाजी का 'बीकानेर राज्य के एक अंश को बागड' नाम का आशिक रूप से ही मान्य हो सकता है। 'एक अंश' ही नहीं राव बीकाजी द्वारा विजित इस प्रदेश की समस्त भूमि और पश्चात् का पुराना बीकानेर राज्य तथा शेखावटी का समस्त प्रदेश सम्मिलित रूप से 'बागड' या 'बागड देश' कहलाता था। इसका बागड या बाण्ड नाम इसलिए पड़ा प्रतीत होता है कि इस भूमि पर कभी मकड़ों वपों तक बागडिये चौहानों का राज्य रहा था। बीकाजी के समय इस भूमि का नाम जहाँ अब बीकानेर राज्य स्थापित है 'बागडी देश' था ^६। जाम्भोजी इसी प्रदेश में उत्पन्न हुए थे। विष्णोई कवियों ने उनके बागड देश में अवतीर्ण होने का सोल्लास उल्लेख किया है ^७। अथ उल्लेखों से भी इनकी पुष्टि होती है ^८।

(५) 'बागडदेश' में राजनीतिक उथल-पुथल राठौड-जाम्भोजी के प्रादुर्भाव से लेकर विष्णोई-सम्प्रदाय-प्रवृत्तन के समय-सबसे १५४२ तक पीपासिर और सभरायण के घामपास ही नहीं, समूचे 'बागडदेश' में एक महान राजनीतिक उथल-पुथल हो रहा था। इन्हीं ३४-३५ वर्षों में राठौडा ने यहाँ के जाटों, छापर डालपुर के मोहिलों, पूगल के भांगिया,

१-श्रीभा आभा निरघ सग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २०-२१।

२-श्रीभा जोषपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४१।

३-लक्ष्मीचन्द रईग तवारीख जमलमर (तीना भाग), पृष्ठ १२५, मन् १८*२।

४-श्रीभा निरघ सग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २४-२६ और राजपूताना का इतिहास, त्रिं पन्नी, पृष्ठ २, विष्णोई सन १६३७।

५-बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ५।

६-पाउण्ड-बीकानेर स्टेट गजटियर, पृष्ठ २, सन १६३८।

७-(क) श्री गुरु भाषी बागड देस जग मा तियो वान चाणिली ।-मासी, ऊजोत्री नग ।

(ग) एवन् वाइ य निरि भाषी बागड देस सुगव ॥-मासी, कवि सख्या-२८।

(घ) बावो गामलित्र धु बागड देस, पोन्मी पालमर भावियो ।-मासी, वीहोत्री ।

(ङ) भगता वात्र तियो परवग भरत पड मा बागड देस ।

सभरपात्र ऊभो तापरा, नवपडि जोति जुगनि परवरी ॥ १२ ॥

-क्या ग्यानचरी, वीहोत्री ।

(८) गिवरी गिवरी भाभगर देव, कान्डुग कायम राजा भावियो ।

घाय धरतरयो बागड देस, सतगुरु गुपह बतावियो ॥ १ ॥-मासी, वीहोत्री ।

८-क्यामणा रामा, भूमिवा, पृष्ठ ११, खण्ड ० पु० म०, जयपुर, मदन २०११।

जागलू के साखलो तथा जोधपो से अनेक ठिकाने जीत लिए । परस्पर वमनस्य, आपसी पूर, यगोलिप्पा और ग्रहनार के कारण राठीडो के हाथो उनकी पराजय हुई ।

(६) जागलू के साखले-राठीडो के बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह प्रदेश ई भाग म विभक्त था और इस राज्य पर उक्त लोगो का अधिकार था । मरूमि और तवादा कम होने के कारण विजेताओ का इम तर्फ ध्यान कम ही रहा, जिसमे यहा के आमक स्वाधीनता का उपभोग करते रहे । एक नए राज्य-स्थापन की कामना लेकर राव जोधा के पुत्र राव बीका अपन आदमियो सहित विक्रम सवत १५२२ के आश्विन सुदि १० को जोधपुर से प्रस्थान कर मडोर होते हुए देशनोक आए । वहा से उन्होंने चाडामर, कोडम डर आदि स्थानों पर अधिकार किया और जागलू^१ पहुंच कर नापा साखला की मदद से साखला के ८४ गाव, अपने अधीन कर लिए^२ । पहले साखलो की एक शाखा का निवाम ह्य (जोधपुर राज्य) मे था । वे राणा कहलाते थे । १२ वी शतादी के लगभग साखले महीपाल का पुत्र रायसी म प्रदेश मे आया और दहियो से जागलू ले लिया । बीकानेर से ३६ मील दक्षिण मे स्थित कवलीसर गाव मे साखले राणाओ की १४ वा शतादी पूर्वोद्ध की वलिर्था हैं । रायसी की वश परम्परा म नापा साखलो म वडा प्रसिद्ध हुआ । उसके समय में ह्य विलोच जाति के मुसलमानो के आक्रमण होने लगे जिससे साखले निबल हा गए । फिर नापा जोधपुर क राव जोधाजी के पास चला गया और कु वर बीका को नवीन राज्य स्थापित करने को उद्यत देव जागलू पर अधिकार करने की सलाह दी^३ । राव जोधा के समय तो जागलू म साखलो का ही राज्य बना रहा था^४ जिसको इस प्रकार, राव बीका ने, सवत १५२२ म अपन अधीन किया । तब से साखले राठीडो के विश्वासपात्र बन गए । नएसी क अनुमार, नापा साखला, राव जोधा की तरफ से राणा कुम्भा के दरबार मे भी र्हा था^५ ।

(७) पूगल के भाटी-बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व, बीकानेर के पश्चिमोत्तर म मारा प्रदेश जो जसलमेर राज्य की सीमा से पजाव की सीमा तक मिलता है, भाटियों के अधिकार में था^६ । ये वहा लूठमार भी किया करते थे । इनके दो भाग थे-एक पश्चिम की ओर जसलमेर राज्य की सीमा से मिले हुए पूगल प्रदेश के भाटी राजपूत और दूसरे भटनर (अनुमानग^७) के ग्रामपास बसने वाले भाटी मुसलमान । राव बीका ने जागलू पर अधिकार करने के समय भाटी राव गेखा पूगल का स्वामी था । एक बार वह मुल्तान की ओर

१-जागलू बीक जाणइ जगत । छातपति हूवो ताणाविद्यत ।

जून धन घलट्ट धित । चउड रा जेम राव बीक चित ॥ ४० ॥

-गोत्र सूजा कृत छद राव जतसी रो, १० प्र० स० ६६, अनूप सस्कृत लाङ्ग्रे, बीकानेर ।

२-ग्रामा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ५५, ९१-९२ ।

३-वही, पृष्ठ ५३ ५५ ५८, ६६ ७२ ७३, २३८ ।

४-ग्रामा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ २१५ ।

५-स्थान, भाग १ पृष्ठ ३०-३१, ना० प्र० स० कागी ।

६-शाउर बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २ ।

ग पुत्रमार कर जब मीर रहा था, तो वहाँ के गुर्रान की मना ग मुअद हो गई। बहुत परदा गया और मु तात म क म निया गया। घोभाजी क अनुगार, राव बीरा ने देगा की रानी का प्रायना पर उमको म म दूया निया। इम पर रागा का पुत्री का विवाह राव बीरा मे हो गया। अन्त कर्णोजी द्वारा रागा की सुहाग जान और उत निया करान जान का उलग मिसता है। पर परना मवत् १५३६ का है। राव बाबा न कोटम-दगर के निकट घानी राजपा ॥ क मित किना बागगा पाहा, जियग भाटिया की भय हुआ। उन्होंने कुलनग महरात क ननुय म राठीना म मुद निया। शिख हान क कारण भाटियों म निरन्तर भगडा होन की सम्भावना म क राव बीरा न कोटमगर स दणिग पुन म विप्रम सवत १५४२ म किना बनयाया जो बाजार म मगर क भाग है। राव गता न भा बीरा की अधीनता स्थोवार कर मी और इम प्ररार जांगू के परधान पुन बीरानर राज्य के अतगत हा गया। मोरगा (बीरानर म २८ मील दणिग) गाव क मनि या की सागर नामक कूले क पाग एन बनार म २६ दयनिया सगा है। इतम म एन का छाडकर गय सभी विप्रम मवत् की १६वा १७वा सताली क बाब मनु को प्राप्त होन काल भाटी जागीरदारों का है।^६

(८) भटनेर क भाटी-बाकानर के उत्तर की तरफ के भाटी राजा दुनबद स विप्रम सवत १४४८ म तमूर न भटनेर निया। इमके बाद यहाँ प्रमग भाटिया, जोहिया और चायना का अधिकार हुआ। विप्रम मवत् १५८४ म बीकानेर क चौमे गामक राव जतमी ने यहा राठीडा का अधिपत्य स्थापित किया। इमके ११ वष बाद बाबर के बेटे कामरा न इसे जीता। भटनेर क चारों ओर भाटी, चायन और जाहिया जाति के लोग बसे हुए थे। ये लोग अधिकतर मुसलमान थे। विप्रम १६वी गताली पूर्वादि म रेणी के भामपाम का इलाका चामल और लोचिया के अधिका म था।^७ राव बीरा ने लोचिया के स्वामी दरवान लोचो को मारकर वह इलाका भी अपने राज्य म मिला लिया^८।

१-ओभा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ७४ ९४।

२-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २-३।

(ख) किनारसिंह बाहस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४१-१४७।

३-किनारसिंह बाहस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४७।

४-छात्रपति उवारिय छत्र छाह बताए आदी दीप बा ॥

वीक दुर्ग कजि कीधवत् सोभाग दीप जाणी सपत ॥ ४९ ॥-वीरू सूजा इत छद राव जतमी रो। ४० प्रति सख्या ६६, अनुप म० मा०, बीकानेर।

५-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ३-४।

(ख) ओभा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ७४।

(ग) वीरू सूजा इत छद राव जतमी रो छत्र ४८, हस्तप्रति म० ६६, अनुप म० ला०, बीकानेर।

६-ओभा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १ पृष्ठ ५८।

७-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।

(ख) ओभा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६५, ६६, १००।

८-कुवर कन्हैया जू देव बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १८, सवत् १९६९।

(६) 'बागडवेन' के जाट, उनका विस्तार—भटनेर के चारो ओर वहा से लेकर दक्षिण म बीकानेर और उसके आसपास जाटो की आवादी थी । भटनेर विजय के मिलसिते म तमूर न अपन जीवन—चरित मे लिखा है कि जाट जाति वडी शक्तिशाली है और ये दुर्दात जाट टाडिया और चीनिया की भाति असह्य है, कोई भी यानी या व्यापारी इनके हायो पडकर बिना चोट खाए जा नहा सकता^१ । बीकानेर से ईशान, पूव और आग्नेय दिशाआ मे तो जाटों का राज्य ही था । ये लोग मुख्यत सात जातियो मे विभक्त थे जिनका परिचय इस प्रकार है^२ —

<u>जाति</u>	<u>गावो की सख्या</u>	<u>मुख्य स्थान</u>	<u>मुखिया का नाम</u>
१ गोदारा	३६०	लाघडी, शेखसर	पाण्डू
२ सारण	३६०	भाड ग	पूलो
३ कनवा	३६०	सीघमुख	कवरपाल
४ बग्गीवाल (बगियाल)	३६०	रासलाणा	रायसल
५ पूनिया	३६०	वडी बू दी	बानो
६ मिहाग	१४०	सूई	चोखो
७ सोढवा	८४	घाणसिया	अमरो

जाट लोग महम्मि मे बहुत प्राचीन काल से निवासी थे । उपयुक्त सूची से स्पष्ट है कि वतमान बीकानेर का बहुत सा भाग पहल वहा के जाटो के अधिकार म था । बीका के आक्रमण के दिना म उनका शासन निवल पड गया था । आपसी फूट के कारण उनको राठीश की अधीनता स्वीकार करनी पडी । आसपास की अन्य जातियो—मोहिला, जोहिया और जंतलमेर के भाटियो से भी उनकी शत्रुता थी । इसी समय गोदारो और सारणो मे पूले सारण का पत्ना मिलकी के कारण आपस म भगडा हो गया, जिसम राव बीका न पाण्डू गोगर का पक्ष लिया । बीकाजी की शक्ति देख कर जाटो के अयाय वग भी धीरे धीरे उनका अधीनता मे आ गये ।

उपयुक्त शासक जातिया के अतिरिक्त भी जाटो से सम्बन्धित उल्लेख यत्र—तत्र मिलते हैं जिनम उनके महस्व का पता चलता है । जोषपुर से निकलने के बाद राव बीका को जांगलू लन की मलाह देने मे जाट निकोदर भी एक था^३ । राव जोधा को एक जाटनी द्वारा मडोर

१—हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इटस् ओन हिस्टोरियस, वाल्टूम—थड, पृष्ठ ४२८-४२९, लन्दन, सन १८७१ ।

२—(क) दनालदाम की ख्यात भाग २, पृष्ठ ७, बीकानेर, सवत् २००५ ।

(ग) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ४ ।

इस सम्बन्ध मे विभिन्न लेखका मे किचित् मतभेद भी है । द्रष्टव्य —(१) बनल टाड—एनल्स आफ बीकानेर, (२) रामनाथ रत्न इतिहास राजस्थान, (३) कु वर कहेया ज दव बीकानेर राज्य का इतिहास, (४) दंगराज जघीना जाट इतिहास, आदि ।

३—मिन्नेस्वरनाथ रेड मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ९८, पाद—टिप्पणी ।

के आसपास की भूमि पहले हस्तगत करने की शिक्षा दिए जाने का प्रसंग बहु-प्रसिद्ध है^१। राजपूता और जाटों में परस्पर विवाह भी होते थे। आमेर के कछवाहा कुन्तलजी (जो सन् १३३३ में वहाँ के राजा हुए) की एक राणी कर्मोरदेजी, चौहानों के जाटों की बनी थी^२। गेवावतों के पूज्य सुप्रसिद्ध भोलाजी बरवाड़े में जन्मे थे और सासोंग जाट धर्मरा के घर दासी में धार्य किये गये^३। जयपुर राज्य का सामौद नगर जो कभी नापावतों के अधिपति में था, इवामा नामक एक जाट की दासी थी^४। बाँकीदास के अनुमार उनक समय में, जानाणपट्टी के जाखड़ जाटों के गाँव बीदावता के पट्टे में, सोहावाटी व सोहाक जाटों के १४० गाँव महाजन के पट्टे में और गोदारों के १४४ गाँव बीकानेर राजा के सातमे में थे^५। बीकानेर राज्य के निवासियों में तीन चौथाई मर्या जाटों की है^६। अब भी पुराने बीकानेर राज्य, बीकानेर, जूरो और श्रीगंगानगर जिलों में जाट बहुत बड़ी संख्या में आवासीय हैं। जाम्भोजी ने प्रमुखतः जाटों में ही अपने अनुयायी-विष्णोई बनाए थे जिसका उल्लेख 'सर्व वासी' में भी है (१४३-४)। विष्णोई बन जाने पर भी जाटों की जाति बही रही जो पहले थी। यही कारण है कि गोशारा जाट भी मिलते हैं और विष्णोई भी।

(१०) जोहियावाटी के जोहियो-जोहियों का मूल निवास स्थान पंजाब में था। इहाँ के नाम पर सतलज नदी के दोनो तटों पर का पुराना भावलपुर राज्य के निबट का प्रदेश जोहियावाटी कहलाता था। बीकानेर राज्य का उत्तरी भाग पहले जोहियों के अधिन में था। राठौड़ राव सलसा का छोटा पुत्र वीरम, मालाणी प्रदेश से निबाले जाने पर जोहियों के पास आकर रहा था। वीरम के छल कपट करने पर उन्होंने उसको मार डाला^७। राठौड़ ने पराजित होने से पहले उनका ६०० गाँवों पर आधिपत्य था। इनका नेता शरमिह था जिसका मुख्य स्थान भूगाल था। गोशारों ने संधि हो जाने के बाद राव बाका ने शरमिह पर आक्रमण किया किन्तु वह सफलता प्राप्त न कर सके। अंत में विजय की कोई सूरत न देखकर उन्होंने पटवर्धन द्वारा शरमिह को मरवा डाला^८। श्रीभाजी के अनुमार, बाका ने विजय

- १-धोभा (क) उदयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ २, पृष्ठ ६०३।
- (ख) जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १, पृष्ठ २७।
- २-श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास पृष्ठ ३० सन् १९३७।
- ३-(क) पारण रामनाथ राठौड़ इतिहास राजस्थान पृष्ठ ६३।
- (ख) श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ३६।
- (ग) ए० भास्करदास शर्मा-मीर का इतिहास, पृष्ठ ८-९ तथा मेरठ की इतिहास, पृष्ठ २१-२२।
- ४-हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ९४।
- ५-इतिहास की श्रुति पृष्ठ ८०, जयपुर, सन् २०१३।
- ६-राज-राजस्थान, ऐतन्म आर्य बीकानेर।
- ७ (क) बीकानेर, प्रति संख्या भा-१ भा-२३ ए, एतिहासिक मासिका कलकत्ता के मासिक आर्य राजस्थानी संस्कृतिकरण पृष्ठ १०, भा०, कलकत्ता १९००।

पर चढाई की जहा का जोइया स्वामी उसके परो मे आ गिरा^१ । बीकानेर के छठे राजा रायमिह के समय जोइयो ने उपद्रव किया था किन्तु राठौड सेना ने उनका भीरण सहार किया । फलस्वरूप जोइया राज्य सदा के लिए निबल और जनशून्य हो गया^२ ।

(११) मोहिलवादी के मोहिल-राठौडो के आगमन से पहले छापर, द्रोणपुर और बरलू के आसपास का प्रदेश मोहिल राजपूता के अधिकार मे था और मोहिलवादी कहलाता था । मोहिल चौहानो की एक शाखा है, जिसके स्वामियो ने राणा का विरुद धारण कर उक्त स्थानो के आसपास के प्रदेश पर विक्रम की १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ तक राज किया था^३ । नएसी के अनुमार, सवत् ६३१ में वागडियों से मोहिलो न धरती ली थी, नौ सी बरसा तक छापर-द्रोणपुर का राज मोहिलो के अधिकार मे रहा और सवत् १५३२ मे उनसे राठौडो ने वह प्रदेश लिया^४ । राठौडा के आगमन से पूव बीकानेर मे जाटा के बाद सबसे प्रबल मोहिल राजपूत ही थे । प्राचीन काल मे बीकानेर के बहुत बडे भाग मे उनका आधिपत्य रहा था, यह अनेक देवलियो और गिलालेयो से सिद्ध होता है^५ । १६ वी शताब्दी के आरम्भ मे मोहिलो का राजा अजीत था जो बडा वीर और प्रतापी था । वह राव जोधा का दामाद था । सवत् १५२१ मे वह राव जोधा द्वारा मारा गया (द्रष्टव्य-तेजोजी चारण, कवि सहा १) । तब मे राठौडो और मोहिलो मे वैर हो गया तथा उनमे कई लडाइया हुइ । केवल बार पाच महीने ही राठौडो का वहा अधिकार रहा हांगा कि कु वर मेघा बछराजोत ने अपनी धरती वापिस छीन ली । बछराज अजीत का मतीजा था । सवत् १५२३ के लगभग वह भी राठौडो द्वारा मारा गया । उसके पश्चात छापर-द्रोणपुर का स्वामी उसका पुत्र मेघा हुमा । उसके जांत जी राठौडो कुद न कर सके । सवत् १५३० मे उसके मरने पर बरसल वहा का स्वामी हुमा । वह एक निबल शासक था । मोहिला मे परस्पर फूट हो गइ और सवत् १५३१ मे राव जोना ने वह इलाका अपना अधीन कर लिया^६ । इस पर राणा बरसल, उसका छोटा भाई नरवद तथा बाघा बाघलोत बादशाह बहलोल लोदी के पास गिल्ली मे गए । बादशाह ने हिसार के सूबेदार मारगला का फौज दवर भेजा^७ । उन्होंने अपन इलाके का राठौड वीदा से पुन वापिस ले लिया । इस पर राव बीका न मोहिलो पर चढाई कर उह परास्त किया और मान्दवादी को विजय कर वह प्रदेश अपने भाई बीका नो द दिया । तब से वह बीदावादी कहाने लगा । बीदा ने अपने जीवनकाल में ही छापर-द्रोणपुर के दो भाग कर अपने पुत्र उदयराज को द्रोणपुर और ससारचन्द्र को पठिहारा बाट दिया^८ । राव बीदा का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वत्त और जाम्भालो साहित्य मे अनेक बार हुमा है ।

१-बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ १०१ ।

२-गड राजस्थान ऐनल्स आफ बीकानेर ।

३-श्रीका बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६०-६१ ।

४-गामी की ह्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ १६५-१६६ ना० प्र० सं०, काशी ।

५-श्रीका बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ५६-६२ ।

६-विश्वेदरनाथ रेड मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ ६७-१००, जोधपुर ।

७-श्रीका जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ २४७ ।

८-श्रीका बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ७१ तथा खण्ड २, पृष्ठ ६४६

(१२) सोलावाटी के कायमखानो-राव वीका के इस प्रदेश में आन क समय राणा वाटी कायमखानियो के अधिकार में थी^१ । सोलावाटी के खडेली प्रदेश का स्वामी रिडमन प्राय वीका के राज्य में लूटमार किया करता था। इस पर राव वीका ने उस प्राण को लूटा^२ । सोलावाटी-विजय का उल्लेख बीठू सूजा ने भी किया है^३ ।

(१३) राजस्थान में मुसलमानों का प्रवेश-अजमेर-सबदवाली के कई सगों और प्रसंगा में मुसलमानों के मजहब और कार्यों आदि के उल्लेख हैं । इनमें नागौर के मुहम्मदशा और अजमेर के मल्लूखा व नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रचलित हैं । तत्कालीन राजस्थान में वस्तुतः अजमेर और नागौर ही मुसलमानों के प्रधान स्थान थे । यहाँ मुसलमानों का प्रथम विक्रम की तरहवी शताब्दी उत्तरार्द्ध से आरम्भ होता है । तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक राजपूताना के प्रत्येक विभाग पर प्रायः राजपूत राजा ही शासन करते थे । यद्यपि उसमें पूर्व ही मुसलमानों के हमले इस दशक पर होने शुरू हो गए थे और उन्होंने सिंध तथा उत्तरी सीमांत प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया था, तो भी वहाँ के राजपूत अवसर पाकर उनकी अपने इलाका में निकाल दत्त थे^४ । यह स्थिति गहाबुद्दीन गोरी से पलटी । सन् १२४६ में पृथ्वीराज चौहान कदवाकर कुछ महीनों बाद मारा गया । सन् १२५१ में अजमेर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया^५ । तब से इसलाम का प्रवेश राजस्थान में होने लगा और उसके ठीक मध्य में मुसलमानों का अधिकार हो गया । अजमेर की ढाई दिन का भाण्डा नाम की मसजिद विक्रम सन् १२५६ से १२७० तक चौदह वर्षों में बनी थी^६ । सन् १२६६ में अजमेर मल्लिक इजुद्दीन के अधिकार में आया^७ । सन् १४५७ से १५०२-५५ वर्षों तक अजमेर, मवाड के महाराणा भोजल (मृत्यु सन् १४६७) तथा उनके पश्चात् महाराणा कुम्भा (शासन-काल सन् १४६०-१५२५) के अधिकार में रहा^८ । फिर वह सन् १५०३ में भाण्डू के सुल्तान महमूद खिलजी के हाथ में चला गया किन्तु कुछ महीनों बाद ही राणा कुम्भा ने नागौर की लड़ाई के समय (सन् १४५६ में) पुनः उसे विजय कर लिया । प्रजाताना है, राणा कुम्भा की मृत्यु के पश्चात् (सन् १५२५) अजमेर पुनः भाण्डू के सुल्तान द्वारा लीया गया था और वहाँ उसका अधिकार सन् १५६१ तक रहा । पश्चात् सन् १५६० तक वह मवाड के महाराणा रायमल के कब्जे में रहा । भाण्डू के सुल्तान की ओर से अजमेर का सूबेदार मल्लूखा था^९ जो सन् १५३९ में नियामतुल्लाखा के स्थान पर नियुक्त

१-पाउण्ट वाकानर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २ ।

२-घोसा वाकानर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ १०७-१०८ ।

३-नुरअन साइ भास्मण पाइ । रायिया बाह दे रोपिराद ॥ ४६ ॥

-छत्र राव जतमी रो ।

४-घोसा राजपूताना का इतिहास खण्ड पहला पृष्ठ २८०, ३०६ द्वितीय मसकरा ।

५-(क) घोसा उज्जपुर राज्य का इतिहास खण्ड ३ पृष्ठ १४१ ।

(ग) रत मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ९ ।

६-घोसा राजपूताना का इतिहास खण्ड पहला पृष्ठ २८ ।

७-रत मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ १५ ।

८-गोसा अजमेर इतिहास खण्ड द्वितीय पृष्ठ १४६, २२६ ।

९-वा. पृष्ठ १४६ २२६-३१ ।

इसका नाम 'मालूवा का उल्लूख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त में किया गया है।

(१४) मुसलमान और नागौर-अजमेर पर मुसलमानों का आधिपत्य होने के कुछ समय बाद नागौर पर भी उनका अधिकार हो गया^२। विन्तम सन् ११७६ में मुहम्मद बहरीम ने नागौर का किला बनवाया^३। सन् १२५२ से १३७२ तक यह तुर्कों सूबेदारों के अधिकार में रहा^४। मुहम्मद तुगलक के जो सन् १३८२^५ में दिल्ली के तख्त पर बठा, नागौर से प्राप्त एक लेख में वहाँ उसका अधिकार होना सिद्ध होता है। तुगलक वंश के अन्तिम वर्षों में दिल्ली की बाग़दाहल कमजोर होने पर गुजरात का सूबेदार जफरखा, मुजफ्फरखा नाम से, सन् १४५३ में वहाँ का स्वतंत्र मुल्तान बना। उसने नागौर से जलानखा खोवर का हटाकर अपने छोटे भाई गम्मखा ददानी को सन् १४६० में वहाँ का हाकिम नियुक्त किया। गम्मखा ने वहाँ अपने नाम से शम्स मसजिद और गम्म तालाब बनवाए। उसके बाद उसका बेटा फीरोजखा वहाँ का स्वामी हुआ। उसने भी वहाँ एक बड़ी मसजिद बनवाई, जिसको राणा कुम्भा ने विजय करते समय नष्ट कर दिया^६। सन् १५१२ में फीरोजखा के मर जाने के बाद उसके छोटे भाई मुजाहिदखा ने नागौर पर अधिकार कर लिया। घाड़े ही समय बाद एक दूसरे गम्मखा ने, जो मुजाहिदखा का भतीजा और फीरोजखा का बेटा था^७, राणा कुम्भा की सहायता से नागौर पर अधिकार कर लिया^८। यह वंश सन् १५१३ में हुई^९। सन् १५४१ में नागौर पर फीरोजखा द्वितीय का शासन था। गम्मखा के वंश का अन्तिम शासक मुहम्मदखा था, जिसने दीर्घ काल तक शासन किया। सन् १५८५ तक वहाँ उसका शासन करना सिद्ध होता है। उसके बाद नागौर का शासन कमल लानी और पुर शासकों के हाथ में चला गया। सन् १५६० के एक शिलालेख से पता लगता है कि वहाँ शेरशाह सूरी के पुत्र इस्लामशाह के राज्य में एक मसजिद बनवाई गई थी^{१०}। मुहम्मदखा का उल्लूख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त में किया गया है। वीरू सूजा वृत्त खण्ड राव जतसी रो (इस्तप्रति सख्या ९९, अ० स० ला०, बीकानेर) से मालूम पड़ता है कि राव बीका ने नागौर पर चढ़ाई करके उसे दो बार जीता था^{११}। विन्तम सन् १५७० में मुहम्मदखा ने बीकानेर पर चढ़ाई की किन्तु वहाँ के राव खूणकरण के हाथों उसकी

१-अकुर गोपालसिंह राठौट मेडतिया जयमलवाप्रकाश पृष्ठ ६३ वदनौर।
 २-श्रीभा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ४१।
 ३-रेड मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ १३, जोधपुर।
 ४-डा० कलागचंद जन अस्मियट सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ २०६ अप्रकाशित
 ५-गोध-प्रबंध राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय जयपुर।
 ६-महुमदार रायचौधरी और दत्त एन एडवार्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया पृष्ठ ३१७।
 ७-श्रीभा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४२ २०२ (पारटिप्पणी), २१०।
 ८-श्यामनारास बीरविनाद पृष्ठ ३२७-२८।
 ९-डा० कलागचंद जन अस्मियट सिटीज आफ राजस्थान - 'नागौर'।
 १०-श्रीभा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड २ पृष्ठ ६१३।
 ११-डा० कलागचंद जन अस्मियट सिटीज आफ राजस्थान - 'नागौर'।
 १२-नागौर कोट बीकानेर नडेय। बलिवडि राइ बिहु वार बेय ॥ ४७ ॥

पराजय हुई^१। नागौर के खान पर राव गागा ने भी आक्रमण किया था किन्तु राव लूग करण ने खान की सहायता की और दोनों का मेल करा लिया^२।

सन् १४५५ में तमूर ने हिन्दुस्थान पर चढ़ाई कर भन्वर का किला लिया था। सोदी खानखान के बहलोल और सिक्न्दर तोदी ने राजपूताने पर हमल किए, परन्तु यहाँ पर उनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा^३। लघा में भी राव बीका का युद्ध हुआ था (बाहू सूजा कृत छन्द राव जेतसी रा)। सबदवाणी के 'तिमिर लिगा' में सम्भवत इहा का और संकेत है (८६ १६-१८)।

(१५) राठौड़ मंडीर-जोधपुर-सन् १४८० में राव चूडा के पश्चात् मन्वर का शासक राव काहाजी और राव सत्ताजी हुए। सन् १४९५ में चूडाजी के पुत्र राव रणमलजी चित्तौड़ में मारे गए। उनकी मृत्यु का पता लगते ही उनका पुत्र राव जोधा, (जन्म सन् १४७२) चित्तौड़ से मारवाड़ की तरफ भागा और १५ वर्षों के बाद सन् १५१० में उहाँने मंडीर हस्तगत कर लिया। सन् १५१५ में मंडीर के किस्से में उनका राज्याभिषेक किया गया। सन् १५१६ में उहाँने मंडीर के दक्षिण में ३ कोस दूर योगी विडिमानाथ के मन्दिर की भावने पर जिसको विडियादूक कहते थे, किला बनवाया और उसी के पास अपने नाम पर जोधपुर नगर आबाद किया^४। राव जोधाजी का मृत्यु सन् १५४५ में हुई। जाम्भोजी के समय में उनके पश्चात् वहाँ के शासक राव सातल (सन् १५४५-१५४८), राव मूजा (सन् १५४८-१५७२), राव गागा (१५७२-१५८८) और राव मालदव (१५८८-१६१९) हुए।

(१६) राठौड़ों का विस्तार-राव जोधाजी के कई पुत्रों ने मरभूमि में विभिन्न स्थानों पर अपने ठिकाने कायम किए। सन् १५१८ में राव जोधाजी ने अपने पुत्र वर्सह और दूदा को मेडत की ओर भेजा इन्होंने मेडत को आबाद किया और माण्डू के ३६० गांव अपने अधीन कर लिए। सन् १५७२ में, ७५ साल की अवस्था में राव दूदा का देहांत हुआ। बीकानेर में राव बीका के बाद वहाँ का शासक, जाम्भोजी के समय में राव नरोजी, राव

१-(क) नागाण अनिय बीकनेर। वासोषसि हूयो वहे वर।

ऊठिया कोषि आमणिया अग। आवासि अडाविय उतिमग ॥ ५७ ॥

महमद खान घाए मनाइ। आहण नन आधाणि आइ।

सतरही सनीखर राइ समधि। हाथी वरीसि मलहत्थि हत्थि ॥ ६१ ॥-वही।

(ख) महमदगा सउ भिडयउ, नयर सि द मुरखाणइ।

जेसनसेर दुरग मल्यउ सहु कोई जाणइ-चारण गोरा।

-ज० आफ ए० सो० बगाल (धु सिरीज-१३) नम्बर ४ १९१७ पृ० २३७।

२-गणेश राइ नागौर गढ साकड घाति भीटिय सनड।

दावाणि राव बीधी दुवारि आविय करन ओल उवारि ॥ ७४ ॥

-बीहू सूजा कृत छन्द राव जेतसी रा।

३-ओभा राजपूताने का इतिहास, जिल्हा पहली, पृष्ठ ३१० सन् १९९३।

४-(क) रेड मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ८६-८८।

(ख) आमीषा मारवाड का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२-१८३।

सूणकरण और जतसीजी रह । राव बीदा को छापूर-द्रोणपुर का इलाका सवत् १५३१ के शासकाम मिला था ।

इनम राव जोधा, राव लूणकरण राव जतसी, राव बीदा, राव सातल और राव मालदव जाम्भोजी के सम्पर्क में आये थे । (द्रष्टव्य-जाम्भोजी का जीवन-वृत्त) । राव लूणकरण ता कवि भी थे (द्रष्टव्य-कवि सभ्या ४२) ।

(१७) मेवाड-मेवाड में राणा मोक्ल के पुत्र राणा कुम्भा विभ्रम सवत् १४६० में चित्तौड़ में मिह्रासन पर बैठे । इन्होंने दो बार नागौर पर चढ़ाई की-सवत् १५१३ में और सवत् १५१५ में । दूसरी चढ़ाई इसलिए की थी कि नागौर के मुसलमानों ने हिन्दुओं का मिला दुवान के लिए गौरव्या करनी शुरू की थी । महाराणा ने उनका यह अत्याचार दखकर पचास हजार सवार लेकर चढ़ाई की और किले को जीत लिया । इसमें हजारों मुसलमान मारे गए^१ । राणा कुम्भा की मृत्यु सवत् १५२५ में हुई । उनके बाद क्रमशः राणा उदय सिंह (१५२५-१५३०), राणा रायमल (१५३०-१५६६), राणा सागा (१५६६-१५८४), राणा रत्नसिंह दूसरा (१५८४-१५८८) तथा विभ्रमाजीत (१५८८-१५९३) मेवाड के शासक हुए^२ । इस प्रकार जाम्भोजी के स्वर्गवास सवत् तक मेवाड में ६ शासक हुए । इसमें राणा सागा और उनकी माता भाली राणी का उल्लेख विष्णुसिंह साहित्य में मिलता है ।

(१८) जसलमेर के भाटी-जसलमेर में भाटी राजपूतों का राज्य था, जिनमें जाम्भोजी के समय रावल देवीदास (सवत् १५०५-१५३६), रावल जतसी (१५४१-१५८३) तथा रावल लूणकरण (सवत् १५८३-१६०७) वहाँ के शासक रहे थे^३ । इन शासकों और उनके राजत्वकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद है । वीरविन्दो के अनुसार, रावल लखमण के मरण के बाद विभ्रम सवत् १४८६ में रावल वरसी, सवत् १५०६ में रावल चाचा, सवत् १५१३ में रावल देवीदाम, सवत् १५४६ में रावल जतसी और सवत् १५८५ में रावल लूणकरण वहाँ के राज्य के स्वामी हुए । लूणकरण का देहान्त सवत् १६०७ में हुआ^४ । श्री जगन्नीसिंह गहलोत ने शासकों के नाम तो वीरविन्दो के अनुसार ही दिए हैं किन्तु उनके शासन-काल के सम्बन्ध में भिन्न सवतों का उल्लेख किया है^५ । जो भी हो, रावल जगन्नीसिंह का सम्बन्ध जाम्भोजी से विशेष रहा था और उन्होंने अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक शासन किया था (द्रष्टव्य-जाम्भोजी का जीवन-वृत्त) ।

(१९) आमेर के कछवाहा तथा अथ राज्य-आमेर में कछवाहा का शासन था । जाम्भोजी के समय वहाँ पर उदरराज (सवत् १४६६), चन्द्रसेनजी (सवत् १५२४), हरि-

१-(क) श्यामलदास वीरविन्दो भाग १ पृष्ठ ३३१ ।

(ख) आभा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६१८ ।

२-आभा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६३४, ६२६ ६३८ ६३६, ६५८ ६५६ ६६६ ७०० ७०५ ७०६ ७१३ ।

३-नगरी की स्थापना, भाग २ पृष्ठ ४४१, ना० प्र० स०, काशी ।

४-श्यामलदास वीरविन्दो पृष्ठ १७६१-६२ ।

५-राजपूताने का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ६६७ ६७० ।

भक्त महाराज पृथ्वीराजजी (संवत् १५५६-१५८४), पूरणमनजी (संवत् १५८४-१५९०), भौवजी (१५९०-१५९३) तथा रतनमिहजी (१५९३-१६०४)-६ राजा प्रमत्त गद्दी पर बैठे। अमेर के शासका से जाम्भोजी या विष्णाइया के सम्पर्क का पता नया चलता। यही बात राजस्थान के अथ राजघराना-बूंदी, मिरोही आदि के सम्बन्ध में कही जा सकती है।

(२०) दिल्ली समद, लोदी, सूर, मुगल-जाम्भोजी के जन्म से ३८ वर्ष पूर्व अर्थात् मुगलक शासन का अन्त होकर समदा का शासन आरम्भ हुआ। संवत् १५०८ में अफगान सरदार बहलोल लोदी ने दिल्ली पर अपना शासन स्थापित कर लिया। संवत् १५४६ में उसकी मृत्यु के बाद उसका दूसरा पुत्र निजामशा, सुल्तान निजामशाह के नाम से बान्गाह बना। सिक्न्दर की मृत्यु संवत् १५७४ में आगगा में हुई। उसके बाद उसका पुत्र इमहाम सुल्तान हुआ, जिसको बाबर ने पानापत के मदान में संवत् १५८३ में डराया था। तब से मुगल का शासन आरम्भ हुआ किन्तु कुछ ही वर्षों बाद संवत् १५९७ में शेरशाह के हाथों हुमायूँ पराजित होकर काबुल लौट जाने पर विवश हुआ। शेरशाह की मृत्यु संवत् १६०३ में हुई तथा दिल्ली का शासन निबल पड़ गया। संवत् १६१२ में हुमायूँ ने काबुल से वापिस आकर नाहौर पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार पुनः मुगल शासन आरम्भ हुआ। जाम्भोजी का सम्बन्ध सिक्न्दर लोदी से रहा था।

स्मरणीय है कि अभी तक जोधपुर-बीकानेर के राठीडा और उदयपुर के सीसोदियों का इतिहास तो कुछ लिखा भी गया है किन्तु जाम्भोजी के समय की अथ अनेक नामक जातिया का इतिहास अधकार के गभ में ही है। ऐसी जातियाँ म जोड़िया, चावल, लघा, जाट, साँलला, मोहिल और भाटी मुख्य हैं। विष्णोई साहित्य से कतिपय नवान ऐतिहासिक बातों पर प्रकाश पड़ता है।

(२१) निष्कण-जाम्भोजी के समय राजस्थान की राजनीतिक स्थिति ऐसी ही थी। परस्पर निरन्तर युद्ध होते रहते थे। युद्धों के कारण अनेक थे। नया राज्य स्थापित करने या पराई भूमि को जीतने का आक्षेपण सर्वाधिक था। इसके अनिश्चित अनेक छोटी छोटी और माघागण में बाना पर भी युद्ध हो जाया करते थे। अपने या अपने पूर्वजों के वर का बदला लेना भी इनमें से एक कारण था। गरणगजवत्सलता, मान सम्मान और आत्म-गौरव, वचन-पालन, धर्म-रक्षा, वक्तव्य-परायणता आदि की भावनाओं से प्रेरित होकर भी युद्ध हो जाते थे। एक गविनगाना जाति दूसरी निबन जाति का मौला देखकर दबा लिया करती थी। अतः नामका को हर समय जागृत और युद्ध के लिए कटिबद्ध रहना पड़ता था। भूमि बल से ही अधिकार में रखी जा सकती थी, यह सभी जानते थे अतः अपनी गक्ति को निरन्तर बनाये रखना भी नामक जाति आवश्यक समझता थी। राजस्थान के बाहर के विष्णो

१-हनुमान गमा जयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ ३२, ३६, ४१, ५६, ५७, ५८।
 २-मनुमदार रायचौधरी और दत्त एन एन्वाल्ड हिन्दू आफ इण्डिया एडन, मन् १९४८ पृष्ठ ३३७, ३३८-३४०, ३४१, ४२७, ४३८, ४३९, ४४४, ४४५।

भारतमण्डल न राजस्थान पर विशेष प्रभाव नहीं डाला। राजस्थान की शासक जातियाँ तो आपस में ही उलझनी रहती थीं और यही कारण इनके पतन का भी रहा। राजपूतों की पशुपत्नी राज्यलिप्सा और महत्वाकांक्षा तथा ज्योतिष और शकुन्तों पर विश्वास रखने के कारण भी आपस में निरन्तर युद्ध होते रहते थे और अकारण ही परस्पर लटकर निबल बन जाते थे। यह सब होने हुए भी देश पर आने वाली विपत्तियों के समय प्राण देना राजपूत अपना पनात कत्तव्य समझते थे, इसी प्रकार शरणागत की रक्षा, बचन-पालन व प्राण देकर भी करते थे।

(ख) सामाजिक स्थिति

१-विभिन्न वर्ग हिन्दू समाज यद्यपि चार वर्गों में बँटा हुआ था तथापि जाम्भोजी के आविर्भाव से बहुत पहले ही इन वर्गों में अनेक जातियाँ, उपजातियाँ तथा कई नई जातियाँ बन गई थी। जानि-मायता में कम प्रधान न रह कर जन्म प्रधान रह गया था। जन्मवर्णी और विष्णोई साहित्य से यह पता लगता है कि जाम्भोजी के समय में 'वागड देश' में प्रधानतः निम्नलिखित वर्ग के लोग थे—

- | | | |
|------------------|-------------------------------------------------|-------------------------|
| १-राज वर्ग। | २-खेतिहर वर्ग। | ३-कारीगर और मजदूर वर्ग। |
| ४-व्यापारी वर्ग। | ५-आशिक या पूण रूप से राज्याधित तथा विद्वत वर्ग। | |
| ६-कलावाज वर्ग। | ७-निम्न वर्ग तथा | ८-साधु वर्ग। |

२-राज वर्ग - इसमें राजा, टिकानेदार, पटटेदार, भोमिए तथा राज-काय संचालन करने वाले मंत्री, सेनापति आदि सम्मिलित हैं। जाति की दृष्टि से इनमें राजपूत, जाट और मुगलमान प्रधान थे। इस वर्ग का प्रमुख काय युद्ध था। हिन्दू राजा धर्म-कर्म के मामलों में सम्प्लु होते थे। सभी स्मात मतानुयायी थे, धर्म या सम्प्रदाय-विशेष के पालन का आग्रह इनमें नहीं मिलता।

३-जाट, खेतिहर वर्ग - राजस्थान में जाति की दृष्टि से सबसे अधिक सख्या जाटों का थी। राजपूतों से भी इनकी सख्या अधिक रही है^१। पेशे की दृष्टि से सर्वाधिक सख्या खेतिहर लोग ही थी। राजवर्ग के कुछ लोगों को छोड़कर समाज का प्रधान पैग खेती करना और गाय, भस, भेड़, बकरी, ऊट आदि पशु पालना था। धी तथा ऊन का व्यवसाय होता था। जन्मवर्णी (सबदवाणी) की वंशानुसारी और उसके अधिकांश उल्लेख दूसरे वर्गों में मिलते हैं।

४-सम्बन्धित उल्लेख - किसान, खेती और उससे सम्बन्धित सामग्री का वर्णन अनेक *सूत्रों में है।^२ 'अनाज निकाल लेने पर पीछे बची हुई "बूक्स" (भूसी) को दलना बेकार है' इस उक्ति का उल्लेख सात बार किया गया है^३। इसी प्रकार विना रस के 'बाक्स' (रस निकाल हुए गन्ने के छिलके), (६५ ४, ७५ ७), 'गूणा माहना' (७६ ५), (गवार निकाल लेने

१-बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० २२।

२-सबदवाणी-२०, २८, ७०, ८३, आदि। * सबदवाणी के उदाहरणों में पहले सबद सख्या और फिर विसर्ग () के पश्चात् उसकी पक्षित सख्या दी गई है।

३-७७ ५६, ४८ १८, ६५ ४, ७१ ८, ७५ ७, ७६ ६, ८६ ३।

पर गाही हुई वस्तु 'गूगा' कहलाती है) आदि को विकृत व्यय बताया गया है क्योंकि उन में तत्त्व वस्तु नहीं है। इसके लिए मुखेल में बीज बोना (५४ ५), भली भूल का निवन करना (२९ १, ६६ ३८) और तल्लिहान का गाहटन (२८ २०) करना चाहिए। कानर जमीन में बीज बोने और टील पर तालाब बनाने से बाई लाभ नहीं (७१ १०-११, १०५ ३)। इनके अनिश्चित और (मजरी) भटन पर किसान के दुखी होने (४६ ३), अपन सत का ही कमाई खाने (११२ १-२) आदि उल्लेख इसी और सवेत करते हैं। किमानो (७२ ११) और जाटो (११६ १) को सम्बोधन, वृक्ष, पान, पून (९४-५, ७५ २), माय (८६ ५, ३४) का उल्लेख, श्रेष्ठ गाय-पदाथों में अन्न, दूध दही, पी, मेवा (३९ ४) की गिनता, मत में अश्वे बीज बोने की सलाह (१०९) आदि सेनी से ही सम्बंधित हैं। जाम्भोजी के पिता लोट्टजी स्वयं एक सम्पन्न किसान थे (वील्हाजी वृत्त कथा श्रीतारवात, छन्द १३, २४)। सनि हर लोट्टो के मिथ में गहू खान के लिए जाने और साधन निकट लखकर हन जातन की नैयारी का बखान वील्होजी ने किया है^२। उन्होंने वृष्ण को सबसे बड़ा किसान बनान हुए सुवृत्त सेती का उल्लेख किया है^३। उनकी 'सच अंपरी विगतावली' की अधिकांश बखान सामग्री किसान और सेती से ही गवधित है। मर प्रदेश का किसान 'भुरट' के बाटो से अपने पावो को बचाने के लिए प्राय चमडे का बना 'पायचा' पहनता है। यह चीज से भी रक्षा करता है। 'पायच' का उल्लेख भी जाम्भोजी (४८ १९) और हुजूरी कवि अणोजी नगा (कवि सख्या ३७) ने किया है।

सेती के साथ साथ पशु-पालन एक आवश्यक अंग था। वील्होजी वृत्त 'कथा दूग-पुर की' में अनेक 'भाति' के दूध का उल्लेख है, जिससे कई तरह के दुधान् पशु-पालन का संकेत मिलता है। उनमें गाय श्रेष्ठ समझी जाती थी^४। गाय का घी और भस का दही उत्तम माना जाता था^५। मरुस्थलीय वातावरण को चित्रित करने वाली सामग्री में भी बत्ती और सेतिहर समाज का उल्लेख मिलता है। आक, खीप, रुई, ऊन (२५), गहू, भुरट, बगरा, चदलेवी^६, मोथडियो, लरपोश, लोमडी, गू ड, (जड) (५३), हरिण, हरिणी, रिण, छाणा (जात में उपलब्ध गाय-भस का सूखा गाबर, ८६ २३), मशक (८४ ६), बरड,

१-यल माय निवाग्य करि, नर काय लीड नीर ।

नाले पोले न मिल, रीगायर बीणि हार ॥ ३६ ॥-वील्होजी, कथा घडातम ।

२-मती उपायो सिष की, किणक पीयावा भोल ।

आव मावण डुकडी, करु हला को सुत ॥ ३२ ॥-कथा गुगलिय की ।

३-किसन बडो त्रमाण, सो दुग भटल पती ।

किसन जभा ससारि, मारव ओपति एनी ॥ ५ ॥

मजरत पती नीपनी, जा दीटा ताहा लखा ।

किसन जप, नसारि, र रा रखा मे इह विष रखा ॥ ३० ॥-किसन छत्तीसी ।

४-पपी भाति का दूध कटाव, निसी दूध बार मनि भाव ।

जग मा उतिम गड कटाव, करो दूध म्हाटे मनि भाव ॥ ३२ ॥

५-गावो धिरत मगाऊ जी, त्ही मगाऊ भस्य की ॥ ११ ॥-साप्ती, कवि सख्या २० ।

६-बगरी अर चदलेवी जाय, भाण जीम कर रमाय । ६५ ॥-वील्होजी, कथा गुगलिय की ।

(भाषला, मोदने का वस्त्र-विशेष जो रुई और ऊट की 'जट' से बनाया जाता है, - (४७ ३, १२ १६), दोवड^१, डेंकली और ढावी (१११ ५) से पानी निकालने और ढोने तथा अकाल पत्न पर अयत्र जाकर समय काटन-‘गोवल्वासी’ (५१ ३४-३५, ८४ १५) लेने के उल्लेख प्रचलित इसी वग में सम्बंधित हैं ।

५-तीसरे वग (कारीगर और मजदूर) में तेली, माली, कुम्हार, घोषी, लुहार, दर्जी, सुधार, नाई, सुनार, बहार, भाड, खोजी आदि थे । इनका तथा इनके त्रिभिन्न कार्यों का उच्च अन्वय प्रसंगात् विष्णोर्द्वि साहित्य म मिलता है^२ ।

६-यापारी वग -इसमें व्यापार करने वाले वश्य, वनजारे तथा अय लोग सम्मिलित हैं । इनमें हीरे, मोती और मानिक आदि का व्यापार करने वाले श्रेष्ठ माने जाते थे । जाम्भोजी ने स्वयं का हीरो का व्यापारी कहा है (५१ १, ७२ ११-१२) । एक अनात हुजूरी कवि (सख्या २४) ने जाम्भोजी को 'सराफ' और 'विणजारा' बताते हुए कहा है कि लोग का उनमें तो चुन चुन कर माती लेने चाहिएँ । अय हुजूरी कविया ने भी उनको 'सही सौदागर' और 'ममरयगाह' बताते हुए उनसे 'विणज' करने का अनुरोध किया है क्योंकि ऐसे सग व साथ व्यापार करने से लाभ होता है^३ । दीन सुन्दरी (कवि सख्या ४९) के अनुसार जाम्भोजी के बनिसे हैं जो 'सहज' ही व्यापार करते और बिना 'डाडी और पालड' के तोलते हैं । हुजूरा कवि रायचंद अपने मन को विणजारा और सौदागर बताता है ।^४

इन उल्लेखा से यह स्पष्ट विदित होता है कि तत्कालीन समाज में बड़े-बड़े सेठ सराफ और गाह थे । इनके स्थान-स्थान पर आढतिये होते थे । जिन वस्तुओं में ये व्यापार करते थे उनके क्रय-विक्रय के लिए अनेक छोटी श्रेणी के व्यापारी भी होते थे । समाज में वे बड़े यापारिया की मन्चाई और ईमानदारी प्रसिद्ध थी । उनकी "साख" चलती थी । दीन सुन्दरी (कवि सख्या ४६) की एक साखी (सख्या २) से इसकी पुष्टि होती है । मुख्यतः बजार-यापारी, "सराफ" तथा रुपये पैसे की लनदेन करने वाला "शाह" या सेठ कहलाता था । व्यापारी वग में सराफ और गाह बने माने जाते थे । इनमें छोटे "विणजारे" और सौदागर थे जो बहुधा स्थान-स्थान पर अपने व्यापार सम्बन्धी चीजों का क्रय-विक्रय करते फिरते थे । एक ही स्थान पर हाट बनाकर बैठे हुए खरीद विक्री करने वाले छोटे-मोटे यापारी भी होते थे । "सराफों" को खोटा माल देना और "गाहों" से ठगवाई करना आसानी से काम नडा था^५ । अनेक लोग नकली माल बेचते और "छोटा विणज" करते

१-एक दावड दुज हडी, मुप मा सोर उपायो ।-बोल्होजी कृत साखी ।

२-२५ १२, ७१ ६, ६८ ७ ५९, ६०, ७६ २, ३५, १०७ ६, ६६ १-७, १४ १-४, ११ १६-१७ आदि ।

३-(क) असौ ममरय साह आयौ, बेति करि जीव जागियो ।-कुलचन्दजी, साखी ।

(ख) औ गुर आयौ पूरी साह, विणज करी वीपारियो ।-ऊदोजी जण, साखी ।

४-मेरा मन विणजारला, विणजत नहुडा कीजजी ।-साखी ।

मेरा मन सौदागर, देवि आपा सभालि वे ।-साखी ।

५-पाटे दिय सराफा हाथि, कर ठगई साहा साथि ।

पढिया ठगण मत गिवार, फिटा पिटा हुव पुवार ॥ ५८ ॥-कथा औतारपात ।

ये^१। वीरहाजी ने इसलिये 'काच कथोर' का व्यापार छोड़ हीरा के व्यापार करने की मनाहट दी है^२। जाम्भोजी के अर्थ उल्लेख है, "विणज वापर" (६५ १७-१८), पार्ल-पार्ल करके लाखों एवज होना (१२२ १) से भी इस वाग की ओर सकेत मिलता है। सन्चारि व्यापारि सफलता के लिए अति आवश्यक है, उस समय भी यही बात थी। रुपये उधार दिये जान थे^३। 'याज पर दिये गये रूपयो के एवज म कोई न कोई वस्तु बचक के रूप में रखी जाती था^४। बिना रुपया रु व्यापारी की कुछ भी बीमन नहीं थी (कवि सख्या १८), घन पराई आगा पर न रह कर अना गाठ के अनुसार ही व्यापार करने की सलाह कविया न दी है^५। हिसाब बित्ताव म होणियार होना व्यापारी के लिए आवश्यक था।

७-आशिक या पूण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत्बग-इसम चारण, ब्राह्मण पुरोहित ज्वातिपा समीतन गायक बध, गकुनी भाट आदि सम्मिलित है। विष्णोई साहित्य म पता चलता है कि चारण लोग कीर्ति और विरुदावली बघानत थ। ५ म हनु व घूमते-फिरते थे और धन पाते थे। हुजुरी कवि काहाजी वारहट न इसीलिए कहा है कि चारण वही चतुर है जा विष्णु की कीर्ति का "उच्चारण" करे और "चलता" त्यागे (कवि सख्या १४, वावनी, छंद ६)। बहुत से चारण ह या अतथ, जुल्म और पाप किया करते थ। वीरहाजी कृत 'कमा जसलमेर की' (छंद ६१-६२) म तजोजी के कथन म इनका स्पष्ट उल्लेख है। वारहटो को राजपूतो से घाडे, लाया कपडे तथा अनेकानेक वस्तुएँ भट स्वरूप मिनता था किन्तु तजोजी चारण ता यह सब त्याग कर केवल हरि के ही 'वारहट' हुए (कवि सख्या १, सातवा गीत)। भाट विरुदावली गाते और पीढियावली रखते थे। तजोजी ने चारणो और नाटो के कार्यों का बड़ा यथाथ बगान किया है। ये लोग पट के लिए दूसरो की प्रशंसा करते, तोम-वा उनको देवता और मुमेर के समान बड़ा बताने उनके लिए गीत, कवित और छंदा की रचना करते और भीठ स्वर म गाते थे^६। स्वाध के बसीभूत होकर ये लोग अनुचित निंदा-स्तुति करते थे और यह बड़े व्यापक रूप म प्रचलित थी। वीरहाजी की

१-परो र विणज बाधियो पोटे परो जनम गु वियो पहर ॥ २ ॥

—काहोजी चारण, वाचना।

२-बवा बिसन रतन छ, पाया दाम न रेस।

काच कथोर न विणजिय, विणज स हीरा जेस ॥ ३२ ॥-बिसन छत्तीसी।

३-परो गिलो ससांरि विणज-बोपारि करारो।-

परो गिलो ससांरि टोक सिरि दिव उधारो ॥ २७ ॥-ऊणोत्री नग, छप्पय।

४-वड अपरो गुक कहा न कहीज, बघ थोलि घन ध्यान न दीज ॥-डेल्हा, माला।

५-(क) विणज न बीज आन पराई, आन्तर विणि घर कही न जाई ॥ २६ ॥

गाठी सार विणज चनाई, काम अरभ्यो सो निग्वाता ॥ १० ॥

(ख) सेनी धम अयेप वीण, विणज करता रुप न भुलीज ॥ १५ ॥-डेल्हा, माला।

६-गुर भर सम वड मिनप तोम पयाए। पट वाजि पुनपत वोहन छंदा बोनाए।

जे जोमे जगनाय, विण अपरटा कथाव। गीत कवत छंद ग्यान, सरस सरत गुर गाव।

वीरना बिसन बाचा घचल, गुणे सामि साग्गधर।

ऊचर तज तोह वार नी राप राजि गुर मधर ॥ ८ ॥-प्रति सख्या २०१, पौ० ७०।

“कुन सावित्री” म इसका उल्लेख मिलता है^१। बाहोजी, तेजोजी, वील्होजी आदि कवियों के उल्लेख चारणा की उन निबन्धनाओं को बताते हैं जो जाम्भोजी के समय म बहुत बड़े रूप म प्रचलित थीं।

पाठगालाएँ हुआ करती थी^२ किन्तु प्रमुखत पढाई-लिखाई सम्पन्न, ब्राह्मण या उच्च वर्ग के कुछ लोग ही करते थे, शेष सारा समाज इस दृष्टि से प्रायः गूँथ था। विद्या की दृष्टि से ब्राह्मणों की दो श्रेणियाँ थीं—पढ़े लिखे तो ब्राह्मण (वाभण) कहलाते थे और अनपठ भस्त्रना के तौर पर “गुरडा” या “गरडा”। आज भी निरक्षर या अत्यल्प पढ़े-लिखे ब्राह्मण का ऐसा कहा जाता है। पदम भगत कृत ‘हरजीरो ब्यावलो’ म कृष्ण और गिरुपाल म अन्तर बताने हुए दमका उल्लेख किया गया है^३। हिन्दुओं म ब्राह्मण वेद, गान्ध और पुण्य (२५ १-३, ८३ १५) तथा मुसलमानों म काजी मुल्ता शुद्ध-लिखते थे (२५ १-३ ८३ १५, ९३ १९)। हिन्दू समाज मे ब्राह्मणों का पद ऊँचा समझा जाता था। व ‘गुरु’ माने जाते और घम बताते थे किन्तु ये अधिकांश मे लोभो, कुवर्मी, पाँपो, अज्ञानी और निया हान^४। ‘तपा करना’ विशेष रूप से कामस्या का काम था^५। मुसलमानों म मुल्लाणिया घरों म पढाती थी (११५ ३)। वध जड़ी-बूटी से इलाज करते थे^६ (१६ १३-१४)। ज्योतिषी भविष्य वक्ता के रूप म प्रसिद्ध थे (कवि सख्या १२; साव्नी)।

८-शकुन और ज्योतिष—ज्योतिष और ज्योतिषियों पर लोगों का बहुत विश्वास था। रागा सागा तथा उनके भाइया के आपसी विरोध और मारकाट की घटना के मूल मे ज्योतिषियों के कथन पर विश्वास करना ही था^७।

शकुनों पर भी गहरा विश्वास और श्रद्धा थी। राजपूतों मे तो शकुन-श्रेणिकुनों पर बहुत पुराना विश्वास चला आता है। आज भी यहा की प्रायः सभी जातिया म शकुन मान्यता है। भोने, भील और वावरी तो शकुन विचार पर बहुत ही विश्वास रखते हैं^८। साव्नी

१-धीर ध पारो हुषी, सेरू पलटयो साड ।

चारण मो मीठी चव, भौडी कर स माड ॥ ४ ॥

चारण ची हास्यो धणो, कुजय कहे चोरेह ।

श्रोत्रे दधी श्रोगणे, बलतो बरलक देह ॥ ५ ॥

२-तेगि पोसाल पढावियो, पावन पद पोसाल ।

श्रोल्पिया आपर अपर, मुर मिलियो गोपाल ॥ -बावनी, बाहोजी वारहट-

३-अ तर काग त्म अर सायर, अ तर वाभण गुरडा ।

इवो अ तर हरि सिसपालो, किन्न कलस काचा घडा ॥ ७ ॥ -प्रति सख्या २०१ ।

४-ब्राह्मण गुर सकल ज घरम बतव, कृसा द दे घरम कह ।

वर कलोम अत्र म कमाव, चहुता भवसागरि वहे ।

नियाहीण नतवे काचा रुप थ नेरा जीव दहे ॥

अवनार अचभ कम यति आयो लिपी न प्रापति कम लहे ॥ ३ ॥ -तेजोजी कृत छद ।

५-तुरिया तज ज सार पुरप वोन परयाण ।

कायथ तेष सार विपर ज्यो वेद पुराण ॥ १४ ॥ -ऊजोजी नण, छप्पय ।

६-(क) श्यामलदाम धोरविनोद, मृष्ट ३४३ ।

(ख) शोभा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड-२, पृ० ६४२-४३, प्रथम संस्करण ।

७-शजरमलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०, ४६, २४३, मग १६५४ ।

मेहराज और उनके पुत्र हडबूजी (जो पाँच पीरा म से एक माने जाते हैं) दोनों ही माय शकुनी थे^१। नापा साखला और काठो (राव बोका के समकालीन), कल्याणमल (राव मालदेव का समकालीन) और नीबा महेशोत बड़े अश्वे शकुनी माने जाते थे^२। विराय कार्यारम्भ से पूर्व अश्वे शकुन देखे जाते थे। अणहिलवाडा^३ पाटण और बीकानेर^४ बसाने से पूर्व अश्वे शकुन देखे गये थे। शकुन लेने और शकुन देखकर उसके शुभाशुभ पर विचार करने के अनेक उल्लेख मिलते हैं। नगसी ने राव गागा, खेतसी अरडकमलोत, नीबा, और रावल घडती आदि से सम्बन्धित बणानी म इनका उल्लेख किया है^५। वामीदास ने बीकानपुर की हू में अश्वे शकुनियों का होना बताया है^६। डेल्होजी, मेहोजी, केसोजी आदि-ज्ञात और अज्ञात कवियों ने अनेक प्रचलित शकुनो का यथावसर उल्लेख किया है। प्रतीत होता है कि साधारणतः समस्त समाज म और विशेषतः उच्च वर्ग मे ज्योतिषियों और शकुन-पाठको का अछा सम्मान था।

९-कलाबाज घग-इसमे हाथ की सफाई, चमत्कार-प्रदर्शन या ऐसे ही कलाबाजो दिखाकर जीविका कमाने वाले नट, जादूगर, गौडबाजिया आदि की गणना है। तत्कालीन समाज म ऐसे अनेक लोग थे। वे भाति-भाति से लोगों को चमत्कृत और चकित करते थे। वील्होजी ने "कथा दू एणपुर की" मे ऐसे सकेत किये हैं^७।

१०-निम्नवर्ग-भोल (नायक), बधिक, कसाई, "हडकुटा", भीवर, बाबरा, घोरी, भहेरी, मेघवाल (चमार), चडाल आदि नीच जाति के माने जाते थे। भोल निदयी होते (११-२४), भीवर जाल फलाकर पशु-पक्षी पकड़ते (वील्होजी कृत कथा जसलमेर की) और बाबरी प्रायः झूठ बोलते थे। हुजुरी कवि ऊदोजी नए के छप्पया से इन बाता का पता चलता है^८ (दृष्टव्य-कवि सख्या ३७, सदभ ६६, ६०)।

११-साधु वर्ग-इसके अंतगत हिंदू और मुसलमान-दोनों जातियों के गृहस्थाश्रम त्यागे हुए लोग, जोगी, सयामी, यति, पीर, फकीर आदि सम्मिलित हैं। साधुओं का मूल ध्येय तो सर्वत्र करना, तत्त्व और अध्यात्म का चिंतन और मान करना, तदनुसार जीवन व्यतीत करना तथा समाज म अध्यात्म, नीति का सदुपदेश देना था किन्तु उस समय अधिकांश साधु बने हुए लोग पाप बमों म लिप्त थे और धर्म के नाम पर पाखण्ड फलाते थे। धर्म के

१-मु हणोत नणसी की स्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १०१, १२९, कागी, सवत् १६६१।

२-वही, पृष्ठ २०४, १५६, ४१७।

३-वही, पृष्ठ ४७६-४७७।

४-(क) दयालदास की स्यात, भाग-२, पृष्ठ ६-७, बीकानेर, सवत् २००५।

(ख) पाउलट बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ३-४।

५-स्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १७७-७८, १९२, २८६, ३१३, कागी।

६-वामीदास की स्यात पृष्ठ २०९, राज० पु० म०, जयपुर, सन १९५६।

७-(क) भेनी कहै देवजी नहा सोभा, भाव कर गोडिया देव भाभा ॥ २२ ॥

(ग) एक समा मा कहै अश्वेनी, मा तो छ गोडिया री वरी ॥ २६ ॥

८-बपक कसाई हडकुटा, पर पिठ वाई छुरी।

दे यधेवो पाप ता ऊंग, देवो भीवर बाबरी ॥ ६ ॥

मूल तत्त्व के नाम पर केवल बाह्य वेग और क्रिया-बन्ध ही धम का प्रतीक माना जाने लगा था। सबदवाणी और जाम्भाणी साहित्य में स्थान-स्थान पर धम के नाम पर प्रचलित पाखंड की भत्सना मिलती है।

१२-स्त्री, बहु-विवाह, विधवा-विवाह, आचरण-राजपूतो म तो बहु-विवाह प्रथा प्रचलित थी ही, समाज के अग्र्य वर्गों के लोगों में भी थी। जाम्भोजी ने 'सौक और दुहागण' स्त्रियों का उल्लेख किया है (८३ २९)। व्यभिचार बहुत होना था। जन्मवाणी म इसके संकेत हैं (२५ २२)। इस हेतु पुरुष और स्त्री पराये घरों में जाते थे। अनेक हुजूरी कवियों का रचनाप्राप्त में इसका पता लगता है^१। पराये घर को नष्ट करने वाले व्यभिचारी लोग अपनी स्त्री भा त्याग देते थे। वे कूप में पड़ कर आत्म-हत्या भी करते थे^२। यही नहीं, भाग "कुवात" कह कर भी पराये घरों को उजाड़ देते थे^३।

समाज का उच्च वर्ग भी व्यभिचार से बचा हुआ नहीं था। मूला पुरोहित अपनी स्त्री और भानजे को व्यभिचार-रत देखकर अत्यन्त दुखी हो जाम्भोजी के पास जाम्भोजी लाव गया था। (दृष्टव्य-जाम्भाजी का जीवनवृत्त)। परायी स्त्रियों का हरण करके लोग उनको अपने घर बठा लेते थे। इसकी प्रेरणा स्त्रियाँ भी देती थी। पूले सारण की स्त्री मिनकी के कहलवाने पर पाण्डू गोदार ने उसका हरण करवाया था^४। रूप के स्वामी सीहड़ सांगले की बेटी सुपियारदे, जिसका विवाह जतारण के नरसिंह सिघल के साथ हुआ था, के लिखन पर नर्बंद सत्तावत उसको अपने गाव ले गया था^५। व्यभिचार की भाँति परायी नारी का हरण भी बहुत होता था। जाम्भोजी ने १८ दोषों में से एक दोष पराई नारी का हरण भी बताया है (सबद ५६, ६०)। बाल विवाह प्रचलित था। बाल्यावस्था में विधवा होने का उल्लेख हुजूरी कवि कोल्हजी चारण (कवि सख्या ६) ने किया है^६। विधवा विवाह होत थे।

१-(क) तजोजी चारण, कवि सख्या-१, गीत सख्या २।

(ख) सोव न जल सकल मन बधो ममतो। विपियावन हाडती, पालिय पर घरि जतो ॥

-उदोजी नग, छप्पय।

(ग) मने में चाले बरे डफोलों, पर घरि हाडि न जीम्यत बोलो। -डेल्हजी, माखी।

२-एक घर की नारी परहर, कुवा तकहि परघर भानणा।

एक गुर को बायक भटि, रूप विरप बोह छागणा ॥ २६ ॥ -ऊदोजी नग, छप्पय।

३-पोणे माह समार कियो उपगार न मान।

पोणे मोह समार कुनात कह पर घर भान ॥ २८ ॥ -ऊदोजी नग, छप्पय।

४-(क) पाउलट बाकानेर स्पेट गजेटियर, पृष्ठ ५, बीकानेर, सन् १९३२।

(ख) घोभा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ९७-९९, मन १९३०।

५-मुहू गोत नगमी का स्मृत, द्वितीय खण्ड पृ० १२२-१२७, काशी, सवत १९६५।

६-नारायण हा देव जाण्य तजर नेम गुदार।

घडत मज काय, भजि घड बले सुधार।

माय पून बोछोडि बालका देह दुवाव।

एह काचा ही तोडि, पूलितवा काय सुवाव।

बाणी दह रडेपडो, बनि बालापणि क रहे।

दया नहा तह देव न, नारायण कोल्ही कहे ॥ १०८ ॥ -हस्तप्रति मख्या २०१।

उनका 'नाता' होता था, 'चूडा' पहना कर उनको पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया जाता था^१ । विवाह का मुहूर्त (सावा) चाहे जसी भी परिस्थिति हो, अटल रहता था (मन्व-वाणी ११६ ३) । कन्यादान का महत्त्व था (१०० ६) तथापि लोग बहन, भागजिया के विवाह के बदले रुपये भी लेते थे^२ ।

१३-गोठ, 'जागर, जमला' चोरी, डाके-मनचले लोग गोठ करते, कुकर्मों में मूखों को भ्रमाते और उमम हंसी-मजाक किया करते थे^३ । गोठ के अतिरिक्त 'जागर' और 'जमले' होत थे (दाना में अन्तर के लिए द्रष्टव्य-विष्णोई सम्प्रदाय नामक ग्रन्थ) । लाग 'जमले' में न जाकर 'जागर' में बड़ी प्रसन्नता से जाते थे । ऊन्नीजी नए, सममन्तन, वील्होजी आदि कवियों ने 'जमले' में जान का आग्रह किया है । इनके उल्लेखों से यह भी स्पष्ट है कि लोग अपने मनोरजनाय अनेक कुकर्म, पाप और जीव-हत्या करते थे । चोरी बहुत होती थी । लाग मौका देखकर हरे-भरे वाग और छत में चारी कर लत थे (द्रष्टव्य-कवि सत्या २, ४०) । पशुआ का भी चारी होती थी, खोजी (खोटा देखकर) उनका पता लगाते थे (४६ १) । ठगी होता थी^४ और 'धाडे' (डाके) भी पड़ते थे^५ । गरीब लोग मजदूरी करते थे किन्तु उनका पेट कठिनाई से ही भर पाता था । अन्नान पड़ने पर जब अन्न महंगा हो जाता, तो वे 'जीवारी' के लिए बाल-बच्चा सहित अग्रथ चल जाते थे (ऊन्नीजी नए, सन्म-५५ तथा वील्होजी कृत कथा गुगलिय की) । भिखारियों की सहायता कम नहीं थी (सर्वद १५) ।^६

१४-आचार विचार, खानपान-तत्कालीन समाज में रहन-सहन और खानपान की शुद्धता नहीं थी । इस पहलू पर जाम्भोजी और विष्णोई कवियों के अनेक उल्लेख मिलते हैं । जाम्भोजी ने पवित्रता पर बड़ा जोर दिया है । लोग मद, मास, अफीम और भाग का अवाध प्रयोग करते थे । जब से तम्बाकू इस देश में आई, उसका यहाँ भी प्रचलन हा गया । सम्प्रदाय के २६ धर्म नियमों में इन पाँचों का प्रयोग वर्जित है ।

१५-अफीम-राजस्थान के राजपूतों में प्राचीन काल से ही अफीम खान का बहुत प्रचलन था, यहाँ तब कि अतिथि का आदर-सत्कार भी अफीम खिलाकर ही किया जाता था । आग्नातीज, टोली, दीपावती आदि त्योहारों और सगाई विवाह के अवसर पर पानी

१-मात न बीज हीय कडो, सील विणि नारी पहराय न चूडो ॥ २५ ॥ डेल्हजी साखी,

२-बहण भागजिया री त्य भाडि और माहि पड ला धाडि ॥ ४ ॥ वील्होजी, साखी ।

३-पाच सात कु मना मिल, माठ गोठ विचारि ।

कर विमण सू प्रीति, सील की कर पवारि ।

मुरण का मन भोलव, धाति कुग्रधि की पासि ।

पानी ठेक मसकरी, पानी बाजा अर हासी ।

परो उभगारी माप गुर, जिह को कह्यो न मानहा ।

वरज्या पय अणति क, वो ट कहै चाल्या तही ॥ २२ ॥ वील्होजी ।

४-एक जगि फिर टग चोर टग हड वसत पराई ।

टगि और पडि जाति जित चाल नवो टगाई ॥ २६ ॥ -ऊन्नीजी नए छप्पय ।

५-माप मागे न हाई मोर । पेने धाडि न लागे चोर ॥ ५८ ॥ -वील्होजी, कथा गुगलिय की ।

६-इयामतदाम वीरविनो पृष्ठ २०६ ।

म अफीम धोल कर मेहमानों को पिलाने की प्रथा थोड़े वर्षों पूर्व तक भी बहुत प्रचलित थी^१ । यहाँ का सनिक जातियाँ-राजपूत, जाट और गुजर-में युद्ध के अवसरों पर पहले अफीम का प्रयोग औषधि के रूप में मलमूत्रावरोध के लिए होता था, बाद में फिर युद्ध के अवसरों पर भी अफीम सेवन होने लगा और इस प्रकार इसका नशा धीरे धीरे अनिवाय बन गया । समाज के अर्थ लोभों में भी नशे के रूप में इसका प्रचुर प्रचार हो गया । यही कारण है कि राजस्थान में इसका प्रयोग बहुत अधिक है । इतिहास ग्रन्थों में इसके सेवन के अनन्त उदाहरण मिलते हैं । जायपुर के राव गागा अफीम बहुत खाते थे, अफीम की पिनक में ही उनकी मृत्यु हुई^२ । बूदा का राव नारायणदास (संवत् १५६०-१५८४) अफीम का बहुत ज्यादा नशा करता था । उसके अफीम सेवन की अनन्त दंतकथाएँ भी प्रचलित हैं^३ । इसका पुत्र राव जयमल भी अफीम का बहुत नशा करता था । अफीम न मिलने के कारण मृत्यु होने के उल्लेख भी मिलते हैं । ईश्वर का गोपीनाथ जगल में अफीम न मिलने के कारण मर गया था^४ । अफीम खाकर भालिया भी का जाती थी । विन्म संवत् १६६० में राजा भगवानदास की बेटी शाहजादे सलीम की बड़ी बेगम, अफीम खाकर मरी थी^५ । जब राणा रायमल का पुत्र जयमल बदनौर व सोल्का राव सुरताण के पीछे चला, तो रावों के साल रतने ने अमल का मावा चढा कर रात में अकेले ही बरछा मार कर जयमल को मार दिया था^६ । गुजरात के सुलतान ने जब बितौड़ पर हमला किया तो राणी करमेती ने सात सहस्र स्त्रियाँ सहित अफीम खाकर प्राण त्यागे थी^७ । ऊर्ग उगमणावत के प्रसंग में नणसी ने लिखा है कि मेला सिखरा की स्त्री की चोरी काट कर वापिस गया, तो उसका अमल का पोता खुलकर गिर पड़ा था^८ । अक्बर के साथ युद्ध करने से पहले राठौड़ राव जयमल ने अपने हाथ से सरदारा को अमल पान कराया था^९ । प्राचीन काल से राजपूतों में यह रीति चली आती है कि भिन्न वंश के साथ का बर लटकिया ब्याहने से मिटाया जाता था और एक ही वंश वालों का परस्पर अफीम पिनाने से^{१०} । अफीम प्रचलन का पता विष्णुदाई कवियों की रचनाओं में भी लगता है^{११} । बाहोजी के एक छापय से विदित होता है कि उस समय में अफीम का नशा जन साधारण

१-जगदीशसिंह गहलात राजपूताने का इतिहास, भाग १, पृ० ८१ जोधपुर, सन् १९३७ ।

२-आमा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २८१, सन १९३८ ।

३-(क) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग पृ० ५३, सन् १९६० ।

(ग)-मु हगोत नणसी की कथात, प्रथम भाग, पृ० १०८, काशी, संवत् १९८२ ।

४-श्यामलदास बीरबिनोद, पृ० ९९६ ।

५-वही, भाग २, पृ० १८४ ।

६-मु हगोत नणसी की कथात, प्रथम भाग, पृ० ४५, काशी ।

७-वही, पृ० ५५ ।

८-वही, पृ० २२७ ।

९-ठाकुर गणानसिंह जयमलवाप्रकाश, प्रथम भाग, पृ० १३९-१४० ।

१०-गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृ० ८५ ।

११-मुट्टी बोटी लाकली, तापे फिरें तुवार ।

म मन पटो घोपी हवी, काया करत हार ॥ १०६ ॥-कील्हजी धारण, कवि सख्या ६ ।

तथा मत्स्यजी कविया (कवि सख्या ३८) भी द्रष्टव्य ।

मे फल गया था। यहाँ तक कि अफीम न मिलने पर लोग अफीम के छिलके को ही बूट पीटकर नशा करते और दिनभर मस्त पड़े रहते थे^१।

१६-मद्य-मास, जीवहत्या-राजपूत, जाट, गुजर आदि मास मद्य रात-पोत थे। सनिक जातियों के अतिरिक्त जन साधारण म भी इनका प्रयोग होता था। वामपथी शाक्तों के पशु हिंसा और मद्य मास का प्रयोग था^२। यहाँ के कानानो का तो व्यवसाय ही शराब बनाना था^३। अफीम की भाँति शराब भी मृत्यु का कारण हुई है। गुजरात के सुल्तान मुञ्जफरशाह ने अपने पुत्र तातारख़ा को शराब में जहर मिलवाकर मरवा डाला था^४। अत्यधिक मस्तिष्क पान के कारण सवाई राजा मानसिंह का ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह सवत १६५६ म मर गया था। इसी कारण सवत १६७८ म आमेर के शासक राजा भार्वासिंह की जीवनलीला समाप्त हुई^५। मेवाड के कुंवर अमरसिंह की भटियाणी रागी को शराब का शौक था^६। नगुसी न मनेक स्थलो पर शराब के प्रयोग का उल्लेख किया है^७। तत्कालीन समाज म जीवहत्या का अत्यन्त व्यापक रूप में प्रचार था, जिसका बड़े कठोर और प्रबल शब्दों म विरोध जाम्भोजी तथा विष्णोई सिद्धों ने किया है। पीयासर के निकट नागौर म तो मुसलमान जीवहत्या करते ही थे, यहाँ तक कि जाम्भोजी की बाल्यावस्था म-सवत १५१५ म, हिन्दुओं का दिल दुवाने के लिए उन्होंने गौहत्या भी आरम्भ की थी। यह अत्याचार देख कर मेवाड के राजा कुम्भा की नागौर पर चढ़ाई करनी पड़ी थी। रागा कुम्भा के अन्तिम दिनों म उनक उमाद रोग के सम्बन्ध में किसी चारण द्वारा कहे गये एक प्रसिद्ध छप्पम में भी इसका उल्लेख है^८। जाम्भोजी ने स्पष्ट कहा है कि काजी और मुल्ला मोहम्मद के नाम पर जीवहत्या करते थे, वे "मुरदार" (सवद १०) थे। यही नहीं, वे गाय, बल (८ ३-४, १५ १६) तथा अण्ड पालतू और निरीह जीवों की भी निममता से हत्या करते थे (सवद ८, ६८)। बविराज श्यामलदास के अनुसार, काबुल की ओर जाते हुए हुमायूँ के असलमेर के इलाके म गौहत्या करने पर बहा के राजपूतों ने लड़ाई की थी^९। मोका मिलन पर मुसलमान लो गौहत्या

१-मूढ मगध अग्नियान साथ मडली न सोहै ।

नवगि जाप न कर वसि छोतरा कचोहै ।

जाहा कयिष ग्यान ताहा डुकडो न आव ।

जे पीगि वने आय ठक ममकरी चलावै ।

कुमत कुनछग पावड या वरज्यो रहै न पानियो ।

ततोमा मू ताहि कर बोल्हा चौईमा णि चालियो ॥ २१ ॥

२-"वामननाम वारविना" पहला भाग पृ० १४३।

३-"उग्रग्यान त्रिपिया" राष्ट्रस्थान की जातियाँ, पृ० २०८।

४-मोना उग्रपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय खण्ड, पृ० ५८४-८५ प्रथम संस्करण १५।

५-डा० रघुवीरसिंह पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० ८७, ९३, उदयपुर, सन १९५१।

६-"वामननाम वारविना", द्वितीय भाग, पृ० ६७३।

७-स्थान, प्रथम भाग, पृ० ८१ १०६ आदि, काशी सवत १९८२।

८-(क) श्यामलनाम वारविना" प्रथम भाग पृ० ३३१ ३३३-३३४।

(ख) धामा उग्रपुर का राज्य इतिहास खण्ड-२ पृ० ६१८ ६३३।

९-"वारविना", द्वितीय भाग पृ १२९।

करते रहते थे^१। गौ के अतिरिक्त अन्य जीवो-भेड़ बकरी आदि की भी हत्या होती थी (७ २-३)। मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जातियां भी इन जीवों को मारा जाता था। राजपूत भी जीव हत्या करते थे (वील्होजी कृत कथा गुगलिय की, छंद ५, ६, और २०)। बकरा को मारकर खाने के अनेक उल्लेख नएसी ने किये हैं। गोठ में तो बकरों की हत्या अनिवाय सी थी। राव रणमल ने अन्य वस्तुओं के साथ ४० ५० बकरे मार कर घूँटा के साथ गोठ की थी^२। खेतसी चूँडावत ने गोठ के निमित्त बकरा को मारा था^३। मोहित पट्टहार ने १६ बकरे मार कर गोठ की थी^४। इसी प्रकार के और भी अनेक उल्लेख मिलते हैं^५। जाटों में गोदारों और सारणों की आपसी अनवरत का उल्लेख कर आया है। सारण पूतों और उसकी चौधराइन मिलकी के आपसी मनमुटाव को मिटाने का सारण जाटों ने विचार किया और इस हेतु एकत्र होकर उन्होंने बकरे मारे, मदिरा भगवाई और गोठ की। राजपूत देवी पर बलि के निमित्त भी जीव हत्या करते थे^६। यहां के ब्राह्मण और वदय मद्य माग नहीं खाते थे^७। हिंदू और मुसलमान गृहस्था के अतिरिक्त साधुव्रत में भी बड़े रूप में जीवहत्या प्रचलित थी (१४ ११-१२, ४६)। वील्होजी कृत कथा जमलसेर की से प्रतीत होता है कि जाम्भोजी ने रावल जतसी से चार बर पशुओं की रक्षा से सम्बन्धित ही मागे थे। अशौच की भांति समाज में मास और मदिरा का प्रवाह प्रचार था। यहां की अन्य जातियां भी मांस मद्य खाते पीते हैं, यहां तक कि गौ-मांस भी खाते हैं^८। बसाई केवल मुसलमान हैं जिसका व्यवसाय मांस बेचना और खटिक का खान पकाना है^९। ये परम्पराएँ एक दिन का परिणाम नहीं हैं, इनका प्रचलन बहुत पुराना है।

१७-भाग और तम्बाकू-इन का प्रचलन भी यहां खूब रहा है। गोरखवानी में भाग-प्रयोग की भत्सना की गई है (पृ० ६६, छंद २०८, प्रयाग, सवत २००३)। नगर निवासी ब्राह्मणों में तो भाग पीने का रिवाज बहुत ज्यादा रहा है^{१०}। विद्वानों के अनुसार तम्बाकू सबसे पहले सवत १५५५ (सन १४६८) में कोलम्बस भारत में लाया था। जाम्भोजी की विद्यमानता में राजस्थान में इसका प्रचलन हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है (दृष्टव्य-कोगी भण, कवि सख्या ३७)। जाम्भोजी ने मानव और समाज की सर्वतोभावेन उन्नति को ध्यान में रख कर ही इन पाँचों के प्रयोग का सबंध निषेध किया था। वे समाज-सुधार,

१-श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ४०१।

२-मुहम्मद नएसी की रूपांत, प्रथम भाग, पृ० २४, काशी।

३-वही, पृ० ३७।

४-वही, पृ० २२२।

५-वही, पृ० २२५-२६ तथा द्वितीय खण्ड पृ० १४३, २०२ आदि।

६-श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० ३४१।

७-वही, पृ० २०७।

८-बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०-४१।

९-वही, पृ० २११-२१२।

१०-श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० १०१।

उन्नति और आत्मोत्थान का सदेश लेकर आये थे। मात्रक पदार्थों के सेवन से मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्ति का ह्रास होना है, वह अयोग्य और अकर्मण्य बनता है। आपना फूट, यमनस्य, बलह और असाति इहा आदत्ता का दुष्परिणाम है। वाल्मीकी ने भी इनका प्रयोग करन वाला का दुरी तरह धिक्कारा है^१।

१८-जाटों का विशेष उल्लेख-विष्णोई अधिजातन जाट जाति में उन हैं। विष्णोई-रचनामा में जहां मयूचे समाज की विभिन्न गणना का पता चलता है, वहाँ जाटा से सम्बंधित कतिपय विवरण मिलते हैं। वही पता चलता है। वही ही उल्लेख ही जान घाल, लडावू, झूठ, मूय और अजाती है^२। वे न पवित्रता रखते, न स्नान करते, न 'जीवारा' देकर बोलते और सुभाषण तो करते ही नहीं थे; "हो-हो" जैसे जोर में बातें थीं। व दुरी-दुरी आदत्ता के शिकार थे और निर्वाण जीव त्याग करते थे। पुष्य, सत्य, नील, सतोष आदि गुणों से वे एकदम हीन और अज्ञता में जीवन बिताते थे (ऊदोजी ग्रन्थ, सम्प ५८)। विष्णोई कवियों के ऐसे अनेक उल्लेख मिलते हैं। बीम्होजी ने जाटों के "जीवारा" देकर बोलने में आश्चर्य प्रकट किया है^३। केवल जाटा-पर ही नहीं समाज के अधिकांश सतिहर और उनसे सम्बंधित लोगों पर भी यह बात लागू थी।

१९-समप्रदाय में समाज, जाम्भोजी के काय-जाम्भाणी साहित्य के आधार पर साप्सुहिव रूप से तत्कालीन समाज के सम्बन्ध में कतिपय सामान्य बातें कही जा सकती हैं।

लोग केवल भौतिक सुख, धार्मिक और समृद्धि की ही कामना और तदनुसार कार्य करते थे। ऐसे अनेक लोग और कामनाओं का जाम्भोजी ने बड़ा यथाप उल्लेख किया है (मबद ८३, ८६)। सभी भौतिक सुख-समृद्धि ही चाहते थे, मोक्ष प्राप्ति का माग बाद नहीं हुआ था। लोग आयु से बड़े और कुल से उत्तम माने जाते तर्था गुरु-दशान से ही अपने को सिद्ध समझने लगते थे (२४ २-५)। वे आचार-विचार हीन और पतित थे, धर्म, शील, सयम आदि का पालन नहीं करते थे (२१ २१)। झूठ से डरते नहीं थे, कडकवर बोलते थे, उनको ज्ञान तत्त्व का पता नहीं था और भूत की भाँति 'भडकत' थे^४। भल बोल तो वे

१-वरज्या सतगुर साम्म, कु मल कुकरणी करता ।

मद मास पातली, भाग पाहि विसरदा ।

वरज्या गोरप नाथ, वरज्या वेदली तीधकर ।

वरज्या विसन मुरारि, वरज्या अबलिष एकडर ।

मूत कुराण पुराण मा, बोल मापि मु जा लमी ।

अतना की सोप मानी नहीं, तरो कालो मु ह रे आदमी ॥ २३ ॥

२-जाट मगो करि जीमग बसाला, तिलि रो भडकि विगाबी ॥ १५ ॥

धू नगाई मग लट विरिया नजिया ह बल जोबी ॥ १६ ॥-रेडोजी, साखी ।

३-गडऊ अचमी बात, जाटा जीवार वाणी ।

जाट तारारी भण्णी, नर बोलता होकरि ।

मुनुधि, माष, सतोष न्यगा, पुरेप अथवा नारि ।

पालटी कुपरि कुवाण्य मही, हूरा सवकि मुजाण १-साखी ।

४-रू न डर कडकता बाल भव बीणि भार अथरवण सोल ।

भद वे विना भक्व ज्या भूता, जनम हारि वे दीन विगूता ॥ ५ ॥-रायज, साखी ।

जानते ही नहा थे, सदा-पाप की बातें ही सुनते थे^१ । जब बोलते थे तब कुचवन ही बोलते और सगनि भूर्खों की करते थे (कवि मध्या ४०, साखी) । उनको ठीक और ढंग से बोलना नही आता था । वील्हाजी कृत "सच अपरी विगतावली" और बेसोजी कृत "कथा विगतावली" तो इसी विषय को ही लेकर लिखी गई हैं । और तो और अनेक लोगो को झूठ और सत्य सब का पता नही था, ^२ न ही वे अभिवादन-करना जानते थे । जीम का "जीकारा" भोग लगता था^३ किन्तु इसका लोगो में अभाव था^४ । वे मन-हठी, सदा वाद-विवाद में उलझे, सगम में डूबे और अपनी ही बात पर अड़े रहते थे (१५ १३, ८) । उनका मन-भावनी बातें तो बहुत-पसंद थी किन्तु खरी बातों का कोई विश्वास भी नही करता था (६ १४-१५) । गाने-बजान सब वे खुश होते थे (६६ १३) । वे व्यभिचार और जीव हत्या में रत रहते और परायी निगा करते थे (दृष्टव्य-तेजोजी के गीत) । लोग खूब डटकर भोजन तो करत थे (११ १८, २४ १) किन्तु अधिकांश कुछ भी उद्यम न कर बेकार घूमते फिरत थे । बिना कोई काम किए दरिद्रता दूर होने का कोई उपाय नही था^५ । इसी कारण जाम्भोजी ने प्रत्येक परिवार को जीविका के लिए कुछ न कुछ अपने हाथ से काम करन का आदेश दिया है (६५ ५, ७५ ७) ।

जाम्भोजी ने सोना, कपडा, घो, तेल, हाथी, घोडा तथा कथा-दान आदि से भी कर पवित्रता रखना, नित्य स्नान करना और शील का पालन बताया है (१००, ११४ आदि) । समाज में सामान्यतः हिंदू शास्त्रो और सत्कारो पर आस्था थी किन्तु व्यापक प्रचलन उनके विपरीत रूप का ही था । सूय के समुख धूकना, ब्राह्मण को निमंत्रित करके भोजन न मिलाना, उमकी अनेक सोडना, चरती पीती गरि को डराकर भगा देना आदि जाम्भोजी ने दोष माने हैं (५९, ६०) । कही कही ममाज में "कथा" कही सुनी जाती थी । कथा से तात्पर्य पौराणिक कथाओं में प्रतीत होता है । हिंदू और मुसलमान धर्म का असली तत्व न समझकर भ्रमण में लडते थे (दृष्टव्य-वील्हाजी) । लोग भ्रम की श्रंखला में बंधे अपने कुल की लीक पर चलते थे । गलत हो या सही, कुल की लाज का उनको बडा ध्यान रहता था^६ । अना-

१-परम न धरियो ध्यान, पाप वाने सामलियो ।

मलो न जाण्यो बोल, चवो विष पारो अलियो ॥ २१ ॥ -उदोजी नए, छप्पय ।

२-नाच झूठ की न लहें सध्य, मयसा रही पाप सू वध्य ॥ १० ॥

-वील्हाजी, कथा गुगलिय की ।

३-मीठी जीम जीकार, गाठि प्यडता की मीठी ।

माण्व मीठी पाट, माहि मीठी अगीठी ॥ १०४ ॥ -वील्हाजी चारण, छप्पय ।

४-विसन बीणि केवल ग्यान, अवर कु ए दूजो त्याव ।

अवूम बुभाव कूण, कूण मु छ जीकार बुलाव ॥ ४६ ॥ -उदोजी नए, छप्पय ।

-५(क) उदिम कर रे आदमी, उदिम दाल्यद जाय ।

जीम विसन को नाव ले, अहनि स साम्य धियाय ।

(ख) कथा क्रिया न छाडिय, कुवरम वल्लह नीवारि ।

विसन भगति बीरि आदमी, कूण पहुतो पारि ॥ ६ ॥ -वील्हाजी, विसन छनीसा ।

६-कन ग्यानी आय मित्यो भूला सुव भवीव ।

बाया सबल भरम का, वहै ज कुल की सोव ॥ ७ ॥ (गोपाग आगे दखें)

नापकार और मोह म पड़े हुए भी लोग झूठी लोक-लज्जा का ख्याल करते थे । जाम्भोजी और भय कविया ने इस तथाकथित दुनियादारों का त्याग कर हरि नाम जपन का बहा है । लोगों ने अतिथि-सत्कार तथा दान देने की आवश्यकता नहीं थी, जिसके लिए स्वयं जाम्भोजी ने प्रयास किया था । राय, राणा राज तो करते थे किंतु ये अधिवांस भ्रम म भूले हुए । लाग 'भभेदू' गाफिल और मूल थे । जाम्भोजी ने ऐसे मूर्खों को समझाया, चदण्ड पुस्तक को विनीत बनाया और सत्पथ पर जाने के लिए 'बहुरा' के आगे भी ज्ञान कथन किया । सबदवाणी से विदित होता है, कि जाम्भोजी ऐसे मूख और अज्ञानों लागा को राह पर लाने के लिए व्यग्र और चिंतित थे ।

समय लोग जबरदस्ती दूसरा की मजदूरी मार लेते थे । जानबूझ कर वे पाप-कर्म करते, हरे वक्ष काटत, बन जनाते और हनुमती स भी समोग करते थे । राम वे किमी की नहीं करते थे और मनी बात बन्ने और समभाने पर कडव कर बोलते थे । ग्रहभाव बहुत था । "कीड़े पायचे" पहन और टडो पगडी धाधकर अपनी छाया को निरखते चलत थे । विद्वाना म पासण्ड प्रचलित था । जाम्भोजी ने ज्योतिषिया को मूठा सिद्ध किया, पंडितों और काजिया का ग्रहकार चूग किया । 'ज्ञान-विचार बहुत कम लोगों के था । भुगत-

जड्या भ्रम व सकल, वहै ज कुछ की लाज ।

दरव गु माव इकरयो, सर न एकी काज ॥ १२ ॥-बील्होजी, कथा गुगलिय की ।

१-राव राणा भरम्य भूला, राज करता मालिय ।

गरीब रूपी पही पूरै तो गुर भायो भालिय ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी ।

२-गाफिल भूह्य रह्या भोलाव, करयो साथ जितायो ॥ ३ ॥

गाफिल थूल भभेदू सुरेया, कयो परच परचायो ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी ।

३-बहुरा आग ग्यान क्यो, गुर अबूक बुभाया ।

अ मला का गुर माण मल्या, गुर अनू नु वाया ॥ ३ ॥

-मुरजनजी (कवि सख्या ६९), साखी ।

४-लोह भकोड कर अनियाव, चादी चुगनी सू घरणी हियाव ॥ ३ ॥

वाहण भाणजिया री ल्य भाडि, दोर भाहि पडली घाडि ॥ ४ ॥

बसत पराई पडी लहाय, दाजि रहै मैला मन माहि ॥ ५ ॥

पूछी न कहै दिल रा चोर गुरजा तपी सहैला ठोर ॥ ६ ॥

मुरडि मजुरी राप ताणि, चिरिया माहि पडली हाणि ॥ ७ ॥

मुप ता वीय मदा कुवाणि, पापी पाप कु माव जाणि ॥ ८ ॥

रू पा तणी न पाल दया, वाड वनी कु भी भ पया ॥ ९ ॥

लोप वायक भेट आण, पाप वीय थ भाव हाण्य ॥ ११ ॥

मुभ्यागता न मेल तार थूला सरसा हुव पवार ॥ १२ ॥

जाति जण री न करे काण, पापी पाप कु माव जाण ॥ १३ ॥

धासामोम चाल घणो, रुडा न टाल रति आभीटणो ॥ १५ ॥

धाधापू ल रहै अचेन, ताह पाया ता हुव परेत ॥ १७ ॥

मोप तिया बोल कडकडी, दोर दुय सहित्य मपडी ॥ १६ ॥-बील्होजी, साखी ।

५-जबू दीप मा भूमजी, रच्यो परगट दीर्वाण ।

हक साध सेयो साम्य पय, के व थूठ घोचरया भजाण ।

दवजी त जोयस घात्या भूड, मल्या पिता का माण । (क्षेपाग आगे देखें)

मानी धम पर कोई मुसलमान और हिन्दू धम पर कोई हिन्दू नहीं चलता था। लोग लंगोट और बचन के पक्के तथा थे। नीच कम करने वाली धूत और 'दिनाल' स्त्रियाँ तो घर-घर में थीं किन्तु पतिव्रता और सती स्त्रियाँ तो कोई कोई ही थी। अपनी जाति के अनुसार काम कम ही लोग करते थे। न एकादशी रखते थे और न रोजा। धम त्याग कर सब अपन अह में रत और ममुखी थे। चारण, भाट, बनिये और ब्राह्मण-कोई भी अपने-अपने आचार और धर्म पर नहीं थे। अपनी राह त्याग कर वे अधर्मी हो गए थे' (दृष्टव्य-तेजोजी, कवि सख्या ५, गीन सख्या ५)।

जाम्भोजी ने ऐसे समाज के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया था।

धार्मिक स्थिति

(१) पीठिका-राजस्थान में विक्रम की ७ वीं से ११ वीं शताब्दी तक राजपूत जाति के कई वंश विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने यहाँ अपने-अपने पृथक् राज्य स्थापित किए। तत्पश्चात् भी स्वतंत्रता प्राप्ति तक यहाँ विभिन्न राजपूत घरानों का राज्य रहा। १० वीं शताब्दी से यहाँ मुसलमानों के आक्रमण आरम्भ हुए और जो समय-समय पर होते रहे, किन्तु जोधपुर के राव मालदेव के स्वर्गवास (संवत् १६१६) समय तक, धार्मिक-सामाजिक दृष्टि से मुसलमानों का प्रभाव यहाँ त्रिकुल ही नहीं पड़ा। इस प्रकार, एक दीर्घ काल तक राजपूतों का शासन रहने से, राजस्थान में अनेक तत्त्वों के समन्वय, सार-संचयन और मिश्रण से एक विशिष्ट प्रकार की संस्कृति का विकास हुआ जिसे हम मोटे रूप से "राजपूत संस्कृति" कह सकते हैं। धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम को प्रोत्साहन देना, बचन-पालन, स्वामि-भक्ति, भ्रान्त मान मर्यादा और आदर्शों का पालन, न्यायमान, सरणायत और टेक की रक्षा, प्रशिक्षण-भावना, युद्ध में विजय अथवा मृत्यु एक ही कामना, भागते हुए, घायल, पराजित, शमा-प्रायों और अज्ञातघान शत्रु पर सामान्यतः प्रहार न करना आदि राजपूत संस्कृति की अनिपय उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। यहाँ की धार्मिक स्थिति का सही निदर्शन राजपूत संस्कृति के सदम में ही किया जा सकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यहाँ की जनता के जीवन-दर्शन, पद्धति और निर्माण के मूल में धम और राजा-यो तत्त्व प्रधान रहे हैं। राजपूतों के शासन काल में धम और पूजा-उपासना के क्षेत्र में सबसे बड़ी दो बातें थी — (१) धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम मत को प्रोत्साहन और संरक्षण, (२) विभिन्न मंदिरों और देव-देवी मूर्तियों का निर्माण और जीर्णोद्धार। राजपूत राजाओं ने सभी धर्मों और मतों को सम्मान की दृष्टि से देखा और उनको पल्लवित-पुष्पित होने का शुभ्रवसर प्रदान किया। एन ही राज-परिवार में विभिन्न धर्मानुयायी सदस्य भी रहे, तथा पिता और पुत्र की धम-मापताओं में भी अंतर रहा किन्तु इस कारण उनके आपसी और जनता के संबंध में कोई फल नहीं पड़ा। लोक में भी यही सहिष्णुता रही।

बाजी तो हार्या अगियान, देवि पहनि का सुरांग ।

धरम नेम जरणा जुगति, व भचार उतिम क्रिया ।

सुरा मुपय कितना रल्या, कुगर कुपात दोर गया ॥ ४७ ॥—ऊदोजी नग, ।

(२) १६ वीं शताब्दी बिन्गोई कवियों के धार्मिक स्थिति विशेष प्रामाणिक उन्मुख जासभोत्री के साथ और मद्रास राजा के मन्त्र म गम्प्रनाथ के धर्म प्रमुख और साथ कवियों ने प्रमत्तवशात् मद्रास राजा भागिक स्थिति के विषय में धर्ममय मद्रास राजा जानना के मूलाकार निम्नलिखित है। इसका मतलब यह है कि गम्प्रनाथ ने जासभोत्री के पुत्र धर्म म धर्म मुक्त 'गंगा प्रवाहित मन्त्र' ३, मुगलशाह, गंग (पाग) और जन जिनका जन्म केतावा था तथा वे गम्प्रनाथ १५६३ ई. में विगत कविता उन्मुख राजा के प्रकार है —

१-मुसलमन जोग जिनपर ब्याह धर्म विचारण ।

रहें रिष सिध जोग बहु विष मन्त्र ग्यान सकारण ॥ १२ ॥

-जमेधर शोत्र, अज्ञात कवि सं० २९ ।

२-कलियुग च्यारयो धर्म एकटा पुरमाया ।

मुसलमन भा जण जोग जुगति दिनाया ।

जुगति जोगी की बताई मुसलि धारर सारथा ।

बागद बेत मद्र न धौगै, स न पाय भो पयो ।

उदा जांवा हया कवि मां, अगम पय चलाइयो ।

सभरायलि गुर आय चाल्यो, च्यारि धर्म पुरमाइयो ॥-साक्षा, अज्ञात कवि, सत्या २ ।

३-क्या पुण धर्मों वेय तेरा, ग्यान दिखू गुरक चिताइया ।

उमाइ देहा यसदा कल कवि कवि ग्यान गुणाइया ।

कथ्यो ग्यान गुर मन्त्र धर्म ग्यानी ब्रह्म जोइय न जोपियो ।

बाजो कतेव वेद धर्म जोगति जोगी खेनियो ॥-साक्षा, रायचन्द, कवि सं० ४० ।

४-गोरथ कह्यो सो जोग नियाल, दतायो दाख्यो सभ्यात ।

जन धरम जिनपर को धाणी, महमद कहो सो मुसलिमाणी ।

भागेन कह्यो किसन दीपाणि, सतगुर कह्यो स साच करि जाणि ।

सतगुर पायो मुक्ति न होय, ब्रह्म कथन जन रोसो कोय ॥ ७७ ॥

-क्या भीतारपाल, बीहोत्री

५-कहियो साच सुगुर को सुणी, च्यारि धर्म पुरमाया धणी ।

दान सोल तप भाव विचारि, सहज सतोप विमां दया धारि ॥ १५५ ॥

जोग ग्यान मन मा दिड रहै, मुप महमद को कलमू कहै ।

मुक्ति ब्रह्ममाणी लीय सभालि, जन धर्म जीय दया धारि ॥ १५६ ॥

-क्या विगतावली, बेसोजी ।

६-सुरजनजी, (संवत् १६४०-१७४८) (कवि सख्या ६९) के निम्नलिखित कथन —

क-निराहारी आय आयो च्यारि धर्म चलाइयो ।

नव पड पंत किरसाण जिहक, साच येती कोजियो ।

जोग जिनपर साच इल मां धर्म ग्यान चितारियो ।

सुरजन जन की चीनती, गुर सरणि पारि उनारियो ॥ ४ ॥-साक्षा सं० ८ ।

ख-धर्म भा की किरिया कहो, जरणा जुगति बताय ।

कलमा दाग कतेव सु णि, जण दया ठहराय ॥ २०० ॥-क्या भीतार की ।

ग-मुगर मेय घाप स काई, भद्र मेय षीज भलाई ।

द्व म जण जोगी बुलाणा, मिल मोर बाजो मुलाणा ॥ ५२ ॥-क्या परसिध ।

प-व भा सुच्चि मुसल कलम मया, जोगारभ जरणा जीव दया ।

तप, सोल, सतोप, पिमा जरणा, सुचील सन्न निहच करणा ॥ १८ ॥-छद ।

ड-सुरजनदास विचारि फहै, गुर च्यारि घरम को पय चलाई ।-सर्वया ।

इसक अनिश्चित सबदवाची तथा विष्णोई साहित्य से विदित होना है कि लोक म अथ अनक इतर दधी-देवताआ, क्षेत्रीय लोक वीरो और देवताआ का पूजा-मायता भी वडे परिमाण म प्रचलित थी । इसे सामान्यत 'पापण्ड पूजा' (कल्ट धर्मिण) कह सधत है । नीचे इस पण्डभूमि पर हम तत्कालीन धार्मिक स्थिति का सिंहावलोकन करते हैं ।

(१) हिंदू धर्म-हिंदू धर्म एक व्यापक नाम है जिसके अंतगत वदिक, औपनिषदिक और पौराणिक आचार-विचार, साधना, दशन और विशिष्ट 'धर्म-मायता सम्मिलित हैं । ईश्वरपूजा, यज्ञ करना, वग्ण-व्यवस्था आदि वदिक धर्म के मुख्य अंग थे । कालांतर मे यह अनक गाथाआ म बट गया और उसके स्थान पर पौराणिक धर्म प्रचलित हुआ^१ । राज-पूजा के विनाय उत्थान क साथ ही पौराणिक धर्म विशेष रूप मे पनपा । मध्ययुग म पुनर्जी-विन हिंदू धर्म की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ थी - (क) शंकर का मायावाद तथा (ख) अन्य वग्णव आचार्यों का भक्तिमार्ग । महा-प्रण्ड म १६ वीं शताब्दी तक इन दोनों का ही प्रभाव नग पना । जाम्भोजी की विचारधारा उपनिषदो और गीता से प्रभावित है ।

हिंदू धर्मागत राजस्थान म विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश आदि की पूजा और सेवा-उपासना प्रमुख रही है । इनके सम्बन्धित अनेक मन्दिर, मूर्तिया और शिलालेख मिलते हैं । सामूहिक रूप से १६ वीं शताब्दी तक यहा का लोक धर्म स्मात धर्म ही था जिनकी चचा आगे की गई है । इससे पहले उपयुक्त विभिन्न देवताओ की व्यापक मायता स्वरूप नीचे कतिपय प्रमाण दिए जाते हैं -

(क) विष्णु यहा विभ्रम सन्त पूव की दूसरी शताब्दी से भी पूव विष्णु-पूजा प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं । नगरी (मवाड) के शिलालेखा से मिड होता है कि विभ्रम सन्त पूव की तीसरी शताब्दी के आसपास विष्णु-पूजा होती थी और उसके मन्दिर भी बनत थे^२ । मवाड म विष्णु के प्राचीन मन्दिर चितौड, बाडौली, नागदा, आहाड आदि अनेक स्थानो म विद्यमान हैं, जिनम सबसे प्राचीन बाडौली का शेषगायी विष्णु का मन्दिर १० वा शताब्दी से भी पहले का बना हुआ है^३ । विभ्रम सन्त ७१८ के एक शिलालेख से 'अपराजिन की स्त्री यगोमती द्वारा तथा बीरवे के मन्दिर की दीवार मे लगे सन्त १३३० क शिलालेख से उद्धरण द्वारा विष्णु-मन्दिर बनाए जान का पता चलता है^४ । आबू के

१-ओमा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ १४१३ सन १९३२ ।

२-ओमा उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५८-५९, सन्त १९८२ । -६६

३-वही, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१३-१४ मन्त १६८८ ।

४-वही, प्रथम खण्ड पृष्ठ ४०४ ४७८ ।

अचलेश्वर मंदिर के पास मठ में लगे सवत् १३४२ के शिलालेख में वेद शर्मा द्वारा विष्णु मंदिर समूह की प्रशस्ति बनाए जाने का उल्लेख है^१। महाराणा मोकल ने चित्तौड़ में जनाप संहित विष्णु का मन्दिर बनाया था^२। वदनोर के बड़े दरवाजे के पास सवत् १५८४ का बना लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर है^३। देलवाडा के जन मंदिरा के समूह के पीछे की ओर विष्णु की मूर्ति पर सवत् १४६८ का अभिलेख मिलता है^४। भच्छू डला (प्रतापगढ़) में १४ वा गताब्दी के आसपास का बना विष्णु मंदिर है^५। बडौला (झगरपुर) के एक श्वेत पाषाण के शिवमंदिर के अहाते में विष्णु रूप सूर्य की लड़ी हुई चतुर्भुज मूर्ति है जिसकी लिपि अनुमानत ११ वीं शताब्दी की है^६। झगरपुर के महारावल सोमदास (विक्रम सवत् १५०६-१५३९) के स्वगवास के पश्चात् उसकी एक राणी हरखमदे ने बरजी गांव में विष्णु-मन्दिर बनवाया था^७। आसवाडा के तलवाडा और चौच (छाछ) में क्रमशः १२ वीं और १६ वा गताब्दी के ग्रामपाल के बने लक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर हैं^८। यहां के कलिजरा गांव में भी एक विनष्ट विष्णु मंदिर के बाहर सवत् १४४३ का एक शिलालेख है^९।

बुचकला (बिलाडा, जोधपुर) के बड़े मंदिर को विष्णु व किसी अवतार का मन्दिर बताया गया है। इसके सभामण्डप के एक स्तंभ पर मध्यमवत विक्रम सवत् ८७० का एक लेख खुदा हुआ है। पीपाड का विष्णु मंदिर विक्रम की नवीं शताब्दी के लगभग का बना हुआ है^{१०}। किराहू (मालाणी) के प्राचीन मंदिरों में एक मंदिर विष्णु का है। सेठ के राधोडजी के प्राचीन मंदिर के कितने ही स्तंभ १० वीं और १० वीं शताब्दी के बन हुए हैं। जावपुर के राव गागा, सिरौही से गगदयामजी (विष्णु) का मूर्ति लाए थे, जिसके साथ उसका पुजारी भी आया था^{११}। मडौर के किसी विष्णु मंदिर का सवत् ८९४ का एक शिलालेख जोधपुर-कोट में लगा हुआ मिलता है^{१२}। बूदी के हीडोली गांव में १० वीं शताब्दी के लगभग की बराह अवतार की मूर्ति है^{१३}। बीकानेर के राव सूर्यकरराजी ने जाम्भोजी व विष्णु होन हुए भी लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया था^{१४}। मोदवा के भाजियों में भी

१-श्रीभा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४८०-८१।

२-(क) वही दूसरा खण्ड, पृष्ठ ५८७, सवत् १६८३।

(ख) गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ २०६, मन् १६३७।

३-गोपालसिंह मंडिता जयमलवशप्रकाश, पृष्ठ ७, सन १६३२।

४-गहवाल राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग,

सिरौही राज्य, पृष्ठ २४, सन १६६०।

५-श्रीभा प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृष्ठ २६, सवत् १९९७।

६-श्रीभा झगरपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १५, सवत् १६६२।

७-वही, पृष्ठ ७१।

८-वही, पृष्ठ १४, २१।

९-वही, पृष्ठ २४।

१०-श्रीभा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३१-३२, सवत् १९९५।

११-श्रीभा मारवाड का मूल इतिहास, पृष्ठ १२६, मन् १६३१।

१२-श्रीभा राजपूताने का इतिहास, जिल्हा पहली पृष्ठ १६५-६६ स० १६६२।

१३-गहवाल राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग, बूदी राज्य, पृष्ठ २७, सन १६६०।

१४-श्रीभा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३, सवत् १६६६।

१० वा शताब्दी में विष्णु पूजा प्रचलित थी^१। जसलमेर के महारावल लखमणजी ने सवत् १४६४ में मरुता प्रदेश से स्वयं आविभूत लक्ष्मीनारायणजी की मूर्ति को नवीन मंदिर बनवाकर प्रतिष्ठित किया था^२। तब से राज्य के स्वामी थी लक्ष्मीनारायणजी और महारावल उनके दीवान माने जाने लगे^३। विष्णु के भवतारों का एक स्थान पर प्रदर्शन तथा उनके भवतार विषयक अनेक पृथक् मूर्तियाँ भी मिलती हैं^४। यही नहीं, बल्कि मातृकामो की भी प्रशंसा प्राप्त है^५। राजस्थान में विष्णु के अनेक नाम, रूप और भवतारों की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। भवतारों में नृसिंह, राम और कृष्ण-चरित पर राजस्थानी में सुन्दर काव्यों की रचना हुई है। सामान्यतः भवतार का अभिप्राय विष्णु के किसी विशेष रूप में प्रकट होने से लिया जाता है और वे जगत-पालक माने जाते हैं। विष्णु-पूजा की व्यापकता का एक बड़ा कारण यह भी है।

१. (ख) शिव—शक्ति देवता रुद्र शिव रूप में लोक पूजित हुए हैं^६। शिव-पूजा भी राजस्थान में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है और यहाँ कई प्रकार की शिव मूर्तियाँ मिलती हैं^७। बाडोली, मूंगयला, कल्याणपुर, हरस आदि प्राचीन स्थानों के शिवालय का प्रमाण प्रसिद्ध रहे हैं। कल्याणपुर (मेवड़) नगर के समूह से मिले हुए विष्णु सवत् की ८ वाँ शताब्दी की तिथि के एक लेख में कर्णभद्र द्वारा शिव मंदिर बनवाए जाने का उल्लेख है^८। माहेश्वर सम्प्रदाय चार हैं—पाशुपत, शैव, कालामुख और कापालिक। इन पाशुपत मत का केन्द्र गुजरात और राजस्थान था। पाशुपत मत के ऐतिहासिक सत्यापक का नाम लकुलीश या लुकुलीश है^९। भगवान शंकर के १८^६ भवतारों में लकुलीश काय भवतार माने जाते हैं। यहाँ के मनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थानों के प्राचीन शिव मंदिर लकुलीश सम्प्रदाय के हैं। कई शिव सम्प्रदाय के मंदिरों के द्वारों पर लकुलीश की मूर्तियाँ बनी हुई हैं जो पद्मासन स्थित और जन मूर्तियों की भाँति सिर पर केशों से आच्छादित हैं। उनके दाहिने हाथ में विजोरा और बायें में लकुट है। पहले इन मंदिरों के पुजारी

१-डा० कलाशचंद जन अन्वित सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ ३६४, -अप्रकाशित गोप-प्रबंध, राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर।

२-हरिदत्त गोविन्द व्यास जसलमेर का इतिहास, पृष्ठ ८१, सन १९२०।

३-(क) लखमीचंद तवारीख जसलमेर (तीना भाग), पृष्ठ ४६, सख्या १२८, जसलमेर, सन १८६२।

(ख) नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ४३७, काशी सवत् १६६१।

४-राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ८, अंक ४, सन १९५५, पृष्ठ ३-३६।

५-विशेष द्रष्टव्य-डा० यदुवर्णी शिवमत, विहार रा० भा० प्र०, पटना, तथा मण्डारकर ब्रह्मविष्णु, शक्ति आदि।

६-श्रीमती निबंध-संग्रह प्रथम भाग, पृष्ठ २१८ उदयपुर, सन् १९५४।

७-श्रीमती उदयपुर राज्य का इतिहास अथवा खण्ड, पृष्ठ १४१४, सवत् १९८८।

८-बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन, पृष्ठ ५४७-४८ बनारस सन् १९४८।

९-लकुलीश, कौणिक गाय, मध्य, कौर्य, ईशान, पारंगाय, कपिलाण्ड मनुष्यक, अपर-कुण्डिक, अथि पिगलास, पुष्पक बृहदाय, भगस्ति सन्तान, राशीकर और विद्यागुरु। -बही, पृष्ठ ५४८-४९।

कनेपट साधु होते थे। वे धारीर पर भस्म रवाते और ओज्यम धरावारी रहते थे। वातांत तैर म ईग सम्प्रदाय के साधु सकुलीश का नाम तीन भूत 'गण और स्वयं' के गारगनाय आदि के सिद्धा में मानने लगे। माहेश्वर सम्प्रदाय की एक शाखा का भाग्य पय क भन भुक्त हान का यह जीवन्त उपाहरण है। हरगनाय (शैवाचार्य) का गिवालय सकुलीश सम्प्रदाय का ही था जमा कि यहां के गिनालय में प्रयुक्त 'पषाथताकुलाभिमो' के स स्वर है। जोधपुर क चाटण गाय म ११ यो गताली के भासपाग का 'सकुलीश मन्दिर है। तुदवे के रावल विजयगवजी (गद्दी-नावत ११७६) ने विजडागर ताताव और गिव का मह्य-विग मन्दिर बनाकर बना यज्ञ किया था। इस धाराय का एक दोहा भी प्रसिद्ध है। महा रावल धरसीजी (गद्दी सवत् १४९६) ने भी रत्नेश्वर महादेवजी का मन्दिर बनवाया था। राजस्थान म राजासा, ठाबुरा एव गतो के स्मारक स्वरुप बनी हुई बहुसंख्य छत्रियों म भी गिव प्रतीक (लिंग) की ही स्थापना की गई है। अनेक पुराने पचायतन मन्दिरों म गिव की मूर्तियां भी पाई जाती हैं।

सकुलीश रावल नाथपथ-राजस्थान म सकुलीश गिव ही सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे हैं। मवदवाणी म अनेक बार रावल जोगियो का उल्लेख प्राया है। रावल शम् साकुल, तनुन का स्पातर है। रावल नाम से प्रसिद्ध योगियो की समूची शाखा वस्तुतः साकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय की उत्तराधिकारी है। राजस्थान के अतिपय नरना की उपाधि रावल रही है। इससे उनका सकुलीश सम्प्रदायानुयायी होना प्रमाणित होता है। यह रावल मादेश्वर, भागवत आदि के समान सम्प्रदाय का ही सूचक है, जिसको पुर्वि म निम्नलिखित प्रमाण दिये जा सकते हैं —

१-मेवाड म शिवपूजा दीवकाल स चनी आ रही है। यहां के स्वामी गिव की ही अपना उपास्यदेव समझते हैं। सुप्रसिद्ध उपास्य एकलिंगजी और भनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थाना क प्राचीन शिव मन्दिर सकुलीश सम्प्रदाय की ही हैं। बापा की रावल उपाधि उनको सकुलीश सम्प्रदाय का अनुयायी सिद्ध करती है।

१-(क) ओम्ना उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुस खण्ड पृष्ठ १४१५।

(ख) गोध-प्रतिष्ठा उदयपुर, भाग ७ अ क २, २ म श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल का लय।

२-वरणा, विसाऊ आरण सवत २००२ अ क म श्री भावरमल्ल गर्मा के 'गवावागी के गिलाख' निबंध की पाठ-टिप्पणी।

३-ओम्ना जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४७।

४-(क) लजमोचद तवारीख जमतमेर (तीनों भाग), पृष्ठ २७-२८ सन् १८९२।

(ख) हरिश्च गोबिन्द व्यास जसलमेर का इतिहास, पृष्ठ २३-२४।

यह सह हाल पापता भूप अनेक भाल।

आयो अणा उपायगी विजडागर रो पाल ॥

५-नवमाचद तवारीख जमतमेर पृष्ठ ४७।

६-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १५६ इलाहाबाद सन १९५०।

७-आम्ना उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३३७, ३६२, ३६४, ३६६, ४१५-१६, ४२६ तथा चतुस खण्ड, पृष्ठ-१४१४-१५।

२-सुन्वा (जसलमेर) के भाटी राजा देवराज की योगी रतननाथ ने राजतिलक करके रावल की उपाधि दी थी। वह घटना सन् १०६ की घटाई जाती है। इससे पहले इन यादव की नरेशा की उपाधि राय थी, किन्तु देवराज ने परचात् के रावल कहलान लगे। रावल जोगी रतननाथ वालों का मठ जसलमेर के बाहर है जिसको गणेशनाथ न मवत् १३०७ म बनवाया था। जसलमेर के किले म भा रतननाथ का धान है। देवराज के समय से स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक जसलमेर के नरेश गद्दीनशीनी के समय सबसे पहले जोगी का बंग धारण करते थे तथा उत्तमवी और गमी के कार्यों में नाथों का मत्कार सबसे पह होता था^१।

३-रावल मल्लीनाथ जिनके नाम से मालाणी प्रदेश प्रसिद्ध है, सिद्ध जोगी रतन रावल क भासावा^२ से रावल कहलाए थे। पहले इनका नाम माली था^३ (इनके विषय में आगे भी लिखा गया है)।

लकुलीश संप्रदाय के नाथ पथ के अन्तमुक्त हो जाने में दो प्रमुख कारण थे -उनकी वेद-भूषा और रहन-सहन तथा साधना और आध्यात्मिक दृष्टिकोण म ममानता। हमारा अनुमान है कि बनफटा नाथा ने अपना यह वेद लकुलीश सिद्धों से ही लिया है। यह सब-विहित है कि गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित और प्रचारित संप्रदायों म बनफटे जागियों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि यह सत्य हो, तो गोरखनाथ पश्चिमोत्तर या उत्तरभारत के किसी प्रदेश के मूल निवासी होने चाहिएं। दूसरे, योगी लोग शिव और गोरख में कोई भेद नहा समते। नाथ परम्परा म आदिनाथ शिव मान जाते हैं^४। राजस्थानी लोक कथाया म शिवपावती एक कथानक रूढ़ि के रूप में भी प्रकट हुए हैं। शिव की अनेक प्रतिमाएँ अघनारीश्वर भय की हैं^५। शिव-पावती अथवा लोक गीतों में भी चित्रित हुए हैं। राजस्थान म नाथपथ का जो विशेष जोर रहा उसके मूल म एक प्रधान कारण लकुलीश मता नुयायियों का कालांतर में बनफटे योगी सम्भवा जाना था।

रसेश्वर दशन-शिव दाशनिकों का एक संप्रदाय रसेश्वर दशन का अनुयायी है। इसका मुख्य सिद्धांत यह है कि जीव-भुक्ति प्राप्ति का उपाय दिव्य शरीर का पाना है जो पारद की मरम क सेवन स सम्भव है। पारद का दूसरा नाम रस है और यही रस ईश्वर है^६। जनल मेर क रावल देवराज की जोगी रतननाथ से एक रसकुप्पी प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है^७। यह इस बात का द्योतक है कि सम्भवत लकुलीश संप्रदाय वाले रसेश्वर मत म भी

१-(क) लखमीचंद तवारीख जसलमेर, पृष्ठ २२-२३।

(ख) हरिदत्त गोविंद व्यास जसलमेर का इतिहास पृष्ठ २७-२८।

२-वीकीदास की ख्यात, पृष्ठ ५ जयपुर, सन १९५६।

३-(क) इष्टयोग प्रदीपिका पहला श्लोक बम्बई, सवत, १९८१।

(ख) सिद्धसिद्धांत पद्धति पहला श्लोक और टीकाएँ पूरणनाथजी बोहर, सवत १९६६।

४-मरुभारती, पिलानी, वष ६, अ क २ में श्री रत्नचंद्र अग्रवाल का निबंध।

५-बलदेव उपाध्याय भारतीय दान, पृष्ठ ५६५-५६७, बनारस, सन् १९४८।

६-मुहणोत नणमी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २६४-२७४, काशी, सवत १९६१।

विश्वाम रसते थे। चपटनाय को रगायन सिद्धि का प्रवेशक बताया जाता है^१। बग रत्नाकर म चीरासी सिद्धा की सूची में चपटि का नाम (पृष्ठ ५७, सप्तम बालो) ध्यान से स्पष्ट है कि वे चौदहवीं शताब्दी के पहले भवस्य ही हुए थे^२। रसद्वय मत का प्रचार यहाँ विरोध नहीं रहा। जाम्भोजी के समय तक यह सम्प्रदाय नष्ट प्रायः या विलुप्त हो गया लगता है। तत्कालीन साहित्य में इसका विरोध समेत प्राप्त नहीं होता।

(ग) ब्रह्मा-सेठ, वसन्तगढ़ और चीन (छोड़) में ब्रह्मा के तथा दुप्तर और बीठू में सावित्री और ब्रह्मा के पुराने मंदिर हैं। सोयाडी (जोधपुर), किराहू, बिजोत्तिया, धामिया आदि स्थानों से ब्रह्मा की मूर्तियाँ मिली हैं^३। काहूदेप्रवाच के अनुसार जालौर में ब्रह्मा का मन्दिर था^४। ब्रह्मा के मंदिर होत हुए भी उसकी पूजा-उपासना और विभिन्न स्थानों का पता नहीं चलता। राजस्थानी काव्या में ब्रह्मा या 'देहमाता' का रूप में चित्रण किया गया है (द्रष्टव्य-डेल्हजी (कवि सस्या ३) श्रुत कथा भद्रमनी)।

(घ) सूय-राजस्थान भर में काफी पुराने समय से सूय पूजा प्रचलित रहने के कई प्रमाण मिलते हैं। विलोड़गढ़ का प्रसिद्ध पालिका माता का मंदिर सूय का ही मन्दिर था। आहाड, नादेसमा आदि स्थानों में प्राचीन समय के सूय के मंदिर और मूर्तियाँ मिली हैं^५। चौहान राजाओं के समय में सूय पूजा पर विदेशी प्रभाव था। तब भिन्नमाल इसका सबसे बड़ा केन्द्र था। आसिया, पोकरण, किराहू, बीठू और पाली में भी सूय की मूर्तियाँ मिली हैं। राणपुर, बामणौरा (मारवाड), घाटासी (प्रतापगढ़), तलवाडा (बासवाडा) वसन्तगढ़, वमाण (सिरौही) आदि अनेक स्थानों में प्राचीन सूय के मन्दिरों का उल्लेख मिलता है^६। सूय और उनकी पत्नी 'ग्यादे' (राज्ञी) के विषय में यहाँ अनेक लोकगीत प्रचलित हैं^७। लोक में प्रत्यक्ष देव सूय के स्तुतिगान में धदिक परम्पर का आभास मिलता है^८।

(ङ) शक्ति-वीर भूमि राजस्थान के निवासियों का शक्ति के प्रति निष्ठावान होने का स्वाभाविक है। शक्ति पूजा प्राचीन समय से प्रचलित है। राजपूत लोग प्रायः देवी के उपासक होते हैं और नवरात्र आदि अवसरों पर भक्तों तथा बकरों का बलिदान करते हैं^९। मवाड के भवरमाता के मंदिर में लगे विषम सवत् ५४७ के शिलालेख में गौरवगी शक्ति

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १४३, इलाहाबाद, सन १९५०।

२-बग रत्नाकर, भूमिका, पृष्ठ १६, कलकत्ता, सन् १९४४।

३-महाराष्ट्री, पिलानी वर्ष २, अंक ३ में "राजस्थान के प्राचीन ब्रह्मा मंदिर तथा ब्रह्मा मूर्तियाँ" निबंध।

४-डा० चरणधर शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २२६, दिल्ली, सन १९५६।

५-आभा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१५।

६-डा० चरणधर शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २३५।

७-गोधपत्रिका उदयपुर, वर्ष ६ अंक २३ 'राजस्थान की सूय प्रतिमाएँ तथा कतिपय सूय मंदिर' तथा बरदा बिसाऊ अंक ३४ में एतद् विषयक निबंध।

८-बरदा, बिसाऊ वर्ष २ अंक १ में "राजस्थानी लोकगीतों में सूय भगवान" निबंध।

९-मल्ला ऊया भाण, भाण तुहारा भामणा।

मरण जियण लग मारा, राखो वासिव राव उत ॥

१०-श्रीका उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ, पृष्ठ १४१६।

राजा योगपुत्र द्वारा देवी मंदिर बनवाय जाने का उल्लेख है। सामोली गाव के सवत ७०३ के एक शिलालेख से पता चलता है कि वहा के निवासी जेतक मेहतर ने अरुण्यवासिनी देवी का मन्दिर बनवाया था। गाँव से २४ मील पूर्वोत्तर में गोठ और भागलोद गाव की सीमा पर गाठ क निम्न दधिमति माता का मंदिर है, जिसके सवध का सवत ६६५ का एक शिलालेख मिला है^१। हुजुरी कवि (सख्या ३७) ऊजोजी नए इसी मंदिर के भोपे थे। ओसिया क सचियामाता के मंदिर में १२ वी सताब्दी की गदभवाहिनी शीतला की प्रतिमा है^२। ओसवाना की कुल देवी सचियामाता, महिषमर्दिनी का परिवर्तित रूप है^३। शेखावाटी की सकराय या शाकम्भरी माता का पूरा नाम शकग है, जमा कि प्राचीन शिलालेखा स प्रकट हाना है। वसतगढ तो शारदा और शक्ति का प्रसिद्ध पीठ रह चुका है। यहा की त्रिपुरा-भारती विख्यात देवी मानी गई है^४। यहा की शक्ति पूजा के सवध में यह उल्लेखनीय है कि इसमें मूल शक्ति पूजा के विधान का रंग गौण और प्रादेशिक रंग प्रधान है।

चारण-देवियाँ इस सदम में परम्परागत शक्ति पूजा के अतिरिक्त चारणों में उत्पन्न देवियों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। चारणों का उल्लेख अनेक स्थानों में प्राप्त है^५। चारणों की गणना देवयोनि में की गई है और सामान्य चारण को देवी पुत्र कहा जाता है। चारणों में उत्पन्न लडकी को "माताजी की सुवासणी", (देवी की सहोदरा बहन) कहने की प्रथा है। देवियाँ की स्तुति में 'नीलाख लोवडियाल' तथा 'चौरासी चारणी' पद का व्यवहार किया जाता है। तात्पर्य यह है कि देवी के ६ लाख साधारण और ८४ असाधारण अवतार हुए हैं। इन चौरासी चारणियों में पहली वाकलदेवी हैं। आवड, कामेही, बरवड, चाहणदे, महमाय, चालेराय, करणी आदि अय नाम हैं। इनमें आवड को बहुत मायता है, जिनका हिंगुलाज का अवतार माना जाता है। शक्ति संप्रदाय में देवी के चार सिद्ध पीठ हैं। पूब में कामाक्षा, उत्तर में ज्वालामुखी, दक्षिण में मीनाक्षी और पश्चिम में हिंगुलाज। हिंगुलाज की मायता चारणा में बहुत है। शक्ति के विभिन्न नामों पर अनेक चारण अपना नाम भी रखते हैं। राजस्थान में चारणों की बहुत बड़ी आवादी है। इन कवियों ने अनेक प्रकार से देवी-महिमा-गान किया है। देवी की स्तुतियाँ में चरजाओं का विशेष महत्त्व है। जाम्भाजी के समय में चौरासी चारणियों में करणीजी वतमान थी, जिनको आवड का अवतार माना

१-ओभा जोषपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३।

२-गोत्रपत्रिका, उदयपुर वष ६, अंक ४, "राजस्थान की प्राचीन मूर्तिकला में गदभवाहता 'शीतला' निबंध।

३-महामारती, पिलानी वष ३, अंक २, 'राजस्थान में सच्चिका देवी का वास्तविक स्वरूप' -निबंध।

४-महामारती, पिलानी वष १ अंक ३, म श्री राजेंद्र शंकर भट्ट का निबंध।

५-क) कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण बगभास्कर तृतीय राणि, ६२वां मधुख।

(ख) कविराजा भरवदान चारणोत्पत्ति मीमांसाभाष्य पृष्ठ ७८-१८०।

(ग) भवेरचंद मेघाणी चारणा अने चारणी साहित्य।

(घ) कविराजा इयामनदाम वीरगिनोद।

(ङ) कालिकारजन कानूनगो स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री पृष्ठ ३९-५०

दिल्ली सन् १९९०।

जाता है। इन देवियों में अनेक की बहुत ही प्रतिष्ठा हुई और चार को तो तन्त्रालीन चार राजपशा की कुलदेवियों का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ^१। बरणीजी का समय सन् १४१४-१५६५ है। इनके पश्चात् भी राज पश्चात् चारणा में अनेक देवियों के हान का उल्लेख मिलता है। राजस्थानी साहित्य का काफी भ्रम चारणों द्वारा रचित शक्ति काव्य के रूप में है। शक्ति पीठ में शक्ति के साथ भय का होना प्रकट किया गया है। भय पर भी रचनाएँ मिलती हैं। लोक में सात नारी मूर्तियाँ, जिन्का शिगुमा पर विष्णु प्रभाव माना जाता है, "महामाया", "जोगण्या", "मावतिया" आदि के नाम से पूजी जाती हैं और इनके निम्न दोने आदि भी विष्णु जाते हैं।

(च) गणेश-प्रत्येक राज्य के आरम्भ में गणेश को स्मरण करने अथवा उनकी पूजा करने की परम्परा दीर्घ काल से चली आ रही है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के आदि में "श्री गणेशाय नमः" लिखा मिलता है। ये विष्णुविनायक, ऋद्धि गिद्धि दाता और विद्या बुद्धि के विधायक माने जाते हैं। राजस्थान में गणेश की अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ भी मिलती हैं^२। राजस्थान की मूर्ति-शैली में गणेश का सप्रथम अंकन ईसा की ५वीं-६वीं शती में मिलने लगता है। उदयपुर क्षेत्रांतगत तनगर ग्राम के बाहर पारवा पत्थर की गणेश प्रतिमा, मारवाड़ का सबसे मद्र गणपति स्तम्भ, घटियाला के शक्ति भवन के स्तम्भ के ऊपर लिखित-लेखी में गणपति की स्तुति (नवीं शती) और सबसे ऊपर गणपति प्रतिमा आदि इस समय में उल्लेखनीय हैं^३।

(ख) स्मातमत-यद्यपि राजस्थान के राजागण प्रमुखतः शिव या वज्रेश्वर माने जाते हैं, तथापि वस्तुतः वे स्मात मतानुयायी ही थे। तीर्थ व्रत उपवास प्रधान, जाति बण विस्वासी, सब-देवोपासक मत को एक शब्द में स्मातमत कहते हैं। स्मातमत अर्थात् स्मृति निर्दिष्ट धर्म व्यवस्था को पालन करने में कल्याण मानने वाला मत। पुराण और महाभारत को भी स्मृतियों में गिना गया है^४। राजस्थान के अनेक पंचायतन मंदिर इसी स्मातमत की व्यापकता और प्रचलन का परिचय देते हैं। विष्णु, शिव, सूर्य, शक्ति और गणेश की पूजा पंचायतन नाम से प्रतिष्ठित है, और उसके उपामक स्मान कहनाते हैं। स्मात लोग पंचदेवोपासक हैं, वे शिव को भी मानते हैं। इनमें नृसिंह और बराह की पूजा भी प्रचलित थी^५। जावर, सीसारमा आदि स्थानों में विष्णु और शिव के पंचायतन मंदिर बने हुए हैं। ऐसे मंदिरों में जिस देवता का मंदिर मुख्य हो उसकी मूर्ति मध्य के एक बड़े मंदिर में और अथ मूर्तियाँ बाहर के भाग में परिष्कार के चारों कोनों पर बने हुए छोटे मंदिरों में स्थापित की जाती हैं^६। भोतिया

१-आवड़ लूठी भाटिया नामेही गोहाह।

श्री बरवड सीसोदिया करणी राठीडाह ॥

२-द्रष्टव्य-बरवा, बिसाऊ तीसरा और चौथा अंक।

३-महभारती, पिलानी, वय १५, अंक ३, अक्टूबर, १९६७, "राजस्थानी प्राचीन मूर्ति-कला में गणेश" -निबन्ध।

४-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी मध्यकालीन धर्म साधना पृष्ठ ६०, इलाहाबाद, सन् १९५६।

५-बही, पृष्ठ ३२, ४२।

६-भोतिया उत्तरपुर/राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१६-१७।

के मन्त्रियों म हरिहर और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के भाव व्यक्त किए गए हैं। किराहू, ओसिया, रायपुर, भालरापाटन और कामा की मूर्तियों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य का सम्मिश्रण है। रामगढ़ से प्राप्त एक आसन मूर्ति में विष्णु, शिव तथा शिव का सम्मिलित रूप है^१। १६ वां शताब्दी में इसका चरम प्रतीक महाराणा कुम्भा का अपने इष्टदेव विष्णु के निमित्त सन् १५०५ में बनाया गया विशाल कीर्तिस्तम्भ है। यह हिंदुओं के पौराणिक देवी-देवताओं का अमूल्य कोष है। कुम्भा विष्णु भक्त था। यह इसी से प्रकट है कि उसने कीर्तिस्तम्भ के अतिरिक्त कुम्भस्वामी और आदि वराह के जो दोनों ही विष्णु मंदिर हैं, बनवाए। उसके इष्टदेव एकलिंगजी होने पर भी वह विष्णु का परम भक्त था। उसकी प्रजा ने भी उसके समय में कई जन, शिव और विष्णु आदि के मंदिर बनाए। वह सब मता को सम-दृष्टि में देखता था^२।

धार्मिक सहिष्णुता-निरूपण — विभिन्न मत-मतांतरों के अनुयायी भी एक दूसरे के इष्ट देव और पूजा-पद्धति के प्रति आदर भावना रखत थे। इस सम्बन्ध में मेवाड़ के धूलैव कस्ब के केसरियानायजी का उदाहरण अनुपम है, जहाँ सभी धर्ममतानुयायी स्नान कर समान रूप से मूर्ति का पूजन करते हैं^३। इसी प्रकार डीडवाणा तहसील से प्राप्त ६-१०वीं शताब्दी की योगनारायण मूर्ति द्वारा एक नूतन भाव व्यक्त किया गया है जिसमें धार्मिक सहिष्णुता और सम-वय भावना का पता चलता है^४। हिंगुलाज की यात्रा और उसकी कामना शक्ति उपासक तो करते ही हैं, नाथपंथी योगी भी उसी भाव से करते हैं^५। इन हिंदू देवी देवताओं के मंदिरों, मूर्तियों और शिलालेखा आदि का उल्लेख यह तो सिद्ध करता है कि राजस्थान में उस समय में उनकी पूजा प्रचलित थी, एक शब्द में स्मात्तमत प्रचलित था किन्तु देवता-विशेष की विशिष्ट पूजा उपासना पद्धति तथा दशन और धर्म के स्वरूप का इनसे पता नहीं चलता।

(५) जैन धर्म-जैन धर्म के दो मुख्य भेद हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। विद्वानों ने लक्ष्य किया है कि इनकी बाह्य क्रियाओं में तो कुछ भेद है किन्तु तात्त्विक भेद नहीं है^६। राजस्थान के नरेशों ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया था। इसका उत्कृष्ट यहाँ चित्तौड़ के हरिमद सूरि (सं ८२७) द्वारा विशेष रूप से हुआ। उद्योतन सूरि और सिद्धांत सूरि इनके शिष्य थे। प्रसिद्ध है कि उद्योतन सूरि ने किसी समय अपने पास में रहे हुए ८४ शिष्यों को एक ही समय में आचाय-पद दे दिया। उन ८४ आचार्यों से ८४ गच्छों की स्थापना हुई। इनमें से किसी न किसी गच्छ के आचाय को प्रत्येक जन अपना कुलगुरु मानता है। गुजरात और

१-राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ४, अंक ४, "राजस्थान में विष्णु पूजा" निबंध।

२-श्रीमा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३५५, खण्ड २ पृष्ठ ६२१-२२, ६३६।

३-वही, खण्ड १, पृष्ठ ३४४-४५।

४-राजस्थान भारती, अंक ४, अंक ४ तथा राजस्थानी लोक सत्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ २०-२१, बिसाऊ, सन १९५६।

५-जी० एस० घुरये इंडियन सायुज, पृष्ठ १३६, बम्बई, सन १९६४।

६-डा० उमेश मिश्र भारतीय दर्शन, पृष्ठ १०२-१०४, सखनऊ, सन् १९५७।

पश्चिमी भारत में तपागच्छ और राजस्थान में रातर गच्छ के साधुओं का विगव प्रचार रहा। भद्रहिसपुर पत्तन में चर्यवागिमा के साथ सवत् १०८० में धाम्नाय में जिनचन्द्र मूरि के विजयी होने पर उनका सम्प्रदाय रातर गच्छ नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पश्चात् इस गच्छ में अनक आचार्य हुए। जाम्भोजी के समय में स० १५८२ में इस आचार्य परम्परा में जिन माणिक्य मूरि (स० १५४९-१६१५) पट्ट पर स्थापित हुए थे। उस समय इस गच्छ के साधुओं में विधिलाचार बढ़ गया था^१। राजपूत राजाओं द्वारा जन धर्म को प्रोत्साहन देने के अनक उल्लेख मिलते हैं^२। विद्वानों ने लक्ष्य किया है कि ब्राह्मण धर्म तथा मन्त्रि के क्षेत्रों में जन धर्म पर ब्राह्मण धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा था^३।

ध्यातव्य है कि विष्णु की १४ वां शताब्दी से जन धर्म केवल वं परम्परान्त ही रह गया था और उसमें निश्चित रूप में क्या जाति की प्रधानता थी^४। क्या में भी यह आसवाला और कुछ अपवाला तक ही सीमित रहा। यद्यपि राजस्थान में जन धर्म की पत्तने फूलने का पर्याप्त अवसर मिला तथापि उसका क्षेत्र धर्मगत सीमित प्रधानत आसवाला और व्यापारी वर्ग में ही रहा। लोक व्यापी धरातल पर वह कभी नहीं उतरा। जन कवि लोक प्रचलित क्या कहानियों और देशी रागा को अपना रंग में रंग कर जन दृष्टिकोण के अनुसार जन समाज के समक्ष रखते रहे। कतिपय अपवादों की बात दूसरी है। जाम्भोजी ने प्रथम वंश उस समय में प्रचलित अनक धर्म मतांतरों का उल्लेख-संकेत किया है, किन्तु स्पष्ट रूप से जन धर्म का नहीं। इसमें इस धर्म की सीमित मायता और प्रचलन का भी पता चलता है। सत्रहवीं शताब्दी में स्वामी हरिदास निरजनी ने जन धर्म की कटु आलोचना की थी^५।

(६) मुसलमान धर्म-जाम्भोजी के समय में मुसलमानों के दो केंद्र थे-अजमेर और नागौर, जिनका उल्लेख अत्र कर आए हैं। इनके सूबदारों-जमा मल्लूला और मुम्मना या नागौरी से जाम्भोजी के सम्पर्क-सम्बन्ध की चर्चा 'जीवन-वृत्त' के प्रसंग में हो चुका है। इन केंद्रों को छोड़कर राजस्थान में सवत् १६१५ (सन् १५५८) तक अत्र न तो मुसलमानों की वस्ती ही थी और न ही उनके साथ विशेष सम्पर्क ही होता था। राजस्थान का उसके पड़ोस के मुसलमानों की संस्कृति में ऐसा कोई बल या नूतनता नहीं रह गया कि उनसे तत्कालीन राजस्थानी संस्कृति पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव पड़ सकता^६। दान के क्षेत्र में इस्लाम की स्वतंत्र सत्ता नहीं ठहर सकती। इस्लाम में दान का जो कुछ था

१-(क) नाहटा वंश युगप्रधान श्री जिनचन्द्र मूरि, पृष्ठ १-१८, तथा प्रस्तावना-पृष्ठ ७० बलकता।

(ख) डा० दशरथ गर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२१-२२६।

२-श्रीमद् राजेंद्र मूरि स्मारक ग्रंथ खुशाला (मारवाड), सवत् २०१३, पृष्ठ ५४५, पृष्ठ ५६३, डा० वासुदेव उपाध्याय और श्री कलाशचन्द्र जन के निबंध।

३-बहा, पृष्ठ ५४७, डा० वासुदेव उपाध्याय, -राजपूताना में जन धर्म।

४-डा० दशरथ गर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२८।

५-श्री महाराज हरिदासजी की वाणी, मंत्र परीक्षा जोग ग्रंथ अरु विष्णु का अंग भाग १।

६-ग० रघुवीरसिंह पूर्व आधुनिक राजस्थान पृष्ठ १६-१०, ३७ उदयपुर मन् १९०१।

बहुत प्रचार हुआ, उसका अधिकार श्रेय सूफियो को ही है^१। दूसरी ओर मुसलमानों के अजमेर और नागौर पर अधिकार होने के बाद से प्राचीन मदिरादि नष्ट किए जाने लगे^२। उनका जीवन-दृष्टि, पद्धति, मान-मूल्य, आदश और साधन राजपूत सभ्यता से नितांत भिन्न थे। मुसलिम विजैताओं ने लूट मार तथा युद्धों द्वारा देश को उजाड़ा और मदिरो तथा राजकोषों से अपार धन लूटा। इस धन को उन्होंने बड़ी बड़ी सेनाएँ एकत्र करने और अपनी राजधानियों में भोग विलास मय जीवन बिताने में व्यय किया। वे अथवा अथवा लिय का भी कोई ध्यान न रखते और पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों का समान रूप से सहार करते, उन्हें दास बनाते और इस्लाम अंगीकार करने पर बाध्य करते थे^३। इस्लाम वास्तव में शासन चाहता है, हृदय का अनुशासन नहीं^४। उनकी युद्ध नीति भी राजपूतों के आदर्शों से भिन्न थी। ऐसी दशा में यहाँ उनका विरोध होना स्वाभाविक था। वे यहाँ की कमजोरियों से लाभ उठा कर नूटमार और साम्राज्य स्थापित करने में भी सफल हो जाते थे। मुहम्मद गौरी को भारत में लाने वाले व्यक्तियों में चिश्ती सम्प्रदाय के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का अभिशाप भी था जिन्होंने उससे पहले राजस्थान में भ्रमण किया था और उनकी राजधानी अजमेर में अपना अड्डा भी जमा लिया था। कहना न होगा कि सूफियों के शाप का अर्थ उस समय इस्लाम का आक्रमण ही होता था^५। भारत में चार सूफी सम्प्रदाय विशेष प्रसिद्ध रहे चिश्तिया, कादिरिया, मुहंजरवदिया और नवशरवदिया^६। इनमें चिश्ती सम्प्रदाय का स्थान विशेष महत्त्व का है। सूफी मत के अध्येताओं का निष्कर्ष है कि भारत में इस मत का स्थूल स्थापन १२ वीं शताब्दी से हुआ और मुगल शासन काल में इसका अत्यधिक प्रचार, प्रसार हुआ। इसका पूरा उत्थान मुगल शासन काल में ही हुआ^७। इस प्रकार, जाम्बोजी के समय तक राजस्थान में यद्यपि मुसलमानों के दो बड़े श्रेय और चिश्तिया सम्प्रदाय स्थापित भी हो चुका था, तथापि न तो मुसलमानों का और न ही सूफियों का कुछ भी प्रभाव यहाँ पड़ा। उल्टे, भारत में मुसलमानों के अधिकार के कुछ दिनों बाद से ही हिन्दू आचार-विचार, धार्मिक साधना आदि का प्रभाव मुसलमानों पर पड़ने लगा^८। यहाँ के वातावरण का सूफी कवियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि भावों के मिश्रण के साथ उन्होंने

१-चंद्रवली पाण्डे तसवुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २१४-१५ वनारस, सन १९४८।

२-आभा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ४१।

३-२स० आर० शर्मा भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास, पृष्ठ १६६, आगरा, सन १९६१।

४-चंद्रवली पाण्डे तसवुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ ८१।

५-चंद्रवली पाण्डे तसवुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २०६।

६-(क) रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३६, ४४३, वनारस, स० २०१३।

(ख) जी० ए० सुमान सूफीज्म इटस सेटस एण्ड आइस, पृष्ठ १६३-२०८, लखनऊ, सन १९३८।

७-डा० विमलकुमार जन सूफी मत और हिंदी साहित्य, पृष्ठ ८७-८८, दिल्ली, सन १९५५।

८-रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३३।

भाषा को भी धपनाया^१ ।

। जाम्भोजी के समय में यहाँ मुगलमानों में शयन पागण्ड और घाटेम्बर का प्रचलन और धत्यातारा या बोलवाला या गुरा के भाद्यों को भी उर्दूनि स्वेच्छा और स्वयं के अनुसार समझा और वाय रूप में परिणत किया। धर्म के सामान्य लक्षणों में विभिन्न समझ कर ही जाम्भोजी ने मुगलमानों को पटवारा था।

(७) नाथ सम्प्रदाय विष्णोई साहित्य के आधार पर निम्न-जाम्भोजी के समय तक हिन्दू धर्म के परचात् राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय विशेष प्रचलित था। जाम्भोजी के जीवन प्रमग में लोहापागल, लक्ष्मणनाथ तथा अन्य नाथ जोगियों का उत्पन्न किया गया है। सबदवाणी के २१ सबद तो नाथों के प्रति ही बह गये हैं। जाम्भोजी साहित्य और विष्णोई केसौजी और मुरजनजा की रचनाओं से नाथों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का पता चलता है—

१-नाथ जोगी गोगावरी तट पर 'जात' के लिए एकत्र होते थे जहाँ उनसे सबधित अनेक मामलों और प्रश्नों का निपटारा होता था। ऐसे ही एक अवसर पर लोहापागल ने जाम्भोजी को परास्त करने का बीड़ा लिया था, क्योंकि राजस्थान में नाथों की प्रतिष्ठादिना में विष्णोई सम्प्रदाय विशेष रूप से फल रहा था। उसी नाथ अनेक जोगी भी यहाँ पाये थे।

२-वहाँ पर अनेक प्रकार के जोगी एकत्र हुए थे। इनकी साधना-पद्धति, क्रिया-कलाप और वेगभूषा में भी अन्तर था।

३-सामान्यतः वे और विष्णोई राजस्थान के नाथ बन्धुके जोगी थे। कई मोती भी थे।

४-गृहस्थ और विशेषतः नारी के प्रति उनकी घृणा जावना थी। राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार को समझने के लिए ये सनेत महत्त्वपूर्ण हैं।

दक्षिणमुण्डी पात्रदयमात्रा-ध्यातका है कि पूर्ण कुम्भ के महापव पर अवधूत यागा भेष बारह पथ की प्रति द्वात्रशर्षीय पात्रदेव मात्रा गोदावरी तट पर अम्बक योगी मठ से आरम्भ होकर कद्री पहुँचती है। कद्री मठ की यह कर्मादा युग-युग से प्रति बारह वष के कुम्भ मेले में अम्बक से सुधारस्थित होकर चली आ रही है। इसमें १२-१८ के अवधूत योगी भाग लेते हैं। १२-१८ के शिव-गोरख योगियों में यह यात्रा पात्रयात्रा पत्र यात्रा, दक्षिणमुण्डी या कजलीमुण्डी नाम से प्रसिद्ध है^२।

पथ-सख्या अनुभूतियाँ-नाथ पथ के योगी १२ शाखाओं में विभक्त हैं जिनको बारह पथ कहने की प्रथा है। इनके सबध में कई अनुभूतियाँ प्रचलित हैं—

१-स्वयं गोरखनाथ ने परस्पर विच्छिन्न नाथ पथियों का सगठन करके उन्हें बारह शाखाओं में विभक्त कर दिया था^३।

२ शिव और गोरख दोनों ने ही १२-१२ पथ चलाए थे। गोरख ने ६ अपन और

१-डा० विमलकुमार जत सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृष्ठ ९०।

२-राज. चमेलोनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २१, १२, काशी, स० २०१३।

३-डा० हनारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १०।

६ शिव के पथ को तोड़ कर चतुर्मान की वारह पथी शाखा की स्थापना की^१ ।

३-शिव के १८ और गोरख के १२ पथ थे । पहले के १२ और दूसरे के ६ पथों को तोड़ कर गोरख ने आधुनिक वारह पथी शाखा रखी^२ ।

४-१८ पथ शिव के और १२ पथ गोरख के थे । कालांतर में १८ के योगी अत-हित हो गए और १२ के ६ पथी योगिया ने उन १८ का स्थान ग्रहण किया । इस प्रकार गोरख के १२ पथ के ६ शाखा वाले योगी ही शिव के १८ पथी बड़े जान लगे^३ । इस प्रकार योगिया की ३० शाखाएँ थी, जिसका प्रमाण दक्षिणभुण्डी योगी-प्रणाली में पाया जाता है ।

वारह पथ नौनाथ-विष्णोई साहित्य के विशेष सदस्य में तथा अथ उल्लेखा के आधार पर अतिम अनुश्रुति अपेक्षाकृत अधिक सगत जान पड़ती है । इन १२ पथों का विवरण इस प्रकार है^४ —

नाम	मूल पुरुष	स्थान
१ सत्यनाथी	ब्रह्मा	भुवनेश्वर
२ रामनाथी	विष्णु	गोरखपुर
३ पावलनाथी	ईश्वर	रोहितासगढ
४ पावपथी	जालधर	जालौर
५ धमनाथी	धमराज	सिरमाथा
६ मनाथी	महाराज रमालू	टाइया
७ कपिलानी (कपिलपथी)	कपिल	गोरखवसी
८ गगानाथी	कपिल	गगासागर
९ नटेश्वरी	लक्ष्मण	गोरखटिल्ला
१० आईपथी	विमला	विमलादेवी
११ वराहपथी	भद्र हरि	राताङ्ग डा
१२ रावलपथी	हम्मीरदेव (गला रावल)	बादरवाडा

अथन भी १२ पथों की यही सूची दी गई है^५ । इनमें से प्रथम ६ शिव योगी धर्यात् १८ के और शेष ६ गोरखयोगी अथात् १२ के कह जाते हैं । इनके अतिरिक्त कायड, धन, गोगाल, दर्या, इत्यादि पथ के नाथयोगी मिलते हैं किन्तु दक्षिणभुण्डी में गणना उपयुक्त १२ पथों की ही होती है । १२ पथों की सूची भिन्न भिन्न रूपों में मिलती है^६, जिसका

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १२ ।

२-आज वस्त्रन द्विस गोरखनाथ एड दि कनफटा योगीज, पृष्ठ ६३, कलकत्ता, सन १९३८ ।

३-राजा चमेनीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २२ ।

४-वही, पृष्ठ २३-२४ ।

५-पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वाल्यूम थड ए, रोहतक डिस्ट्रिक्ट, पृष्ठ ६४, सन १९१० ।

६-विश्वभारती पत्रिका, धार्मिकविज्ञान, अक्टूबर-दिसम्बर, १९६६, श्री परशुराम चतुर्वेदी का "नाथयोगी सम्प्रदाय के द्वादश पथ" निबन्ध ।

एक प्रमुख कारण तो उल्लिखित सूची से पृथक् १२-१८ की बारी हुई गानाया का गणना करना है और दूसरा, इन पद्यों के लिए पर्यायवाची नामों का प्रचलित हो जाना है। भाई, तुप्काई, मुप्काई एक ही पद्य के नाम हैं। लक्ष्मणनाथ, नटेश्वरी, टिन्ना के, हेतपया, गरि यानायी भी बालनाथ टिन्ना के नाथों के पर्याय हैं। उल्लिखित सूची भ्रमसाहित्य अधिक प्रामाणिक प्रतीत होती है जिसकी पुष्टि दक्षिणमुण्डी के मर्यादा महोत्सव में पद्य, प्रधान-सदस्यगणों द्वारा के निर्वाचन से भी होती है। इसमें प्रत्येक पद्य तथा पात्रदेव के लिये यह पूर्व-परम्परा नियत है कि वह उक्त १२ शाखाओं में से किन शाखा का होना या हो सकता है। इसका कुछ विवरण इस प्रकार है—

	पद्य	शाखा
१	कदली मठ के पात्रदेव और राजा	गानाया, वराग्यपथी, नटेश्वरी, कपिलपथी
२	श्रम्वक योगी मठ के पात्रदेव और पीर	सत्यनाथी
३	सोनहरी भरव पीठ के पात्रदेव	नटेश्वरी, कपिलानी, गानाया, वराग्यपथी
४	पात्रदेव के महत्	भाई पथा ^२
५	बारह पद्य का कारबारी	यमनाथी
६	कोठारी और दो पद्य	सत्यनाथी
७	भडारी	वराग्यपथी
८	पात्रदेव का पुजारी	नटेश्वरी
९	रोट का भडारी	रामपथा

इनके अतिरिक्त १२-१८ के ६-६ पद्य एक-एक रमतों के महत्, १२ पद्यों के १२ भडारी और १ श्रौषडा का महत् निर्वाचित होता है।

नाथ ९ प्रसिद्ध हैं, पर इसकी भी कोई सवमम्मत परम्परा बची नहीं है। इनकी विभिन्न सूचियां म अंतर है^३

राजस्थान में नाथ पद्य

(क) बालनाथ कपिलानी पद्य-दक्षिणमुण्डी के यात्रा-विवरण के साथ राजस्थान में प्रचलित परम्परा और पुराने उल्लेखों के आधार पर हम कतिपय पद्यों और नाथों का विवेक प्रभाव यहां लक्ष्य कर सकते हैं। इस यात्रा में श्रम्वक समेत ७३ मुक्ताम पद्य हैं जो समयानुवृत्त घटत-बढ़त भी रहते हैं। इनमें वालेवाडी मठ बालनाथ का है जिसमें उनका

१-राजा चमेनीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ ५१-५२।

२-सदानाथ योगी गोरक्ष विकास, पृष्ठ १२८, ६०, जाल धर, जून, १९३५।

३-दृष्टव्य-(क) डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ २४-३७।

(ख) डा० गणभूषण दासगुप्त श्रीस्वयंवर रिलिजियस कन्टस पृष्ठ २०६-२०९।

(ग) डा० कल्याणी मल्लिक नाथ सम्प्रदाय के इतिहास, दान श्री साधन प्रणाली, परिच्छेद ३-७, कलकत्ता, सन १९५० तथा सिद्धसिद्धान्त पद्धति आदि-इन्द्रोडकान्त।

श्रीर बाल भरवनाथ का मंदिर है। यहां का मठाधीश कपिलानी पथ का योगी होता है। ये बालनाथ प्रसिद्ध सिद्ध योगी थे श्रीर मारवाड के पोकरण में १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में रहे थे। पंच पींग में दो-रामदेवजी तेंवर और हडबुजी साखला इन्हीं के शिष्य थे। पोकरण के ठाकुर राठौड खोया की ठकुराणी ईं दी भी बालनाथ की परम भक्त थी^१।

(ख) हाडीमड ग पावपथी, सत्यनाथो-मुण्डी की पात्रदेव मवारी सिद्ध हाडीमड ग-नाथ मठ में भी पवारती है। प्राचीन परम्परानुसार यहां का मठाधिपति पावपथ का यागी हाता है किन्तु सत्यनाथपथ के योगी को पीठाधिकार करते हैं। हाडीमड ग त्रियानुरूप नाम है, मुदरत नाम भृतकनाथ बताया जाता है। प्रसिद्ध है कि ये बलख-बुखारा के मुलतान थे। गोरखान-प्राप्ति हेतु इन्होंने तप करते हुए देह त्याग दी। ज्ञात होने पर गोरख ने पुनर्जीवन करके योग-नीत्या दी तथा भृतकनाथ नाम रख कर एक मनोवाछित फलप्रद हांडी दी। वह हांडा इस स्थान में फूट गई। हाडीमड ग राजस्थान में भी बहुत वर्षों तक धूमते रह थे। राजस्थानी साहित्य में इनका अनेक जगह उल्लेख मिलता है। विष्णोई कवियों में इन पर लिखा अल्लुजी कविया का डिगल गीत और नानिगदास की नीसाणी बहुत प्रसिद्ध है (कवि सं० ३८ ३६)।

(ग) घूष लीमल, गरीबनाथ सत्यनाथो नाथों में प्रसिद्ध है कि पहले पहवा मठ (कुरुक्षेत्र) पर १२-१८ के यागियों का सम्मेलन और पात्र स्थापना विधि होती थी। यह सत्यनाथ ब्रह्मा का स्थान माना जाता है। इसके महत् सत्यनाथो पथ के योगी होने थे। कानांतर में इस मठ की लुप्त श्र्वाति को गरीबनाथ ने पुन प्रकट किया। पुष्कर भी ब्रह्मा का स्थान है और वहां भी पात्रदेव की पूजा होती थी^२। ये गरीबनाथ घूषलीमल के शिष्य थे और समस्त सत्यनाथो जात्या के थे। घूषलीमल का आश्रम घीणोद में था और गरीबनाथ का लाखडी में। गरीबनाथ घूषलीमल के शिष्य थे। उस समय लाखडी का राजा घोषाकरण था। गरीबनाथ के शाप से घोषाया का नाश हुआ और घूषलीमल के आशीर्वाद से जाडेचा भीम लाखडी का राजा हुआ। प्रभामपाटन के गिलालेख से इनका समय सवत १४४२ ठहरता है^३।

(घ) जालधरनाथ पावपथी-पावपथ के प्रवक्तक जालधरनाथ का भी राजस्थानी साहित्य में नामोल्लेख मिलता है। जालौर के किले में जालधरनाथ का मंदिर था^४। वीर-भायण म गोपादेव को जालधरनाथ के दशन और वरदान-प्राप्ति का वरण मिलता है^५। भयत्र गोरख द्वारा उसकी जघाएँ जोडे जाने का उल्लेख है^६। जालधरपाद का पूरा का

१-मु हगोत नरासी की श्वात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १३७, १४०।

२-राजा चमेलीनाथ योगी श्री पात्रदेव बदली यात्रा, पृष्ठ १२४-१२५।

३-(क) डा० पीताम्बरदत्त बडधवाल योग-प्रवाह, पृष्ठ ७३-७४।

(ग) मु हगोत नरासी की श्वात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २१५-१७।

४-श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ८६०।

५-डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ७४ ८३, सन् १९६०।

६-मु हगोत नरासी की श्वात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६६।

पूरा सम्प्रदाय बौद्ध बस जागे मे सबूत था^१ । राजस्थानी साहित्य मे जो कवि-कथा चित् बौद्ध-परम्पराका वा शीग वा आभाग मिल जाते है, उगवा कारण जाल्पर और उनके सम्प्रदाय वा धर्माचार प्रभाव है । (विष्णु द्रष्टव्य-गुरजाली, कवि सभ्या १६) ।

(४) हम्मोरवेव रावतपयो-इराओ गवत् १३८३ क धामनाम चित्तौड वा हस्तगत कर गारे मेवाड पर भगता प्रभुत्व जमाया और गुहिनवग वा गामोन्विया शागा वा राज्य स्थापित किया । सभुलीग मसानुयायी हाने क कारण इनका पय रावल कहलाया^२ ।

(५) गोपीचद, भरथरी, चपट, बातगुदाई, लक्ष्मणनाथ, पद्मनाथ पावपयो, वरा प्यपयो-गोरग की भाति गोपीच^३ और भरथरी यही प्रतिपरिचित नाम है । गानाच^४ जाल्पर (हाडिपा) के गिदर बताये जाते है^५ किन्तु विष्णोई कविया न इन लोका को ही गोरग वा गिदर मानते है । गवत्वाणी क प्रसगा मे दोनों वा साथ-साथ रहना बगित है । चपटनाथ को राजरजी न धारणी क गभ से उलगा होना बताया है । यानि यह सत्य हो तो चपटनाथ राजस्थात ही क नियामी गिदर होत है । य बाह्य वा के विराधा य और वन फटा सम्प्रदाय मे रहकर भी उगकी बाह्य प्रतियाभा को नटा मानन थे । विद्वानों न दान गुदाई और लक्ष्मणनाथ को एक माना है^६ जो ठीक नहीं प्रतीत होता । सबवालो से व पृथक पृथक ब्यक्ति जात परत है । सम्भावना यह है कि य एक ही पय के दो ब्यक्ति थे । सुप्रसिद्ध नाथ योगी पृथ्वीनाथ कुछ वर्षों तक जाम्भोजी के समकालीन थे । उहीने प्रकारांतर से जाम्भोजी का उल्लेख भी किया है^७ ।

(६) गोरसनाथ-नाथा मे गोरसनाथ वा ब्यक्तिरव सर्वाधिक भावपक है । स्वयं जाम्भोजी ने उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है । धनेव प्रसिद्ध सिद्ध-सता ने उाको अपना भावगुरु माना है । विद्वाना वा विचार है कि यद्यपि नाथ मत गोरसनाथ के पूर्व भी था, तथापि उसको एक ब्यवस्थित और मगठित रूप देने वा नाथ गोरसनाथ ने ही सब प्रथम किया और बाद वा विकास प्राय उही की खीची हुई रेखाभा पर होता रहा । गोरसनाथ की दृष्टि योग और कायसिद्धि पर थी^८ ।

वन पयो की गगना उल्लिखित १२ सम्प्रदायो मे नही की गई है । इसका प्रथम मठ मारवाड के सोजत परगने मे है । इस मठ के पीठाधिपति को सोना नरेग वा पद प्राप्त है ।

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धा की वानियाँ, भूमिका, पृष्ठ १८, सवत २०१४ ।

२-श्रीभा उदयपुर राज्य वा इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५०५-५०६ और टिप्पणी, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ५४५-५५ वीरविनोद, भाग १, पृष्ठ २९०-३०० ।

३-डा० गतिभूषण दासगुप्त श्रीस्वयोर रिलिजियस् कल्टस् पृष्ठ २१२-२१६, सन् १९६२ ।

४-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धा की वानियाँ, पृष्ठ २३ ।

५-डा० हीरालाल माहेश्वरी पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ गोपक निबन्ध, (द्रष्टव्य-अध्याय २ (२), सदर्भ-८२) ।

६-डा० नागेद्रनाथ उपाध्याय नाथ और सत साहित्य, पृष्ठ ५७, ८७, सन १९५५ ।

उपप्लुक्त विवरण से स्पष्ट है कि विजय की १६ वीं शताब्दी में राजस्थान में नाथों के द्वांरा पथों में से पाँच (प्रथम संख्या १, ४, ७, ११ और १२) का यहाँ विशेष प्रचलन रहा तथा प्रसिद्ध नौ नाथा में ५ नाथा (गोरख, जालंधर, गोपीचंद, भरखरी, चण्ड) का। सब सम्प्रदाय की सन्तुलीय शाखा भी कालान्तर में बनफटे नाथों के अन्तर्गत बन हो गई थी। इस कारण नाथपथ और भी अधिक व्यापक दिखाई देने लगा।

इनके अतिरिक्त राजस्थान में नाथा से संबंधित अनेक उल्लेख मिलते हैं। आरम्भ में हरिकेश राजा पृथ्वीराज (संवत् १५५६-१५८४ आमेर, जयपुर) के गुरु बनफटा योगी थे। ब्रह्म में १६ मील पूर्व सटवड की पहाड़ी पर राव शत्रुपाल हाडा (संवत् १६८८-१७१७) ने घूघता जोगी का (जो गोरख के गिष्य कह जाते हैं) मंदिर बनवाया था। मंदिर में घूघता का मूर्ति है और उस पर विजय संवत् १७३३ अगहन शुक्ला ३ का लेख उल्लेख है। राव जोधा ने विजय संवत् १५१६ में चिटिया टूक स्थान पर जोधपुर का किला बनवाया था। यह स्थान योगी चिडियानाथ के रत्न का था जो रातुगा से यहाँ आकर रहने लगा था। यहाँ से उठाये जाने पर वह पालासनी चला गया वहाँ उसकी समाधि बनी हुई है। नोहर (श्रीगंगानगर) से एक मील उत्तर में गोरख टीला है। प्रसिद्ध है कि यहाँ पहले सिद्ध गोरख रहे थे। अरावली में लक्ष्मणनाथ जोगी ने तप किया था। उनकी कृपा से सिद्धराज जन्म थे। राव सलखा के पुत्र रावल मल्लीनाथ, जोगी लक्ष्मणनाथ के शिष्यों से हुए थे। रावल जोगियों की चचा पहले कर आए हैं।

इस प्रकार, जाम्भोजी के समय में राजस्थान में नाथपथी जोगिया का काफी विस्तार था। उनमें अनेक आडम्बर आ गए थे। जाम्भोजी ने अनेक संवदों में उनके विभिन्न आडम्बरों का भंगना की है। सबदवाणी में घोडाचोली, बालगुदाई और लक्ष्मणनाथ का उल्लेख है। इनमें प्रथम दो तो जाम्भोजी से पूर्व हो चुके थे, लक्ष्मणनाथ उनके समकालीन थे।

यह विष्णोई कवियों द्वारा कथित यहाँ के चार प्रमुख 'धर्मों' का संक्षिप्त परिचय है। इनके अतिरिक्त लोक में व्यापक रूप में पाण्डपूजा (कल्ट वर्णिक) प्रचलित थी।

(८) पाण्डपूजा (कल्ट वर्णिक)

पाण्डपूजा किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय से नितान्त भिन्न है। धार्मिक सम्प्रदाय में सिद्धान्त, साधना और व्यवहार-तीनों पक्षों का होना अनिवार्य है, जबकि इस पूजा के पीछे ऐसा न होकर पूज्य इष्ट की समत्वार्थ शक्ति और केवल उससे प्राप्त सम्भाव्य लौकिक लाभ की कामना ही रहती है। सबदवाणी और विष्णोई साहित्य में अनेक स्थलों पर

१-यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ १२८३।

२-गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग सूची राज्य, पृष्ठ २८६६।

३-आमापा मारवाड का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२-१८३।

४-नाहिया राजस्थान की जातियाँ, पृष्ठ १०३।

५-(क) मन्गो सोहननाथ त्वारीय राज श्री वीकानेर, पृष्ठ ३६, संवत् १६४७।

(ख) भोभा वीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६४।

६-वीकानेर की स्थापना, पृष्ठ १३३।

७-मुहल्लोत नणसी की स्थापना, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६७, काशी।

इसका बड़ा अच्छा स्पष्टीकरण किया गया है।

वर्तमान में प्रसिद्ध पाँच पीर, सुप्रसिद्ध राजपूत वीर ही थे। इनमें से रामेश्वरी तेंवर, श्रीर हडबूजी साँखला तो समय विशेष के लिये जाम्भोजी के समकालीन थे। गणतीन गागाजी चौहान, मेहोजी मागलिया और पाबूजी राठोड उनसे पूर्व ही चुके थे। साहब्रामजी की रचनाओं के अतिरिक्त जाम्भोजी साहित्य में इनका नामोल्लेख नहीं मिलता, जिसका कारण स्पष्ट है किन्तु ध्वनित जाता है कि लोक में शन-गन इनकी मायता भा बनने लगे थी। इसकी पुष्टि राजस्थानी की कविताओं, प्राचीन बातों और लोक गीतों से होती है। इनके अतिरिक्त जाम्भोजी से पूर्व तेजोजी जाट और मल्लीनाथजी भी हो चुके थे और जो क्षत्र-विशेष में सिद्ध-पुरुष माने जाकर लोक-पूज्य होने लगे थे। इनका सगिप्त परिचय इस प्रकार है —

✓ १-गोगोजी—ये ददरवा (नोहर) के निवासी, चौहान जाति के राजपूत और महम्मू गजनवी (११ वीं शताब्दी) के समकालीन थे^१। ये असाधारण वीर, गाय-रभक और साँपो के सिद्ध देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं। नोहर के पास गोगामेडी इनका मुख्य स्थान है, जहाँ प्रति वर्ष भादवं वदि ९ को मेला लगता है। मुहम्मद नणसी की श्यात और राजस्थानी बातों में गोगोजी और पाबूजी राठोड को समकालीन बताया गया है जो परवर्ती कल्पना ही है^२। इनके अनुसार, पाबूजी के बड़े भाई बूडोजी का लड़की कोनमत् से गोगोजी का विवाह हुआ था किन्तु राठोडों के बगवूद से यह बचन गलत साबित होता है। राजस्थानी में लोक-गीतों के अतिरिक्त मेहोजी, आसोजी बारहट आदि पुराने कवियों ने भी गागाजी पर रचनाएँ की हैं^३। गोगोजी पर डा० सत्येन्द्र द्वारा किया गया काव्य विश्लेषण महत्त्वपूर्ण है जिसमें तद्विषयक पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख भी है^४।

२-तेजोजी—ये नागौर के गाव खिडवाल के धोल्या जाति के जाट ताहरजी के पुत्र थे। उम्र समय नाग जाति के लोगों से इनके गोत्र के लोगों का भगडा था। इनका समुराल पत्नी (जयपुर) में बनास नदी के किनारे बही पर था। समुर का नाम बन्नाजी और पत्नी का नाम था। किसी समय समुराल में गाएँ छुड़ाते समय वे बहुत घायल हो गये। वादिम आदि

१-(क) डा० मत्स्यकेतु विद्यालकार अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ २६१-६२, सन् १९३८।

(ग) डा० दत्तत्रय शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ ३२७-२८।

२-(क) श्यात त्रितीय गण, पृष्ठ १६७-१८१, काशी।

(ग) राजस्थानी बाता, पृष्ठ १७६-१०५ २०६-२११, गणपदक-ग्रूपकरण पागेक, सन् १९३४।

३-(क) राजस्थानी लोकगीत दूसरा भाग पृष्ठ ५२७-५३२, गणपदक-रामगिर, पारीक और स्वामी।

(ग) डा० फारालाल मास्करी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १०४-१०५ ११४-११५।

४-(क) जाहरपीर गुरु गुणा धारणा, सन् १९५६।

(ग) राजस्थान भाषा, बीकानेर भाग ९ अंक ३ दिगम्बर १९६६, 'राजस्थान के लोक साहित्य पर कुछ दृष्टियाँ'।

समय बालू नामक एक नाग ने उनका रास्ता घेर लिया जिससे युद्ध करते हुए ये मारे गए । हल् इनकी पूजा इनकी जाति और समुराल में प्रारम्भ हुई, बाद में धीरे धीरे समस्त राज-पान में फल गई और ये नागों के सिद्ध देवता के रूप में माने जाने लगे । जोधपुर के पर्वत रम भागे में इनका सबसे बड़ा मेला लगता है^१ । अथत्र^२ कहा गया है कि ये सवत् २७६ में विद्यमान थे । इनका विवाह किशनगढ़ के रूपनगर में हुआ था । एक साँप से वनरुद्ध होने के कारण गाएँ छुड़ाने में घायल होने पर उससे अपनी जीभ बटवा कर स्वग-सा हुआ । जाटों में विश्वास है कि तेजोजी की 'तात' बाघने पर साँप बाटे का अमर नहीं ला । अनुमान है कि जाम्भोजी के समय कृषक वर्ग में इस रूप में इनकी मायता हो ई होगी ।

३-रावल मल्लीनाथ-ये राव सलखाजी के ज्येष्ठ पुत्र और पिता की मृत्यु के बाद पन चाचा राव काहड़देव के पास रहने लगे थे^३ । सवत् १४३१ में ये महेवा के स्वामी । प्रसिद्ध है कि ये सिद्ध जोगी रतननाथ के आशीर्वाद से हुए थे और रावल कहलाए तथा तीन इनको साक्षात् दशन दिया था । लोग इनको सिद्ध-पुष्प मानते थे । तलवाडा में सूणी गी के तट पर इनका मंदिर है, जहाँ प्रति वर्ष चतुर्मासे मेला भरता है । इनका स्वगवास सवत् ४५६ में हुआ था^४ । इनके समकालीन उगमसो भाटी ने देवी-कृपा से एक पथ चलाया । मल्लीनाथ और उनकी स्त्री इसी पथ में थे^५ । यह कोई शाक्त पथ होना चाहिए उनकी पुष्टि अथत्र भी होती है^६ । बम्बई प्रेसिडेन्सी गजेटियर (वॉल्यूम ९, पार्ट फस्ट) लिखा है कि "उगमसो ने ५०० वर्ष पूर्व बनारस में बीजपथ या मागपथ चलाया था । ये एक छोटे की मूर्ति या दीपक की ज्योति की पूजा करते हैं जो रामदेव पीर कहलाता ।" इसमें ऐतिहासिक असंगति है, क्योंकि रामदेवजी तो रावल मल्लीनाथ के भी बाद में उत्पन्न हुए थे । इसी प्रकार मल्लीनाथ और रूपादे का हरजी भाटी के माध्यम से रामदेवजी को सम्बन्ध बताया जाता है, वह भी परवर्ती कल्पना मात्र है ।

४-पाबूजी राठौड़-ये मारवाड के राव आसथानजी के दूसरे पुत्र घाघलजी के छोटे पथ । ये बड़े धीर और वचन-पालक थे । इनकी बहन पेमावाई जायल के खीची जीदराव । यही गई थी । इन्हीं जीदराव से देवल चारणी की गाएँ छुड़ाने में इनके और इनके बड़े बूडोजी के प्राण गए । इसका बन्ला बूडोजी के लडके भरडा ने लिया था^७ । पाबूजी

१-जयराज जधीना जाट इतिहास, पृष्ठ ६२३-६२६ ।

२-राजपूताना गजेटियर, वॉल्यूम सैकण्ड, सन् १८७६

सोजेड आफ तेजाजी, पृष्ठ ३७ ।

३-रेड मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ५३-५४ ।

४-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ ८३-८४ ।

५-आसोपा-मारवाड का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ ८२-८३ पादटिप्पणी ।

६-राजस्थान साहित्य उदयपुर वर्ष १ अंक ४ मई सन १९५४,

'आदस भक्तिनिष्ठ रानी रूपादे' -लेख ।

७-(क) रेड मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ४५ पादटिप्पणी ।

(ख) श्रीमा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १६३ ६४, पादटिप्पणी ।

(ग) महाराज नरनाम की कथा, द्वितीय खण्ड, १९७-१९१ ।

का समय सवत् १३८२ के घागपात है^१। पत्नी के बोलू गांव में पाबूजी का देवरा है। डा० टसीटरी ने बोलू गांव के तीन गितालयों का परिचय किया है जिनमें सबसे प्राचीन मन्त १४१५ के भादवा गुदि ११, रविवार का है। इसमें घांघल गोम के पुत्र सीहड़ द्वारा पाबूजी के मंदिर बनाए जाने का उल्लेख है^२ पाबूजी पर अनेक रचनाएँ मिलती हैं और 'पनाड' तो प्रसिद्ध है ही। भरते पर भी डिगल गीत लिख गए हैं^३। ये सङ्ग्रह के अन्तर्गत माने जाते हैं। प्रसिद्ध है कि पाबूजी का साथ ७ थोरी रहा करने में। अब भा इनका पुजारी धारा है।

✓ ५-रामदेवजी तेंपर-ये अजमलजी के दूसरे पुत्र थे। इनके बड़े भाई का नाम बाल देव था। प्रसिद्ध है कि सवत् १५१५ के भादवा गुदि ११ को ४० साल की आयु में उन्होंने रगोचा में जीवित समाधि ली थी। इस हिमाचल में इनका प्राकृत्य काल सवत् १४७१ अनुमित होता है। ये सुप्रसिद्ध नाय जोगी बालनाथ के गिष्य थे जो उस समय पोरकरण में रत्ने थे। इनकी पत्नी का नाम नीतल और पुत्री का दाहलदेवी बताया गया है^४। पद्मालुषों में ये कृष्ण के अवतार माने जाते हैं। रगोचा इनका प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ प्रति वर्ष भागों में मन्ता भरना है। इसमें दण के दूर दूर भागा में लोग आते हैं। रामदेवजी के नाम से 'वागी' भी प्रचलित है^५ किन्तु उसका प्रामाणिकता नितांत सदिग्ध है।

६-मेहोजी-ये मागलिया शाखा के राजपूत थे। यह शाखा चित्तौड़ के महिलावों राजपूता से निकली हुई है^६। नगसी ने महिलावों की २४ शाखाओं में इसका नाम गिनाया है^७। ये जसलमर के राय राणगदव भाटी के माय युद्ध में जूझ कर वीरगति को प्राप्त हुए थे^८। हड्डूजी के पिता साखले महाराज को भाटी राणगदव ने मार लिया था इसका बदला लेने के लिए राय चूँडाजी ने उसका पीछा किया और जसलमर राज्य के निर्यात गांव के पास उसको मार डाला। यह घटना सवत् १४६२ की है^९। इस प्रकार, मेहोजी के जीवन की ऊपरी सामा सवत् १४६२ सिद्ध होती है। विद्वान् पद्महवी गताब्दी पूर्वार्ध में मागलिया का नामन पोरकरण फलोनी और उमका आसपास के प्रदेशों में था, जिस कारण यह मागलियावादी कहलाता था। फलोनी उसकी राजधानी थी। इन मेहोजी ने चारण शैली

१-डा० दारय रामा शर्मा चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ ३२८, पादटिप्पणी।

२-जनक आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (यू सिरीज), सख्या १२, सन १९१६ पृ० १०६-१४।

३-(क) टसीटरी डिस्क्रिप्टिव कालाग भवमन सक्किड, पाट-फंस्ट, पृष्ठ ८-९।

(ख) डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ११२-११४।

(ग) राजस्थानी वीर गीत, भाग १ पृष्ठ १०-१५ बीकानेर सन १९४५, आदि।

४-बम्बई प्रेसिडन्सी गजेटियर वाल्यूम ६, पाट-फंस्ट, पृष्ठ १६०।

५-मान-पद्य-मयह तीसरा भाग, पृष्ठ ६३-१०६

रामभोपाल मोहता बीकानेर, स० २००७।

६-ओम्हा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३६० तथा

जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ २६, पादटिप्पणी।

७-व्याप्त प्रथम भाग पृष्ठ ७७, कागा।

८-डा० मनोहर रामा राजस्थानी सस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ ३८।

९-रेड मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ६७ पादटिप्पणी।

करणीजी के पिता मेहोजी चारण को सुवाप नामक गाव प्रदान किया था । मेहोजी चारण का विवाह सवत १४३८ के ग्रामपाम झाडा गाव के स्वामी चक्रू झाडा की पुत्री देवलवाई के साथ हुआ था^१ । मेहोजी मागलिया अत्यन्त धनी, परोपकारी, गुरवीर और अचन निद महात्मा थे । कुछ विद्वानों ने हडबूजी साँखला के पिता महाराज और इनको अभिन्न माना है^२ जो मूल है । साँखला और मागलिया दो भिन्न शाखाएँ हैं ।

७-हडबूजी साँखला-ये नागौर के भू डेल गाव के निवासी महाराज साँखला के पुत्र थे । इन्होंने सवत् १५१० के आसपास राव जोधाजी को एक बटार दी थी^३ जो बीकानेर राजपरान की पूजनीक वस्तुओं में एक है^४ । ये अतिथि सत्कार करने में एक ही थे, इनके यहां स काई भूवा नहीं जाना था । ये बड़े गुरुनी, वचननिद और करमाती माने जाते थे^५ । अपने पिता की मृत्यु (सवत् १४६२) के बाद ये फलोदी के गाव हरभमजाल में आ गए । वहां रामदेवजी तेंवर से साक्षात्कार होने पर इन्होंने अस्त्र-सस्त्र त्याग दिए और वानप्रस्थ को अपना गुरु बना कर साधु हो गये । तब से ये लानटे गाव में रहने लगे । सवत् १५१५ में रामदेवजी के जीवित समाधि लेने के ८ दिन बाद इन्होंने भी उनके पास ही जीवित समाधि ली^६ । राव जोधाजी ने वगटी गाव हडबूजी को प्रदान किया था^७ ।

८-निष्कष विष्णोई संप्रदाय प्रवृत्तन की भूमिका-ऊपर के विवरण का माराग यह है कि जाम्भोजी के समय तक राजस्थान में मोटे रूप से चार 'धर्म' प्रचलित थे । पूर्व विनि उद्धरणों से यह भी स्पष्ट है कि जाम्भोजी ने इनको चेतयाया था । इनके अनिर्गुत अन्त इन देवी-देवताओं की मायना और 'पापण'-पूजा भी प्रचलित थी । लोग अणिकाग में धर्म क अतली तत्त्व को न जान कर चमत्कार को मानते थे । भौतिक लाभ-प्राप्ति उनका मुख्य प्रयोजन था, अध्यात्म लाभ के इच्छुक कम ही थे । सोलहवीं शताब्दी में राजस्थान में प्रचलित सभी धर्म मत या तो केवल बाह्य साधना-विधि में चिपटे हुए थे या केवल कथनी प्रदान हो गए थे । कथनी और करनी में बड़ा अंतर था । जाम्भोजी ने सम्यक प्रकार से इनको लक्ष्य किया था । एक सत्रद (८३) में उन्होंने व्यापक रूप से प्रचलित इस भावना का बण स्पष्ट और मारगभित दर्शन किया है । उन्होंने किमी भी 'धर्म', सम्प्रदाय या मत का बुरा नहा बताया और न ही वेद, पुराण, शास्त्र और कुरान की निंदा की । उन्होंने तो धर्म क नाम पर प्रचलित और प्रचारित पातण्ड बाल्य वेग और लोक दिखावे की निंदा की है । धर्मके अमली तब को जानने और आचार-विचार की पवित्रता पर बारम्बार जोर दिया है । सवदबाणी में पता चलता है कि उस समय इन चारों धर्मों से किमी न किमी प्रकार सर्वाधत अनेक प्रकार क लोग थे । बिना तत्त्व जाने वे स्वयं अम में थे और दूसरों को अममते थे । वेग और

१-किंगोरसिंह गृहस्पत्य करनी-धरित्र पृष्ठ १७-१८, कलकत्ता, सन १९३८ ।

२-गो. मनोहर दामा राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा पृष्ठ ३८ ।

३-आभा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ २३८-३० ।

४-बीकानेर गोलडन जुबली (सन १८८७ १९३७) (अ. प्र. जी. म.) बीकानेर राज्य प्रकाशन ।

५-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी ।

६-महामोत नगसी की कथात प्रथम भाग, पृष्ठ २४२ ४३ तथा

द्वितीय भाग पृ. १२६ १३० ।

कुरान के नाम पर जाल फला हुआ था (७२ १) और अनेक द तन्त्रशास्त्र का प्रचार था (६७ ३) । हिन्दू और मुसलमानों में ऐसों में जोगी, जगम, सीमा वजाने वाले, शिगम्वरी, सयामी, ब्रह्मचारी, सूफी, दरवेश, पीर, जती, तपस्वी, तन्त्रिये में रहने वाले, जपिमा, मुडिमा, आपस, ऋषि, फकीर पंडित, पुरोहित, मित्र, व्यास, ज्योतिषी, काजी, मुल्ता आदि थे^१, सिद्धि का माग और आचार-विचार जानने वाले साधु फिरले ही थे । तत्कालीन समाज में धर्म, धम और सिद्धि के नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्ड प्रचलित थे । लोग जहां तपस्वी खेचर, भूचर, क्षेत्रपाल नाथ, चौसठ योगिनी, वावन वीर, यश, 'डाकणा-माकणी', बताल, मृत-प्रेत, पितर और देवी की पूजा करते थे । तत्र-मत्र और जड़ी-बूटी का प्रयोग होता था । हिन्दुओं में मूर्तिपूजा बहुत प्रचलित था तथा मुसलमान मुहम्मद के नाम पर श्रावण रूप से निराह जीवों की हत्या करते थे । मयामिया और जोगियों में भी अनेक फिरके थे किन्तु उनमें लोक दिवावा मात्र रह गया था^२ ।

जाम्भोजी के अतिरिक्त तजोरी ऊजो, बोल्होजी आदि कविया की रचनाएँ तत्कालीन समाज में धर्म के नाम पर फल पाखण्ड का भली-भांति चित्र सामने आता है । एम समय में जाम्भोजी ने विष्णोई सम्प्रदाय-प्रवर्तन के द्वारा एक निश्चित माग तोपा की गियाया । यह माग जीवन-पद्धति भी है और 'धर्म' ता है ही ।

१-इन्द्र-शिव मन्था ८४, ४, ५५ ५६ ६६ ६७ ६८ ८२ ८६, ११८ पानि ।

२-इन्द्र-शिव मन्था ४, १०, ११, २६ २७, ६६ ७१, ८८ ११४ पानि ।

पनरास भवतार लियो, आठमि सोम अठानर ।
 × × ×
 कातिग वदि हरि कळस थाप्यो, पथ वयाळ परगट्या ।
 —सुरजनदासजी कृत “साखी” ।

साथरी गुरु की वन सभरथळि, जहा खेल पसारिया ।
 तिराए व की साध्य पूगी, दे हरि मोख मिधारिया ।
 —रायचंद कृत “साखी” ।

वरम सात सभारि वाळखीला निरहारी ।
 वरम पाच बावीस, पाळ एता िन चारा ।
 ग्यार और चालीस, मबद कयिया अवनसी ।
 वाळ गुवाळ गुर ग्यान, माम तीन ब्रस पच्यामी ।
 पनराम 'र तिराए वदि मगसर नु वि आगळे ।
 पालटे रूप रहियौ रिधू, इडग जोति सभराथळे ॥
 —बील्होजी कृत “छप्पय” ।

जाम्भोजी का जीवन-वृत्त

पूवज रोलोजी, लोहटजी जाम्भोजी के पूवजों के इतिहास का विशेष पता नहीं चलता। नागौर से १५-१६ कोस उत्तर में स्थित पीपासर गाव में रोलोजी पवार हुए। प्रसिद्ध है कि रोलोजी महाराजा विज्रमादित्य की चालीसवी पीढ़ी में थे^१। महलाणा गाव (जोधपुर) के विष्णोई भाटों की बहियों के अनुसार विज्रमादित्य के २६ वें वंशधर प्रसिद्ध राजा भोज थे और उनकी ६ वी पुत्र पर पीपासर में रावलजी नामक परमार क्षत्रिय हुए। यहा रोलोजी ३८ वी पीढ़ी पर आते हैं। रोलोजी के पुत्र लोहटजी थे जो जाम्भोजी के पिता थे। 'साधु-परम्परा' (दृष्टव्य-परिशिष्ट) में 'आदि विष्णु' से लेकर जाम्भोजी और उनकी शिष्य-परम्परा मिलती है। साहबराजजी कृत प्रकाशित जम्भसार (प्रथम खण्ड, पृष्ठ ५-६) में दी हुई 'प्राचीन महात्माओं की वंशावली' की सूची भी ऐसी ही है। इन दोनों सूचियों में 'भोजपुत्र' को यदि सुप्रसिद्ध राजा भोज माना जाय, तो रोलोजी उनकी १३ वी पुत्र पर आते हैं। इस प्रकार भाटों की वंशावली और उक्त 'परम्परा' में मेल नहीं है। परमारों की वंशावली अथ विद्वानों ने भी दी है किन्तु परस्पर मिलान करने पर इन सबमें कोई समानता नहीं पाई जाती^२। रोलोजी ऊमट शाखा के पवार थे। इन पीढ़ियों के सत्यासत्य निश्चय करने का साधन हमारे पास नहीं है। हा लोहटजी के पिता रोलोजी से हम एक निश्चिन्त और प्रामाणिक परम्परा पाते हैं। भाट लोग रोलोजी को रावलजी कहते हैं। वस्तुतः दोनों नाम एक ही हैं। रोलोजी का विवाह मोहिल राणा के यहा हुआ था। उनकी मोहिलानी धमपत्नी राजाधिदेवी से लोहटजी और पूल्होजी का जन्म हुआ। उनके एक कथा 'तातू' भी हुई। प्रसिद्ध है कि ये तीना सगे भाई-बहन थे और लोहटजी इन सबमें बड़े थे^३। ऐसा प्रतीत होता है कि लोहटजी पवार का घराना अत्यन्त प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध था। सम्प्रदाय के उपलब्ध साहित्य से लोहटजी की सम्पन्नता का भली-भांति पता चलता है^४।

पूल्होजी जाम्भोजी के जीवन-चरित विषयक प्रसंगों में अनेक स्थलों पर पूल्होजी

- १-(क) स्वामी ब्रह्मानन्दजी जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ १।
- (ख) मोहनलाल वश्य विष्णोई मत व्याख्या, पृष्ठ ६।
- २-(क) नरासी की ख्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ २३०-३१, काशी, सवत, १९८२।
- (ख) सुयमल मिश्रण वंशभास्कर, प्रथम भाग, पृष्ठ ४७३-५०१।
- (ग) सितायच दयालदान पवार वंश दण्ड, बीकानेर, सन् १९६०।
- (घ) बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ १३६-१४१, जयपुर, सन् १९५६।
- ३-महलाणा गाव के विष्णोई भाटों की बहियों में भी ऐसा उल्लेख है।
- ४-लोहट हल वाहे खेती कर, कोहर सीकरण जाय।
भाग बड़ी पवार को, घर वित छाली गाय ॥ २३ ॥
वित निरतो धरि छाली गाय, गाठी गरथ निरतो थाय।
वग्ना वरमी निपज धन, भली टवाई घर जोगो धन ॥ २४ ॥
-पूल्होजी कृत कथा भौतारपात।

श्रीर तांतू का उल्लेख हुआ है। साहवरामजी के अनुसार पूल्होजी लाडणू गाव म रहते थ। अकाल पडने पर द्रोणपुर जाते हुए लोहटजी अपने भादमियो श्रीर पगुआ के साथ स-या के समय लाडणू पहुंच गए। पूल्होजी उनसे मिलन धाए श्रीर गोठ हुई^१। सवत १५४२ म अकात के पश्चात् जाम्भोजी का धर्मोपदेश सुन कर सब प्रथम पूल्होजी ने ही गवा प्रवट की थी। विस्वास होने पर सबसे पहल सम्प्रदाय म भी वे ही दीक्षित हुए तथा उनके माध्य पर अय लोग भी सम्प्रदाय म धाए (द्रष्टव्य-वील्हाजा कृत पूल्होजी की कथा)। इस प्रकार पूल्होजी तत्कालीन समाज के अगुआ के रूप म दिखाई देते हैं। इससे उनकी तथा उनके घराने की प्रसिद्धि एव प्रतिष्ठा का पता चलता है। जाम्भाजी के वकुण्ठवास का समाचार सुनकर उहोंने रिणसीसर म म्वेच्छा से प्राण त्यागे थे (द्रष्ट-य-अ-याय ७, १३ व शीपक के अन्तगत- रिणसीसर^२)।

तांतू जाम्भोजी की भूआ तांतू का उल्लेख भी सम्प्रदाय के साहित्य म कई बार मिलता है। तांतू का समुराल जसलमेर के ननऊ गाव म था^३। साहवरामजी ने लिखा है कि पलन पर लट हुए जाम्भोजी को उनकी भूआ तांतू नहीं उठा सकी थी, न हा लाहट श्रीर हासा उठा सके किंतु दासी ने उठा लिया था^४। सम्प्रदाय मे माय 'नवण मत्र' (वहनवण) जाम्भोजी न तांतू के प्रति कहा था। प्रसिद्ध है कि उ हाने जाम्भोजी से अत्यंत सभ्य म मुक्ति का उपाय पूछा तब जाम्भोजी न इसके द्वारा यह उपाय बताया था। 'सबदवाणी' के गद्य तथा पद्य प्रसंगा म इसका उल्लेख मिलता है^५। तांतू ने जाम्भोजी के वकुण्ठवास के पश्चात ननऊ गाव म देह-त्याग की थी^६। '२७ लुगाइयो का पुट्ट' (द्रष्ट-य-अ-याय ७) तथा हीरानद (कवि सख्या ८६) के 'हिलोलाणा' म तांतू का नाम है।

लोहट-हासा जाम्भोजी का जन्म-लोहटजी का विवाह यादव वणी भाटिया से निवृत्त खिलहरी कुल म उत्पन्न हासा देवी (अपर नाम केसर, स हुआ था। व छाप

१-प्रति मख्या १०३ जम्भसार, चौथा प्रकरण लोहट केसर की कथा, पत्र २-६।

२-नऊ तांतू वस नगरी सरस सुपाट।

थटवाली तांतू तणी थला चरव थाट ॥ ४५ ॥-केसोजी कृत कथा जती तलाय की।

३-प्रति सरया १९३ जम्भसार प्रकरण ६ पलण परचो पत्र-५।

४-(क) प्रति सख्या ११२ २२७।

(ख) ईश्वरानंदजी गिरि- 'नदवाणी' पृष्ठ १२३, सवत १६५५।

५-(क) सात स मुकटि सीवा ननेऊ। साथ तांतू तणा अ ते मेऊ।

दोयस पच साथे टुरगी। मुरमती निकट सीवा मुरगी ॥ १७० ॥

-मुरजनजी कृत कथा परसिध।

(ख) पत्रलि मु हि तांतू पडी उरयो उतारी धायि।

एक सहम अर च्यारित, पड या सवीरी साथि ॥ ८ ॥-केसोजी कृत साखा।

६-(क) भाटी जादम वमावली, ताहू निवा खिलहरी कुली।

ताहू वस उपनी हासा माय, भाग वडो मुन्लीणी धाय ॥ २१ ॥

-पूल्होजी कृत कथा अतारपात।

(ख) खिलहरा कुल वम निवाम, हासा नाव घरे मुक्वास।

साई लोहट धरि वर नारि, मुक्लाणी सोभा समारि ॥ २ ॥

-मुरजनजी कृत कथा अतार की।

गाव के मोहकमनिहजी की पुत्री थी । लोहटजी अत्यन्त सम्पन्न व्यक्ति थे । जाम्भोजी उनके एक मात्र पुत्र थे और सम्भवतः दम्पति की अग्नेडावस्था में उत्पन्न हुए थे । उनके जन्म के सम्बन्ध में कई बातें प्रचलित हैं किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उल्लेख वील्होजी का है । उनके अनुसार, लाहटजी एक दिन गायें चराने वन में गए । वहाँ उनको 'अगम पुरुष' एक योगी के रूप में मिले और कहा कि तेरे घर में 'देवजी' अवतार लगे, तू शका मत करना, उनके 'इचरज' (आरक्षकजनक कार्यों) को देखकर 'ओदरणा' (शक्ति, उदास) मत और न ही मन में कोई अदगा करना, दृढ़ मन रहना । वृष्णजी 'चिरत' करेंगे, वे बारह कोटि जीवों के उद्धारण करेंगे^२ । इसकी पुष्टि मुरजनजी के कथन से भी होती है^३ । उस जोगी ने हासा को भी घर के दरवाजे पर दर्शन दिए । उस समय, ऋतुकाल के पश्चात् व कपड़े धो रहा थी । उनके पाम अडोस-पणोस की अय स्त्रिया भी बठा थी । जोगी ने आशीर्वाद दिया कि तरे पुत्र होगा जो महान योगी और अवधूत होगा^४ । मुरजनजी के अनुसार, उस समय जोगी ने 'आदेस' किया, जिसको सुनकर हासा भिक्षा का थाल भर कर लाई किन्तु बाहर उनको उमका 'छाया-खोज' भी दिखाई नहीं दी । हासा ने मन में विचार किया कि 'आप' अवतार लगे^५ । कई दिन बीतने पर हासा को गभ का आभास हुआ, उनको लेश मात्र भी

१-(क) स्वामी ब्रह्मानन्दजा श्री जम्भदेव चरित्र भानु पृष्ठ १ ।

(ख) प्रणि सख्या १६३, जम्भमार प्रकरण ४, लोहट केसर की कथा ।

(ग) महालागा गाव क विष्णोई भाटो की बहिया ।

२-मुझ दिन एक सुक्यारथ भयो । लोहट गऊ चरावण गयो ।

पुरिय एक मिल्यो वन माय । दरसण दीठी सनमुप जाय ॥ २५ ॥

जाग रूप बोड मुर वाणि । लोहट न समभाव जाणि ।

पुरप तेर लेसी अवतार । सक न मानी करी करार ॥ २६ ॥

किसन चिलत एक होयसी सही । वीह न मानी दड मनि रही ।

इचरज देपि मत ओदर । मन अ दसो मत कोई कर ॥ २७ ॥

समभायो लोहट न, आगम हुई अवाज ।

देवजी आव जग मही, वारा मेलण काज ॥ २८ ॥-कथा श्रौतारपात ।

३ लोहट हासा न कहै मन मा करो करार ।

वन मा महा पुरिय भटिया, तह की वाच सार ॥ १९ ॥

महा पुनिय जागिदर वसि । सवण रूप कीयो आदेसि ।

भवद रूप बोल हिन साय । इह बालक का चिरत सु साय ॥ २० ॥

लाहट तर बालक होय । दुनिया की गति नाही साय ।

उदबुद्ध रूप रोयसी अवतार । दरसण देख अर करी करार ॥ २१ ॥-कथा श्रौतार की ।

४-माता हासा हुई जवत । कपडा घोष माझ तत ।

आमि पामि ता आय बडी नारि । जोगिदर दीठी एक वारि ॥ २६ ॥

दीठी जोगी नारी हमी । मुप ता वाच बनी एक अनी ।

हासा तर होयमी पुत्र । बड जोगी होयसी अवधूत ॥ ३० ॥ वील्होजी, कथा श्रौतारपात

५-सज सीत सजार समण मुप सताप परे आणद ।

स्निवह वार हुब सनमान, कपडा घोष कर मानान ॥ ३ ॥

मन पुरिय जोगिदर वस, सवद रूप कीयो आदेस ।

भाछूपा थाल छाल्य जणि लेह छाया पोज न बीस देह ॥ ४ ॥

गरी गयो अगज होय, मन मा कियो विचार ।

(विषाण आगे देंवें)

दुप का अनुभव नहीं हुआ^१। गभ म बालक न हिलता-डुलता या और न पाश्व-परिवतन करता या। हांसा सबके सामने यह भी कहने लगी कि मुझे तो यह अ देसा है कि गभ म जीव निर्जीव है। महीने पूरे होने पर 'परम गुर' प्रकट हुए, उन्होंने माता को जरा भी दुष नहीं दिया। पता लगने पर आसपाम की स्त्रियां आगई। वे बालक को नहलाती-धुलाती कहने लगी-हासा तो कहती थी कि गभ निर्जीव रूप म है, किन्तु यह बालक तो चतय और 'सकल सरूप' है^२। अपन भी ऐसा ही उल्लस है। दस मास बीतने पर, एक दिन रात्रि में हांसा घर म सोई हुई थी। स्वप्न म उन्होंने दसा कि वे पुत्र-हेतु घर म जा रही हैं। जगने पर उ हाने अपन समुस बालक देसा^३। इस वधन का तात्पर्य यही है कि प्रसव-काल म हासा को विचित भी कष्ट नहीं हुआ। रात्रि बीतन पर लोह्टजी ने पंडित को बुलाकर बालक के जन्म-मुहूर्त के विषय म पूछा। उसन 'पतडा' (पचाग) दसकर बताया कि सबत १५०८ के भान्ने वदि अष्टमी, सोमवार को वृत्तिका नक्षत्र मे बालक उत्पन हुआ है। यह कुल-तारक होगा। "निसरावण" (मुत्र आदि देखने के रूप) लेकर पंडित गया^४। लोह्टजी और हासा को जोगी द्वारा पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वात् प्राप्त होने का उल्लेख अनक कवियों और ललक ने किया है। परवर्ती रचयिताओं न सम्भावनामा का बढ़ावा दकर इस कथा म थोडा सा अंतर कर दिया है। सादररामजी के अनुसार, वह जोगी लोह्टजी को द्रोणपुर के जगल म मिलता है, जब वे अकाल काटने के लिए वहा गए हुए ह तथा जोगी जाट द्वारा उनके 'निपूतेपन'

माता अ तरि ऊपजी, आप लीय अवतार ॥ ५ ॥-कथा श्रीनार की।

१-केतक दिन हुवा परवाण्य, आसा अभ अपनी जाए।

दुप अहुप नही बीहार, पाव देह पटि प्राण अधार ॥ ६ ॥-बील्होजी, कथा श्रीतारपात।

२-माता ओरे अपनी आस। फुर फुरक फोर पास।

माता भए न देही दुप। भार नही अ म्य आधो सुप ॥ ३१ ॥

साजा आगी हासा कहै। मन भा एक अ देसो रहै।

ओदर आदिक उपनू जीव। जीव नही जाग नजीव ॥ ३२ ॥

माहीना पूरा हुवा। माय न दीही दुप।

परगट हुवो परम गुर। जा जाणया ताह सुप ॥ ३३ ॥

आसि पासि ता आई नारि। हाव धौव कर विचारि।

हासा कहता नीरजीव रूप। जीव जाग सकल सरूप ॥ ३४ ॥

-बील्होजी, कथा श्रीनारपात।

३-स मास जदि पूरा हाय। माता घरि सुप सूती साथ।

अगम वात कु रण जाए अ राण होयमी किमन चिलत परवाण ॥ ६ ॥

माता मुपन रीण क पुत्र हन पईठ।

हामा जागी वाली बीगसि, सनभुप बालक दोठ ॥ १० ॥-मुरजनजी, कथा श्रीतार की।

४-रो ग घटी दिन प्रगटयो आय। लोहट पाडे न बुलाय ॥ १२ ॥

पाड पतडो देखि निवाठि। कु ण महुरनि आयो बाल ॥ १३ ॥

पनरा समत अठौतर किरत गपत परवाण्य।

सोमवार भाव क, आठम तिथि परवाण्य ॥ १४ ॥

पाडे पतडो बाच जोय, ओह बालक कुल तारक होय।

पाने नीमरावण्य ले जाय, मात पिता सोच मन माहि ॥ १५ ॥

-मुरजनजी, कथा श्रीतार की।

का अपशकुन मानने और उन पर व्यग्य किए जाने पर, मन में ग्लानि का अनुभव करते हुए पगल में देह-त्याग का सकल्प करते हैं। लोहटजी से बछड़ी का दूध निकलवा कर वह अपनी भ्रूलौकिक सिद्धि का परिचय भी देता है^१। हिसार डिस्ट्रिक्ट (सन् १९०७) गजेटियर में भी ऐसा ही उल्लेख है किन्तु वहाँ द्रोणपुर का नाम नहीं है और यह घटना लोहटजी की ६० वर्ष की आयु में घटती है (अध्याय २ में (२) के अनन्त-सदम-सख्या (२७)। जाम्भोजी की जन्म-तिथि और सवत के सम्बन्ध में सभी लोग एक मत हैं^२।

जाम्भोजी का जीवन कालक्रमानुसार महत्त्वपूर्ण आयाम—जाम्भोजी के जीवन की विभिन्न कालों से संबंधित प्रमुख वाता का उल्लेख वील्होजी ने एक कवित्त (छप्पय) में किया है। यह छंद उनके जीवन—वृत्त के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है —

वरस सात सस्रारि, बाल लीला निरहारी ।
वरस पाच बावीस, पाल एता दिन चारी ।
ग्यार और चालीस, सबद कथिया अचनासी ।
बाल गुवाल गुर ग्यान, मास तीन ब्रस पख्यासी ।

१—प्रति सख्या १९३, जन्मसार, प्रकरण—४।

२—(१) (क) पदरास र अठौतर गुर आयो करि भाव ।

कुपरि पलटण परे करण चापरा निरति नियाव ॥ ५० ॥

—वील्होजी, कथा घडाबध ।

(२) (क) पनरा समत अठौतर, भादव वदि अवतार ।

अठव तिथि अचभ गति, आवे सिरजण हार ॥ १ ॥

—सुरजनजी, कथा परसिध ।

(ख) पनरास अवतार लियो आठमि सोम अठौतर ।

छापर नीबी डू एणुर, आसा तीसना न कर ।—सुरजनजी कृत साखी ।

(३)—(क) पनरास अठौतर, आठम सोम सुवार ।

हरि काया धर आवियो, सिर पर सोवन धार ॥ १२ ॥

—केसोजी, प्रति सख्या १६ ।

(ख) पनरास परवेस, आए भ्रलप अठौतर ।

सतगुर दीय सदेस, सुरग वताव साम्यजी ॥ ३ ॥

वदि भादव विचारि, तिथि आठम्य दिन अवतरयो ।

दुख भजण दातारि, सभरि आयो साम्यजी ॥ ४ ॥

—केसोजी, प्रति सख्या २०१ ।

(ग) पनरास र अठौतरे द्रळा, काय म ले परगटियो कला ।

वदि भादव्य आठवि अवतार, करि किरपा आयो करतार ॥ ८८ ॥

—केसोजी कृत कथा विगतावली ।

(४) 'कलजुग मा श्रवे ध्र म बधे' हवौ । पाछ समत १५०८ ब्रये मीती भादवा वदे ८ वार सोमवार अतका नपत श्री बिसनजी गाव पीपासर मधे लोहट पु वार र धरे चरित रूपी प्रगट हवा । पार कणी पायो नहीं ।

—परमानंदजी लिखित 'सावा', प्र० सख्या २०१ ।

पनरास 'र तिराणव यदि मगतर नु वि आगल ।

पालटे रूप रहियो रिपू, इडग जोति सभरायले ' ॥ -प्रति सख्या ३८ स ।

इसके अनुसार, जाम्भोजी ने ७ वष बाललीला म बिताये, २७ वष (५ + २२) तक पशु चराए, ५१ वष (११ + ४०) तक सबद-कथन किया । इस प्रकार तीना रूपा म पचामी वष तीन महीने बीते । सबत् १५९३ के मागशीय यदि नवमी को वकुण्ठवास हुआ । साहब-रामजी ने भी 'धूपमत्र' के ५ कवित्तो (छप्पयो) म से एक मे अपने ढग से ऐसा ही उल्लेख किया है^२ । इस आधार पर जाम्भोजी के जीवनकाल को इस प्रकार से समझा जा सकता है —

१-जन्म से लेकर ७ वष तक 'बाललीला' काल, ७ वष (सं १५०८ से १५१५) ।

२-८ वष से ३४ वष तक-'पाल'-चारण' काल, २७ वष (सं १५१५ से १५४२) ।

३-३४ वष की आयु मे-सवत् १५४२ मे, विष्णोई सम्प्रदाय-प्रवृत्तन तथा

४-उस समय से सवत् १५६३ (वकुण्ठवास) तक पानोपदेश काल-५१ वष (सं १५४२ से १५६३) । आगे इसके अनुसार प्रामाणिक साम्प्रदायिक साहित्य के आधार पर उनका जीवनवत्त दिया गया है ।

१-बाललीला-काल (सवत् १५०८-१५१५)-सम्प्रदाय के बहुत से कवियो-जाम्भोजी की बाल्यावस्था से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ की हैं । इनमे यद्यपि उनका अलौकिक मिद्धि और चमत्कार-शक्ति के उल्लेख विशेष हैं तथापि उनसे अनेक महत्त्वपूर्ण बातें कल्पिता चलता है । ऐसी कतिपय घटनाओं का उल्लेख नीचे किया जाता है —

(क) जाम्भोजी ने उत्पन्न होने के पश्चात् अनेक प्रयत्न किये जाने पर भी जन्म प्राप्त

१-प्रति सख्या २०१ म इसकी तीसरी और चौथी पक्ति का पाठ इस प्रकार है -

दस ऊपरि चालीस सबद कथिया अवेणासी ।

बाल गुवाल गुर ग्यान, सबल पूगा चवरासी ॥

इसम भूल से पान-कथन काल ५० (१० + ४०) वष और आयु ८४ वष बताई गई है प्रतीत होता है सवत् १८०० के लगभग यह छंद इस रूप म भी प्रचलित था क्योंकि इस प्रति मे सबदवाणी के पुष्पिता रूप एक दोहे म परमानंदजी ने 'बीरामी बरस मुरवाण्य लिखा है । पश्चात् इस छप्पय के ग्यार और चालीस' पाठ प्राप्त होन प उहाने भी अपने उल्लिखित दोहे को सुधार कर या लिखा (प्रति सख्या २२७ म) -

अनत मरद मतगुर कल्या पचामी बरस परवाण्य ।

नायव कठि रहियो अता सेइ सीप्या बीरह मुजाण्य ॥

इम बात का उल्लेख प्रति सख्या २४० म भी मिलता है ।

२-महाजोत गुर जन्म भक्त त्त लीला धारी ।

मत्त मौन रहे बाळ मत्तवीमो गीचारी ।

इक्यावन बय पान गद अगभ अथिवारी ।

पचामी त्रिय माम तज तप लार्द तारी ।

आज्म सोम अठोतर पनराग अथतार ।

तिराणव भिगत्र वत्ति नोमी गहव पत्रुच पार ॥

-प्रति सख्या १६३ सम्भमार, प्रकरण-२४, पत्र २९ ।

नहा ली ।

(ख) उनको पीढ़े पर लेटाया गया किन्तु वे धूम कर 'ईस' (पलंग की पटिया) के बल बैठ गए । पृथ्वी पर उन्होंने पीठ नहीं लगाई^३ ।

(ग) एक बार वे पीढ़े पर साये हुए थे । पाम ही लेटी हुई माता हासा को नींद की भपकी आगई । जगने पर वहा उनको बालक नहीं मिला । लोहटजी के आने पर वह वही मिल गया किन्तु सिर पूर्व से पश्चिम की ओर था^३ ।

(घ) वे स्नान-पान नहीं करते थे । हामा ने 'सयाने' श्राम्भियो से इसका कारण पुछ-वाया । मूस लोग 'आखा लेकर' भोपा के पास गए । उहाने अनेक पाखण्ड रचे, 'टोने-टट-दम' किए किन्तु कुछ उपाय न कर सके^४ ।

१-(क) रोग माद दीस नहीं, दीस सकल सपोस ।

गडसूती पीव नहीं, कही कु रण रो दीस ॥ ३८ ॥

-बील्होजी, क्या श्रौतारपात ।

(ख) नारि उचार विचार कर आय नीरमल नीर हुवाव ।

घुटी व काज्य कहेँ मुप को रप मोहन व मुपि हाथ न भाव ।

गाल्य व नाक टिक कर थोडी गोम्यद की गति नारि न पाव ।

केसौदास उदास भई महरी धरती धरणीधर पीठ न लाव ॥-केसौजी, सबया ।

२-पाढ पोढायो सुप वासाणि, पीरि हवो इसकी व ताणि ।

पामो भोम्य न देई देव, कु रण जाण सतगुर को भेव ॥ ३९ ॥

-बील्होजी क्या श्रौतारपात ।

३-(क) पीढ ऊपरि बालक थाय । पास पोढी हासा माय ॥ ४१ ॥

दुणको एक नीद को लियो । जागी वेग सभाली कियो ।

पीढ उपरि फेर हाथ । बाल नहीं मन घसक्यो मात ॥ ४२ ॥

निरप पीढ को आमपास । बाल न लाधो घात सास ।

मुपि बोल बरागी वण । मूक नहीं अ धारी रण ॥ ४४ ॥

साद करि लोहट न कह्यो । बालक कोई स्यावज ले गयो ।

मल पल करि उठियो पु वार । घग करि आयो तिणि वार ॥ ४५ ॥

लाधो बालक पूर्गी रली । मूक नाही तू आधळी ।

हासा मुप ता बोल भापि । साथी नहीं दिराऊ सापि ॥ ४६ ॥

पीढ उपरि पोढावियो, सीस बवल पूरव दिस कियो ॥ ४७ ॥

इह बालक घोडो बल काह । पछिम सीस पुरव दिस पाय ॥ ४८ ॥

-बील्होजी, क्या श्रौतारपात ।

(ख) पीढ तो पोढायो आय तन इसकी व ताय कहत पुरत मात अ ति अनराई है ।

मूक तक करत जजारि परयो जीवरी पल सू लागी पलक नेक नीद आई है ।

सोवत ढर सरीर इधक भई अघोर बूक चूक चीतवत मोहि मन भाई है ।

कवि कहेँ केसौनाम नारि हू भई निरास, पीढ तो न पायो बाल मात मुरभाई है ।

आवत घावत है यदि लोहट दू ढत ढाढत है ज गली ।

मइया मुरभाय पुकारि परी तन तेज घटयो डिग नाहि छली ।

पीढ इढ लहो जब लोहट पु वार भन नारि तू अ धळी ।

आय उठाए उचाय केस भन रग होत रली ॥-केसौजी, 'सवए' ।

४-मान मुपि लेहचल देह । चू घ नहीं अचभौ एह ॥ ५२ ॥

उरि उपरे पहुचो फेराय । पहुं आव श्री हरि जाय ।

(शेषाय आगे देखें)

(ड) एक बार वे हिंडोले में थे। घर में और कोई नहीं था। 'हारे' में 'कढावणी' में धर्म गर्म हो रहा था। जब दूध उफानने लगा तो उन्होंने 'कढावणी' उतार कर पृथ्वी पर रख दी। हासा ने हिंडोले और 'हारे' के बीच जाम्भोजी के पर के निशान देख कर उनको बोहे के तसले से ढाप दिया और लोहटजी को दिखाया। यह देख कर लोहटजी को बन में लोगों के मिलने और पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वाद की बात याद आई। --

(च) लोग जाम्भोजी को 'गहला-गहला' कहते थे। वे न दूध पीते और न भोजन करते थे। इस कारण मूर्ख लोग लोहटजी को भ्रमाते और बालक के सम्बन्ध में भोपा और गहलणो से उपाय पूछने का आग्रह किया करते थे। वे उनको भोपो के पास ले गए। भोपो ने १३ बकरे-बकरियों की हत्या इस निमित्त की। जाम्भोजी ने उनसे पूछा-तुमने आज कितने जीव मारे हैं और उनको मार कर कौनसा काय पूरा किया? उन्होंने उत्तर दिया ११ जीव मारे हैं और इनसे दूध-दोष-मोचन किया है। जाम्भोजी ने तब कहा-तुमने एक गम-वती बकरी भी मारी थी, जिसके २ जीवित बच्चे निकले किन्तु बिना सहारे के वे भी मर गए। इस प्रकार, तुमने १३ जीवों की हत्या की है। यह अदृश्य कथन सुन कर भोप स्तब्ध रह गये। जब जाम्भोजी ने 'पथ प्रकट किया तो ये लोग भी उनके अनुयायी बन गए'।

माता पूत पैयारो होय डाहो स्याणो पूछो कोय ।
 भु छ लाग भरमा वमि पया, आपा ले भोपा व गया ॥
 माया घ ए भोपटा, कूडा कर उपाय ।
 अय्यातो अथावणा मुप धोल अनियाव ॥ ५४ ॥
 सेवग हू ता भोपा तणा, दू एण टटवस किया घणा ।
 वारा भूता रह्या मनाय, भोपा तणी न सरही काय ॥ ५६ ॥
 -बील्होजी, कथा श्रीतारपाठ ।

१-बालक हीड हिंडोलण, यू एण दूध कढ काढण ।
 हामा गई ज कारज कही, देव पपो घर कोई नहीं ॥ ६२ ॥
 भटक बालक लियो समाहि, कर गहि ढकण लियो उचाय ।
 दूध रीढ तो राप्यो ठारि, भुय मल्लो काढणी उतारि ।
 हिणोल यू एण बीच चीग निरये हासा दीठो पाज ।
 निरये तमटो नीयो ताकि, पोज जतन करि राप्यो डाकि ॥ ६६ ॥
 हु गऊ चरावण गयो बन माहि एक पुरिप भेंटयो उण ठाय ॥ ७३ ॥
 पुरिप पास हु का दा रह्यो कह बालक को आवण्य कही ॥
 -बील्होजी, कथा श्रीतारपाठ ।

२-नाहट हामा क तणिय दव वामो तियो घाय ।
 गन्तो गन्तो ज्यो कही, अलप न लपणो जाय ॥ ७८ ॥
 भु छ लोग भरमाव घणा पूद्र भोपा भर वाभणा ॥ ८४ ॥
 लाग चायो भाया जाय बालको लियो आगणी विल्माय ॥ ८५ ॥
 घा वान्क दपो निरपाय बालक गति न जाणी जाय ।
 पाय उक्क न उक्क अहार वाक्क तण न वाभ पार ॥ ८६ ॥
 वाक्क न्द भोक्क मुर वाणि भोपा न पूछ छ जाणि ।
 किना जाव मारिया घाज मार्या जीव कु ण मारयो काज ॥ ८६ ॥
 भोपा क्क अय्यार किया दूध दाग करता रापिया ।
 मूमर छाटा तारा ताहि जीवत बकरी निकली दोष ॥ ९५ ॥ (गयाण घाण भेने)

जाम्भोजी को 'भोपो' के पास ले जाने के यही कारण मुरजनजी ने बताया है। उनके अनु-सार, जाम्भोजी को पसक नहीं पड़ती थी, वे पीठ के बल मोत नहीं थे, चाते-पीते नहीं थे, निराहारी थे^१। इस कारण उनके उपचार हेतु लोहटजी भोपा के पाम गए थे। उनके 'गैप कथन बोलहोजी के समान ही हैं^२।

(छ) एक शमगान-सेवी ताम्रिक ब्राह्मण अपनी मिद्धि दिग्गया करता था। लोग उमका लाये। लोहटजी थोडा-यदि इग बालक के आराम हो जाए, पांच वक्त भोजन करने लगे, जमे हम बोलत हैं, वस बोलन लगे, तो तुझे बघाई म एक गाय दू गा। उसने अनक प्रपच रच, ६४ छिद्रा वाला एक घडा और १०८ चोमुखे दीपक बुम्हार से बनवाए। गनि बीतने पर रवि की रात्रि को दीपको म तेल-वत्ता डालकर जलाना आरम्भ किया किन्तु व न जले। तब उमने बालक को नहलाना चाहा। इस पर जाम्भोजी ने कहा-भूठ क्या बालत हो? अभी कुछ देर पहले तो नहलाया था। स्वयं भूठ बोलते हो, तो 'गहल' को क्या आराम करोगे? इस प्रतिवाद की निपायत लोहटजी ने करत हुए 'पाडे' ने कहा-यदि दीपक जल जाएँ, तो मरे तत्र-मत्र सब सिद्ध हागे, अयथा नहीं। इस पर जाम्भोजी बोले-यदि तू मेरा उपचार कर मके तो दीपक जल जागेंगे। उहाने चोमुखे दीपक और घडा अलग किया। मिट्टी का घडा बनाया, चोमुमे दीपका म पानी डाला और दीपक प्रज्वलित हो उठे। यह देख कर, 'पाडे' हक्का-बक्का रह गया, उसका गव-गुमान मिट गया। उसन इस 'अगम पुष्प' की महत्ता लोहट-हागा को बताई। जाम्भोजी न पाडे को लोहटजी से एक गाय तिन-

माभळय भोपा गया श्रीभाय, ई बालक सू बोलणी न जाय ॥

परगट पय कियो जनि घणी, गुर दिवाण्य मिली गति घणी ॥ १०० ॥

—बोलहोजी क्या श्रीतारपात।

१-(क) पनक न पुरक पूठि घर, उलक न नीद अहार।

नर गुर भेद न जाणई नर दही निरहार ॥ ३ ॥—कथा परसिध।

(ख) मोव नही पूठि घर जोय, धरती अग न लाव सोय।

नीर पीरि नहि लेह अहार भूप नीद नही बोहार ॥ १६ ॥—कथा श्रीतार की।

२-(क) लोहट पुत्र हेत करि, लीयो अग्य लगाय।

भोपा का टकसाल ग्या दुप आपणो सुणाय ॥ २४ ॥

जदि ता बालक को अरवतार तिल समाय न लियो अहार।

फमो दूध न थानक धार जीव जाग कव ग्य विचार ॥ २६ ॥

दोम दूरि करा जे बीर थानक चु घ पीव पीरि।

पुत्र सारो करि छा तोहि कहा बघाई पावा मोहि ॥ २७ ॥

तदि सतगुर बोल मुर वाणि भोपा न समभाव जाणि।

पट काजि बयो किया अकाज तरा जीव हत्या बयो आज ॥ ३० ॥

सूभर छाली मारी तोहि गरभ्यो जीव निकाल्या दोय।

सतगुर लेप सभ ही जीव मगला जीव पीछाण सीव ॥ ३२ ॥—कथा श्रीतार का।

(ख) पूछ भापा वामणा विरमोही बीर तत।

विदियाघर बीरोटिया, चेला होय चालत ॥ ४ ॥

मर्म तणी वभावली जागर कर अजाग।

तेर हति ग्यार कहै, गुर बोल मुर वाण्य ॥ ६ ॥—कथा परसिध।

वार्द्धि और प्रथम सब कदा । सम्प्रदाय भ मर घटा ध्याय प्रगिद्ध और प्रवर्धित है,
जिगमे कई कारण है —

- १-बोभल एर कहीर जोग, जोग मत्र मोग्गी यराण ।
 बम जाय मुमांगी तीर वीरोटियो समाध योर ॥ १०९ ॥
 पांर टाक जे जीम भूत तीर मगोजे म्हारो मर ।
 ज्यो म्हे बोला ऊ बोनाय, पांर तिया बधार्द गाय ॥ ११२ ॥
 चौमटि नाला एग वाहणे, कियो मु भारि भदायो मने ।
 घटोतरिणी चौपट्टी, कियो मु भारि पहाई मदी ॥ ११६ ॥
 वसदर तल रुई म्हाणाय, य पणि ध्याय मन्हा उ ग टाय ।
 यावर वरति भारि रिय राति पांर तन मगायै याति ॥ ११७ ॥
 तल टयो चौपट्टिए पाति चौपट्टी नाला मदि याति ।
 याति याति वगएर देव दीवा न जग कर टा पय ॥ ११८ ॥
 देव कहै गुणि वामग मूढ अतरो वांर वाला न कूट ।
 थोडी मी दा नुहायो कयो तीर न दहु गवाहो कही ॥ १२० ॥
 कूडी बोल मुपि यावर, गहला मारो विणि विधि कर ॥ १२१ ॥
 देव कहै तू मुणि पाठिया तल र रुई न जगे शिया ।
 तत न लाग मत्र न पुर गहला मारो विणि विधि कर ॥ १२५ ॥
 पाडे लोहट न पूछाय भो वाग्ग ऊ कयो बोलाय ।
 भापर कहू भपूठी दीव तिह भापर को उत्तर दीय ॥ १२६ ॥
 लोहट कहै म्हा धारति घणी, विधा न लाभ बालक तणी ॥
 तिह कारणि तू भाण्यो जाय तो मू पांटे मारी न वाय ॥ १२७ ॥
 पाडे कहै जे दीवा जग, तत मन मोड म्हारा लग ।
 दीवा जग न दीस लाय म्हारो मत्र न लाग वाय ॥ १२८ ॥
 देव कहै दीवा जग मारो वरिस्य मोहि ।
 दीवा सजल जगायस्यो पाड वमप न होय ॥ १२९ ॥
 चौपट्टी नाला मेलहा दूरि मलय माटी भाणी हजरि ।
 भाणी माटी माडयो घाट, चौपट्टी नाला पाणी घाति ॥ १३० ॥
 वसएर न दीहू दुवो जग्य दोया सचदग हुवो ।
 दीठी किसन चिलत परवाण मरय गल्या पडे का माण ॥ १३१ ॥
 लोहट धोपो मन निवारि मिनप न पूछी इण ममारि ।
 हासा मय उणी मत जाह भगम पुरिप अचतरियो भाय ॥ १३३ ॥
 देवजी लोहट न कहै कियो बोल सभालि ।
 सकलपि उदकि न रापिय हेव गाय दियो घे टालि ॥ १३४ ॥
 पाच टाक तोहि अ न जीमाय तो वाभण न दीज गाय ॥ १३५ ॥
 कारी तो क्रम सारी होय पाडे दोस न जो कौय ॥
 इह पाडे का भाव विचारो जाण्यो बालक होयसो सारो ॥ १३६ ॥
 असो भाव करि भावै भास सो कयो करि मलिय निरास ? ॥ १३७ ॥

—बिल्होजी कथा श्रीतारपात ।

- २-(क) घेन विपर धरि धारणो सिध भेटियो समाध ।
 गुर कहै गति सभली सतगुर सबद अग्याध ॥ १३ ॥ सुरजनजी, कथा परसिध ॥
 (ख) सतगुर पिडत न समभाय, मसकति तेरी दियो मगाय ।
 तदि हरि लोहट नकट हवारि, दया रूप होय सबद उचारि ॥ ५० ॥
 —सुरजनजी कथा श्रीतारपी ।

१-‘वातसीला’-बाल की यह अति महत्त्वपूर्ण घटना है।

२-जाम्भोजी ने प्रथम ‘सवद’ इसी अवसर पर कहा।

३-इसके पश्चात् वे जगन में पशु चराने लगे थे और

४-उनके उपचार के सब प्रयास इसके पश्चात् छोड़ दिए गए थे।

जाम्भोजी के जीवन के विषय में लिखने वाले प्रायः सभी लेखकों ने प्रकारांतर से इस घटना का उल्लेख किया है। मुरजनजी इसकी पुष्टि करते हैं। उनसे अनुसार यह पन्ति नागौर का है। “सवदवाणी” के गद्य और पद्य प्रसंगा में भी इसका उल्लेख है^२।

जाम्भोजी की बाल्यावस्था विषयक गलत धारणाओं का निरसन उपयुक्त वातावरण और धरनामा का विगण महत्त्व इसलिए है कि इनमें जाम्भोजी के सम्बन्ध में प्रचलित कति-

१-(क) नगरे वाम वारोटियो, लोहट ल्यावण जाय।

भरम्या भेद न जाणई, दइय न भाव दाम ॥ ७ ॥

भाव रिजव उभद करि, तल वाति करि त्यार।

विपर जगाव वासदे, वरज सिरजण हार ॥ ८ ॥

वाची माटी वारवी, छलिया जलहर छाण्य।

विष्य वमन्तरि चादिगो, जगिया जेह परवाण्य ॥ ११ ॥-कथा परसिध

(ग) पिडत एक वम नागौर, निस बू पिडन पूछ और।

नाण सुग मुणाव सोय, वालक मारो करिसी सोय ॥ ३४ ॥

अठोतरि दीवा उतराय, करव चौमटि नाल कराय।

वमन्तर मा परा कराय, दीतवार को नाव धराय ॥ ३६ ॥

करव जल पुरायो सोय पाडे मत्र पडे सजोय।

का दा सतगुर न हुवाय दीवा दीज वाति चडाय ॥ ३७ ॥

तल वाति ता जोति न होय, एमो अन्नभो सुष्यो ऽ कोय।

जय तग दीवा जोति न होय तो लग मत्र ऽ लाग कोय ॥ ४० ॥

जति सतगुर बोल मुरजाण्य पाडे घोखो मन न आण्य ॥ ४२ ॥

वाची माटी लई मगाय अठोतरि करवा टहराय ॥ ४५ ॥

ता मा जल पुरायो जास त सतगुर की वदू आन।

वाचक हुकम कियो तिणि वार जग्य वसदर हुवो तयार ॥ ४६ ॥

वीरोटिया लोहट ममभाय, अगम पुरिय अवतरियो आय।

देह ता म्याणी नाहो कोय जिह की वाच नीरोतरि होय ॥ ४८ ॥

-कथा अतार की।

२-(क) ‘वाच कव नीर रायो। वाची माटी का दीवटीया कराय जा जा हि पाणी घतायो। हुकम सु दीया जगाया। जगाय वाभण व परचो दीपाल्यो। यावि सवदवाणी सतगुर की थी सतगुर वाच। गुरचीह ”। -

(ख) चौमुपा बनाय करि पलीतो दियो सवार।

वो जगाव व बुझ बुभत न लाग बार ॥ ४ ॥

सिरै धून फू फू कर बहुता कर परग्यान।

मम गल तव बोलिया सुण रे मूढ अजान ॥ ५ ॥

वाच करव जन रप्यो गवद जगाया दीप।

वाभण की परची दियो ऐसी अचरज कीप ॥ ६ ॥

जो बुझ्यो सोई कही अणप लपायो भेव।

घायो सब गमाय के जद सवद कही मम देव ॥ ७ ॥ -प्रति सख्या ११२।

पय गलत धारणा का निराकरण होता है। य वे है —

१-जाम्भोजी जंगल के गम से उत्पन्न रहा हुए थे, य उाको कहीं पडे मिल् य ।

२ ये धारम्भिक ३४ गाल तक (कई लगन) क अनुगार ७ गाल तक) एव मात्र भी नहीं बोले, ये गू से थ ।

३-उहने प्रथम "सच" ३४ वष की आयु म कहा था तथा

४-अपने के धोर काय करे क कारण उाका नाम धारम्भ या अचम्भा से 'जम्भ', जम्भा, जाम्भोजी' पडा । इत गाता का उल्लेख अपिवांगत विभिन्न रिपाओं धोर गत्रैरि-यरो म किया गया है^१ । परवर्ती लगन १ लेग पूर्ववर्ती कथना का अनुकरण मात्र किया है ।

पहली बात के सम्प्रथ म धो-होजी, कगीजी, गुरजनजी धारि कविया धोर वनमान कसका के उल्लेख ही पर्याप्त है^२ कि जाम्भोजी माता के गम म उत्पन्न हुए थे । ३४ या ७ वर्षों तक मौन रहने वाली बात भी गत प्रमाणात हाती है । रिगी भी हजुरी कवि न ऐसा उल्लेख नहा किया । वो होजी की 'कथा धीतारपात' म यह रिक्ति होना है कि जाम्भोजी के काय धारार-व्यवहार धारि धय समयपरत बालकों स नितात भिन्न कोरि क थे तथा य गवधा निराहारी थ । लोग इग कारण उनको "गहला" कहन सगे थे । इम सबथ म श्यातय है कि -

(क) लोग उनको 'गहला' कहने थ गू गा नहा । यहाँ के धामधाम के लोग की दृष्टि म ही जो अथ-विश्वासी, धाचार-विचार हीन धोर भूग थे^३, ये "गहल" थ । काला-तर म सम्भावनाओं को बढ़ावा दकर उनको "गहले" स 'गू गा' बना दिया गया ।

(ख) वील्होजी की 'कथा धीतारपात' के अनुगार, रोहटजी दमदान-सेवा ब्राह्मण को कहते हैं कि यदि बालक पाँच कथन भोजन करने सगे धोर "ज्यों रहे बोला ऊ बोलाय" अर्थात जैसे हम बोलते हैं वैसे यह बोलने सगे, तो बघाई म एव गाय दू गा । तात्पर्य यह है कि बालक बोलता तो था, किन्तु वसी बातें नहीं करता था जसी धय लोग करते थे । कदा-चित् उनकी बात दूसरो की बातों से भिन्न प्रकार की, धारमधान युक्त होती थी धोर वे मित-भापी थे । स्पष्ट है कि वे बोलते थे, मौन नहीं रहते थे धोर गू गे तो थे ही नहीं । 'लोग समझते थे कि ये गू गे हैं, परन्तु वास्तव में ये गू गे नहीं थे । ये जन्म स ही योगी थ धोर अपनी अलौकिक स्थिति म मग्न रहने थे'^४ ।

(ग) इसी 'कथा' म भोषो तथा दमदान-सेवी ब्राह्मण के प्रसंग म जाम्भोजी क बोलने का उल्लेख है । अत ३४ वर्षों तक मौन रहने की बात तो अलग, वे सात वष तक

१-द्वष्टव्य-अध्याय २ म (२) के अतगत सख्या ३, १६, २७ । सेवादास (कवि सख्या १-८०, -"इ दव छद") के अनुसार हासा का जाम्भोजी गायों के धाडे म रोते मिल् थ -

नव मास बीता अब्ब दीप में उजारी भयो, गवन क वार माहे, बाल रोव धाय क ।

दुनिया सकल कहै, बाळ प्रभु दीनो तम, हासलदे माय गोद ले गई उठाय क ॥ ४ ॥

२-द्वष्टव्य-अध्याय २ मे (१) के अतगत-सदभ सख्या १, ५, ८, ९, ३३, ४०, ५०, तथा (२) के-सदभ सख्या ४४, ५६, ५७ आदि ।

३-द्वष्टव्य-वील्होजी कृत "कथा गुण्डिय की" तथा अध्याय ३, -सामाजिक स्थिति ।

४-योगाक, बल्याण, गोरखपुर, पृष्ठ ८१७, पय १०, सख्या ३, आश्विन, सवत १९६२ ।

भी मौन नहीं रहे थे। ३४ वष की आयु (संवत् १५४२) में तो उन्होंने विष्णोई सम्प्रदाय की स्थापना की थी, मौन-भंग नहीं किया था, जसा कि "गजेटियर" और "रिपोर्ट" लेखकों ने लिखा है।

"अचम्भे" से "जम्भ", "जाम्भा" नाम पडने की कल्पना भी निराधार है। विशेष-पण रूप में उनके अनेक कार्यों के लिए "उदबुद्ध" (अद्भुत), "इचरज", "अचम्भ" आदि शब्दों का प्रयोग साम्प्रदायिक कवियों ने किया है। जहां तक "अचम्भ" शब्द का प्रश्न है, यह विशेषण रूप में उनके नाम जम्भ के साथ प्रयुक्त हुआ है। "अचम्भ जम्भ" के अनेक विशेष-पण-विगप्य प्रयोग हजुरी और परवर्ती कवियों के मिलते हैं जिनसे स्पष्ट है कि उनका वास्तविक नाम "जम्भ" (जाम्भोजी) ही था^१।

२-"पाल-चारण"-काल (संवत् १५१५ से १५६२)-इमशान-सेवी ब्राह्मण वाली घटना के पश्चात् जाम्भोजी जंगल में "पाल" (पशु) चरान लगे। "धारे" (टीले) पर बठे हुए वे अपनी आत्मा से ही पशु चराया करते थे। पशु सहज भाव से आते-जाते, खाते-पीते और जाम्भोजी की आत्मा मानते थे^२।

(क) घाडवियों से 'साढे' (ऊ टनिया) छुडाना-सबदवाणी के 'प्रसंगो' से विदित होता है कि वन में इस प्रकार पशु चराते समय कभी जाम्भोजी ने ग्वालो के कहने पर किसी राव (सम्भवत ऊधरण काहावत) की साढे (ऊ टनियाँ) "घाडविया" (डाकुआ) से छुडवाई थी। यह देख कर ऊधरण काहावत ने जाम्भोजी से चार प्रश्न किए जिनका उत्तर उन्होंने चार "सव" कह कर दिया^३ (स्वीकृत सबद सख्या २, ३, ४, ५)। ऊधरण काहावत शाखा

१-अध्याय-२ में (२) के अंतगत, सबद सख्या ८२, इन पक्तियों के लेखक का 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ' निबध है।

२-(क) विणि रोटी विणि लाकनी, विणि पाणी विणि पाल ।
परवी पशु पसेखा, थल्य बठो प्रतपाळ ॥ १७ ॥
हुकमे भाव हुकम ज्य हुकम्य चराव बाल ।
जगल्य थलि जीवा घणी, लपियो लील भु बाल ॥ १८ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध ।

(ख) गाय भस्य छाली सलवार, वन मा चर कर निति सार ।
भूपा न भन दीय अहार प्यास्या न जल कर तयार ॥ ५६ ॥
परि हुकमे हुव चु ध जदि आय, नाहर चोर सताव नाहि ।
हुकमे भाव हुकमे जाय, बाल गुवाल रहै सम्य आय ॥ ५७ ॥
-सुरजनजी, कथा-औतार की ।

(ग) हरि श्रीलप्यो जीवा मन माहि । सहजे भाव सहजे जाय ।
सहजे पीव सहजे चर । करताजी रो कहियो कर ॥ २१ ॥ -कथा बाळलीला ।

३-एक सम देवजी बलिया राज कर । राव रा वरग घाडविये लीया । देवजी सू सलवा आय नोसरया । देव वन पाल रमे छा जका कह्यो-रावजी की साढि छुडाव तो तू सति दव । देवजी कहै-थे गेडी कावा सगला असवार हुवो । असवार हुवा । देवजी कहि सगला ललकार कीवो । घाडविया की नजरि कटक भायो । साढे छोडे न्हाटा । ग्वारी साढ्या लार छा तका बाहर पातो । बाहरेके टोला चरता दीठा । ग्वालिया न कहै-रे मरदा साढ्या क छुडाई ? "म्हार साथे भी देवजी छ अणि छुटाई" । और उमराव (गैयान्त भावे देलें)

गठोड राजपूत थे जो मडौर के राव का हाजी से बली थी। इस घटना का उल्लेख कैसोजी ने भी किया है^१।

(ख) राठौड राव दूदो जोधावत का मिलना-कैसोजी के अनुसार, इस घटना के पश्चात् वे पीपासर गए, जहां वे कुएँ पर जोधावत राव दूदा ने भी डेरा कर रखा था। वहां वे अपनी आज्ञा से ही पशुओं को पानी पिलाने लगे। उन्होंने बकरियों को पानी पीने का आदेश दिया, जिसे सुनकर वे तो पानी पीने के लिए उठीं किंतु बकरे बंठे रहे। यह देखकर राव दूदा ने उनको 'आदेश' किया और अपनी इच्छा-पूर्ति की प्रायश्चा की। वे मेढते से निकाल दिए गए थे और उसे पुन हस्तगत करना चाहते थे। जाम्भोजी ने उनको काठ-मूठ का तलवार और मेढता-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया^२। इसका उल्लेख (क) ऊदोजी नए, (घ) मुरज-नजी, (ग) मुकनजी, (घ) परमानदजी, (ङ) सेवादास, (च) गाकलजी आदि विष्णोई कवियों^३ के अतिरिक्त राजपूताना रिपोर्ट और जोधपुर स्टेट गजेटियर में भी सर्विस्तर

चढ़या ऊभा, के उत्तरया। उधरण का हावत कर जोध धरज कीवी-भैवजी। घाट वेट पूठि दीस नही, छाया दीस नही आप कुण बालक छो? श्री भामाजी उवाच-"मौर छाया न माया" उधरण का हावत कहै-"राजि री उमरि थोडी दीस छ, वात प्रण दीनी करी छो" 'भामाजी' ये जाप कुण रो करी छो? -प्रति सख्या २०१ से। (प्रति सख्या ११२ में मही प्रसंग पद्य में है)।

१-भोका ता टोला लिया, वन मा पृहुता जाय।

गालक कहै बुद्धर सुणो, मतगुर त्योह छुडाय ॥३७॥

कर हाक कर ललवार, गेडा काम हुवा भ्रमवार।

जाए १ पाव बह्यो सुणाय, हजार लाप दज पृहुता जाय ॥ ३८ ॥

छाडयो प्रग गया सै हास, बालक ऊभा दीस पास।

वाहह मन रलिघाला थया, काठी नर तीवी साड छुडाय ॥ ४० ॥

बालक कहै सुणो एक बात भ्रमभेसर कीवी एक घात।

वाहहू आय विलग्गा पाय वा जाण्यो तिहु लोका राय ॥ ४१ ॥-कथा बाललीला।

२-पमुवा पाव पालता, रामत रम ज रीत।

पीपासर गोमद गया, पालतिया सू प्रीत ॥ ५० ॥

मिरजणहार बह्यो सुणाय, अजिया उठो पीवो जाय।

अ नि छाली हुती एकठी, अपरम्पर र कहिय उठी ॥ ५४ ॥

पसव विमन पिछाणियो, भगवत भगव बेस।

वठया रहिमा बाकरा, दूदो कर आदेश ॥ ५५ ॥

कर जोड दूदाजी कही, दूदेजी भोळतिया दर्ई ॥ ५७ ॥

मो अपरम्पर पूरी भास, पारबह्य कीज परतास।

माय्य कहै करी पाधो मतो, मया करि दीनी मेढतो ॥ ५८ ॥

जभमर दगा जुगति, हरखी न भाव हार।

का० मू टि करता कर तं सुपी तरवार ॥ ६० ॥-कैसोजी, कथा बाललीला।

३-(क) दूमरी आरता पीपासर भायो, दूदाजी न प्रभु परखी निवाए ॥ २ ॥

(ग) दूदा न गं मेढतो परच पम लहन।

माका बीज मयक ज्यु तिन तिन कया चरत ॥ २१ ॥-कथा परगिध।

(घ) दूदा मन मान कवत मान, निरन्तरी न भाय नुयो।

पीपासर पायो अनय लपायो उनरि पुवग अरज कियो। (गयाग घाने दमो)

किया गया है। "जोधपुर गजेटियर" में पीपासर के स्थान पर "हरसर" गाव भूल से लिखा गया है। "रिपोर्ट" में मुसलमानों द्वारा मेड़ता लिए जाने पर, सवत् १५४२ में राव दूदा का वहाँ में भागना और इसी सवत् में उनका पीपासर के कुएँ पर जाम्भोजी से प्रथम बार मिलना लिखा है, जो गलत है। इस सवत् में मेड़ता पर मुसलमानों के किसी आक्रमण का उल्लेख इतिहास-ग्रंथों में नहीं मिलता। वस्तुस्थिति यह है कि इस समय तक तो राठौड़ों ने भरभूमि के विभिन्न प्रदेशों पर अपना शासन पूर्णरूपण जमा लिया था। जोधपुर में जोधाजी, बीकानेर में बीकाजी, छापर में द्रोणपुर में बीदाजी तथा मेड़ता में राव दूदाजी ने अपना-अपना शासन स्थापित कर रखा था। राव दूदा के दो युद्ध मुसलमानों के साथ हुए थे—सिरियाखान और मल्लूखान के साथ और दोनों ही इस सवत् के बाद हुए थे। दूसरी ओर, इस सवत् में ता सम्भरायल पर जाम्भोजी ने सम्प्रदाय का प्रवचन किया था तथा इससे पूर्व ही वे इन "शूल" पर रहने लगे थे (विशेष द्रष्टव्य—बील्होजी कृत "कथा गुगलिय की")। इस घटना का समय विन्म सवत् १५१६ होना चाहिए। हरिनन्द (कवि सख्या-७६) नामक विष्णोई कवि ने एक "हरजस" में लिखा है कि वरसिंह द्वारा दिए गए "देसौटे" (देश-निर्वाह) के समय राव दूदा को पीपासर में जाम्भोजी ने उक्त आशीर्वाद दिया था —

प्रथम प्रवाह दूदो मेड़तियो, पीपासर परचायो ।

वरसग लु देसौटो बीन्हो, सतगुर पाछो पठायो ॥ १ ॥

हीरानन्द (कवि सख्या-८६) ने अपने "हिडोलणो" (परिगिष्ट में उद्धृत) में भी इसका उल्लेख किया है। बाँकीदास ने इस बात की पुष्टि की है कि वरसिंह ने दूदा को 'देसौटा' दिया था^२। यह "देसौटा" सवत् १५१८^३ के पश्चात् और सवत् १५२५ (सन् १४६८)^४

रुक करारे दान मुरारे रिघ दीनी हरि राज दियो ॥ ६ ॥—छन्द रोमकद ।

- (घ) हुक्म चराव पाल, हुक्मे पाँणो पीजिय ।
बाला सगि जग बाप, कहियो बाला कीजिय ।
कहियो बाला कीजिय, न कियो खेल करतार ।
सोहटजी न चिरत दिखायो, मेह अखडी धार ।
सेत गिपायो साम पहलू, उधरण परचो सार ।
दूद न गढ मेड़तो, हुक्म चराव पाल ॥ ४ ॥—साली ।
- (ङ) पीपासर वाम कुय जल उपरा भान दूदजी की फौज परी है ॥ ११ ॥
दूदोजी आप तुरग बडे जब चावका मार कर घोरो पर है ।
पाडो बगस जद मेड़तो दीनो दूदी जभेसर नावे धर है ॥ १२ ॥—इन्दव छन्द ।
- (च) गुपेण्यो स्वामी सोवनधार । नयो निजनाथ जको निराकार ।
नरापति निरप कर मन राव । पिछाण्यो दूद परस्या पाव ॥ १ ॥—परची ।

१-द्रष्टव्य-अध्याय २ में (२) के अन्तगत-सदभ सख्या ३ तथा ३१ ।

२-बाँकीदास से ख्यात, पृष्ठ ५७, वार्ता-६३६ सन् १९५६ ।

३-भामोपा भारवाड का भूल इतिहास पृष्ठ १०७ ।

४-डा० कलागवन्द जैन अभिनवट सिटाव भाषा राजस्थान, मेड़ता-दिग प्लेस बाज टेकन अवे इन १४६८ ए० डी० बाई दूदाजी, दि सन आफ राव जोधाजी' अग्रवाणित घोष, प्रवच, राज० विन्वविद्यालय पुरत०, जयपुर ।

के बीच ही होना चाहिए। महलाणा गाव के श्री नारायणजी के पुत्र श्री जोगीराज भाट की वही मे, "सवत् १५१९ मे दूदाजी न परचो दियो" लिखा है, जो ठीक प्रतीत होता है। सम्प्रदाय मे भी यह बात प्रसिद्ध है कि ११ वष की आयु मे (१५०८+११) जाम्भोजी ने दूदाजी को "परचा" दिया था। स्वामी ब्रह्मानन्दजी भी इसका अनुमोदन करते हैं।

(ग) गुरु-जाम्भोजी की शिक्षा-दीक्षा और गुरु के सम्बन्ध में विशेष पता नहीं चलता। 'सबदवाणी' में एक स्थल पर 'गोरख गुरु अपारा' (६३ १६) कह कर उ'होने ससम्मान गोरखनाथ का उल्लेख किया है किन्तु इससे यह प्रकट नहीं होता कि वे गोरख को गुरु मानते ह। पुराने साम्प्रदायिक साहित्य में एतद् विषयक कोई संकेत नहीं मिलते। वर्तमान लेखकों में स्वामी इश्वरानन्दजी^२, ब्रह्मानन्दजी^३, श्रीरामदासजी^४, मुशी रामलाल^५, कामता प्रसाद गुप्त^६, स्वामी सच्चिदानन्दजी^७ आदि के अनुसार जाम्भोजी का १६ वष की आयु में जगल में गोरखनाथ ने गुरु-दीक्षा दी थी। ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात प्रमाणित नहीं की जा सकती क्योंकि सुप्रसिद्ध गोरखनाथ तो जाम्भोजी से कई सौ वष पूर्व हुए थे। सम-वत गोरखनाथ उनके मनसा गुरु रहे हों। वे बहुश्रुत और अनुभव-ज्ञानी थे।

(घ) राव जोधाजी को बरोसाल नगाडा देना-सवत् १५२६ में जाम्भोजी ने राठीड राव जोधाजी को बरोसाल नगाडा दिया था। दुरगदास (सवत् १६००-१६८०, द्रष्टव्य-कवि सरया ६३) ने एक हरजस में "कमधज राजा कारण, घरस अठारा देपि" कह कर इसका संकेत किया है। राव जोधाजी और उनके पुत्र बीकाजी जाम्भोजी के सम्पर्क में आए थे। इतिहास-ग्रंथों से पता चलता है कि सवत् १५४४ में राव जोधाजी ने राव

१-विदनाई धम विवक, पृष्ठ २४ सवत् १६७१।

२-जम्भमागर, -'विनापन' पृष्ठ ४३६, सवत् १९४६।

३-श्री जम्भदेव चरित्र भातु, पृष्ठ ३, पाद टिप्पणी पृष्ठ ४०

तथा विदनाई धम विवक, पृष्ठ २४।

४-जम्भदेव लघु चरित्र, पृष्ठ २६-३०, सवत् १९६६।

५-विदनाई धम वेदोक्त, पृष्ठ १८० सवत् १६७५।

६-श्री विष्णु धम प्रकाश, पृष्ठ ७२-७३, कालपी, मन् १९२०।

७-श्री जम्भगाता, भूमिका, पृष्ठ ३, सवत् १०८५।

८-(क) इमकदर शीलपे, परचि लागो पहली परि।

सप सणो मारिपा, किया मुर भाभेसरि।

भकमीरा काजिया, हुवा राजी गुरु भग।

तिमर लिय वाजरा, पुराण छन पंग लग।

मातिन जोध दून भेन्त, माग राण मिधारिया।

जतमी भेट जगत गुरु, जीव मीधार उबारिया ॥ १२३ ॥-मुरजनजी, धूपप।

(ख) परमान जा (कवि मख्या ८८) के ये कथन-

(१) जापो बीको मू ग जतमी, श्रीकम प्रगट ताम।

धानन धकर धरपिया, माणो धाम मुकाम ॥ ४ ॥-माती।

(२) रावमन वरगन मामानिया न दूणो मातिन राव।

वाणो वाणो हमार वापो जोध देवात्म जाव ॥ ३ ॥-माती।

(३) 'राजरा भेन्वाण' का मूची में भी दाती का नाम है,

-प्रति सख्या २०१, पानियो २९९-३०१।

बीकाजी से एक तो लाहणू का परगना मागा था और दूसरे जोधपुर के भाइया से राज्य के लिए दावा न करने का वचन । बीकाजी ने इन बातों को स्वीकार करत हुए बदले में तहत, खन्न भादि पूजनीक वस्तुएँ मागी जिनको जोधाजी ने जोधपुर पहुच कर भेजने का वचन दिया था । जोधाजी की मृत्यु के पश्चात् ये वस्तुएँ बीकाजी को जोधपुर पर चढाई करके प्राप्त करनी पड़ी थी^१ । इनमे जाम्भोजी का दिया हुआ बरीसाल नगाडा भी एक है । वष में दो बार—दगहरे और दीवाली के दिन बीकानेर नरेश स्वयं इनका पूजन करते रहे हैं^२ । इस मदभ में पाउलेट ने (बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ९, पादटिप्पणी, बीकानेर, सन् १९३२) जाम्भोजी को 'यापन' बताया है, जो गलत है । वतमान में यह नगाडा बीकानेर के जूनागढ़ में सुरक्षित है । दुरगदास ने 'कमधज राजा' निस्सदह राव जोधोजी के लिए लिखा है, जिनके लिए—१८ साल की आयु (सवत् १५२६) में गुरु ने "प्रवाडा" किया । "प्रवाडा" का तात्पर्य यहा विशिष्ट काय से है । अनक साम्प्रदायिक उल्लेखों और वाता विगपत राव दूदा वाली घटना के सदभ में विचार करने से यह "प्रवाडा" उक्त नगाडा प्रदान करना ही प्रतीत होता है । इससे जाम्भोजी की प्रसिद्धि, सिद्धि और राठीट—राज—घरानो में मायता का भलीभाति पता चलता है ।

जाम्भोजी और उनके पश्चात् भी यह मायता बढ़ती ही गई जिसकी पुष्टि एक अन्य बात में भी होती है । सम्प्रदाय में खेजटा अत्यन्त पवित्र माना जाता है और उसकी रक्षा की जाती है । इसके अतिरिक्त हरे वन काटने की मनाही है । यह सम्प्रदाय के २९ धमनियमा में से एक है । जाम्भोजी के एतद् विषयक भाव को हुजुरी कवि उदोजी नए (दशैं—कवि सख्या ३७) ने धम—नियम सम्बन्धी कवित्ता में इस प्रकार व्यक्त किया है —

(क) कर रुख प्रितपाल, खेजडा रखत रखाव ।

(ख) जीव दया पालणी, रुख लीलो नही घाव ।

इसको गुरुग्राना मान कर धम—रक्षा भाव में अनेक विष्णोई स्त्री—पुरुषा न खेजरो और हरे वन के काटे जाने पर प्रतिवाद स्वल्प स्वेच्छा में प्राण दिए हैं जिसके अनक उदाहरण मिलत हैं (द्रष्टव्य—'विष्णोई सम्प्रदाय' तथा 'विष्णोई—साहित्य' नामक अध्याय) । बीकानेर के राजकीय ऋष्टे में 'मोटो' (मूलमन्) के सिर पर खेजडे का वृक्ष रखा गया है^३ । यह बीकानेर के राजघराने में कालांतर में हुई जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय की मायता का भी सूचक है ।

१—(क) जि हाउस आफ बीकानेर, पृ २१३, पृष्ठ ११०, बीकानेर, सन् १९१३ ।

(ख) बीकानेर गोल्लन जुवली (सन १८८७—१९३७) (अग्नेजी),
बीकानेर राज्य प्रकाशन ।

२—श्रीभा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी ।

३—(क) श्री जगन्नीरामिह गहलोत मारवाड राज्य का इतिहास, पृष्ठ ५४६,
जोधपुर, सन १९२५ ।

(ख) मन्गी देवीप्रसाद रजवाडो के भडे और राजचिह्न ।

विद्याभूषण—प्रथम—समग्र सूची, पृष्ठ १२२, अमाव २६^१ मन १९६१ ।

(६) जाम्भोजी का ब्रह्मचारी रहने का स्वरूप लोहट हांसा का स्वगवास—

विवाह की बात उठने पर जाम्भोजी ने माता पिता को धाजोवन ब्रह्मचारी रहन का अपना पूव निश्चय बताया । उनके इस दृढ़ स्वरूप को दरन कर कालांतर म व भी मान गए । सवत १५४० के चत मुनि नवमी को लोहटजी का तथा इसके पाँच मास पश्चात् इमी सवत् के भादो की पूर्णिमा को हांसा का स्वगवास हुआ^१ । जाम्भोजी अपनी समस्त सम्पत्ति त्याग कर सभरायल पर रहने लगे ।

३ सम्प्रदाय—प्रवत्त न (सवत १५४२)—सवत् १५४२ म राजस्थान म भीपण भवात पडा । विष्णोई कवियो^२ के प्रतिरिक्त इसका उल्लेख कविराजा मूयमल्ल मिथुग और चारण रामनाथ रत्नू ने भी किया^३ है । जाम्भोजी इसम पूव ही सभरायल पर रहन लगे^४ थे । उहान भवात—प्रस्त लोगा को अन-धन प्राप्ति अनक प्रकार स सहायना को । इसी साल मे वार्तिक वदि अष्टमी को सभरायल पर, स्नान कर हाथ मे माला और मुण स जप करते हुए^५ उहनि कलग-स्थापन कर विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवत्तन किया और लोगा को ज्ञानोप देण दिया^६ । इसको सुनकर पूल्लोजी के मन म उत्पन्न राका का समाधान जाम्भोजी ने

१-स्वामी ब्रह्मानन्दजी श्री जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ ४१ मे ४३ ।

२-(क) समत क्हाव पनरासयी, कुसमू सबल बयाले पयो ।
जीवा जू शि सताई भूप, गडवा मिनया इधको दुप ॥
-वील्होजी, कथा गुगळिय की ।

(ख) काल बयालो करम गनि, परच हीण पकाउ ।
साह परचा भजिसी, पति राप प्रतपाल ॥ २२ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध आदि ।

३-(क) वसभास्कर तीसरा भाग, पृष्ठ १९६४-६५ छंद ३१ , ७,
जोधपुर, सवत १९५६ ।

(ख) इतिहास राजस्थान, छठा अध्याय पृष्ठ २६१ सवत १९४८ ।

४-जगत गरू जगल वस बासो मभि कणाह ।

भेद प्रगास भाव करि गुर तारिसी घणाह ॥ १ ॥

जगल थल्य देवजी रहै जे को पूछ तो गुर कहै ।

पूछ नही लोग गिवार, सतगुर तणी न जाण सार ॥ ६ ॥-वील्होजी कथा गुगळिय की ।

५-करि माला मुप जाप करि सोह भेटियो कुषान ।

पहली कळम परठियो, सइय ब्रह्ममाण सिनान ॥ ४८ ॥-सुरजनजी, कथा परसिध ।

६-गुर उपपेस दीप ते मुण्या । गुर परगट आप गुरु घणा ।

पहली परि फुरमाव दया । विसन नाव जपो मुचि कया ॥ ८२ ॥

त्रोष माण माया कलोम । गुर वरज्या पाप का योभ ।

सतगुर करमाया धम च्यारि । दान मील तप भाव विचारि ॥ ८३ ॥

भ नहट प्रत मानियो परो । भापियो साच भूठ परहरो ।

वरज्या गरू कुसग कुपात । जा त जीवणी दोरकि जात ॥ ८४ ॥

बाया निरमल जल्य माजणै । वाचा नमल मति वोखण ।

मन निरमली ग्यान मू होय । पापु इद्रो रहै समीय ॥ ८५ ॥

गुर निरमळ निकल क गुर पर उपगार करत ।

वील्ह कहै गुर दापव्यो, मुवति खत को पय ॥ ८६ ॥-वील्होजी, कथा गुगळिय का ।

किया। तत्र सबप्रथम वे ही सम्प्रदाय में दीक्षित हुए^१। लोगों को विष्णोई बनाने का काम इस अष्टमी से अभावस्था तक निरंतर चलता रहा। सम्प्रदाय-प्रवर्तन और उसकी पृष्ठभूमि के सम्यक परिचय के लिये वील्होजी कृत "कथा गुगलिये की", "कथा पूल्होजी की", सुरजनजी का "कथा श्रोतार की" आदि रचनाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जिनमें एतद् विषयक घटनाओं का सविस्तर बरण किया गया है। सवत् १५४२ में सम्प्रदाय-प्रवर्तन का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है^२, केवल परमानन्जी का कथन कुछ भिन्न है। उनके अनुसार, सवत् १५४२ में जाम्भोजी ने अकाल पीड़ितों की सहायता की और सवत् १५४३ के कार्तिक वदि अष्टमी को "विमनपथ" प्रकट किया^३। इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। वील्होजी ने लिखा है कि चार महीने सर्दी के बीतने के बाद श्रीधनऋतु आई। फिर सावन को निकट आता जान कर लोग ने सिन्ध से 'बीज लाने का विचार किया'^४। सुरजनजी का कथन है कि जाम्भोजी ने आठ मास-नवें महीने आषाढ लगने तक भ्रम दिया, उसके बाद दुष्काल दूर

- १-(क) भाभेसर वाचा भूठ न होय । गुर का कह्यो करी सोह कोय ।
 पूल्हे दीही सापि वताय । सोह को लागो गुर क पाय ॥
 पहराजा की परतीत ता । जाग्यो पूरव अ क ।
 पूहै की परतीत ता । अब पथ चल्यो निसक ॥ ९५ ॥
 गिगतो कोय न जाणही । चाल्यो पथ अपार ।
 पूल्है की परतीत त सतगुर वाचा सार ॥ ९६ ॥-सुरजनजी, कथा श्रोतार की ।
- (घ) मैं सुरलोके समली हुवे मिरजणहार ॥
 पहली पूल्ह परचियो, हरि पथ चालणहार ॥ ४७ ॥-सुरजनजी, कथा परमिध ।
- २-(क) का बयाळो कहत सही, भ्रम न दे जीव उवारिया ।
 कातिग वदि हरि कलस थाप्यो, सतगुर जुगि जुगि तारिया ।
 मनगुर जुगि तरण तरण, धर्म धारा कलिजुगे ।
 सुरताण राण वपाणि गुर नर परचि गुर लागो पयो ।
 अ विचार घर मा सूर ऊगो तीन तत तावर घटयो ।
 कातिग वदि हरि कलस थाप्यो, पथ बयाळ परगटयो ॥ २ ॥ सुरजनजी, साखी ।
- (घ) समत बयाळ माह काती वद कळम थप्यो,
 मुकति को बृहार कीनी माची गुर जानिय ॥ १८ ॥-सेवादाम ।
- (ग) प्रति सख्या १६३, जम्मनार, प्रकरण ८, साहबरामजी कृत ।
- ३-(क)-परगट कीयो पथ, बयाळ मा भ्रम अपियो ।
 तयाळ कातिक मास, धिरनामो कलस थरपियो ।
 धिरनामो कलस थरपियो, त प्रचिया सुरण देपि ।
 पहली पूह परचियो, झालप्यो अलेपि ।
 ज्यो मथी माह धत काळ्यो, सत्र गारण मधि ।
 परमाणद पूर घली, प्रगट कीयो पथ ॥ च्यारे चक परचाविया ॥५॥३॥-साखी ।
- (घ) "समत १५४३ काती वदे आठम्य पहर दीन चडता कलम थपना कीवी । च्यारे चर मा परमोध कीवी । बीसन पथ कायम कीयो" ।-साका प्रति सख्या २०१ ।
- ४-च्यारि महीना सियाली गयो । ताती रति उहाली प्रायो ।
 दम मतो कीयो लोकाह । तादी ऊठ थोसाही जाह ॥ ३१ ॥
 मतो उपायो मिध को । किराक लियावा मोति ।
 धाव मावण हुकडो । बरा हला को सूत ॥ ३२ ॥-कथा गुगलिये की ।

हो गया^१। तात्पर्य यह है कि कार्तिक से ज्येष्ठ मास तक भ्रम दिया गया। घापाठ के पदवात् कार्तिक वदि मे कलश-स्थापना की गई और सबत् १५४२ का था। स्पष्ट है कि ये दोनों कवि सबत् की गगना कार्तिक सुदि से करते हैं और परमानन्दजी चनादि से। राजस्थान में सबत् का आरम्भ थावण, भाद्रपद, कार्तिक और चर्थादि से माना जाता रहा है^२। बील्हाजी ने 'बरस पांच बाघीस पाल एता दिन चारी' कह कर सबत् १५४२ का ही संकेत किया है। आधुनिक काल के सभी लेखक इसका समर्थन करते ही हैं।

सम्प्रदाय-प्रवक्तृ न के पदनात जाम्भोजी की कृति दूर-दूर तक फैल गई। छोटी बड़ी सभी जातियां, वर्गों और पेशों के लोग अनेक कारणों से उनके पाम आने लगे।

४-सानोपदेश-काल (सबत् १५४२-१५९३)-सबत् १५४२ के बाद जाम्भोजी के जीवन सबधी घटनाओं का क्रमबद्ध उल्लेख तो नहीं मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य से इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उनके सम्पर्क में अनेक प्रकार के लोगों के भ्रान के कतिपय प्रधान कारण ये थे — (१) उनका महिमामय व्यक्तित्व, (२) परोपकारी बर्तन, (३) सानोपदेश सुन कर, (४) जिज्ञासा और शका-समाधान हेतु, (५) सिद्धिपरिचय के लिये, (६) भ्रम लोगों को अनुयायी बनते देख कर, (७) सम्प्रदाय को श्रेष्ठ समझकर, (८) वाय विशेष की सिद्धि के निमित्त आदि। "सवदवाणी"-कथन तथा सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार और स्वयं की दृष्टि में जाम्भोजी का यह समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था।

कालक्रम की दृष्टि से दो पक्ष जिन इतिहास या सम्प्रदाय प्रसिद्ध व्यक्तियों से जाम्भोजी या उनके अनुयायियों का सम्पर्क या मिलना रहा, उनसे सम्बन्धित बातों और घटनाओं का काल निर्धारण किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त अनेक भ्रम प्रसिद्ध और सानोपय व्यक्ति भी किसी न किसी कारणवश उनसे प्रभावित होकर सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। उनमें सम्बन्धित जाम्भोजी की-जीवन-घटनाओं का विवरण कालक्रम से दिया जाना सम्भव नहीं है। माट रूप से इस व्यक्तियों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि वे इस दीर्घ काल में किसी न किसी समय उनके सम्पर्क में आए थे। इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से जाम्भोजी के इस जीवनकाल के दो पक्ष दिखाई देते हैं —

(क) वह-जिससे सम्बन्धित घटनाओं के काल का निश्चय या अनुमान किया जा सकता है,

(ख) वह-जिससे सम्बन्धित अनेक स्त्रो-दृष्टियों और घटनाओं का काल निर्धारण नहीं किया जा सकता।

आगे इस आधार से जाम्भोजी का जीवनवक्त दिया जा रहा है।

(क) घटनाएँ या बातें जिनका काल लगभग निश्चित है -

(१)-ऊदोजी नग और कुलचंदराय अग्रवाल (कवि सख्या ३७, ४१)-सवदवाणी के

१-(क) घाठ मास इकातर। आणे भ न चमग ॥ ३० ॥

वीती जेठ अथाठ पप। इ द मया आदेस ॥ ३३ ॥-कथा परसिध ॥

(ख) मेरी वाचा भग न होय। देखीं भ न नव लग तोहि ॥ ६२ ॥

जदि प्राग आयो बरमाल। वूठो मेह घट्यो जदि काल ॥ ७२ ॥-कथा शीतार की।

२-श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृष्ठ ११९ तथा द्वितीय भाग "भूमिका" आदि।

“प्रसंगो”^१ तथा अय रचनाओं में ऊदोजी नए का उल्लेख आया है। कुलचंदजी की अमान के साथ सम्भरायल पर जाकर वे जाम्भोजी के शिष्य हुए थे। प्रधान कारण यह था कि जिन देवी के वे भोपे थे वह भोग प्रदान करने में अममय थी। जाम्भोजी ने एक “सबद” (सख्या ६६) कह कर उनको जानोपदेश दिया था। ऊदोजी नए बहुत बड़े और प्रसिद्ध कवि हुए हैं। तजोजी के पश्चात् सम्प्रदाय के व्याख्याता व ही विशेष रूप से मान गये थे। दोना सवत १५४५-५० के आसपास जाम्भोजी से मिले थे। (विशेष द्रष्टव्य—कवि सख्या ३७ और ४१)।

२—नेतसी सोलकी, मल्लूखा, राव सातल—कैसोजी की “कथा मेढते की” तथा सबद-वाणी क गद्य-पद्य “प्रसंगा” म अजमेर के सूडेदार मल्लूखा से नेतसी सोलकी की जाम्भोजी द्वारा छुट्वाये जाने का विस्तार वर्णन है^२। इस अवसर पर मल्लूखा को समझाने के निमित्त कतिपय “सबद” कहने का भी उल्लेख मिलता है (सबद सख्या ६४, ६७, ६८ और

१—‘भागळोद जमाती आया। ऊदो नए देवी को भोपी कहै—जमातिया, इह महमाई देवी न पूजि, पाछा जावो। देव कर छ सो देवी करिसी। वीमनाई कहै—देवी सुरग देसी? देवी ऊद क घटि आय बोलो—सुरगा मा क्योइ नही। सुरगा मा सुरग मटामटि छ, पणि मेर नही। जमातिया साथी ऊदो देवजी क—हजूरि आयो। विमनोइ—हुवो। ऊो कहै—देवजी, कहीं तो देवी का गीत गाऊ। श्री जाम्भोजी सबद कहै “वीसन वीमन”।—प्रति सख्या २०१।

—पद्य-प्रसंग के लिए द्रष्टव्य—प्रति सख्या ११२, पत्र १६, १७।

२—‘तोड सोलपी राज कर नेतसी। जिण नू चारण गीत बह्या। बडा बिडदाव घणा दाहा। महलूपान निवाव अजमेर क चारण। जिण सुण्या। मन मा अहवार कियो। चडि अर तोणे मार्यो। बद कीवी। नेतसी न पकड्यो। अजमेर आय्यो। चारण कना सौ उलटा गीत कहाया। नेतसी राठोडा ने ओठी मेल्या। मामा वागद बाच्या। जोधपुर टीक सातलि साथ भेळो कियो। चौडावत रिडमलोत जोधावत भेला हुवा। वार राव जोधपुर थी वार अणी करि बड्या”-(प्रति सं २६, फोलियो २८ से)। “पीहिया-वल थी नेडो काबोलाव तलाव डेरा किया। दूद जोधावत न जाम्भोजी मिल्या। यावल जाम्भोजी प्रगट। सातेल दान दबार कियो। सातेल कहै—सतगुर मिल त सासो भाज। उमराव कह—रावजी क्यो? सातेल कहै—रे भाई, सळे काई आव नही, लडाई करण रो तो बूना नहो। टका दिया तो आपणी काची हुव। दूदो कह—जाम्भोजी रे पाए हालो, सोह मला होयसी। “हमें जाम्भोजी कठ रखा? दूदो कहै—अठ यावल छे। छडी अस-वारी कण पाण जाम्भोजी रे पाए आया। सातेल मन मा अटकल—ऊमा ऊमा कारण सवार तो सतगुर। राठोड प्रदेपणा दे पगे लागा। जेस पान की असवारी आई। राठोडा क साथ का को क्योई को क्योई कहण लागा। सतगुर कहै—डेरो पासाऊ करो। चता मत करो। पान साथ पातसाही फोज। पान भाय कदम पोसी कीवी। श्री जाम्भोजी सबवाणी कहै—उमाज गुमाज (सबद सख्या ६४)।—पान कहै—नेता क्या हे जान कबुन है। पीरजी, बड्ग गां पीछ, छोड्ग गा पहला। ऊमाऊम मगायो। हथली चाडि अर ल्याया। जाम्भोजी क हजूरि आय्य वेडी काटी। महलूपान कहै—वे नेता, यो जाणगा, मामा का जोर करिक छुटोह। सो नही। पीर न छुडायो है। नेतसी मामा सौ मिल्यो। मामा कहै—किण तर छुटो? नेतसी कहै—जाम्भोजी छुडायो। राठोड पुनी हुवा—प्रति सख्या २६ २०१। पद्य प्रसंग के लिए द्रष्टव्य—प्रति ११२।

६६) जिनको सुन कर उसने गौ-हत्या का बन्धन बरवाई और मांस पाना छोड़ दिया। इस अवसर पर जोधपुर के राव सातल ने अपने राज्य का विष्णोइया को सवधा कर-मुक्त करना चाहा किन्तु जाम्भोजी के अनुरोध पर उनकी आमदनी का पाँचवाँ हिस्सा लना स्वीकार किया^२। रावजी ने जाम्भोजी से पान-चर्चा भी की। पलहरूप उहाने कई "सत्र" कहे (सख्या ७० ७१)। राठोडा के पुरोहित मूला के प्रति भी उन्होंने एक "सवद" (स्वीकृत सख्या ७२) कहा। राठोडों ने जाम्भोजी के उपदेशों पर चलने का संकल्प किया।

ध्यातव्य है कि कैसोजी की "कथा मेडत की" तथा सवदवाणी के "प्रमया" में अद्भुत साम्य है। इतिहास ग्रन्थों में ऐसी किसी घटना का संकेत नहीं मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य में इसके अनेक उल्लेख मिलते हैं।

टोडारायसिंह पर सवत १५३० के लगभग सोलकी राव सुरताण का शासन था^३ किन्तु नेतसी सोलकी के राज करने का उल्लेख नहीं मिलता। इस घटना का समय सवत १५४५ और १५४८ के बीच है क्योंकि इससे सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का इस बीच वर्तमान-रहना प्रमाणित^४ है।

३-द्वीणपुर के राठोड राव बीदा से मोती मेघवाल को छुड़वाना-इसका विस्तृत विवरण बोलहोजी ने "कथा दूरापुर की" में दिया है। सुरजनजी^५, दुरादास (द्रष्टव्य-कवि

१-(क) "महलूपान गउ हतावणी वरजाई। गोसत पाणी छोड्यो। पीर कही सो मानी। चडि अजमेर चाल्यो"। -प्रति सख्या २०१।

(ख) पान अरज कर ऊ आय, बदा न करणी फुरमाय।

मौं मुप ता बोल्यो सुरराय, मोजा मत मरावो माय ॥ ८९ ॥

दूजा पीर नहीं तु म तूल, पीर कह्या सो किया कबूल।

होती वेडि जका अब रही, पेड बपेड हुई अब सही ॥ ९० ॥

फौज अपूठी चाली फेरि, पान पडया चाल्या अजमेरि।

करताजी रौ कहियो कियो, पान पसी होय घरा दिस गयो ॥ ९१ ॥

-कैसोजी कृत कथा मेडत की।

२-बल्य राठोडा ऊ कही, साभल्य बधर भेद।

विसनोई करिया अकर, हुकम करी हरिदेव ॥ १०२ ॥

सनगूर कहे सातिन करि चीत विसनोइया मू पाळो प्रीति।

देव कहे राठोडा सुगौं, विसनोई गुरभाई गिरणी ॥ १०३ ॥

अकर किया तो अवगण होय, ऊभ कहे साभलिघो सोय।

दब कहे ये तागो मानू, पाचवो वाटी ल्यो आ कनू ॥ १०४ ॥

हव बीज हव लोज जाण्य, सिरजगहार कही सुवाण्य।

सातिल मू करता ऊ कही, सातिल हू शिप हुवो सही ॥ १०५ ॥

-कैसोजी, कथा मेडत की।

३-डा० कताचन जन असिमट सिटीज आफ राजस्थान, -'टोडा रायसिंह'-पृ० २१६।

४-(क) रामकरण आमोपा मारवाड का मूल इतिहास, पृ० ११४, ११७।

(ख) आभा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २६१।

(ग) हरविलास सारदा अजमेर-हिस्टोरिकल एण्ड डिस्ट्रिक्टिव, पृ० १५०।

(घ) श्यामलनाम बोरबिनो, दूसरा भाग, पृ० ३३३।

५-(क) सहर दूरापुरि विमराम साध एक मातियो नाम।

(शेषांग आगे देंगे)

सख्या ६३), परमानन्दजी,^१ हीरानन्द (द्रष्टव्य-‘परिशिष्ट’ में हिंडोलणी) आदि अन्य अनेक कवियों की रचनाओं तथा सबदवाणी के ‘प्रसंगों’^२ से इसकी पुष्टि होती है। इस अवसर पर “मुकल हस” सबद (सख्या ६३) कहने का उल्लेख मिलता है। घटना का समय सबत १५४२ और १५७० के बीच किसी समय-अनुमानत सबत् १५५०-१५५५ के आसपास होना चाहिए। प्रथम कारण तो यह है कि इस समय तक सम्प्रदाय की जड़ें काफी मजबूत हो गईं लगती हैं जिसमें कुछ समय भी लगा होगा। द्वितीय, सबत् १५७० तक इस घटना के काफी प्रसिद्ध हो जाने का प्रमाण मिलता है। इस सबत् में जाम्भोजी “जत-सम्प्रद” की प्रतिष्ठा कराने असलमेर गए थे। वील्होजी की “कया जतलमेर की” में रावल जतसी के कथन में इसका संकेत मिलता है^३। तृतीय, यह घटना राव बीदा के बीदासर वसान से पूर्व, द्रोणपुर में रहने समय घटी थी। बीदासर उसने सबत १५६८ में बसाया था^४। इन पर विचार करने से प्रस्तुत घटना का समय उपयुक्त अनुमित है।

४-सबत १५५३-५४ के अकाल में सहायता करना-इस समय पड़े अकाल में जाम्भोजी ने लोगो की, विशेष रूप से पण्डितों की रक्षा की थी^५। इस अकाल की पुष्टि वीरू सुजा रचित “छन्द राव जतसी रो” से भी होती है (छन्द सख्या ५४)।

५-अप्य भतानुयायो और विष्णोई सम्प्रदाय-जाम्भोजी की फलती हुई प्रसिद्धि के कारण दूसरे सम्प्रदायों के लोग भी विष्णोई सम्प्रदाय में आने लगे। सबदवाणी के “प्रसंगों” में इनके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

नागौर का रामू सुराणा विष्णोइयो को “करनी-त्रिया” से रोकता था। किसी समय अम्भरायल पर एक सबद (सख्या ३०) सुन कर उसने जाम्भोजी से जीव के जन्म-

विसनोई के घरम्य आचारि, किरिया साभ सुचील ससारि ॥ १८० ॥

नीच जाति क्यो उतिम सारि पठव दूत लिया हवारि ।

कहै राव करो कुल काम, क गरम्य मारू काडू चाम ॥ १८२ ॥

अटकयो साध कियो अहकार, सतगुर जाय छुडावण हार ॥ १८४ ॥

—कया औतार की।

(ख) मोतियो साध अग्याध मत, रग भाभेसर ग्यान रत ।

साभळी वात बीद सकारो, पापि वा जाति नियानि धारी ॥ ६५ ॥

राति एक बिच दूणराया, आप ले घाट जमाति भाया ।

साभळी वात बीद सकारो, आवियो मेछ पूछ अकारी ॥ ६७ ॥

बदिहू कडियो ठडि बाही, सपदा साध अग्याध साई ॥ १०८ ॥—कया परसिध ।

१-मोतिय की परतग्या रापी परचा दिया अपार ।

हासिम कामिम साध उबार्या इसन्दर की वार ॥ ५ ॥—साखी ।

२-“मोतिय मेघ न रोक्यो, त सम देवजी दू गणपुरे भाया ।” —प्रति सख्या २०१ ।

पद्य-प्रसंग के लिए द्रष्टव्य-प्रति सख्या ११२ ।

३-भीठ मिल्य पालटिय पारा गुर मिलिय रा भ उपगारा ।

गुर पाणो हुंतो दूध पियाव, नीबडिया नाळेर निपाव ॥ ६५ ॥

४-राजस्थानी वाता, पृ० २०६ सम्पादक-सूचकण पारीक, दिल्ली, सन् १९३४ ।

५-तेपन घात पूगी त काई उतरे जेठ भसाड भाई ॥ १०८ ॥

जागियो काल भसात जात, घात घुट यळे पाळ घात ॥ १०९ ॥

मरण और विष्णु-जप विषयक कई प्रश्न विधे । इनका उत्तर उन्होंने दो सबद (३१, ३२) कह कर दिया । उस समय एक 'जोगी' भी वहाँ उपस्थित था । उसने पूछा—“क्या वेद-क्तेव म कोई बात भूठी भी है ?” शांभोजी ने इस पर पाँच सबद (सख्या ३३ से ३७) कहे, जिनको सुनकर वह विष्णोई हो गया । परचात् वह एक टीले पर गया जहाँ “बाला जोगी” लक्ष्मणनाथ के भडारे पर अनेक “जोगी” एकत्र थे । उसने “जोगियो” के प्रसाद लेन से इकार कर दिया । “प्रसगो” म इसके फलस्वरूप “जोगिया” की प्रतिप्रिया और उभय पक्ष के परस्पर प्रतिवाद एक सिद्धि-प्रदधान का विस्तार से बखान किया गया है । लोहापागळ के विष्णोई सम्प्रदायानुयायी होने के अनेक उल्लेखों में भी इगकी पुष्टि होती है । लोहापागळ

१-रामदास क परतीति आई । सतगुर कही साच करि मानी । देवजी क दीवाण एक जोगी आयो । रामदास पूछया, देवजी कहेया । जोगी सबद सुण्या । जोगी कहे-गरु कोई वेद कतेव मां बोल भुठा बी है ? सबद सुणि जोगी बीसनोई हुवो । बीसनोई हुवा पछ टील गयो । टील जोगी वालो लपमण रहै । जह क भडारो छो । भडार जोगी भेला हुवा । बीसनोई न कहे-भुगति करि । बीसनोई भुगति नाकारी । जोगी रीसाण । जोगी कहे-कुण तेरा पीर ? कुण तेरा राह ? तं नाम क घर की भुगति नाकारी । बीसनोई कहे-मेर भाभोजी पीर । सतपथ की राह । जोगी कहे-तेर पीर की और हमारी बात । जागा किते एक दिन भाभजी क हजूरि आया । जोगियो एक जोगी भाभजी बन मेल्हो । जोगी कहे-भाभजी, इहा बाळा लपमण आवता है, तम साह् चलि क आदेस करि क पाउ लगो । देवजी कहे-वाळ लपमण मा के आसति इघकार छ ? जोगी कहे-पर-भात तो बाळो वेम कर दोपरे तो जवान वेस कर, साभ बघ वेस कर, ज्यो बाळो लपमण कहाव । बीसनोई कहे-घणा वेस तो वेम्या कर । श्री देवजी कहे- 'लपमण (सत्र ३८) । जोगी कहे-बाला लपमण है सो तया का मुप दप नाही । छोति नाहि । जोगियो सबद मायो नहीं । देवजी नाहिय बागडव नु मेल्हो । नाहियो जोगिया बन भयो । कुलाछ मारि कूदयो । ताल एक आसणि माडि रह्यो । लपमण है सो मेर पास आसण भाडो । जोगी हारया । आदेस आदेस करि उठि चाल्या । का दूरि गया । कहे-भाभोजी निरहारी पुरिय कहाव है । आ बात भूठी । क काहई जाय जीम्य आव, क काई आष्य जिमाव । चलो-या ठीक करने । भाभजी दोला गाडी पाली जोडि बठा । तीय राति तीय दिन कही न नडो आवण दीहो नहीं । देवजी की कला चडदी दीमी । जोगी भूप भागा । के तो वसतिया न उठि चाल्या, के बठा । जोगी कहे-भाभजी -अतीतू कू भूप लगी है तीय दिन हुए कुछि दया भी आव है ? देवजी कहे-जि ही क्यो न कहे ? नफरा कनियो भुगति मगाई । जोगिया का पतर पुराया । जोगी कहे-“भाग अ नत सिध हुवा तिरान भुगति जीमी । भुगति विना कोई न रह्या । तम भी हमार पासो बटिक भुगति जीमू । काहे क वासत भुपे रहो हो ?” जोगी कहे-तम निर-हारी तो हम भी निरहारी । रे जोगियो ! भूठ पडिम्यो । भूपो होपसी सो आप ही नहोरा करिसी । ये जीमू । जोगियो भुगति जीमी । देवजी न कहे-तुम्हार कोई बरी दुममण होय तो हमकू पुरमावी । हम पाल । देवजी कहे-तू तेरा बरी पाळि । जोगी कहे-म्हार बरी कुण ? देवजी कहे-तू बरण पध्या, तिमना, नोद दस-काम, शोध लाभ, मोह, राग मात् । जोगी उठि गया । गौगवरी जाय भेळा हुवा । भेप प्राणी फिरियादि कावी । पाचस चेला को गरु लोहापागळ बोडो भाभजी ऊपरि लियो । जोगी भेजा होय चाल्या चाल्या टिमटसरि आया ।”-प्रति सख्या २०१ से ।

पद्य-प्रसगो के लिए द्रष्टव्य-प्रति सख्या ११२ ।

का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है। केमोजी की 'कथा लोहापांगल की' तो इसी से सम्बन्धित है। "प्रसंगा" के अनुसार, जाम्भोजी ने उमके प्रति १२ गवद (सख्या ४२ मे ५३) कहे थे।

इन सबका निष्कर्ष यह है कि उस समय राजस्थान में नाथ पथी योगिया का व्यापक प्रभाव और प्रसार था तथा उन्होंने गमय-गमय पर अनेक प्रवार से जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय का बड़ा विरोध किया था। उनका विरोध सम्भव गोदावरी तट पर गमय-गमय पर एकत्र हुए विभिन्न नाथपथी योगिया ने रूढ़ता था। गोदावरी तट के श्यम्बक योगी मठ पर बारह पथी नाथयोगी कुम्भ पव के गमय प्रति द्वादशवर्षीय पात्रदेव-यात्रा हेतु एकत्र हुआ करते थे (विरोध द्रष्टव्य-ग्रन्थाय ३, - 'धार्मिक स्थिति')। यदि रामू सुराणे के प्रसन्नोत्तर के समय उपस्थित योगी के प्रश्न से लेकर लोहापांगल तक सब घटनाओं को सम्बन्धित करने देखें तो विदित होना है कि २१ गवद (सख्या ३३ से ५३) जाम्भोजी ने कनफटे नाथयोगिया के प्रति प्राय एक जसे प्रसंग में ही कहे थे। उपयुक्त घटनाओं का समय सवत १५६३ या इससे किंचित् पूर्व होना चाहिए। जनश्रुति लोहापांगल का सम्बन्ध सिद्ध जस-नाथजी से भी जोरती है, जिनका स्वगवास २४ साल की आयु में सवत् १५६३ में हुआ था। अतः यह घटना इससे पूर्व ही होनी चाहिए। महलाणा गाव के विष्णोई भाटों की बतियों में भी इस घटना का समय सवत् १५६३ बताया गया है।

६-मुहम्मदसाँ नागौरी-लोहापांगल सम्बन्धी वृत्तान्त जान कर नागौर का नामक मुहम्मदसाँ अपने नाजियों के साथ जाम्भोजी से मिलने आया था। उसने उनसे पान-चर्चा भी

१-(क) जोगी एक जटा उतराय, लागी वद्ध चरावण गाय ।

दरमगिय मन नियो विचार जोगी कुण मूड ससार ॥ १४३ ॥

लोहापांगल कियो अहरार, चेना साथे अरध हजार ।

नाटिक चटक वीतर भूत सीगी ना जटा अरधघूत ॥ १४४ ॥

-सुरजनजी, कथा श्रौतार की ।

(ख) जोग्यद एक उतराय जटा कोडि बध छाडे कपटा ।

सुगी वात प्रापति सार, चेते हम मगति पाल चार ॥ ६४ ॥

जोग्यद मुडि कुण मात जाया सोइ जोगिया महत आग सुणायो ।

पांगलीलोह विपाय पडिया च्यारिस दूण चेटक चडिया ॥ ६५ ॥

-सुरजनजी, कथा परसिध ।

(ग) मकि मडण पडे पोज लहो, नरनाथ विरता वात बहो ।

जुडिया गोशवरि जात जक, चडिया चोलाधी चाड तके ॥ २६ ॥

उलटी गत आयस एक तम, सप पूरया नाद परात सम ।

हिमटसर आया हाक तके, जुडिया गोदावरी जात जके ॥ २७ ॥

करता कहियो कुण घाट घडयो, कहे बाछ किसी विध लोह जडयो ।

जणियो जिग वात विचार कही, भडमी लोह भेट्या आप दई ॥ ३२ ॥

अत आयस श्रौसर आय अडयो करता कर भटयो लोह भडयो ।

जन भूला जाता घेर लिया, सिर मूड जटा सह जेर किया ॥ ३३ ॥

-गोकलजी, परची ।

२-निद्ध रामनाथ यशोनाथ पुराण, पृष्ठ ८८ ।

की थी। सबदवाणी के 'प्रसगा' में विदित होना है कि एक बार तो वह स्वयं उनसे मिलने गया था और एक बार उसने अपने काजी उनके पास गया-समाधानाय भजे थे। काजिया के साथ राव लूणकरग के पंडित भी गये थे। उनका भजे जाने का कारण जाम्भोजी के विषय में यह जानना था कि वे हिन्दू का देव थे अथवा मुसलमाना के पीर। काजिया और पंडिता को दृष्टांत देते हुए जाम्भोजी ने बताया कि वे दोनों में किसी के नहीं थे, - वे तो मन्चे हिन्दू के देव और सन्चे मुसलमान के पीर थे। वेमोजी ने लिखा है कि मुहम्मदखाने जाम्भोजी को मानता था और उनके उपदेगा पर चलन लगा था^२। गारलजी के अनुसार भी वह जाम्भोजी से मिला था^३। '६ राजकिया की विगत' (अध्याय ७, शीपक-१९) तथा 'हिंडोलणी' में अथ मत्तानुयायिया के साथ मुहम्मदखाने का नाम है। 'कथा परसिध', 'कथा श्रोतार की' (मुरजनजी कृत) तथा 'प्रसगो' आदि स पता चलता है कि जाम्भोजी ने सात सबद (६ से १० २३ और २५) एक प्रचार से उसके प्रति ही कहे थे। इनसे यह पता होता है कि मुहम्मदखाने जाम्भोजी के सम्पर्क में आया था। साथ ही इनसे जाम्भोजी के एक विविष्ट गुण का भी पता चलता है। यह घटना सवत १५६३ या इससे कुछ पूर्व की हानी चाहिए। इसमें मुहम्मदखाने और बीकानेर के राव लूणकरग के मल-मिलाप का भी संकेत है जो सवत १५७० में हुई दोनों की लड़ाई^४ से पूर्व ही सम्भव था। मुरजनजी ने लिखा है कि उक्त बात सुनकर बादशाह सिकंदर लोदी बहुत खीभा था^५। जाम्भोजी ने दिल्ली में उनके प्रतिबोध कराया था। महलाणा गांव के जोगीराज भाट की बही में सवत १५६३ में सिकंदर लोदी ने 'परचो दीनो' लिखा है जिसमें भी उक्त सवत की पुष्टि होती है।

७-बादशाह सिकंदर लोदी-केसोजी ने 'कथा इसकंदर की' में जाम्भोजी और

१-(क) पागळीलोह नाव पटे घटहू चेटकी पाप घटे ।

महमदखाने नागौर मठी सामली वात लीळग सठी ॥ ७६ ॥

आवियो भेट पेठा अकारी सापि दे वात पूछ सकारी ।

माहिलो ग्यान भीगो महले, जेतियो हुंत ले साप चले ॥ ७७ ॥

अपनी मय पूछ अकारी मन री वात लाधी मुरारी ।

भज्यसी भोल भापाल भेला, पान नै तडय ले आव यला ॥ ७८ ॥

-मुरजनजी, कथा परसिध ।

(ख) महमदखाने जाति को पठाग, हुवा हकीकत पीर पिछाण्य ।

वेद कतेव किया जिण्य घाट, जीव वड नासिका घाट ॥ १६१ ॥

जद्य सतगुर बोली समभाय, इड जीव किसी पर थाय ।

हारया वेद कतेव ज दोम अ परचा सतगुर का जोय ॥ १९२ ॥

-मुरजनजी, कथा श्रोतार की ।

२-(क) अरोडी मान अर और महमदखाने मान नागौरि ॥ २१ ॥-कथा चितोड की ७

(ख) महमदखाने नागौरि परच्यो, चाल्यो गुर फुरमाई ।-साखी कथा की ।

३-जको जग पेच्यो जोति समान । मिल्यो मदसूत महमदखाने ॥३॥-परची ।

४-(क) श्रोम्हा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११४ ।

(ख) बीहू सृजा कृत छंद राव जैतमी रो, छंद सख्या-५७ से ६१ ।

५-दिल्लीमुर सामळी वात लिखे, पीजियो पान अग्यान पेल ।

जीव नू घात अघात जत, रोकियो साथ अग्याथ रत ॥८२॥-कथा परसिध ।

सिकंदर लोनी व सम्बन्धों का विस्तार से वर्णन किया है। बादशाह द्वारा कद किए गए हमिम और कामिम नामक दो मुसलमान विद्वानों को जाम्भोजी व रणधीरजी के साथ लिली जाकर द्यूहवाया था। वहां उन्होंने बादशाह को 'चेताया' था। वील्होजी^१, केनौजी^२, सुरजनजी^३, गान्कलजी^४, परमानन्दजी^५, मुक्कनजी^६, दुरगदास (द्रष्टव्य कवि सख्या ६३), सवानास^७, हीरानन्द (द्रष्टव्य-हिंडोलणी), हरिनन्द (द्रष्टव्य-कवि सख्या ७६), माह्वरामजी^८, स्वामी ब्रह्मानन्दजी^९ आदि के अनेक वक्त्रों से इसकी पुष्टि होती है। '६ राजकिया का विगत' में सिकंदर का नाम है। स्वयं जाम्भोजी ने सबदवाणी (सबद सख्या २७ १५-१८) में सिकंदर को 'चेताने' और नानोपदेश देने का उल्लेख किया है। इसके औचित्य में मन्दह करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि सबदवाणी की सभी प्रतियों में यही पाठ मिलता है। प्रसंगगत यह कहा जा सकता है कि फरिश्ता तथा अन्य विद्वानों के जिन साक्ष्यों पर कबीर और बादशाह सिकंदर लोदी का जो सम्बन्ध बताया जाता है^{१०}, वह

- १-(क) लिली सिकंदर साह दे परचो परचायी ।
महमदपा नागौरि, परचि गुर पाए आयी ॥१८॥-कथा जसलमेर की ।
- (ख) इसकंदर परमोधियो, परच्यो महमदपान ।
राव राणा नवि चालिया, सभलि केवल ग्यान ॥-'उमाहो' ।
- २-इसकंदर कीवो आ करणी, दुनिया फिरी दुहाई ॥ ६ ॥
महमदपा नागौरी परच्यो, चाल्यो गुर फुरमाई ॥ ६ ॥-साखी ॥
- ३-(क) लिली री वात प्रगास देय आविया आप आपे अलेप ।
भैलियो गुर भाभेसर भदा दिलीसुर माध हुवो सयदा ॥ ८५ ॥
विल सिकंदर एक अरज सुलाय, देह छूटी क मिल् पुदाय ।
पौर मुरीद मिली परतीत, इसकंदर चेतायो चीति ॥ १७७ ॥-कथा परसिध ।
- (ख) अकरयवत व परचो एक, दुनिया पूर्य वात अनेक ।
इसकंदर जठि लागो पाय, परचो पायो मित्यो पुदाय ॥ १७५ ॥
-कथा औतार की ।
- (ग) इसकंदर औल्ये परचि लागो पहली परि ।
सेप सदो सारिया किया मुर भाभेसर ॥-छप्पय' की पवितयां ।
- ४-मया कर दव दूडाया दाम, मित्यो असकंदर पूरी आस ॥ ३ ॥-परचो ।
- ५-जेमाण रावल जैतसी, अजमेर क्र मसी पुवार ।
महमदपा हारणपा सेप सदो, इसकंदर बाबर पतिसाह ॥ ३ ॥-साखी ।
- ६-ममरायलि सामी अ तर जामी, इला महन करि आरभियो ॥
पतिमाह परबर दिनी सिकंदर परध लाध पोह लहियो ।
माचो देव दुनी सति मान, भान तजे हरि जाप हुयो ।
बुघर आयो भगता भायो नवपड जोति निरत कियो ॥ ३ ॥-रोम छन्द ।
- ७-करदो करक चौक पाछा ता आवाज सुनी, इसकंदर परचो पायो कामठी उठाय क ।
परजी निक्स्या वार, पाछ ता मिलाप कीनी, हामम कामम का निप भया चरणा म
आय क । -इन्दव छन्द ।
- ८-प्रति सख्या १९३-जम्भमार, प्रकरण-७ ।
- ९-जम्भार चरित्र भान पृ० १६१-१७० ।
- १०-डा० पीताम्बरदत्त बहध्वान योगप्रवाह, पृ० ६८-१०३ ।

जाम्भोजी और सिक्-दर का होना चाहिए^१ । यह सबत १५६३ की बात है । इससे जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय के व्यापक प्रभाव और प्रसार का निरतिशय रूप से पता चलता है ।

८-कर्नाटक का नवाब गेय सहो और मुस्तान का सघारी मुल्ला सबदवागी के 'प्रसंगा'^२ से ज्ञात होता है कि जाम्भोजी ने दोस्त राहा से गी-हत्या बन्द करवाइ थी । सघारी मुल्ला भी उनसे ज्ञान-चर्चा कर प्रभावित हुआ था । दो सत्र (प्रमग) सख्या १०२, १०३) इनको लक्ष्य कर कहे बताये जाते हैं । 'पद्य-प्रमग' के अनुमार मुल्ला सघारी के प्रति जाम्भोजी ने दो भि न सबद (सख्या ११३, ११५) कह भे^३ । इन दोनों का उल्लेख बैसीजी^४, मुर जनजी^५, परमानन्दजी (द्रष्टव्य-पिछत पृष्ठ की पाठटिप्पणी, सख्या ५) और हीरानन्द (टिडोलणो मे) ने किया है । हरिन्द^६ क भजन म शेष सहो का नाम संकेतित है ।

९-जमलमेर के रायळ जनमी-रायळजी न जन ममद' की प्रतिष्ठा पर जाम्भोजी को बुनाया था । उन्होंने जीव-दया और पशुओं से सम्प्रियत चार बात मानन का वचन भी जाम्भोजी को दिया था । उनके अनुरोध पर लखमण और पाण्डू नामक दो विष्णोई वहा के खरीमा गाव म बसाये गये थ । वील्होजी ने 'कथा जसलमर की' म इसको विस्तृत वणन किया है । सिक्-दर लोनी की कथा का भाति यह कथा भी सम्प्रदाय म बहु-प्रचलित

१-द्रष्टव्य-अध्याय २ म (२) के अंतगत सदभ-सख्या-८२ ।

२-'सेप मदी करणाटक देसाको धणी, मात गाय मराय घरायत करती । देवजा क हजूरि आयो । गाय छुटाई, त सम की सबद-सुग र वाजी ' सघारी मुला मुल्लाण ता चाल्य, देवजी क हजूरि आयो । देवजी आगी बुराण मल्हो । देवजी बुराण वण्यो । सघारी मुला पारसी मा कह-हृत्वेगरी लुलत ना दुरराह कु' । श्री जाम्भोजी पारसी कहै-हरेच दारी' । सघारी मुला पाए लागो । परची साको आयो" ।

-प्रति सख्या २०१ ।

३-मुला सघारी आइया आय र बूभयो जुनाव ।

सर बिना महजन है भूठ सगो पुवाव ॥ १ ॥

-गण-जके पय का भाजणा'-(११२) ।

मुला सघारी यो कहै महमन् कुरमान ।

रौजे कर निवाज पढ, वण्गी कर सावत ईमान ॥-गण-ईमा मोमणि (११३) ।

-प्रति सख्या ११२, पत्र १८ ।

४-(क) सेप सदी परचे पहि आण्या, मरती गळ छुटाई ॥ ८ ॥-साखी ।

(ख) सेप सगो नीवाग्दोजी, करती पाप अधार ॥ ८ ॥-माखी ।

५-(क) सेप सदी सारिपा कीया मुर भाभेसर ॥

मकमीरा काजिया हुवा राजी गुर अग ॥-छप्पम, पक्ति २-३ ।

(ख) सेप सगो करणाटक माहि, परची दे बकसाई गाय ॥ १९० ॥

-कथा श्रीतार की ॥

आराव जोदो राहो, रती बहो मुल्लाणि ।

गारय व म गीयान मा, सो भाभसर जाण्य ॥ १६४ ॥-बही ।

(ग) मन्ताणी पीर अनेक मता, रापि लाज अबसाण रता ।

जेर वादेत पठाण बीता चाडिया आय्य दिली चगता ॥ ८ ॥-कथा परसिध ।

६-'मनि परणाम कहा गुर मेर, मरती गळ छुटाई' ॥ ३ ॥

है धीर केशोजी^१, सुरजनजी^२, भुवनजी^३, परमानन्दजी^४ आदि कवियों ने अनेक रचनाओं में प्रकारांतर से इसका उल्लेख किया है। '६ राजकवियों की विगत' और 'हिंडो-तणो' में रावल जतसी का नाम है। सवदवाणी के 'प्रसंगों' में उक्त अवसर पर एक सवद (सख्या ८८) कहने का उल्लेख भी मिलता है^५। रावल जतसी के राजत्वकाल के सम्बन्ध में इतिहासकारों में कुछ मतभेद है^६ किन्तु सवत् १५३१ से १५८३ तक यह काल सभी

१-अजमेर पृथार मान करमसी, जसळमेर रावल जतसी ॥ २१ ॥

-कथा चितौड़ की ।

२-(क) जतसी राण जैसाण जग, लाप सोभा सीप पाय लग ।

बोलदे बुधे जै बाह पाऊ, आप दे भेट दीदारि आऊ ॥ ८६ ॥

हू कहू वात सा करो हाये, सदा जीग पुज्य आसाय साये ।

मानीया राव जादम राया, आप ले साध अ नेक आया ॥ ६१ ॥

मले गुर जतसी विहै भेला, माडिया वाध सू रोध मेल ।

आप से सीप अलेप आया, रोव लग राज जादम राया ॥ ६४ ॥-कथा परसिध ।

(ख) जादम बसी जसळमेर, कम बुलायो जिगन सवेर ।

रावल न सतगुर समभाय, जिग ता दीहा जीव छुडाय ॥ १६३ ॥

-कथा श्रीतार की ।

(ग) रावलजी गण्या रूडा, कुवचन कहे न को किया ।

विसनोई सुण्या विसन, रावल रोपा रोपिया ॥ ३३७ ॥

-छप्पय की अन्तिम दो पक्तियाँ ।

(घ) जगि आयो जीवा धरी, आज उजवणी उजल ।

जत सरोवर जत, फेरियो सूत लहे फल ।

चोकस वरा चियारि जीम जग मोहण जप्या ।

दापकिया जगदीस, साध ले सेई समप्या ।

वरा समप्या जतसी, सीप सुणी सुगुर तणी ।

आज उजवणी उजल, जक जिय आयो जीवा धरी ॥ ३३६ ॥-छप्पय ।

(ङ) अ जिग तीय हुवा जुगे, लख परचे लाहो लियो ।

धय धय रावल जतसी, कलिजुग कया हल कियो ॥ ३४० ॥

-छप्पय अन्तिम दो पक्तियाँ ।

३-जसळमेर जतमी जादम, करता किरिपा करि कु म दियो ।

काट अगज अरियण सोह कप, अपरपर आराधवियो ।

ए प रपाय अथा छाया, जीव छुडाय जिग कियो ॥ ८ ॥-रोम छन्द ।

४-जमाण रावल जतसी, अजमेर कमनी पवार । "साखी" तथा हरजस ।

५-रावल जतसी जसलमेर उजवणी कीयी । च्यारे वरा गुर मुपे दीहा । त समै

दवजा सवद कहै "गो रपलो" । मेल बीपरी रावल सुधान सिधायो ।

देवजी सभरायले आया" । -प्रति सख्या २०१ से ।

६-(क) मु हगोन नगमी की ह्यात, भाग २, पृ० ४४१, ना० प्र० सं०, कागी ।

(ख) रामनाथ रत्न इतिहास राजस्थान, पंचवा अध्याय,

इतिहास जसलमेर, पृ० २५०, सवत् १९४८ ।

(ग) ओम्ना बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ११६, पादटिप्पणी ।

(घ) श्यामलदाम बीकानेर, "जयसलमेर की तबारीख", पृ० १७६२ ।

(ङ) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६६८ ।

माना है। 'जैन मम' का निर्माण उन्ही मन्त्र १५७० म करवाया था। मन्त्र है कि इसी मन्त्र म आम्भोजी जैनमम मण म।

१०-मेवाड़ के राजा तांगा, शाही राजी-वेगोत्री की 'कथा वितोड की' म पना चलता है कि मन्त्र १५७२ के सामान्य आम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय का परिचय इन दोनों को भी मिला था। इसका कारण पूय के अंगारा विष्णोईया का वितोड म मंग-विनी पर पुगा दा म इतार करता था। कथा के अनुसार इस प्रणय म के साथ उन राजाका का नामो मग करी है जो आम्भोजी को मानो थे। इसमें आम्भोजी विष्णो-तो। राध दूता (स्वयंयाग मन्त्र १५७०) म मम्भार' और राधय जैनमी के नाम हो म उन्ही का मन्त्र का अनुमान होता है।

११-बीकानेर के राज म्भुकरण और हु दर जतमी-गवदयाली के "प्रमगा" म पना चलता है कि गारोत के मुद्द पर जाने मन्त्र इन दोनों का आम्भोजी म मन्त्र दृष्टा था।

१-(क) बीरबिजो, 'जयमममर की मवारोण पृ० १७६२।

(ग) रामनाथ रत्न इतिहास राजम्भार, पंचम्यां म्भयान, इतिहास जयमममर पृ० २५०।

२-विष्णोई रो तांगी का, रोग के है मु लियो मन्त्र।

विष्णोई यो के विचार, जो तांगी परगट मगारि ॥ २० ॥

मजमर पु वार मान करवगी जेमळमर रायज जेतगी।

मरोडो मान मर और, मरमन्ता मान नागोरि ॥ २१ ॥

पाना पोजां मिलकां मीर, कोट पतीधी राय हमीर।

दूरो मेडतियो गांतिस राय, जय्य तांगी पाल परिगाह ॥ २२ ॥

३-गोपालविहट राठोड जयमन्त्रमप्रकाश, पृ० ७०।

४-डा० टमारा-जनल एगिमात्रिक मोनादरी, बंगाल, (यू निराज) सख्या १२, पृष्ठ ८९, मन्त्र १९१६, मन्त्रकता।

५- राय लूणकरण पदियां विडता न पूछ महरत म नरनो म न कटव करे चडयो। वातोमर का म्भिन बाण्योत की तनाइया डेरा बिया। उतरीताइ देवजी राय नू बोजावी देण गया। राय कहै-इण भरडें न न पूछा। जो परज छै। कइ दव नू चडयो करण छ नही कोई गढ दम त्यण छ नही। मालो बीजावत कहै-देवजी, रायजी कह्यो छ-माहुरा देवा रो कयो छ ? श्री भाभोजी सबद कहै-"जह का"-(सबद ८५)। मालो सबद सुण रायजी बन गयो। रायजी 'भाभोजी घणो बुरा कहै छ-के भाजम्य के रिण मा रहिस्य। राय रीस करि कहै-हु पाछो भायस्यु तरा इण रा मोडिया माहे जो एजका करु। राय चडि नारनोल म पड्या। देवजी समरापळि भ्राया। राय लूण-तरण को कवर प्रतापमी घोडो नचाव। कणी एक कह्यो-घोड बना सू पूरा नपाव है। श्री भाभोजी सबद कहै- व कबराई'। राय जतसी भाभजी के हतूरि भ्रायो। आपरो अरज करण लागी-भाभाजी, एकण वाप रा बेटा। मैं एक घोडा मागियो राय जी, मोत्रु एक घोडो दीज आपर साथे हावू। रायजी मुन रासाय न क्यो-तीन भाठा। श्री भाभोजी कहै-"मक्ति"। राय कहै-देवजी, आपर सबद माह की समथा की नही समथा। रायजी कह्यो-महानू तिलर बिचार साथी नही। देवजी कहै-तीन भाठा दीहा। व पाछा आव नही। राय जतसी कहै-देवजी, वाहज जावतो घणो। छल वल घणो। देवजी सबद कहै-"तउवा-"। रजपूत कहै-रायजी, कयो सबद माहे समथा ? (शपाश भागे देलें)

युद्ध म जाने स रोकने पर लूणकरणजी जाम्भोजी पर क्रुद्ध भी हुए थे । कु वर जतसी के मागने पर भा रावजी ने उनको घोडा नहा दिया था और न ही युद्ध म साथ ले गये थे । उनके दूसरे पुत्र प्रतापमी के पाम घोडा था और वह युद्ध मे गया था । पीछे म जाम्भोजी न कु वर जतसी को समझत हुए बीकानेर-राज्य प्राप्ति का भगीर्वाद दिया । इस अवसर पर कतिपय सबद कह जान का उल्लेख भी मिलता है (सख्या ८५, ८६, ८७ और ६५) । यह घटना सवत् १५८३ का^१ है । राव लूणकरण (कवि सख्या ४२) के कवित्तो से सिद्ध है कि वे जाम्भोजी के पिण्य थे । ऊदोजी नर (कवि सख्या ३७) न नारनौल के युद्ध मे काम आने वाले राठौड यद्धाओ का नामोल्लेख किया है । “रावजी भटवाला” की सूची मे परमानन्दजी ने रावजी का नाम गिनाया है (प्रति सख्या २०१, फोलियो २६६-३०१) । “प्रसंगो” से अनेक महत्व-पूण ऐतिहासिक वाता का पता चलता है । रावजी का नामोल्लेख मुहम्मदखा नागौरी के प्रसंग म भी हुआ है ।

१२-मूला पुरोहित-इसका नामोल्लेख मल्लूखा और राव सातल के सन्दभ म कर पाये हैं । “प्रसंगा” के अनुसार, इहाने अपनी पत्नी और भानजे की व्यभिचार-रत देख खुशी हो जाम्भोजी से जाम्भोजाव पर भेंट की । उहोने इसको भली भाति समझाया (सबद सख्या १२) । पश्चात पुरोहित ने जावपुर के राव गागा के दरवार मे जाम्भोजी की महिमा का बखान किया । यह सुनकर कुँवर मालदेव न लोहावट म जाम्भोजी से साक्षात्कार किया । कु वर के कतिपय प्रश्नो का उत्तर भी उहाने दिया (सबद ६३, ६४, ६५) । सुरजनजी ने “कथा परसिध”^२ मे इस घटना का समय सवत् १५८४ बताया है जो ठीक प्रतीत होता है । “राजवी भेंटवाळा” तथा “हिंडोलणो” म मालदेव का नाम है । मु हणोत नणसी ने भी मालदेव के प्रसंग म मूला पुरोहित का उल्लेख किया है (ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १५६-५७, ना प्र स काशी, सवत १६६१) ।

(ख) घटनाएँ या बातें जिनका काल अनिश्चित है -

१-सोत गाव के रावण गोयद झोरड-इहोने जाम्भोजी का शिष्यत्व तो स्वीकार कर लिया किन्तु उनकी सिद्धि का परिचय अपने पक्षे-चोरी करके पाया (द्रष्टव्य-बील्होजी हत ‘कथा भोरजा की’) । केसोजी की साखिया,^३ “चोईमा को लूरी” (द्रष्टव्य-अध्याय ७, सप्तम सख्या १९) ‘हिंडोलणो’ आदि मे इनका नामोल्लेख ह ।

जतमी कह-भाम्भोजी साच कह छ । ई घर उपरि कोई राज रखी नही । माहर तो रुडा छ । राव लूणकरण र घर नू वा ही छ । म्हान तो कोट दीही । राव जैतसी बीकानेर भा रात कियो । सुधि जाभाणी चलावा” । -प्रति सख्या २०१ ।

पद्यप्रसंग के लिए द्रष्टव्य प्रति सख्या ११२ ।

१-आभा बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११७-१२३ ।

२-भामहा साथ भारू मुसगी । जोधाण राण देमाल जगी ।

घाल गुवाल सू वध्य बेला । चोरासिय वास उणास अकेला ॥१२०॥-कथा परसिध ।

३-(क) रावगा सा सेऊ राह आण्या, गोयद सा गुर भाई ॥ ५ ॥

(ख) दोय रावण गोयदजी, साम्य किया मुचियार ॥ ११ ॥

२-नापूसर का सेसो जोखाणी-इसको भीमालो गाव म जाम्भोजी ने निष्काम भाव से दान देने और दान देकर अहंकार न करने का उपदेश दिया था । केसोजी की "क्या सस जोखाणी की" इसी से सम्बन्धित है । सबदवाणी के "प्रसगो" स पता चलता है कि उक्त अवसर पर उसके प्रति तीन सबद कहे गए थे (सबद सख्या ५४, ५५, ५६) । "३५ पुह" (अ याय ७, सद्भ सख्या १८) तथा "हिंदोलणी" म इसका नाम है ।

३-मेडतावाटी के पडवाळो गाव के ऊदो और अतली-कैसोजी वृत "क्या ऊद अतली की" म शुद्ध भाव से अतिथि-सेवा करने सम्बन्धी इनके प्रति जाम्भोजी के उपदेश का वर्णन है । "२७ लुगाइया की पुह" मे अतली का नाम है ।

४-रिणसोसर का मगोवल और उसकी पत्नी लाहणो-कैसोजी की "क्या मेःत की" मे इनका जाम्भोजी की महिमा सुनकर विष्णोई होना बरित है ।

५-जागलू का वरसिंह वणिवाल-"प्रसगो" से विदित होता है कि ये जाम्भोजी के परम अनुयायी थे । इनकी सतति क सद्भ म एक सबद (सख्या २०) कहने का उल्लेख भी मिलता है (अध्याय ७, सद्भ सख्या १३ (४), 'जागलू' भी द्रष्टव्य) ।

इनके अतिरिक्त अम अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति और कवि-अल्लूजी चारण, काटोंजी चारण, रिणसोसर का रावल आदि भी जाम्भोजी के सम्पर्क म आये थे जिनका उल्लेख यथा स्थान किया गया है ।

बकुण्ठवास-जाम्भोजी का बकुण्ठवास सवत १५६३ के मागशीय वदि ९ को हुआ था । उनके देहत्याग-स्थान के सम्बन्ध म दो प्रकार के उल्लेख मिलते हैं । एक के अनुसार, यह स्थान सम्भरायळ^१ है और दूसरे के अनुसार लातासर^२ । सम्प्रदाय मे दूसरी बात ही

- १-(क) साम्य सिधारयो चिलत कियो, पनराम र तिराणव ।
गुरा गदप मु निमर साम्य चत्या, परगट पेल पसारियो ।
परगट पेल म्हार साम्य पसारयो, साय चात्यो मोमिया ।
क्यो र्हू तैर वाज दरसणि गोवन्त्य सूना विन कहा ।
सायरो गुर की वन सभरयलि, जहा पेल पसारियो ।
तिराणव की साध्य पूगी द हरि साय सिधारियो ॥ १ ॥-रायचद वृत सागी ।
- (ख) बल जुग देवजी की चिरत बघाणि पनरास र तिराणव ।
वणि मगमरि नु वि त्तिन जाणि, सभरायलि परवाणियो ।
सभरायलि परवाण कीयो, चिलत सुरा दिपाइयो ।
सब मोमिग जीव वाज साह चोर चिताइयो ।
केई चाल पडग धारा हीव केई हुकमे ।
सभार आयो भ्रम पायो चिलत कियो कत्यजुगे ॥ १ ॥
छद जाका हुवा कणि मा अगम पय चलाइयो ।
सभरायलि गुर धाय चात्यो च्यारि भ्रम फुरमाइयो ॥ ३ ॥

-सागी अनात कवि, सख्या-२५ ।

- (ग) गजटियर-न्मिार डिम्डिक, मी० एम० विग सन् १६०७ म भी ऐसा उल्लेख है ।
- २-(क) पनराम रि तिराणव वणि मगमरि बभय ।
निवि नु वि निरयि निरमन्नी, ओट्टे हुवा अन्प ॥ २ ॥
नाल्हामर की साधरी, पाहचि कियो परवाण ।

(नेपाय धागे देस)

प्रसिद्ध और प्रचलित है किन्तु धारम्भिक हजुरी कवियों और बील्होजी आदि की रचनाओं से पहली बात की पुष्टि होती है। इस पर से हमारा अनुमान है कि सम्मराथळ पर ही जाम्भोजी ने देह त्यागी थी। "साथरियो" (अनुयायियों) ने उनके गव को जाम्भोलाव ले जाने के इरादे से दशमी के दिन ताळवा गाव के पास "मुक्काम" किया। इसका पता लगने पर बीकानेर के राव जतसी लूणकरणोत ने वहाँ नहीं ले जाने दिया और एकादशी के दिन गव का उसी गाव के पास ही समाधिस्थ किया गया^१। कालान्तर में उस पर मंदिर बनाया गया। जाम्भोजी का अंतिम ऐहिक "मुक्काम" होने से यह मंदिर और उसके पास बना गाव भी मुक्काम कहलाया। जाम्भोजी के वकुण्ठवाम की बात जान कर उनके अनेक अनुयायियों ने भी स्वच्छा से प्राण त्यागे थे। केशोजी (माखी सख्या १६), सुरजनजी (कथा पर-सिध), परमानदजी (खड्यारी विगत), साहबरामजी (जम्भसार) आदि कवियों ने इसका उल्लेख किया है।

प्रभाव और महत्त्व—उपयुक्त वृत्त से जाम्भोजी के व्यापक प्रभाव और मान्यता-महत्ता का पता चलता है। राजस्थान में सवत १५८४ तक जसलमेर के भाटी, बीकानेर, जोधपुर, छापर-द्रोणपुर, मेडना और फलोदी के राठौड़, चित्तौड़ के सीसादिया, नागौर का खान, अजमेर का सूबेदार आदि किसी न किसी रूप में उनके सम्पर्क में आये और प्रभावित हुए थे। राजस्थान के बाहर भी उनके अनेक अनुयायी बने, यहाँ तक कि दिल्ली के बादशाह निरंकर लाने को भी उहाँने नानोपदेश द्वारा सुाथ पर चलने की प्रेरणा दी थी।

जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, सादगी, पवित्रता और कमठता उनके आदर्श थे। किसी का हक मारना उनको इष्ट नहीं था। वे कथनी और करनी में एकरूपता चाहते थे। वे आडम्बर से दूर और जातिगत बंधनों से परे थे। उन्होंने कममय जीवन का उपदेश देते हुए आत्मनान और लोकमगल का भाव दृढ़ किया। तत्कालीन मरु-प्रदेश में उन्होंने साम्प्रतिक, वचारिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भ्रांति की थी। अतत मनुष्य ही उनका लक्ष्य था। उनको लेकर लिखी गई अनेक रचनाएँ उनके महामहिम व्यक्तित्व का निश्चित परिचय देती हैं। उनकी वाणी का प्रभाव शोधक और स्थायी सिद्ध हुआ है।

इल मा अ धियारी हुवी, जाणि भोम्भ वरत्यो भाण ॥ ३ ॥

—केशोजी गौदारा, साखी ।

(ख) नाल्हासर की साथरी, धिरत कियो मुरारी ।

दास मीठु वल्य जात है, छकि आई सारी ॥ ४ ॥—मीठुदास, हरजस ।

(ग) सवत १५६३ मगमर वद नुय साम्ही अलोप हुवा । बासे लोक दीपाव न पु तेळी मेल्ह गया । ८५ वस ३ माहीना १ दीन ३ घडी नीरहारी पुरस प्रगट रह्या । नाहासर थी तालव्य ल्याया । परमानदजी बरियाळ, साका" । प्रति सख्या २०१ ।

१—माथरीया भाभोलाव रो मतो करि १० दसुय र दीन मुक्काम कीयो । पद्य राव जतसी लूणकरणोत आडो किर्यो । माहर देस रो देव बीज देस लेजाग थी नही । सवत १५९३ मगस व ११ मुगट री नीय थरपी । परमानदजी बरियाळ, "साका" ।

—प्रति सख्या २०१ ।

घाणो (सवदवाणी) जाम्भोजी की याणी "सवदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है (त्रिनेत्र दृष्टक्य-विष्णोई सम्प्रदाय नामक अध्याय) । "सवदवाणी" का प्रधान प्रतिपाद्य ज्ञानात्मक ही है । उगम यत्र-तत्र उत्पद्य वाक्य के सगण भी मिल जाते हैं किन्तु वह उगम मुख्य स्वर नहा है । उगम सत्य आत्मज्ञान और सोपमगन है । अष्टावधि जाम्भोजी के १२३ "सवद" और कतिपय मंत्र ही प्राप्त हुए हैं । राजस्थानी साहित्य सामान्यतः और विष्णोई साहित्य विज्ञापित सवदवाणी से किसी न किसी प्रकार से प्रभावित है । साहित्य, धर्म, सस्कृति और विचारों के क्षेत्र में यह नये आचार्य, भाष्य और मूक्तिका प्रस्तुत करती है । ईश्वर ज्ञान की मरुप्रदेश की सोप-भाषा की आत्मा उत्तम गुरगित है । विष्णोई सम्प्रदाय उत्तरा भारत का पहला धार्मिक (सत) सम्प्रदाय है और सवदवाणी उगम मूलाधार है । पूजवर्ती और परवर्ती वचनपरम्पराओं की सममन का यह महत्त्वपूर्ण साधन है । इन्हीं सभा वारणा से आगे सवदवाणी का सम्पादन और उगमके आधार पर जाम्भोजी के दान और अध्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट कराने का प्रयत्न किया गया है । मंत्र परिशिष्ट में उद्धृत किये गये हैं ।

म्हे सोजी छा विड होजी नाही, गोज तहा घुर खोजू ॥ ५	३, ४।
खतक्या साच की दोळी, गुर प्रसादे केवळ याने, २१	१६, २०।
प्रम आचारे मीले मजमे, सतगुर तूठे पाइय ॥ २१	२१ २२।
उत्तिम वुळी का उत्तिम न कहिवा, कारण किरिया मारू ॥ २४	४।
पह्लू किरिया आप कु भाइय, तो अकरा नै फुरमाइयें ॥ २८	३१, ३२।
विमन विमन तू भणिए रे प्राणी, वळि वळि वारोवारू ॥ ३१	१३, १४।
सुखरत करता हरकति भाव, तो ना पछतावी करियो ॥ ३२	७।
करा विणिए कूकम रस विणिए वाकम, विणिए किरिया परवारू ॥ ७५	७।
घर आगी अत गोवळवासी, कडी आयोचारी ॥ ८४	१५।
भाग परावति करमा रेता, दरग जु वळा जु वळा मायू ॥ ८६	३१।
हेक हक पावत अनोपाव मायू, अनव माग पाळि ले ॥ ९१	६।
दिरद नाव विसन की जपी, हाये करो टवाई ॥ ९६	५।

-जम्भवाणी (सबदवाणी) से।

अध्याय ५

जाम्भोजी : दर्शन और अध्यात्म

इस अध्याय-में स्व-सम्पादित जम्भवाणी (सवदवाणी, द्रष्टव्य-अध्याय ६) के आधारे पर जाम्भोजी के दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

१-स्वयम् विष्णु-अनेक नाम -स्वयम् के महत्त्व नाम हैं। जाम्भोजी ने सवद-वाणी तथा मात्रा में परमसत्ता को उल्लिखित करने के लिये अनेक नामों का प्रयोग किया है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं —

विमल^२ (विष्णु), स्वयम्^३, सारगधर^४, सुरराय^५, मुरारी^६, विममला, रहमान, शम, करीम^७, सुतावन्द^८, सुदा^९, अल्लाह^{१०}, 'ओम्'^{११}, गुरु^{१२}, सतगुरु^{१३}, राम^{१४}, इन्द्रा^{१५}, हरि^{१६}, इयाम^{१७}, पारप्रह्ला^{१८}, लक्ष्मण^{१९}, लक्ष्मोनारायण, मोहन, गोपाल^{२०},

* आगे उदाहरण जम्भवाणी (सवदवाणी) से दिए गए हैं। सदर्म सख्या के पदचात् इसका क्रम इस प्रकार है —
पहले सवद-सख्या, विमल () के पदचात् उनकी पक्ति-सख्या, अल्पविराम (,) के पदचात् उसी सवद की अन्य पक्ति-सख्या तथा अर्द्धविराम (,) के पदचात् पुनः सवद-सख्या है।

१-१३।

२-वाक्य मात्र ६ २०, ११ १९, २९ १० ३१ १३, ३२ ८, ३६ ६
५५ ५, ६३ २५ ६६ १६, ३०, ७६ ३, ८६ ३६, ६३ १८,
१११ ६, ११९ १२०, १२१, १२२।

३-३ २१, ४ ६, ६३ १, ९५ १ १०४ १।

४-६५ ८।

५-६ १३, २३।

६-९३ १।

७-६७।

८-३९ ७ ७५ ६।

९-८ ५।

१०-६८ १०।

११-वाक्य मात्र, पाहल मात्र, ६४ १।

१२-१ ७२ ६, १०५ १, १०६ १३।

१३-१०७ ४।

१४-७६ ६।

१५-१ २१ १२, १४ ४, ३० ६ ४५ ४, ७० १, ९२ ३ १०५ ३।

१६-वाक्य मात्र-७५ ८ ९६ ६, १२० ३।

१७-११३ २।

१८-६ २४।

१९-३८।

२०-वहनवण मात्र।

परमेस्वर^१, नारायण^२, परमराम^३ आदि । इनके प्रतिरिक्त परमसत्ता के विशेषण रूप में स्वयम्भू^४, अलख^५, अपरम्पर^६, निरह^७, अलील^८, निरालम्ब^९, अलाह, अलेख, अडाळ, अजानी^{१०} आदि शब्द कहे हैं ।

सम्प्रदाय में जाम्भोजी और निराकार विष्णु एक ही माने जाते हैं । उन्हीं भी स्वयं को परमसत्ता स्वयम्भू मानते हुए अनेक प्रकार से अपनी विभूतियों और शक्तियों का उल्लेख किया है^{११} । इनसे अद्वैत भावना स्वयं सिद्ध है । अपने लिए निराहारी^{१२}, धूमण्डल का राजा^{१३}, कवलय-पानी^{१४} सतगुरु^{१५} आदि शब्द कहे हैं ।

जाम्भोजी परमसत्ता के प्रवतार में विश्वास रखते हैं । वे विष्णु के दसावतार मानते हैं जिनमें नौ तो पहले हो चुके हैं और भविष्य में दसवें—कल्कि की बारी है^{१६} । दसावतार के नाम ये हैं—मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नरसिंह, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध^{१७} और कल्कि^{१८} ।

२-विष्णु नाम -

विष्णु का नाम उतना ही शक्तिमान है जितने कि स्वयं विष्णु या स्वयम्भू । जैसे विष्णु सृष्टि का मूल तत्त्व है वैसे ही विष्णु का जप भी भूत तत्त्व है^{१९} । बह्मव्रण मन्त्र में सात उपमाओं के द्वारा इसकी महत्ता प्रतिपादित की गई है । विष्णु नाम तो सदा ही निर्मल है^{२०} । इससे आत्मतत्त्व की उपलब्धि^{२१}, जरा-मरण से छटकारा और वक्रुण्ड-वास

मिलता है^१। जप में अनन्त गुण हैं क्योंकि इससे मृत्योपरांत क्षण-मात्र में मोक्ष प्राप्ति होती^२ तथा अनन्त पुण्य मिलता है^३। अतः आत्मोद्धार के निमित्त अक्षरम्पर विष्णु का जप करना चाहिए^४।

३-स्वयम् विष्णु की विभूतियाँ स्वरूप-घर्षण -

निरजन स्वयम् अनादि है। जब पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र आदि कुछ भी नहीं थे तब गून्ध में केवल निरजन ही थे^५। परमतत्त्व सबका सृजनकर्ता है, उसका स्वरूप नहीं पाया जा सकता, वह ताप और शीत से परे, तन, रक्त, घातु^६, रूपरेखा, चिह्न और बग रहित, गहन, अथाह और केवल अनुभव का विषय है^७। उसके स्वरूप का वर्णन अमृत के स्वाद की भाँति वाणी से नहीं किया जा सकता और सागर में मछली के माँग की भाँति उसका भेद नहीं पाया जा सकता^८। वेदव्यास और ज्ञानी व्यक्ति इस कारण उसके सम्बन्ध में नेति-नेति ही कहते हैं^९। उसके स्वरूप का वर्णन कर सकने का दम्भ भरने वाला लोग केवल भूढ़-कथन ही करते हैं^{१०}। उसके विषय में जो व्यक्ति कुछ जानने की बात कहते हैं वे तो कुछ भी नहीं जानते बल्कि जो यह कहते हैं कि वे उसके विषय में कुछ भी नहीं जानते वे किञ्चित्-मात्र अवश्य जानते हैं^{११}।

४-विष्णु की व्यापकता -

विष्णु चारों योनियों में, अनन्त रूपों में, पवन की भाँति सबत्र निरन्तर रूप से व्याप्त है। नित्यो में नीर रूप में और सागर में रत्न रूप में^{१२}। सात पाताल, तीन लोक, चौदह भुवन, बाहर-भीतर सबत्र वही विराजमान है^{१३}। दूध में पानी^{१४} और फूलों में पराग के समान^{१५} वह भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होता है और सबके दिलों में मौजूद है^{१६}। वह सबका साक्षी है इसलिये सबको कृष्ण-मंथ ही देखना चाहिए

-
- १-१०५ ५ १२१, १२२।
 - २-१२१ १
 - ३-६५ ८, ९।
 - ४-६ १ ३१ ३३, ६६ ३७ ८६ १३, १५।
 - ५-३।
 - ६-४ १२।
 - ७-१३ १०-१०।
 - ८-२६।
 - ९-३३ १-४।
 - १०-३३ ८, ३४ ६, ३५ ६ ३६ ८।
 - ११-१६ १-४।
 - १२-११७ ५ ६।
 - १३-४३ ६३ ३३, ३४।
 - १४-१५।
 - १५-६४ ११।
 - १६-६७ १-५, १७।
 - १७-०२ ३।

करने वाला ही मोदलाम करता है^१ ।

५-विष्णु मूल तत्त्व है -

शुद्ध के मूल की भाँति ध्यावागमन से मुक्ति का साधन विष्णु-जप है^२ । परसोक सुधारने के लिये विष्णु की ही सोज करनी चाहिए^३ ।

६-भवतार धारण -

परमसत्ता विष्णु शुभ वम करने वाला के निस्तार और वम-रदाय भवतार धारण करता है^४ । जब-जब दैतान भ्रह्मकार के यशीभूत (होकर-अपयाय) करते हैं, दुष् प्रनुक्ति काम करते और भगवद्-प्रेम रत साधु-पुरुषों को दुष्-देते हैं, तब-तब महान् आत्मा की प्रादुर्भाव और भगवद्-महिमा पसीभूत होती है^५ ।

७-मूर्तिपूजा की निंदा -

जाम्भोजी यद्यपि भगवान् के भवतार म विश्वास रखते हैं तथापि किसी भी रूप म उनको मूर्तिपूजा स्वीकार नहीं है, वे इसकी घोर निंदा करते हैं^६ । इसी प्रकार तीर्थाटन भी बहिष्कार दिखावा मात्र है । अडसठ तोष तो हृदय म ही हैं^७ किन्तु कोई "गुरुमुखी" व्यक्ति ही इस तोष में स्नान करता है^८ ।

जाम्भोजी शास्त्र और पुस्तक ज्ञान की महत्ता स्वीकार करते हैं । उनके अनुसार वेद/शास्त्र धोये नहीं हैं किन्तु उनका सार-ग्रहण किया जावा चाहिए । पढ़ लिख कर उनका मम समझना चाहिए किन्तु निगूरे व्यक्ति काठ और पाषाण की मूर्तियों की पूजा म ही लगे रहने के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं^९ ।

८-सद्गुरु - सद्गुरु-प्राप्ति आवश्यक है, वह ससाट-सागर से पारलगा सकता है^{१०} । बिना गुरु के मुक्ति सम्भव नहीं है^{११} । उसको जाने बिना मुपय नहीं मिलता और जन्म व्यय जाता है^{१२} । परमाय-भाग में गुरु मूल तत्त्व है । "निगुरो" के मन में अज्ञानाधकार छाया रहता है, ज्ञान-सूय तो 'सुगुरो' के हृदय में ही प्रकाशित होता है^{१३} । सद्गुरु ही

१-१८ १३ ।

२-२६ ३ ।

३-६६ ३८, ४३ ।

४-पाहळ मात्र ।

५-८७ ३७, ३८ ।

६-६४ ७, ११ ।

७-८७ ३७, ३८ ।

८-६६ ६ ७, १०५ १० ।

९-१७ ६, ६२ ५ ।

१०-१७ १० ।

११-२५ १-४ ।

१२-१३ ७ ।

१३-९९ ७ ।

१४-११ ४, ५ ।

१५-६८ ३, ४ ।

ऐसा तत्व बता सकता है जिससे 'भूरा योग की स्थिति और आवागमन के बंधन से छुटकारा मिल सकता है' 1। कथन मात्र से गुरु का महत्त्व नहीं बताया जा सकता। व्यक्तिगत दुःख-मुक्ति अपनी करनी से पाता है 2 जिसका कारण आत्मतत्त्व की उपलब्धि न होना है। गुरु-कृपा से आत्मोपलब्धि सम्भव है 3। गुरु-उपदेश से अनन्त राजाओं, भोगी पुरुषों, साधु-सतों और नाथों ने आत्मतत्त्व प्राप्त किया था 4। सत्ता सहजोवस्था में रहना, शील और नाद-विदु धारण करना गुरु के लक्षण है 5। गुरु जीवन-मुक्त, कवल्य-ज्ञानी और अनन्तगुण युक्त तथा "मेवों का मेवा" होता है 6।

अथ जाम्भोजी ने गुरु (सद्गुरु) को परमतत्त्व का पयाय भी माना है 7।

१-जाम्भोजी विष्णु हैं—कहा जा चुका है कि जाम्भोजी स्वयं को विष्णु मानते हैं। अनेक स्थलों पर उन्होंने अपनी सर्वशक्तिमत्ता का अनेक प्रकार से उल्लेख किया है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

मैं स्वयं सृजनकर्ता, निरजन, बाल ब्रह्मचारी हूँ 8। घट-घट में मैं सूक्ष्म रूप से व्याप्त हूँ 9। मेरे आवि मूल का भेद कोई नहीं जानता 10। अपनी वाया का निर्माण मैंने स्वयं ही किया है 11। यदि मैं चाहूँ तो एक शरीर से कोटि शरीरों की रचना कर सकता हूँ 12। समस्त जीव-योनियों की समाल में क्षण-मात्र मैं ही लेता हूँ 13। मुझ पर माया की छाया नहीं पड़ सकती। दृश्य और अदृश्य रूप से मैं त्रिलोक में व्याप्त हूँ 14। प्रत्येक भुवन में मैं समन्वय से प्रकाशित हूँ 15। जीते जी मैं किसी की रोजी नहीं मारता बल्कि मरने पर आत्मा की सम्माल लेता हूँ। यदि कोई मुझसे मिले तो मैं उसका काम सवार सकता हूँ 16। मैं निराहारी हूँ, केवल वायु-भक्षण करता हूँ 17 और अपने ही

१-१०७ २०।

२-८५ ५, ६।

३-२१ ३, ६।

४-६१ ३४।

५-१।

६-१३ ६-१६।

७-१, ३९ १५, ५१ १-१३, १०५ १, ३।

८-२।

९-१।

१०-८८ ४।

११-९३।

१५-२७।

१३-६२ ६, ६३।

१४-२, १७।

१५-५ १।

१६-८१ ५, ६।

१७-१०१।

आधार पर स्थित हूँ^१ । मैं सबशक्तिमान हूँ^२ । सत्ययुग म सृष्टि का सृजन मैंने ही किया था, मैं विष्णु "अपगपर" हूँ^३ । इससे पूर्व मैंने नौ अवतार धारण करके दानवों को नष्ट किया था^४, भविष्य में दसवें अवतार-कल्कि की बारी है^५ । मैं किसी "जाये-जीव" का जप नहीं करता, निरालम्ब, स्वयम्भू, स्वात्म रूप का ही जप करता हूँ^६ ।

१०-जाम्भोजी के यहाँ आने का कारण-सत्ययुग म भक्त प्रह्लाद के उद्धार के लिए भगवान ने नृसिंह रूप धारण किया था । उस समय तेतीस कोटि जीव प्रह्लाद के अनुयायी थे । इनमें से हिरण्यकशिपु ने पाँच कोटि अनुयायियों की हत्या की थी । हिरण्यकशिपु के मरणोपरांत प्रह्लाद ने इन तेतीस कोटि अनुयायियों के उद्धार का वचन भगवान से मागा । उन्होंने सत्य त्रेता, द्वापर और कलि-चारी युगों में ऐसा करने का वचन दिया । फलस्वरूप, क्रमशः पाँच कोटि जीव प्रह्लाद के साथ, सात कोटि जीव सत्यवाणी राजा हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ कोटि जीव धर्मराज युधिष्ठिर के साथ- कुल २१ कोटि जीव मुक्ति के अधिकारी हो गये । बाकी बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ कलिपुत्र में जाम्भोजी का आना हुआ । जाम्भोजी के यहाँ अवतरित होने सम्बन्धी यह मायता नवीन है और प्रायः प्रत्येक विष्णोई कवि ने यथावसर इसका सोल्लास उल्लेख किया है । सबदवाणी म प्रकॉरातर से इसको अनेक बार कहा गया है^७ ।

जाम्भोजी ने अपने निवासस्थल 'सभराथळ' और वार्यों का उल्लेख भी यथ-तथ किया है ।

नागौरगढ के आतगत (पीपासर म) जन्म पावो अत्यन्त गहरा निबलता है मैंने अवतार लिया है^८ । भक्तों के उद्धार के लिये भगवती टोपी धारण करके 'थळी' पर घाया हूँ, जहाँ हरे बकहली बृक्षों का मण्डप है^९ । निगरे व्यक्ति मुझे गानियाँ देते हैं^{१०} किन्तु मैं सभराथळ पर हीरा का व्यापार करता हूँ । जिनको अत्तद पिटि प्रान्त है वे ही यह ग्रन्थ बन्गे^{११} । मैं पावण्णी हूँ और मैंने पावण्ड रचाया है । पावण्डा इसलिये कि पूरा योगा हूँ, पावण्ड यह कि लोगो के सचित पापा को सचित करता हूँ । जो एमे पावण्णी को पहचानता है उमरी सहज म ही मुक्ति हो जायगी^{१२} । मैं अगम 'सुगणे' गिण्यो का दास हूँ, ऐस

१-६२ १, ४ ।

२-४२ ।

३-६३ ।

४-६३ ।

५-८० ३६ ।

६-४ ।

७-१० ३, ११२ ४-६ ६६ ८-१२ ५६ ६१ ९-२० १०४ ८१, २७ ।

८-६३ १ २ ।

९-२७ ९ ७३ १ २ ८० ३, ४ ३९ ८, १४ ६८ ६ ७ ।

१०-६१ १० ।

११-७० ११-१५ ।

१२-७६ ।

ब्यक्ति ही स्वग जाएँगे, "निगुणे" ब्यक्ति तो निराश ही रहेंगे^१। मेरी बात पुस्तकों और शास्त्रों में न लिखी होकर अनुभव की है^२। मैं वेद-तत्त्व का बखान करता हूँ^३। ससार में भटकते हुए अनेक लोग गुरु के बताये माग पर चल कर और सच्ची करनी से पार उतर गये हैं। एते पुरुष तो मुझसे भा मिलेंगे किन्तु अहकारी लोग दुःख भोगते हुए नरक में जाएँगे^४।

जाम्भोजी ने अधिकतर जाटों को ही सम्प्रदाय में दीक्षित किया था। अपने शिष्यों को चनावनी देने हुए उनका कथन है कि गुरु-वाट भूल कर, ज्ञान प्रकाश त्याग कर अज्ञाना-धकार में क्यों चल रहे हो? पानी के होते हुये घड़ा खाली क्यों रखते हो? हीरा को हाथ में क्यों पकते हो^५? काजी, मुल्ले और पंडित मेरी निंदा करते हैं कि-तु यदि स्वग चाहते हो तो मरी आना मानो^६, क्योंकि बिना गुरु-ज्ञान के मुक्ति संभव नहीं है^७। यह एक विस्मयना है कि लोग मुझसे आत्मज्ञान की बात न पूछ कर भौतिक सुख-समृद्धि की बातें ही पूछते हैं^८ किन्तु तुम लोग भूल में न चल कर तत्त्व पर विचार करो^९।

११-आत्मा -

जाम्भोजी ने जीव तथा आत्मा को जीवडा, हस^{१०} और 'रतनक्या'^{११} कहा है। उस तिल में तेल और पुष्प में वास है वैसे ही पाँच तत्त्वों से निर्मित देह में आत्मज्योति का प्रकाश है^{१२}। जैसे ऋतुएँ बदलती हैं वैसे ही आत्मा शरीर बदलती है^{१३}। जीवात्मा शरीर के माध्यम से प्रकाशित होती है। अतः शरीर श्वेत की भली भाँति रखवाली करनी^{१४} तथा प्रत्येक जीव में आत्म-ज्योति का दशन करना चाहिए^{१५}। आत्मोपलब्धि गुरु-कृपा से प्राप्त हाती है, ससार और आवागमन के चक्कर से वह परे की वस्तु है। आत्मा स्वभाव से ही सुंदर और निमल है। उसकी प्राप्ति कवल्य-ज्ञान, गुरु-कृपा और धर्माचरण से होती है^{१६}। इस जन्म में ही ऐसा होना चाहिए^{१७}।

१-७३ १-४ ।

२-१२ १-३ ।

३-२४ ७ ।

४-८१ ४ ।

५-११६ ।

६-१३ २०-२२ ।

७-११ ७ ।

८-८३ ।

-११७ ।

१८ ८ ६ ।

-२१ ५, १४, १९, २८, ४१, ५१ २२, १२२ २

-१०७ १४ ।

-२५ ६-१० ।

१४-७० ।

१५-१८ ५, ६ ।

१६-२१ ।

१७-५१ ३५, ३६ ।

१२-माया -

(क) जगत की नश्वरता -जाम्भोजी ने ससार को 'गोबळवास' मताया है। यहाँ का 'भाधोचार' भूठा है। पवन के भोका सञ्ज्ञेता 'धवर' बिगड जाती है वसे ही यह ससार नश्वर है^२। जमे जिना दानो के भूमी, बिना रग के गना और बिना क्रिया-धम के परिवार व्यय है वसे ही ससार की उलभना म पडना भी व्यय है^३।

(ख) पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं —पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं, इनम पृथक् रहना चाहिए^४। दुनिया 'गजे-बाजे' म रत है किन्तु यह बाजरे की भूमी के समान थाया है। दुनिया के रग म न रग कर, स्वय को धम के रग म रगना चाहिए। पाच के समान दिखाई देने वाली सासारिक वस्तुभा म नहीं रमना चाहिए^५।

(ग) माते-रिस्तों को असारता -माता पिता, भाई-बहन, परिवार जीव के वास्तविक साथी नहीं हैं। लोग भ्रम से इनको अपना समझते हैं^६।

(घ) सांसारिक मोह माया-जाल है ससार का 'मोठा भूठा' मोह माया-जात है जो नष्ट हो जायगा। इसलिये पार्थिव वस्तुभा की प्राप्ति का ग्रहकार नहीं करना चाहिए^७। ससार माया जाल की श सला मे मथा है, वेद और कुरान के नाम पर जाल फला हुआ है। वास्तविक ज्ञान के स्थान पर यहा केवल दानकयाएँ ही बल रही हैं^८।

(ङ) दुनिया का स्वरूप -जाम्भोजी ने अनेक बार तत्त्वानीन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति के सम्बन्ध म महत्वपूर्ण बातें कही हैं। ऐसा करने म उनका उद्देश्य वस्तुस्थिति से अलग कराने हुए चेतानवी देना और समझाना था। उनक अनुसार, दुनिया बाद विवाद मे रत है किन्तु इससे दानवो की भाति लोग नष्ट हो जाएंगे^९। वेद और कुरान के नाम पर लोगो ने ढोंग फला रखा है जिससे दूर रहना चाहिए^{१०}। लोगो को प्रगसा मरो मनभावनी बातें तो अन्धी लगती हैं किन्तु खरी बातों का कोई विदवास नहीं करता^{११}। ब्राह्मण वेदा को, काजी कुरान को और जोगी जोग-को मुला बढे हैं। मुडियो-म-तो अन्त ही नहा है। कलियुग म तत्व न जानने के कारण सभी भ्रम मे हैं। माता पिता व्यय ही अपने

१-मरु प्रदेश म अकाल पडने पर वृषक लोग अपने पशु लेकर प्राण रक्षाप ध्य स्थानों म चले जाते हैं और इनम तब तक रहते हैं जब तक कि इनक मूल स्थाना में सुकान न हो जाय। दूसरे स्थानो मे इस अस्थायी रूप से रहने को 'गोबळवास' कहा जाता है। ५१ ३४ ८४ १४।

२-२२ १, ४।

३-७५ ७८।

४-११४ १-४।

५-६६ १२, १६।

६-३१ ९-२३, ९९ १३, १४।

७-२९ २३, २४ २३ १-४, ६६ १-३।

८-९७ १-३।

९-१९ १५, १६।

१०-७२ १-५।

११-६ १४, १५।

पुत्र-नम्बूया अनेक प्रकार की कामनाएँ करते हैं^१। भ्रमी लोग वाद विवाद में रत, आचार-विचार हीन, कीर्ति के लोभी^२ और मनभावनी बातों से प्रसन्न होने वाले हैं इसलिए यह इनकी बालक बुद्धि^३ ही है।

(ब) मानव माया-जाल में है -मसार म प्रत्येक प्राणी किसी न किसी कारण से दुखी है^४। एने लोग हीरा के बदले पत्थर तोल रहे हैं^५। ध्यान रखना चाहिए कि फल प्राप्ति कर्मानुसार ही होती है^६। विचित्र बात है कि मनुष्य जगत को जीतने का तो उपाय करता है किन्तु उनसे अपनी देह तक भी नहीं जीती जाती^७। वह भ्रम में पड़ कर व्यर्थ ही वीरान जंगल में भटक रहा है^८। उसको भ्रम और अधिक भूल में नहीं रहना चाहिए^९। किसी भी क्षण उस मसार छोड़ना पड़ सकता है, इसलिए अपने शत्रुओं को छिपाना व्यर्थ है^{१०}। शरीर नष्ट है मसार म अनक भ्रम है और अत समय म किसी की आशा नहीं, इसलिए गफलत म क्वापि समय नहीं बिताना चाहिए^{११}।

(छ) मृत्यु की अनिवायता -मृत्यु तो सबकी होगी, जड़ी-बूटी से उसको टाला नहीं जा सकता^{१२}। अनेक बलशाली व्यक्ति यहा आकर चले गये^{१३}, फिर कलियुग के मनुष्य का तो विचार हा क्या किया जाय ? मृत्यु का माग एक ही है और सबके लिये है। 'रिणद्धाणो' क ममान मानव-देह नष्टप्राय ह और रक्तधातु के नाते-रिस्ते शाक के समान कुम्हलाने वाल है^{१४}।

१३-गरीर, मन, इन्द्रियां -

(क) गरीर -मायामय ससार की असारता की उपपत्ति है-शरीर की क्षणभंगुरता किन्तु इस गरीर का महत्त्व बहुत ज्यादा है क्योंकि परमतत्त्व इस पिंड म ही प्राप्त किया जा सकता है, आवश्यकता केवल साधना की है^{१५}। मानव देह पूवजम के पुण्य से प्राप्त होती है जो अहंनिश क्षीण होती जाती है^{१६}। माली जैसे वाडी को सींचता है वैसे ही शुद्धाचरण

१-८३ १५-१६।

२-२८ ६६-६९।

३-६१ १-३।

४-१९।

५-४६।

६-३१ १५, १६।

७-६६ १-३।

८-५१ २६-३४।

९-७५ १।

१०-८४ १, २।

११-९९ १३, १४।

१२-१६ १३, १४।

१३-६६ ८६ १०-१३, ८७ ३९-४४ २३ ११, ६६ ।

१४-८६ २३, २५।

१५-४० १०६।

१६-११ १२, १३ ५७ ३ ४।

से शरीर की रखा करनी चाहिए^१। जब तक शरीर ठीक है तभी तक उपाय कर लेना चाहिए। मृत्यु के समय तां कुछ करत धरत नही बनगा^२।

शरीर की क्षणभंगुरता को बार-बार बताते हुए अनेक उपमाओं से जाम्भोजी ने समय रहते चेतने पर बल दिया है^३। काया-रूपी अस्थिरगढ का राजा मन है^४। काया कोट म पवन की 'कोटवाली' है और पाप का ताला लगा हुआ है^५। गुरु-रूपा से काया-गढ की ग्योज करनी और काम, क्रोधादि चोरो को रोकना चाहिए^६। ससार म घात ममय क्षण भर तां लगा था किन्तु जाते समय उतना भी नही लगेगा^७। काया की नष्ट होता देख कर "भूरना" नही चाहिए क्योंकि पिंड तो नष्ट होगा ही। मन की वासनाओं के साथ जावात्मा स्वयं म जाती है^८। इसलिए आयु, कुल और पद का विचार न करक अपने कर्मों को सुधारना चाहिए^९।

(ख) मन, इंद्रियाँ—मन को यदि बसा म कर लिया जाय तो मुक्ति का माग खुल सकता है क्योंकि "कामानगरी" का राजा मन बहुत ही शक्तिशाली है। यदि उसको बसा में और इंद्रियों को विषयो से पृथक कर लिया जाय, तो जरा-मरण का भय दूर हो सकता है^{१०}। जोगी को लक्ष्य कर वे कहते हैं—गुम मू ड तो मु डातं हो किन्तु मन नही मु डवाते^{११}। मन डोलना, ध्यान हटना नही चाहिए, ब्रह्माग्नि दिन-रात प्रज्वलित रहनी चाहिए^{१२}। वास नामा और सासारिक आक्षयण म मन का लिप्त नही होने देना चाहिए^{१३}। दुविधा-वर्ति को सबधा त्याग कर मन को निश्चल और एकाग्र रखना चाहिए क्योंकि एकाग्र मन से ही कोई काम सम्भव है तथा ऐसे व्यक्ति ही अमृत-तत्त्व को पाते हैं^{१४}।

अत करण शुद्ध होना चाहिए। यदि दिन माफ है तो अडसठ तीय और कावा उषी में है^{१५}। सवार को दखादती और मनमानी नही करनी चाहिए^{१६}।

-
- १-८४ ५-९।
 २-६ १६-१६ ११ ६-६ २६ २९-३२।
 ३-२६ २७, २८, ५१ २४, २५, ५२ ६, ७, ७३ ८-१२ १८ ५-९,
 ६८ ५-१०, ६६ १५ १६ ४४ ५, ६,
 ४-७७।
 ५-६७ १-३।
 ६-८३ १ २।
 ७-८६ २६-३०।
 ८-६१ १४, १८।
 ९-२४।
 १०-९१।
 ११-५२ १-४।
 १२-९१ ४, ५।
 १३-५० ०।
 १४-४८ १-१४, २५ २३, ६ ०।
 १५-६ १।
 १६-११०।

पाँचों इन्द्रियों और नवद्वारों का काम करता चाहिए^१। स्वाथ-भावना से दूर रहना, भोग साना-सीना और पहनना, सदा मादगी और सदाचरण पूर्वक रहना मनुष्य का परम कर्तव्य है^२।

१४ सृष्टि क्रम -

१। सृष्टि के आदि में केवल "ध्रुवार"^३ या ध्रुव था। जाम्भोजी ने अनेक यस्तुओं के न होना उल्लेख करके इसी स्थिति को दर्शाया है^४। "ध्रुवार" स्थिति में जब छत्तीस गुण बात गये^५ तो निरजन स्वयम्भू ने मन में सृजन का संकल्प किया, जिससे आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वा-पौच तत्त्व बने। इन तत्त्वों से समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ। आदि में एक अण्डा बना, फूटन पर वह धरती के रूप में स्थिर हुआ, उसमें जल की उत्पत्ति हुई, जल में विष्णु और उनके नाभि-कर्मल से ब्रह्मा जो उत्पन्न हुए। हरि की इच्छा और विष्णु का माया से सृष्टि की उत्पत्ति हुई और शरीर भी उनकी कृपा से मिला^६। अथर्व इसी बात को विविध ऋत के साथ कहा है। सृष्टि से पूर्व केवल एक 'भ्रुवार' था^७। जब धौदह त्रुवनो में पानी ही पानी या तब केवल "भ्रुवम्" शब्द ही गुं जायमान था। उस पानी में अण्डा उत्पन्न हुआ तथा ब्रह्मा और विव प्रादुर्भूत हुए^८। स्वयम्भू ने सत्ययुग में समस्त सृष्टि का सृजन किया, ब्रह्मा, विष्णु और महाशुद्र की स्थापना की, चन्द्रमा और सूर्य-दोनों को साक्षी बनाया तथा आकाश, पवन और पानी का निर्माण किया। वराह अवतार धारण करके दाढ़ पर चढ़ कर पृथ्वी का उद्धार किया^९। इस भाँति सृष्टि की स्थापना भगवान ने की है^{१०}।

१५-पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त -

जाम्भोजी पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त पर अटल विश्वास रखते हैं। चौरासी लाख योनिया का उहोनि मायता पूर्वक उल्लेख किया है^{११}। फल-प्राप्ति अपनी-अपनी करनी के अनुसार होती है, इसमें विष्णु का कोई दोष नहीं^{१२} है। जसी खेती की जायगी फसल भी वसी ही मिलेगी^{१३}। इन्द्र वर्षा करता है किन्तु धरती पर खेत और बीज के अनुसार ही पौधे, फसल

१-५४ ७, ८।

२-८६ ७, ८ ७४ ७१ १५-१७।

३-३ २२, १५ २।

४-६५।

५-९३ १-४।

६-३।

७-बालक मात्र तथा बलशपूजा मात्र।

८-पाहल मात्र।

९-६४।

१०-९३ १-८।

११-१ ६।

१२-३ १०।

१३-११ ३१, ३२।

१४-२८ १४-१८।

और फल पदा होते हैं। पात्र और उसकी करनी के अनुसार फल मिलता है, पानी का इमम कोई दोष नहीं है। यहाँ जाम्भोजी ने कर्मों की दोहरी महत्ता बताई है। अच्छा जन्म और जीवन पूवजन्म के पुण्य-कर्मों के कारण मिलता है और इस जन्म में किये गये सत्कार्य प्राय अच्छा फल देते हैं। वीज की भाँति जीव भी अच्छे-बुरे होते हैं^१। व्यक्ति कर्मों से ही ऊँच और नीच माना जाता है, बुन और आयु से नहीं^२। स्वगप्राप्ति के भिन्न-भिन्न माग हैं^३। बुरा बन्ध करने वाला यदि जन्म से नहा तो कर्म से अवश्य चाण्डाल है^४। जाम्भोजी ने कतिपय उदाहरणों के द्वारा भी इसका स्पष्टीकरण किया है^५।

आवागमन - भोक्षी करनी करने वाले आवागमन के चक्र में उनभे रहते हैं, उनकी मुक्ति-वामना सूखे ठूठ पर पान की भाँति दुराशा मात्र है^६। सृष्टि जन्म तो चलता रहता है किन्तु भ्रम में भटकते हुये योग का अनुसरण नहीं करना^७ और जन्म-मरण के बन्धन में छुटकारा पाने का सतत प्रयास करना चाहिए^८।

१६-स्वग-नरक -

जाम्भोजी ने कवत्यप्राप्ति या मोक्ष के अर्थ में स्वग का प्रयोग किया है। महत्कारी और दुष्ट व्यक्ति नरक में जाता है, वहाँ यमराज उसकी दण्ड देते हैं। उसकी पुकार वहाँ कोई भी नहीं सुनता^९। एक 'सवद' में जाम्भोजी ने मृत्यु के पश्चात् यम के सामने होने वाली जीव की कष्टाजनक स्थिति का चित्रण किया है। सार रूप में उनका कथन है कि साथ तो केवल मुक्त ही चलते हैं^{१०}। जब करनी का हिसाब लिया जायगा तो मा, बाप, बहन, भाई, मित्र आदि कोई भी गवाह रूप में नहीं बोवेगा^{११}। यमपुर और प्रमदूतो का भी सविस्तर बणन एक 'सवद' में किया है^{१२}। मृत्यु-समय तो कुछ भी करते-धरते नहीं बनेगा और प्रिना सत्कार्यों के पछताना ही पड़ेगा^{१३}।

१७-मुक्ति -

मुक्ति का तापत्र है सदा-मन्त्र के लिए आवागमन से छुटकारा। इसको जाम्भोजी न स्वग पाना, सुरों की पताह पाना^{१४}, सुर-सभा में समाना^{१५}, देवों से मिलाप पाना,

१-२०।

२-२४ ३-५।

३-८६ ३१।

४-११३।

५-२५ १४, १५, १११।

६-७५ ६६ ३४, ३५।

७-८६ ३१-३५।

८-२६ १-३, ६८ ३८, ५२ १०-१६।

९-११३।

१०-२८।

११-६५ १०-१८।

१२-६६।

१३-६८ ५-१० ११३।

१४-५१ १६।

१५-२८ ६३।

पार पहुँचना, वकुष्ठ पाना, उद्धार होना^१, 'भिसत' (बहिस्त) पाना^२ आदि शब्दों से प्रोत्थित किया है। मनुष्य का चरम प्राप्तव्य मुक्ति ही है। विष्णु-नाम-जप, सद्गुरु प्राप्ति^३, निष्काम-कर्म^४, ब्रह्मकार-त्याग^५, सदाचरण, इसके प्रधान उपाय हैं। यह आवश्यक नहीं है कि मरने के बाद ही मुक्ति हो, जीते जी मुक्ति, जीवन-मुक्ति प्राप्त करना श्रेयस्कर है और यह सम्भव भी है^६। एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। जो हक और हलाल की कमाई खाता, मृत्यु को प्रमाण मानता^७ और जीने की विधि जानता है वही जीवन-मुक्ति प्राप्त कर सकता है^८।

मुक्त के अन्तगत उन सभी कार्यों की गणना है जो किसी न किसी प्रकार आत्म-दशन और मोक्ष-प्राप्ति में सहायक होते हैं। मुक्त व्यय नहीं जाते^९ किन्तु सदैव निष्काम भाव से ही कर्म करन चाहिए। "सकाम कर्मो" से आवागमन का चक्कर जारी रहता है। जाम्भोजी ने कण और विदुर के दृष्टांतों द्वारा इसको स्पष्ट किया है^{१०}। मुक्ति के लिए हरि-कृपा आवश्यक है^{११}।

१८-ज्ञान, भक्ति और प्रेम -

ज्ञान के मुख्यतः दो भ्रम हैं—एक विद्वत्ता, दूसरा तत्त्व-ज्ञान। जाम्भोजी दोनों का ही महत्त्व स्वीकार करते हैं। उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान की भरसना नहीं की है किन्तु उनका सही भाषण समझने पर जोर दिया है। बिना ग्रथ पढ़े भी व्यक्ति अनुभव से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अनुभव-ज्ञान एक-दो दिन में अर्जित नहीं किया जा सकता उसके लिए सतत चर्चा रहना पड़ता है। उन्होंने अनेक 'सबदों' में चेतावनी देते हुए अज्ञानाघकार से दूर रहन और ज्ञान-प्राप्ति हेतु प्रयास करते रहने का आग्रह किया है।

भगवत् नाम जप और सत्सग भक्ति माग के सभी वर्गों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। नाम भजन के दो प्रकार हैं - एक मस्वर नामोच्चारण तथा दूसरा अजपाजप। जाम्भोजी पात्र भेद से दोनों का ही उपदेश देते हैं। विष्णु नाम जप को वे मुक्ति का मूल मंत्र मानते हैं। इसी प्रकार मत्स्यगीति अवश्य करनी चाहिए। इससे आदमी सुधरता और उन्नति करता है। लुहार अच्छे कारीगर की समति से लोहा घड़ते-घड़ते सोना भी घड़ने लगता है और बेड़े के सयोग से लोहा पानी पर तरन लगता है^{१२}। जैसे अच्छा रंग चढ़ने पर कपड़े की कीमत बढ़ जाती

१-५६।

२-६७ १६।

३-६६ ७।

४-२८।

५-५६ १६।

६-६७ ४।

७-६७।

८-१०५ ६।

९-६७ ७।

१०-२८।

११-७५ ४५ ३-५।

१२-१४।

है, पैम ही सत्संग से पदोन्नति होती है। गायु मोग रयन्ध सपेद र्द की भाति गुव प्रकार के रग ग्रहण करने वाले होते हैं निनु पाली ऊन के समान दुष्ट पुरुष। पर दूगरा रग हा नही चढ़ता। साधु पुरुष। की सगति सा चचल मन भी शांत हो जाता है^२। भगवद्-प्रेम के बिना भौतिक वस्तुओं का सपट-रग-रहित भूमी के समान है^३। सत्य दिना में भगवान का वाग है, इसलिए ऋषि-नीम और "छोत" का भावना निरगार है^४। मनुष्य करत हुए सदा भगवद्-प्रेम म रत रहना चाहिए^५।

ध्यात्म-क्षेत्र म भगवद्-कृपा होना परभावश्यक है, यट पट ध्याये है^६। ध्यातव्य है कि जाम्भोजी को प्रेमाभक्ति या गलदाश्रु भावुकता त्रिबुल ही स्वोकाम नही है।

१६-साधना, योग, विषय दृष्टि —

आत्मनस्त्व-प्राप्ति के लिए मरुदवाणी म हठयोग साधना का उल्लेख मिलता है किन्तु सर्वाधिक बल उहनि मन्-योग या जप-योग पर लिया है। विष्णु नाम जप आत्मोपलब्धि का मवर्धक साधन है। पात्र-भेद से हठयोग साधना के सबेत् भी यज्ञ-तंत्र मिलत हैं जिनके कुछ उपाहरण द्रष्टव्य हैं - प्राणवायु निरोध से परमात्मा पिंड म ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके गगन-मण्डल म झरता दृष्टा अमृत-पान समव है, जिमस-मूस प्यास मिट जाती जाता है^७। शरीर म प्राणायाम से मूय-चद्रमा का संयोग कराना चाहिए^८। मूय-चद्रमा घटम हैं और अनाहतनाद हो रहा है, इसको समभना चाहिए^९। पवा, पाना (रतस), दस इन्द्रियां नव द्वार, वग म करने चाहिये। "बकनाल" साध कर त्रिबुटि पर ध्यान लगाना, माया के बधन तोड कर सत्य की साधना करने वाला ही पूण योगी है और वही "गूय मडल" मे खेलता है^{१०}। ऋद्धि-सिद्धि पिंड म प्राप्त की जा सकती है^{११} किन्तु इसके लिए योगानि से विषय-वामनाओं को भस्म करना आवश्यक है^{१२}।

जाम्भोजी ने सहज-माग पर ही चलने का आदेश लिया है। इसके लिए उन्होंने योद्ध-सिद्धी द्वारा प्रयुक्त शब्द "ओजू की वाद्" ^{१३} का उल्लेख किया है। तत्त्वप्राप्ति के माग पर बिरले ही चलते हैं क्योंकि इसके लिए अपने आप को मारना पडता है, अत 'निगुरे'

१-२५।

२-पाह्ल मत्र।

३-७६ ६।

४-३६ १-७।

५-३७।

६-१२ १४ ३, ४, १, ३० ८, ९।

७-४०।

८-६६।

९-५३ ५-११, ८९।

१०-१०६।

११-१०९।

१२-६६।

१३-२२ ३, ११४ ४।

व्यक्ति यह "भूभू" नहा रचाते^१ । इसके लिए बाह्य वेश व्यथ है । तत्त्व सद्गुरु बता सकते हैं^२ और साधक उसको जान कर पूरा योगी बन सकता है^३ ।

२०-आचार-व्यवहार, आत्मानुशासन के मुख्य नियम —

जाम्भोजी न व्यावहारिक जीवन में कतिपय नियमों का पालन विशेष रूप से आवश्यक बनाया है । सदाचरण पर वे बहुत ही जोर देते हैं, आचार-विचार सम्बन्धी शयित्य उनको कृपि माय नहीं है^४ । भुक्ति-स्तु भी इनका पालन परमावश्यक है । सम्प्रदाय में स्थापित २९ धम-नियमों का पालन इसी कारण है । आगे उन प्रधान नियमों का उल्लेख किया जाता है जिनका प्रतिपादन जाम्भोजी ने अनेक बार किया है । चार प्रकार से ऐसा किया गया है - एक तो सीधे विधि-निषेधात्मक रूप में, दूसरे किसी प्रसंग-विशेष के मद्दम में, तीसरे प्रति-बोध रूप में और चौथे भुक्ति-प्राप्ति के आवश्यक अंग के रूप में । कहना न हागा कि २९ धम-नियमों की आचार-भक्ति ऐसे कथन ही हैं ।

विष्णु मूल तत्त्व है इसलिए निरन्तर विष्णु का जप जपना चाहिए^५ । वाद-विवाद^६, अहंकार^७, भूठ^८, निंदा^९, द्वन्द्व भावना^{१०}, चोरी^{११}, क्रोध^{१२}, मोह^{१३} और जावहत्या^{१४} का सबका त्याग करना चाहिए । बल^{१५}, गाय^{१६}, भेड-बकरी^{१७} आदि निरीह जानवरों की हत्या नहीं करनी चाहिए । इस सम्बन्ध में जाम्भोजी ने बड़े सबल तक लिए हैं । कमाई का दसवाँ हिस्सा तो दान^{१८} में अवश्य देना चाहिए किन्तु सुपात्र^{१९} को

१-८५ ।

२-१०७ ।

३-५२ १२-१५, ४६ १-८ ।

४-२८ ६७ ३० ७, ५२ १२ ।

५-११, १३ ७, २१ ८-१२, २३ ५, २५, १६, २ १२, २६ १०, १९, ३१ १३, १४, ३२ ८ ६३ ३०, ६६-१६, ७६ ३, ८६ ३६, ६६ ५,

१०५ ४ ११६ १, १२०, १२१ १२२, वहनवणमत्र, पाहळमत्र, वाळकमत्र ।

६-१५ १३, १६ १४-१६, २८ ६६, ३० ८ ३२, १०, ३८ १०, ३६ ५,

७७ ७, ५१ २२, २३ ९८ १, २ ।

७-१८ १५, ३० ८, ५१ २२, २३, ५६ १५, १६ ६३ १८, ६६ ६, १६

८३ १० ८६ ५, ६८ २ १०६ ४ ।

८-६ १० ११, १३ २ २८ ४२, ५२ ४, ६४ ८ ।

९-५१ ९ ८२ ३, ४ १६३, १२०५ ।

१०-१८ १३ १४ ।

११-८२ ४ ११२ २ ।

१२-६२ ९ १० ।

१३-२३ १ ।

१४-८ २३, २४, ६ ८, ९, ३६ २, ४६ ८, ८६ ७, १०१=३४, ११३ ७८ ।

१५-८ ३, ४ ।

१६-८ १५, १६, ९ ११, १२, ६८ ३ ।

१७-७ २ ।

१८-२५ १५ ६० ५ २-७२-७४ ५४ १-४. ९२ १-४ ।

१९-५४ ५ ।

और निष्काम भाव से। ऐसा दान ही प्रभूत फल देता है। विनम्रता (नवगी) २ क्षमा ३, सत्य ४, क्षील ५, तप ६, सातोष ७, दया ८ आदि धर्मों का पालन करना चाहिए। मन एकाग्र रखना ९ और "जरगा" (यम त्रोषादि) "जरनी" चाहिए १०। आँधी बमार्ई करना ११ और ह्व की बमार्ई ही गानी चाहिए १२। मन्त्र का त्याग १३ तथा सवम १४ और ईमान १५ गाना चाहिए। मन्त्रगति १६, परोपकार १७ और तन-मन दाना का पवित्रता १८ रमनी और स्नान सदय करना १९ चाहिए। निमल वागी २० बोननी और होम करना २१ चाहिए। हरे वन नही काटने चाहिए, मोमवनी भ्रमाभ्या और रविवार को तो त्रिकुट ही नहा २२। रजस्रता स्त्री के माघ ममागम नहा करना चाहिए, प्रहम "कुर्मा चतन" और निजना एकादगी को तो क्तापि नहा २३। मांम आदि भ्रसाद्य पत्नी २४ तथा भाग २५ का सवथा त्याग करना चाहिए। गुहन करना २६, गुग्गली को मानना २७, सहज भाव से रहना २८ और मृष्य पर चलना २९ चाहिए। समार और वाति न सोम म नही

- १-२८ ६१-६३ ५४ ११, ६२ ३ ४।
 २-२१ १६, २८ ५३, ८४ १२ १०५ ८।
 ३-२१ १६, २८ ५३ ८४ १२, १०५ ८।
 ४-२७ ६१, ६७ ११ ७० १०, ७२ ९, १०, १०१ ४।
 ५-१८, २१ २१ २७ १७, १८, २८ ३९, ४०, ३० ५ ३६ १५,
 ५२ १२-१३।
 ६-६ ८, ११ ३।
 ७-१०६ ३।
 ८-२ १२, १८ ७ ८ ४७ ७, ८२ ३।
 ९-६ २ २५ २३ ४८।
 १०-१३ ७, २१ १६, १७ २८ ५३-५५, ५४ ८, १२० १।
 ११-६५ १२।
 १२-६ १० ४ २७ १८ ७० १, ८३ २७।
 १३-१५ १३, ३२ १०, ३९ ५।
 १४-२१ २१, २२ ३९ १५ ५२ १३ ६६ १, ८४ ११।
 १५-११५, १०१ ४।
 १६-१४, ३७।
 १७-६४ १०, ११।
 १८-६६ ८४ ११, १०० ७ १०५।
 १९-२८ ३५-३८, ३० ५ ५५ १, ८१ ७, ८।
 २०-१५ १ ७६ ३।
 २१-६ ८, ११ ३, ६३ ७।
 २२-६ ३, ४।
 २३-६।
 २४-७ ४, १४ १२, ८६ ८, ११४ १०।
 २५-१४ ११।
 २६-१८, २१, २८ ५, ६४ ६, ७० १ ६७ ७ ६८ १०।
 २७-१२ १-३ १५ ६, १६ २५, २७ १ ८४ १२ ९६ ८, ६।
 २८-१०५ ७।
 २९-३७, ६८ ६।

ना चाहिए। मोटा पहनना, रुखा-सूखा जो प्राप्त हो जाय उसे खा लेना, दूध पानी पीना, अपने हाथ से काम करना और अपने खेत की ही कमाई खानी चाहिए^२। मन-हठ^३ और शौ से दूर रहना चाहिए^४। बुरी चीज देख कर अनदेगी और बुरी बात सुन कर अनसुनी रखनी चाहिए^५। सत्ता प्रसन्न^६ रहना चाहिए और आवश्यकता पटने पर मुक्ति और भगवान के निमित्त अपने प्राण भी त्याग देने चाहिए^७। श्रोत्रे काय न करके^८ सदा उत्तम आचार-विचार-व्यवहार और करणीय कृत्य ही करने चाहिए^९। पहले कोई काय स्वय ही रखे दिखाना चाहिए तब दूसरा को उसे करने के लिए कहना चाहिए। कोई काम स्वय करके दूसरो को उसके लिए कहना अनुचित और बुरी बात है^{१०}। इनके अतिरिक्त दो श्लोकों^{११} में राम-लक्ष्मण के प्रदत्तोत्तर रूप में भी अठारह दोष गिनाये गये हैं।

११-पाखड —

जाम्भोजी ने तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक प्रकार के पाखडा की कड़ी भरसना और निंदा की है। ये पाखड साधना, सिद्धि, योग, अध्यात्म और धर्म के नाम पर जोगियो, मुसलमानों और हिंदुओं में बहु-प्रचलित थे। इनका उल्लेख प्रधानतः तीन प्रकार से किया गया है — (क) जोगिया, (ख) मुसलमानों और (ग) हिंदुओं में प्रचलित विभिन्न पाखडों का पृथक्-पृथक् उल्लेख, (२) अनेक प्रकार के प्रचलित पाखडों का सामान्य रूप से सामूहिक बर्णन—जिनमें मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, बडप्पन-भावना, कम-वाण्ड, ऊपरी-दिखावा और कथित सिद्धि या/और “कलावाजिया” सम्मिलित है तथा (३) भविष्य में होने वाले सम्भावित पाखडों से चेतावनी। इनका उल्लेख नीचे किया जाता है —

१-(क) “जोग-पाखड” —

नये रहन से जोग-प्राप्ति नहीं होती^{१२}। ऐसे व्यक्ति और भगोड़ी जीवहत्या करते हैं, इसलिये वे भूल में हैं^{१३}। जोगासन पर बठकर कूड, कपट का आश्रय लेने वाला जोगी नहा हो सकता। सहज माग को तो कोई बिरला ही जानता है^{१४}। सिद्धि-प्रदशन, बाह्य वेद भूषा और वनावट में भी जोग नहीं है^{१५}। कान-फडाना, “चिरघट” पहनना, जटा बढ़ाये रखना और जीवहत्या करना निरा पाखड है^{१६}। बिना जोग-माग जाने घर-बार छोड़ना किन्तु घर-बारी की भांति सूई-धागे से “करड” और “भेखला” की सिलाई करना, भोनी-क्या लकर कंधे पर बोझ डोना, वीर-वतालो का जप करना, मूड मुडाना किन्तु माया और मोह का त्याग नहीं करना केवल लोक दिखावा ही है^{१७}। इसी प्रकार लोह-शृंखला धारण करना, नगा रहना चतुर्दिक भटकते रहना भी व्यर्थ है। मूल बात परब्रह्म का मुषि लना और तद् हेतु शुद्धाचरण जोगी का कर्तव्य है^{१८}। यह न समझ कर जो मूड मुहा लेते हैं वे गरु और धेले दोनों ही पागल कुत्ते के समान हैं^{१९}। सवदवाणी के अनेकश

१-२८	६८	६९	३०।	२-६६	५,	११२	१, २।	३-२८	६८	९८	२।
४-६९।	५-९२।	६-६६।		७-६	२६	३२	५।	८-७५	५।		
६-६	१८, २१	२७	६	२८	६२	१०५।	१०-२८।	११-५९	६०।		
१२-६	२५।	१३-१४	११, १२।		१४-२२।		१५-४५	६-११६			
१६	४६	७, ८।	१७-४७	१-६।	१८-४८।		१९-११८।				

सबद नाथपंथी जोगियो, उनकी साधना, वेश-भूषा और वायों पर कटे गये हैं जिनसे इस सम्प्रदाय में सम्भव जानकारी मिलती है।

(ख) "मुसलमान पाखण्ड" — जो मुदा को जानता नहीं, गाफिल है, मनमानी करता है, गायो को मारता किन्तु उनका दूध-ही-घी खाता है, पश्चिम की आर मुँह कर 'उल्लवग' तो देता किन्तु जिसके मन में दया-भाव नहीं, वह कसा मुसलमान है? यदि दिल नाक है तो काया इसी में है, "उल्लवग" देने की आवश्यकता नहीं?। पशु का दूध पीना तो जायज है परन्तु उसको मारना और हीन कम करके नमाज पढ़ना व्यथ है क्योंकि ऐसे मुसलमान ने नमाज के तत्वांग पर ध्यान नहीं दिया है^३। सुनत करान से कोई लाभ नहीं, बिना अलस को लखे 'मोहम्मद-मोहम्मद' कहना बेकार है क्योंकि 'मोहम्मद' तो हलाली पुरुष था, मुर्दा खाने वाले तो तुम्ही लोग हो^४।

(ग) हिंदू-पाखण्ड — विष्णु के अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं है, अतः दवी देव-ताम्रा और पत्थर की पूजा निम्नार है^५। मूर्ति-पूजा और तद् हेतु किये गये पाखण्ड में भगवान नहा है। ऐसी पूजा करने वाले ब्राह्मण से तो कुत्ते बहो अछे हैं क्योंकि वे चोरा के आने पर घर वालों को भोज कर जगा तो देते हैं। इसी प्रकार भूत-प्रेत और यक्ष-पूजा और इस हेतु साधना करना, 'कालर' जमीन में बीज बान के समान निरर्थक है। इमगान में, नगी तट पर और अयत्र भी इतर देव-पूजा करने से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती^६।

(२) पाखण्डों का सामान्य रूप से सामूहिक वणन —

हिंदू होकर मूर्ति या तीर्थ भूखलमान होकर काया, जोगी होकर मूढ़ मुठाना और 'गोरपहटडी' धोक्ना सब पाखण्ड हैं। ऐसे लोग अज्ञानी हैं^७। बिना गुरु-ज्ञान के तत्त्व प्राप्ति हेतु जोगी, जगम, सीमा उजाने वाले, दिग्मन्वगी, सयामी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और पडे-तिथे पडिन आदि के प्रयास व्यथ हैं। एस लाग मनहठी है^८। तीर्थों पर भटकना केवल लोभ-निष्ठावा है^९। इतर देवों, यथा और भूत-प्रेतादि की साधना-उपासना पाखण्ड का मंत्र बटा प्रमाण है^{१०}। शिष्या करक किय जान वाले सभी कम और आचरण-हीनता किसी भी प्रकार मो-माग में सहायता नहीं करते^{११}।

(३) सम्भावित पाखण्ड — एक 'सत्र' में जाम्भोजी ने अपन अनुपायिया को भविष्य में होने वाले अनेक प्रकार के पाखण्डिया और उनके द्वारा किये जाने वाले पाखण्डों से सावधान और मनव किया है^{१३}। इसमें सदेह नहा कि उनके समय में इसमें वर्णित पाखण्ड किसी न किसी रूप में प्रचलित थे। जाम्भोजी की इस चेतावनी और आदेश का फल है कि विष्णोई समाज में साधना, अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में वर्तमान में भी किसी प्रकार का पाखण्ड या पागण्ड-पूजा प्रचलित नहीं है। पागण्ड और ढाग के विरुद्ध कथित गुरुवाणी पर, उनके अनुपायिया का दंतनी दृढ़तापूर्वक और आस्था से चलन का दूसरा उदात्तरण शायद ही किसी मध्यकालीन उत्तरी भारत के मन्त्र सम्प्रदाय में मिले। जम्भवाणी की सच्चाई और आज का अनुमान सभी में लगाया जा सकता है।

१-८१ २-७ १ ६ ११ ३-६ १०१ ४-६ २५ २६। ५-१०१
 ६-६६ ६, ७। ७-७१। ८-३६ १०-१३। ९-४१ ६-११।
 १०-६२ ५। ११-६६ ३३। १२-५५ २, ११४। १३-९०।

अनत सबद सतगुर कह्या पच्यासी वरस परवाण ।
 नाथ कठि रहिया अता, सीख्या वील्ह सुजाण ॥ १ ॥
 वड पोथी गिण वील्ह की, हूजी सुरजनदाण ।
 तीज मुक्त्त मुक्त्त गुरु, सुरताण पिता मुक्त्त आप्त ॥ २ ॥
 के बात सुणी साधा कता, के पोथ्या मा परवाण ।
 परमाणद सुरताण २, लिखिया सबद सुजाण ॥ ३ ॥
 में तो माड्या मोह वरि, पुसतक देखि त्रिवार ।
 सबदा अरथ अनत है, जाण सिरजणहार ॥ ४ ॥
 चिरमी सोन एक तोल, रग मोल बरावरि नाहि ।
 भेस बरावरि एक सा, भेद बरावरि नाहि ॥ ५ ॥
 —परमानदजी वणियाळ, प्रति सल्या २०१, २२७ से ।

ग्यात दगधी गुर निदणा, पात्रियळ आन उपास ।
 एता सबद न दीजिय, दाखी वीटळदास ॥ १ ॥
 गुर निरमळ निक्ळक गुर, पर उपगार वरत ।
 वील्ह कहै गुर दाखयी, मुक्त्ति खेत को पय ॥ २ ॥
 —वील्होजी, प्रति सल्या २०१, २२७ से ।

अध्याय ६

जमैवाणी : पाठ—सम्पादन

जम्भवाणी : पाठ-सम्पादन

भूमिका

(१) प्रतिपां प्रतिपां की बहिरंग परीक्षा

“सबदवाणी” की ४८ प्रतिपां उपलब्ध हुई हैं। “वाणी” के पाठ-सम्पादन में इनमें से चुनी हुई सात प्रतिपां का उपयोग किया गया है। इनका परिचय नीचे दिया जाता है -
 १-जा० प्रति। प्राप्तस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आयूरी जागा, जम्मा। सबद सरया-
 १२३, गद्य प्रसंग संहित। पत्र सख्या-३६। अपेक्षाकृत पतला बादामी रंग का देशी कागज।
 आकार-६×४ इंच। हागिया-दायें, बायें-१ इंच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति
 पक्ति-३४-३७। लिपि-पाठ्य। परसराम द्वारा सबत् १८७९ के मागगीप बदि १२ को
 लिपिवद्ध। प्रथम पत्र पर हाशि यो म और द्वितीय के बीच में अलकरण हेतु रगोन चक्र बनाये
 गए हैं।

- आदि-॥ श्री विसनजी म्त्वही ॥ लिपते सबद श्री भाभजी रा वायक ॥ काच करव नीर
 राप्यो ॥ काची माटी का दीवटीया कराया ॥ जा माहि पाणी घतायो ॥ हुबम सू
 दीया जगाया ॥ वामण न परचो दिपाल्यो आदि सबदवाणी सतगुर की ॥ श्री वायक
 कहै ॥ गुर चीहों गुर चीहै पिरोहित ॥ गुर भुपि घरम वपाणी ॥
- अन्त-॥ विमन विमन तु भणिए र प्राणी ॥ प क लाप उपाजू ॥ रतन क्या बैकूठ वानी ॥
 बुरा मरण भव भाजू ॥ १०३ ॥ इति श्री सबद श्री वायक सपूरणम् ॥ भवेत ॥ अनत
 शरत सतगुर कहा ॥ ब्रम चौराभी बाणिए ॥ नाथेजी व कठ रह्या अता लिपीया धील्ह
 तुआग ॥ लिपते साध श्री हरिकिसनजी रा सिष्य परसराम ॥ सबत १८७६ मिते
 मृगनिर बदि १२ वार बुधवार ॥ गाव लोहावट मधे ॥ श्री ॥ श्री ॥
- २-रा० प्रति। प्राप्तस्थान-पीपासर साधरी, पीपासर। सबद सख्या-१२०, विना प्रसंग।
 केवल प्रथम “सबद” का ही प्रसंग पद्य में दिया है। पत्र सख्या-३६। किनारे यन-सत्र
 मन्ति। बादामी रंग का देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हागिया-दायें, बायें-१ इंच।
 पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति ३१-३३। लिपि प्रायः स्पष्ट और पाठ्य किन्तु
 स्याहा पीकी पड जाने से बीच के कई पत्र किंचित अस्पष्ट। रामदास द्वारा सबत १८८६
 के सावन बदि २ को लिपिवद्ध।
- आदि-॥ श्री जभेस्वरायनम ॥ अथ लिपते सबद जाभजी का ॥ काच करव जल रप्यो ॥
 गरद जगाया दीप ॥ वामण की परचो दीयो ॥ असी अचरज कीप ॥ जा बूमयो
 सोई कह्यो ॥ अलप लपायो भेव ॥ धोपो सब समाय क ॥ जद सबद कह्यो भनदव ॥
 गुर चीहों गुर चीहै पिरोहित ॥ गुर भुप घरम वपाणी ॥
- अन्त-ज्यों ज्यों लाज दु नी की लाज ॥ त्यों त्यों दाव्यो दाव ॥ भलीयो होय ती ॥ भल बुद्धि

श्राव ॥ बुरीयो बुरी बमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्द बाणी श्री भाभजी की सपूर्ण
समाप्ति ॥ १ ॥ समत ॥ १८ ॥ ८६ रा त्रिपे मिली श्रावण वदि २ बार बाबरवार ॥
लिपते साध श्री १०८ कनौरामजी रो सिष्य रामदासजी । श्री गणेशायनम ॥ श्री रामजी
श्री जभेम्बरायनम ।

३-पो० प्रति । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी, जागलू (जीवानर) । शब्द सख्या-१२०, विना
प्रसंग । पत्र सख्या-२९ । देशी कागज । आकार-६ $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{3}{4}$ इ च । हाशिया-दायें, बायें-
भावा इ च । पवित्र-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पवित्र-३१ ३५ । लिपि-स्पष्ट और मुपाठ्य ।
साधु गाविंददास द्वारा सवत १६०७ के मागशीप सुदि ७ को लिपिबद्ध ।

आदि-॥ श्री विष्णवे नम ॥ ओ गुर चीही गुर चीहि विरोहित ॥ गुर मुप घरम बपारी ॥
जो गुर हेवा सहजे सीले शब्दे नाद बंद । तिहि गुर का आलीकार पिछाणी ॥

अन्त-विष्णु विष्णु तू भणि रे प्राणी प क लाप उपाजो । रतन बाया बरू ठे बासी तरा जरा
मरण भव भाजो १२० इति श्री शब्द बाणी श्री जाम्भोजी की सपूर्ण १ सवत १६०७
रा वये मिली भिगसर सुदि ७ लिपीकृत साध गाविंदराम ।

४-म० प्रति । प्रति सख्या ६५ (ग) । पोथी । प्राप्तिस्थान-श्री मन्तराम थापन मुक्ताम ।
सम्ब सख्या-११७ पद्य प्रसंग सहित । विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन मामग्री,
प्रति सख्या ६५ ।

५-ला० प्रति । प्रति सख्या २०१ । पोथी । लालासर साथरी की प्रति । प्राप्तिस्थान श्री महंत
रामनारायणजी, रामडावास (जोवपुर) । सम्ब सख्या-१२१, गद्य प्रसंग सन्धि । विवरण के
लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन-मामग्री, प्रति सख्या २०१ ।

६-पो० प्रति । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी, पीपामर (नागौर) । सम्ब सख्या-१२१, गद्य
प्रसंग सन्धि । पत्र सख्या-३६ । पतला बादामा ग्य का देशी कागज । आकार-६×४ इ च ।
हाशिया-दायें-लगभग पीन इ च । पवित्र प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पवित्र ३३ ३५ ।
लिपि-स्पष्ट और मुपाठ्य । पीताम्बरदास द्वारा सवत १८७८ के जेठ सुदि १२ को लिपि-
बद्ध । प्रथम पत्र पर अलंकरण हेतु एक रंगीन चित्र बनाया हुआ है ।

आदि ॥ श्री जाम्भोजी रा वाचक प्रारम्भ ॥ वाच करव जल राधो ॥ दाची माटा का दीव
ठीपा कराया । जा मा पाणा घतायो । हुकम सौ दीया जगामा । वाभण न प्रचो
निपायो । आदि गवत् बाणी सतगुर की श्री वाचन कहे ॥ गुर चीही गुर चीहि
विरोहित । गुर मुपि घरम बपाणा । जा गुर होयवा सहजे सीले नाद बन् ॥ तिहि गुर
का आलाकार पिछाणी ॥

अन्त-विष्णु विष्णु तू भणि रे प्राणी ॥ प क लाप उपाजो । रतन बाया बरू ठे बाणी ॥
तरा जरा मरण भो भाया ॥ १०१ ॥ इति श्री गुरु श्री वाचक सपूर्ण ॥ अन्त गुरु
मनगुर कथा ॥ वरुण चारामा वाण ॥ नायजी क कठ रह्या अता । निपाया गद
मुक्ताम ॥ १ ॥ समतोष्यन भूयागिरि ० सिधु ० नागरा ० निवायो ० मामात्म मान राधे
निमाते गुरुन पणे द्वास्या निमोहत पीताम्बरदास श्री विष्णु दासजी रा विष्णु मन्त्र
मस्तु कदाए मस्तु ॥ पत्र ३६ ॥

७-ब० प्रति। प्रति मर्या ८१ (त)। पोथी। प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम, (बीकानेर)। सबद मर्या-११७, पद्य प्रसंग सहित। विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अथयन सामग्री, प्रति मर्या ८१।

(२) अन्य प्रतियाँ

निम्नलिखित गेय ४१ प्रतियो का उपयोग सम्पादन में उसी शाखा की अन्य प्रति/प्रतियाँ प्रयुक्त हान के कारण नहीं किया गया है -

अध्याय १, अध्यायन-सामग्री, प्रति मर्या-१६, २६, ८२, ८३, ८४, ८६, ९६, १११, ११३, ११४, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १५३, २०२, २०४, २०६, २१३, २१४, २२०, २२५, २२६, २२७, २३१, २६६, ३१५, ३२६, ३३४, ३६२, ३६३, ३९५।

इनमें-(क) प्रति मर्या ११३, १३४, म ब प्रतियो की शाखा की और

(ख) शोध मय प्रतियाँ रा गो पी तथा जा प्रति की शाखा की हैं।

सबम पाठ-मिश्रण और स्वतंत्र पाठ-विकृतियों के उदाहरण भी मिलते हैं।

(३) प्रतियों की अंतरंग परीक्षा

(क) जा० रा० गो० पी० म० ब० प्रतियाँ

१- २४ ७ स्वीकृत पाठ है

सतगुर मिलियो सत पय वतायो वेद गरय उदगारू ।

इन प्रतियो में मोट अक्षरों में छपे अक्ष के स्थान पर 'विदगारा त उदगागारू' पाठ है। प्रतीत होता है इस स्थल पर जा रा गो पी म ब प्रतियाँ के आदेश किंचित् त्रुटित रहे हैं। 'वद' के स्थान पर 'विद', 'गरय' के स्थान पर 'गारा त' अनुमान से लिखा गया। "उदगागारू" में स्पष्ट ही दृष्टिभ्रम से "त" प्रक्षेप है। श्रुतिदोष से भी ऐसा संभव है। स्वीकृत रेखांकित पाठ का अर्थ है - (म) वेद-तत्त्व का बखान करता हूँ। अथ की दृष्टि से 'विदगारा त उदगागारू' पाठ निरर्थक है।

२- २५ १७ स्वीकृत पाठ है

कफ विवरजत रुदयो ।

सेतू भातू बोह रग लेणा सब रग लेणा रुदयो ।

जा रा गो पी ब प्रतियो में "कफ" के स्थान पर 'काफर' और म प्रति में 'काफ' पाठ है। प्रतीत होता है 'कफ' के अर्थ को ठीक से न समझने के कारण अथवा दृष्टिभ्रम से 'काफर' और 'काफ' लिखे गए। 'कफ' अक्षरी गद है (द्रष्टव्य-मु० मुस्तफाखं मदाह उद्ग-हि दी गदकोष, पृष्ठ ६७ सन् १९५६) जिसका अर्थ है- सूखी हुई घास। स्वीकृत पाठ का अर्थ है- सूखी हुई घास से रचित स्वच्छ, सफेद हुई बहुत प्रकार के रंग प्राप्त कर लेती है। "काफर" और 'काफ' दोनों ही इस प्रसंग में निरर्थक हैं अतः ये विकृत पाठ हैं। यह भी संभव है कि 'काफर' शब्द अधिक प्रचलित होने के कारण ग्रहण कर

लिया गया हो ।

३- ६३ २, ३ स्वीकृत पाठ है

तन्नि म्हे रह्या निरालम् होय परि उतपति धूमरारी ।

ना भेर बस न वाप न माई, अपनी वाया भाप सवारी ।

जा रा गो पी प्रतिया म "बस न" के स्थान पर "राव" और म व प्रतियों म "दावन" पाठ है । प्रथम पवित म रचयिता अपनी उत्पत्ति की बात बताते हुए द्वितीय पवित म कहता है—मरे न वश है, न वाप है और न मां है, मैं अपनी वाया का निर्माण स्वय ही किया है । दावन (दावण) का अर्थ है—बधन, संहारा, लिए, बदले म, सम्पन्न या राह जो जाम्भोजी के भाजीवन ब्रह्मचारी होने के कारण उनसे "बस" चलन की बात को अनुचित समझ कर साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से 'रत' पाठ के बदल रखा गया है । वस्तुतः यहाँ रचयिता अपने स्वयभूत्व के सदम म अपने वश मा वाप आनि के न होने का उल्लेख करता है जो सयथा सगत है । सबदवाणी म अथत्र अनेक तार ऐसा उल्लेख किया गया है । मत "बस न" पाठ मूल का है ।

४- ३१ ७-१० स्वीकृत पाठ है

जो जित हु ता सो तित नहीं, भल छोटा सतार ।

वह का पित माई वहण र भाई वह का पल परवार ।

जा रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपे अक्ष के स्थान पर "जो चित हु ता सो चित नाही" पाठ है । आरम्भ की चार पवितयो म सतार की नश्वरता बताता हुआ रचयिता पाचवी छठी पवितयो मे कहता है —

"अनेक अनेक चलता दीठा, कळि का माणस कवरण विचारू । फिर प्रस्तुत पाठ है जितका अर्थ है—जो (पहले) जहा था, वह (अब) वहा (स्थिर) नहा है । इस भले—बुरे सतार म माता, पिता, बहन और भाई किमके हैं ? 'जित' और 'तित' के स्थान पर "चित" पाठ स्वीकार करने से अर्थ होगा—जो चित्त (पहले) था वह चित्त (अब) नहा है, जो अप्रासंगिक है । अमगत होने से "चित" पाठ विकृत है ।

५- ३० ४, ५ स्वीकृत पाठ है

गज हसतो दानू अति वळि दानू ।

ताप सभ सीरि सील सिनानू ।

जा प्रति म मोटे अक्षरा म छपे अक्ष के स्थान पर "सब सांनानु" पाठ है । रा गो पी म व प्रतिया म यह अक्ष त्रुटित है । प्रतीत होता है इनकी आक्षेप प्रतियो म यह अक्ष अस्पष्ट या अक्षत त्रुटित था । जा प्रति म इस कारण स्वीकृत पाठ के केवल दो अक्ष पाये—"सभ" के स्थान पर "सज" और "सिनानु" । शेष सब प्रतियों म यह अक्ष त्रुटित रहा । इस सबद मे, प्रस्तुत पवितया तक अनेक प्रकार के दान का उल्लेख करत हुए उन सब से बढ़कर "शील स्नान" को माना गया है । शील और स्नान की महत्ता बताई गई है न कि केवल स्नान की । सम्प्रदाय म माय २६ धमनियमा म तासरा स्नान और चौथा शील-पालन करना है । अथत्र भी प्रकारांतर से यही बात कही गई है —

"तन मन घोरे, सत्रम होरे (२१ १) । स्पष्ट है कि जा प्रति में स्वीकृत पाठ अक्षर
मौर रा गो पी म व प्रतियों में पूरा भ्रुति है ।

६-४२ १०-१३ स्वीकृत पाठ है

जाह बाणा म्ह रावण मारयो (१०)

मतू त कोवड सोला हाये साह (११)

कर पांडव जादम जोघा (१२)

मतू त गढ ह्यणापुरि आणि बसाऊ (१३)

जा रा गो पी म व प्रतिया में दृष्टिभ्रम के कारण मोटे अक्षरों में छपा अक्षर
भ्रुति है । ग्यारहवीं पंक्ति के "मतू त" पाठ के पश्चात् लिपिकार मोटे अक्षरों में छपा
अक्षर निकना मूल गया क्योंकि तरहवीं पंक्ति में भी यही पाठ है । प्रस्तुत पंक्तियों में राम-
रूप सम्बन्धी अर्पणी सबशक्तिमत्ता के कथन के पश्चात् कौरव-पाण्डवों का उल्लेख है जो
साठ है । अर्थ है- जिन बाणा से मैं रावण को मारा था, यदि मैं चाहू तो हाथ में धनुष
रकर (उहा बाणा से) (सागर) सूखा सकता हूँ । यदि मैं चाहू तो कौरव-पाण्डव और यादव-
योद्धा को लाकर गढ हस्तिनापुर में पुन बसा सकता हूँ । भ्रुति अक्षरों को यदि मूल पाठ
में माना जाय तो अर्थ होगा-जिन बाणा से मैंने रावण को मारा था, यदि (मैं) चाहू
तो लाकर गढ हस्तिनापुर में बसा सकता हूँ या आकर गढ हस्तिनापुर बना सकता हूँ ।
स्पष्ट है यह उल्लेख प्रसंग के विरुद्ध और असंगत है क्योंकि इसमें एक तो राम और कौरव-
पाण्डव दोनों से सम्बन्धित उल्लेख अपूर्ण है, दूसरे राम का सम्बन्ध हस्तिनापुर से स्थापित
होता है जो असंगत है । इस प्रकार, इन प्रतियां में मोटे अक्षरों में छपा अक्षर मूल से
भ्रुति है ।

७-४२ ७८ स्वीकृत पाठ है

ये कान चिरावो चिरघट पहरो, पापड पोह न कोई ।

जटा बधारी जीव सिधारी, आयसां । इहा पापडे जोग न होई ।

दोनों पाठ अक्षरों में छपी अक्षर पंक्तिया के स्थान पर विभिन्न प्रतियों में क्रमश इस प्रकार
पाठ है-

१-जा -ईह पापड तो जोग न होई ।

ईह पापड तो जोग न होई ।

२-रा गा पी -आयसा इह पापड तो जोग न कोई ।

(रा में "कोई" के स्थान पर "होई" पाठ है) ।

इहि पापड तो जोग न कोई ।

३-म व -इए पापड प जोग न कोई ।

इए पापड प जोग न होई ।

स्पष्ट है कि जा रा गो पी म व प्रतियों में जो पाठ मोटे अक्षरों में छपी प्रथम अक्षर-
पंक्ति के स्थान पर है, वही दूसरी अक्षरपंक्ति में भी है । दृष्टिभ्रम से स्वीकृत पाठ की प्रथम
अक्षरपंक्ति "पापड पोह न कोई" के स्थान पर स्वीकृत द्वितीय अक्षरपंक्ति का पाठ प्रकारा-

स्तर से लिखा गया। अथ की दृष्टि से देखें तो मोटे अक्षरो में छपी स्वीकृत दोना पत्रितियों के अथ अमश इस प्रकार हैं—(१) पाखड म बाई भी माग (धममाग) नहा है या पाखड बाई माग (धममाग) नही है। (२) हे आयसो। ऐसे पाखडो म जोग नही होता या यो-माग पाखड म नहा है, जा प्रसगानुबून और सगत हैं। इस प्रकार, इस सज प्रतिया म “पापड पोह न कोई” अश ऋटित है।

८-३२ १,२ स्वीकृत पाठ है

फुरण फुहार किसनी माया घण वरसता

छलिया सरवर नीर।

जा रा गा पी म व पतियो म “छलिया” शब्द ऋटित है। (छलिया=भरा हुआ, भरे हुए, भर गया, भर गए)। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—कृष्ण की माया म फुहारा के रूप म जन प्रसट होता है और जब वह अधिक बरसता है तो सरोवर पानी से भर जाता है। यदि ‘छलिया’ मूल पाठ का न समझा जाय तो ‘घण वरसता सरवर नीर’ अश निरर्थक होगा। अतः प्रसग और अथ की दृष्टि मे “छलिया” शब्द मूल पाठ का ही है। “छलिया” का इस अर्थ म प्रयोग अथत्र भी अनेक स्थानो पर हुआ है -

१-रतनक्या द सूच्या छलत भडारा (५६ ११)

२-करो मजुरी पेट छलाई (८३ २७)

३-पवण बधाला क्या छ काची, नीर छली ज्यों पारी (८४ ६)

४-चबद भुवण रह्या छलि पारी (९४ २)

९-१६ ८-१४ स्वीकृत पाठ है

अवर भी खचत बाणो (८)

जती तपी तक पीर रपेसर (९) सांयत सुर बाणालो (१०)

जोधा महारथी बडाक भी जोयवा (११), तोलि रह्या सह पारी (१२)

तऊ विणि खचि न सवी (१३), सिभू तरा बडाणी (१४)।

जा रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छया अ ग (भाठवीं पक्ति के “बाणो” अथ व अनिर्वृत) दृष्टिभ्रम से ऋटित है। जती तपी तक पीर रपेसर” व परचात् “तोलि रह्या सह पाणी” अथ लिखा गया किन्तु मोटे अक्षरो म छया अ ग छूट गया। भाठवीं पक्ति व “बाणो” अथ व ध्यान म रत्न व कारण भी दगवी पक्ति पुनरहित अथ स विनि यारा न छान दा क्यासि इनके वागाती तऊ के कारण दृष्टिभ्रम हो गया। प्रसग और अथ की दृष्टि स मोटे अक्षरो म छये अ ग का होता भावार्थक है। प्रसग सीता के स्वयवर म मरधिया है। अथ है—(मोता स्वयवर व समय) यनिया तपस्विया, पारा, और ऋणी-रतों व मनुष्य (धनर) गामना, गुरों धनुषारिया याडाआ पीर महारथिया न (गिव-धनुष पर) अपने धन वन को भाजमाया किन्तु उनम न त्रिभी से भी गिव-धनुष तावा नहा जा गया। मोटे अक्षरो म छया अ ग स्वीकार्य न होने पर “जती तपी तक पीर रपेसर, तोलि रह्या सह पाणी” का अर्थ होगा—यनियों तपस्वियों, पीरों और ऋणी-रतों-मधने धन-धन वन को भाजपापा जो अत्यन्त पीर भ्रमगत है।

१०-२ १२ स्वीकृत पाठ है

दया ध्र म थापिल निरजण सो बाळो ब्र मचारी ।

बा, रा पा म व प्रतियों म मोटे अन्तरास के स्थान पर "निज बाळा पाठ है । ध्रमन्त वनका आन्ध इस स्थान पर किञ्चित् अपठ था, इस कारण "निरजण" के स्थान पर 'नज' और "बाळो" के स्थान पर 'बाळा' निम्ना गया, शेष 'र,' 'ण' और "सो" अपठ हुए गए । स्वीकृत पाठ का अर्थ है —(जो) दया और ध्रम की स्थापना करता है, एमा वानव्रजचार (मैं) निरानन स्वरूप हूँ । केवल 'निज बाळा' पाठ निरर्थक है । इस सबद म बग्नवागी ध्रमना गक्तिमत्ता का उल्लेख करते हुए अन्त म उपयुक्त वान कहते हैं जो समग्र बग्नवागी और विष्णोई माहित्य मे आए तद् विषयक कथना के सबया अनुसृत है ।

११-४२ १, २ स्वीकृत पाठ है

आयसा ! अगछाळा पावही काय फिरावो ?

मवू त का दा उगवता भाण ठभाळ ।

जा प्रति में 'का दा' नुटित और रा गो पी म व प्रतियों म इसके स्थान पर "आयसा पाठ प्रक्षेप है । ४२ वें सबद के अन्त म ये दो पक्तिया पुन आई हैं वहा जा प्रति में 'का दा' पाठ है और रा गो पी म व प्रतिया म "का दा" नुटित है । इस प्रकार, शब्द कि रा गो पा म व प्रतिया म 'का दा' के स्थान पर 'आयसा प्रक्षेप है जो प्रथम पक्ति म मन्वोपन रूप म होन क कारण सम्भवत दूसरी पक्ति म "का दा" के स्थान पर रख दिया गया है और जा प्रति म पदान्ता म "का दा" आया ही है, अत प्रस्तुत पाठ में यह नुटित माना जायगा । निष्कपत स्वीकृत पाठ 'का दा' जा प्रति म नुटित है और रा गो पा म व प्रतिया म इसके स्थान पर "आयसा प्रक्षेप है । का दा=काई + दाळ (ताळ)=कद देर तन अथात् काफी देर तक । ये शब्द सबदवागी म अयन भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं -

(१) ईश्वर कोट उजीणी नगरी, का दा सिध पुरी विसराम नियी (६३ १७)

(२) कोट लकागड विपमा हू ता, का दा वमिण्यी रावण रागी (८६ ६)

अन धनक विष्णोई कथिया की रचनाध्या म भी इसी अर्थ म इसका प्रयोग मिलता है -

पुरिप पाम हू का दा रह्यो, इह बाळक को आवण्य कह्यो ॥ ७४ ॥

घोधी भी दा नुगयो ययो, तीट न देह न बाह्यो कह्यो ॥ १२० ॥

-बी-होजी, कथा औतारपात

का दा मतगुर न न्हुवाय दीबा दीज वाति चडाय ॥ ३७ ॥

-मुरजनजी, कथा औतार की ।

१२-३२ ७ स्वीकृत पाठ है

सुखरत करता हरतिन आव, ता ना पछनावो करिदो ।

विगन जपता जाभ पु बाव, तो जाभडिया विगि गरिदो ।

"सुखरत" के स्थान पर जा रा गो पी म प्रतिया म 'हरि हरि' और व प्रति में "हर हर" पाठ है जो प्रक्षेप है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है-मुकृत करत हुए यदि लक्षणों लक्षणों

हैं तो पद्यतावा नहीं करना चाहिए, यदि विष्णु का जप करते हुए जीम धकती है तो (ऐसी) जीम क बिना ही काम चल सकता है। "हरि हरि" और "हर हर" पाठ एक दूसरे का पर्याय है। "मुक्तर" के स्थान पर यदि "हरि हरि" पाठ स्वीकार किया जाय, तो उसके साथ "हरकति" (वाघाएँ) की संगति नहीं बढती। "हरि" नाम जीम से जपा जाता है, उसके लिए बाधाभा का श्राना विशेष मूल्य नहीं रहता। सुकृत करते हुए वाघाएँ आ सकती हैं क्योंकि सुकृत या तो बाह्य जगत से सम्बन्धित होत हैं अथवा उनका प्रभाव किसी न किमा रूप में बाह्य जगत पर पडता है। इसलिए "सुकृत" के लिए "हरकति" प्रसंग और धय की दृष्टि में ठीक है। फिर, विष्णु या हरि जप की बात दूसरी पक्ति में आती ही है जिसके लिए "जीम जु थाक" पाठ युक्ति-युक्त है। इन कारण भी "मुक्तर" के स्थान पर "हरि हरि" पाठ निरर्थक है। हरि जप की इस प्रकार महत्ता बताना अत्यधिक साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण सम्भव है।

नीचे पाठ-विषय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं, यद्यपि इनसे धय की असंगति नहीं होती —

१३- ११ २२-२५ स्वीकृत पाठ है

जा जन मतर बिसन न जप्यो, ग न वामो मोनी बन ढूक सूर सवारु ।

जा जन मतर बिसन न जप्यो, आडा क धरि पोहण होयसी पीठ सठै दुष भान् ।

जा रा गो पी म व प्रतिपद्यो म प्रथम पक्ति के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पक्ति लिखी गई है।

१४- ६३ २२, २३ स्वीकृत पाठ है

दहमिर नै जदि बाचा दीही, तदि म्हे मेन्ही अनन छळू ।

दहमिर का दस मसतक छेद्या, ताणो बाणो लळू कळू ।

जा रा गो पा म व प्रतिपद्यो म प्रथम के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पक्ति लिखी गई है।

१५- ६३ ३३ स्वीकृत पाठ है

विहू विलोम, चवदा भवण, सपत पयाले, जवू दीपे ।

जा. रा गा पी म व प्रतिपद्यो म शक्या क विषय से प्रस्तुत पक्ति का पाठ इस प्रकार है— खदा भवणे, विहू विलोम, जांबू दीप, सपत पयाळे ।

१६- ८५ ३ स्वीकृत पाठ है पढे ऊध बोह बरसत मेहा ।

जा रा गो पी म व प्रतिपद्यो म "बोह बरसत" के स्थान पर "बरसत बोह" पाठ है।

१७- ७६ २ स्वीकृत पाठ है

रे बतमाळी काणो सीध, ईह वादी तो भेळ पदी ।

जा रा गो पा म व प्रतिपद्यो म मोटे शहरों में छपे पाठ के स्थान पर "कांटे रे सीधो बतमाळी" पाठ-विषय है। इनमें प्रस्तुत "बाहे" गद्य "बायो" का पर्याय है।

१८- ९७ ६ स्वीकृत पाठ है केबळ म्यानी ध म गियानी सहज गिनानी

जा रा गो पी म व प्रतियों म इम पक्ति का पाठ शब्दों के विषय से इस प्रकार मिलता है—सन्ध मिनानी, केवळ यानी ध म गियानी ।

(ख) रा गो पी म व प्रतियाँ

१-८४ ६ स्वीकृत पाठ है

पवण बधाण कया छ काची, नीर छनी ज्यों पारी ।

रा गो पी म व प्रतियों म “छ” के स्थान पर “गढ” पाठ मिलता है। “काची” स्त्रीलिङ्ग क्रिया “कया” (काया) स्त्रीलिङ्ग सत्ता के लिए प्रयुक्त हुई है। अतः “कया छ काची” पाठ ठीक है। “गढ” पुल्लिङ्ग सत्ता गढ है। इसलिए यदि “कया गढ काची” पाठ स्वीकार किया जाय, तो “काची” क्रिया अशुद्ध सिद्ध होती है। “गढ” पाठ स्वीकार करने पर इन दो पाठों में कोई एक पाठ मूल का होना चाहिए—“कया गढी काची” अथवा “कया गढ काचा”। रा गो पी म व, प्रतियों में न “गढी” पाठ है और न “काचा”। स्पष्ट है कि “गढ” पाठ विकृत और निरर्थक है। इससे पूर्व के संवद म “कया” के साथ “गढ” पाठ आया है—“पर परमादि कया गढ खोजो, दिख भीतरि चोर न जाई (८३ २), अतः हो सकता है कि लिपिकारों ने इस कारण भी यहाँ “गढ” शब्द लिख दिया हो।

२-३६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी स' घड ।

इसके स्थान पर विभिन्न प्रतियों में मित-मित पाठ है —

रा, गो पी म-घडीय स' घमडू

म व म घगड स घ डों ।

रा गो पी प्रतियों म “घड” के स्थान पर “घमडू” है स्पष्ट ही “म” प्रविष्ट है। म व प्रतियों म लिपिजय भूल के कारण “घ” को “घ” समझा गया है, साथ ही सचेष्ट विकृति अनुकरणरामक शब्दों को लाकर की गई है। इन प्रतियों म “स” के प्रयोग को गलत समझने के कारण भी यह भूल सम्भव है। इसे “जीव” सत्ता के बदले प्रयुक्त संवनाम भी माना जा सकता है। यह ‘स’ अव्यय न होकर स' है, जिसका अर्थ है—सव। नागरी लिपि म भारवाडी की इस उदात्त ध्वनि के लिए कोई चिह्न न होने के कारण स को अव्यय “स” समझा गया। कदाचित् इसी कारण “घड का अर्थ लिपिकारों के लिए अस्पष्ट रहा। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—(जसे तेरी देह) घडी है (वसे) सबकी घडी है। म व प्रतियों क लिपिकार भी स' को भूल से अव्यय ही समझने प्रतीत होते हैं। स्पष्ट है कि “घडीय स घमडू” या “घगड' स घडों” पाठ निरर्थक है। अथवा भी स' का प्रयोग इसी अर्थ (सव) म हुआ है—निरति गुरति सा' जाणो (५ ८) ।

३-४२ १,२ स्वीकृत पाठ है

धायसा म्निगळाळा पावडी काय फिरावो

मल्लु त का धा उगवतो माण ठभाऊ ।

‘का दा’ के स्थान पर रा गो पी म व प्रतियों में ‘धायसा’ विकृत पाठ है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य—(क) ११ ।

४-२८ ५ स्वीकृत पाठ है सुकरत साधि सखाई चाल ।

जा रा गो पी म प्रतिपा म "सगाई" के स्थान पर "सगाई" पाठ है किन्तु वः प्रति म 'सखाई' पाठ ही मिलता है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है—(केवल) पुण्य-वम ही साक्षी के रूप में साधि चलते हैं । अर्थ का दृष्टि में "सगाई" पाठ प्रसंग-असंगत है ।

५- १६ २६-२८ स्वीकृत पाठ है

दूरया हा त दूरि गुणाज

सा सबद गुणागारू गुणापाह

गुणामा वत् अपाह ।

रा गो पी म व प्रतिपा म मोः अथरा म छ्वा पाठ दृष्टिभ्रम से श्रुतित है । इसका अर्थ है—(जो) सबद दूर से भी दूर सुनाई दे वह गुणकारी, गुणातीत, गुणों का सार और अपार शक्तिशाली है । "अद्वय की महत्ता बताते हुए 'गुणापाह' द्वारा उसके एक गुण का उल्लेख किया गया है, इसलिये यह पाठ संगत है ।

६-४२ १४-१७ स्वीकृत पाठ है

अनि अनेरा याग स वाया, मत् १ मोवन शिगा करि चराऊ ।

अति अनेरा पावस पाणो, मत् त घण पाहरा वरमाऊ ।

रा गो पी म व प्रतियो मोटे अथरा म छ्वा पकिनयां श्रुति हैं । स्वीकृत पाठ का अर्थ है—मत् (मैं) चाहूँ तो अर्थ बहुत से राग लगा कर स्वर्ण-मृग का निर्माण कर उनमें चरा सकता हूँ । वर्षाकाल में वादलों से पानी बरसता है किन्तु यदि (मैं) चाहूँ, तो उनमें पत्थरों की वर्षा करवा सकता हूँ । मोटे अथरो में छ्वा पकिनयो के जिना शेष पकिनया की अर्थ-असंगति स्पष्ट है । फिर इस सबद में लोम-माय या लोम-प्रचलित एक बात कह कर फिर "मत् त (यदि चाहूँ तो) से रचयिता ने स्वयं की महत्ता और करनी का उल्लेख किया है । इस दृष्टि से भी "मत् त" से पूर्व मोटे अथरो में छ्वा पकिनया संगत हैं ।

७- ७८ ५ स्वीकृत पाठ है

असट कुळी गिरवर पनि लाज लाज वणी अठार भाळ ।

रा गा पी म व प्रतियो म मोः अथरो म छ्वा अ । दृष्टिभ्रम से श्रुतित है । इन प्रतिपा म अठार के स्थान पर 'अठार' पाठ है जो मारवाडी की अपेक्षाकृत नवीन प्रवृत्ति का सूचक है । 'ठ' को "ठ" समझन की विधिजय भूल भी हो सकता है । "अष्ट कुळी गिरवर" का उल्लेख विष्णोई कवियों की रचनाओं में अनेक बार हुआ है ।

८-१०२ स्वीकृत सबद है हरचे दारी सरफ वु (न) दर राह वु (न) । (१)

लुळन ना लुळ बेरह तात तुलफ वु (न) (२)

रा गा पी म व प्रतियो म यह पूरा सबद श्रुतित है । प्रतीत होता है समस्त मन्द अरबी, फारसी मिश्रित होने एवं तदुजय अर्थ की दुरुहता के कारण नहीं लिखा गया । दूरग कारण यत् भी हो सकता है कि साम्प्रदायिक दृष्टिकोण में भाषा में मुमलमानी प्रभाव सक्षय कर, अनुचित समझ, १ लिखा गया हो । एन नम्मावना यत् भी है कि इनमें भाषाओं में यह मन्त्र हाशिये में रखा हो और इस प्रीति समझ कर न लिखा गया हो । प्रति सम्बन्ध

६६ में यह सवद १०३ वी सव्या का है। इसका भावाय है—जो कुछ भी तेरे पान है उमकी राने म (जीवन म) खव कर। भुनाव की घोर मत भुन (समार वा जिस घोर भुनाव है, उस घोर मत भुन, समार म लिप्त मत हो)। (सामारिव) सुधि और वियोग के दुख को नष्ट कर। हरच, हरचह (फा०)=हरचीज, जो कुछ। दार (फा०)=रखने वाला, दारो=रखना है तू। सरफ, मफ (फा०)=बच। *र राह (फा०)=रास्त म। बू=बून (फा०)=नर। लुञ्ज=भुनाव। लुञ्जा=भुक्ना, पक्ष म होना आदि (मारवाही म यह प्रयुक्त है)। लुळ=कुं। वर=विरह=विभाग का दुख। तान=मुप, देगरेण, वित्ता, कष्ट, पीडा, रटन। तनक (श्र०)=नष्ट।

६- १०३ रा गो पी म व प्रतियो म यह पूरा सवद नृटित है। सम्पूर्ण सवद प्रस्तोत्तर रूप म है। पहली चार पक्तियो म पांच प्रश्न और शेष चार म उनके उत्तर है। प्रथम प्रश्न और उत्तर यह है—मुमलमानी कहा थी आई ?

महमद थी मुसलमानी आई। इससे साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण सम्भवत मुसलमानी प्रभाव या मुसलमानो की प्रशंसा समझ कर यह सवद ग्रहण करा किया गया। यह भी हो सकता है कि इन प्रतियो के आदर्शों में यह सवद हागिये में रखा हो और इसे प्रक्षिप्त समझ कर न लिखा गया हो।

१०- ६५ १ स्वीकृत पाठ है व कवराई पार गिराई, अनत वधाई। रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरों म छपा अ श दृष्टिभ्रम से नृटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—कवराई तो वह है (जिमसे समार—सागर स) पार उतरा जाय और जो (इस कारण) अपार आनन्दायक हो अथवा जो अनत रूप से बढ़ती ही जाय। 'पार गिराई' पाठ न होने से, 'कवराई' की महत्ता किम कारण से है, इसका पता नहीं चलता। अत मोटे अक्षरों म छपा पाठ मूल का है।

११- ७८ ७ स्वीकृत पाठ है

सिध साधक सुरनर मुनियर लाज, लाज सिरजण हारु।

रा गो पी म व प्रतियों म 'सुरनर' पाठ नृटित है। इस सवद में रचयिता का कहना है कि उमकी निद्रावस्था में यदि दिन भर बीत जाय, तो समस्त जगत की मर्यादा का लोप हो जाय। इससे जगत की अनक वस्तुएँ अभाव रूप हो जाएँगी। उसी सम्बन्ध म प्रस्तुत पक्तित है जिमका अर्थ है—सिद्ध, साधक, देवगण (या लोग) मुनि और सृजनकर्ता सब लया क्यथा को प्राप्त हो जाएँगे। प्रसंग और प्रयोग की दृष्टि से "सुरनर" शब्द मूल पाठ का है। "सुर" के माथ "नर" का प्रयोग बहुवचन, लोग या श्रेष्ठ अर्थ में हुआ है। सवदवाणी में ऐन अर्थात् प्रसंगो म 'सुरनर' शब्द का प्रयोग बहुत बार किया गया है। इसलिये यहाँ भी यही सगन है। अर्थ उदाहरण ये हैं—

१—महा देखता देव दाणो सुरनर खीणा (२३ ६)।

२—सुरनर तणी सवेट (५२ ५)।

३—न तू सुरनर न तू सकर (६२ ११)।

४—कुण जाण म्हे सुरनर देऊ (६३ ४२)।

५-गुरतर संकर को १ उगार्ई (१५ १४) ।

६-पपा गुरवां गुरतर दवां (८९ १७) ।

७-भाग गुरतर एगो मांग (६८ ६) ।

८-गुरतर देव ज वदी राति (११० ३) ।

९-गुरतर तगा तनेगा घाया (११९ १) ।

१२- ७ ३ स्वीकृत पाठ है बांड भागे करक दुहेली, जायो जावन घाई ।

रा गो पी म व प्रतिया म 'दुहेली' के पदवात् 'तो है है पाठ भरला वा है । साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण अपभ्रंशित अधिा पुण्यमुक्त भावाभिप्यक्ति के लिए यह प्रथम हुआ प्रतीत होता है । एन कारण घोर भी हो गवता है । अथय म् पाठ है —य ह्य जायो जोव न घाई (८३ २८) । सम्भवत इगो गाम्य पर प्रस्तुत पाठ म भी प्राप कर लिया गया हो ।

१३- २४ ७ स्वीकृत पाठ है मतगुर मिनियी, सतपथ वतायो, वर गरथ उदगाह । रा गो पी म व प्रतिया म "वतायो" के पदवात् "धाति चुनाई" पाठ प्राप है । अथय निन प्रसग म "मतपथ वतायो" के पदवात् "धाति चुनाई" पाठ प्राया है -मतगुर मिनियी मतपथ वतायो धाति चुनाई (४३ ५) । इम कारण यन मा प्रणेप हुआ है । प्रस्तुत प्रसग म "धाति चुनाई" पाठ निरखन है रचयिता रचयिता "मतपथ" घोर "वद गरथ" के सन्भ म "धाति चुनान" -धम मिटान की बात कहता है, न कि यह नि उसने एना कर दिया है ।

१४- ३६ १० स्वीकृत पाठ है हिंदू होय के तीरथ घोर भूला रह्या इवाणी । रा गा पी म व प्रतिया म "घोव" के पदवात् "विड छत्राव पाठ प्रथेप है । प्रतीत होना है साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण "तीर्थ-पूजा" के अतिरिक्त हिंदुमा के धार्मिक कमकाण्ड "विड भरने" को भी हेय वताया गया है । रचयिता ने सम्पूर्ण वाणी म तत्कालीन हिंदू-समाज म प्रचलित धम के सामान्य वाह्याडबरो का तो यन-तत्र उल्लेख किया है किन्तु उनसे सम्बन्धित विशिष्ट क्रियाओं का नहीं ।

१५- २ ५,६ स्वीकृत पाठ है लोई अलोई र्योठ तिरलोई ऐता न बोई

मोरी आदि न जागत महियळ धूवा बलाणत ।

रा गो पी म व प्रतिया म प्रथम पक्ति के पदवात् "जपा भी सोई जिहि जपिए आवागवण न होई" पक्ति प्रथेप है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है- (मैं) दष्ट भी हूँ और अन्ध भी हूँ और बसे ही त्रिलोक म (व्याप्त) हूँ, (मेरे) समान (घोर) कोई भी नहीं है । मेरी भाति को कोई नहा जानता । (जित प्रकार) पवत म धुएँ को देख कर अग्नि का अनुमान होता है (उसी प्रकार मेरी रचना देख कर मेरा अनुमान किया जाता है) । प्रक्षिप्त पक्ति का अर्थ होगा-हम उमका भी जप करते हैं जिसके जप से आवागमन नहीं होता । प्रस्तुत प्रसग म तो रचयिता स्वयं को ब्रह्म मान कर, अपनी सब शक्तिमत्ता का बखान कर रहा है । अत यहा किसा दूमरी सत्ता के जप की बात असंगत है ।

१६- ६३ ३५-३८ स्वीकृत पाठ है

इदं दनागौ पाठ परवागौ, अइया उइया, निरजत निरजत

अहौं भोग जावा जूगी, एतौ मान फुगत मारू ।

“इयागौ” क पस्वात (क) रा गो पी प्रतिधौं म “तत समागौं गुर फुरमागौं एव (व) म व प्रतिधौं में “गुर फुरमागौं पाठ प्रथेप है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-हू लागो ! जा इम कार म (अर वताए गए प्रकार में) जानता है, वह निश्चित रूप से (अनु) पय पर ह । मगु म कृ तक (सवत्र) जड-चेउन, छोटी-भोटी (चितनी भी जीव-योनिपां हैं, उन सबकी मनात में धरु-भाय में तेता हूँ । “इयागौं के पस्वात यदि “तत समागौं गुर फुरमागौं अइया ‘गुर फुरमागौं’ पाठ स्वीकार किया जाय, ता अय की कार्द मगति नही बटती । अत यानौं पाठ प्रथिप है ।

(ग) रा गो पी प्रतिधा

१- ६३ ६२-६४ स्वीकृत पाठ है रौद रूप करि राकन अडिया
वाग म दान्वहि वनचर गृहिया
तदि पणि राखी कवग पनी ?

रा गा पा प्रतिधौं म “रौद” के स्थान पर “राम और “अडिया के स्थान पर “हृदिया” करक “राम रूप करि राकन हृदिया पाठ किया गया है जो अय की दष्टि से अमान है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(रामावतार के ममय जब) रौद रूप धारण करके (राम) राखत मुद क लिए अडे, तब मेरी हाक पर, वाणा के आगे वनचर जुडे थे । उन मनन पत्र किनन रखा ? यदि प्रथम पवित्र का पाठ “राम रूप करि राकन हृदिया” मानें, तो अय हागा, राम रूप करक (मन) राखना का वच किया । इसमें द्वितीय पत्ति निरर्थक हो जाता है। वास्तव म यहा रचयिता का मन्तव्य एक ओर राक्षमा और दूसरी ओर वनचरो क धामम म मुद करन का सकेत दत हुए राम की महिमा प्रार्णित करना है । अत प्रथम ओर अय का दष्टि म “राम और “अडिया” विवृत पाठ हैं ।

१- २६ ४ स्वीकृत पाठ है घडो म' घड ।
रा गा पी प्रतिधौं मे “घड” के स्थान पर “घमड” पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-
(जब तरा द) घी है (बने ही) सबकी घी हुई है । “घड म “म” का प्रथेप करके “घमड” पाठ किया गया है जो अय की दष्टि मे अमगत है । (व) (२) भो द्रष्टव्य ।

३- ३ ६ १० स्वीकृत पाठ है भणी न भगिवा, गु णि न गु णिवा ।
भु णो न सु णिवा, कही न कहिना खडी न खडिवा ।

रा गा पी प्रतिधा म भोः अक्षरों म अया अ ग दष्टिअय से अटित है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(मन) पत्न योग्य को पढा नहीं, मनन करन योग्य बातों पर मनन नहीं किया, मनन योग्य बातों को गुना नहीं, कहन योग्य बातों को कहा नहा (और) जोतन योग्य (भूमि का) जोना नहा । “भगानो और “गुणानो के भिन्न अय हैं किन्तु प्रयोग दोनों का प्राय एक साथ ही हाता है । “न गने” की सायकता “गुगने” मे ही है, केवन “भगाना” ही नही बनि “गुगाना” भी चाहिए । अयत्र भी एमे प्रयोग है -

ये पडि गु णि रहिया खाली । (७ ६ तथा ६ १४)

घायसां जोयगां भणतां गुंगतां (६६ ३१)

अत "गु गी १ गु गिवा" पाठ सगत है।

४- ११ १६ स्वीकृत पाठ है जां जा मतर विसा १ जप्पी नगरे कीर वहात् ।

रा गो पी प्रतियो म "जप्पी" के पश्चात् "त" प्रक्षिप्त है। अथ की दृष्टि से यह अनायदयक है। इम सब म अयत्र भी इगता प्रयाग नहीं है।

५- ६० १० स्वीकृत पाठ है नां में वर विरोध घण हट लोडया ।

रा गो पी प्रतियो म "हट" शब्द प्रुटित है। प्रस्तुत शब्द म सम्मग ने उन प्रानों क प्रमदा उत्तर लिए हैं जो इगते पूव के ५६ वें शब्द म श्री राम न उनम पूछे हैं। वहां पाठ है - क त वर विरोध घण हट साडया ? (५६ १०) और जगम "हट" शब्द रा गो पी प्रतियो म प्रुटित नहीं है। अत स्पष्ट है कि "हट" शब्द प्रस्तुत पाठ म सगत है।

६- ७६ ३,४ स्वीकृत पाठ है जिह क गादे विदे वाजत मूण ।

निह पासडी न भी हत कूण ।

रा गो पी प्रतियो म "जिह" के स्थान पर "जा पासडी" प्रतिनिविचार द्वारा सचेष्ट रूप से किया गया प्रक्षेप है। "जिह" के साथ "तिह" का प्रयोग सबया उचित है। ऊपर की पक्ति में यदि "जा पासडी" पाठ स्वीकार किया जाय तो 'पासडी' शब्द पुनश्चित के कारण व्यर्थ है, तथा दूसरी पक्ति म फिर "तिह" के स्थान पर "ता" पाठ होना चाहिए, जो नहीं है। अत स्पष्ट है कि 'जा पासडी' पाठ प्रक्षिप्त है।

७- ६३ ३५ स्वीकृत पाठ है अइ इमांणों, पोह परवाणों ।

रा गो पी प्रतियो मे "इमाणों" के पश्चात् "तत समांणो गुर फुरमांणों" पाठ प्रथम है। प्रसग और अथ की दृष्टि से यह प्रक्षेप असगत है। विाप इच्छव्य-(ग) (१८) ।

८- ६३ २७ स्वीकृत पाठ है

गुडक गाज से कयो वीहै, जेभळ भागी सहस फणों ।

रा गो पी प्रतियो म "गुडक गाज" के स्थान पर "गाज गुडक" पाठ-विपर्यय है।

(घ) म घ प्रतियो

१- १८ ६,१० स्वीकृत पाठ है जा जा पास्या न धीलू ।

ता तां वम कुचीलू ।

म व प्रतियो मे दृष्टि-अम से 'पान्या' शब्द के स्थान पर "दया" पाठ है। इसल पूव पहली और सातवी पक्ति म जो "जा जा" से आरम्भ होती है, "दया" शब्द भा चुका है। प्रनीत होता है इस कारण "दया" पुन मूल मे लिखता गया। स्वीकृत पाठ म शील-पालन पर बल रिया गया है। अथ है-जो शील का पालन नहीं करत, उनके (सनी) कर्म उलटे हैं। अत यहां "दया" शब्द प्रसग और अथ की दृष्टि से असगत है।

२- २४ ४ स्वीकृत पाठ है

उतिम कुळी का उतिम न कहिवा, वारण किरिया सारु ।

म व प्रतियो म "किरिया" के स्थान पर "वरतव" पाठ-पर्याय है। अयत्र "वारण" के साथ सबव "किरिया" ही आया है, "वरतव" नहीं -

१-क त कारण किरिया चूक्यौ (५९ १)

२-ना हू कारण किरिया चूक्यौ (६० १)

३-म्ह आप गरीबी तन गूदडियौ, कारण किरिया देखा (११७ १)

तथा भी "किरिया" पाठ अपक्षाकृत अधिक संगत है।

१- १५ १४,२५ स्वीकृत पाठ है असध पुरप विपल्लीपति नारी

विएण परच पार गिराय न जाई ।

म व प्रतिया मे "अमध" के स्थान पर "असिध" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-दुष्ट पुरुष और व्यभिचारिणी स्त्री का बिना (गुरु-) परिचय के उद्धार नहीं हो सकता। (असध, असाधु=दुष्ट)। "असिध" का अर्थ है जो सिद्ध नहीं है अथवा जिसे सिद्धि प्राप्त नहीं है। सिद्ध होना या न होना अथवा सिद्धि प्राप्त करना या न करना मनुष्य का सहज स्वाभाविक गुण या श्रेय नहीं कहा जा सकता। भले ही कोई "सिद्ध" अथवा सिद्धि प्राप्त न हो किन्तु यदि मला काम और विष्णु-जप करता है, तो जाम्भोजी के अनुसार उसका उद्धार हो जाता है। प्रस्तुत "अमध" पाठ के अनुसार यदि गुरु-रूपा हो तो दुष्ट पुरुष का भी उद्धार संभव है। अतः "असिध" पाठ असंगत है।

४- ३४ ३ स्वीकृत पाठ है काफर थूळ भयाणों ।

"भयाणों" के स्थान पर म प्रति म "अपाणों" और व प्रति मे "अयाणों" पाठ है। प्रतीत होता है इनके आदेश इन स्थल पर सुपाठ्य न होने से "अपाणों" और "अयाणों" पाठ लिखे गये। निपिजय भूल के कारण भी 'य' का 'प' लिखा जा सकता है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(वह) काफिर भयभीत रहा।

५- ३६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी स' घड ।

म व प्रतिया म इस पक्ति के स्थान पर "धगड स घडो" पाठ है जो प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से निरर्थक है। विशेष द्रष्टव्य-(ख)(२)।

६- ५६ ४६ स्वीकृत पाठ है खाफरखानो बुध भराडो ।

म व प्रतियो म अश्लीलत्व दूर करने के लिए "भराडो" के स्थान पर "विदारण" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-बड़े बड़े नास्तिक और बुद्धि भ्रष्ट पुरुष। "बुध विदारण" का अर्थ होगा-बुद्धि को विनीत करने वाले जो प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से असंगत है।

७- ६२ १,२ स्वीकृत पाठ है

मोर अ ग न अळसी तेल न मलियो, न परमल पीसायो ।

म व प्रतिया म "अळसी" के स्थान पर "अलस" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-मेरे परीर म न तो अलसी का (और) नहीं (किमी प्रकार का अर्थ) तेल मला हुआ है और न ही उबटन लगा हुआ है। स्पष्ट है कि "अलस" पाठ निरर्थक है।

८- ६३ १७ स्वीकृत पाठ है

पय चलाया राह बलाया, नव किरियां विज हमारी ।

म व प्रतिया म मोटे झरारो मे छपे भदा के स्थान पर "नां बोली बजगारी" पाठ है। इस सबद म प्रस्तुत पक्ति से ऊपर नौ ध्वतारों से सम्बन्धित प्रासंगिक उल्लेख हैं। नवीं ही

बार ध्रुवतार रूप की विजय हुई है, यह दिगाना रचयिता का मतम्ब है। अतः प्रथम धोर अक्ष की दृष्टि में "तां बोनी यजगारी" पाठ अक्षगत है।

९- ५६ १० स्वीकृत पाठ है क त मर विरोध घण हट लोडया ?

इस पंक्ति के स्थान पर म प्रति म 'वे विमूढ भण क हिमो-या' धोर व प्रति म "वर विमूढ भन क ही लोडया" पाठ है। इस मन्त्र में श्री राम १८ दोष गिनाने हुए सम्मगल से उनके घायल हात का कारण पूछा है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है - या तिर तूने वर विरोध (अथवा) जजरन्स्नी (हठपूर्वक) तिसी के धन को हटाया ? म प्रति म "वर" शब्द का "र" अक्षर स्पष्ट ही अक्षित है। 'विरोध' का स्थान पर म व प्रतियो म "विमूढ", "विमूढ" पाठ है जिमका अर्थ है-विमूढ। एही प्रकार 'हट' के स्थान पर "कटि", "कही" पाठ है, जो निरर्थक है। अतः म और व बोनी प्रतिया क ही पाठ अक्षगत है।

१०- २ १०-१२ स्वीकृत पाठ है

व्यापी क ध्यानी क त्रिज त्र म धारी

सोली क पोली क जळ विष धारी

दया ध म धायिल निरजण सो बाळो व भधारी ।

म व प्रतिया म मोटे अक्षरों में छोटी पंक्ति दृष्टि-भ्रम से अक्षित है। समस्त प्रथम पंक्ति के अंतिम "त्र" धारी की द्वितीय पंक्ति का "धारी" समझ लिया गया और यह पंक्ति तिर जाने से रह गई। इनमें रचयिता अपना वसिष्ठ्य प्रकट करना है।

११- ११ ८, ९ स्वीकृत पाठ है

विदे बळा विमन न जप्यो साथ बोहत भई कगवारू ।

म व प्रतिया म 'साथ' शब्द अक्षित है। साथ का अर्थ है -इसलिए, इस कारण। अर्थ की दृष्टि से प्रस्तुत पंक्ति म 'साथ' पाठ आवश्यक है।

१२- ११ १८ स्वीकृत पाठ है

जो जन मतर विसन न जप्यो ते घण तण करे अहाह ।

म व प्रतियो म यह पूरी पंक्ति अक्षित है। इससे पूर्व १४ वी पंक्ति से अत्येक पंक्ति "जा जा मतर विसन न जप्यो" पाठ से आरम्भ होती है और आगे २८ वी पंक्ति तक, १५ पंक्तियों में यही क्रम चलता है। इस कारण दृष्टिभ्रम से यह पंक्ति अक्षित रह गई प्रतीत होती है। केवल अपना ही पैर भरने वाले लोगों की अस्वस्त जाम्बोजो ने प्रकारांतर से अर्थ भी की है -दूका जीम्या मगर मचामा, ज्यो हडियाया कुत्ता (११८ १)। अतः प्रस्तुत प्रसंग में यह पंक्ति मूल पाठ की है।

१३- २० ११ स्वीकृत पाठ है

क्यों क्या भुय भाग ऊ रण, क्यों क्यों त्र म बिहू रण ।

म व प्रतिया म "भुय" शब्द अक्षित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है -अनेक अज्ञानी पुरुष तो ससार में यो ही भटकते (भागते) रहते हैं और अनेक तो (सत) कमहीन ही रहते हैं। भुय=भूमि, ससार। अतः अर्थ की दृष्टि से "भुय" पाठ आवश्यक है।

१४- ३७ २ स्वीकृत पाठ है उतिम सग सु सगू, उतिम रग सु रगू

उत्तम लग सु लघू , उत्तम दग मु ढगू

म व प्रतिया म माट अक्षरों म छया अ ग दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। भावाय है—उत्तम की मगति ही मगति है, हरि या गुरु प्रेम का रग ही रग है, मसार—सागर को पार लांघना ही लांघना है तथा पक्ति का उपाय हा उपाय है। इस 'सवद' की भाति मसार-सागर से पार होना—“पार गिराव” का उल्लेख अनेक शब्दों म हुआ है।

१५- ४६ ७, ८ स्वीकृत पाठ है

नानी पवणी जीवा जूणी निरजत सिरजत

फिरि फिरि पूठा आव ।

म व प्रतिया म “निरजत सिरजत” पाठ त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—(पावटो ना) डोग-मोगे, जड-चेनन, अनेक योनियो मे वार-वार बापिस आते रहते हैं। निरजत= ज। निरजत=चतन। अत्र भी ये ट् इस अर्थ म आए हैं -

१-अइया उइया, निरजत सिरजत (६३ ३६)

२-वाठ का घोषा निरजोत ता सरजोत करिस्य (९० ९)

१६- ६७ १५, १६ स्वीकृत पाठ है

एते मसले चालो मीया, तो पावो भिसत ईमानू ।

म व प्रतियो म 'भिमत' शब्द त्रुटित है। 'भिमत' (बहिस्त) पाने की बात सवदवाणी में मनक जगह कही गई है, विशेषत जीव-मुक्त पुरपा के लिए। इस सवद में भी १० वी पक्ति म जाव-मुक्ति का उल्लेख है—“जे जीवता खाकी होयस्य”। बहिस्त पान के लिए जीव-मुक्ति आवश्यक है इमान के लिए नहा। अत 'भिमत' पाठ इस प्रसंग म सवथा सगत ह।

१७- ७१ ७ स्वीकृत पाठ ह

भूत परेनी जाखा खणी, अं पाखड परवाणी ।

वळि वळि कूक्स काय दळोज जिह मा कणी न दाणी ।

म व प्रतियो म मोटे अक्षरों म छया अ ग त्रुटित ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह—‘भूत, प्रेत, यक्ष आदि की पूजा करना पाखण्ड का प्रमाण ह। म व प्रतिया के त्रुटित पाठ—“भूत परेनी जाखा खणी” का अर्थ अपूर्ण ही रहता ह और न ही इसकी मगति इसके ऊपर की या नाव की पक्ति से किमी प्रकार बढती ह। अत “अ पाखड परवाणी” पाठ मगत ह।

१८- ७८ ४ स्वीकृत पाठ है

मवस नदी निवासी नाळा लाजें, लाज सागर सारू ।

म व प्रतिया म यह पूरी पक्ति दृष्टिभ्रम से त्रुटित ह। इससे पूव दूसरी और तीसरी-चौथी पक्तिया का अन्तिम अर्द्धांग क्रमग इस प्रकार ह—‘लाज घर गणारू’, ‘लाज नव-नय ताण’। प्रस्तुत पक्ति के परचात भी मातवी पक्ति तक, मव पक्तियों म उनका अन्तिम अर्द्धांग “लाज” शब्द से प्रारम्भ होता ह। प्रसंग की दृष्टि से प्रस्तुत पक्ति सगत ह।

१९- स्वीकृत सवद १०३ तथा १०४ ।

म व ० प्रतिया म ये दोनो मवद पूरे के पूरे त्रुटित हैं। ये दो मवद प्र-नोतर रूप मे हैं, अतः

सम्भव है कि प्रतिलिपिकारों ने यह प्रमाण समझ कर छोड़ दिया है। १०३ वीं सूत्र सम्प्रदायिक दृष्टियों के कारण भी सम्भव है कि लिखा गया हो।

२०- सूत्र १२२।-विस्तार विस्तार तु भणि रे प्राणी, प च स्तार उपात्त ।

रतन क्या घड़ ट पातो, बुरा मरण भोग भाग्य ।

म व प्रतियो म यह पूरा सूत्र नृत्त है। इनके पूर्व "विगत रिगत" शब्दा म आरम्भ होने वाले तीन सूत्र समाप्त हो चुके हैं—११९ १, १२० १, १२१ १। इनमें सम्प्रदायिक दो सूत्र तो दो दो पत्रियों के ही हैं। सम्भव है कि कारण दृष्टिभ्रम से प्रस्तुत सूत्र नृत्त रह गया है।

२१- १५ ६ स्वीकृत पाठ है भूला प्राणा वहे स वरणो ।

म व प्रतियो म "स" के पश्चात् "वीज" प्रमाण है जो मय की दृष्टि से अनावश्यक है।

२२- २५ १३ स्वीकृत पाठ है

ध्याने ध्याने नादे विद ज नर लगा सन भी सारी लीयो ।

'ध्यान' शब्द के पश्चात् म प्रति म "सील सजम भम" तथा व प्रति म "साल सजम" पाठ प्रथम है जो सम्प्रदायिक प्रभाव के कारण हुआ प्रतीत होता है। सम्प्रदाय के २९ वीं नियम म "गील, गीच, सतोय की भी गणना है। अतः यहाँ भी "सीले", "सजम" (गील, सयम) पाठ का प्रथम किया गया है जो प्रसंग की दृष्टि से अनावश्यक है।

नीचे पाठ-विषय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं यद्यपि इनमें मय की अक्षरगति बहा होती -

२३- १४ ११ स्वीकृत पाठ है नागड भागड भूला महियळ

"भूला महियळ" के स्थान पर म प्रति म "महियळ भूला", और व प्रति म "महियळ भूला" पाठ-विषय है। व प्रति के पाठ म "य" नृत्त है।

२४- १६ १४ स्वीकृत पाठ है दुनिया रातो बाद विवाद ।

"दुनिया रातो" के स्थान पर म प्रति म 'रातो दुनिया', और व प्रति म "रीतो दुनिया" पाठ-विषय है। व प्रति म "रा" के स्थान पर "रीतो" का "री" नागरी-लिपिजय भूल का परिणाम है।

२५- ५७ ३ स्वीकृत पाठ है अहनिष भाव घटती जाय ।

म व प्रतियो म "घटती जाय" के स्थान पर 'जाइ घटती" पाठ-विषय है।

२६- ८६ १२ स्वीकृत पाठ है विणि डोला डू मां लाकडियाँ ।

म व प्रतियो म 'डोला डू मा' के स्थान पर "डू मा डोला" पाठ-विषय है।

२७- १०७ १५-१८ स्वीकृत पाठ है

विजडी क चमक आव जाय, सहज सूय मा रहे समाय (१५, १६)

न वो गाव न र गवाव, सुरगे जाता चार न लाव (१७, १८) ।

म व प्रतियो म प्रथम पत्रिक के स्थान पर दूसरी और दूसरी के स्थान पर पहली पत्रिक का विषय है।

२८- ४९ १० स्वीकृत पाठ है हम राजा के रायी

म व प्रतियों म "राजा" के स्थान पर लेखन-प्रमाद से "रजा" पाठ मिलता है ।

(ङ) ला म व प्रतिया

१- २७ २२ स्वीकृत पाठ है

मोर धरती ध्यान वणासपति वासी, उजूमडळ छायी ।

'वणासपति' गद क स्थान पर ला प्रति में "वणासति" और म व प्रतियों में "वणासत" निरपेक्ष पाठ है । "वणासपति" के स्थान पर "वणासति" या "वणासत" रचयिता इन स्थान्तर नहा हो सकता, क्योंकि अत्र भी "वणासपति" प्रयोग ही मिलता है — रापग मना त पडई राखा, ज्यो राखा पान वणासपती (६३ ७२, ७३) ।

२- २० ६३ स्वीकृत पाठ है जोग मारग सह डा'यी ।

ला म व प्रतिया म "मारग" के स्थान पर "जुगति" पाठ है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है—ममी योग मार्गों म प्रवीण है । डा'यी=चतुर, प्रवीण । यहा "जुगति" पाठ भी ठीक है किन्तु इसमें अपेक्षाकृत सीमित अर्थ का चोतन होने से "मारग" पाठ अधिक सगत है ।

३- २७ ३,४ स्वीकृत पाठ है

खार समद पर पर रे चीखड खारू, पहला अत न पारू ।

ला म व प्रतियों म मोटे अक्षरो म छपा पाठ नुटित है, जिसका अर्थ है—(जिसके) आदि-अत का पार नहो है । इसमें "खार समद" की विशेषता बताई गई है, जो प्रसंग की दृष्टि से सगत ह ।

४- २८ ६, १० स्वीकृत पाठ ह ईह खाट्यो जन्मतर सांमी ।

इह निस तेरो नाव जपतो ।

ला म व प्रतिया म सम्बोधन रूप "सामी" गद नुटित है । लय की दृष्टि से भी 'सामी' पाठ आवश्यक ह ।

५- २८ ६५ स्वीकृत पाठ ह जाण गीत विवाहे गाइय ।

ला म व प्रतियों म "गीत" शब्द नुटित ह । "गाइय" क्रिया "गीत" सज्ञा के लिए है, अत "गीत" गद सगत ह ।

(च) जा म व प्रतिया

१- २५ ८ स्वीकृत पाठ ह

रे मसवासी तीरयवामी किण घटि पठा जीयो ?

जा म व प्रतिया म "ममवासी" (=मामवासी) के स्थान पर "मिसवासी" पाठ ह जो अर्थ की दृष्टि से असगत ह ।

२- ४९ ७ स्वीकृत पाठ ह नाही पवणी जीवा जूरी निरजत सिरजत

जा म व प्रतिया म "पवणी" के स्थान पर "मोटी" पाठ-पर्याय ह किन्तु अप्रत्याकृत प्राचान प्रयोग की दृष्टि से "पवणी" पाठ स्वीकार्य ह । या "वाणी" में "मोटी" गद भी आया ह ।

३- २५ १५ स्वीकृत पाठ ह

तारादे रोहितार हरीचद बाया दमवध शोमी ।

“दीयी” शब्द के पश्चात् जा प्रति म “घाति करण त्रिया तप गूरा धन द दागव कीयो” तथा म य प्रतिधा म “धा जांग मन कीया” पाठ-प्रयोग है। धय की शक्ति न वे पाठ असंगत है। फिर, कण का उल्लेख इगम पूर्व १४ वा पक्ति म हो हा चुना ह, अतः यहाँ अनावश्यक है।

(४) सबद प्रतीक तुलनात्मक सन्धा-सूची

क्रम- सन्धा	सबद-प्रतीक	स्वीकृत- गण- सन्धा	प्रतिया						
			सा	ब	म	पा	जा	रा	गो
१-	प्रति बळ दानो सभ गिनाना	५५	५५	५७	५७	५६	५५	५७	५७
२-	अहया लो अपरपर चाणी	४	४	५	५	५	४	५	५
३-	अरण विहाणे, र रिब भाण	५२	५२	५४	५४	५३	५२	५४	५४
४-	अरयू गरयू साहण घाद्	११४	११४	१००	१००	११२	११५	१००	१००
५-	अरधव चरा निरधव गुरू	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६	८६
६-	अलत अलप तू अलत लत	८०	८०	८२	८२	८०	८०	८२	८२
७-	आतरि पातरि राही रपमणि	६१	६१	६३	६३	६२	६१	६३	६३
८-	आप अलप उपनो सिभू	९५	९५	१०५	१०५	९५	९५	१०५	१०५
९-	आयसा वाहै बाज खेट भवण्डो	४५	४५	४२	४२	४६	४५	४२	४२
१०-	आयसा अगद्याळा पावो वाय	४२	४२	११६	११६	४३	४२	११६	११६
११-	आयो हवारो जीवडो बुलायो	२८	२८	३०	३०	२६	२८	३०	३०
१२-	आसण वसण कूड वपट	२२	२२	२४	२४	२३	२२	२४	२४
१३-	ईमा मोमिण चीमा गायम	११५	११५	११३	११३	११३	११६	११३	११३
१४-	उतिम सग सु सगू उतिम रग	३७	३७	३६	३६	३८	३७	३६	३१
१५-	उमाज गमाज पज गज यारी	६४	६४	६६	६६	६४	६४	६६	६१
१६-	एक दुख लगमण बचू हय्यो	५८	५८	६०	६०	५६	५८	६०	६१
१७-	आ आदि सबद अनाहद वाली	६४	६४	६३	६३	६४	६४	६३	६३
१८-	कचण दानू कछू न मानू	१००	१००	१०४	१०४	१००	१००	१०४	१०१
१९-	कवण न हूवा कव ग न होयसा	३१	३१	३३	३३	३२	३१	३३	३३
२०-	कवण स मोमिण कवण स माण	१०३	१०३	—	—	—	१०३	—	—
							१०४		
२१-	काहे रे भुरिखा त जळम गु मायो	११	११	१३	१३	१२	११	१३	१३
२२-	काजी क्य मुल्लाणी	३४	३४	३६	३६	३५	३४	३६	३६
२३-	काया त कथा मन जोगू टो	५०	५०	४७	४७	५१	५०	४७	४७
२४-	काया कौट पवन कौटवाळी	९७	९७	९२	९२	९७	९७	९२	९२
२५-	कुपाता न दान ज दीयो	५४	५४	५६	५६	५५	५४	५६	५६

६१-नीर त्रि शोच मय भावी	१८	१८	१९	१	१९	४८	१	१९
६२-सवर्णा पुत्रे पापान पुत्रे	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१
६३-नरे पौत्रि मय पत्न्याया	७६	७६	७८	७८	७६	७६	७८	७८
६४-ना हू कायान विगिन पुत्रो	६०	६०	६०	६०	६१	६०	६०	६२
६५-त्रि शो मागम त्रि मयरागी	१०७	१०७	१०१	१०१	१०१	१०८	१०१	१०१
६६-पदि कायत्र त्रि मागयत्र-पदि	७	७	७७	७	७६	५	७	७
६७-पदि कायत्र त्रि मागयत्र-पुत्रा	५७	५७	५०	५०	५८	५७	५६	५९
६८-पुत्रण पुत्रा त्रि मागयत्र	३०	३०	३१	३१	३३	३०	३१	३१
६९-शरा पौत्रि मय पत्न्याया	७७	७७	७७	७७	७७	७७	७७	७७
७०-भय मूत्र भावी त्रि शो	२०	०	३१	३१	३०	७९	३१	३१
७१-भयनि भयनि शरा त्रि शो	५	५	६	६	६	५	६	६
७२-पुत्रा मा भक्त पुत्रा गो	७१	७१	७७	७७	७१	७१	७७	७७
७३-भोमि भना त्रिगण भो भनी	८३	८३	८१	८१	८३	८३	८५	८१
७४-माग मय त्रि जड भायनि	२६	२६	२८	२८	२७	२६	२८	२८
७५-मय पुत्रा मोद त्रि शो	८६	८६	६४	६४	८६	८६	६४	६४
७६-पुत्र त्रि शो त्रि शो	१११	१११	११०	११०	१०९	११२	११०	११०
७७-मय मय त्रि शो त्रि शो	१०	१०	१०	१२	११	१०	१	१२
७८-मूत्र मुद्रावो मा न मुद्रावो	८२	८२	८४	८४	८०	८२	८४	८४
७९-मोरा उपन्यास यद्रु काय त्रि	१२	१२	१४	१४	१३	१२	१४	१४
८०-मोरा मय न प्रकमी त्रि त्रि	६२	६२	३	३	३	६२	३	३
८१-मोरा ध्याया त्रि माया लोही	२	२	०	२	२	२	२	२
८२-मोरा सहजे मुद्रि लोत्र वांगी	१५	१५	१७	१७	१६	१५	१७	१७
८३-मोद मय वापि वापन	४१	४१	५२	५२	४२	४१	५२	५२
८४-मूत्र मय गरावा त्रि पुत्रि	११७	११७	११५	११५	११५	११८	११५	११५
८५-मूत्रे भय पायसी पायसी मय	७९	७९	८१	८१	७९	७९	८१	८१
८६-राज मय राजिदर मुरव	४६	४६	४३	४३	४७	४६	४३	४३
८७-राज न भूली लो राजिदर	२३	२३	२५	२५	२४	२३	२५	२५
८८-त्रिगण त्रि शो त्रि शो	५३	५३	५५	५५	५४	५३	५५	५५
८९-रूप मय रमू प्यत्र मय मय	१७	१७	१९	१९	१८	१७	१९	१९
९०-रे रे पिड स पिड	३६	३६	३८	३८	३७	३६	३८	३८
९१-लक्ष्मण त्रि मय न कहि मय मय	३८	३८	४८	४८	३६	३८	४८	४८
९२-लो लो रे राज्यदर रायो	२०	२०	२२	२२	२१	२०	२२	२२
९३-लोही लो लोहा	३५	३५	३७	३७	३६	३५	३७	३७
९४-लोही हुता कचण घडियो	१४	१४	१६	१६	१५	१४	१६	१६
९५-वलि वलि मय त्रि वियासू	३३	३३	३५	३५	३४	३३	३५	३५

१६-का विगन रिग करि प्राणी	८८	९८	९५	९५	९८	९८	९५	९५
१७-विगन विगन भगि अजर	१००	११९	१००	१०२	११९	१०१	१००	१००
१८ विगन विगन नू भगि - ईह	११९	११८	११७	११७	११८	१००	१००	११७
१९-विगन विगन नू भगि - जै मन	९९	९९	९७	९७	९९	९९	९७	९७
१००-विगन विगन नू भगि प क नाव	१०२	१२१	—	—	१०१	१०३	११९	१००
१०१-विगन विगन नू भगि विगन भरावा	१२१	१०१	—	—	१००	१०२	—	—
१०२-विगन-वा रहमान रहीम	९७	९७	१०	१०	९७	९७	१०	१०
१०३-का कुराग कुमाया जाडू	७२	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७२
१०४-का अवरार पार गिरार्द अनत	६१	६५	६८	६८	६५	६५	६८	६८
१०५-कात पाठ टो विरलोके	४३	४३	४०	४०	४४	४३	४०	४०
१०६-कात पाठे मुय अ तरि	४०	४०	५१	५१	४१	४०	५१	५१
१०७-कात सात सहज रवाइ ला	१०८	१०८	१०७	१०७	१०६	१०९	१०७	१०७
१०८-कात नाव काइ मन सिमू	९३	९३	९४	९४	९३	९३	९४	९४
१०९-काव मरी मू कू न कहिवा	१०६	१०६	९९	९९	१०४	१०७	९९	९९
११०-काहिवा हुवा भरग भव भागा	२१	२१	२३	२३	२०	२१	२३	२३
१११-मुगि गु गुवता मु गि बु धिवता	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६
११२-मुगि राबिन्दर मु गि जागिदर	४४	४४	४१	४१	४५	४४	४१	४१
११३-मुगि रे काजा मु गि - अर कनाद	७	७	८	८	८	७	८	८
११४-मुगि र काजा मु गि मु गि लो	१०१	१०१	१०६	१०६	१०१	१०१	१०६	१०६
११५-गुरा हुवो निमू आयो	१०४	१०४	—	—	१००	१०५	११८	११९
११६-गुरा तगा सनेना आयो	११६	११६	११४	११४	११४	११७	११४	११४
११७-गुरा मा नीला नीला सबदू	१३	१३	१५	१५	१४	१०	१५	१५
११८-गुरा लो हक माच विमनू	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०
११९-गुरा ला मन पानी लो	१०९	१०९	१०८	१०८	१०७	११०	१०८	१०८
१२०-गुरा कगाले मन्थ मने	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३
१२१-गुरा गरी मरुप मु दर	१०२	—	—	—	—	१०२	—	—
१२२-गुरा गरी हरि वपू न जप्यो	६	६	७	७	७	६	७	७
१२३-गुरा मजरा जारि ले धमरा	१२३	—	४९	४९	११६	—	४९	४९

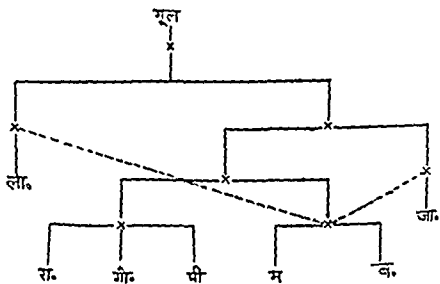
(५) प्रतिपों का प्रतिनिधि-सम्बन्ध —

प्रतिपों के आधार पर प्रतिपों का परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार सिद्ध होता है —

१- ग ग ग लो म व प्रतिपों एक समूह का निर्माण करती हैं ।

- १- एक समूह के एक उदाहरण या पाठ की संस्कृत प्रतियों का एक समूह का प्रतीक है।
जो प्रतीक एक समूह की प्रतियों में प्रयुक्त पाठ-विशेषों को माना जाता है, या एक प्रतीक, जिसका एक समूह के एक उदाहरण का अर्थ है।
- २- एक उदाहरण या पाठ को तथा संस्कृत प्रतियों का एक ही प्रतीक माना जाता है।
जिसका अर्थ है, जैसे भी प्रतीक-समूह समूह पर प्रयुक्त प्रतीक माना जाता है।
जिसका अर्थ है, जैसे भी प्रतीक-समूह समूह पर प्रयुक्त प्रतीक माना जाता है।
जिसका अर्थ है, जैसे भी प्रतीक-समूह समूह पर प्रयुक्त प्रतीक माना जाता है।
- ३- जो प्रतीक संस्कृत प्रतियों का एक समूह पर प्रयुक्त पाठ को माना जाता है, या एक प्रतीक-समूह-विशेष का अर्थ है।
जैसे प्रतीक-समूह का अर्थ है, जैसे भी प्रतीक-समूह समूह पर प्रयुक्त प्रतीक माना जाता है।
जिसका अर्थ है, जैसे भी प्रतीक-समूह समूह पर प्रयुक्त प्रतीक माना जाता है।

प्रतियों के एक समूह या दो प्रतीकों में एक प्रतीक प्रयुक्त करने का अर्थ है —



(१) सम्पादन-सिद्धान्त

- १-सभी प्रतियों में प्राप्त सगल पाठ,
- २-ला और जा प्रतियों में प्राप्त सगल पाठ,
- ३-ला तथा रा गो पी प्रतियों के समूह में प्राप्त सगल पाठ,
- ४-ला तथा म व प्रतियों के समूह में, पाठ-विशेष के उदाहरणों के अतिरिक्त प्राप्त सगल पाठ

-मूल प्रतीक माना गया है।

(७) अपवाद

एक निम्नलिखित अपवाद हैं —

- १-मव ११ स्वीकृत पाठ है — जा जन मतर विसन न जप्यो ।
 एम पक्ति की पुनरावृत्ति इस सबद मे अनेक वार हुई है । ला ज प्रतियो म “जन” के स्थान पर थ निदोष स “न” की ध्वनि का “ल” मे परिवर्तित कर “जल” पाठ दिया गया है । इससे अयभ्रम होने के कारण यहा शेष प्रतिया म प्राप्त “जन” पाठ स्वीकाय है ।
- २-३३ ८, ३४ ६, ३५ ६, ३६ ८ स्वीकृत पाठ है को को बोलक यू लू ।
 जा रा गा पी म प्रतियो म “बोलक” के स्थान पर “बोलत” पाठ है । ‘बोलक’ (बालन वाला, बहने वाला) पाठ अपेक्षाकृत अधिक सगत और प्रसगानुकूल होने से ग्रहण किया गया है । व प्रति म ३३, ३४, ३५, सबद म तो “बोलत” पाठ है किन्तु ३६ ८ म “बोतक” होने मे इगकी पुष्टि होता है । ऐसा प्रयोग अयन भी मिलता है —
- गुर ध्याय रे ग्यानी तोडिक मोहा (१ १६) ।
- ३-६० २४ स्वीकृत पाठ है यदि को दोस त दोकी होइयो ।
 सा जा प्रतियो म मटे अक्षरा म छप अ श के स्थान पर “अदोमा दइयो” पाठ है । ५९, ६० सब एव-दूमरे म सम्प्रति वत हैं । पहले मे राम के प्रश्न और दूसरे मे लक्षमण द्वारा उनके जमग उत्तर दिए गये हैं । प्रसगानुसार ‘अदोसा दइयो’ पाठ विकृत होन से स्वीकाय नही ह ।
- ४-६३ १० स्वीकृत पाठ ह अजमे हु ता नागोवाड
 ला जा रा गो पी व प्रतिया म “अजमे” के स्थान पर “अज म्हे” पाठ ह । पाठ-प्रदा के कारण “र” का लोप होने से “अजमेर” को “अजमे” लिखा गया ह । मरुभापा म “र” का लोप और आगम बहुधा होता ह । इस सबद की आठवी पक्ति से विभि न स्थानो की नाम-गगना आरम्भ होती ह अत प्रसगानुकूल होने से “अजमे” (अजमेर से तात्पय ह) पाठ सगत ह । “अज म्हे” का अर्थ है—“आज हम” जो यहाँ असगत ह ।
- ५-७२ ३ स्वीकृत पाठ ह जिह क नादे विदे वाजत पू रण ।
 सातो प्रतिया म “वि” के स्थान पर “वेदे” पाठ ह जो प्रसगानुकूल न होने स ग्रहण नही किया गया । प्रथम सबद की भांति प्रकारांतर से इन सबद मे भी गुरु की विशेषताएँ बताई गई हैं । अंतर इतना ही ह कि वहा सामान्य रूप से ‘गुरु’ की विशेषताएँ वगित है और यहा व स्वय के मदभ मे हैं । कहना न होगा कि जाम्भोजी स्वय को ‘गुरु’, परम गुरु विष्णु’ मानत हैं । प्रथम सबद म स्वीकृत पाठ ह — जो गुर होयना सहजे सीले नादे विद (१ ३) । अत यहा भी ‘विद’ पाठ होना चाहिए । श्रुतिदोष मे भी इकारान्त रूप का एवारात निपा जाना सम्भव है, क्वाकि इनके अनेक उदाहरण इन मभी प्रतिया म मिलत हैं ।
- ६-६३ ७८ स्वीकृत पाठ ह
 तदि में रूप कियो मगावतियो, सतवत्त को ज्ञान उचारो ।
 तदि म्हे रूप रच्यो कामठियो, तैतामू कोड हकारी ।
 सा जा गो पी म व प्रतियो म भोट अक्षरा म छपा अ द दृष्टिभ्रम से श्रुति है । इस सबद म रचयिता न पूव म हुए ६ अक्षरा का उच्चारण किया है त्रिगकी पुष्टि आगे १७वी

पवित्र में वह स्वयं ही करता है—यस चलाया राट् चलाया, नव विरियां धिज हमारा । यहाँ यन् 'कामठ' (कमठ, कच्छप) प्रवतार का नामोल्लेख मूत्र का न माना जाय तो ८ प्रवतारों का उल्लेख ही रहता है जो अपूर्ण है ।

७-८४ ८ स्वीकृत पाठ है ल यामा यामदर होमू ला, दोष च्छ लो भारी ।

जा रा गो पी प्रतिया म मोट भक्षरा म छोरे भक्ष के स्थान पर 'ज्यों ई धण का भास' पाठ है । म व प्रतियो म यह पूरी पवित्र ऋटित है । विष्णोइया म शव का भूमि म गाढने की परम्परागत प्रथा है जिसकी पुष्टि उपपु वन कथन में होती है । अथ है—'गव को यी अग्नि म जनाओगे, तो भारी दोष लगेगा । परवर्ती निषिकारा १ सम्भवत साम्प्रदायिक आग्रह के कारण इसमें मुसलमानी प्रभाव की कल्पना कर यह पाठ—प्रक्षेप किया है जो अथ की दृष्टि से भी असंगत है । यह मूल साम्प्रदायिक परम्परा को न ममभने के फलस्वरूप किये जाने के कारण अनुचित है । विशेष द्रष्टव्य—अध्याय ७ विष्णोई सम्प्रदाय—शीपक-६ (अ) ।

८-११२ २ स्वीकृत पाठ है

किरत सेत की सीव मैं लीज, पीज ऊडा नीर ।

'ऊडा' के स्थान पर ला प्रति म 'उडा' और रा गो पी म व प्रतिया म 'ऊडा' पाठ है । सम्प्रदाय के माय २६ धमनियमा म दसवा नियम पानी ई धन और दूध का छान-बीन कर व्यवहार म लाना है । 'ऊडा' का अर्थ है—छानन का कर्म । यहाँ 'ऊडा नीर' का भावाथ वस्त्र से छाने हुए और साफ जल में है । 'ऊडा नीर' का तात्पर्य 'गहरे पानी से ह जा कुएँ के पाना का छोटक है । सीमित अर्थ का बोझ होने से 'ऊडा' शब्द ग्राह्य नहीं है । पानी कुएँ का हो चाहे तालाब का, माय नियम के अनुसार छान कर ही व्यवहार में लाना चाहिए । अत 'ऊडा' पाठ मूल का है ।

९-सप्त १२३ अथधू अजरा जारिने अमरा रापिने ।

ला जा प्रतियो म यह मन्त्र ऋटित है । प्रतिदिन हवन के समय इसका पाठ किया जाना परमावश्यक है । परम्परा से ऐसा होता आया है और अथ प्रतियो म मिलता है । अत यह मूल का है । विशेष द्रष्टव्य—अध्याय ७, विष्णोई सम्प्रदाय, १२व शीपक क अंतगत । सम्भवत अथधिक प्रचलित हान के कारण भी यह इन प्रतियो म न लिखा गया हो ।

नागरी-लिपिजय विद्वतियो का उल्लेख यथास्थान कर किया गया है ।

उपपु वन विवेचन के आधार पर आगे सप्तदशांशों का पाठ-सम्पादन किया गया है ।

विभिन्न पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण अन्तर्गत यथास्थान दिख गये हैं ।

जम्भवाणी : पाठ

(१)

गुर ^१ चीह ^२ गुर चीह ^३ पिरोहित,	(१)
गुर मुणि ध्र म ^४ बलाणो ।	(२)
बो गुर होयबा ^५ सहजे ^६ सीले नादे विदे ^७	(३)
तिह ^८ गुर का बालिगार ^९ पिछाणो ^१ ।	(४)
छह ^{११} दरसण जिहक ^{१२} रोपणि ^{१३} घापणि ^{१४}	(५)
समार ^{१५} वरतणि ^{१६} निज ^{१७} करि ^{१८} धरप्या	(६)
सो गुर परतकि ^{१९} जाणी ।	(७)
जिहक ^२ खरतरि गोठि निरोतरि ^{२१} वाचा	(८)
रहिया छद समाणी ।	(९)
गुर आप सतोपी अवरा ^{२२} पोपी,	(१०)

१-गो—गुर स पूव ऊ ।

२-जा रा गो पी म व—चीहा ।

३-रा गा पा—चीहि ।

४-जा रा गो पी म ब—धरम ।

५-गा—ह्व बा व—हेइवा ।

६-गो—महज मील क मध्य ग दे प्रक्षिप्त ।

७-जा रा गो पा म—वेदे, व—वेदे ।

८-रा—जिहि गो पी म व—तिहि ।

९-जा गो—भालीनार ।

१०-म—पिछाणा ।

११-जा रा गा पी ब—छव ।

१२-वा—जहक, गा पी—जिह्व म व—गुरक ।

१३-रा गा म—रोपरा, पी—रोपण ।

१४-ला—भ्रुन्ति है ।

१५-जा—महमार रा—समार ।

१६-रा गो पी म व—वरतण ।

१७-म—निज ।

१८-जा रा गो पी—वर ।

१९-रा—प्रनिग गो पी—परतक, म—प्रत्यग, व—प्रतवि ।

२०-ना—जहव गो पी म व—जिह्व ।

२१-रा—निरव पो—निरोतर, म—नरतरि, व—निरोत ।

२२-म व—घीरा ।

सत ^१ महारस ^२ याणी ।	(११)
के के अडिया यासण होत होतासण ^३	(१२)
ताहां मां ^४ तीरि ^५ वृज ^६	(१३)
रस ^७ न गोरस ^८ घीप न लियो	(१४)
ताहां ^९ डूप न पाणा ।	(१५)
गुर घ्याप ^{१०} र ग्यानी ^{११} तोडिष ^{१२} मोहा	(१६)
अति पुरसांणी छीजत लोहा	(१७)
पांणी ^{१३} छलि ^{१४} तेरी खाल बपाला ^{१५} ,	(१८)
सतगुर तोड मन का साला ।	(१९)
सतगुर होई ^{१६} सहज पिछांणी	(२०)
क्सिन बिरत विणि काच करव ^{१७}	(२१)
रह्यो ^{१८} न रहिसी पाणी ॥ १ ॥	(२२)

(२)

मोर ^{१६} छाया न माग लोहो न मास ^{२०} ।	(१)
रगत ^{२१} न घात ^{२२} मोरे ^{२३} माई न वाप ^{२४} ।	(२)

- १-रा गो म — गत ।
 २-रा — महारस ।
 ३-न — हुतासण ।
 ४-जा — जाहामा रा गो — तामे, म — जिहामा, व — तिहिमा, पी — जामा ।
 ५-जा रा पी म व — पीर, गो धीर ।
 ६-जा रा पी — दुहीजू गो — ढुहीजो ।
 ७-रा — रमुव, म व — रसी ।
 ८-ला — गुरसु ।
 ९-रा गो पां व — तहा म — त्याका, ला — ताका ।
 १०-जा घाय ।
 ११-गा म व — नानी ।
 १२-जा गो पी म व — तो त रा — ताडित ।
 १३-ला — पली ।
 १४-रा पी — छल ।
 १५-गा म व — पपाला ।
 १६-जा गो पी व — हैत् रा — है तो, म — है लो ।
 १७-ला — मे इम पक्ति के स्थान पर काच करव किसन बिरत विणि पाठ है ।
 १८-म — रह्या ।
 १९-रा गो — मोर से पूव था है ।
 २०-जा रा गो पी म व — मासो ।
 २१-रा म व — रगता, गा — रकनू ।
 २२-रा म व — घाता ।
 २३-म — मेरे ।
 २४ रा गो म व वापों ।

ब्राह्मण ^१ भ्रातृ ^२ वृही ^३ न रातृ ^४ ।	(३)
बोतृ ^५ न ब्रह्मण ^६ दुल्ल ^७ न सरातृ ^८ ।	(४)
लोई अलोई त्योंह तिरलोई ^९ , ऐसा न कोई ^{१०} ।	(५)
मोरी बादि न जाणन, महिपळ घूवा वपाणत	(६)
जरव ^{११} बाकिल तिसूतू ^{१२} , बादि अनादि तो हम रचीलों	(७)
हमें ^१ तिरजीलो स कवण ^{१४} ?	(८)
मू जोगी क भागी क अरूप अहारी ।	(९)
ग्यानी क घ्यानी क निज क्रम ^{१५} धारी ^{१६} ।	(१०)
शोशे क पोपी क जळ द्विब धारी ^{१७} ।	(११)
दया ध्रम ^{१८} यापिल निरजण तो बाळो ^{१९} ब्रह्मचारी ^{२०} ॥ २ ॥	(१२)

(३)

जदि ^{२१} पवण ^{२२} न हुता ^{२३} पाणी न हुता,	(१)
न हुता घर गणारू ^{२४} ।	(२)

१-म—भ्रातरु ।

२-रा म व—भ्रातृ ।

३-गो म व—रोही, ना—रहीयो ।

४-रा ग म व—रातृ ।

५-रा व—बोपी, गो म—बोप ।

६-रा गो म व—ब्रह्मण ।

७-जा रा ग पी व—दुप, म—दुपों ।

८-रा म व—सरातृ ।

९-गो म व—दुल्ल, म—दुल्लि । रा गो पी म व—निलोई ।

१०-म पकिन के परचात् रा गो पी म व—मे यह पक्ति अतिरिक्त है—'जपा भी सोई जिह जपिये भ्रावागवण न होई' ।

११-ज—उरपदि ।

१२-जा म व—तिसूतू, मो पी—तिसूलो, ला—तिसुळ ।

१३-जा रा गो म व—हम ।

१४-रा पी म—बौणा, गो—बुण, व—बौण ।

१५-रा गो पी म—कम ।

१६-व—म यह पूरी पक्ति अटित है ।

१७-म व—म यह पूरी पक्ति अटित है ।

१८-जा व—धरम रा गो पी म—धम ।

१९-जा रा गो पी म व—मे 'निरजण बाळो के स्थान पर 'निज बाला' ।

२०-जा रा गो पी म व—ब्रह्मचारी ।

२१-जा—घो जद ।

२२-जा—गुण ।

२३-जा—होता (जा प्रति मे भ्राते हुता) के स्थान पर 'होता' है, अतएव यहां बारबार यह श्वांतर नही दिया गया है) ।

२४-रा गो पी म व—गणारी । (इन प्रतिमें म स्वीकृत अन्तिम शब्दों के ऊपरान्त पाठ (वेपाण भ्राते देते)

धद १ हुता सुन न हुता,	(३)
न ^१ हुता गिगावर ^२ ताह ।	(४)
गऊ ^३ १ गोह माया जाळ न हुता,	(५)
न हुता हत पियार ।	(६)
माय १ घाप न ग्रहन न ^४ भाई	(७)
साति न राण न ^५ हुता,	(८)
न हुता पल परवार ।	(९)
सल चयरासी ^६ जीवा ^७ जूनि न हुती,	(१०)
१ हुती घणो अदारा भाह ।	(११)
सपत पताळ ^८ फुगिंद न हुता,	(१२)
न हुता सागर एाह ।	(१३)
जगिया सजिया जीवा ^९ जूनि न हुती,	(१४)
न हुती कुडी ^{१०} भतारू ^{११} ।	(१५)
अरथ न गरथ न प्रथ ^{१२} न हुता,	(१६)
न तेजी ^{१३} तुरग तुषारू ।	(१७)
हाट पटण घाजार १ हुता,	(१८)
१ हुता राज दवाह ^{१४} ।	(१९)
घाय न चीह ^{१५} न पोहक ^{१६} घांण न हुता,	(२०)
तदि हुता एथ निरजण ^{१७} तिनू ^{१८} ,	(२१)

के स्थान पर श्रीवारांत या श्रीवारांत हैं जैसे पियारू —पियारी, भाह —भारी, आदि । अतः बारवार ये रूपान्तर नहीं दिए गए हैं) ।

- १-जा —'न हुता' प्रुटित ।
 २-जा —गिगर, गो —गगनर, पी —गगदर, म —गिगवरू ।
 ३-ला —गउव ।
 ४-जा —म प्रुटित ।
 ५-य —मे प्रुटित ।
 ६-जा रा गो पी म ब —चौरासी ।
 ७-जा रा गो पी —जीवा ।
 ८-जा ब —पयाळ ।
 ९-जा रा गो पी —जीवा ।
 १०-या —कुलीय ।
 ११-जा रा गो पी म —भरतारू ।
 १२-ता —'प्रथ न' के स्थान पर 'द्रव ने प्रथ ने गोरु न' है ।
 १३-रा गा —तेजी से पूव 'होता' ।
 १४-गो पी म —द्वारो ।
 १५-जा रा पी ब —चहन, गा —वेहन, म —चह ।
 १६-जा रा गो पी —पोह का, म ब —कोहकन ।
 १७-जा पी —निरालभ ।

क हुता यधुकार ।	(२२)
वात ^१ कदो ^२ को पूछ लोई,	(२३)
हुता छनीस विचार ।	(२४)
ताहि परे र अवर ^३ छतीसा ^४ ,	(२५)
पला अत न पाए ।	(२६)
मह तदि पनि हुता, अब पनि अछा ^५ ,	(२७)
बलि बलि ^६ हुपस्या ^७ ,	(२८)
इहि कति ^८ कदि का कह विचार ॥ ३ ॥	(२९)

(४)

अइया लो अरपरपर बाणी,	(१)
महे ^९ जपा ^{१०} न जाया जीयो ^{११} ।	(२)
नव अवतार ^{१२} यमो ^{१३} नारायण,	(३)
त पनि ^{१४} रूप हमारा थियो ।	(४)
जता तमी तक पीर रयेसर,	(५)
बाप जपीज, ते पनि जाया जीयो ^{१५} ।	(६)
सचर भुचर क्षेत्रपाळा परगट गुपतर,	(६)
बाप जपीज, ते पनि जाया जीयो ।	(७)
वागिण ^{१६} सेस गुणिद फुणिदा,	(७)
बाप जपीज, ते पनि जाया जीयो ^{१७} ।	

१-गा — वात स पूव वारो ।

२-म — वदे ।

३-वा — अवर रा म व — श्रीर ।

४-स गा पा — छतीसी ।

५-अ म — अछा, रा गो पी व — अछे ।

६-ना — बल्य ।

७-ना — हुपस्या के बाद 'लाई अतिरिक्त ।

८-ना — म नृत्ति ।

९-म — जप ।

११-रा गा पा — जीऊ, ला — जीव ।

१२-रा पा म व — भौतार ।

१३-ना — यमो से पूव उ अतिरिक्त, जा — निमो ।

१४-वा — पण ।

१५-रा गा पा — जीऊ ला — जीव ।

१६-पा — वागि म — वागि ।

१७-वा — में वा ममन्त पवित्र नृत्ति है ।

घीसटि ^१ जोमणि ^२ घाषन घीरु ^३ ,	
बाय जपीज, ते ^४ पणि जाया जीयो ^५ ।	(८)
जपां त एष निरालभ ^६ तिमू ^६ ,	
जिह्णे ^७ भाई १ पीयो ^८ ।	(९)
१ तनि रगत, न तनि घातू,	
न तनि ताथ न सीयो ^९ ।	(१०)
सरथ तिरजत ^६ भरत ^{१०} विथरजत,	(११)
तास न मूळि न लीणा ^{११} बीयो ^१ ।	(१२)
अदया लो अपरपर थाणी,	(१३)
म्हे जपां न जाया जीयो ^{११} ॥ ४ ॥	(१४)

(५)

भयणि भयणि ^{१२} म्हार ^{१३} एका जोती ।	(१)
घुणि घुणि लीया ^{१४} रतनां मोती ।	(२)
म्हे लोत्री छं ^{१५} बिड होजो नाहें,	(३)
खोज लहा ^{१६} घुरि ^{१७} लोमू ।	(४)
अलाह अलेख अडाळ अजोनी तिमू ^{१८} ,	(५)
जिह्का ^{१६} किता ^{२०} विनाणो ^{२१} ?	(६)

१-रा गो पी म व —बीसटि ।

२-पी —जोगिण ।

३-रा गो पी म व —बीरी ।

४-ला —म इगवे बाद 'सतेण गावे सहसेई ठावेससे नावे । ते पणि जाया जीव' प्रसिद्ध है

५-पी —निरार ला —निरारुव ।

६-ला म व —समू ।

७-ला —जह, रा गो पी —जिहि, म —भिहि ।

८-रा गो पी व —पीऊ, ला —पीव (प्रागे बी पकितयो के 'सीयो', जीयो' शब्दों

भी इन प्रति समूहा मे अमश सीऊ, सीव जीऊ, जीव पाठ है ।

९-पी —रिज म —तिरभत ।

१०-गो —मरजत म व —मत ।

११-जा रा गो पी म व —लणां ।

१२-ला —मु वण मु व ।

१३-रा पी —म्हे, गो —म्हारी, व —म्हा ।

१४-म व —ल्ल्या ।

१५-ला जा रा गो पी व —था ।

१६-ला —लीया ।

१७-रा गो पी म —घुर ।

१८-ला म व —समू ।

१९-ला —अहका, म —इहका ।

२०-ला —असा ।

२१-ला —वीनाण, म व —विनाणो ।

श्रे सर न बठा सोख न पूछी ^१ ,	(७)
निरनि मुरति सो ^२ जाणी ^३ ।	(८)
उत्तपनि ^४ हिङ्ग जरणा ^५ जोगी,	(९)
श्रीया ^६ श्राहमण दिल दरवेसा,	(१०)
उनमन ^७ मुल्ला अकलि नितलिमाणो ॥ ५१॥	(११)

(६)

हिङ्ग होय ^८ क ^९ हरि ^{१०} वयू ^{११} न जप्यो ^{१२} ,	(१)
कांय ^{१३} दह दिस दिल ^{१४} पमरायो ?	(२)
सोम अभावस आदित्तवारी,	(३)
काय कागे वगरायो ?	(४)
गहण गहत वहणि वहत,	(५)
निरजळ ^{१५} ग्यारति ^{१६} मूळि वहते ।	(६)
काय रे मुरिता ^{१७} पालग सेज ^{१८} विद्यायो ^{१९} ?	(७)
जा ^{२०} दिन तेर ^{२१} होम न जाप न तप न ^{२२} श्रीया	(८)
जाणि क ^{२३} भागो कपिला गायो ^{२४} ।	(९)

१-जा०—बुझी ।

२-जा रा गो पी म व—सत्र ।

३-जा—जाग, म व—जाणी ।

४-रा गा पा म व—उत्तपनी ।

५-६-जा -म 'जरणा' के बाद 'ते' एव 'श्रीया' के बाद 'ते' ।

७-जा—उनमन ।

८-रा व—हूँ ।

९-जा०—करि ।

१०-जा—हरण ।

११-जा—म प्रकृत ।

१२-जा—मानी, म व—जपो ।

१३-जा—कायो दोह ।

१४-जा—मन ।

१५-रा—निरज ।

१६-म व—नारनि ।

१७-जा—म प्रकृत ।

१८-जा—सेज ।

१९-रा गो पी म व—विद्याई ।

२०-जा जा—ता ।

२१-जा म—म प्रकृत ।

२२-म—म 'न श्रीया' के बीच 'कार' प्रतिरिक्त ।

२३-म—म ।

२४-जा—गायो, रा गो पी म व—गाई ।

बूढ तांणि ^१ ज ^२ प्रत्य वीयो,	(१०)
ना त लाय न ता'पी ।	(११)
मूल ^३ प्राणीं आळ वलाणी,	(१२)
न जप्यो मुर रापी ।	(१३)
छव कहां त ^४ बोहता ^५ भाय,	(१४)
परतर को ^६ पतियापी ।	(१५)
हिय वी घेळां हिय न ^७ भाग्यो ^८ ,	(१६)
सकि रह्यो ववरापी ।	(१७)
{ठात्री घेळां ठार न भाग्यो ^९	(१८)
{ताती घेळां तापी ।	(१९)
बिय घेळां विसन ^१ न जप्यो,	(२०)
ताय ^{११} वाची ^{१२} निवच ^{१३} वमापी ।	(२१)
अ ति जाळस भोळाय मूला	(२२)
न ^{१४} चीहों मुररापी ।	(२३)
पारय म ^{१५} की सुधि न जाणी	(२४)
ताय ^{१६} नागे जोग न पायो ।	(२५)
परसराम क जरिय ^{१७} न मूया,	(२६)
ताह ^{१८} की निहच सरी ^{१९} न कायो ॥ ६ ॥	(२७)

१-जा रा गो व —तणों, पी —तण ।

२-जा रा गो पी व —जे, म — भ ।

३-म —मूला ।

४-जा —बहुता, रा गो पी म व —बहा तो ।

५-रा गो पी व —बहुता, ला —बोहत ।

६-ना —को को म —कोश्व को ।

७-पी म श्रुटित, म —वल ।

८-म व —भागी ।

९-ला म व —भागी ।

१०-गो म —विष्णु ।

११-ला जा रा गो पी म —ताछ, व —तात ।

१२-१३-जा रा पी —वा चीहों वच्छु व —वाची कुछ न, म —वाची निवुछ, गो —
वा चीहों वच्छु वच्छु ।

१४-जा —ना ।

१५-जा रा गो पी म व —पारब्रह्म ।

१६-जा रा गो पी म व —तो ।

१७-जा —हुवमि ।

१८-जा रा गो पी म व —ता की ।

१९-ला —परीय ।

(७)

सु नि रे कावो सु नि रे मुल्ला सु नि रे बरर कसाई ।	(१)
दिप रो धरपी छाडी ^१ रोसा क्पि ^२ रो गाडर गाई ।	(२)
का ^३ भाप करक दुहेली ^४ जायो ^५ जोव न घाई ।	(३)
थ तुरका छुरकी भिसती दावो ^६ छापवा साज अखावु ।	(४)
वरि छिरि आव सहजि दुहाव तिह ^७ का खोर हलाली ।	(५)
निह ^८ गऊ करद क्यों सांरो ?	(६)
ये पति गु नि रहिया खाली ॥ ७ ॥	(६)

(८)

लि सावनि हज कावो नेडो ^१ ,	(१)
क्या उठवग पुकारो ?	(२)
भाई नाऊ बढद पिपारो,	(३)
निह ^४ क गऊ करद क्यों सांरो ?	(४)
विनि चीह ^५ खुदाई तरस ^६ विवरजत	(५)
कहा मुत्तमाणो ?	(६)
काकर मुकर ^७ होय ^८ कं ^९ राह गुमाई ^{१०} ,	(७)
जोय जोय ^{११} गाफिल करे पिमाणो ।	(८)
ज्यो ये पछिम ^{१२} दिसा उठवग पुकारो,	(९)
भऊ न ऊ चीह ^{१३} रहिमाणो ।	(१०)

१-म—खेना खेना व—खेनी छेना ।

-गा प।—विणि ।

३-आ रा—काट, गो—मुनि, पी व—मूल, म—सली ।

४-दुना' क प'चात् जा—म ह्य ह्य', रा गो पी म व—मे 'तो है है' ।

५-म व—जाया ।

६-ना—गव ।

७-आ—जिदका रा गो पी म व—तिसका ।

८ रा गा—जिह्व, म—त्रिमक, व—जिमक ।

९-रा गो पी म व—नड ।

१०-रा पी—ताक ।

११ आ रा गो पी म व—चीह ।

१२-आ रा गा पी म वृटित ।

१३-म व—मुकर ।

१४-रा गा पां—ह्य ।

१५-आ रा गा पी—वरि ।

१६-आ रा गा पी व—गुमायो ।

१७ मा—जखी ।

१८-मा—पछम ।

१९-आ रा गा पी म व—यो पीहो ।

तो वह चलत पिह ^१ पड़त,	(११)
भाय भिसत ^२ वियोगी ।	(१२)
घटि घटि भीते मडो ^३ मतीते,	(१३)
बप ^४ उळवग ^५ पुकारो ?	(१४)
वाहे बाज गऊ ^६ दिणातो	(१५)
तो बरोम ^७ गऊ बघो घारो ?	(१६)
बांरो लीयो बूधू दहियू ?	(१७)
बांरो लीयो घीयो महियू ?	(१८)
बांरो लीयो हाडू मांगू ?	(१९)
बांरो लीयो रगवू ^८ दहियू ?	(२०)
मु नि ^९ रे बाजो मु नि रे मुल्ला	(२१)
या मां बूण ^{१०} भया मुरदारो ^{११} ?	(२२)
जीया ऊपरि जोर बरोज	(२३)
अ ति बाळ हूपतो ^{१२} भारी ^{१३} ॥ ८ ॥	(२४)

(९)

दिल गावति हज बावो नेडो ^{१४}	(१)
बया उळवग पुकारो ?	(२)
सीने सरवर करो बदगो,	(३)
हक ^{१५} निबाज गुजारो ^{१६} ।	(४)
ई ह हील ^{१७} हर दिन की रोजी	(५)

-
- १-ला — पड ।
 २-ला — विसत ।
 ३-ला — मडय ग — मडो ।
 ४-रा गो पी म ब — बया ।
 ५-म — लवग ।
 ६-ला — गडव ।
 ७-ला — भीम ।
 ८-ला — रगत म — रती ।
 ९-ला — म मु नि' से पूव ताख' अतिरिक्त ।
 १०-जा — बवण ।
 ११-ला — मुरदार, म — मुरदारो ।
 १२-रा गो पी — ह्य सी ।
 १३-ला — भार ।
 १४-रा गो पी म ब — नेड ।
 १५-म — हद ।
 १६-जा रा गो पी म ब — गुदारो ।
 १७-म ब — जिस रा गो पी — हैड ।

तो इसही ^१ रोजी सारो ।	(६)
आप छुगायबद लेखो ^२ माग ।	(७)
रे तिनहीं ^३ गुहे ^४ जीव क्यू मारो ^५ ?	(८)
य तकि जाणों तकि पीड न जाणों,	(९)
विनि परच बाद निवाज गुजारो ^६ ।	(१०)
चरि चरि ^७ आव सहजि दुहावे,	(११)
निहका ^८ खोर हलाली ^९ ।	(१२)
निहक ^१ गळ करद ^{११} क्यों सारो ?	(१३)
य पनि गु णि रहिया खाली ।	(१४)
चडि ^{१२} चडि भोंत मडो ^{१३} मसोत	(१५)
क्या ^{१४} उऊवण पुकारो ?	(१६)
कारण सोग करतव ^{१५} हीणा ^{१६} ,	(१७)
पारा खाली पडो निवाजू ।	(१८)
किह ^{१७} ओजू ^{१८} तम ^{१९} घोवो आप ?	(१९)
किह ओजू ^{२०} तम ^{२१} खडो पाप ?	(२०)
किह ^{२२} ओजू ^{२३} तम ^{२४} घरो धियान ?	(२१)

१ जा म व —साई ।

२-म —ज्या ।

३ म —व गुनी ।

४ म —न द्रुष्टि ।

५ सा —म यह पूरा पवित्र द्रुष्टि है ।

६ म —गजारो ।

७-म —चरि ।

८-म —निहका, रा गो पी व —तिसका, म —तिहिका

९ म —नीर ।

१०-व —निम ।

११-म —कर ।

१२-म गा पी —म 'चडि' स पूव 'घे' अतिरिक्त ।

१३-म —मड व —मटी ।

१४-म —क्यों ।

१५ व —करत ।

१६-म —म कारण हीणा तक द्रुष्टि है ।

१७-म —क ।

१८ म व —उजू ।

१९ म —य, पा म व —तुम ।

२०-म व —उजू ।

२१-म —म म व —तुम ।

२२-म —क व —निम ।

२३-म व —उजू ।

२४ म —य, म व —तुम ।

विट ^१ भोगू ^२ घोगू ^३ रटमा ^४ ?	(२२)
रे मुत्ता मन माहीं मतीत निपाज गुजरातिय ^५ ।	(२३)
गुणता माहीं ^६ क्या दर पुवारिय ^७ ।	(२४)
अलरा १ ललियो लळर पिछाण्यो ^८ ,	(२५)
घाम ^९ बट्य ^{१०} क्या हुइयो ^{११} ?	(२६)
एक हलाल पिछाण्यो ^{१२} माहीं ^{१३} ,	(२७)
निट्य विन ^{१४} माफिल बो'र ^{१५} बीयो ^{१६} ॥ ९ ॥	(२८)

(१०)

महमद महमद न बटि बाजा महमद बा तो विषम विचारः ।	(१)
महमद हायि बरव जो होती लोहे घडो ^१ न सारः ।	(२)
महमद मायि ^२ पकड ^३ सोपा एड ^४ लड लो ^५ हजारः ।	(३)
महमद मरद हलाली होता तमे ^६ भया मुरदारः ॥ १० ॥	(४)

(११)

बहि ^१ रे रिला ^२ त ^३ जळम ^४ गुषायो,	(१)
-------------------------------------------------------------------------------	-----

- १-ला — व ।
 २-म व — उज ।
 ३-जा रा गो पी म व — चीहों ।
 ४-जा पी व — गुजरीये, रा गो म — गुदरीये ।
 ५-जा रा गो पी म व — ना ।
 ६-जा म — मुकरिये, रा गो पी व — मुवरीये ।
 ७-गो — पिछाण्यो ।
 ८-रा गो व — चाव ।
 ९-जा रा गो पी म व — बटे ।
 १०-ला — हवा, म० — हवी ।
 ११-ला — पिछाण्यो, पी — पीण्यो ।
 १२-गो म व म 'नाही' के पश्चात् 'तो' अतिरिक्त ।
 १३-जा रा गो पी म व — म ब्रुटित ।
 १४-म — गेरह ।
 १५-ला — पीया ।
 १६-ला — घडीय ।
 १७-ला म व — सगि ।
 १८-म — पटवर ।
 १९-रा गो पी म व — इव ।
 २०-ला — असीय ।
 २१-म — तुमे ।
 २२-रा गो — काय ।
 २३-म व — मनिपा ।
 २४-ला — त्य ।
 २५-जा — जल, रा गो पी म व — जनम ।

भुप ^१ भारी ले भाह ।	(२)
जा तिन तेर ^२ होम न जाप न ^३ तप न ^४ किरिया ।	(३)
गुरु ^५ न चौहू ^६ पथ न पायो,	(४)
बहक गई जमवार ।	(५)
ताता बेळा ताव न झाग्यो,	(६)
ठाने ^७ बेळा ठाह ।	(७)
बिब बेळां विसन न जप्यो,	(८)
ताप ^९ बोहन भई कसवारह ^६ ।	(९)
सडिय ^१ न छाटी देह विणाठी ^{११} ,	(१०)
पिरि न पवणा ^{१२} पाह ।	(११)
अहनिम आवा ^{१३} जाप ^{१४} घटती	(१२)
तेरी ^{१५} साम ही ^{१६} कसवारह ।	(१३)
जां जन मतर ^{१७} विसन न जप्यो,	(१४)
त मर ^{१८} फुवरन कालू ।	(१५)
जां जन मतर विसन न जप्यो ^{१९} ,	(१६)
नगरे कीर कहाह ।	(१६)
जां जन मतर विसन न जप्यो ^{२०} ,	(१७)
काय सहेँ दुख भाह ।	(१७)

१-व—मुड ।

१-ना म—म श्रुति ।

१-व—म श्रुति ।

४-म व—न' के पदवात् 'कारण' प्रक्षेप ।

१-ना—गव ।

१-आ रा गो पी म व—चीहा ।

७-म—डाडे ।

८-म व—म श्रुति ।

१-ना कुमवार ।

१०-आ—पराय रा—पद्यो गो पी—परी, व—पारी ।

११-व—विराटी ।

१-आ—पुवणा ।

११-मो—घायु पी—घाव ।

१४-मो—म श्रुति ।

१५-आ रा गो पी—नरे म व—म श्रुति ।

१५-आ रा गो पी म व—सवी ।

१७-आ—जनमतर ना—जां जनमतर (इसमे 'जन मतर' के यही पाठान्तर हन

१७-म व—म 'जप्यो' के पदवात् 'ते' प्रक्षेप ।

१८-व—न ।

१९-आ रा गो पी—म जप्यो' के पदवात् 'ते' प्रक्षेप ।

२०-म व—म 'जप्यो' के पदवात् 'ते' प्रक्षेप ।

जां जन मतर विसन न जप्पी, ते घण तण कर अहार ^१ ।	(१८)
जा जन मतर विसन न जप्पी, तांह ^२ का लोही मास विवार ।	(१९)
जा जन मतर विसन न जप्पी ^३ , गाव गाडर ^४ सहरे ^५ सुवर ।	(२०)
जळम जळम अवतार ।	(२१)
जा जा मतर विसन न जप्पी, रा न वासो मानी बसे	(२२)
दूकं सुर सवार ^६ ।	(२३)
जा जन मतर विसन न जप्पी ^७ , ओडा क घरि पोहण होयसी,	(२४)
पीठ सह दुख भार ^८ ।	(२५)
जां जन मतर विसन न जप्पी, ^९ ज्वळ जठावत भार ^१ ।	(२६)
जां जन मतर विसन न जप्पी ^{११} , ते नर ^{१२} दो'र घुष अधार ।	(२७)
जा जन मतर विसन न जप्पी, ते ^{१३} ना ऊतरिबा पार ^{१४} ।	(२८)
ताय ^{१५} तत न मत न जडी ^{१६} न घु टी,	(२९)

१-म व —य यह पूरी पक्ति नुटित है ।

२-जा रा गो म व —ताका, पी —ते का ।

३-व —म जप्पी के पदचात 'ते अतिरिक्त ।

४-ता —गाडर ।

५-ता —सहरे ।

६-जा —मुकार रा गो पी म व —म 'जा सवार' पक्ति से पूर्व 'जा' पक्ति है ।

७-गो —म 'जप्पी' के पदचात 'ते अतिरिक्त ।

८-ता —म 'ओडा भार' पक्ति नुटित है ।

९-रा गो पी —म 'जप्पी' के पदचात 'ते ।

१०-जा —म 'जा भार' पक्ति नुटित है ।

११-ता —मे 'जा जप्पी' तव नुटित है ।

१२-ता —ताह न

१३-जा —म नुटित ।

१४-ता —म 'जा पार' पक्ति नुटित है ।

१५-जा व —म नुटित ।

१६-जा —जडीय ।

ऊँची पट्टी ^१ पहारू ।	(३०)
दिसन न दोस किसी ^२ रे प्राणी,	(३१)
तेरी करपी का ^३ उपगारू ॥ ११ ॥	(३२)
(१२)	
मोरा ^४ उपरयान वेदू ^५ कण तत भेदू ^६	(१)
सामने पसतके लिरणा न जाई ।	(२)
मोरा ^७ सबद खोजो ^८ ज्यू ^९ सबदे सबद समाई ।	(३)
हिरणा दोह ^१ क्यो हिरण हतोलों, किसन चिरत ^{११} विणि,	(४)
क्यो बाघ विडारत गाई ।	(५)
मुण्ठी ^{१२} मुण्हा का जाया मुडदा ^{१३}	(६)
बघेरी बघेरा न होयबा ^{१४} किसन चिरत विणि,	(७)
सींचाण ^{१५} कबही न ^{१६} मुजीऊ ।	(८)
खर का सबद न मधरी ^{१७} बाणी, किसन चिरत विणि,	(९)
खान न कबही गहोरू ।	(१०)
मु डी का जावा मु डा न होयबा ^{१८} किसन चिरत विणि,	(११)
राछा कबही न सुचीलू ।	(१२)
बिली की इ द्रो सतोप ^{१९} न होयबा किसन चिरत विणि,	(१३)
काररा न होयबा ^{२०} लीलू ।	(१४)

१-ला —पीय ।

२-म —किमा ।

३-ला —क ।

४-म व —मरा ।

५-रा गो पी म व —वेदी ।

६-रा गा पी म व —भेदी ।

७-रा गो पी —मेरा ।

८-रा व —मवण पीजो सत्रद पीजो ।

९-ला म —'ज्यू के पश्चात 'मु ।

१०-रा गा —द्रोह ।

११-ला —चीळत ।

१२-जा —मुगाही ।

१३-रा गो पी —मुरदा ।

१४-रा गो पी —ह्व वा म व —पक ।

१५-गो —मीचाणा ।

१६-ला —म घुटित ।

१७-जा म व —मधरी ।

१८-रा गो पी —ह्व वा ।

१९-गो —नोप ।

२०-गो पी —ह्व रा ।

मुरगो का जाया मोरा ^१ न होयबा ^२ किसन चिरत विणि,	(१५)
भाक्ला न होयबा चीर ।	(१६)
दत वियाई जळम ^३ न आई किसन चिरत विणि,	(१७)
लोहै पडो न काठ की सूळ ।	(१८)
नींबडिय नाळेर ^४ न होयबा ^५ किसन चिरत विणि,	(१९)
छीलरे ^६ न होयबा होळ ।	(२०)
तू बणि नागर वेलि न होयबा किसन चिरत विणि,	(२१)
धांवळी न वेळा ^७ केळू ।	(२२)
गऊ का जाया खगा ^८ न होयबा किसन चिरत विणि,	(२३)
वया न पाळत भीळू ।	(२४)
सुरी ^९ का जाया हसनी न होयबा किसन चिरत विणि,	(२५)
औछा कबही न ^{१०} पूळ ।	(२६)
वागणि का जाया कोकिला न होयबा किसन चिरत विणि,	(२७)
बुगली ^{११} न जणिबा हसू ।	(२८)
ग्यानी के हिरद परमोधि आव ।	(२९)
अग्यानी लागत डासू ॥ १२ ॥	(३०)

(१३)

मुर मा लीणा ^{१२} शीणा सबदू,	(१)
सूलि न भायला धूळू ।	(२)
सेपति ^{१३} विरधा सोच पिराणी,	(३)
जिह्वा मीठा मूळ समूळू ।	(४)
पाते झूला मूळ न खोजो ^{१४} ,	(५)
सोचो काय कमूळू ?	(६)

१-म - मा र न चूटत है ।

२-गो - हू ।

३-रा गो पी म व - जनम ।

४-रा गो पी म व - नारेळ ।

५-रा गो पी - हू वा (इन प्रतियो मे प्रागे भी 'होयबा' के लिए 'हू वा' है) ।

६-जा रा गो पी म व - कैली ।

७-ना - यथा ।

८-ला म - सूवरी ।

९-म व - मे 'कबही न' के स्थान पर न कबही ।

१०-म - वगनी, व - ववली ।

११-रा गो पी म व - जणा ।

१२-रा पी म गो व - सोपति ।

१३-ला - यो ।

विमन विमन भणि अजर जरीली ^१ ,	(७)
अ जीवण का मूळ ।	(८)
सोजि गिराणी जमा विनाणी,	(९)
क्वळ ^२ पानी प्यान गहीरू ।	(१०)
जिह फ गुण ^३ न लाभत छेहू	(११)
व गहर ^४ गरया सीतळ नाह ।	(१२)
मेवा ही अति ^५ मेऊ ।	(१३)
हिरव मुक्ता क्वळ सतोपी ।	(१४)
टेवा ही अति ^६ टेऊ ।	(१५)
घडि करि बोहिय ^७ भय ^८ जळ पारि ^९ लघावे	(१६)
से ^{१०} गुर खेवट ^{११} छेहा छेहू ^{१२} ॥ १३ ॥	(१७)

(१४)

सोही ^{१३} हुता कचण घडिया ^{१४} ,	(१)
घडिया ^{१५} ठां व सुठाऊ ^{१६} ।	(२)
जाटा हुत ^{१७} पात करीलो,	(३)
अ किसन चिरत ^{१८} परवाणों ^{१९} ।	(४)
बेडो काठ सजोगे ^{२०} मिळिया ।	(५)

१-नी —जरीज ।

२-ता —म केवळ से पूव की की ।

३-ता —गुण्येय ।

४-जा रा गो पी म व —म व गुर के स्थान पर गुर गवर ।

५-रा गा पी म व —अति ।

७-जा —बोहियो, रा म व —बोहिता, पी —बहुता ।

८-रा पी व —भ, गो —भव म —मौ ।

९-ला —म 'भय जळ प्रुटित है ।

१०-जा रा गा पी म व —सो ।

११-ला —म 'गुर खेवट के स्थान पर विट' ।

१२-ला —छेव ।

१३-म —जोह ।

१४-जा रा गो पी म व —घडियो ।

१५-जा रा पी म व —घडियो ।

१६-ला —गुठां व ।

१७-जा —हुता ।

१८-ला —चीतत ।

१९-ला —परवाण ।

२०-म —साजोगे ।

खेवट ^१ खेवा ^२ खेवू ।	(६)
लोहो ^३ नीर ^४ किसी परि ^५ तरिवा,	(७)
उतिम सग सनेहू ।	(८)
विणि श्रोया रवि वसला,	(९)
ज्यू ^६ काठ सगोणो लोहो ^७ नीर तरीलो ।	(१०)
नागड भागड ^८ भूला महियळ ^९ ,	(११)
जीव हत मड लाईलो ॥ १४ ॥	(१२)

(१५)

मोर सहने मु दरि खोतर ^{१०} थाणी ।	(१)
असा भया मन ग्यानु ^{११} ।	(२)
तइया सासू तइया मासू ।	(३)
रगतू रहियू खीरू ^{१२} नीरू ।	(४)
ज्यो करि देखू, यान ^{१३} जदेसू ^{१४} ,	(५)
भूला प्राणी कहै स ^{१५} करणो ^{१६} ।	(६)
अई अमाणा ^{१७} तत समाणो ।	(७)
पुरष ^{१८} न लेणा नारी	(८)
सोदत सागर सो मुभियागत,	(९)
भु वणि भु वणि ^{१९} विविपारी ^{२०} ।	(१०)

१-म —पेव ।

२-रा गो —पेहा, व —पेव ।

३-रा गो पी —तोहा म० —लोहै ।

४-म —नाव ।

५-म व —विधि ।

६-ता —ज्यो ।

७-जा रा गो पी व —चोहा, म —लोहै ।

८-व —भ्रगड ।

९- भूला महियळ' के स्थान पर म —म 'महियल भूला' तथा व —म 'महिल भूला' ।

१०-रा गो पी म —नात्र ।

११-जा रा गो पी म व —ग्यानों ।

१२-गो —क्षीरू ।

१३-जा रा गो पी —ग्यान म —गान ।

१४-व —प्रनेसी ।

१५-गो —सो ।

१६-म व —बीज करणो ।

१७-व —प्रमणों ।

१८-पुरष से पूव गो०—म 'मईयालो म्हे,' म व —म 'मईयालो म अनरिव' ।

१९-जा रा गो पी म व —भवणि भवणि ।

२०-रा गो —विपियारी, पी —विपिया । [

भाषा सो निगिनारो मो	(११)
भारि ^१ परम तन साधो ।	(१२)
बृहदारिचिंम शिरांती ^२ सांगो ^३ सरती, ^४	(१३)
दूष बृवी साह्या ^५ साधो ॥ १५ ॥	(१४)

(१६)

बां कुटि नां कुटि तां ^१ कुटि ^२ न जांगो ।	(१)
नां कुटि नां कुटि तां ^२ कुटि ^३ जांगो ^४ ।	(२)
नां कुटि नां कुटि धवय बृवींजी ।	(३)
नां कुटि नां कुटि इधत ^१ बांजी ।	(४)
प्यांती सो ^२ तो प्यांन रोधत,	(५)
प्यांन रोधन गाहे ।	(६)
रुड करना मोरो मोरा रोधन,	(७)
बाय जोय पयां दिसांती ^३ ।	(८)
उरपद ^४ पनीं ^५ उ नमन ^६ रोधत,	(९)
मुटिया ^७ रोधन धांही ^८ ।	(१०)
मरण त माप सधार त स्तेत ^९ ,	(११)
रु व धवतारी रोधत राही ^{१०} ।	(१२)

१-जा रा गो पी म व —म 'धादि' सं पूर्व 'जे' अतिरिक्त ।

२-ना —वांगी ।

३-ना व —म प्रुत्ति ।

४-रा गो पा म —म प्रुत्ति ।

५-जा रा गो पी म व —साह्यीया ।

६-जा रा गो पा म व —जा ।

७-रा गा —कुछू, म व —कुछ, सा पी —वछू ।

८-जा —ना ।

९-ना —वत्रु एन ।

१०-व —म यह तवा इसस भागे वाली दो पक्तियाँ प्रुत्ति हैं ।

११-रा गो पी म —प्रमृत्त ।

१२-जा - म 'सो प्रुत्ति म —म 'सो तो प्रुत्ति ।

१३-म —मि सांगी व —दिसाहे ।

१४-जा रा गो पी म व —म 'ज प्रुत्ति ।

१५-म र —पण रा गो व —म 'पणो के पदचात् मन अतिरिक्त ।

१६-व —ज्ज ।

१७-सा —मुरणो ।

१८-व —धाह ।

१९-जा रा गो पी म व —वेती ।

२०-व —राह ।

जडिया घूटी जे जग ^१ जोयं ।	(१३)
तो मवा वयों मरि जाहीं ^२ ?	(१४)
खोजि पिराणी भक्ता विनाणी,	(१५)
निगुरा ^३ लोजत नाही ।	(१६)
जा कुछि हुता ^४ ना ^५ छि होयसी, ^६	(१७)
यकि कुछि होयसी ताहो ॥ १६ ॥	(१८)

(१७)

रूप अरूप रमू ^७ प्यइ ब्रह्मइय	(१)
घटि घटि अघट रहायो ।	(२)
अनत जुगां मा ^८ अमर भणीजू,	(३)
ना मेरे पिता न मायो ।	(४)
ना मेरे माया न ^९ छाया रूप न रेखा	(५)
बाहरि भीतरि अगम भलेखा ।	(६)
लेखा आप ^{१०} निरजण ^{११} लेसी	(७)
जां ^{१२} चीहो तां ^{१३} पायो ।	(८)
अठसठि तोरय हिरव भीतरि,	(९)
को को ^{१४} गुर मुखि विरळा हायो ॥ १७ ॥	(१०)

(१८)

जां जा दया न मया	(१)
ता ता विधम कया ^{१५} ।	(२)

-
- १-जा —जुग ।
 २-व —जाये ।
 ३-ला —निगुरा ।
 ४-जा रा गो पी —होता, म व —होता ।
 ५-ला —ती ।
 ६-ला —होयस्य ।
 ७-म व —रमा ।
 ८-पी म मै ।
 ९-म व —ना मेर ।
 १०-रा गो पी म व —एक ।
 ११-पा म व —गुण्यवद ।
 १२-जा —जिग, रा गो पी व —जहा
 १३-पी व —तहाँ ।
 १४-ला —कोइ कोइ ।
 १५-म —किया ।

बां बां धाव न बसो ^१	(३)
तां तां गुरुग न जगो ^२	(४)
बां बां ^३ जोष न जोनी	(५)
तां तां मोल न मुहनी ^४ ।	(६)
बां बां दगा न परम्	(७)
तां तां विक्रम बरम् ।	(८)
बां बां पात्रपा ^५ न तोत्रु	(९)
तां तां कम कुचीरु	(१०)
बां बां सोग्ना न मूत्रु	(११)
तां तां प्रतदि ^६ वृत्रु ।	(१२)
बां बां मेघा न ^७ भेद्रु	(१३)
तो गुरगे विसो ^८ उमेद्रु ।	(१४)
बां बां घमड ^९ स मडयो	(१५)
ताक ताय न टायो ।	(१६)
मून मास नतायो ॥ १८ ॥	(१७)

(१९)

त्रिहृ क सार धतार पार अपार ^{१०}	(१)
पाप अयापू उमया स मापू	(२)
त सरवर रित ^{११} नीर ?	(३)
बाजालो भल पाजालो	(४)
बाजा दोष गही ^{१२} ।	(५)
एक ^{१३} बाज नीर बरम	(६)
दूज मही विरोद्ध ^{१३} खीर ।	(७)

१-जा रा गो म व — जगा, धी — वसू

२-जा रा गो धी म व — जमा ।

३-म — मा ।

४-पा० — मुगती ।

५-रा गो धी — पाटे, म व — दया ।

६-धी — प्रयक, म — प्रत्यत्य ।

७-म — नि ।

८-सा — मुरगा कीसय ।

९-गो — घमड स घमडू ' म — घडमड स मडो ।

१०-व — म पार अपार ऋटित ।

११-जा — तती ला — क्य ।

१२-रा गो धी म व — एकण ।

१३-गो — विरोल ।

जिह्व प सार असार पार अपार	(८)
थाप अथाप ^१ उमर्या ^२ स मापू,	(९)
गहर गभीर ।	(१०)
गिगत पयाळे वारत नादू ।	(११)
मानिक पायी ^३ फेरि लुकायी ^४	(१२)
नहीं लखायी ^५	(१३)
दुनिया राती ^६ वाद विवादू ।	(१४)
वाद विवादे दाणी खीणा	(१५)
उरों पोटे खीणां भवरी भवरा ^७ ।	(१६)
भाव ^८ जाणि म जाणि पिराणी ^९	(१७)
जोल वा रिप जवरा ।	(१८)
भेर बाजा तो एक जोजनु,	(१९)
अथवा ^१ तो दोय जोजनु ।	(२०)
मेघ बाजा तो पच जोजनु,	(२१)
अथवा ^{११} तो दस जोजनु ।	(२२)
तो ^{१२} उतिस लेह ^{१३} पिराणी ।	(२३)
जुगा जुगाणी ^{१४} सति करि जाणी ^{१५} ,	(२४)
गुर का सबद ज ^{१६} बोलो ^{१७} खीणी बाणी	(२५)
दूरया ^{१८} हीं त ^{१९} दूरि सुणीज,	(२६)

१-रा —अर्थी ।

२-म —उममगि ।

३-ता म —पाया ।

४-ता —हुकाया, म —लुकाया ।

५-ता म —लपाया ।

६-दुनिमा राती के स्थान पर म —म राती दुनिया, व —मे रीती दुनिया ।

७-ला —भु बरी भु वरा ।

८-ला —भावगि ।

९-म व —म 'पिराणी के पश्चात् इम' अतिरिक्त ।

१०- १५-ता —अथवाय ।

११-जा —गोई ।

१२-ता —'रे', व —लहि रा गो पी म व —म 'लेह' के पश्चात् 'रे' अतिरिक्त ।

१३-म उ —म जुगा जुगाणी' श्रुति ।

१४-जा —'गनि जाणी' श्रुति ।

१५-रा —तु ।

१६-ता —म श्रुति, व —बोल ।

१७-जा रा गो पी म व —म 'दूरया' से पूर्व 'जि' अतिरिक्त ।

१८-रा गो पी म व —दूरत, ता —हीता ।

तो^१ सप्रद गुणा कार^२ गुणापारु^३ (२७)
 गणा^४ सार, बळे^५ अपार^६ ॥ १९ ॥ (२८)

(२०)

लो लो रे राज्यदर^१ रायी । (१)
 बाज वाव सुवायो^२ आभ अमो^३ भुगयो । (२)
 काररि करसण^४ बीया^५ नेप वछू न धायो । (३)
 अइया उतिम खतो को को इमूत रा^६यी (४)
 को को दाण दिखायो^{११} को^{१२} को ईख उपायो (५)
 को को नौब निबादी को को दाक ढकोली (६)
 को को^{१३} तुमणि तु बणि देली को को अक^{१४} अवायो (७)
 को को वछू कमायो ताका मूळ कमूळ (८)
 डाळ कुडाळ ताका^{१५} पात कुपातू (९)
 तारा^{१६} फळ बीज कुबीजू तो भीर दोस किसानी ? (१०)
 क्यों क्यों भुय^{१७} भाग ऊणा क्यों^{१८} क्यों^{१९} क्रम विहूणां । (११)
 को को चिडी चमेडी^{२०} को ओळू आयो । (१२)
 तार पान न जोती मोख न^{२१} मुकती । (१३)
 पाका^{२२} क्रम असायी तो नीरे दोस किसानी ? ॥ २० ॥ (१४)

१-ना—गु ।

२-ना—गणाकम, म—म गुणाकारी गुणाकारी ।

३-रा गा पी म व—मे 'गुणा पारु' वृत्तित ।

४ व—म वृत्तित ।

५-६-ना—म वृत्तित ।

७ म—राजिदरा ।

८-जा—मवायो ।

९-म व—किरमण ।

१०-व—वाय ।

११-ग गो पी म—रिपायी, जा—म 'नेप वछू दाख देखायो अर मूल से दुबारा निखा गया है ।

१२-ना—म 'को को ईख ढकोली' अ ग वृत्तित है ।

१३-ना—का का ।

१४-जा रा गो पा म व—आक ।

१५-गो म व—म वृत्तित, पी—म 'ताका कुपातू' वृत्तित ।

१६-जा—म वृत्तित व—ता ।

१७-म व—म वृत्तित, जा—भव ।

१८-१९-म—म वृत्तित ।

२०-म—चमेडी ।

२१-म—म वृत्तित ।

२२-रा गो पी—प्रावे, म व—वावा ।

(२१)

साल्हिया हुया मरण ^१ भव ^२ भागा	(१)
गाफिल मरण घणों डर ।	(२)
सतगुर मिलियो ^३ सत पथ ज ^४ पायो ^५	(३)
मरण ^६ बोह उपगार करे ।	(४)
रतन कया ^७ सोभती लाभ	(५)
पार गिराय जीव तर ^८ ।	(६)
पार गिराय त ^९ नेही करणी,	(७)
जपो विसन न दोष दल करणी ।	(८)
जपो विसन न निंदा करणी	(९)
माडो काय विसन की सरणी ^{१०} ।	(१०)
अतरा ^{११} बोल करी जे ^{१२} साचा,	(११)
तो पार गिराय गरू की याचा ।	(१२)
खणा ठवणा चवदा भवणा	(१३)
ताहि ^{१३} परे र रतन कया ^{१४} छ	(१४)
लाभ विस ^{१५} विचार ^{१६} ?	(१५)
जे नविय नवणी खु ^{१७} विय ^{१८} खु यणी,	(१६)
जरिय जरणी ^{१९} करिय करणी	(१७)
सोख ^{२०} हई ^{२०} धरि जाइय ।	(१८)

१-म — मर ।

२-गो म — भय ।

३-म — मिलिया ।

४-जा रा गो पी म व — म श्रुटित ।

५-जा रा गो पी व — गतायी, म — वताया, 'पायो के पश्चात जा रा गो पी म व — म भ्रात चुराई अतिरिक्त ।

६-म — मरणह 'बो' श्रुटित ।

७-रा गो म — राया ।

८-पी — म 'पार तर' पक्ति श्रुटित ।

९-जा रा गो पी म — म ।

१०-जा रा गो पी म व — परण ।

११-ला — घतना ।

१२-म — ने ।

१३-ला — ला है ।

१४-रा गो पी म — काया ।

१५, १६-म — किसी विचारी ।

१७-जा — म 'खु विय खु वणी' श्रुटित ।

१८-म — मरणों ।

१९-रा वा — म 'सोख' से पूव ती' अतिरिक्त ।

२०-ग गो पी म व — हुवा ।

रतन क्या ^१ साच ^२ की ढोळी,	(१९)
गुर प्रसादे ^३ केवळ याने,	(२०)
ग्रम आचारे ^४ सोले सजमे,	(२१)
सतगुर तूठ ^५ पाइय ॥ २१ ॥	(२२)

(२२)

आमण बसण कूड कपट ^६ ,	(१)
की की ^७ की चीहत ^८ अबजू वाट ^९ ।	(२)
अबजू वाटे ने नर भया,	(३)
नाचो काया छोडि कवळाले ^{१०} गया ॥ २२ ॥	(४)

(२३)

राज न ^{११} मूली लो राजिंदर दु नी न बघो ^{१२} मेरू,	(१)
पुवणा ^{१३} झोल बीखरिजला घुवरि ^{१४} तणा ज लोरू ^{१५} ।	(२)
ओल ^{१६} स आम तणा लहिलोरू ।	(३)
याडाडबर ^{१७} केती वार विळवण ओ ससार अनेहू,	(४)
मूला प्राणी विसन जपो रे मरण विसारो केहू ^{१८} ?	(५)
म्हा देखता देव दाणों ^{१९} मुर नर खीणां ।	(६)
जवू मझे राचि न रहिवा येहू ^{२०} ।	(७)

१-रा गो पी म—काया ।

२-रा पी व—सच ।

३-व—परसादे ।

४-जा रा गो पी व—अचारे ।

५-म—तूठे ।

६-रा गो—कपटण, पी—कपट, म व—कपटों ।

७-म व—केके ।

८-म व—पी हूँ ।

९-रा गो पी—वाटे, म व—वाटों ।

१०-जा व—किलाले ।

११-गो—नि ।

१२-रा—बघो, गो पी—बघी, व—बघी ।

१३-जा रा गो पी म व—पवणा ।

१४-जा—घवर ।

१५-ला—भिनोरू, व—लहिलोरो ।

१६-म व—ऊहमि, ला—उलम ।

१७-म—घाडीडबर ।

१८-ला—मे दाणो के पश्चात नर' प्रतिरिपत ।

१९-म व—धीरों ।

नदियां ^१ नीर ^१ छीतरि ^२ पांण ^३ पुषरि ^४ तणा ^५ ज ^६ सेहू ।	(८)
हम उद्याणों पय विळहयो आसा सात निरास भईतो ।	(९)
ताय ^४ होयसी रड ^५ निरडो वेहू ।	(१०)
पुयणा शील यीतरिजला गण विळयो ^६ सहू ॥ २३ ॥	(११)

(२४)

घण तण जीम्यां ^१ को गुण नांहीं, मळ भरिया भडाए ।	(१)
धाग पाछ ^२ माटी मूळ, मूला भय ^३ ज ^४ भाए	(२)
घणां दिनां का यडा न कहिया यडा न लघिया पाए ।	(३)
उत्तम कुळी का उत्तम न कहिया ^१ कारण ^२ किरिया ^३ साए ।	(४)
गोरल दीठ ^४ सिध ^५ न होयवा पोह ^६ उत्तरिया पाए ।	(५)
कळि जुग वरत चेतो लोई, चेतो ^१ चेतण हाए ।	(६)
सतगुर मिलियो सतपय बतायो ^२ , वेद गरथ उदगाए ^३ ॥ २४ ॥	(७)

(२५)

पडि कागळ घेदां सामतर ^२ सयदा,	(१)
पडि गुणि रहिया कछू न लहिया ।	(२)
निगुरा उमग्या ^३ काठ पयांणी	(३)
कागळ पोया नां कुछि थोया नां कुछि गांघा गोवी	(४)

१-रा व —नदीय ।

२-य —छील ।

३-गा —जे ।

४-मभी प्रतिपा म —'ताछ हे ।

५-ला म —राड ।

६-म व —विलगी ।

७-व —जायें ।

८-म —पीछ ।

९-ला —भुव, रा गो पी व —उह ।

१०-म —झ ।

११-जा —ह्वहिया, रा गो पी —होयवा, व —हवा ।

१२-ला —करणी ।

१३-म व —करतव ।

१४-जा रा गा पी व —दीप म —दीप

१५-म —सिधि ।

१६-ला म व —पह ।

१७-म —वेतो ।

१८-रा गो पी म व —म 'भ्रालि चुवाइ' अतिरिक्त ।

१९-जा रा गो पी म व —म 'वेद उदगाए' के स्थान पर 'विदगारा त उदगाए'

२०-जा रा गो पी म व —सासत्र ला —मासन ।

२१-ला —उमग, म —उमग ।

किणि दिस आव किणि दिस जाव माई लख न ^१ पीयो	(५)
इ डे मघ जीव ^२ उपनो ^३ किणि दिस पठा जीयो ^४ ?	(६)
सुणि रे कामो सुणि रे मुल्ला पीर रपेसर	(७)
रे मसवासी ^५ तोरयवासी किणि ^६ घटि पठा जीयो ?	(८)
कना सबदे कस ^७ लहुकाई बाहरि गई ^८ न रोवो ^९ ।	(९)
बिणि आव लिणि बाहरि ^{१०} जाव इति करि वरस त सीयो ^{११} ।	(१०)
सोवन ^{१२} लक भदोवरि ^{१३} काम जोय जोय भेद भयोपण ^{१४} दीयो ।	(११)
तेल लियो खलि चौप जोगो जिहको ^{१५} मोल घोडे रो कीयो ।	(१२)
प्यान ^{१६} प्याने ^{१७} नादे बिदे जे नर लणा ^{१८} तत भी ताही लीयो ।	(१३)
करण दयोच ^{१९} सित ^{२०} र बळि राजा हूई को फळ लीयो ।	(१४)
तारादे रोहितास हरीचद काया दस वध दीयो ^{२१}	(१५)
विसन अजण्यां जळम ^{२२} इष्यारथ ^{२३} आके डोडा खीपि फळियो ।	(१६)

- १-म-म 'न पश्चात् 'घन' अतिरिक्त ।
 २-रा रा गो पी म व-पिड ।
 ३-उपनो के पश्चात् जा रा गा-म 'पिडे मधे विव उपना । ' व मधे जीव उपनो', तथा पी म व-म 'पिडे मधे विव उपनो' अतिरिक्त ।
 ४-म व-म 'किणि जीयो' वृत्तित तथा पी-मे 'जीयो के पश्चात् इ टा मधे जीव उपना अतिरिक्त ।
 ५-रा म व-मिसवासी ।
 ६-ना-इण ।
 ७-ना-सु म ।
 ८-ता-गइय ।
 ९-जा गा म-रीया ।
 १०-ता-बाहूडि ।
 ११-म-मी ।
 १२-म-सान ।
 १३-व-अनोवर ।
 १४-गा-विभोपण ।
 १५-रा गो पी म व-तिहको ।
 १६-म-जाने ।
 १७-प्यान व पश्चात् म-म सीले सजमे भमे तथा व-म सीले सजम अतिरिक्त ।
 १८-पी-लीणा ।
 १९-म-पीच ।
 २०-म-ममरि, ना-सेवरि ।
 २१-म व-म 'काया दायो वृत्तित 'दीयो' के पश्चात् अतिरिक्त अ न-जा-म घनि कारण निया तप सूर । घन दे दासव कीयो, म व-मे घन जोडा सब कीयो ।
 २२-जा रा गो पी म व-जनम ।
 २३-रा गो पी

कफ ^१ विषरजत रुद्रयो ^२ ।	(१७)
तसू भातू घोह रग तेणा ^३ स ग लणा रुद्रयो ^४ ।	(१८)
नन रे घोह रग न राच ^५ पाळी ऊन कुजीयो ।	(१९)
पाटै ^६ छास मजीठ ^७ राता ^८ मोल ^९ न जाकी ^{१०} रुद्रयो ।	(२०)
बयहो ओप्रह ^{११} ऊ विरि धान सतांगी ^{१२} साय लीयो ।	(२१)
ठाट गट विषळीपति नारी जदि ^{१३} पक ^{१४} भदि ^{१५} बीयो ।	(२२)
इमत ^{१६} या फळ एन मन राखिया ^{१७} मेवा ^{१८} मीठ ^{१९} समापी ^{२०} ।	(२३)
अतध ^{२१} परध विषळीपति नारी,	(२४)
विण परच पार गिरांय न जाई ।	(२५)
देखत अया सुणता बहरा ।	(२६)
तासू वा ^{२२} न बसाई ॥ २५ ॥	(२७)

(२६)

मछी मछ ^{२३} फिर जळ ततरि	(१)
तिह फा माघ न जोषबा ।	(२)
परम तत असा	(३)

१-जा रा गो पी व—काफर, म—काफ ।

२-जा—रुहोयो । आगे भी जा—म 'रुद्रयो' के स्थान पर 'रुहोयो' है ।

३-ला—लण ।

४-पी—रुई ।

५-ला—राता ।

६-ला—पाहो ।

७-जा—मजीठी ।

८-म व—रातो ।

९-म व—मूल ।

१०-जा—जसका, रा गो पी म—जिहिका, व—जहिका ।

११-ला—औष ।

१२-ला—सताने ।

१३-म—भदि ।

१४-जा रा गा पी म व—वक ।

१५-पी—तति, व—तव ।

१६-गो म व—अमृत ।

१७-रा गा पी—रहिवा, व—रपवा ।

१८-जा—म वृटित ।

१९-जा रा गा पी व—मिष्ट ।

२०-रा म व—सुसयो ।

२१-गो—असुढ, म व—असिध ।

२२-जा—कडू, गा—काहा, म व—कुछ ।

२३-म—मछी ।

मात उरवार ^१ न ताप ^२ पाह	(४)
दोष ^३ धन ^४ कोदय ^५ न धोयो	(५)
निहृ ^६ का ^७ अत लहोवा कसा ।	(६)
अना सो भल असा लो	(७)
बरो ^८ न बहा गहांह	(८)
परम तन क रूप न रेखा	(९)
नाह न सेहू सोज न खेहू ।	(१०)
बरा विवरजत	(११)
धे ^{१२} सोजा वायन धोर ।	(१२)
मान का पय भोन ही जाणत ^{१३}	(१३)
नार ^{१४} स रण ^{१५} मे रहियो	(१४)
मिष का पय को ^{१६} को साधु जाणत ^{१७}	(१५)
बाजा बरतण बहियो ॥ २६ ॥	(१६)

(२७)

गर क मवदि अमणि ^{१८} परमोषी,	(१)
एार समद परीलो ।	(२)
एार समद पर ^{१९} पर रं ^{२०} चीटांड खार,	(३)
एरणा ^{२१} अत न पाह ।	(४)

१-वा —म 'उर' प्रकृत ।

२-मन, प्रकृत म 'ताह' है ।

३ म —गारह, य —बोरह ।

४ त न पा म य —बोई ।

५ म —म प्रकृत

६-वा —'यो' रा गो —म 'लो' के पञ्चात् 'मन' अतिरिक्त ।

७-म —बाह ।

८-म रा गो पी म य —भाय ।

९-म —म पय के पञ्चात् 'तो' अतिरिक्त ।

१०-म —रा ।

११-म य —रग ।

१२-म रा गो पी म य —गु ।

१३-म रा गो पी —को^१, य —को ।

१४-म —अन जाण ।

१५-म —अगर ।

१६-म — ।

१७-म य —रं^२ रं^३ रं^४ ।

१८-म य —म पञ्चात् 'मन' अतिरिक्त ।

अनत कोडि गुर क ^१ दांविणि विलग्या ^२ ,	(५)
करणी साच तरीलो ।	(६)
साम ^३ जमू सवेर ^४ थापणि ^५ ,	(७)
गुर की नाथ ^६ डरीलो ।	(८)
भगवीं टोपी थळ तिरि ^७ आयो,	(९)
हेत मेल्हाण करीलो ।	(१०)
अबाराय वपाई ^८ वाज ^९ ,	(११)
हिरव हरि तिवरीलो ^{१०} ।	(१२)
विसन ^{११} मया चौशड किरसाणी	(१३)
जवू दीप चरीलो ^{१२} ।	(१४)
जवू दीप असो चरि आयो,	(१५)
इसकदर ^{१३} चेटायो ।	(१६)
मा ^{१४} यी सोल हकीकथ ^{१४} साग्यो,	(१७)
हक की रोजी घा ^{१५} यो ।	(१८)
ऊनय नाथि कुपह का पोह मां ^{१६} आंण्यां ^{१६} ,	(१९)
पोह का धुरि पोहवायो ।	(२०)
भोर धरती ध्यान वणासपति ^{१७} वासो	(२१)
उजू ^{१८} मडळ छायो ।	(२२)
गोंडू भेर पगाण परबत,	(२३)
मनसा सोडि ^{१९} तुलायो ।	(२४)

१-पी —नी ।

२-जा रा गो पी व —विलवी म —विलगी ।

३-ला —म साम^३ से पूव 'जीत' ।

४-ला —सवेरइ ।

५-ला —म थापणि^५ के पश्चात 'व गुर प्रतिस्वित ।

६-जा —नादि ।

७-ला —रिरि ।

८-ला —प्रधइ ।

९-म —वाक्क ।

१०-म व —मुमरीलो ।

११-रा गो पी म —विसन व —विसनी ।

१२-पी —'जवू चरीलो' मुटित ।

१३-ला —मोकदर ।

१४-म व —हकावन ।

१५-व —म्हे ।

१६-म —साग्यो ।

१७-ला —वणासनि, म व —वणासन ।

१८-जा रा गो पी —गोंडू ।

१९-ला —सोवडि ।

ब ^१ बुग च्यारि छतीसां अबर ^२ छतीसां ^३ ,	(२५)
अमरां बहै अघारी	(२६)
मृां तो खडा विहायो ।	(२७)
तनीमां की बरग ^४ यहां रहे ^५ ,	(२८)
बांरा ^६ बाज आयो ।	(२९)
बांग ^७ बाजि ^८ घणा न ठाहर	(३०)
मनां त डाल्हे डौल्हे कोडि रचायो ।	(३१)
मू जगु ^९ मडळ का रायो ।	(३२)
समर विरोळ्ळी वासिग ^{१०} जेतें, ^{११}	(३३)
मर निषाणी पायो ।	(३४)
समा ^{१२} अरजन मारयो, कारज सारयो	(३५)
जदि मू रहसि ^{१३} दमांमां वांयो ।	(३६)
केतो सान लई जदि लका,	(३७)
तरि ^{१४} मू लोय ^{१५} पायो ।	(३८)
रहमिर बा दम मसतग ^{१६} छेदया,	(३९)
बांग भवा ^{१७} निरतायो ।	(४०)
मू सोमो छां ^{१८} विड होजी नाहीं ^{१९}	(४१)
एहि लहि खेखत टायो ।	(४२)
अमानुर मू लूव रमिपां,	(४३)
एरु न ^{२०} हरायो ।	(४४)

-
- १-बा-अ^२ ।
 २-बा-अ^३ ।
 ३-बा-अ^४ ।
 ४-ब-ए^५ मू ।
 ५-बा-अ^६ ।
 ६-बा-अ^७ व-अ^८ रह ।
 ७-ग बा-अ^९-पाणि ।
 ८-ग बा-अ^{१०} पा म व-ऊव ।
 ९-जा म-बाजि ।
 १०-अ र ग म व-जती ।
 ११-अ-अ^{१२} ।
 १२-अ-अ^{१३} ।
 १३-अ-अ^{१४} ।
 १४-अ-अ^{१५} म व-अ^{१६} ।
 १५-अ-अ^{१७} म व-अ^{१८} म व-अ^{१९} म व-अ^{२०} म व ।
 १६-अ-अ^{२१} ।
 १७-अ-अ^{२२} म व-अ^{२३} ।
 १८-अ-अ^{२४} ।

की प्रवचन किया जाता था।।। रोद्र म ऐसा अब भी है।

विष्णोई लोग धल को "वधिया" (घस्ता) नहीं कराते। पहले इनम अपने पाशुओ पर पहचान हेतु "जाम्भाणी दाग" लगाने की प्रथा थी। दायें पुटठे पर त्रिगूल का और बायें पर सात किरण वाला गोल सूरज जाम्भाणी दाग कहलाता है। बकरे-बकरिया के कान बंध कर "भुरकी" पहनाई जाती थी। बहुधा पुवाय, मनोती स्वरूप या मृतक के निमित्त बछड़े को जाम्भाणी दाग लगाकर मुक्त छोड़ देते थे। छोड़ने के बाद भी विष्णोई-ममाज उसकी सुरक्षा का ध्यान रगता था। अब भी ऐसा कही-कही होता है। इसको 'गागड दागना', 'सूरजजी का' या 'जाम्भोजी का साड' छोड़ना कहा जाता है। इस बात को न समझने अथवा गलत समझने के कारण "रिपोर्ट मडुंमशुमारी राज मारवाड, वावत सन १८९१ ई०" मे सवप्रथम "एक आदमी को जाम्भोजी का साडिया" बनान की, लोगो से सुनो हुई बात का उल्लेख किया गया है। यह कथन सवमा असगत, निराधार, अज्ञता का द्योतक तथा विष्णोइयो की अपने नियम पालन सम्बन्धी दृढता के सदम मे ईर्ष्या द्वेष वश कहा गया प्रतीत होता है जिसकी पुष्टि "रिपोर्ट" मे दिए गये अन्य विवरणों से भी होती है। उल्लेखनीय है कि स्वय इसके लेखक को भी "यह बात उनके (विष्णोइयों के) मजहब से भी खिलाफ मालूम होती है" (पृष्ठ ६६)।

केवल बछड़ा ही नहीं, गाय भी "देई" या 'जाम्भोजी की' गाय मान कर रखी जाती है। ऐसी गाय का दूध कभी बिलोया नहीं जाता, उसको केवल पीने या पीने के लिए वाटने के काम मे ही लिया जाता है। बील्होजी दृत "कथा जसलमेर की" मे जीव दया और जाम्भाणी पशुओ सम्बन्धी जाम्भोजी द्वारा रावल जतसीजी के आग्रह पर माने गये चार वरो मे एतद् विषयक सकेत मिलते हैं।

२१- मत्र

सम्प्रदाय के नौ प्रमुख मत्र हैं जो भिन्न-भिन्न अवसरों पर प्रयुक्त होते हैं। ये निम्न लिखित हैं —

(१) नवण ('बडी नवण', 'बहन्नवण'), (२) कळस पूजा मत्र, (३) पाहळ मत्र, (४) विष्णु या गुरु मत्र, (५) तारक या गुरु मत्र, (६) बाळक मत्र, (७) धूप मत्र, (८) मुजीवण मत्र तथा (९) ध्यान मत्र।

सम्प्रदाय म 'नवण' का बहुत महत्त्व है। तातून्वेदी द्वारा भुक्ति प्राप्ति हेतु सक्षप मे कोई जप या मत्र पूछने पर जाम्भोजी ने 'नवण मत्र' बताया था। नवण का ही दूसरा नाम 'सव्या पाठ' है। प्रत्येक सत्कार और विशिष्ट अवसरों पर "पाहळ" बनाने से पूर्व कलश-स्थापना के समय 'कलश पूजा' मत्र बोला जाता है। "पाहळ" कलश के अभिमन्त्रित जल को कहते हैं। पाहळ शब्द "पायल" से बना है। (पाय+ल। पाय=जल, ल मुडुगा,

१-आययन-सामग्री, प्रति सख्या २६, ५५, ६५, ६६, ६८, ८१, १४६, १५०, १६३, १६९, १७२, २०१, २१८, २२७, २२८, २४२, २५६, ३१७, ३२५, ३३३, ३५०।

२-आययन-सामग्री, प्रति सख्या १६१, १६६, २०१, २२३, २५३, २५७, २६०, २०४, ३२५।

कीमलता का वाचक प्रत्यय) । पाहल लेने को "चलू लेना" भी कहते हैं जिसका तात्पर्य पवित्र या अभिमंत्रित जल लेने से है । चौथे व पाँचवें दोनों ही मंत्रों को कभी-कभी गुरु मंत्र कहते हैं जो साधु-दीक्षा और गृहस्थ को शिष्य बनाते समय दिये जाते हैं । व्रतगान में दोनों मंत्र भेद प्रायः नहीं रखा जाता । विष्णोई माता पिता का बच्चा जन्म से विष्णोई नहीं होता, उसे ऐसा बनाया जाता है । जन्म के ३१ व दिन हवन करके बच्चे के मुह में पाहल दिया जाता और कानों से छुवाया जाता है । ऐसा करते समय बाळक मंत्र पढ़ा जाता है । 'सुजीवण मंत्र' मृत्यु समय गुनाया जाता है । इसके साथ पूयक रूप में कभी-कभी "कूची का सबद" (संख्या २८) का पाठ भी किया जाता है । उल्लेखनीय है कि हवन की ज्योति में ही जाम्भोजी के दशन माने जाते हैं । परम्परागत विश्वासानुसार ज्योति में जाम्भोजी व्रतमान हैं । हवन-ज्योति विलयन के समय धूप मंत्र बोले जाते हैं । अर्धिकाश धरो में स्त्रिया हवन करती हैं । हवन समाप्ति पर वे तथा पुरुष भी "ध्यान" मंत्र स्मरण कर ध्यान करते हैं । मूल रूप में तो यह मंत्र कुछ बड़ा है किन्तु वर्तमान में इस रूप में प्रचलित है —

"भले हू भेटा देई कुमाणस हू पासे टाळी ।
आई बलाय दण करी और मुख स्याति राखी ।"

२२-समाज

विष्णोई समाज में दो प्रकार के लोग हैं—गृहस्थ और साधु । गृहस्थ के अन्तर्गत सामान्य गृहस्थ, धापन और गायणों की गणना है ।

- (क) धापन संस्कार का काम धापन का है । कलश-स्थापन इनके द्वारा किए जाने के कारण ये धापन कहलाते हैं । सम्प्रदाय-प्रवर्तन के समय जाम्भोजी ने इनको यह काम सौंपा था । धापनों की प्रमुख जातियाँ निम्नलिखित हैं —गोदारा, वणियाळ, लोळ, माभू, वैरवाळ, पवार, खोखर, टोकसिया, जाणी, ततरवाळ ।
- (ख) गायण-गायणों का मूल काम वशावली लिखना और "जम्मे"-जागरण आदि में गाने-बजाने का था । मृत्योपरान्त दिया गया शान भी ये ग्रहण करते थे । कालांतर में इन्होंने वशावली लिखना छोड़ दिया और धापनों की प्रतिस्पर्धा करने लगे । ऐसा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से हुआ । एक अज्ञात कवि (संख्या ११६) ने गायणों की इस प्रवृत्ति पर रोष भी प्रकट किया है । गायणों के अनुसार उनकी ग्यारह जातियाँ ये हैं—मीवळ, वागणिया, चवारा, लटियाळ, गुजर, वाकरा, अगरवाल, दडक, तवर, पवार और सोना । इनमें तवर के स्थान पर सीवर और गुजर के स्थान पर गुजर गौड नाम भी

१-(क) घूळय द लार मतान धाया, अमर गति सिवरि करि मिड धाया ।
धापना साव गुरु भूम धापे आपहि आप खेवत आपे ॥१८२॥
—मुरजनजी, कथा परसिध ।

(ख) बाळक का मटलू करि माळ, घर लीपरो कर समाळ ।
धापन हुक्म करि जदि आप, पच लोग जदि लीय बुलाय ॥२०४॥
—मुरजनजी, कथा स्रोतार की ।

बताए जाते हैं तथा सीवर को सेवर और बागडिया को बागडब या बागडवा भी कहा जाता है ।

(ग) भाट-वशावली लिराने का काम भाट करते हैं जिनका परम्परागत मुख्य गांव महलाणा (जोधपुर) है । प्रसिद्ध है कि जाम्भोजी के हजुरी शिष्यों में गायणो तो मुख्यतः धालमजी और साल्होजी के और भाट जाम्भोजी के वंशज हैं ।

(घ) सामान्य गृहस्थ-सामान्य गृहस्थ विष्णोई के विवाह चार जातियाँ (मा, बाप, नानी, दादी की) को छोड़कर आपस में गृहस्थ विष्णोइयों में ही होते हैं । इसी प्रकार आपनों के विवाह आपनों में तथा गायणों के विवाह गायणों में होने हैं । अब इन नियमों में गिणितता भी आ गई है । जाटा की भाँति विष्णोइया में भी नाता (पुनर्विवाह) होता है । इसके भी दो रूप हैं—“नाता करना” तथा “चूड़ी पहराना” । नाते में विधवा का पुनर्विवाह होता है और “चूड़ी पहराने” में सगे देवर से ।

(ङ) साधु-साधु दो प्रकार के हैं —रमत साधु और महत् । महत् स्थान विशेष की परम्परागत गद्दी के अधिकारी हान हैं । नायोजी के दो शिष्यों—विदरोजी और वील्हाजी से विष्णोई साधुओं की दो परम्पराएँ चली थी (दृष्टव्य-परिशिष्ट में-साधु-परम्परा) । साधुओं में ध्यान तक आने वाली तीखी “जाम्भाणी टोपी” और चपटे मनको की भाव नूस की वाली माता का व्यवहार प्रसिद्ध रहा है । महत् प्रायः धोती, कमीज और सिर पर भगवा साफा रखते हैं ।

(च) अभिवादन प्रणाली—परस्पर मिलने पर अभिवादन में ‘नवण प्रणाम’ और प्रतिवचन में ‘विष्णु न’, ‘जाम्भोजी न’ (विष्णु को, जाम्भोजी को) कहा जाता है ।

(छ) जातियाँ—विष्णोई समाज में अधिकतर जाट, क्षत्रिय, और वश्य जाति के लोग हैं । इनमें भी सर्वाधिक संख्या जाटों से बने विष्णोइयों की है । जाम्भोजी ने भी ऐसा उल्लेख किया है (१४ ३, ४) । जाम्भोजी के समय इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, चारण, क्षूद्र और मुसलमानों ने भी विष्णोई धर्म में योगदान दिया था । हजुरी भक्तों में धलीजी, सालोजी और डेल्हजी ब्राह्मण, तजाजी, अल्लूजी, काहाजी चारण, सममदीन, अमियादीन, दीन महमद, रहमतजी मुसलमान तथा मोती मेघवाल (चमार) था । सुरजनजी,^१ गोजलजी^२ आदि कवियों ने ऐसी कतिपय जातियों का उल्लेख किया है ।

विष्णोई होने के पश्चात् भिन्न-भिन्न जाति के लोगों के भोजन और आपसी व्यवहार में कोई भेद नहीं रहता । सम्प्रदाय के नाते से वे समान और एक ही कुल के समझे जाते

१-जाट, भाट जोगी सयास, बीमण सुदर करे गुर आस ।

खान पीर परब्या सुरतारण, राज बस महाजन जांग ॥ ९६

चारण कायय परब्या जाण, ऊँच नीच मह जात बखारण ॥६७॥

—कथा औरतार की ।

२-परब्या पात सुपात, परब्या छ बीमण बागियाँ ।

मोघ्या जीव सुजीव, दे सुमति सुमारण भाणियाँ । —साखी ।

हैं। कालांतर में सम्प्रदाय के सम्बन्ध से विष्णोइयो को जाति के रूप में भी अन्य लोग समझने लगे। वस्तुतः विष्णोई शब्द सम्प्रदाय का ही बोधक है, जाति का नहीं।

२३-आवादी

विष्णोइयो की अधिकांश आवादी राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में हैं। बिहार^१ और नेपाल^२ में भी विष्णोइयो के होने का पता चला है। इनमें राजस्थान की पुरानी रियासतों-बीकानेर, जोधपुर, जसलमेर और उदयपुर में इनकी सर्वाधिक पुरानी आवादी है। उदयपुर के जिला भीलवाड़ा में पुर, दरौवा और समेला इनके तीन पुराने गांव हैं। यहां के अधिकांश विष्णोई राजपूतों से बने हुए हैं। उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, देहरादून, कानपुर, जालौन, बालपी, कन्नौज, फर्रुखाबाद, झरिया, अजीतमल, काठ, खेरी, लखनऊ आदि स्थानों और क्षेत्रों में विष्णोई 'भौधिया-भमया' भी कहते हैं। यहां अग्रवाल वंश विष्णोई बड़ी सख्या में हैं। इनके अति-रिक्त जाट और दूसरी जातियों के भी हैं। मूलतः जाम्भोजी के समय में ही यहां के लोग विष्णोई हुए थे। पुरवार और भौधिया नाम तभी से चल आ रहे हैं। कैसीजी ने 'कया विसौद की' में इस क्षेत्र के विष्णोइयो का उल्लेख किया है^३।

मध्य प्रदेश में मालवा के हरदा, होशंगाबाद क्षेत्र में इनकी सर्वाधिक आवादी है। यहां के अधिकांश लोग मारवाड़ से आकर बसे थे।

हरियाणा में जिला हिसार में और पंजाब में जिला फीरोजपुर में इनकी बहुत बड़ी सख्या है। स्वतंत्रता से पूर्व भावलपुर रियासत में भी ये बड़ी सख्या में थे और उसके बाद सुविधानुसार देश के अनेक भागों में यत्रतत्र बस गये। इन स्थानों के अधिकांश लोग मूलतः राजस्थान-वासी हैं।

२४-विष्णोई गांवों की सख्या :

लगभग ४० साल पहले उपयुक्त प्रांतों के उन गांवों की सख्या अनुमित की गई थी जिनके निवासी अधिकांश में विष्णोई थे^४। इसका विवरण इस प्रकार है—

१-विष्णोई महासभा के पाँचवें अधिवेशन के समापति श्री रामनारायणसिंह का भाषण, फागून वशि १४, सन्त १९८३।

२-भयंर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, दिसम्बर, १९५१, पृष्ठ ५, "कानपुर जिले के विरनोई" लेख में।

३-लोक महान्न वशिष्या याति, पुरवार भौधिया उमरा जाति।

विमगोई लोक हुवा जए तर, लोक लदणिया सोदो वर ॥५॥

४-(क) विष्णोई महासभा के चतुर्थ अधिवेशन के समापति बाबू नन्दमान का भाषण, पृष्ठ ६, नोमगाव, २६ दिसम्बर, सन १९२५।

(संशोधन भाग देवें)

- (१) राजस्थान-६५३ गाव । बीकानेर में १५०, जोधपुर में ४००, जयनगरे में १००, भीर उदयपुर में ३ ।
- (२) पंजाब-१७६ गाव । फीरोजपुर में १६, भावलपुर में २५, लामलपुर में ४, सरगा २ १ और हिमालय में १३० ।
- (३) उत्तर प्रदेश-गाँव (मुरादाबाद) में १५, कानपुर में १० (उस समय की उत्तर प्रदेश के शेष क्षेत्रों की सूची उपलब्ध नहीं है) ।
- (४) गिफ-हैदराबाद की मीरपुर तहसील में ५ गाव ।
- (५) मध्य प्रदेश-नरसिंहपुर में १५, भूपाल में १, उज्जैन में १०, होशंगाबाद में ३० गाव । नागपुर में २० घर, बिलासपुर में २० घर, जलपुर में २० घर, सडगपुर में १५ घर और सागर में ५ घर थे ।

इसके अलावा पटना में १०० गावों के होने का पता विष्णोई महासभा ने लगाया था । सभा का प्राप्त सूचनानुसार बराचो, नेपाल, रगून, बाबुल, कंधार, गजनी और लका में भी ये लोग बसे हुए थे । मुरजनजी, साहवरामजी आदि कवियों की रचनाओं से जाम्भोजी का भारत के बाहर इन देशों में जान का उल्लेख मिलता है ।

वर्तमान में गावों की उल्लिखित संख्या में बड़ी मात्रा में बढ़ोतरी हुई है जिसके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

बीकानेर डिवीजन के श्रीगणनगर जिले में १४५ गाव,^१ मुरादाबाद जिले में ९० गाव^२ और भीलवाड़ा में ५ गाव^३ । कानपुर जिले के १८ गावों में भी विष्णोई बसे हुए हैं^४ ।

२५-जनगणना

विभिन्न जनगणना रिपोर्टों में सन् १९३१ तक^५ ही विष्णोइयों की जनसंख्या का उल्लेख किया गया था । यह तालिका इस प्रकार है —

(क) विष्णोई महासभा के पाचवें अधिवेशन के सभापति श्री रामनारायण सिंह का भाषण ।

(ग) विश्वादी समाचार (मासिक पत्र), नयीगा, वृत्त ३, अंक ५, नवम्बर, १९४५ ।

१-अमर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, नवम्बर, सन् १९६३, पृष्ठ १३ १५ ।

२-वही, दिसम्बर, सन् १९६४, पृष्ठ १२ ।

३-वही, जनवरी, सन् १९६४, पृष्ठ २ ।

४-वही दिसम्बर, १९५१, 'कानपुर जिले के विश्वादी,' पृष्ठ २६ ।

५-"इन १९३१ संसद एंड अलियर सेंससेज हिंदूज वर क्लासिफाइड अंडर सम वन हैट्टेड फिफ्थ डिफरेंट कास्टम । इट इज इनडीड ए हैपी पोर-ट फार इंडिया आफ डि फ्यूचर दट फार १९४१ इट वाज डिसाइडिड टु अ वंडन दिस सिस्टम"- "टीज टन इयरस्' वाई ए० डब्ल्यू० टी० वव, (ए गाट एकाउंट आफ दि सन्स अओपरेगन इन राजपूताना एन् अजमेर- मेरवाडा) — राजपूताना सन्सस् बाल्मू-२४, पाट-सन्स पृष्ठ ७३, १७ फरवरी, सन् १९४१ ।

सन	जनसख्या	विभिन्न प्रान्तो की विष्णोई जनसख्या			विशेष विवरण *
		राजपूताना	पजाव	अय्यत्र	
१८८१-	८,५७६ ^१	—	—	—	ब्रिटिश भारत मे
१८९१-	—	५७,०६४* ^२	—	—	केवल पश्चिमी प्रदेश मे पाए जाते हैं।
१९०१-	६८,९६६ ^३	४९,३०२ ^४	१६,१४० ^५	१,६०० यू० पी०, सो०पी०	यू० पी०, पजाव और राजपूताना मे पाए जाते हैं।
१९११-	७३,३९२ ^६	५२,८७९ ^७	१९,४१६ ^८	१,०९७ ३-अजमेर- मेरवाडा	
१९२१-	—	५२,८४३ ^९ + १९,७८० ^{१०}	१४	१४ (अजमेर- मेरवाडा)	समस्त खेतिहर लोगो मे विष्णोई ३ प्रतिशत हैं। मारवाड, बीकानेर और जसलमेर में बडी सख्या में पाये जाते हैं।
१९३१-	७०,४६१ ^{११}	६९,८७३ ^{१२}	—	५८८	बीकानेर, जसलमेर और मारवाड में ही अधि- काशत पाए जाते हैं।

- १-रिपोट आन दि सन्सस आफ ब्रिटिश इंडिया, १८८१, वाल्यूम फस्ट, पृष्ठ ३२१।
 २-सन्सस आफ इंडिया, १८९१, वाल्यूम २६, राजपूताना, पाट फस्ट, पृष्ठ ६९।
 * (रिपोट आन दि सन्सस आफ १८९१, वाल्यूम सकिड (दि कास्टम आफ मारवाड),
 जोधपुर, सन १८९४, पृष्ठ १४ पर मारवाड राज्य के विष्णोइयो की सख्या ४०,०२३
 बताई गई है)।
 ३-वही, १९०१, वाल्यूम फस्ट-ए, पार्ट-सकिड, पृष्ठ ५४७।
 ४-वही, १९०१, वाल्यूम-२५ ए, राजपूताना, पाट-सकिड, पृष्ठ २४६।
 ५-वही, १९०१, वाल्यूम-१७ ए, पाट-सकिड, पृष्ठ ३४।
 ६-वही, १९११, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिड, पृष्ठ १८६।
 ७-वही, १९११, वाल्यूम-२२, राजपूताना एंड अजमेर मेरवाडा, पाट-फस्ट, पृष्ठ २५२।
 ८-वही, १९११, वाल्यूम-१४, पाट-सकिड पजाव, पृष्ठ २४१।
 ९-वही, १९२१, वाल्यूम-२४, पाट फस्ट, राजपूताना और अजमेर मेरवाडा, पृष्ठ २१८।
 + (सन्सस आफ इंडिया बीकानेर स्टेट (रायबहादुर जयगोपाल पुरी), पृ० २८ के अनुसार,
 बीकानेर में-१०, ९२१)।
 १०-वही, १९२१, वाल्यूम-१५, पाट-सकिड पजाव, पृष्ठ २०५।
 ११-वही, १९३१, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिड, पृष्ठ १२।
 १२-वही, १९३१, वाल्यूम-२७, पृष्ठ १२४, १२६।

२६-विभिन्न सस्कार, माय त्योहार, तिथियाँ, 'सूत, पद्येवढी' किराना और वेसमुया आदि

(क) सस्कार—विष्णोई समाज म तीन मुख्य सस्कार हैं—जम, विवाह और अत्यष्टि । हवन, बलस-स्थापन और पाहळ प्रत्येक सस्कार म होता है । जम-सूतक ३० दिन तक रहता है । ३१ व दिन बच्चे का गिर मुडवा कर नहलाते और पाहळ करके बालक-मन से सस्कारित कर लेते हैं । बच्चे की माँ उमके पदमात् ही कोई गह-बाय कर सकती है, पहले नहीं । विष्णोई बेटों का पहला 'जापा' पीहर म होता है ।

विवाह बड़ी सादी रीति से होते हैं । सम्प्रदाय तय होने पर बधु पण की ओर से बच्चे सूत का एक डोरा भेजा जाता है । जितने दिन बाद विवाह होने को होता है, डोरे म उतनी ही गाँठें लगा दी जाती हैं । इसके लिए कोई मुह्त या महीना नहीं देखा जाता । विवाह म घर-बधु 'पीढ़ी' बदलते हैं, पेरे नहीं होत । दोनों का उत्तर की ओर मुह करवा कर पीढ़ों पर बटाया जाता है और थापन या साधु (बही बही गायणे भी) विवाह-पद्धति का पाठ करते हैं । कुछ समय पश्चात् दोनों के पीठ (या भासन) बदलवा दिए जाते हैं । विवाह-पद्धति बड़ी सरल और सक्षिप्त है । भीलवाडा और उत्तर-प्रदेश के विष्णोइया म विवाह सनातनधर्मी हिन्दुओं की भांति केलो से होते हैं ।

शव को उत्तर-दक्षिण करके गाडा जाता है । इसका सूतक तीसर, बारहवें या तरहवें दिन उतरता । मृतक-भोज करने की परिपाटी है । उत्तर-प्रदेश मे गव को जलाने और मध्य-प्रदेश मे जल मे प्रवाहित करने की पद्धति है । साधुभा का अत्यष्टि सस्कार साधु ही करते हैं और उस समय सिक्कास (कवि सख्या ८) वृत साली गाई जाती है ।

(ख) त्योहार—होली के अतिरिक्त सोय सभी हिन्दू-त्योहार उनकी भांति धूमधाम और उत्साह से मनाए जात हैं । होली का दिन विष्णोइया के लिए प्रसन्नता का नहीं, शोक का है क्योंकि इसी दिन प्रह्लाद को भाग म जला मारने का उपक्रम किया गया था । इस दिन सूर्यास्त से पूव ही दलिया, "पळेवडी" (मेथी की बड़ी) आदि खा लेते हैं । सूर्यास्त के पश्चात् सूतक लगना मानते हैं । दूसरे दिन प्रह्लाद के जीवित होने का समाचार जान कर आनन्दित हान और 'प्रह्लाद वाचन' हैं । पहले केलोजा वृत "प्रह्लाद विरत वाचने" की प्रथा थी । बाद मे ऊदोजी भडीग, हरजी दुकिया, की लेमी रचनाएँ भी सक्षिप्त होने के कारण प्रसिद्ध हुई । वर्तमान मे ऊदोजी का "पह्लाद" विशेष प्रचलित है । पश्चात् गाव के एक निर्धारित स्थान पर हवन करते और पाहळ लेते हैं । यह पाहळ लेना सबके लिए अनिवार्य है । अय लोगो की तरह होली के दूसरे—"धुलेंडी" के दिन रग नहीं खेलते ।

१-विवाह-पद्धति और गोशाचार आदि की अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनकी सूची इस प्रकार है—ग्रन्थयन-सामग्री, प्रति सख्या ६३, ६५, ६६, ६७, ६८, ७५, ७६, ७८, ८१, १०९, १५२, २०३, २१३, २२७, २२८, २३५, २५६, ३१३, ३१७, ३२४, ३३३, ३४६, ३७१, ३८७ ।

। (ग) तिथियाँ—प्रति श्रमावस्या को गाव में सामूहिक रूप से हवन करते हैं और प्रायः रात में, कोई व्यावसायिक कार्य नहीं करते। इसी प्रकार “चिरत नवमी” (मागशीय वृ ६, जाम्भोजी की वकुष्ठवास-तिथि) और सूय, चन्द्र ग्रहण के दिन भी करते हैं। भादवा वृत्ति प्रप्तो (जाम्भोजी की जन्म-तिथि) की भी पूव मायता है।

। (घ) “सूत, पछेवडी”—जाम्भोजाय और मुकाम पर पुयाय “सूत” (प्रति स० ३५८) ‘पछेवडी’ (प्रति सत्या ३५७) और “सोळती फिराने” की प्रथा रही है। जम्भ-तालाव या मुकाम-मन्दिर के चारों ओर डेढ़ हाथ चौड़ी सूत की बनी जितनी “डोवटी” आए, उसे सायया का दान में देना सूत फिराना कहलाता है। इतनी ही चौड़ी किन्तु पाँच हाथ या सोलह हाथ लम्बी ‘डोवटी’ दान में देने को प्रमग ‘पछेवडी’ और ‘सोळती’ फिराना कहते हैं। प्रत्येक दान के पश्चात् सायुभा को भोजन करवाया जाता है।

(ङ) वेगमूपा-वतमान में अय स्थानों पर तो नहीं किन्तु फलोनी और मारवाड क्षेत्र में विष्णोई स्त्रिया का पहनावा अय स्त्रिया से किंचित भिन्न है। यहाँ विष्णोई पुरुष सिर पर सफेद बटदार गोल पगडी (साफा) बाधते हैं। इसकी लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक होती है। इन क्षेत्रों में ही अब पहनावे का वणिष्टय शेष रह गया है। सिर के बाल अब भी ज्यादा बड़े नहीं रखे जाते। सामान्यतः सफेद कपड़े पहने और पसंद किए जाते हैं। सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। विष्णोई साधु सफेद घोती, कुरता (कमीज) और सिर पर भगवी पगनी (साफा) बाधते हैं। कई साधु कमीज (भुग्गा) भी भगवें रंग का रखते हैं।

२७-लोकगीत और हरजस

। लोक में सामान्य रूप से प्रचलित गीत और हरजस विष्णोई-समाज में भी प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त इनमें अनेक ऐसे भावमय गीत भी प्रचलित हैं जिनका इतर समाज में विशेष चलन नहीं है। ऐसे गीत मुख्यतः तीन श्रवणों पर गाये जाते हैं—(क) विभिन्न सस्कारों के समय (ख) सत्सग और (ग) जाम्भाणी मेलों पर। उदाहरण स्वरूप परिशिष्ट में—(१) “हिडोळो” (हर रो हिडोळा), (२) “हालो सहियाँ ए”, (३) “भुरली” और (४) “मिदर” गीत दिए जा रहे हैं। पहला बद्ध व्यक्ति के स्वगवास तथा नव सौनो-सत्सग, और मुकाम-मेलों पर समवेत स्वरों में तमयता पूर्वक गाए जाते जाते हैं। वस्तुतः विष्णोई लोकगीत” श्रवण का एक पृथक् विषय है।

२८-कतिपय प्रमुख सामाजिक समस्याएँ

। (क) विभिन्न पचायतों के अतिरिक्त विष्णोई समाज की कुछ समस्याओं का उल्लेख नीचे किया जाता है।

(क) भारतवर्षीय विष्णोई महासभा (वतमान कार्यालय विष्णोई मंदिर, हिसार) :-

। १-ता० २२-४-१९३६ को सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ (१८६०) के अंतर्गत यह समाज “भारतवर्षीय विष्णोई महासभा” के नाम से लखनऊ में पंजीकृत हुई थी। कालांतर में इसका कार्यालय हिसार में लाया गया जो अब वहीं है।

दिसम्बर सन १९१९ (संवत् १९७६) में "सामूहिक शक्ति के संगठन, और जाति को उन्नत दशा में लाने के लिए जाति के विचारशीलों ने" एक सभा "विन्नीई (बल्लुव) सभा" नाम से नगीना में स्थापित की थी जिसके सभापति श्री हरप्रसाद वकील और मंत्री राम-स्वरूप कोठीवाल थे। फरवरी सन् १९२१ में प्रचारित एक परिपत्र के अनुसार इसी सन् में, "अखिल भारतवर्षीय विष्णोई सम्प्रदाय" का पहला अधिवेशन नगीना में हुआ। तब से अब तक महासभा के ८ अधिवेशन हुए हैं, जिनका विवरण अधोलिखित है —

<u>क्रम</u>	<u>स्थान</u>	<u>तिथि</u>	<u>सभापति</u>
१	नगीना	२६-२८ मार्च, सन् १९२१ (संवत् १९७७)	रामबहादुर हरप्रसाद, वकील
२	फलावदा	—	चण्डीप्रसाद सिंह
३	कानपुर	सन १९२४ (संवत् १९८१)	स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, काठ
४	हरणा	सन १९२५ (संवत् १९८२)	बाबू नदलाल इजीनियर
५	मुकाम	२-४ मार्च, सन् १९२७ (संवत् १९८३)	श्री० रामनारायण सिंह, सीतोगुनो (इनकी मनुष्य स्थिति में तत्कालीन अध्यक्षता ढावां के जेतदार माम-राज धारणिया न का थी)।
६	धवोहर	७-८ फरवरी, सन् १९४४ (संवत् २००१)	बाबू हरप्रसादजी
७	हिमाल	१८ मार्च, सन् १९४५ (संवत् २००२)	श्री० हरिराम बोला, बिसनपुरा (धीमगानगर)।
८	मुकाम	२१-२३ फरवरी, सन् १९५५ (संवत् २०१२)	श्री० हरिराम बोला, बिसनपुरा (धीमगानगर)।

सन १९५५ के पश्चात् अब तक सभा का कोई अधिवेशन नहीं हुआ है।

१-(क) मार्च-अप्रैल सन् १९२१ में होने वाला महासभा के बहुत अधिवेशन में सम्पन्नित होने के लिए प्रतिनिधि भेजने संबंधी परिपत्र।

(ख) फरवरी, सन् १९२१ के प्रथम अधिवेशन सम्बंधी परिपत्र।

(ख) क्षेत्रीय सत्याएँ क्षेत्रीय सम्थाओं में चार उल्लेखनीय हैं —

(१) अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल (रजिस्टर्ड, पंजाब-कार्यालय-विष्णोई मन्दिर, अबोहर)। महासभा के अबोहर वाले छठे अधिवेशन के समय इसकी स्थापना हुई थी। दल न समाज सुधार सम्बन्धी अच्छा काय किया है। सीमा-बन्दीशन को एक ममोरैंडम भी दल ने दिया था।

(२) विष्णोई सभा, जिला फीरोजपुर (कार्यालय विष्णोई मन्दिर, अबोहर)। इसका विधान इस जिले के विष्णोईयो द्वारा ता० १५ जुलाई १९५० को विष्णोई मन्दिर, अबोहर में स्वीकार किया गया था। इसी समय से सत्या की स्थापना माननी चाहिए।

(३) विष्णोई सभा, हिसार (कार्यालय-विष्णोई मन्दिर, हिसार)। यह सभा ८ फरवरी, सन १९४७ को "सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट, २१ भाग १८६०" के अन्तर्गत साहौर में पंजीकृत हुई थी। स्थापना-समय से लेकर अब तक यह सभा परोपकारार्थं अनेक प्रकार के समाज-उत्थान, सुधार और लोकहित विषयक काय करती आ रही है।

(४) श्री विष्णोई सेवा समिति (रजिस्टर्ड-कार्यालय-७४/२५६ लच्छो का बगीचा, पनकुट्टी, कानपुर)। इसका पंजीयन ३१, मार्च, १९६१ को हुआ था।

इनके अतिरिक्त समय-समय पर क्षेत्र-वित्तीय में सभा-सम्मेलन भी होते रहे हैं।

२९-जम्भेश्वरीय सवत

सम्प्रदाय में "जम्भेश्वरीय" सवत् भी प्रचलित है। इसका आरम्भ जाम्भोजी की वकुण्ठवास तिथि-मागशीय चर्ति नवमी के दिन के तीसरे पहर से माना जाता है और शेष सब गणना विग्रम सवत् के अनुसार होती है। सवत् १५६३ के इस दिन जाम्भोजी का वकुण्ठवास हुआ था। प्रचलित विग्रम सवत् में से १५६३ निकाल देने पर जम्भेश्वरीय 'यत्' सवत् आता है। स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, साहबराजजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, श्रीरामदासजी, रामानन्दजी गिरि आदि की पुस्तकों और परिपत्रों पर "जम्भेश्वरीय गनादी" लिखा मिलता है।

ऊपर विष्णोई सम्प्रदाय के सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सामाजिक स्वरूप को सार रूप में स्पष्ट किया गया है।

१-(क) विष्णोई मन्दिर अबोहर का प्रथम विवरण, ता० २० जनवरी, १९४९।

(ख) विष्णोई मन्दिर अबोहर और विष्णोई पंचायत का दूसरा विवरण, ३१ अगस्त, सन १९५०।

(ग) ममोरैंडम दू दि आनरेबल प्रेसीडेंट एण्ड मेम्बर्स बाउंड्री कमिशन, इटिया, (कम्प रोहन्क) आन १९-४-५५।

२-विधान, विष्णोई सभा, जिला-फीरोजपुर, जम्भेश्वर सवत् ४१५।

३-रजिस्ट्रार, ज्वाइंट स्टॉक कम्पनीज, पंजाब का 'रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट',

ता० ८-२-१९४७।

४-समिति की धार्मिक रिपोर्ट एवम् प्राय-व्यय का लेखा, वष १९६०-६१।

मुग-परिवर्तन के साथ सम्प्रदाय में भी यत्र-तत्र सामाजिक परिवर्तन के लक्षण दिखाई देते हैं किन्तु परम्परागत भावनाओं तथा संस्कारों के प्रति पूर्ववत् घास्या और निष्ठा बनी हुई है।

पूव पृष्ठों में इस जिल्द के दो खण्डों—(१) पृष्ठभूमि तथा (२) प्रवर्तक, धाणी और सम्प्रदाय के अन्तर्गत सात अध्यायों में एतद् विषयवत् प्रामाणिक विवेचन, प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के दोषांश—विष्णोई साहित्य का विवेचन, महत्त्व, देन और मूल्यांकन दूसरी जिल्द में तीसरे खण्ड के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिशिष्ट १

चित्र-सूची

(कुल चित्र संख्या ११२)

नजीराग्रध्यानसासत्रपुस्तकगजाम्पायास्यु
 तालीषतुंफमांणदसंतजात्यकणसुल्लथापं
 गुजीरासुतससजीराचेल्लादमजीरापोतासीष
 डेनवकोटीरांधापनांश्रुतीतांभंगापाररात्र
 मुजापुस्तकदेषमहुतांरीपोधीदेषिओह्य
 लीष्योहसंमंतगुठेचपोथोकीथौसंमत
 देचपोथोसपुरणलीष्योहवारबुधवारिवच
 तांन्हागांजरासीसरसुगसुधांनैदांजजीरीथा

५। प्रति सख्या २०१। आन्तम पृष्ठ पुष्पिका। (कोलियो ५६५)।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ कावेकरवैजन्तरयो ॥ कावीमाटीकादीधंटीका
 गणपामपाणीप्रदये ॥ ऊकमसोटीकाजागाया ॥ वानएनेप्रयोदिवात्यो ॥ ध्यादि
 सदवाणीसतगुरकीप्रीवायककदे ॥ गुरधीसैगुरधीमिपिरोसिन्मरमुषिध
 रभषवाणी ॥ जीगुरकीवाससदनेस
 रपिवाणी ॥ अवरसणजिदिकैरोपि
 रप्यासोगुरपरतकिजाणी ॥ जिदिकै
 रुद्रसमाणी ॥ गुरआपमतोषीअवराधोषी ततमहारसवाणी ॥ रदिया
 मलीयावासण ॥ दितद्वेतासण ताभेहारीडडीतो रसनगोरसुधीयनलीयो
 यो ॥ तदोदधनवाणी ॥ गुरआयरेप्यांनी सोडतमोहा ॥ अतिधुरसाणी तीजतलोहा
 माणीअजतेरीवालप्रवाला ॥ सतगुरतोह्मनकासाता सतगुरदेत्सदजपिराए
 कसखिरतदियनदेकरवेरद्वेोनरदिसीवाणी ॥ १ एकसमदधतीथजीदराअस



१३। पी० प्रति। सबदवाणी का आरम्भिक पत्र।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ अष्टवातो श्रीकासेजीकी लिखते ॥ ॐ गुरवीसे
 रवीन्दिपिरोहित गुरमुषिधर्मबवाणी जीगुरकीवा सदनेसीजेकवदेनादेनेदे
 दिगुरवात्राजागरपिवाणी अवरसणजिदिकै रोपणिधापणि ससारवर
 ण निजकरधरप्या सोगुरपरतकिजाणी जिदिकैषरतरगोतिनिरोतरि।
 ग्या रदियारुद्रसमाणी गुरआपमतोषीअवराधोषी ततमहारसवाणी ॥
 नेअलीजावासण ॥ दितद्वेतासण ताभेहारीडडीतो रसनगोरसुधीयनलीयो
 ॥ द्वाधनवाणी ॥ गुरआयरेप्यांनी सोडतमोहा ॥ अतिधुरसाणी तीजतलोहा
 ॥ माणीअजतेरीवालप्रवाला ॥ सतगुरतोह्मनकासाता सतगुरदेत्सदजपिराए
 कैसनावरतविनकावेकरवेरद्वेोनरदिसीवाणी ॥ २ ॐ मोरेवायानमाजालो

